कश्मीरी

रामावतारचरित

कश्मीरी काव्य के अमर रचयिता

श्री प्रकाशराम कुर्यग्रामी

अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार

डॉ० शिबनकृष्ण रैणा

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

प्रथम संस्करण—
जुलाई, १९७५ ई०

मूल्य— २०·००

मुद्रक:—
वाणी प्रेस
भुवन वाणी ट्रस्ट
'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

आसेतु हिमालय

कश्मीर से कन्याकुमारी पर्यन्त

प्रधानमंत्री

श्रीमती इंदिरा गांधी को

माल्यार्पण

रामावतारचरित



नागरीलिप्यन्तरण

** : * : *~~* "कश्मीरा काव्य *~~* : * : **

आसेतु हिमालय की विविध भाषाओं के सेतुकरण में सन्नद्ध 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की ओर से "कश्मीरी रामावतार-चरित" का सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण सादर माल्यार्पित ।

१० जुलाई, १९७५

रथयात्रा-दिवस

प्रतिष्ठाता—भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ—३



कश्मीरी की दार्शनिक और आदि-कवियित्री लल्लद्यद

(सुश्री लल्लेश्वरी) की पयस्विनी,

जिस वाणी में प्रवाहित हुई है, उसी ललित

कश्मीरी भाषा में विरचित

'रामावतारचरित' का हिन्दी अनुवाद सहित यह

देवनागरी-लिप्यन्तरण, उसी ग्रन्थ के

मूल रचयिता

श्री प्रकाशराम कुर्यग्रामी को

सादर समर्पित

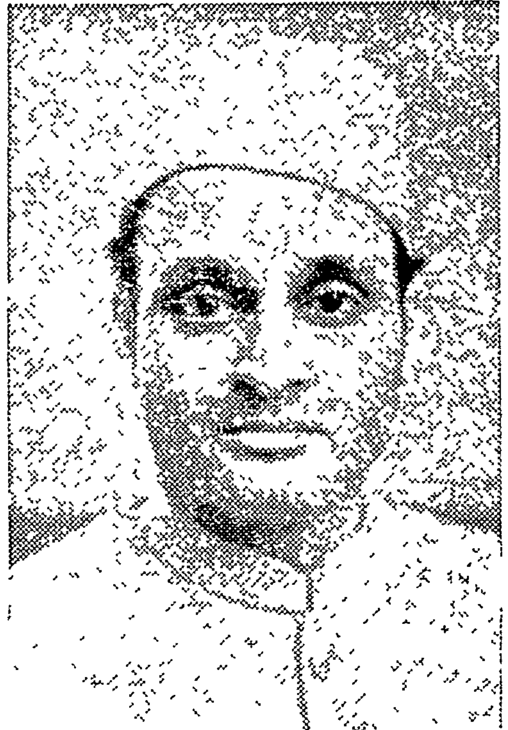
शिबनकृष्ण रैणा

(अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार)


उपहार

प्रस्तावना

भारत के स्वातंत्र्योत्तर काल में अपने इस विशाल देश की अनेक राज्य-भाषाओं के विकास को देखकर मन विभोर हो जाता है, और राष्ट्र-भाषा हिन्दी की स्रोतस्विनी में जब इन अनेक भाषाओं का सुरम्य संगम देखने को मिलता है तो आनन्दातिरेक की प्राप्ति होती है। संपर्क-भाषा के रूप में हिन्दी भाषा एक सर्वतत्वग्राही माध्यम है, अत: इसके भंडार को प्रान्तीय आंचलों की भाषाओं के शब्दों से समृद्ध करना प्रत्येक बुद्धि-वादी भारतीय का कर्त्तव्य है। यही एक ऐसा क़दम है जो राष्ट्रीय एकता एव भावात्मक एकता के निर्माण में बहुत बड़ा संबल सिद्ध हो सकता है। विभिन्न राज्यों की भाषाओं में लिखे गये ग्रन्थ-रत्नों को हिन्दी लिपि में उनके हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित करने का काम बहुत ही महत्व-पूर्ण है।



युवराज डॉ० कर्णसिंह
स्वास्थ्यमंत्री, भारत सरकार

जहाँ एक ओर भौगोलिक परिसीमाओं के कारण कश्मीर की घाटी शताब्दियों तक अलग-थलग रही, वहाँ दूसरी ओर ऐतिहासिक महत्व के समकालीन ग्रन्थों एवं निदेश-सामग्री के मूलग्रन्थों के लुप्त होने के परिणाम-स्वरूप कश्मीरी भाषा एवं उसके साहित्य की प्राचीनता अथवा उसके उद्गम पर पर्दा ही पड़ा रहा। अत: यह विवादास्पद विषय है कि कश्मीरी भाषा का उद्गम क्या है। शब्द-शोध एवं भाषाविज्ञान की दृष्टि से कश्मीरी भाषा का उद्गम सिद्ध करना अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण विषय है। इतना तो स्पष्ट है कि शताब्दियों से होते आ रहे राजनीतिक परिवर्तनों के साथ-साथ इस पर उर्दू, अरबी, फ़ारसी, पंजाबी, डोगरी एवं अंग्रेजी भाषाओं का प्रभाव पड़ा, यद्यपि मूलत: इस भाषा की आधार-शिला पर संस्कृत भाषा की एक नैसर्गिक छाप

स्पष्टतः दिखाई देती है। भले ही इस भाषा की लिपि आज से छः सौ वर्ष पूर्व शारदा रही हो, उसे ध्वनिविज्ञान की दृष्टि से अनुमान-लिपि ही मानना होगा, न कि परिपूर्ण। कालान्तर में यह लिपि भी लुप्तप्राय हो गई और अब उसकी जगह दो समानान्तर लिपियों ने ले ली है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि ध्वनिविज्ञान की दृष्टि से देवनागरी लिपि ही बहुत हद तक कश्मीरी भाषा को लिपिबद्ध करने में सहायक हो सकती है।

कदाचित् उन्नीसवीं शताब्दी ईस्वी के दूसरे दशाब्द में जन्मे प्रकाशराम कुर्यग्रामी द्वारा कश्मीरी भाषा में रचित 'रामावतारचरित' अथवा पद्यबद्ध रामायण, कश्मीरी श्रुति-परम्पराओं की विशेषता लिये भक्तिरस से बींधी वही रामकथा है जो उत्तर भारत की नस-नस में समायी हुई है। मर्यादा पुरुषोत्तम की जीवन-लीला को इस संसार की कर्मभूमि में इसलिए भी महत्व दिया गया है कि यह नैतिक मानों के आधार पर आदर्श जीवन बिताने एवं नश्वरता की निराशा से ओतप्रोत जीवन को सरस बनाने में एक निष्ठावान मार्ग प्रशस्त करती है जिसमें मनुष्य अपनी कर्त्तव्यपरायणता से नहीं ऊबता। आज की ह्रासशील नैतिकता में यदि भगवान राम का आदर्श जीवन में उतारा जाय तो अनेक आधिभौतिक एवं आधिदैविक संकट एवं संताप कट सकते हैं।

प्रस्तुत कश्मीरी रामायण के प्रणेता भक्तिरस के मतवाले कवि की भाषा में समस्तपद संस्कृतनिष्ठ तो हैं ही किन्तु फ़ारसी भाषा के सौम्य शब्दों का भी बड़ा सुन्दर प्रयोग देखने को मिलता है। वस्तुतः इन दो भाषाओं के सम्मिश्रण से पदलालित्य और भी निखर उठा है। भाषा का आधार एवं कवि की विचरणभूमि कश्मीरी भाषा तथा कश्मीर की परम्पराएँ ही है जो कथानक आदि की दृष्टि से बाल्मीकि रामायण एवं अध्यात्म-रामायण पर आधारित हैं। सात काण्डों में विभक्त इस पद-रचना में (लीला-वन्दना के रूप में) जहाँ इतिवृत्तात्मक एवं गीत-शैली का ही प्रयोग हुआ है वहाँ शब्द की तीन शक्तियों में से अभिधा एवं व्यंजना शक्तियों का प्राधान्य है, यद्यपि कहीं-कहीं लक्षण शक्ति का भी सुन्दर प्रयोग दिखाई पड़ता है। छन्दों में लय, ताल और सुर है और भाषा का प्रवाह स्रोतस्विनी के नाद-सा कर्णप्रिय एवं अनवरत मालूम पड़ता है। भक्तिरस में कश्मीरी 'लोल' (सूरदास की सुधि का भाव) का सरस पुट श्रोता को विह्वल कर देता है। रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का भी सुन्दर एवं सहज प्रयोग हुआ है। उदात्त नायक के चरित्र, आदि, को भी कवि ने प्रच्छन्न अथवा गौण रूप से चित्रित किया है। राम-कथा के सूत्र में सीता का रावण की सुता होना

और अपने कुटुम्बजन के उपालम्भ पर राम द्वारा सीता का परित्याग, कवि की अपनी विशेष मान्यतायें हैं। इन सब कारणों से इस काव्य-रचना को कश्मीरी भाषा का महाकाव्य समझा जाना चाहिए।

डॉ० शिबनकृष्ण रैणा ने अपने कठोर परिश्रम से मूल कश्मीरी भाषा की इस अमोल निधि 'रामावतारचरित' का देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण किया है और हिन्दी में इसका सुन्दर अनुवाद भी, जो अपने में एक प्रशंसनीय कार्य है।§ मैं आशा करता हूँ कि रामायण के अकश्मीरी-भाषी भक्त एवं पाठक प्रस्तुत प्रकाशन से लाभान्वित होंगे। यों भी तो डॉ० रैणा हिन्दी के माध्यम से कश्मीरी भाषा एवं साहित्य की सेवा में संलग्न हैं, किन्तु मुझे आशा है कि वे समय-समय पर कश्मीरी के अनेक अमोल रत्नों की छटा को प्रतिविम्बित करने का अपना प्रयास जारी रखेंगे। मैं उनकी सफलता एवं स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

नई दिल्ली, अप्रैल, १९७४ — कर्ण सिंह

---

§ श्री प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत 'श्री रामावतारचरित' (कश्मीरी) का यह सानुवाद लिप्यन्तरण 'भुवन वाणी ट्रस्ट', 'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३ से प्रकाशित हुआ है। भुवन वाणी ट्रस्ट, कश्मीरी, गुरुमुखी, नेपाली, असमिया, बंगाली, ओड़िया, राजस्थानी, उर्दू, अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, गुजराती, मराठी, तेलुगु, कन्नड, तमिळ, मलयाळम, सिंधी आदि विविध भाषाओं के लोकप्रिय सद्ग्रन्थों को देवनागरी लिपि में प्रकाशित करने में सतत संलग्न है—प्रकाशक।

विषय-प्रवेश

प्रस्तुत ग्रन्थ के पृष्ठ १७ पर 'प्रकाशकीय' और पृष्ठ १८-२४ पर 'लिप्यन्तरणकार तथा अनुवादक का वक्तव्य', इनमें 'ग्रन्थ का विषय', 'ग्रन्थकार का परिचय' और सुयोग्य अनुवादक 'डॉ० शिबनकृष्ण रैणा' के सम्वन्ध में पर्याप्त सामग्री मौजूद है। फिर भी कुछ उल्लेखनीय विषय, आवश्यक समझ कर, प्रस्तुत करना समीचीन प्रतीत हुआ।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद, राष्ट्र के विधान की रचना हुई। उसमें मनीषियों ने राष्ट्र की व्यवस्था में, भाषा और लिपि के सम्बन्ध में भी निर्णय लिया। भारत जैसे विशाल देश के विभिन्न अञ्चलों में विभिन्न भाषाओं और लिपियों का प्रचलन है। वे सभी भाषाएँ बहुमूल्य साहित्य से सम्पन्न हैं, और उस समग्र साहित्य में एक-भारतीय और एक-मानवीय झलक है। भाषा समझने की कोई बड़ी कठिनाई नहीं है। प्रायः सबमें संस्कृत का प्रचुर शब्द-भण्डार, तत्सम अथवा तद्भव रूप में विद्यमान है। अँग्रेज़ी, अ़रबी और फ़ारसी के भी शब्द पर्याप्त संख्या में समान रूप से सभी भाषाओं में पैठ चुके हैं। सभी भाषाओं के क्षेत्रीय शब्द यातायात, एक-राष्ट्रीयता और एक-संस्कृति होने के फलस्वरूप आपस में घुल-मिल गये हैं। यह भी तथ्य ही है कि देश के किसी भी अञ्चल में जाने पर टूटी-फूटी हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा की मिली-जुली बोली से काम, आज ही नहीं, पुरातन से चलता आ रहा है। अलबत्ता लिपि की कठिनाई ज़रूर है। यह किसी व्यक्ति के वश की बात नहीं कि वह भारत में व्यवहृत २०-२२ लिपियों को सीख ले और तब उन सभी लिपियों से सम्बन्धित भाषाओं के वाङ्मय और सत्साहित्य से लाभान्वित हो सके, अथवा भाषा के सेतु द्वारा परस्पर घुल-मिल सके।

इसलिए विचारक-वृन्द सदैव इस पर एकमत रहा है कि इन सब भाषाओं को एक सूत्र में बाँधने के लिए एक जोड़लिपि को अपनाया जाय और वह जोड़लिपि देवनागरी लिपि ही अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त है। सारांश यह कि सारी लिपियों के सदैव फूलती-फलती रहने के अलावा, देवनागरी लिपि को भी, जोड़लिपि के तौर पर, अपनाया जाय; सभी भाषाओं के सत्साहित्य को नागरी लिपि में लिप्यन्तरित किया जाय।

राष्ट्रीय एकीकरण को अक्षुण्ण रखने के लिए राष्ट्र की सभी भाषाओं का पवित्र साहित्य समस्त देश के सामने आना चाहिए। यह जोड़लिपि का काम किसी समय ब्राह्मी लिपि द्वारा उपलब्ध था; आज आवश्यकता है कि नागरीलिपि को उस पुनीत उद्देश्य के लिए अपनाया जाय।

अस्तु। यह विचार मेरे मस्तिष्क में घूम रहे थे। राष्ट्रीय विधान में भी उसी दिशा में निर्णय लिया गया। सन् १९४७ ई० से मैंने अन्य भाषाओं के देवनागरी लिप्यन्तरण का कार्य आरंभ किया। संयोग की बात कि विश्वविख्यात इस्लामी धर्मग्रन्थ 'क़ुर्आन' का सानुवाद लिप्यन्तरण प्रस्तुत करने की प्रथम अभिलाषा हुई। काम आरम्भ करने के बाद वह अनुमान से कहीं अधिक जटिल साबित हुआ। वैसे तो भारतीय भाषाओं के ही कई व्यञ्जनों और स्वरों के प्रतिनिधि रूपों का नागरी में अभाव है; किन्तु अरबी लिपि की तो अनेक ध्वनियों के समावेश से नागरी लिपि को परिवर्द्धित करने की आवश्यकता सामने आई। धर्मग्रन्थ होने के नाते अनेक शास्त्रीय बातों का भी ध्यान रखना ज़रूरी था। किसी न किसी प्रकार भगवान् की कृपा से वह भगीरथ कार्य सन् १९६९ ई० के आरम्भ में प्रकाशित होकर जनता के सामने आया। परिश्रम ठिकाने से लगा। देश की हर जमात ने उस श्रम की सराहना की, सबने क़द्र की। इसी बीच गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस से एक शती प्राचीन बंगला की लोकप्रिय 'कृत्तिवासी रामायण' के पाँच काण्डों का देवनागरी लिप्यन्तरण और (अवधी) हिन्दी में पद्यानुवाद भी मैंने प्रस्तुत किया।

इस २०-२२ वर्ष के सतत और क्लेशकर श्रम के उपरान्त, कुछ विश्राम मिला, यश मिला, सराहना मिली। विद्वान् और आम जनता, सर्वत्र इस श्रम के प्रति उपलब्ध समादर से उत्साह में वृद्धि हुई। फलस्वरूप भाषाई सेतुकरण, एक भाषा का दूसरी भाषा में प्रतिविम्बीकरण, और राष्ट्रसमन्वय के उपर्युक्त पुनीत उद्देश्य के प्रति संकल्प प्रबलतर हो उठा। कुछ महीनों बाद ही, उसी १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' नामक पञ्जीकृत संस्था की स्थापना की। नागरी लिपि में परिवर्द्धन और देश में प्रचलित प्रायः सभी भाषाओं के ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण का कार्य आरम्भ हुआ। लोग कहते हैं, निस्पृह विद्वानों का अभाव है। गांधी जी ने एक बार कहा था, और पूज्य विनोबा जी ने वही बात अपनी असम की पद-यात्रा के समय मुझको लिखी थी, जिसका भाव यह है कि 'सत्कार्य का मार्ग सदैव प्रशस्त रहता है। कोई भी अभाव उसकी प्रगति को रोक नहीं सकता। अलबत्ता संकल्प, श्रम और भगवान् की कृपा ज़रूरी है'। विविध भाषाओं के विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

उनमें से कई से तो आज तक मेरा साक्षात् भी नहीं हुआ है। ट्रस्ट में एक विद्वत्-परिषद् की स्थापना हुई। विद्वान् निस्पृह भाव से विविध भाषाओं के लोकप्रिय ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद और देवनागरी लिप्यन्तरण ट्रस्ट के लिए करने लगे। एक त्रैमासिक पत्र 'वाणी सरोवर' के सम्पादन और प्रकाशन का भार उठाने का सौभाग्य मुझको प्राप्त हुआ। उसमें उन बहुभाषाई ग्रन्थों के ८-८ पृष्ठ क्रमशः धारावाहिक दिये जाते हैं। वह पत्र आज छः वर्षों से अवाध प्रकाशित होता चला आ रहा है। इस त्रैमासिक के अलावा वे बहुभाषाई ग्रन्थ, पृथक् भी संग्रहीत किये जा रहे हैं। अरबी, मलयाळम, बंगला, उर्दू, गुरुमुखी, फ़ारसी, कश्मीरी की पुस्तकें पूर्ण भी हो चुकी हैं। इनमें तथा शेष भाषाओं में आगे भी काम बराबर चल रहा है। उद्देश्य हैः—

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की वानी।

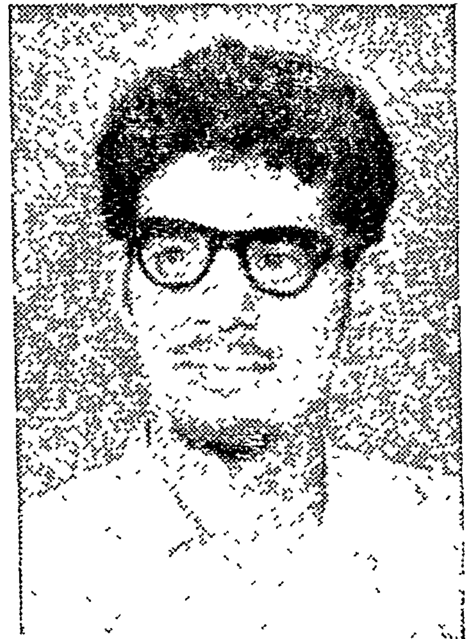
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी॥'

एक बात पर दृष्टि जाती है कि इन ग्रन्थों में रामायण, महाभारत, इस्लामी हदीस, श्रीजपुजी, गुरुग्रंथ साहब को ही शुरू में क्यों लिया गया है? यह मात्र इसलिए कि इनके कथानक से सारा देश परिचित है। वह जाना-समझा कथानक, अपरिचित भाषा के मूलपाठ को नागरी अक्षरों में पाकर, पाठक को समझने में सरलता होगी। यदि आरम्भ में उपन्यास, निबन्ध आदि का लिप्यन्तरण पढ़ा जायगा, तो कथा-वस्तु से अपरिचय, उसको समझने में बाधक सिद्ध होगा। एक भाषाभाषी दूसरी भाषा के ग्रन्थ को, कथानक सुपरिचित होने पर, अधिक सरलता से समझ सकेगा। इस प्रकार नागरी कलेवर में पाकर, उनका सीख लेना अधिक सुकर होगा।

मनीषी डॉ० कामिल बुल्के को कौन नहीं जानता। वे आज राँची सेंट ज़ेवियर्स कालेज में हिन्दी और संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं। 'राम कथा' नामक अपने शोधग्रन्थ में उन्होंने विश्व के रामायण-इतिहास को 'गागर में सागर' के समान संग्रहीत कर दिया है। शोधग्रन्थों में यह ग्रन्थ शिरमौर है। वे बेल्जियम (योरोप) के निवासी हैं। हमारा सारा देश उनका ऋणी और चिरकृतज्ञ है। इसी 'रामकथा' ग्रन्थ से विभिन्न भाषाओं के उत्कृष्ट रामायण ग्रन्थों को सानुवाद लिप्यन्तरण हेतु मैंने चुना। इसी ग्रन्थ के आधार पर दिवाकर भट्ट कृत कश्मीरी 'रामावतारचरित' का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण प्रकाशित

करना मैंने निश्चय किया। उक्त ग्रन्थ की एक प्रति और उपयुक्त विद्वान् की तलाश में मैं रहा। कई सुपरिचित कश्मीर के प्रकाशकों और मित्रों को पत्र लिखे। मैं हैरान था; कोई पता उस ग्रन्थ का न चल पाया। बहरहाल मैं तलाश में बरावर रहा; क्योंकि समस्त भाषाओं के चल रहे कार्यक्रम में 'कश्मीरी रामायण' का अभाव निरन्तर खटकता था।

दैवयोग से सत्कार्य के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ। सन् ७१ में अकस्मात् एक पत्र डॉ० शिबनकृष्ण रैणा, हिन्दी विभागाध्यक्ष, राजकीय कालेज, नाथद्वारा (राजस्थान) से प्राप्त हुआ। 'वाणी सरोवर' की प्रति किसी प्रकार उनके सामने पहुँची। उसमें विपुल भाषाओं के सानुवाद लिप्यन्तरित ग्रन्थों, विशेषकर रामायणों, और उनमें कश्मीरी रामायण का अभाव देखकर, वही उत्कण्ठा और अभिलाषा उनमें भी जाग्रत हुई जिसका मैं शिकार था। उनके पत्र पर, मैंने (डॉ० कामिल बुल्के द्वारा) उल्लिखित 'दिवाकर भट्ट' के 'रामावतारचरित' के सानुवाद लिप्यन्तरण की इच्छा प्रकट की। डॉ० रैणा से ही यह प्रकाश मिला कि वह 'रामावतारचरित' श्री प्रकाशराम कुर्यग्रामी की रचना है, न कि दिवाकर भट्ट की। उसकी एक प्रति भी उन्होंने मुझको उपलब्ध कराई। ऐसा अनुमान है कि डॉ० बुल्के को, 'रामकथा' लिखते समय, कश्मीरी रामावतारचरित के रचयिता के नाम में कुछ भ्रम हो गया। बहरहाल श्री रैणा जी ने बड़े हर्ष के साथ ट्रस्ट के सत्कार्य में हाथ बटाना अंगीकार किया। नागरी लिपि में अनुपलब्ध कुछ स्वर-व्यंजनों के सम्बन्ध में हम लोगों में एक राय स्थिर हुई। कार्य आरंभ होकर 'वाणी सरोवर' में ८-८ पृष्ठों में प्रकाशित, तथा पृथक् पुस्तक रूप में संग्रहीत होने लगा। 'रामावतारचरित' ग्रन्थ के सम्बन्ध में डॉ० रैणा ने पृष्ठ १८-२४ पर पर्याप्त वर्णन दिया है। डॉ० शिबनकृष्ण रैणा के संबंध में भी पृष्ठ १७ पर मैंने कुछ परिचय के तौर पर निवेदन किया है। उन पंक्तियों को लिखने के बाद से ट्रस्ट और डॉ० रैणा के सम्बन्ध प्रगाढ़तर होते



डॉ० शिबनकृष्ण रैणा
हिन्दी विभागाध्यक्ष, राजकीय कालेज,
नाथद्वारा (राजस्थान)

गये; वे तरुण होते हुए भी अद्भुत प्रतिभाशाली हैं। अत्यन्त कर्मठ एवं परिश्रमी हैं। उन्होंने इतने कम समय में ही कश्मीरी और हिन्दी की उल्लेखनीय सेवा की है। ताज़ा शुभ समाचार यह है कि वे राजस्थान से डेपुटेशन पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के पटियाला-स्थित उत्तरक्षेत्रीय भाषाकेन्द्र में कश्मीरी भाषा के व्याख्याता नियुक्त होकर जा रहे हैं। हम ट्रस्ट की विद्वत्परिषद् के इन विद्वान् सदस्य के स्वास्थ्य, चिरायु और उत्तरोत्तर यश-विभव की कामना करते है। अपने पाठकों से परिचय कराने के लिए उनका एक चित्र भी प्रस्तुत है।

श्री रैणा ने लगभग एक वर्ष पूर्व ही पाण्डुलिपि पूरी करके भेज दी थी। बहुभाषाई कार्यो के एक साथ चलते रहने तथा साधनों की कठिनाई से मुद्रण, वाञ्छित ढंग से तो नहीं, किन्तु बराबर चलता रहा। काम खर्चीला था। शायद पूरा होने में कुछ और विलम्ब होता, किन्तु संयोग से इसमें देश के उदार श्रीमन्त जन और उत्तर प्रदेश शासन की आंशिक सहायता रही। साथ-साथ में अन्य भाषाओं के लगभग बीस ग्रन्थों का प्रकाशन भी चल रहा था। भगवान् की कृपा से भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार श्री रमाप्रसन्न नायक और तत्कालीन गृहमंत्री श्री उमाशंकर जी दीक्षित की दृष्टि ट्रस्ट के भाषाई सेतुकरण के पुष्कल कार्यो की ओर गई। उनकी संस्तुति पर, शिक्षा एवं समाजकल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की कृपा हुई। फलस्वरूप, ग्रन्थ के शेषांश को पूरा करके अखिल देश की जनता के सामने प्रस्तुत करने की नौबत आई। शिक्षामंत्रालय के मर्मज्ञ विद्वान् डाइरेक्टर श्री सनत्कुमार चतुर्वेदी जी की बड़ी कृपा रही। हम इन महानुभावों के प्रति, भाषाई सेतुकरण के राष्ट्रीय कार्य में उत्तरोत्तर दृढ़ और कार्यरत रहने का संकल्प लेते हुए, आभार प्रकट करते हैं।

केन्द्रीय स्वास्थ्यमंत्री युवराज डॉ० कर्णसिंह जी ने इस ग्रन्थ पर प्रस्तावना लिखने की कृपा की है। हम उनके अतिशय अनुग्रहीत हैं।

नन्दकुमार अवस्थी

प्रतिष्ठाता—भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
माल्यार्पण	३
प्रस्तावना—युवराज डॉ० कर्णसिंह, मंत्री भारत सरकार	७
विषय-प्रवेश	१०
विषय-सूची	१५
प्रकाशकीय	१७
लिप्यन्तरणकार तथा अनुवादक का वक्तव्य	१८
कश्मीरी-देवनागरी वर्णमाला	२३
विषय-प्रवेश (गोड्निच लीला)	२५
रामायण का मतलब	२७
पार्वती-शिवजी संवाद	३४
बालकाण्ड	**३७**
श्रीराम का जन्म	३७
अयोध्यावासियों का भजन	४०
विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा	४५
अहल्या का शापमोचन	४८
भजन	५०
सीता-जन्म और स्वयंवर	५३
बरातियों का गीत	६१
श्रीराम की बरात	६४
लग्न का गीत	६६
विवाह (लग्न)	७१
अयोध्याकाण्ड	**७३**
राजतिलक	७३
कैकेयी का छल	७६
वनवास लीला	८१
कौशल्या का विलाप	८६
दशरथ का विलाप	९२
राजा की मृत्यु और भरत का आना	९४
भरत का दण्डकवन जाना	९८
श्रीराम का पिता के लिए विलाप	१०४
श्रीराम का भजन	११२
कैकेयी की अनुनय-विनय और भरत को खड़ाऊँ देना	११७
विलाप	११८
अहल्या का क़िस्सा	१२३
लीला	१२५
अरण्यकाण्ड	**१२८**
शूर्पणखा का सज़ा देना	१२९
सीताहरण	१३२
जटायु से युद्ध और सीता का क़ैद होना	१४५
सीता की तलाश	१५२
भजन	१५८
किष्किन्धाकाण्ड	**१६२**
वालि का मारा जाना	१६२
सुग्रीव द्वारा स्तुति	१६३
रामचन्द्रजी का संवाद सुग्रीव के साथ	१६५
सुन्दरकाण्ड	**१७३**
वानरों का सीता को ढूँढ़ना	१७३
वानरों का हनुमान से विनती करना	१७९
हनुमान के कार्य कार्यनामे	१८२
'सपया' राक्षस द्वारा हनुमान के गुणों का बखान	१८७
सीता का दर्शन	१९१
सीता जी का भजन	२०१
सीता और रावण का संवाद	२०३
सीताजी का भजन	२०५
लंका को आग लगाना	२०७
हनुमान की वापसी	२१७
युद्धकाण्ड	**२२१**
लंका की ओर फ़ौजकशी	२२१
विभीषण का शरण में आजाना	२२७
रावण और सुग्रीव के दर्म्यान खतोकिताबत	२२८
रावण की बाजीगरी (माया)	२३१
सीता का विलाप	२३४
सुरमा [त्रिजटा] का सीता को ढाढस देना	२३६

विषय	पृष्ठ-संख्या
इन्द्रजीत के साथ जंग	२३७
लक्ष्मण का जिन्दा होकर इन्द्रजीत को मारना	२४०
कुम्भकर्ण के साथ जंग	२४६
परशुराम आगमन	२५०
श्रीराम-परशुराम संवाद	२५४
राम-लक्ष्मण को चोरी से ले जाना	२५९
सभी रोते और विलाप करते हैं	२६३
सारी सेना का अपने ऊपर दोप लादना और रोना	२६५
हनुमान का विलाप	२६७
हनुमान का विलाप (क्रमशः)	२६९
राम-लक्ष्मण की तलाश	२७४
हनुमान की वन्दना करना	२८३
महिरावण के साथ जंग	२८४
भजन	२९२
मक्केश्वर का क़िस्सा	२९५
रावण द्वारा हवन	२९८
भजन	३००
वाजीगरी (माया) की सीता को मारना	३०२
भजन	३०४
रावण के साथ जंग	३०५
भजन (सभी का रामचन्द्रजी से विनती करना)	३०९
भजन (सभी का रामचन्द्रजी की अनुनय-विनय करना)	३२४
श्रीराम का रावण को मारना	३२७
सीताजी की अग्निपरीक्षा	३३५
सीताजी का भक्तगीत गाना	३३७
सीता की माता (मन्दोदरी) का संताप	३३८
भजन	३३९
भजन (सीता जी की माँ रामचन्द्रजी से कह रही हैं)	३४६

विषय	पृष्ठ-संख्या
भजन (मन्दोदरी कहती हैं)	३४९
सीता का आग में से निकलना	३५२
उत्तरकाण्ड	**३५९**
वापस अयोध्या आ जाना	३५९
भजन	३५९
सुमित्रा कौशल्या से संबोधन कर रही हैं	३६३
माता कौशल्या की प्रसन्नता	३६७
कौशल्या का भजन	३६८
कौशल्या और रामजी का मिलन	३७०
सुमित्रा का भजन	३७१
श्रीराम का राज	३७३
लवकुशकाण्ड	**३७५**
ननद की जलन	३७५
सीता को जलावतन करना	३७९
भजन	३८७
लव और कुश का जन्म	३९४
अश्वमेध का घोड़ा	४००
लव-कुश का जंग भरतराज के साथ	४०३
लक्ष्मण जी का मारा जाना	४१०
श्रीराम के साथ जंग	४१३
सीता का विलाप	४२१
सीता जी विलाप करती हैं	४२५
सीताजी का और विलाप करना	४२६
अमृत वर्षा	४३३
सीता और रामजी का संवाद	४३५
रामजी का अनुनय-विनय	४३७
सीता द्वारा पार्वती जी की स्तुति	४४०
रामचन्द्र और सीता का संवाद	४४९
ऋषि द्वारा सीता को समझाना	४५४
सीता का जमीन में गायब हो जाना	४६०
सीता जी द्वारा स्तुति करना (भजन)	४६४
श्रीराम का स्वर्गारोहण	४७४

रामावतार-चरित

(कश्मीरी रामायण)

रचयिता—प्रकाशराम कुर्यगामी

अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार—डॉ० शिबनकृष्ण रैणा, एम० ए०, पीएच्० डी०

प्रकाशकीय

कश्मीरी भाषा की लोकप्रिय रामायण 'रामावतारचरित' के सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण का शुभारम्भ हो रहा है। ग्रंथ और ग्रंथकार का पुष्कल परिचय लिप्यन्तरणकार तथा अनुवादक ने स्वयं अपने वक्तव्य में प्रस्तुत किया है। इन पंक्तियों द्वारा विद्वान् अनुवादक को पाठकों से परिचित कराना अभीष्ट है—

डॉ० शिबनकृष्ण रैणा का जन्म श्रीनगर, कश्मीर में भारत की आजादी की आखिरी लड़ाई के कीर्त्तिमान् सन् १९४२ में २२ अप्रैल को हुआ। इस प्रकार उनकी आयु २९ वर्ष मात्र है। इस अल्पकाल में ही साहित्य-साधना की उल्लेखनीय परिधि तक पहुँचे। कश्मीरी विश्वविद्यालय से १९६२ ई० में एम. ए. (हिन्दी) में प्रथम स्थान प्राप्त कर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से 'कश्मीरी तथा हिन्दी कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधग्रंथ लिखकर उन्होंने डॉक्ट्रेट प्राप्त की। उपरांत, कश्मीर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में अध्यापक और राजस्थान शिक्षा विभाग में हिन्दी के व्याख्याता रहकर आजकल राजकीय कालेज, नाथद्वारा में हिन्दी-विभागाध्यक्ष हैं। कश्मीरी भाषा, साहित्य, जीवन व संस्कृति पर अनेक निबन्धों तथा कई पुस्तकों के रचनात्मक कार्य का श्रेय उनको प्राप्त है। भाषा-जगत् को इस तरुण साधनाशील व्यक्तित्व से बड़ी आशाएँ हैं।

अब रही रैणा साहब के अनुवाद की भाषा। पाठकों को इसमें एक नया आनन्द प्राप्त होगा। जिस प्रकार कश्मीरी भाषा में संस्कृत और अरबी भाषाएँ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलती है—'गजेन्द्राय' को 'गजयन्दराये'; छन्दों में एक ओर ग़नीमत, संगि फ़ारस, जंग जैसे अरबी शब्द तो दूसरी ओर हृदय, नमस्कार, आकाश-पाताल जैसे संस्कृत शब्दों की गंगाजमुनी शैली की छटा है, तो दूसरी ओर अनुवादक ने अनुवाद की भाषा में भी दिल, जाने-यार, क़तरा के साथ-साथ संयम, प्रेममग्न, प्रज्वलित आदि शब्दों का, भाषा-प्रवाह को क़ायम रखते हुए, समुचित प्रयोग किया है। भुवनवाणी ट्रस्ट के सभी भाषाओं के अनुवादों में सम्बन्धित भाषा और क्षेत्र की छाप परिलक्षित है। तदनुसार कश्मीरी भाषा के इस काव्यानुवाद में भी पाठकों को हिन्दी के अन्तर्गत शब्दों के एक नवीन समन्वय का साक्षात्कार होगा। यह राष्ट्रभाषा की समृद्धि है और उसमें नूतन अभिवृद्धि है। हम विद्वान् अनुवादक की इस देन के प्रति कृतज्ञ हैं।

—सम्पादक

लिप्यन्तरणकार तथा अनुवादक का वक्तव्य

१९ वीं शताब्दी तक कश्मीरी साहित्य में रामकथा सम्बन्धी किसी भी काव्य-रचना की सूचना नही मिलती। १५वीं शताब्दी में कश्मीर के प्रसिद्ध प्रजावत्सल व विद्यानुरागी सुलतान ज़नउलाब्दीन 'बड़शाह' (१४२०-१४७०) के राजत्वकाल में पहली बार जिन पौराणिक आख्यानों को आधार बनाकर विभिन्न प्रबन्ध-काव्य रचे गये उनमें भी रामकथा को स्थान नहीं मिला। कृष्णकथा को स्थान अवश्य मिला। 'बड़शाह' के दरबारी कवि भट्टावतार ने अपनी प्रबन्धकृति 'बाणासुर-वध' में कृष्ण-कथा का सुन्दर उपयोग किया। १९वी शताब्दी के बाद कश्मीरी साहित्य में रामकथा-काव्य की सुपुष्ट परंपरा मिलती है। लगभग सात रामायण लिखे गये, जिनमें उल्लेखनीय हैं—'रामावतारचरित', 'शंकर-रामायण', 'विष्णु-प्रताप-रामायण', तथा 'शर्मा-रामायण'। इन सब में 'रामावतारचरित' को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इसमें भक्तिरस से आप्लावित रामकथा गायी गई है।

'रामावतारचरित' के रचयिता कुर्‌यगाम (कश्मीर) के निवासी प्रकाशराम[1] है। १९वी शताब्दी के आरम्भिक वर्षो में इनका आविर्भाव हुआ बताया जाता है। वे सन् १८८५ ई० तक जीवित थे। सर जार्ज ग्रियर्सन ने इनका कविता-काल कश्मीर के गवर्नर सुखजीवन (१७५४-१७६२ ई०) का समय बताया है जो सटीक नहीं बैठता। प्रकाशराम ने २८ वर्ष की आयु में संवत् १९०४ तदनुसार १८४७ ई० में अपनी प्रसिद्ध काव्यकृति 'रामावतारचरित' की संरचना की थी। इस कृति की एक हस्तलिखित प्रति पर 'रामावतारचरित' के रचनाकाल का उल्लेख है। प्रति पर सं० १९०४ स्पष्टतया अंकित है।[2] इस आधार पर प्रकाशराम का जन्मकाल सन् १८१९ ई० बैठता है।

प्रकाशराम भगवती त्रिपुरसुन्दरी के अनन्य भक्त थे। उन्ही की कृपा से उन्हें वाक्-शक्ति का अपूर्व वरदान प्राप्त हुआ था। वे नित्य देवी की पूजा करते तथा उनकी आराधना में घटों बिताते। कहते हैं एक दिन खूब वर्षा हो रही थी। प्रकाशराम को दूर से एक डोली अपनी ओर आती हुई दिखाई पड़ी। डोली के वाहकों ने प्रकाशराम को आवाज दी। प्रकाशराम जब डोली के निकट पहुंचे तो डोली का पर्दा ऊपर उठा। डोली में साक्षात् त्रिपुरसुन्दरी विराज रही थीं। प्रकाश-राम के नेत्र प्रफुल्लित हो उठे। कुछ ही क्षणों के बाद भगवती डोली सहित अन्तर्द्धान

१—ग्रियर्सन ने प्रकाशराम को श्रीनगर का निवासी तथा उनका नाम दिवाकर प्रकाश भट्ट बताया है, जो सही नहीं है।

२—'रामावतारचरित' संपादक श्री बलजिन्नाथ पण्डित, भूमिका पृ० ३०।

हो गई। भगवद्भक्ति का अनूठा प्रसाद पाकर प्रकाशराम का मन झूम-झूम कर देव-स्तुति में रम गया।

प्रकाशराम की निम्नलिखित रचनाओं का उल्लेख मिलता है :—

१—रामावतारचरित २—लव-कुश-चरित ३—कृष्णावतार ४—अकनन्दुन और ५—शिवलग्न।

उक्त पाँच रचनाओं में से केवल 'रामावतारचरित' तथा 'लव-कुश-चरित' प्रकाशित हुए हैं। 'लवकुशचरित' 'रामावतारचरित' के अन्त में छाप दिया गया है।[1]

पहले कहा जा चुका है कि 'रामावतारचरित' प्रकाशराम की सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रसिद्ध काव्यकृति है। यह एक प्रवन्धकाव्य है जिसमें राम-कथा गायी गई है। इस कृति के जो विभिन्न हस्तलिखित अथवा प्रकाशित संस्करण मिलते है, उनका विवरण इस प्रकार है :—

१—विश्वनाथ प्रेस, श्रीनगर का सन् १९१० में प्रकाशित संस्करण

२—ग्रियर्सन का सन् १९३० मे रोमन-लिपि में प्रकाशित संस्करण

३—दामजन गाँव के निवासी विश्वम्भरनाथ भट्ट का हस्तलिखित सस्करण

४—अकिनगाम गाँव के निवासी नन्दलाल राजदान का हस्तलिखित संस्करण,

५—जम्मू व कश्मीर राज्य की कल्चरल अकादमी का सन् १९६५ में श्रीबलजिन्नाथ पण्डित के सपादकत्व में प्रकाशित परिवर्धित संशोधित संस्करण।

प्रकाशराम के 'रामावतारचरित' का मूलाधार वालमीकि कृत रामायण तथा 'अध्यात्म-रामायण' है। संपूर्ण कथानक सात काण्डों में विभक्त है। 'लवकुश-चरित' अन्त में जोड़ दिया गया है। कवि ने प्रमुखतः दो प्रकार की काव्य-शैलियों का प्रयोग किया है: इतिवृत्तात्मक शैली और गीति-शैली। इतिवृत्तात्मक शैली मे मुख्य कथा-प्रसग वर्णित हुए हैं तथा गीति-शैली में वन्दना-स्तुति सम्वन्धी तथा अन्य भक्ति-गीत कहे गये है। इन गीतों में कवि का भक्त-हृदय इतना विह्वल हो उठा है कि मूल कथा-प्रसंग इस उत्कट भक्तिभावना के वेग में दब-से गये है।

'रामावतारचरित' महाकाव्योचित लक्षणों से युक्त है। दो-एक स्थानों पर प्रबन्धकार ने कथा-सयोजन में किन्हीं नूतन तथा मौलिक मान्यताओं की उद्घोषणा की है। सीता-जन्म के सम्वन्ध में कवि की मान्यता है कि सीता दरअसल

१—सन् १९६५ में जम्मू व कश्मीर राज्य की कल्चरल अकादमी ने प्रकाशराम के 'रामावतारचरित' व 'लव-कुश-चरित' को एक ही जिल्द के अन्तर्गत प्रकाशित किया है। संपादन व परिमार्जन का काम श्री बलजिन्नाथ पण्डित ने किया है। सानुवाद लिप्यंतरण के लिए इसी संस्करण को आधार बनाया गया है।

रावण-मन्दोदरी की पुत्री थी जिसका उद्धार बाद में विदेह जनक ने किया। दूसरी कथा-विलक्षणता राम द्वारा सीता के परित्याग की है। 'लव-कुश-चरित' में सीता को वनवास दिलाने के लिए 'रजक-घटना' को मुख्याधार न मानकर कवि ने सीता की छोटी ननद ? को दोषी ठहराया है जो पति-पत्नी के पावन प्रेम मे फूट डालती है। इसी प्रकार सीताजी के पृथ्वी-प्रवेश-प्रसंग में एक स्थान पर कवि ने 'शंकरपुर' गाँव का उल्लेख किया है[1]।

प्रकाशराम की भाषा संस्कृत-निष्ठ है जिसमें फ़ारसी के शब्दों की भी बहुलता है। अनेक स्थानों पर कवि ने ठेठ देहाती शब्दों का भी प्रयोग किया है, जैसे—दपन, करन, गछ्रन, वनन आदि। अलकारों मे कवि ने प्रायः उपमा व उत्प्रेक्षा का ही विशेष रूप से प्रयोग किया है।

'लव-कुश-चरित' की अलग से संरचना कर कवि ने सीता का वनगमन, लव-कुश-जन्म, सीता का पृथ्वी-प्रवेश आदि प्रसगो को विशेष महत्व देना चाहा है।

कश्मीरी भाषा और लिपि

कश्मीर को कश्मीरी भाषा में 'कशीर' तथा इस भाषा को 'का॑शुर' कहते हैं। १९६१ की जनगणना के अनुसार यह १९३७८१७ व्यक्तियों की भाषा है। कश्मीरी भाषा का क्षेत्र कश्मीर की घाटी तथा उसके दक्षिण-पूर्व निकटवर्ती उपत्यकाएँ हैं। दक्षिण-पूर्व में इस भाषा का क्षेत्र किश्तवाड़ तक, दक्षिण में हवल-वेरीनाग से लेकर पीर-पंचाल के उस पार तक, उत्तर में द्रावा और ओड़ी तक, पूर्व में पहलगाँव तथा दक्षिण-पश्चिम मे शोपियान तक फैला हुआ है। इस प्रकार कश्मीरी का भाषा-क्षेत्र १५० मील लम्बाई मे तथा ५० मील चौड़ाई में फैला हुआ है[2]।

एक बहुप्रचलित मत के अनुसार कश्मीरी दरद-परिवार की भाषा है। पंजाब के पश्चिमोत्तर तथा पामीर के पूर्व-दक्षिण में जो पर्वतीय प्रदेश है, वह दरद भाषाओं का क्षेत्र माना जाता है। इसे पिशाच-देश भी कहा जाता है और यहाँ की भाषा को पिशाची या भूत भाषा[3]। भारत में जो आर्य मध्य-एशिया से आये वे दो भागों से प्रविष्ट हुए—एक हिन्दूकुश के पश्चिम से काबुल के मार्ग से और दूसरे वक्षु नदी के उद्गम स्थान से सीधे दक्षिण के दुर्गम पर्वतों को पार करके। दूसरे मार्ग

१—यह गांव कश्मीर की कुलगाँव की तहसील में स्थित है। कवि की मान्यतानुसार सीताजी ने इसी स्थान पर पृथ्वी में प्रवेश किया था।

२—'कश्मीरी ज़बान और शायरी' अब्दुल अहद आज़ाद, भाग १, पृ० ९।

३—'हिन्दी उद्भव, विकास और रूप' डा० हरदेव बाहरी, पृ० १४।

से आने वाले कुछ आर्य हिमालय के पहाड़ी प्रदेश में रह गये होंगे। यही भाग दरदिस्तान कहलाया और यहाँ की भाषा दरदी[1]। इस भाषा पर संस्कृत का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा क्योकि सस्कृत भाषा का संस्कार तो भारत में आने पर हुआ था। दरद वर्ग की भाषाओं में शीना प्रमुख है। इसका व्यवहार गिलगित की घाटी में होता है। शीना से ही विद्वान् कश्मीरी का उद्भव हुआ मानते है। कुछ विद्वान् शब्द-साम्य के आधार पर कश्मीरी को अन्य भारतीय आर्य-परिवार की भाषाओं की भाँति संस्कृत से उद्भूत मानते है। इस मान्यता को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त शोध की अपेक्षा है। मात्र शब्द-साम्य के आधार पर कश्मीरी को संस्कृत की संतति नहीं कहा जा सकता।

कुछ विद्वान् कश्मीरी का उद्भव पैशाची से मानते है। वास्तव मे, पैशाची और दरदी में कोई विशेष भिन्नता नहीं है[2]। पैशाची को पिशाचों की भाषा कहा गया है। पश्चिमोत्तर प्रदेश में रहने वाले वे अनार्य पिशाच कहलाते थे जिन्होने आर्य-संस्कृति को पूर्णरूपेण अपनाया नहीं था। कहा जाता है कि जिस समय महर्षि कश्यप की कृपा से वर्तमान कश्मीर का पानी निकाला गया, उस समय आस-पास की पहाड़ियों पर रहने वाली कई जातियों के लोग यहाँ आकर बस गये। ये जातियाँ अनार्य थी तथा इनमें नाग, यक्ष, पिशाच आदि प्रमुख थीं। उस समय यहाँ की भाषा पैशाची रही होगी। एक अन्य धारणा के अनुसार पिशाच मूलतः आर्य ही थे। जिस समय आर्य उत्तर-पश्चिम सीमा से भारत में प्रविष्ट हुए उस समय कुछ आर्य तो हिन्दूकुश, कपिशा, काफ़िरस्तान, गन्धार, चित्राल, कश्मीर के उत्तर तथा पामीर के दक्षिण में बिखर गये तथा कुछ नीचे सिन्धु-घाटी में व्यवस्थित हो गये। पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले आर्य पिशाच कहलाये जिन्हे बाद में अनार्य कहा गया क्योंकि वर्षों तक विच्छिन्न रहने के कारण वे आर्य संस्कृति को आत्मसात् नहीं कर पाये थे। जिस समय पिशाच कश्मीर में प्रविष्ट हुये उस समय यहाँ नागों का निवास था। नागों ने पिशाचों का विरोध नही किया। वे पिशाचों के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित करके रहने लगे। उस समय यहाँ की भाषा पैशाची रही होगी। इस भाषा में लिखी मात्र गुणढ्य की 'वृहत्कथा' का उल्लेख मिलता है जो दुर्भाग्यवश कालकवलित हो गई है।

१—'सरल भाषा विज्ञान' डा० मनमोहन गौतम, पृ० १५० ।

२—'पिशाची भाषा को दरद भाषा भी कहा जाता है। यह उचित ही मालूम पड़ता है। नाग लोग कश्मीर के मूल निवासी थे। पिशाच कश्मीर के उत्तर-पश्चिम से आये थे। दरदिस्तान इस दिशा में पड़ता है। अतएव भाषा का पैशाची से साम्य होना स्वाभाविक है।' 'राजतरंगिणी' भाष्यकार रघुनाथसिंह, पृ० परिशिष्ट ड १०३ ।

नाग-पिशाच-काल में भारत में रहने वाले आर्यों ने कश्मीर में प्रविष्ट होने के अनेक प्रयास किये थे। किन्तु दुर्गम मार्ग, अत्यधिक शीत तथा नागों व पिशाचों के खौफ़ के कारण वे कश्मीर मे प्रवेश न पा सके। कालांतर में अनेक प्रयत्नों के बाद आर्य कश्मीर में प्रस्थापित हो ही गये। दोनों जातियों का खूब मिश्रण हुआ। परिणाम-स्वरूप उस समय की कश्मीरी-संस्कृति 'नीलमत' का प्रभुत्व उखड़ गया और उस पर वैदिक-संस्कृति का प्रभाव पड़ने लगा। इस प्रभाव से तत्कालीन कश्मीरी भाषा (पैशाची) भी अछूती न रह सकी। उसमें असंख्य शब्द घुलमिल गये। मौर्यकाल में यह प्रभाव और भी गहन हो गया। आगे चलकर मुसलमानी प्रभाव से कश्मीरी में अरबी-फ़ारसी भाषाओं के विपुल शब्द घुलमिल गये। इस समय कश्मीरी के व्यवहृत रूप में संस्कृत, फ़ारसी, अरबी, उर्दू आदि भाषाओं के शब्दों का प्राधान्य है। अंग्रेजी भाषा के भी कई शब्द इसमें समा गये है।

लगभग ६०० वर्ष पूर्व कश्मीरी भाषा की लिपि शारदा थी। यह शारदा ब्राह्मी का ही कश्मीरी-संस्करण है। १४वी शताब्दी तक कश्मीरी के लिए इस लिपि का बराबर प्रयोग होता रहा। इसके पश्चात् मुसलमान शासको के शासनकाल में फ़ारसी के राजभाषा बनने से धीरे-धीरे कश्मीरी के लिए फ़ारसी लिपि का प्रयोग होने लगा। फलस्वरूप कश्मीरी दो लिपियो में लिखी जाने लगी, हिन्दुओं में शारदी लोकप्रिय थी और मुसलमानो में फ़ारसी। आगे चलकर मुसलमानी प्रभाव से फ़ारसी लिपि विशेष ज़ोर पकड़ने लगी तथा शारदा इने-गिने पण्डितों व पुरोहितों तक ही सीमित रह गई। वर्तमान समय में फ़ारसी लिपि को कश्मीरी ध्वनियों के अनुकूल बनाकर अपनाया जाता है। इस लिपि को राज्य-सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।

कश्मीरी को देवनागरी में लिपिवद्ध करने के लिए सफल प्रयोग हुए हैं और हो रहे हैं। कश्मीरी को नागरी मे लिपिवद्ध करने का श्रेय सर्वप्रथम श्रीकण्ठतोपखानी को है। इनके बाद श्रीजियालाल कौल जलाली तथा श्रीपृथ्वीनाथ पुष्प ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किये। देवनागरी की यही तो एक भारी विशेषता है कि वह किसी भी भाषा को सफलतापूर्वक लिपिवद्ध करने में सक्षम है। कश्मीरी के लिए नागरी लिपि के प्रयोग में थोड़ी सी कठिनाई वहाँ पेश आती है जहाँ ह्रस्व अ, उ, ओ, ए तथा दीर्घ आ, ऊ आदि सम्बन्धी विशिष्ट ध्वनियाँ स्पष्टतया अंकित नहीं हो पाती। परन्तु इसके लिए यदि निर्धारित मात्रा-चिह्नो का उचित ढंग से प्रयोग किया जाय तो उक्त समस्या काफी हद तक सरलतापूर्वक सुलझ जाती है। इसी प्रकार कश्मीरी के विशिष्ट ध्वनियों वाले तीन व्यंजन जो संघर्ष-स्पर्शी है, के लिए भी डैश का संकेत-चिह्न काम में लाया जा सकता है। कश्मीरी-देवनागरी वर्णमाला का विधान इस प्रकार का बनता है—

कश्मीरी - देवनागरी वर्णमाला

ई	इ	आ	अ	ऑ	ॲ
की	कि	का	क	कॉ	कॅ
ओ	औ	ऊ	उ	ऊ़	उ़
को	कौ	कू	कु	कू़	कु़
इ़	ए़	ऐ	ओ		
कि़	के़	के	को		

छ ژھ	च چ	ग گ	ख کھ	क ک
ट ٹ	ज़ ز	छ़ ژھ	च़ ژ	ज ج
द د	थ تھ	त ت	ड ڈ	ठ ٹھ
म م	ब ب	फ پھ	प پ	न ن
व و	ल ل	र ر	य ے	य ی
ह ہ	स س	श ش		

कश्मीरी की विशिट ध्वनियों, उनके उच्चारणों, उनके लिए निर्धारित मात्रा-चिह्नों, उनके संस्थानों आदि का सोदाहरण विवरण इस प्रकार है:—

विशिष्ट स्वर तथा मात्राएँ—

ॲ (ॅ) प्रसारित ओष्ठ, पश्च, ह्रस्व, अर्धसंवृत्त। जैसे, 'e' certainly में। लॅर = मकान, गॅर = घड़ी, नॅर = बाँह

ऑ (ॉ) प्रसारित ओष्ठ, पश्च, दीर्घ, अर्धसंवृत्त। जैसे, 'i' bird में या 'u' curd में। हॉर = मैना, लॉर = खीरा, मॉज = माँ।

उ़ (ु़) प्रसारित ओष्ठ, पश्च, ह्रस्व, संवृत्त। जैसे, 'ai' certain में या 'e' broken में। गु़थ = लहर, तु़र = चिथड़ा, बु़ = मैं

ऊ़ (ॖ) प्रसारित, ओष्ठ, पश्च, सवृत्त, दीर्घ। (तनिक दीर्घ-प्रयत्न के साथ)
तू़र = सर्दी, सू़त्य = साथ, कू़द्य = कैदी

ऑ (ॉ) गोलाकार ओष्ठ, पश्च, अर्धसंवृत्त, ह्रस्व। जैसे 'o' o'clock में। नॉट = घड़ा, सॉन = गहरा, नॉन = नंगा।

ॊ (ॊ) गोलाकार ओष्ठ, पश्च, अर्धसंवृत्त, ह्रस्व। अत्यल्प 'व' मिश्रित, जैसे, 'ua' equal में। (उच्चारण के समय ओष्ठों पर बाहर की ओर तनाव रहता है) सॊन = सोना, बॊन = नीचे, मॊण्ड = विधवा।

ॆ (ॆ) प्रसारित ओष्ठ, पश्च, अर्धसवृत्त, ह्रस्व जैसे 'e' best में।
शॆ = छह, मॆ = मुझे, वॆह = वैठो।

विशिष्ट व्यञ्जन—

च़ अघोष, अल्पप्राण, दंतमूलक, स्पर्श-संघर्षी च़्र = खटमल,
च़ूठ = सेब, च़ास = खाँसी

छ अघोष, महाप्राण, दंतमूलीय, स्पर्श-संघर्षी छ़ल = छल, लछ़ = धूल,
लांछ़ = नपुंसक

ज अघोष, महाप्राण, दंतमूलीय, स्पर्श-संघर्षी
जंग = टाँग, जान = परिचय, रज = रस्सी

(क) अत्यल्प इ (ि) के लिए शब्द के अंतिम वर्ण को अर्द्ध बनाकर उसके साथ 'य' जोड़कर काम चलाया गया है। जैसेः—पा़र्य, खा़स्य, वा़र्य, आदि।

(ख) कश्मीरी में प्रायः सघोष वर्णो यथा—घ, झ, ढ, ध, भ आदि का प्रयोग बिल्कुल नहीं होता। अतः इनका प्रयोग लिप्यन्तरण में नहीं हुआ है। धन को दन, धार को दार, भगवान को बगवान आदि लिखा गया है।

आशा है कि हिन्दी के पाठकों को उपर्युक्त विभिन्न मात्रा-चिह्नों की मदद से कश्मीरी का सही पाठ करने में सफलता मिल जायेगी।

'रामावतारचरित' की प्रकाशित प्रति में छन्दों की क्रमवार संख्या का कोई उल्लेख नही है। पाठको की सुविधा के लिए प्रत्येक कथा-शीर्षक के देवनागरी लिप्यन्तरण को पाँच-पाँच द्विपंक्तियो मे बाँटा गया है तथा हर पाँच पंक्तियों के अन्त में ५, १०, १५··· की संख्या दी गई है। अनुवाद में भी यही संख्या दी गई है।

भुवनवाणी ट्रस्ट, लखनऊ ने 'रामावतारचरित' को हिन्दी अनुवाद सहित देवनागरी लिपि में प्रकाशित करने का जो साहसपूर्ण कार्य अपने हाथ में लिया है उससे भारतीय साहित्य का व्यक्तित्व तो संपुष्ट होगा ही, कश्मीरी भाषा और साहित्य पर भी बहुत बड़ा उपकार होगा।

—डॉ० शिबनकृष्ण रैणा

[ॐ]

रामावतार-चरित

(कश्मीरी रामायण)

गोडनिच लीला

कंरुख जगि हुंज़ रछा कारी
रामु लंखिमन अवतारी आय ।
लंग्य वेज़ारस ज़गि हुन्द्य सारी
ज़गि हुन्दि पुछि तिम ज़नमस आय
ज़गि निशे गंल्य राखस सारी
रामु लंखिमन अवतारी आय ॥ १ ॥

सौरुख गूव्यन्दु गूवरदन दारी
प्रानु रूपु दोआरन बर दिनु आय
तंथ्य मंज़ वुछुख मादव मुरारी
रामु लंखिमन अवतारी आय ॥ २ ॥
ज़नख राज़ुन्य हांय वन हारी
दशरथ राज़स गाश क्याह आव
इष्ट दिनु पूरिन ब्रह्मन सारी
रामु लंखिमन अवतारी आय ॥ ३ ॥

जगत् की रक्षा करने वाले वे राम-लक्ष्मण धरती पर अवतरित हुए। जगत् के सभी प्राणी विचार-मग्न हो उठे कि उन्हीं के लिए उन्होंने (राम-लक्ष्मण ने) जन्म लिया। जगत् से राक्षसों का लोप हुआ—राम-लक्ष्मण धरती पर अवतरित हुए। १ भक्तों ने गोवर्धनधारी गोविन्द का स्मरण किया तथा अपनी काया के (नौ) द्वारों को बन्द करके मन के भीतर माधव-मुरारी के दर्शन कर लिए। राम-लक्ष्मण धरती पर अवतरित हुए। २ हे राजा जनक के (वन) बाग़ की मैना (पुत्री)! तुमसे राजा दशरथ के घर प्रकाश हुआ और उसने (तुझे घर में लाकर) इस इष्ट (शुभ) दिन पर सकल ब्राह्मणों को सम्मानित किया। राम-लक्ष्मण धरती पर अवतरित हुए। ३ राजा दशरथ से अनुरोध कर कैकेयी ने भरत के

कंरिथ राज़स केकी ज़ारी
वोंनुनस राज वरथस थाव
वुरज़ु जामु वंलिथ कंरुख तयारी
रामु लंखिमन अवतारी आय ॥ ४ ॥

रुप सुत्य छख रुपु कोंमारी
शक्च़ु सुत्य मुकति रूफ वखतेंन हाव
मनस कुन कन यिमव दारी
रामु लंखिमन अवतारी आय ॥ ५ ॥

वोंपवास कंर्य कंर्य वोंव्य वनु च़ारी
सारिय वोंपुदीशुक थोवुक नाव
च़ोंदहन वंरियन व्रथ तिमव दारी
रामु लंखिमन अवतारी आय ॥ ६ ॥

त्रावुव पानो न्यथ अहंकारी
अहंकारस नाश प्यव नाव
नेंशफल कंर्य सारिय तंम्य अहंकारी
रामु लंखिमन अवतारी आय ॥ ७ ॥

च़ेंथ पवुनुच रेह कमायि दारी
मगन मो गछ़ अवगुन सन्दुराव
गोंरु रुसतेंन पद कमव दारी
रामु लंखिमन अवतारी आय ॥ ८ ॥

लिए राज्य मांगा और भोजपत्र के वस्त्र पहनकर उन्होंने (राम-लक्ष्मण ने) वन जाने की तैयारी की। राम-लक्ष्मण धरती पर अवतरित हुए। ४ पृथ्वी से जन्मी हे रूपसी कुमारी! शक्ति-रूप में अपना मुक्ति-रूप उन भक्तों को दिखा जो अपने मन में (तेरी ओर) ध्यान लगाये हुए हैं। राम-लक्ष्मण धरती पर अवतरित हुए। ५ उपवास करते-करते तथा वन में फिरते-फिरते वे वनचारी हो गये और सभी उपदेशों का पालन उन्होंने किया। चौदह वर्षों तक उन्होंने इस व्रत को धारण किया। राम-लक्ष्मण धरती पर अवतरित हुए। ६ हे मन! तू अहंकार की भावना को त्याग, क्योंकि अहंकार का दूसरा नाम ही नाश है। (इसीलिए) उन्होंने भी सभी अहंकारियों को निष्फल कर दिया। राम-लक्ष्मण धरती पर अवतरित हुए। ७ इस सुन्दर काया में स्थित चित्त की पवनाग्नि द्वारा

रामायनुक मतलब

नमो नमो गज़यन्दराय
ईकु दन्तुदराय च्र ।
नमा ईशरु पुत्राय
श्री गनेशाय नमोनमा ।।

गौडन्य सांपुन शरन राज़ु गनीशस ।
करान युस छु रख्या यथ मनशि लूकस ।।
गौडन्य छु आदि गनपत बेयि कौमार ।
सौरुन च्रुय सु दिलुक कासी अन्दुकार ।।
दोयुम कर सतगोरस पनुनिस नमस्कार ।
दियी सुय गोर पनुन येमि बवुसरे तार ।।

सदाशिवु अन च्रु असि अन्दुकारेन गाश ।
सिरी छुख नौन तु ओन क्या ज़ानि प्रकाश ।।
वुछन गछ़ क्याह यि वंछ़ आकाशु वांनी ।
दुय च्रंज लंज यिनि नंव पा'र्य ज़ांनी ।। ५ ।।

विना संलिप्त हुये अपने अवगुणों को भस्म कर डाला । (इसके अतिरिक्त अपने गुरु का भी ध्यान कर क्योंकि) विना गुरु (की सहायता) के ऊँचे पद तक कौन पहुँच पाया है—राम-लक्ष्मण धरती पर अवतरित हुए । ८

रामायण का मतलब

नमो नमो गजेन्द्राय
एक दन्तधराय च
नमो ईश्वर-पुत्राय
श्रीगणेशाय नमो नमः ।।

सर्वप्रथम श्रीगणेश की शरण में जायें जो इस मनुष्य-लोक की रक्षा करते हैं । पहले गणेश और फिर कुमार (षडानन) का स्थान आता है अतः उन्हीं का स्मरण करें, क्योंकि वही दिल से अन्धकार दूर करेंगे । दूसरा, अपने सद्गुरु को नमस्कार करें जो इस भवसागर से पार उतारेंगे । हे सदाशिव ! आप हम अन्धकार-वासियों (अज्ञानियों) को प्रकाश दें । आप साक्षात् सूर्य हैं, और हम अन्धे भला प्रकाश क्या जानें ? देखिए, यह कैसी आकाशवाणी हुई— द्वैतभावना भाग गई और नई विवेकशीलता का उदय हुआ ।। ५ ।। (रे मनुष्य !) तू आँखों से देख और प्रेममग्न

अँछिव वुछ लोलु च्यव सतुक्यव कनव बोज़ ।
नमिथ वेह वुछ वनन क्याह् शिव शंमिथ रोज़ ।।
हेंछिथ वूज़िथ वुछिथ लागुन पज़्या ओंन ।
फंलिस छुय ह्योंल ह्योंलिस छुस सांपुनन गोंन ।।
ज़ु दोंह सोंतन्य ग़नीमत छय जवांनी ।
ति लोनख यि ववख ए यारि जांनी ।।
पनुन दम छुय ग़नीमत बोज़ रुत्र कथ ।
छु ब्रूठ्युम ब्रांठ रोज़न छुय पंत्युम पथ ।।
रंतुन छुय दम पनुन खारुन तु वालुन ।
तम्युक क़ीमत मनुक मंकच्चार गालुन ।। १० ।।
रंतुन रंछुरुन सोंबोंज़ सुत्य सुह् करुन येल ।
थवुस वर दारि दिथ गरदनि छुनुस जेल ।।
रंतुन छुय दम पनुन सु रथि खारुन ।
रंतुन येंलि राविह वेहांसिल छु छ्रारुन ।।
छेंलिथ खारुन तु वालुन छुय लगन रस ।
संवूदकरसं योंह्य छुय संगि फारस ।।
कदुर येंम्य ज़ान्य पानस निशि तिमन दोंन ।
सु योंदवय आसि शस्तुर सांपन्यस सोंन ।।

होकर सत्य के कानों से सुन । संयम से बैठकर (इच्छाओं का शमन कर) देख शिव क्या कर रहे हैं । सीखकर, सुनकर तथा देखकर भी अन्धा क्यों बनता है ? दाने से वाली, वाली से पूली और पूली से गठरी बनती है । जवानी के इन दो वसंती दिनों को ग़नीमत जान । ऐ जाने-यार । (प्यारे दोस्त) ! यहाँ जो बोओगे वही काटोगे । अपने दम (साँसों) को ग़नीमत जान और यह पुण्य-कथा सुन, क्योंकि (मृत्यु हो जाने पर) यहाँ आगे का आगे और पीछे का पीछे ही रह जायेगा । तेरा दम रत्न-तुल्य है, उसे ऊपर और नीचे लेता जा तथा मन से कालुष्य को गलाकर उसकी क़ीमत चुकाता जा ।। १० ।। इस रत्न को संभालकर रख और सुबुद्धि से (मनरूपी) सिंह को वश में कर । द्वार को बन्द कर दे और उसकी गर्दन में फंदा डाल दे । तेरा दम (जीवन) रत्न-तुल्य है, उसे सद्गति देना तेरा कर्त्तव्य है । यदि यह रत्न खो गया तो उसे दोबारा हासिल करना असम्भव है । मोह-माया को छोड़ तथा स्वच्छ व पवित्र विचारों से उसको सँवार, क्योंकि सुविचार ही संगे-फ़ारस है । यदि तू इन (सुविचारों) की क़द्र जाने तो लोहा भी सोना बन जायेगा । अपने

हृदय गटु कुठ पनुन युस तथ अन्दर व्राव ।
सु अमर्यथ च्यथ अथस क्यथ लाल ह्यथ द्राव ।। १५ ।।
छुना अफ़सूस मौत गव वौंन्दुकस कुन ।
ति बूज़िथ छुनु वुछन वौन्य आतमस कुन ।।
पंजर पौलादुय ब्रह्मनु मौर रछुन ज़ान ।
खुटन गछि सीर शमराविथ रटुन प्रान ।।
गछी हासिल यि केंछाह यछ च्रे आसी ।
दियि दरशुन दिलु निश व्याद कासी ।।
यि मन छुय पाँ फ्योराह आईनु छुस नाव ।
तुलुस ज़ंगारु लारान यियी दरियाव ।।
गछुन आसि च्रे यौत वातुनावी ।
गुप्थ पातालु तलु आकाश हावी ।। २० ।।
थवुस बर दारि दिथ छुख पानु देवार ।
वुछख वागस अन्दर क्याह गुल तु गुलज़ार ।।
त्रपिथ नवदार थव प्रज़लुन ह्यी दूप ।
च्रली मकच्चर तु डेशख वेशनुसुन्द रूप ।।

हृदय की काल-कोठरी में जो प्रविष्ट हुआ वह अमृत पीकर तथा हाथ में लाल-जवाहर लेकर बाहर निकला ।। १५ ।। हाय अफ़सोस ! यह (तेरा) दिल न जाने किस पर विभ्रमित हो गया । यह समझते हुए भी (तू) अब आत्मा की ओर देखता नहीं है । फ़ौलाद के समान (सुदृढ़) पिंजरे रूपी अपने हृदयकक्ष की रक्षा कर उसमें रहस्य की बातों को छिपा कर रखना चाहिए और प्राणों को वश में करना चाहिए । जो भी तेरी इच्छाएँ होंगी वे पूर्ण हो जायेंगी तथा दर्शन देकर (वे) तेरे दिल के सारे दुःख दूर कर देंगे । यह मन पानी का एक क़तरा है जिसका नाम आईना है । (रे मनुष्य !) तू इस पर से कलुषता रूपी जंग उतार दे और फ़िर देख कैसे एक दरिया उमड़ पड़ता है । जहाँ भी तुझे जाना होगा वहाँ तुझे यह पहुँचा देगा, गुप्त पाताल में भी आकाश दिखायेगा ।। २० ।। इसके द्वार व खिड़कियाँ बन्द कर और अपनी काया की दीवार से इसकी रक्षा कर (फिर देख) तेरे भीतर के बाग़ में कैसे-कैसे गुल व गुलजार खिलते हैं । अपने नौ द्वारों को बन्द कर दे फिर तेरे अन्दर का दीप प्रज्वलित होने लगेगा । मन की मैल दूर हो जायेगी तथा विष्णु के रूप के दर्शन तुझे होंगे । तू तो कुछ भी नहीं है और इसी 'कुछ भी नहीं' को एक संज्ञा मिली है—यह तुझे ज्ञात हो जायेगा । तेरा सारा अज्ञान दूर हो जायेगा—यह बात भी

च़ु नो छुख कँह कँहस कँहछ़ा लोँगुय नाव ।
मशी अज्ञान सोरुय कथ च्यतस थाव ।।
पलन प्यठ रूद ज़न वँड व्याद आसी ।
च़ली येँलि रामु रामु वोँन्दह वासी ।।
समय डीशित मु सांपुन शादो ग़मगीन ।
ग़मो शांदी वुछख आंयीन व आंयीन ।। २५ ।।

वुछख समसार क्याह् व्रम वांज़य हावन ।
असोँर वरनु मनोशन खोच़ुनावन ।।
असथ वँन्य वँन्य सु योँततामत निवन दिल ।
पतो लाकन वुछन तति कँह नु हांसिल ।।
म कर अपराद कथ थाव याद सथ ज़ान ।
असतु निशि च़ल मनशि सुन्द फल छु सन्तान ।।
अँछिव वुछ वोज़ कनव तस राज़ुह सुन्द्य कार ।
येँमिस राज़स गोँवुर ज़ामुत छु अवतार ।।
सपुन लाचार सु शापस निशि च़ुह थव कन ।
म गछ़ यँच़ तेज़ कर परहेज़ पापन ।। ३० ।।

दग़ावांज़ी छ यथ तथ खोच़ पथ रोज़ ।
दविगथ सथ सतुच वथ छ़ार कथ वोज़ ।।

तू याद रख । भले ही तेरा दुःख कितना बड़ा क्यों न हो, वह तुरन्त ही दूर हो जायेगा यदि तू हृदय से राम का स्मरण करे । (अनुकूल व प्रतिकूल) समय को देखकर कभी शादोग़मगीं मत होना (सुख में प्रफुल्लित और दुःख में उदास मत होना) क्योंकि सुख और दुःख हमेशा साथ-साथ चलते हैं ।। २५ ।। (तू देखेगा कि) संसार (अपनी मोहिनी माया द्वारा) कैसे-कैसे छल-प्रपंच रचता है और असुर-भेस में मनुष्यों को कैसे-डराता है । असत्य कहलवा कर वह कैसे उसका दिल चुरा लेता है (लुभाता है) । परन्तु, आखिरकार इस मोहिनी-माया से मिलना कुछ नहीं है—यह तू जान ले । तू अपराध (पाप) न कर और इस बात को सत्य जानकर याद रख । असत्य से दूर भाग क्योंकि अच्छे कर्मों से ही मनुष्य को अच्छी सन्तान प्राप्त होती है । आँखों से देख और कानों से उस राजा की कथा सुन जिसके यहाँ पुत्र रूपी अवतार ने जन्म लिया था । अति की अवहेलना और पापों से परहेज़ कर ।। ३० ।। जिस काम में दग़ा-वाज़ी हो उससे डर और उससे पीछे हट । दैवगति को सत्य मान और सत्य

हलब शीशस च़ली बोज़ुनु सुतिन खय।
असथ त्रांविथ सतस सुतिन गछ़ी लय॥
करुन अखराज राख्यस बौंज़ निशि मन।
शरन गछ़ ईशरस यिथु गव विबीशन॥
म तस खोच़ुस सतस सुतिन सपन पूर।
असथ योंद बोय आसी दूर च़ल दूर॥
पोंज़ अय बेग़ानु आसी रथ वन्दुस रथ।
करी प्रथ जायि पंज़्यपांठिन रफ़ाक़थ॥ ३५॥

सतुच बर यछ़ सदाशिव छु सतस सुत्य।
च़ु सथ सांपुन वुछ़न गछ़ यिन गछ़न कुत्य॥
सोंयछ़ सीता सतुक सोंथ रामु लंख्यमन।
ह्यमथ हलूमत असत रावुन छु दोंरज़न॥
सु रावुन छु तंमिस निश रूद सोरुय।
सु पानय रामुच़न्द्रन मन्दु छोवुय॥
शमिथ शमशेर वांरागुच करुन तेज़।
च़टुस गरदन छु दुश्मन कर च़ु परहेज़॥

के पथ को ढूँढ। तेरे ज़ंग खाये मन-दर्पण की मैल (यह कहानी) सुनने पर दूर हो जायेगी और असत्य छोड़कर सत्य के प्रति तेरी लगन बढ़ेगी। अपने मन को राक्षसी प्रवृत्तियों से रिक्त कर और ईश्वर की शरण में चला जा जैसे विभीषण गये थे। तू उन (राक्षसी-शक्तियों) से न डर और सत्य के पथ से विचलित न हो। असत्य पर यदि अपना भाई भी हो तो उससे भी दूर भाग दूर[1]। सत्य पर चलने वाला यदि (अपना न होकर) बेग़ाना भी हो तो उस पर बलिहारी जाओ बलिहारी, क्योंकि वह हर समय (हर स्थान पर) वास्तव में, तेरी रफ़ाक़त (वफ़ादारी) करेगा॥ ३५॥ सत्य की सदैव इच्छा कर क्योंकि सदाशिव भी सत्य के ही साथी हैं। (यदि) तू सत्य का अनुसरण करे तो (देख लेना) तेरे आगे-पीछे कितने फिरेंगे। सु+इच्छा सीता है, सत्य का सेतु राम व लक्ष्मण हैं, हिम्मत हनुमान है और असत्य रूपी दुर्जन रावण है। उस (पराक्रमी) रावण का सारा (वैभव) यहीं पर रह गया तथा रामचन्द्र के हाथों (बुरी तरह से) लज्जित हो गया। वैराग्य (आत्मज्ञान) रूपी शमशेर को तू तेज़ कर और इससे असत्य (रूपी असुर) की गर्दन

1 रावण की ओर संकेत है।

ख्यमा खंजर गंडिथ लंकायि छ्हारुन ।
सिपर शौबु वासना राख्युस छु मारुन ॥ ४० ॥

ग्यानुक्य जामु छि सामानु रुत्य गौन ।
अंगुद सुग्रीव ज़ामूवन व्यबीशन ॥
प्रकृत कीकी सौयछ ज़ानुन सौमैत्रा ।
दरुम दशरथ कौशल्या करमु लीखा ॥
जरा संतोषि दिल वौपदेश वनवास ।
गछ्रिथ अदु राम लूबुचि लांकि करि डास ॥
यि दीवीदार छुय गरुवोल लागुस ।
स्यठाह् कर रांछ्य राख्युस युथ न ज़ाग्यस ॥
करख नय रांछ्य ज़ागिथ यियी रावुन ।
छ्रोटी ठोकुरकुठ प्येयी अदु नावुन ॥ ४५ ॥

छि कामुच कौल तुरुन्य त्रख दिथ करुन वन्द ।
व्यछारुचि वति पख ज़ह्रस गछ्री क़न्द ॥

काट डाल; क्योंकि वह (वहुत वड़ा) दुश्मन है अतः उससे परहेज कर । क्षमा रूपी खंजर को (कमर में) वाँधकर लंका में प्रविष्ट होना है तथा सिपर (ढाल) रूपी शुभ वासना से राक्षस (रावण) को मारना है ॥ ४० ॥ (श्रेष्ठ) ज्ञान की विशेषताएँ श्रेष्ठ गुण हैं और इनके प्रतीक अंगद, सुग्रीव, जांबवान् और विभीषण हैं । कैकेयी को मानस और सुमित्रा को सु+इच्छा जान तथा दशरथ को धर्म और कौशल्या को कर्म का लेख जान । संतोष, उपदेश व वनवास (त्याग)—(इन सोपानों) को पार करने के वाद ही राम, लोभ रूपी लंका को नष्ट करने में सफल हुए थे । अपनी देह को एक देवी-द्वार[1] जान और एक गृहस्थी (पुजारी) की तरह इसकी देखभाल कर । इसकी तू सर्तक होकर (खूब) रक्षा कर ताकि कोई राक्षस इस पर कुदृष्टि न डाले । यदि तू इसकी रक्षा नही करेगा तो मौक़ा देखकर रावण आ जायेगा और तेरा देवी-द्वार अपवित्र हो जायेगा ॥ ४५ ॥ फिर तुझे उसे दुवारा धोना पड़ेगा । काम-वासना की नदिया काफ़ी ठण्डी है अतः तू उसके उद्‌गम-स्थल पर पत्थर रखकर उसे वन्द कर दे । तू विचारशीलता के मार्ग पर चल, इससे जहर भी क़ंद (मिश्री) बन जायेगा । अपने देव को वीर समझ (यानी उसकी सामर्थ्य पर विश्वास कर). और मन के मैल रूपी असुर का गुरु-शब्द (पर अवस्थित) तीर से भेदन कर ।

१ इष्टदेवी का स्थापना-गृह ।

वनय कथ बोज़ दय ज़ानुन पनुन वीर ।
असुर मॅलछ्नर मनुक गॅरुशब्द दिस तीर ॥
अनुन येल गॅार पनुन सु हावी छलु हेर ।
खसख आकाश्य हृदिकि कोचि किन फेर ॥
यि केंह् रूदुय ति छुय पानस निशे छार ।
लबख तेलि येलि छ्रॅटिथ त्रावख अहंकार ॥
मंथ मन्दूदरा छय इंतिज़ारस ।
म कर मशरवु वुछुन सतकिस शहारस ॥ ५० ॥

सुररावुन सूरु सूत्य अहिनु ज़न मन ।
छ्रौतुर बॉज़ वेश्नु डीशिथ मोख्त सांपनुन ॥
गॅारव गंण्डमुत्र छि वथ कथ वोज़ कन दार ।
छु क्याह् रोज़ुन छु बोज़ुन रामावतार ॥
ति बोज़नु सूत्य वॉन्दस आनन्द आसी ।
यि कथ रठ याद ईशर व्याद कासी ॥
ति ज़ानख पानु दयुगत क्या छ्रेह हावी ।
कत्युक ओंसुख छ्रेह कोंत-कोंत वातुनावी ॥ ५४ ॥

पारवती जी हुन्द समवाद शिवुनाथ जियस सूत्य

दयान नारद रेशी बोज़ुन ज़ि ब्रह्मा ।
सदाशिव देवता ह्यथ ओस यकजा ॥

अपने गुरु की शरण में जा, वही तुझे मुक्ति की सीढ़ी दिखायेगा, (जिससे) तू हृदय के कूचे से होता हुआ ऊपर (शून्य) आकाश पर चढ़ जायेगा। जो शेष बचेगा उसे अपने पास मे ढूँढ, मगर इसे तभी ढूँढ पायेगा जब तू अहंकार को त्याग दे। मन रूपी मंदोदरी तेरा इंतजार कर रही है। तू भूल न कर और उसे सत्य के शहर में देख ॥ ५० ॥ अपने मन रूपी आइने को तू (सत्य की) राख से मांज। तब तुझे चतुर्भुज विष्णु के दर्शन होंगे और तू मुक्त हो जायगा। गुरुओं ने एक सत्पथ तैयार किया है, ज़रा कान लगाकर सुन। [यह सत्पथ है 'रामावतार' की कथा का] यहाँ कुछ भी नहीं रहेगा, बस रहेगी रामावतार की कथा। इसे सुनकर हृदय आनन्दित हो जायेगा—यह बात तू याद रख, इससे तेरी सारी दुविधाएँ मिट जायेंगी। तू स्वयं जान जायेगा कि यह कथा तुझे कहाँ से कहाँ पहुँचायेगी ॥ ५४ ॥

प्रुछुस दीविथि शिवजी पोंज़ यि वन ।
सपनि क्या हाल कलियोंगु क्यन मनोशन ॥
तिम आसन दरमुनिश वाराह अदरमी ।
दरम त्रावन स्यठाह लागन कोंकरमी ॥
गछ़न शापन अन्दर सोरिय गिरफ़तार ।
बोडन पापन अन्दर किथु पांठ्य छुख तार ॥
गछ़न पापन अन्दर सोरिय ज़गथ बन्द ।
दज़न छस किथु वुछन तिम सोंख तु आनंद ॥ ५ ॥
मे छुम तलवास तिम किथु पांठ्य मोंकुलन ।
तिमन आस्यम स्यठाह गोमुत मलुत मन ॥
वननि दीविथि कुन लोंग यि सदाशिव ।
मोंकुलन तिम खोंशी सुतिन ब्रुह कन थव ॥
वननि दीविय लोंग शिवजी कनव बोज़ ।
मोंकलन तिम दोंखु निश ब्रुह सुखित रोज़ ॥
समय गछ़ि युथ ज़ि कांसि रोज़ि नु सथ याद ।
अमा पानस करन तिम रामु सुन्द नाद ॥

पार्वतीजी का संवाद शिवजी के साथ

कहते हैं नारद ऋषि (एक दिन) ब्रह्मा से कहने लगे कि सुनिए, सदाशिव (एक बार) देवी (पार्वती) के साथ इकट्ठे बैठे थे। देवी ने शिव से पूछा, सत्य कहिए कि कलियुग के मनुष्य का क्या हाल होगा। (सुना है) वे अत्यधिक अधर्मी होंगे तथा धर्म का त्यागकर वे कुकर्मी बनेंगे। (सभी) शापों में गिरफ़्तार हो जायेंगे फिर पापों में डूबे इन (कलियुग-वासियों) का निस्तार कैसे होगा ? सारा जगत् पापों में जकड़ जायेगा, फिर भला उन्हें सुख-आनन्द की प्राप्ति कैसे होगी—(इसी दु:ख से) मैं (मन-ही-मन) जल रही हूँ। मन मेरा उद्विग्न हो रहा है कि ये (बेचारे) मुक्त कैसे हो सकेंगे (क्योंकि) इनका मन तो (हे मेरे प्राणपति !) बहुत ही संतप्त रहा होगा ॥ ५ ॥ (इस पर) सदाशिव देवी से कहने लगे—वे ख़ुशी-ख़ुशी मुक्त होंगे (तू चिन्ता न कर), और मेरी बात ध्यान से सुन। वे आगे कहने लगे—उनके सभी दु:ख (निश्चय ही) दूर हो जायेंगे तू ज़रा मेरी बात ध्यान से सुन और मन में ख़ुशी ला। समय ऐसा आयेगा जब किसी को भी सत्य याद न रहेगा। (ऐसे में) कितने ही दु:ख के मारे राम को पुकारेंगे और यह बात तू अपने हृदय में बिठा दे कि उसका नाम लेने पर

वॊन्दस कथ थाव तॊम्यसुन्द नाव ह्यन कॖत्य ।
मॊकुलन नारह् नरकुकि निश तमि सॖत्य ॥ १० ॥
अगॉफिल यिम मनश ह्यन रामु सुन्द नाव ।
तिमन सोरुय मनुक मलॖच्रर छलनु आव ॥
अदय कांछाह सॊर्यस मनु किन्य हुर्यस आये ।
दियस दरशुन नियस वैकुंठ छस जाये ॥
अदय कांह लोलु किन्य परि रामु रामु ।
सु प्रावि ज़िन्दु तनय सॊरगु जामु ॥
तसुन्दि दरशनु सॖत्य परज़ली पछिम पूर ।
तिथय यिथु दीपु सॖत्य गछि अनिगटु दूर ॥
कनव युस बोज़ि बूज़िथ श्रोछि तस मन ।
गछ्यस छ्यतु नार नरकुन तन बन्यस सॊन ॥ १५ ॥
अंछिव युस डेशि तस चेश्मन यियस गाश ।
तिथय यिथु पांठ्य सिरियस आसि प्रकाश ॥
थवन यिम कन तु बूज़िथ मन गछ्यख साफ ।
गल्यख राख्युस मनुक सोरुय ज्रल्यख पाप ॥

वे (भयंकर से भयंकर) नरकाग्नि से भी मुक्ति प्राप्त कर लेंगे। जो ग़ाफ़िल मन (असावधानी) से भी राम का स्मरण करेंगे, उनके मन का सारा मैल धुल जायेगा ॥ १० ॥ और जो मन से (सावधानीपूर्वक) स्मरण करेंगे वे चिरायु होंगे, तथा राम स्वयं दर्शन देकर उन्हें वैकुण्ठ ले जायेंगे। यदि कोई (अनन्य मन) प्रेमभाव से उनका स्मरण करेगा तो उसे (भूलोक पर ही) जीते जी सभी स्वर्गिक आनन्द प्राप्त हो जायेंगे। उनके दर्शन से पूर्व व पश्चिम की दिशाएँ वैसे ही आलोकित (प्रज्वलित) हो उठेंगी जैसे दीपक से अँधेरा दूर हो जाता है। जो (केवल) कानों से (रामनाम का) श्रवण करेगा उसका मन (एकदम) पवित्र हो जायेगा, भड़कती हुई पापाग्नि शान्त हो जायेगी तथा उसका तन सोना बन जायेगा। जो (उन्हें) आँखों से देखेगा उसकी आँखों को वैसी ही ज्योति प्राप्त होगी जैसे सूर्य के प्रकाश में है ॥ १५ ॥ जो (मनुष्य) ध्यान से इस कथा को सुनेंगे उनका मन निर्मल हो जायेगा तथा उनके मन से पाप रूपी राक्षस भाग जायेगा। (राम-नाम की ऐसी महिमा सुनने पर) देवी कहने लगी—हे शिवजी! (कृपापूर्वक) मुझे रामावतार की महिमा व कारण तथा प्रकट होने की (पूरी) कहानी सुनाइए। तब शिवजी बोले (सुनो देवि!) जब रावण ने (घोर) तप करके विभिन्न लोगों को जीतकर

दोंपुस दीवियि शिवुजी वोज़ु नावुम ।
लम्युक कारन तसुन्द प्रकव्रार हावुम ॥
दोंपुस तंम्य येलि सु रावुन गव नमूदार ।
कंरिथ तफ लूख ज़ीनिन यंच कंरिन कार ॥
मोंगुन ऋथ सारनी हुंदि दस्तु मोकूफ ।
मोंठुस नतु संहल ज़ोनुन मनशि सुन्द रूफ ॥ २० ॥
वननि लोंग शिव मोंखस तसुन्दिस नमस्कार ।
सों लंका रावनन नियि यंच्र कंरिन कार ॥
तमोगोंन रावनन यि कोंर बन्दाना ।
मे पोश्यम कुस जि नेरेम पांन्ग पाना ॥
दयूगथ कथ छि सथ येलि संहल ज़ांनिन ।
कोंकाम्यव सूत्य नठ वूतुरांच्र च्रांनिन ॥
नटनि लंज्य बूम यि दीवी ह्योतुन वय ।
मरन ज़लवुन शरन नारायनस गय ॥
कंरिन यंच्रकार प्रथवी आयि लाचार ।
वदान वेंशनस निशन गंयि यंच्रिवंनिन ज़ार ॥ २५ ॥

यह अमरत्व प्राप्त कर लिया कि वह किसी के द्वारा भी मृत्यु को प्राप्त न हो, तो वह (निभर्य) होकर ऐसे-वैसे (अधम से अधम) कार्य करने लगा, तथा (अहंकार वश) मनुष्य-रूप (मनुष्य-योनि) की सर्वोत्कृष्टता (शक्ति) को भूल बैठा। वे (शिव) आगे कहने लगे—उसके रूप (भक्तिभाव) को नमस्कार है जिसके कारण उसने लंकापुरी के वैभव को अपना बना लिया ॥ २० ॥ किन्तु तमोगुण के वशीभूत होकर उस (मेरे भक्त) रावण ने यह संकल्प कर लिया कि भला (तीनों लोकों में) मेरा मुक़ाबला कौन कर सकता है और मेरी बराबरी कौन कर सकता है। दैवगति के सत्य (विधान) को उसने सरल जान लिया तथा अपने दुष्कृत्यों द्वारा पृथ्वी को कँपा दिया। (तब) देवी-वसुन्धरा थरथराने लगी और वह भय से गिरती-काँपती हुई नारायण (विष्णु) की शरण में गई। उस (रावण) ने ऐसे कुकर्म किये जिससे पृथ्वी लाचार (सत्रस्त) हो गई तथा वह रोते हुए विष्णु के पास अपनी व्यथा कहने लगी। तब विष्णु ने पृथ्वी से कहा—(चिन्ता न कर) वापिस चली जा, मुझे रावण का अन्त करने के लिए जन्म लेना होगा। मुझे मनुष्य-रूप धारण कर रावण का वध करना पड़ेगा ॥ २५ ॥ और तुझे भी योग-मायासे काम लेना होगा। मैं राम का रूप धारण कर लूंगा और तू सीता का रूप धारण करेगी।

दोंपुस वेशनन व्रुह गछ छुम ज़नम दारुन।
पेयम रावुन मनुशि संदि वरनु मारुन॥
गछी लागुन्य व्रे पानस यूगु माया।
ब व्यशन राम लागय छख व्रुह सीता॥
करम करिह राज़ुह दशरथ छुस नु सन्तान।
ज़्यमय तस निश ह्यमय अदु रावनस प्रान॥
समिथ सॉरिय त्रिकूटी दीवताह यिम।
ज़नुम दारन तु वांदर सॉप्यन्यन तिम॥
यितुय बूज़िथ सपुन्य पृथवी स्यठाह शाद।
वुछान आंस कर थव्यम नेत्रन अन्दर पाद॥
दोंपुस दीवियि ही शिवजी दयाकर।
वनुम अवतार दूयवु नेर्‌यम मनुक शर॥ ३१॥

बाल काण्ड

श्रीरामसुन्द ज़नम

वननि लोंग राज़ु दशरथ ओस राज़ा।
मुदा मॉलिक मलूकुक चारुसाज़ा॥
सतूगुन शक्त बोंड शिव ओस मानन।
स्यठा रुत्रु कामि करि तंम्य बाग्यवानन॥

राजा दशरथ सन्तानकामेष्टि हेतु कर्म (यज्ञ) करेगा और मैं उसके यहाँ जन्म लेकर रावण के प्राण हर लूँगा। (इसके अतिरिक्त) सभी त्रिकूटी देवता (मेरे सहयोगी देवता) वानर-भेस धारण कर अवतरित होंगे। यह सुनकर पृथ्वी शाद (प्रसन्न) हो गई और (उस घड़ी की) प्रतीक्षा करने लगी कि कब उसके नेत्रों पर वे (राम) अपने चरण रखें। तब देवी ने कहा—हे शिवजी! दया कीजिए और मुझे रामावतार की आगे की कथा सुनाइए ताकि मेरे हृदय का दारुण संताप दूर हो जाये॥ ३०॥

बाल काण्ड

श्रीराम का जन्म

वे कहने लगे—दशरथ नाम का एक राजा था जो सकल संसार का मालिक व पालनहार था। सत्त्वगुण से युक्त वह राजा शिव का

तमिस आंस दर अजोदया जाये आसन ।
ग़रीवन ओस वन्दुक ग़म गोसु कासन ।।
वाँथन सुलि प्रथ प्रवातन न्यथ करन श्रान ।
रछन जोग्यन गोसान्यन सुत्य थवन ज़ान ।।
गोंबुर ओसुस नु च्रच्रल ओस तस मन ।
तिथय यिथ सिरियि पानिस प्यठ छु नांपन ।। ५ ।।

स्यठा रातस दोंह्स लीला करान ओस ।
शरन सांपनुन नारायन पानु टोठ्योस ।।
दपान सोंपनस अन्दर तस द्युतुन दर्शुन ।
दोंपुन तस गछ़ मे छुम ज़नमस च्रेनिश युन ।।
लगि न बावुन सोंपुन रावुन व गालन ।
सु गालिथ शेंख वायन लांख ज़ालन ।।
सोंपुन डीशिथ सु येलि वोंथ खुशी सान ।
वशिस्टस निश गव टोठ्योम नारान ।।
दोंपुन तस कुन गोंछुम आसुन मे सन्तान ।
दोंपुस तंम्य कर च्रुह जग द्यवु वोज़ि नारान ।। १० ।।

अनन्य भक्त था। इस भाग्यवान् राजा ने (प्रजा के हित के लिए) अनेक सत्कार्य किये। उसकी एक नगरी थी जिसका नाम अयोध्या था। वह (प्रजावत्सल) राजा ग़रीवों के दिलों से ग़म व दुःखों को दूर करने वाला था। नित्य प्रभात-वेला में जागकर स्नानादि करता तथा साधु-सन्तों व योगियों के पास आशीर्वाद लेने जाता। उसके कोई सन्तान न थी। इस अभाव के कारण उसका मन सदैव चंचल रहता, वैसे ही जैसे पानी में सूर्य। वह रात-दिन भगवद्भक्ति में तल्लीन रहता ।। ५ ।। और आख़िर एक रात (स्वप्न में) नारायण ने उस पर कृपा की, तथा दर्शन देकर कहा कि मैं तुम्हारे यहाँ जन्म ले रहा हूँ। इस स्वप्न की वात किसी से मत कहना। मुझे रावण का अन्त करके उसकी लंकापुरी को जला (कर ख़ाक कर) देना है। स्वप्न देखकर वह ख़ुशी के साथ उठ खड़ा हुआ और वसिष्ठ के पास जाकर कहने लगा कि (आज) नारायण मुझ पर प्रसन्न हुए हैं तथा मेरी सन्तान-कामना पूरी होती दिखाई दे रही है। (इस पर) उसने (वसिष्ठ ने) कहा—आप एक यज्ञ रचाएँ, शायद नारायण आपकी सुन लें ।। १० ।। तव (राजा ने) अनेक ऋषियों को वुलाकर (पुत्रकामेष्टि) यज्ञ कराया। (पूर्णाहुति के पश्चात्) अग्नि

अंनिन तंम्य रेश्य स्यठाह् जग करनि लांगी ।
खंतिस तमि अंगनु मंज़ु खिरस ज़ु बांगी ।।
कोंरुख जग यॆलि वोंवरांबिख तमिक्य द्यन ।
खंतिस खिरस ज़ु बांगी रानियन त्रन ।।
त्रनवय वक्तुबजि गंयि पान नांविथ ।
दोंनुवय बांगी तिमव ख्येयि बांगुरांविथ ।।
त्र्यन निशि पानु र्यॊश सूज़ुन सु खिर ह्यथ ।
तिमव ख्यव बांगरिथ ओसुख मोह्बथ ।।
कोंशल्यायि अख द्युतुन कीकीयि अख निव ।
तिमव द्युत सोंनि न्यसुफा न्यसुफ बूज़िव ।। १५ ।।
दपान दय पानु कोंशल्यायि निशि ज़ाव ।
बरुथ तस कीकीयि निशि ज़ाव कन थाव ।।
त्रेयिम आंसुख सोंमित्रा तस कोंरुख बाव ।
शोंत्रुगन बेंयि लखिमन जुव तंमिस ज़ाव ।।
ओंनुख ब्रह्मुन पंडित तान्य माजि यॆलि ज़ाये ।
कर्योह्ख नाव ब्योंन ब्योंन आंसिनख आये ।।

में से खीर से भरे दो सकोरे प्रकट हो गये और यज्ञ-समाप्ति के अनन्तर (जब यज्ञ की) भस्मी आदि को पृथ्वी में गाड़ दिया गया तो उसमें से खीर से भरे दो सकोरे तीन रानियों के लिए और प्रकट हुए। तीनों सौभाग्यवतियाँ देह को पवित्र करके (नहा-धोकर) आ गईं और पहले वाले दो सकोरों की खीर को बाँटकर खा गईं। शेष दो सकोरों को (बाद में) राजा ने स्वयं ऋषि (वसिष्ठ) द्वारा अपनी त्रियाओं (स्त्रियों) के पास भेजा। उन्होंने मुहब्बत के साथ इन्हें भी बाँटकर खाया—कौशल्या ने एक सकोरा तथा कैकेयी ने दूसरा खाया। दोनों ने अपने-अपने (सकोरे) में से आधा-आधा भाग अपनी सौत (सुमित्रा) को दे दिया ।। १५ ।। कहते हैं—भगवान् (राम) स्वयं कौशल्या के गर्भ से पैदा हुए और भरत कैकेयी के गर्भ से। उनकी एक और सौत थी जिसे वे दोनों खूब चाहती थीं—उसका नाम सुमित्रा था। शत्रुघ्न और लक्ष्मण उसी के गर्भ से पैदा हुए। जैसे ही उन्होंने जन्म लिया ब्राह्मण व पण्डित को बुलाया गया। चारों के अलग-अलग नाम रखे गये और उनके लिए चिरायु की कामना की गई। गुरु ने जन्म-कुण्डली बनाकर कहा कि ये सभी शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण और रामावतार (श्रेष्ठ) कार्य करेंगे। (सकल) प्रजा (इनके जन्म लेने पर प्रसन्नता के कारण)

गौरन ज़ातुक गंडिथ दौपनख करन कार।
शौत्रुगन बरथ लखिमन रामु अवतार।।
प्रजा प्रज़लन् लंज्य यामथ थनु प्यॅय।
लज़ा गॅयि राखिसन पानस लंजिख र्यॅह।। २०।।

अजोद्या वासियन हुन्ज़ लीला

परुवतु तलु च्रन्दुरनु द्राव
सातिये गाश आवूये।
लोलुक ब्योल असि वव्याव
बंखति हुंज़ि वूमि ववूये
तूल्य असि खार बंद्य योंद वंवि पावुह
सातिये गाश आवूये। १
यारुबलु तलु छय गण्ड्य गण्ड्य नावुह
बर्‌य बर्‌य सौख त सावुये
क्राव कर डूरेनं नेरी च्रे लावुह
सातिये गाश आवूये। २
दुफ छुय प्रज़लान सौति सौति वावुह
छ्रेतु गछि ज़ोरुह अकि हवावे
सन दिथ राज़ु गरि च्रूर यस च्रावुह
सातिये गाश आवूये। ३

दीप्त हो (झूम) उठी। राक्षस लज्जित हो गये और वे भीतर-ही-भीतर जलने लग गये।। २०।।

अयोध्या-वासियों का भजन

पर्वत के पीछे से चन्द्रमा प्रकट हुआ; और री सीता! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया। हम (अयोध्यावासियों) ने प्रेम का बीज भक्ति की भूमि में बोया था और फलस्वरूप पाव भर बीज से मनों (फल) प्राप्त कर लिया—री सीता! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया। १ घाटों पर सुख-समृद्धि की नावें बँधी हुई हैं। इस लहलहाती बगिया को देख कर तू (रे मेरे पुरवासी!) खुशी से झूम उठ—री सीता! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया। २ तेरा जीवन-दीप धीरे-धीरे सहज गति से जल रहा है। कहीं तेरी काया में कुमति रूपी चोर घुसकर उस दीप को बुझा न दे—री सीता! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया। ३

सथ वौन्दुह निशि मवूह मंशिरावुह
लोलुच्य पय बो थावुये
सतस पनुनिस प्यठ थ्यर थावुह
सांतिये गाश आवूये ॥ ४ ॥

हारि त तोतस गेलि ज़न कावुह
सत गौर तस ति मेजावुये
ती वौन तंम्य तति यी मे बोज़ावुह
सांतिये गाश आवूये ॥ ५ ॥

राज़ु दशरथ बरि ना चावुह
कौशल्यायि रामुजुव ज़ावूये
असि लौंग तार तमिसुंदि नावुह
सांतिये गाश आवूये ॥ ६ ॥

सौन्दुरव तु विगिन्यव बंरिवय चावुह
वौन्दुक ग़मगोसु द्रावुये
ज़ग ज़ायि यैमसुय सुय असि ज़ावुह
सांतिये गाश आवूये ॥ ७ ॥

समसारुह अवेचारुह आदम खावुह
दानु कोना आर चेह आवूये

तू अपने हृदय से सत्य को न भुला, अपितु उसे प्रेमरस से पल्लवित कर। अपने सत्य पर तू (सदा) स्थिर रह—री सीता! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया। ४ भलेही कौवा, मैना और तोते की नक़ल भी उतारे (उन्हें चिढ़ाये), फिर भी उसे सद्गुरु (सद्गति) की प्राप्ति हो जायेगी—ऐसा सुना जाता है और ऐसा सभी कहते है—री सीता! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया। ५ राजा दशरथ प्रसन्नता में क्यों न झूमें—कौशल्या ने रामचन्द्रजी को जो जन्म दिया है। हम (अयोध्या-वासी) भी उसके नाम से तर गये—री सीता! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया। ६ सुन्दरियाँ व कुमारियाँ खुशी में मस्त हो रही हैं, उनके हृदय का ग़म दूर हो रहा है। जिसने जग को पैदा किया वही हमारे यहाँ पैदा हुआ—री सीता! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया। ७ रे अविचारी, निर्मम संसार! तुझमें दाने-भर की भी दया क्यों नहीं है। क्यों इस संसार में आनेवाला व्यक्ति आकर वापिस चला जाता है—री सीता! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का

क्याज़ि गव योरु बेंयि युस तोरु आवुह
सांतिये गाश आवूये ॥ ८ ॥

रज़व कनि छ्यख आमि पनु दावुह
यिमु ना यारु बलु नावुये
संतोशि वेंच्रारुह बेंयि सथ वावुह
सांतिये गाश आवूये ॥ ९ ॥

सिरयि रुपु मनि मंज़ सु में वुछावुह
हनि हनि अन्दर सु च्रावूये
प्रकाश पानय कस क्याह वु वावुह
सांतिये गाश आवूये ॥ १० ॥

तिमन मंज़ रामुजुव ज़न सिरियि न्यरमल ।
कंरिन राखेंस तु रहज़न अनिगंटिस तल ॥
संमिथ बायन सुतिन येंलि ओस नेरान ।
त्रिकूटी दीवता आंस्य चरकु फ्यरान ॥
तिमन वुछ्य वुछ्य करनि लोंग राजु शांदी ।
बशांदी बूमि प्यठ फेरुवुन मुनांदी ॥
दपन तंम्य सारिनुय रुख़ु रुख़ु ख़वर वंन्य ।
गयस यि बोंद दयस सुतिन गोंण्डुन मन ॥

उदय हो गया । ८ रे मनुष्य ! तू क्यों अपनी नाव को कच्चे धागों की रस्सी से खे रहा है । इससे तेरी नाव घाट से प्रयाण कैसे कर सकती है ? तेरी नाव संतोष, विचार और सद्भावना रूपी रस्सी से ही पार लग सकती है—री सीता ! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया । ९ उस सूर्य-रूपी सौन्दर्य को मैंने अपने मन में देखा । वह मेरे अंग-प्रत्यंग में समा गया । मैं स्वयं उसके प्रकाश में आलोकित हो उठा, अब किसी को क्या दिखाऊँ—री सीता ! तेरे लिए (नूतन) प्रकाश का उदय हो गया ॥ १० ॥

उनमें (अन्य भाइयों में) रामचन्द्रजी मानो निर्मल सूर्य के समान थे । अपने प्रकाश से उन्होंने (सकल) राक्षसों व राह-ज़नों को चौंधिया दिया (उन पर अँधेरा छा गया) । जब वे अपने भाइयों के साथ (विहार करने के लिए) निकलते थे तो त्रिकोटि (३३ कोटि) देवता उनके चारों ओर विचरते रहते । ऐसे पुत्रों को देख-देख राजा शादमानी (हर्षोल्लास) मनाने लगा और उसने भूमि पर मुनादी करायी ।

खरुचि वापत कुने कांह आसि मुहताज।
ख़बर करिनम तु दरमस दिमु पनुन राज ॥ ५ ॥
सुबह फोल सारनिय गव अनिगोट दूर।
मुनादी द्रायि रामुन राज महशूर ॥
यि वंन्य ज़्यख कांन्सि कोंह न्यंदित करन न।
पछ अनि ज़्यख तिम ति अपमंरित्य ज़ाँह मरन न ॥
शरीरुकि खोतु गंज़रावन परुद्य पान।
बेंयिस लगि खेद पानस प्यठ लदन हान ॥
यिहय छख व्यद परुन्य अव्यदा परनु कुँह।
सतुच द्रुय अदु लुय लांविथ मरि नु कुँह ॥
अनाथन हुन्द रछुन मटि राजु लूकन।
तिमन आयुत थवन तिम अन तु बेंयि पन ॥ १० ॥
तिथय कोतर सपुन्य पांज़न सूत्यन यार।
फोलन पंपोश ह्यू पांनिस अन्दर नार ॥
गब्यन सूतिन करुक शालव वोंफायी।
गिन्दान तिम पानु वांन्य ज़न ज्राटु बांयी ॥

कहते हैं उसने यह शुभ-समाचार (पुत्र-जन्म का समाचार) सबको कहलवाया तथा भगवान् की महिमा (पर विश्वास कर) अपना मन भगवान् के चरणों में लगा दिया। [राजा ने मुनादी करायी—] ख़र्च (पैसे) के लिए कोई मुहताज (विवश) हो तो मुझे ख़बर दे, मैं अपना राजपाट तक दान-धर्म के लिए दे दूँगा ॥ ५ ॥ अगले दिन जब सवेरा हुआ और अँधेरा दूर हो गया तो पुनः मुनादी की गई कि राम का राज मशहूर हो। (मुनादी करनेवाले से कहा गया कि) वह मुनादी करे कि कोई किसी की निंदा न करे, इससे बचने से वे अकाल मृत्यु को प्राप्त न होंगे। अपने शरीर से वे औरों के शरीर को महत्वपूर्ण समझें। दूसरों को दुःख न पहुँचाएँ, अपितु उस दुःख को स्वयं भोगें। इसी विधि का वे (जनता) अनुसरण करें तथा दूसरी तरह की अविद्याओं को न अपनायें। ऐसे (आचरण) करने से सत्य की क़सम वे अपनी स्त्रियों को छोड़कर कभी अकाल मृत्यु को प्राप्त न होंगे। अनाथों की रक्षा करना राजा लोगों का कर्त्तव्य है, उनके जीवन की कुशलता एवं व्यवस्था को बनाये रखना भी उनका कर्त्तव्य है ॥ १० ॥ ऐसे शान्तिमय व सुखद वातावरण में कबूतर बाज़ का यार (मित्र) बन गया, आग भी पानी में कमल के समान खिल उठी, गीदड़

वेंन्नारुच वथ वुछिथ ब्रारेंव सलाह ज़ोन ।
कोंरुख हारेंन सुत्यन ब्रारेंव व्यसुतोन ॥
कोंहस प्यठ फेरुवुन्य स्यमिन्य सपुन्य गाव ।
दपन तस वीमु सुत्य सुह गासु ह्यथ आव ॥
कुक्यलि पूत्यन सवक यि लंग्य वनुनि नूल ।
तंछिव मो नेरिह असतस खार महसूल ॥ १५ ॥

येंत्याद्यक रेंश्य तपीशोंर जूग्य संन्यास ।
सपुन्य खोंशदिल च्रोंलुक मुश्किल तु तलवास ॥
कंरुन्य यच्रकाल तामथ शादमांनी ।
मरुन मोकूफ सांपनुन दरजवांनी ॥
करन कंछाह सु युथ त्युथ सोंख तु आनंद ।
ज़हर लोंग राखिसन वेंह गव मोंदुर कन्द ॥
गरम बाज़ार सांपनुन दरम का राज ।
मनुष्य गंयि खोंश तु काँह छुनु कांसि मोंहताज ॥
समय त्युथ राज़ह डीशिथ ज़िन्दु सांपनुन ।
मनोशन वासुना फीरुख सतस कुन ॥ २० ॥

और बकरियों में मेलजोल बढ़ गया और वे आपस में ऐसे खेलने लगे मानो (एक ही गुरु के) शिष्य आपस में खेल रहे हों। सुविचारों का मार्ग देखकर बिल्लियों ने इसी में ख़ैर जानी कि मैनाओं के साथ मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करें। पर्वत (कोह) पर फिरनेवाली सिंहिनी गाय बन गई और कहते हैं उस गाय के लिए भय के कारण स्वयं (जंगल का राजा) सिंह घास लेकर आ गया। कोयल के पूतों (बच्चों) को नेवला समझाने लगा कि चिन्ता मत करो (अब हम तुम्हारा भक्षण नही करेंगे) ॥ १५ ॥
अनेक प्रकार के ऋषि, तपीश्वर, योगी, संन्यासी आदि के दिल ख़ुश हो गये और उनके दिलों का सन्ताप व दुःख दूर हो गया। पर्याप्त समय तक वह (राजा) शादमानी करने (ख़ुशियाँ मनाने) लगा। वह ऐसे कार्य करने लगा जिससे सुख और आनन्द की वृद्धि हो गई। राक्षस जहर (के घूँट) पीने लग गये तथा (देवताओं के लिए) हलाहल भी मधुर कन्द बन गया। (चारों ओर) धर्म के राज का बाजार गर्म हो गया। सभी मनुष्य ख़ुश हो गये और कोई किसी का मुहताज नहीं रहा। ऐसे समय (वातावरण) को देखकर राजा जीवित (प्रफुल्लित) हो उठे तथा मनुष्यों की वासना (प्रवृत्ति) सत्य की ओर फिर गई ॥ २० ॥

व्यॆश्वामॆत्र सुन्दि यॆगँच रछ्या

कौंरुन यंत्र तप व्यॆश्वामेत्रन पोंरुन वीद।
दपान तस राखिसव द्युत वारियाह् खीद॥
दपन यॆलि राखिसव कोंर यंत्र अवार्।
गंछ्रिथ तंम्य दशरथस वोंन वार्ह् वार्ह्॥
छु सथ यि यॆलि तंमिस निशि वादा पोलुन।
दयोगथ दशरथस निशि हाल बोवुन॥
दोंपुन तस दाद्यलद्सुन्द वाति बोज़ुन।
मॆ सांतिन रामुज़ुव गछ़ि तूर्य सोज़ुन॥
छु क्युथ बलुवीर पनुन वीरुथ मॆ हावॆम।
ब गोलुस राछ्यसव तति मॊकलावॆम॥ ५॥

दिह्मनय सूत्य अद् यॆतिय पान ज़ालय।
तिथय दिम् शाप युथ रुम राठ गालय॥
मॆ सूत्य दिन राम् ज़ुव दियि राछ्यसन मार।
नतु बद वाख कड़य बूतरांत्र हॆयि नार॥
स्यठाह् नाखोंश सपुन राज़स कोंरुन न्याये।
विशिष्टन दोंप गंछ़िन कॆंह् छुस नु परवाये॥

विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा

कहते हैं विश्वामित्र जब घोर तप और वेद-पाठ कर रहे थे तो राक्षस उन्हें बहुत खेद (कष्ट) पहुँचाने लगे। राक्षसों द्वारा बहुत सताये जाने पर वह राजा (दशरथ) के पास अपना दुखड़ा कहने के लिए गये। मुनि ने राजा से सहायता देने का वादा (वचन) लिया और अपना हाल दशरथ के सामने रखा—मुनि ने कहा कि हे राजन्! इस दुखियारे का कहा आपको सुनना चाहिए और मेरे साथ रामचन्द्र को भेजना चाहिए। वह बलवीर अपनी वीरता दिखाकर मेरा उन राक्षसों से उद्धार करेगा जिन्होंने मुझे गला (क्षीण कर) दिया है॥ ५॥ यदि आप (रामचन्द्र को) मेरे साथ नहीं भेजेंगे तो मैं यहीं पर आपके सामने आत्मदाह करूँगा, तथा ऐसा शाप दूँगा कि आपका सारा कुल-कुटुम्ब नष्ट हो जायगा। मेरे साथ श्रीरामचन्द्र को भेज दीजिए, वे राक्षसों को मार डालेंगे, नहीं तो ऐसे (अपशकुन-भरे) कुवाक्य कहूँगा कि धरा जल जायेगी। (राजा द्वारा कुछ अनिच्छा प्रकट करने पर) वह (विश्वामित्र) राजा से बहुत

यि आमुत यी करुनि अवतार दॉरिथ ।
गछुन छुस राखिसन प्रेथ जायि मॉरिथ ॥
यि कॅछा रेश्य दॉपुस राज़न ति वूज़ुन ।
पॉज़ुय वूज़ुन गॉवुर तस सुत्य सूज़ुन ॥ १० ॥

पकन गव न्यून लखिमन सुत्य पानस ।
गिन्दन खेलन पकन गयि प्रेथ मकामस ॥
मुदा तॅम्य कौर नु दशरथ राज़ुह् लाचार ।
रॅशिस सुतिन पकान गव रामु अवतार ॥
पनुन ओसुस ग़रज़ सॉपनुन रवानु ।
बवस रॉख़सत ह्यनुक ओसुस वहानु ॥
ऑनुन म्रत राखिसन प्रेथ शायि छॉरिन ।
लॅविन यथ जायि तति वेवायि मॉरिन ॥
ह्युतुन वालक वरनु यॅलि तीर हॉरिन्ज ।
पकन गव रथ छकन त्युथ ह्यवि मॉरिन्ज ॥ १५ ॥

सु मॉरिन्ज दयत दयतन हुन्द कुमेदा ।
च्रलिथ गव ज़िन्दुह् ज़खमी गोस पनुन पान ॥

नाख़ुश हुए । इस पर वशिष्ठ ने यह कहकर न्याय किया कि हे राजन् ! श्रीरामचन्द्र को जाने दीजिए, उनका कोई अमंगल नहीं होगा, उन्होंने तो यही सब कुछ करने के लिए इस लोक में अवतार धारण किया है, उनको तो हर जगह पर राक्षसों का वध करना है । जो कुछ भी ऋषि (वशिष्ठ) ने कहा उसे राजा ने मान लिया तथा उसे सत्य मानकर अपने पुत्र को मुनि के साथ भेज दिया ॥ १० ॥ जाते समय श्रीराम लक्ष्मण को भी साथ में लेते गये । दोनों (मुनि के साथ) खेलते-घूमते, लीलाएँ रचाते विभिन्न मुक़ामों से गुजरते चले । कहने का मुद्दआ (प्रयोजन) यह है कि उन्होंने (रामचन्द्रजी ने) भी राजा को लाचार नहीं किया, (उनकी दुविधा दूर की) और (ख़ुशी-ख़ुशी) ऋषि के साथ-साथ चलते गये । ऋषि के साथ रवाना होने में उनका (राम का भी) अपना उद्देश्य था तथा पिता से रुख़सत लेना मात्र एक वहाना था । उन्होंने राक्षसों के लिए मृत्यु-रूप धारणकर स्थान-स्थान पर उन्हें ढूँढा तथा जहाँ कहीं पर वे (राक्षस) मिले उनको बुरी तरह से मार डाला । जब वालक राम ने तरकस से तीर छोड़ा तो ख़ून से लथपथ वह मारीच दैत्य वहाँ से (अपनी जान बचाता हुआ) भाग खड़ा हुआ ॥ १५ ॥ दानव-दैत्यों का सिरमौर (वह मारीच)

तिथुय रथ पोंक कौंलन तूफ़ान सांपनुन ।
तिथुय युथ राखिसन अवमान सांपनुन ।।
वेंश्वामेंत्रस स्यठाह् आनन्द सांपनुन ।
मोंदुर गव मोंख तमिस वेंह् कन्द सांपनुन ।।
वेश्वामेंत्रस दपन तसुंज़ुय खंलिश आंस ।
दया कंरुनस गंछ्यिथ तंम्य तस यलत कांस ।।
बोंविन जय तस रेंशिस छु त्रन तारन ।
वंनिन तस रामु चंन्द्रन्य सांरिय कारन ।। २० ।।

वेंश्वामेंत्रस त्युथुय प्रुछ रामुचंन्दुरन ।
गंगा किथु पांठ्य वंछ आकाशि निशि बोंन ।।
तिथय बांगी रथुन्य वोंतपथ तंमिस वंन्य ।
गंगा किथु पांठ्य तंम्य बूतुरांत्र प्यठ अंन्य ।।
गंगा यामथ वंसिथ आकाशि निशि आये ।
महादीवन जटन मन्ज़ तस दित्रुन जाये ।।
चंजिस तेंलि व्याद येंलि आज़ाद सांपनुन ।
दोंपुन तस वोंथ गछ्व वोंन्य परबतस कुन ।।
संमिथ तिम आंस्य त्रनवय द्रायि प्रातस ।
मनस पनुनिस छ शंखा जान पालनस ।। २५ ।।

ज़िन्दा बच कर निकल तो गया किन्तु उसका शरीर (बुरी तरह् से) ज़ख्मी हो गया। उसके शरीर से इतना रक्त बहा कि नदियों में तूफ़ान आ गया और राक्षस मन-ही-मन क्षुब्ध हो उठे। विश्वामित्र यह सब देखकर आनन्दित हो उठे और उनका मुख-मण्डल मधुर (प्रफुल्लित) हो गया तथा मधुमय कन्द बन गया। कहते हैं विश्वामित्र को उस (राम) की ही चाह् थी और राम ने दयाकर, उनके यहाँ जाकर उनकी सारी दरिद्रता दूर कर दी। (अन्य ऋषियों के साथ राम को मिलाने पर) सभी ने राम की जय-जयकार की और विश्वामित्र ने सभी से रामचन्द्र की महिमा का बखान किया ।। २० ।। (आगे चलकर) विश्वामित्र से जब रामचन्द्र ने पूछा कि (यह) गंगा कैसे आकाश से नीचे उतरी तो मुनि ने भगीरथ की सारी घटना कह सुनाई, (यह भी बताया) कि गंगा को कैसे आकाश से नीचे उतरने के बाद महादेव ने अपनी जटाओं में स्थान दे दिया और बाद में आज़ाद होकर उसकी मुक्ति कैसे हुई ? (इसके बाद) राम ने कहा, अब उस पर्वत की ओर चलें। वे तीनों मिलाकर प्रातःकाल

अहल्यायि हुन्द शापु मूचन

कौरुक आशचर वुछिख यैलि जान जाया ।
वननि लग्य वैश्न संज़ वैश्नु माया ।।
पकुनि लौग रामुजुव यैलि लख्यमनन ड्यूठ ।
गुबार वौथ पादुकमुलन तथ शिलायि व्यूठ ।।
बुछिव मौख्ती करुन्य आँस तस पानस ।
नतु क्याह ओस गछुन तथ रैश्य मकानस ।।
तम्य कर्य पाप वुछितव किछ लबुन वथ ।
अहल्यायि पान पुशरोवुन दयस पथ ।।
वननि लौग र्योश बक्ती वौन्य यिहंय गये ।
अमी बक्ती सूत्य ईशर पानु वाती ।। ५ ।।
करिव मो पाप मनशव वारु बूज़िव ।
दितुस शाप बरथाहन सय यि बूज़िव ।।

(उस दिशा की ओर) चल पड़े । सभी के मन में कुछ शुभ होने वाली शंका का उदय हो रहा था ।। २५ ।।

अहल्या का शाप-मोचन

एक रमणीक-स्थल को देखकर सभी आश्चर्य करने लगे तथा विष्णु (भगवान्) की माया की प्रशंसा करने लगे । जब रामचन्द्र कुछ आगे जा रहे थे तो लक्ष्मण ने देखा—कि (एक स्थान पर) रामचन्द्रजी के पादकमलों का एक शिला से स्पर्श हो जाने पर एक गुबार उठा । (विधि का विधान देखिए) उस शिला को रामचन्द्र के चरण-स्पर्श से मुक्त होना था; अन्यथा वे (रामचन्द्रजी) उस ऋषि के यहाँ क्यों जाते ? उस (अहल्या) ने पाप किया और देखो उसकी क्या दुर्गति हुई (पत्थर बन गई) ! अहल्या ने प्रत्यक्ष होकर भगवान् के (चरणों में) अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया । तब ऋषि (विश्वामित्र) अहल्या की भक्तिभावना का बखान करने लगे । इसी भक्तिभावना (तप) से वह (अहल्या) ईश्वर के पास पहुँच पाई ।। ५ ।। हे मनुष्यो ! ज़रा ध्यान से सुनो, तुम भी कभी पाप मत करो । अहल्या (इतनी सुन्दर थी कि उसका मुख-मण्डल) सूर्य के समान चमकता था जिसे देख-देख कितने ही वीरों के प्राण निकल जाया करते थे । देवराज इन्द्र भी काम में अन्धा हो गया और रात के समय ऋषि (गौतम) के मकान की ओर चल पड़ा ।

अहल्या सिरयि हिश आंस शोलु दिवान ।
तमिस वीरन वुछित आंस्य प्रान नेरान ।।
वंछ कामुन्य वुतल येलि यंन्दुराज़स ।
पकुनि लोंग रांत्र त्रांविथ रेश्य मकानस ।।
वननि लोंग किथु पांठ्य अत्र् रेश्य मकानस ।
वोंन्यहे बोज़्यम अमा मारेम में पानस ।।
ओंनुन दीवा दोंपुन तस कोंकर वीह लाग ।
त्रुह दि बांग अरदुरातस तस रेश्यस ज़ाग ।। १० ।।

दित्रुन तंम्य बांग अदु र्यौश गव बेदार ।
वनुनि लोंग न्यंन्दुर आयम गोस न हुश्यार ।।
तुलुन गंड़वा अथस क्यथ नंदयि प्यठ द्राव ।
करनि लोंग श्रान नंदयि मा बोज़ुनु आव ।।
दोंपुस तमि रेश्य बायो सुल छि श्रानस ।
अमा वनुहय नु पाप मा खसि में पानस ।।
कोंरुय छल येन्दुराज़न कोंकर वीह लोग ।
पगाह लदुहम में प्यठ शापुक यिथय बोग ।।

वहाँ पहुँचकर उसने सोचा कि मकान के भीतर कैसे जाया जाय, क्योंकि यदि ऋषि ने देख लिया तो उसको (शाप देकर) मार डालेगा। (इस पर) उसने एक देवता को बुलाया और उसे कुक्कुट (मुर्गे) का रूप धारण करने को कहा (और आदेश दिया कि) तू अर्द्धरात्रि में (ज़ोर से) बांग दे तथा उस ऋषि (गौतम) को (नींद से) जगा ।। १० ।। (इस पर) उस (देवता रूपी कुक्कुट) ने बांग दी तथा वह ऋषि वेदार हो गया। वह (ऋषि कुक्कुट की बांग सुनकर) कहने लगा—(गहरी) नींद के कारण मैं जाग न सका। वह (तुरन्त) हाथ में लोटा लेकर नदी की ओर (स्नान-ध्यान करने के लिए) चल पड़ा। जब वह स्नान करने लगा तो नदी ने सब जानकर उससे कहा—हे ऋषिदेव (तेरे) स्नान करने में अभी देर है (तू आज इतनी जल्दी क्यों आया ?) तुझसे मैं ऐसा कभी नहीं कहती, किन्तु (अनर्थ न हो जाय और) मुझे पाप न लगे इसलिए कह रही हूँ। तेरे साथ इन्द्र ने कुक्कुट रूप धारण कर छल किया है; कहीं तुम बाद में मुझे शाप न दो (इसलिए सब कुछ कह रही हूँ)। (यह सुनकर) ऋषि वापिस मुड़ा और अपने घर के पास पहुँचा और उसने देखा कि इन्द्र (उसके घर में घुसने की)

पकन गव र्‌योश तु वोतुय पनुनि शाये ।
वुछुन यन्दुराजु करान आयि ग्राये ।। १५ ।।

द्युतुस रेंश्य शाप येमि पुछ्य योंत च़ु आखुय ।
करय सूर वाकु सृतिन ज़न नु ज़ाखुय ।।
अहल्यायि शाप द्युतुनय बरथाहन ।
सपुन शिला योंताम तिम ज़नम दारन ।।
यिनय ज़नमस अमी पुछ्य रामुअवतार ।
चुह बेह यथ शायि कर समुयस नमस्कार ।।
समय अन्थस गोंवुय मा अहल्याये ।
च़रनन शेर दोरुय वेंश्नुमाये ।।
लंजिस पादन दिने मीठ्य येंछि माये ।
लंजिस तोंता करने जायि जाये ।। २० ।।

दितुनस पादयि गन्द दोंपनस मे मो रोश ।
च़ु रोज़तम वोंन्य साहिबो लागयो पोश ।। २१ ।।

भजन

लागुयो पोश शेरे ।
रामु च़न्दुरुह चानि वेरे ।।

कुचेष्टा कर रहा है ।। १५ ।। ऋषि ने उसको (इन्द्र को) शाप दिया कि जिस उद्देश्य से तुम आये (उस कुत्सित पाप के कारण) शाप से तुम्हें ऐसे भस्म कर डालूँगा मानो तुम कभी जन्मे ही न थे। अहल्या को भर्त्ता (गौतम) ने यह शाप दिया कि तू तब तक शिला बन जा जब तक वे (राम, लक्ष्मण आदि) जन्म नहीं लेते। वे तुम्हारे लिए ही अवतार धारण करेंगे। तू इसी स्थान पर (शिला-रूप में) बैठ और उस समय को नमस्कार (प्रतीक्षा) कर। (लगता है कि अब) अहल्या के समय (उसकी प्रतीक्षा) का अन्त हो गया है, तभी प्रभु के चरणों में वह प्रत्यक्ष हो गई (उन्हें अपने ऊपर धारण कर लिया।) वह (रामचन्द्रजी के) चरणों को भाव-विभोर होकर चूमने लगी तथा उनके अंगप्रत्यंग की स्तुति करने लगी ।। २० ।। उसने चरणामृत पीकर (रामचन्द्रजी से कहा) हे भगवन् ! अब मुझ से रुष्ट न हों। हे मेरे साहिब ! मेरा उद्धार कीजिए, मैं आप पर पुष्प चढ़ाती हूँ ।। २१ ।।

आपके शीश पर पुष्प चढ़ाऊँ। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं)

पाँछ बूत छिय च्रे मने ।
वातान छुख हनि हने ॥
मनु मन्ज़ु आख मे वने ।
रामु च्रन्दुरुह चानि वेरे ॥ १ ॥

अज्ञान छुम मे मने ।
काम क्रूद लूब गने ॥
ध्यान चोन मनि सने ।
रामु च्रन्दुरुह चानि वेरे ॥ २ ॥

शामु रूपु रामु जुवुह ।
मनशि रूपु ज़नम छुवुह ॥
बूमि बार आख कासुने ।
रामु च्रन्दुरुह चानि वेरे ॥ ३ ॥

शाप द्युत मे बरथाहन ।
यंन्दुराज़ुह चाव करन ॥
पापु सूत्य गंयसय शरन ।
रामु च्रन्दुरुह चानि वेरे ॥ ४ ॥

शाप द्युतुन यंन्दुराज़स ।
दीवन हुन्दिस राज़स ॥
लूब गोंय च्रे कामु वेरे ।
रामु च्रन्दुरुह चानि वेरे ॥ ५ ॥

बस आपके लिए। पंचभूत आप में समाये हुए हैं और आप सब में समाये हुए हैं। मैंने भी आपको अपने मन में पहचान लिया है। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) बस आपके लिए। १ मेरे मन में अज्ञान है। काम, क्रोध और लोभ इसमें सने हुए हैं। बस, अब यह (मन) आपके ध्यान में मग्न हो रहा है। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) बस आपके लिए। २ हे (मेरे) श्याम-रूप राम ! आप मनुष्य रूप में जन्म लेकर भूमि को भार-मुक्त करने आए हैं। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प है) बस आपके लिए। ३ मेरे भर्त्ता ने मुझे शाप दिया (जिस पर) इन्द्र प्रसन्न हो गया था। (अब) मैं पापिन आपकी शरण में आगई हूँ। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) वस आपके लिए। ४ (मेरे भर्त्ता ने) इन्द्र को भी शाप दिया जो सभी देवताओं का राजा है। उसे काम का लोभ हुआ था। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प है) बस आपके लिए। ५

येमि नूर् ज़ाग मकानस ।
तिम नास गोंथी छे पानस ॥
वंरथन पनुनि वैरे ।
राम् चन्द्रजुह नानि वैरे ॥ ६ ॥

गास स्यनुर तस ब्रम्नाय ।
दीवन प्यठ गु नन्याय ॥
दयि गन वछो वैरे ।
राम् चन्द्रजुह नानि वैरे ॥ ७ ॥

स्यंत्रन छंडग गट् ।
हावनम पनुनि वन् ॥
शाप गोलम पाप वैरे ।
राम् चन्द्रजुह नानि वैरे ॥ ८ ॥

ब्रह्मा नानि संतुग ।
उनवन कनुनि नंतुग ॥
क्योंगनु गुप् कज्ज वैरे ।
राम् चन्द्रजुह नानि वैरे ॥ ९ ॥

शिव रूप नंदगन आये ।
जय कार अहल्याये ॥
ख्वारथन वैस्नुमाये ।
राम् चन्द्रजुह नानि वैरे ॥ १० ॥

हे इन्द्र ! जिस लोभ से तुम ऋषि के मकान में प्रविष्ट हुए थे, तुम्हारे शरीर पर (वही) हजार नेत्र (भग) बन गए। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) बस आपके लिए। ६ उसके हजार नेत्र बन गए। (स्वयं) देव गति देखिए सभी देवताओं पर यह बात प्रकट हो गई। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) बस आपके लिए। ७ मेरी आँखों से (अब) अन्धकार दूर हो गया। अब आप मुझे अपनी राह दिखाएँ। मैं पापिन शाप-मुक्त हो गई। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) बस आपके लिए। ८ ब्रह्मा ने (भी) आपकी गति को जानने के लिए जन्म लिया। आप ही विष्णु हैं और कृष्ण के रूप में भी आप ही हैं। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) बस आपके लिए। ९ अहल्या आपकी माया की जयजयकार करती है। उसका सुन्दर रूप (शारीरिक सौन्दर्य) वापस आ गया (लौट आया)

द्युतुथम में दरशुनुय ।
अमर्‌यथ् वरशुनुय ॥
कासतम जूनि ग्रहुनुय ।
रामु च्रन्दुरुह चानि वेरे ॥ ११ ॥

अन्थ चोन कुस ज़ाने ।
क्याह ओसुम में लाने ॥
बूमि बार कासुवने ।
रामु च्रन्दुरुह चानि वेरे ॥ १२ ॥

जयकार गोतम रेशिस ।
अहल्यायि हंन्दिस अंशिस ॥
प्रकाशि चानि वेरे ।
रामु च्रन्दुरुह चानि वेरे ॥ १३ ॥

सीतायि हुन्द ज़नुम तु सोयमवर

ज़नख राज़स दपान कूरा छि ज़ामुत्र ।
सोमा लंख्यमी छि तंम्य सुन्द गरु आमुत्र ॥
स्यठाह सनतानु पुछ्य आवारु ओसुय ।
दयन दंर्‌ययावु प्यठु तस कूफ कोसुय ॥

आपने उसका उद्धार किया। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) बस आपके लिए। १० आपने मुझे दर्शन देकर मुझ (पापिन) पर अमृत बरसाया। अब मुझ चाँद पर लगा हुआ ग्रहण दूर कर दीजिए। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) बस आपके लिए। ११ आपके अन्त को कौन जान पाया है। मेरे भाग्य में न जाने क्या लिखा था। हे भूमि को भारमुक्त करने वाले ! हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प है) बस आपके लिए। १२ गौतम ऋषि की जयजयकार हो। अहल्या के आँसू आपके प्रकाश के लिए हैं। हे रामचन्द्रजी ! (ये पुष्प हैं) बस आपके लिए। १३

सीता का जन्म और स्वयंवर

कहते हैं राजा जनक के एक लड़की उत्पन्न हुई है, मानो (स्वयं) लक्ष्मी उसके घर में आ गई है। वह (राजा) सन्तान-अभाव के कारण बहुत उद्विग्न रहा करता था पर अब भगवान् ने दरिया पर उसके अभिशापों को दूर कर दिया। उसने कहा कि मैं दरिया पर एक यज्ञ

दोंपुन करु जग नदि प्यठ द्राव पानु ।
खंनिन स्यंज्ञ मेंज्ञि तलु तंम्य लोंव खज़ानु ।।
स्यठाह् सन्तानु वापथ लोल तस ओस ।
सन्दूकस क्यथ लंबुन मेंज्ञि तलु खोंश गोस ।।
दयोगत दीवियाह ज्ञंन्द्रमु ह्शि आंस ।
सिरियि सुंदि खोंतु प्रवुह् तावान स्यठा आंस ।। ५ ।।

स्यठा आशज्ञर यि कोंर तंम्य ह्योंर खांरुन ।
छ क्या तिमु डानु यिमु यिछु विगनि मारन ।।
कंरुख टीका यि कस तामत छि ज़ामुज्ञ ।
छुनिक कोंलि योंत छि पांनिस सुत्य आमुज्ञ ।।
वुछिख दुरदानु डीठुक ज़न सतु मांस ।
न्योंठन दोंदु दामु खांतरु ज्ञुह् दिवन आंस ।।
गंमुज्ञ वरुह् ज़न पेंमुज्ञ आंस आसमानु ।
ह्रान आंस मोंख्तु ओंश ज़न दानु दानु ।।
जिगर हंन्दुरिथ वुछन ज्ञंन्दुरन तु तारन ।
वदान आंस टाछि आंस माजि छारन ।। १० ।।

रचाऊँगा और स्वयं (यज्ञ का संपादन करने हेतु) निकल पड़ा । उसने मिट्टी खोदी (खनन किया) और मिट्टी के नीचे उसे एक ख़ज़ाना मिल गया । सन्तान-प्राप्ति के लिए वह अत्यन्त विकल था । (मिट्टी) खोदते-खोदते) उसे एक सन्दूक (पेटी) मिला जिसे देख वह ख़ुश हो गया । दैवगति से उसमें देवी-तुल्य एक कन्या निकली । वह देवी चन्द्रमा के समान थी तथा सूर्य से अधिक आलोक विकीर्ण कर रही थी ।। ५ ।। उसे देखकर राजा को वहुत आश्चर्य हुआ और वह उसे ऊपर ले आया । (राजा कहने लगा,) वे डाइन-सदृश माताएँ भी क्या हैं जो ऐसी सुन्दर देव-वालाओं को मार देती हैं (परित्याग कर देती है) । सभी (उपस्थित-जन) टीका-टिप्पणी करने लगे कि यह कन्या किसी के यहाँ जन्मी होगी और उसे (वाद में) नदी में फेंक दिया गया होगा तथा वाद में पानी के प्रवाह के साथ यहाँ पहुँच गई होगी । सभी ने उस रूपसी को देखा और सभी को लगा जैसे वह सात मास की कन्या हो । वह दूध पीने के लिए अपने अँगूठे को धीरे-धीरे चूस रही थी । वह कुम्हला गई थी जैसे आसमान से गिरी हुई हो (असहाय हो, कोई भी अपना न हो) वह अपनी आँखों से मुक्ता (मोती) के दानों की तरह आँसू वहा रही थी ।

दपन क्याह सना बबस गवना कनन म्योन ।
अबस ज़ानुन हृत्रर गवना बबस म्योन ।।
कंमिस वनु बो तंमिस अंछ कोनु फोरन ।
मरस त क्याह करस छनु वांस सोरन ।।
यिछ्न कोरेन छि कम बब मांज लागन ।
यिमन पतु वाव तिमन अदु काव ज़ागन ।।
ज़नख राज़न दोंपुस बब छुस बों चोनुय ।
दयस निशि लेखुनावय रुत च्रे लोनुय ।।
ति मा आंसुस ख़बर यथ गंत्र बु वाता ।
यिहय मांसूम सारेन मा छि माता ।। १५ ।।

नियन गरु लोलु सुतिन तंम्य सौन्दरमाल ।
रंछिन तिथु यिथु रछन छि अंछ अन्दर लाल ।।
कमाना अख थोंवुन तंम्य तथ बचन यी ।
कड्यस युस कश तु शेरस लागि सु ही ।।

वह जिगर-सोख़्ता (आकाश में) चाँद व तारों को देख रही थी। वह (फूट-फूटकर) रो रही थी मानो अपनी प्यारी माँ को ढूँढ रही हो, ।।१०।। और जैसे कह रही हो—क्या मेरे माँ-बाप के कानों में मेरा आर्त्तनाद नहीं पड़ा था (जो उन्होंने मुझे इस तरह त्याग दिया), उनको मुझ पर थोड़ी-सी भी दया क्यों न आई, अब मैं अपना दुखड़ा किससे कहूँ ? क्या उनकी आँख नहीं फड़कती (उनको मेरा ध्यान नहीं आता)। मैं मर जाना चाहती हूँ, पर क्या करूँ आयु घटती भी तो नहीं है। मुझ जैसी भाग्यहीना को भला (कौन अपनायेगा), कौन माता-पिता बन सकता है। सच है, जो (पहले से ही) दरिद्र होते है उन पर कौवे भी झपट पड़ते हैं। (कन्या की ये मर्मस्पर्शी बातें सुनकर) राजा जनक बोले—(तू अधीर न हो कन्या !) मैं तेरा पिता हूँ। तेरे लिए मैं स्वयं भगवान् से सौभाग्य लिखाकर लाऊँगा। पर उस (राजा जनक) को क्या ख़बर थी कि वास्तव में वह मासूम कन्या सभी की माता है।। १५ ।। राजा उस सुन्दर कन्या को प्रेमपूर्वक घर पर ले आये और उसका इस तरह पालन-पोषण करने लगे जैसे आँखों की पुतली (हो)। (कन्या जब बड़ी हुई तो उसका विवाह करने के लिए) राजा ने एक वचन रखा कि (इस) कमान से जो तीर फेंकेगा उसके शीर्ष को वह सुशोभित करेगी। शिवजी द्वारा प्रदत्त इस कमान की यह विशेषता है कि जो इसे खींचेगा और तीर चलायेगा उसे ही मैं कन्या सौंपूँगा। अगरचे अनेक बलवीरों

कमान दिच्चुमुत्र शिवन तथ यी छु तदबीर ।
दियस तस कश कंडिथ युस त्रावि तथ तीर ।।
लोंमुख योंदवय वलुवीरव स्यठाह तथ ।
अंछिर वाला मुले कंरनख नु हरकथ ।।
यिवान छि वीर तथ सुबहन तु शामंन ।
रिवां नेरां दिवान तिम चाक जामन ।। २० ।।

तिमय बलुवीर यिम फोंकु सुत्य तुलन बाल ।
अमानत कँह न हरकत अख अंछिर वाल ।।
मनस कथ थाव तस प्यव नाव सीता ।
बु छुस ज़ानन च्रे सुत्य छस करमु लीखा ।।
पकान गंयि वांत्य तथ शहरस अन्दर च्रायि ।
ख़बर राज़स कंरुख तिम ह्यथ कमान द्रायि ।।
लमान कम आंस्य तथ वीरस शुराह सास ।
दयोगत वुछ रेंशिस बोज़नु क्याह आस ।।
लमान कम आंस्य तथ बोज़ सासुबंद्य वीर ।
तुजिन थोंद रामुच्रन्दुरनं त्रोवनस तीर ।। २५ ।।

मछ़न हुन्द कश कंडिथ त्युथ तीर त्रोवुन ।
सदाह् कोंरनस समय यंच्र शोरु नोवुन ।।

ने उस (कमान) को खीचा किन्तु उस कमान ने पलक के वाल बरावर भी (तिल भर भी) हरकत न की। सुबह-शाम वीर आते-जाते रहे किन्तु सभी अपना-सा मुँह लेकर वस्त्रों को चाक करते हुये निकलते गये ।। २० ।। वे बलवीर जो फूँक से बड़े-बड़े पर्वत उठा सकते थे, वे उस कमान को पलक के वाल बरावर भी हिला न सके। (राजा मन में सोचने लगे) लगता है, मेरी कन्या सीता का कर्म-लेख अवश्य किसी विशिष्ट व्यक्ति के साथ बँधा हुआ है। इधर तीनों, रामचन्द्र जी, लक्ष्मणजी और विश्वामित्र चलते-चलते उसी शहर की ओर निकल पड़े और उसके अन्दर दाख़िल हुये। राजा को ख़बर भेजी गई और वे कमान लेकर बाहर आये। उस कमान को सोलह सहस्र वीर खींच रहे थे। दैवगति देखिए कि महर्षि विश्वामित्र को क्या सूझी जो वे उन रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी को वहाँ ले आये। सुनिए, उस कमान को सहस्रों वीर खींचकर ला रहे थे। रामचन्द्रजी ने उसे ऊपर उठा लिया और तीर छोड़ दिया ।। २५ ।।

ज़नख राज़स निशि रयोश पानु ज्ञावुय ।
दोंपुन तस ज्ञन्द्रमस प्यठ सिरयि आवुय ।।
वेश्वामेत्रन ज़नख राज़स दोंपुन डेश ।
छु नेछतुर जान रुत रूहिन तु बेयि तेश ।।
कमर गंड नेर दशरथ राज़ु छारुन ।
अनुख सारिय कोंमार्य तारु तारुन ।।
ज्ञली शर अंछ्य मुचुरिथ कर नमस्कार ।
लख्यन छि रुत्य ज्ञे टोठ्योय रामु अवतार ।। ३० ।।

अनुन दशरथ करिव तोह्य आशनावी ।
फिकिर ज्ञंज्य सारिची नंव गयि बजायी ।।
न्येचुव छुय खोंश यिवुन गाटुल होंनर मन्द ।
होंनर मंज़ूर लख्यमी वाति कस अन्द ।।
अगाफिल निशि पानस वातुनावुन ।
वुछुन पूशीदु पांठिन आज़मावुन ।।
हकीमा बे दवा करि ज़िन्दु मोंरदन ।
कलमज़न बर हवा तसवीर लेखन ।।

बाहुवल से उन्होंने कमान को खींचकर ऐसा तीर चलाया (कि वह टूट गई) और उसका शोर (टूटने का स्वर) सकल दिशाओं में गूँज उठा। विश्वामित्र ऋषि स्वयं राजा जनक के पास गये और कहा तुम्हारे चाँद (सीता) पर सूर्य (रामचन्द्र) का योग बैठा है। विश्वामित्र ने राजा जनक से (आगे) कहा—अभी नक्षत्रों का योग भी अच्छा है—रोहिणी व पुष्य भी श्रेष्ठ हैं। उठिए, कमर कसिए और राजा दशरथ से मिलिए। वहाँ से सभी को बुला लाइए और अपनी कुमारी (सीता) को तार दीजिए। आपकी सारी चिन्ताएँ अब दूर हो जाएँगी। उत्तम लक्षण हैं और रामावतार आप पर प्रसन्न हो गये हैं।। ३० ।। दशरथ को बुलाइए और आप दोनों आशनाई कर लीजिए (संबंध स्थापित कर लीजिए), सारी चिन्ताएँ आपकी अब दूर हो जायेंगी। लड़का (रामचन्द्रजी) बहुत ही ख़ुश-शक्ल, प्रबुद्ध एवं हुनरमंद (कलावंत) है। ऐसे हुनरमन्दों के पास लक्ष्मी की कोई सीमा नहीं होती। आप चाहें तो उन्हें अगाफ़िल रूप से बुलाकर तथा अनजाने में (पोशीदा रूप में) देखकर उन्हें आज़मा सकते हैं। वे बिना दवाई के मुर्दों को ज़िन्दा करने वाले

इमारतगर छु बर आवे रवाना ।
करन संगीन बनावान तैमीर खाना ।। ३५ ।।

मुंनजिम त्युथ ख़बर आगाज़ो अंजाम ।
दिलस लीखित ज़ि गरदिश हाये अयाम ।।
बनन ती यी वनन द्रशटान्त हावन ।
अमा छु नु कांसि निश यिम सीर बावन ।।
अपुज़ पोज़ वोनुन तंम्य लोगुन मंज़िम योर ।
तिमन ओस लानि तंम्य पानस ह्योतुन बोर ।।
करुन सोरुय दयस छु पानु आसन ।
ख़बर छा कोनु छुख दयि व्याद कासन ।।
कबीलस तान्य त्युथुय राज़ु प्रुछनि गव ।
वनुनि लोग कार दयि सुन्द आशच्चरस गव ।। ४० ।।

तिथय बगवान्य तस माया पनुन्य हाव ।
यि कथ कर अदु कबीलस कांसि तंम्य बाव ।।

हकीम हैं। कलाकार वे ऐसे हैं कि हवा में अपनी क़लम से तसवीरें बनाते है, कारीगर ऐसे हैं कि बहते पानी (आबेरवानी) में संगीन (कठोर, स्थायी) तामीर-ख़ाना (भवन) बना सकते हैं।। ३५ ।। ज्योतिषी ऐसे है कि उन्हें सभी के आग़ाज़ो-अंजाम की ख़बर रहती है तथा क़ायनात के गरदिश की सारी बातें उनके दिल पर लिखी रहती हैं। जो वे कहते हैं वह होता भी है और उसका दृष्टांत भी प्रस्तुत करते हैं। परन्तु वे किसी पर अपना रहस्य प्रकट नहीं करते हैं। इस प्रकार (रामचन्द्र जी की बड़ाई में) सत्य-असत्य कहकर उस (ऋषि) ने एक मध्यस्थ की भूमिका अच्छी तरह निभा ली। दरअस्ल, उन दो (राम और सीता) का संयोग होना लिखा था और ऋषि ने यह भार अपने ऊपर ले लिया—वे निमित्त बन गये। भगवान् को सब कुछ स्वयं करना होता है और इसकी ख़बर बिल्कुल नहीं रहती कि कब वे किस की विपदा दूर करेंगे। इस पर राजा जनक अपने क़बीले वालों के पास (राय पूछने के लिए) गये। वे आश्चर्य-मग्न होकर (रामचन्द्रजी) भगवान् की महिमा का वर्णन करने लगे ।। ४० ।। और भगवान् ने कैसे अपनी माया दिखाई (धनुष को क्षणभर में तोड़ा आदि)—यह बात वे अपने क़बीले वालों तथा अन्य कुटुम्बियों से कहने लगे। वे आगे कहने लगे कि भगवान् को (नियति

वनुनि लोंग दय छु मिलुवान लांन्य कारन ।
पतो नाहक़ छु लूकन बांर्य खारन ॥
तवय आंसुस शिवन दिञु मुञ कमान तीर ।
तंमिस व्यवाह छु तस सूत्य त्रावि युस तीर ॥
सु अबिलाश ओस मनुक तस सोर द्रामुत ।
सु तीर ओसुस दपान वांलिजि ञामुत ॥
मुक़रर गव वेंश्वामेंत्रस लोंदुख बोर ।
ह्योंतुन तंम्य मटि पानस ओस मंञ्ज़िम योर ॥ ४५ ॥

वेंश्वामेंत्रन गछ़िथ वोंन दशरथस यी ।
व्यवाह तस रामुञन्द्रस वोंन्य करुन छुय ॥
यि बूज़ित कूत सांपुन शाद दशरथ ।
वेंश्वामेंत्रस लोंगुस पादन वंदनि रथ ॥
यि वुछितव करमुलीखा क्याह छि आसान ।
मंज़िमयोर छु बहानु खुर छु कासान ॥
लख्यन बूज़िथ ज़नख राजुह सपुन शाद ।
अंछिन मन्ज़बाग रंटिन रामुजुवन्य पाद ॥

के चक्र के अनुसार) मेल कराना होता है और नाहक़ ही (दूसरे) लोगों पर इसका भार चढ़ता है (वे कारण बन जाते हैं)। इसीलिए शिवजी ने यह तीर-कमान दी थी कि (सीता का) विवाह उसी के साथ सम्पन्न होगा जो इससे तीर छोड़ेगा। अब उस (राजा) के मन की अभिलाषा पूर्ण हो गई थी और दिल में लगा तीर (कहीं सीता कुँआरी ही न रह जाय) निकल गया था। (बाद में) यह मुक़र्रर हुआ कि पहले दशरथ को मनाने का काम विश्वामित्र को सौंपा जाय। इस तरह (विश्वामित्र ने) यह काम अपने ज़िम्मे ले लिया और मध्यस्थ बन गये ॥ ४५ ॥ (बाद में) दशरथ के पास जाकर विश्वामित्र ने यह कहा कि रामचन्द्रजी का विवाह अब आप को करना ही चाहिए। यह सुनकर दशरथ अत्यन्त शाद (प्रसन्न) हुए और विश्वामित्र की पाद-वन्दना करने लगे। यह देखिए, कर्म का लेख इसी को कहते हैं— मध्यस्थ तो बहाना होता है जो मात्र व्यवधान दूर करता है। इधर, रामचन्द्र के लक्षण सुनकर राजा (जनक) भी शाद हो गये और उन्होंने रामचन्द्र जी के पाद-कमलों को अपनी आँखों के साथ लगाया। उनका

स्यठा गोस मन प्रसंद खोंशहाल सांपुन ।
वेंझारिथ शेछ्य लंज़ुन तस दशरथस कुन ॥ ५० ॥

लंज़ुन शेंछ्य दशरथस तंम्य राज़ु ज़नखन ।
त्रे मा व्यवाह करुन छुय राज़ु पोंत्रन ॥
स्यठा सामानु पूरिथ राज़ु दशरथ ।
गछ़ेम युन सुत्य ह्यथ सालुर्‌य वअशरत ॥
त्युथुय युथ मन गछ़ेम यंत्रसाविदान शाद ।
वेंश्वामेत्रस दोंपुन सद आफरींबाद ॥
यि वुछतव क्याह छु आसन दयि कारन ।
गछ़ान छु येंलि मिलुवा लांन्य कारन ॥
मुक़रर यी सपुन वासाज़ो सामान ।
तिथय महाराजु गछ़ि युन खोंश तु खेलान ॥ ५५ ॥

पगाह सिरियन ज़ि कोह येंलि शोलु त्रोवुन ।
दपान दशरथ्य समय यंत्र शोरुनोवुन ॥
संमिथ तस आस कबीलु सोर क्रोनुय ।
दपान खांदर करनि गछ़ि राज़ु सोनुय ॥ ५७ ॥

मन वहुत प्रसन्न व खुशहाल हुआ और उन्होंने विचार कर के दशरथ के यहाँ सन्देश भिजवाया ॥ ५० ॥ कि आप को अपने राजपुत्रों का विवाह तो नहीं करना है ? हे राजा दशरथ ! ख़ूब सजधज कर व (ऐशो) इशरत आप वरातियों को संग लेकर पधारना ताकि मेरा मन पर्याप्त शाद हो जाये । (इसके वाद राजा जनक ने) विश्वामित्र को आफ़रींवाद (धन्यवाद) कहा (क्योंकि उन्हीं की वजह से यह शुभकार्य सम्पन्न होने जा रहा था ।) देखिए, भगवान् की लीला भी कितनी अपरंपार है । जव दो व्यक्तियों का संयोग लिखा होता है तो वे कैसे उन्हें मिला देते हैं । (वाद में) मुक़र्रर यह हुआ कि दूल्हा व-साज़ो-सामान (साज-सज्जा से युक्त) खुशियाँ मनाता व खेलता हुआ आयेगा ॥ ५५ ॥ दूसरे दिन जैसे ही सूर्य (कोह) पहाड़ के उस पार से चमकता हुआ उदित हुआ तो कहते हैं दशरथ के यहाँ ख़ूब शोर-गुल (जोश-ख़रोश) हुआ । उसके सभी क़वीले वाले व वन्धु-वाँधव (कुटुम्बी) आगये और कहने लगे कि हमारा राजा विवाह करने जा रहा है ॥ ५७ ॥

यैनि वाल्युक ग्यवुन

वनु वुनु मंज़ु रुच्र वासना द्राये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।।
ओम शबदु सुतिन शोंकलम करिथ ।
बनुवुन ह्यौतनय माजि बवाने ।।
लोलु सुत्य सरस्वती बेयि व्यज़ुयाये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।। १ ।।
व्यज़ुया सौंबरिथ दीवियि आये ।
प्यंगला तु मंगला शारदा ह्यथ ।।
शोंबुफल द्युतुनय माजि रांगिन्याये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।। २ ।।
छांविथ हियि पोश माजि शिवाये ।
वोंतुसि वोंमायि कोंरनय बाव ।।
सामानु गोंण्डुनय माजि शारिकाये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।। ३ ।।
लंखिमी सुत्य सुत्य रोंपु बवाने ।
सोंनु मालु मोंख्तु मालु छुनिनस नाली ।।

बरातियों का गीत

(इन) गीतों से शुभ बोल फूट रहे हैं, हमारे श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं। ओम् शब्द के साथ शुक्लम् का उच्चारण करके माता भवानी मंगलगीत गाने लगी है। सरस्वती और विजया भी प्रेम-मग्न होकर गाने लगीं—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं। १ विजया के संग अन्य देवियाँ पिंगला, मंगला और शारदा भी आ गई। माता राज्ञी ने शुभफल की बौछार की—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं। २ माता शिवा ने हिय-पुष्पों की वर्षा की, उत्रस की उमा§ ने प्रेमभाव प्रकट किया तथा माता शारिका ने साज़ो-सामान से (श्रीरामचन्द्र) को सुसज्जित किया—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं। ३ लक्ष्मी के साथ-साथ रूपभवानी भी आ गई और उन्होंने सोने की मालाएँ व

§ उत्रस ग्राम की देवी 'उमा'। इस गीत मे कश्मीर प्रदेश के स्थानीय देवी-दवताओ के कई नाम आये है।

वाल्य त्राल गंजिनस माजि कालिकाये ।
शाम रूपु रामु गछि सीताये ॥ ४ ॥

शीतला तु तोतला रामुनि माये ।
ड्यकस प्यठ च्रंदरमु प्रज़लान छुस ॥
सोनु जामु गंडिनय कौशल्याये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ॥ ५ ॥

गायत्री तु सावित्री त्रिसन्द्याये ।
ज़लन गामि नारु मंज़ु रंटनय जाये ॥
पवुनु सन्द लोदरु सन्द वरगुशिखाये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ॥ ६ ॥

वसिष्ट तु ब्रह्मा वीद परान द्राये ।
ब्रह्मा व्येशिन तु ईशर द्राव ॥
नमस्कार बोविनय करमु लीखाये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ॥ ७ ॥

यन्दुराज़ु दरमु राज़ु बरक अन्दाज़ुय ।
चाव बरान कीकी वनुवान द्राये ॥
बरथजी शुत्रगुन वुछिने द्राये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ॥ ८ ॥

मुक्ताओं की मालाएँ (उनके) गले में डालीं । अन्य आभूषण (कुण्डल, अंगूठी आदि) माता कालिका ने पहनाये—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे है । ४ शीतला (देवी) और तोतला (देवी) भी प्रिय रामचन्द्रजी के लिए आ गई । उन (रामचन्द्रजी के) माथे पर चन्द्रमा प्रज्वलित हो रहा है । कौशल्या ने स्वर्ण-वस्त्र (उन्हें) पहनाये—(हमारे) श्याम-रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं । ५ गायत्री, सावित्री और त्रिसन्ध्या भी आ गई । जलनगाँव की देवी तथा पवन-सन्ध्या, लोदरु सन्ध्या और वरगुशिखा भी पधारीं—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं । ६ वशिष्ठ और ब्रह्मा वेद-पाठ करते हुए निकल पड़े । ब्रह्मा के साथ-साथ विष्णु व ईश्वर भी निकल पड़े । कर्म के लेख को नमस्कार हो—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे है । ७ राजा इन्द्र और धर्मराज ने मुख्य कार्यकर्त्ताओं की भूमिका निभाई और कैकेयी चाव से मंगलगीत

सादिदान मन गोस शाद्य करानुय ।
मनु किन्य लोलु सूत्य सोमेत्राये ।।
नाल्य मालु छ्निनस कौशल्याये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।। ९ ।।

ह्यंगला तु मंगला बंदरुकल आये ।
बावुकि सरु मंजु ह्यथ पंपोश ।।
येछि सूत्य रामस लागुनि आये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।। १० ।।

तपीशर मुनीशर सूत्य तस द्राये ।
त्रनु वंन्य लोलु येछ सूत्य ह्यथ द्राये ।।
नमस्कार बोविनय वेश्नु मायाये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।। ११ ।।

दीवियि विगने पतु ब्रोंठु द्राये ।
ब्रोंठु ब्रोंठु विगिनि छ सोज़ करान ।।
पतु पतु दीवियि वनुवान द्राये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।। १२ ।।

गाती हुई निकली । भरत और शत्रुघ्न भी (श्रीराम को) देखने के लिए निकल पड़े । (हमारे)श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं । ८ सुमित्रा का मन निश्चित होकर शादमानी करने लगा और वह प्रेम-मग्न हो उठी । उसके गले में कौशल्या ने मालाएँ डाली—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं । ९ हिंगुला, मंगला और भद्रकाली भी आ गई । बड़ी लगन के साथ सभी अपने भावना के सरोवर के कमल (श्रद्धा-पुष्प) श्रीरामचन्द्र को लगाने के लिए आ गई—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे है । १० (बड़े-बड़े) तपीश्वर और मुनीश्वर भी सप्रेम तीनों के साथ-साथ निकल पड़े । विष्णु की माया को नमस्कार हो—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं । ११ (विभिन्न) देवियाँ व अप्सराएँ (नृत्य-गान करती हुई) आगे-पीछे निकल पड़ीं । आगे-आगे देवांगनाएँ (अप्सराएँ) संगीत (वाद्य) वजाने लगीं और पीछे-पीछे देवियाँ मंगल-गान करती हुई निकल पड़ीं—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं । १२ नीलनाग (नील-सरोवर) के तरह-तरह के कमलों (पंकपुष्पों)

कम कम पंपोश नीलुनागु द्राये ।
येंछि सूत्य लागु हा श्री रामस ।।
मनु किन्य येंछि सूत्य लागुनि द्राये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।। १३ ।।

प्रकाश चोनुय छुय प्रथ जाये ।
गट् च्रंज्य असि चानि दशरनु सूत्य ।।
दीवियि तु दीवता शरनुय आये ।
शामु रूपु रामु गछि सीताये ।। १४ ।।

श्री रामसुन्द यैनिवोल

गोंडुख सामानु सोरुय राजुपोत्रन ।
सपुन खोश राजु डीशिथ राजुपोत्रन ।।
बंरिथ सामाना अज़ ज़र वफ्त अतलास ।
स्यठाह नाल्य मोख्तु मालु सासु बंद्य सास ।।
गुरेन हसितेन गोंडुख सामानु अज़ ज़र ।
सरापा ग़रक़ गयि दर ज़रो ज़ेवर ।।

की भावाञ्जलि श्रीराम पर चढ़ाई गई। सभी मन व लगन से ये पुष्प (उन पर) चढ़ाने के लिए निकल पड़े—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं। १३ (हे राम!) आपका ही प्रकाश प्रत्येक स्थान पर है। आपके दर्शन से हमारा अंधकार दूर हो गया। सभी देवी-देवता आपका दर्शन करने के लिए आ गये हैं—(हमारे) श्याम रूप राम सीता को वरण करने जा रहे हैं। १४

श्रीराम की बरात

राजपुत्रों को (विभिन्न प्रसाधनों से) अलंकृत किया गया और राजा उन्हें देखकर खुश हो गये। (सभी राजपुत्र) मूल्यवान् बाफ़्ता, अतलस आदि (क़ीमती वस्त्रों) से युक्त थे। गले में हज़ारों की संख्या में मुक्ताओं की मालाएँ (सुशोभित हो रही) थीं। घोड़ों व हाथियों पर मूल्यवान् सामान लादा गया और उन्हें सिर से पैर तक ज़री-जेवर से ग़र्क (निमग्न) किया गया। सभी ख़ुशी-ख़ुशी अराबों (गाड़ियों) पर सवार हो गये और रथों व हाथियों पर से नक़्क़ारे (नगाड़े) बज उठे।

कंरुख शांदी अराबन गयि सवारा ।
रथन हृसितेंन प्यठुय वोयुख नक़ारा ॥
तयांरी कंरुख सांरिय द्रायि शादां ।
तिमन मंज़ रामुजुव ज़न सिरियि ताबां ॥ ५ ॥

तबलु वोयुक सपुन यंत्र शांदियाना ।
ज़नख राज़ुन गरु सांपुन्य रवाना ॥
समिथ तिम आसतु आसतु द्रायि खोंशदिल ।
पकुनि लंग्य रसु रसु मंज़िल ब मंज़िल ॥
स्यठाह् शांदी करान मंज़िल कंरिख तय ।
बशांदी राज़ुह् ज़नुखुन गरु गंछ़िथ प्यय ॥
दपान तंम्य राज़ु ज़नखन फरशि मख़मल ।
वथुरमुत लोलुबाग़स ही तु मसवल ॥
वुछिथ सामानु आशत्ररकार सांपुन ।
वुछिथ तिम राज़ु लूख यंत्र शाद सांपुन ॥ १० ॥

तिमन वुछ्य वुछ्य स्यठाह् गव शाद राज़ु ।
वुछिथ महाराज़ु यंत्र गव राज़ु ताज़ु ॥
कंरुख शांदी मुनांदी द्रायि बाज़ार ।
संमिथ यिन राज़ु ज़नखुन गरु लाचार ॥

सभी तैयार होकर ख़ुशी-ख़ुशी निकल पड़े। उनके बीच में श्रीरामचन्द्र जी मानो सूर्य के समान चमक रहे थे ॥ ५ ॥ तबला (ढोल) बजाया गया और राजा जनक के घर की ओर (सभी) शादमानी के साथ रवाना हो गये। सभी इक्ट्ठे होकर आहिस्ता-आहिस्ता ख़ुश-दिल होकर चल पड़े। वे धीरे-धीरे मंज़िल-ब-मंज़िल चलने लगे। ख़ूब प्रसन्नता के साथ उन्होंने मंज़िल को तय कर लिया और ख़ुशी के साथ (आख़िरकार) राजा जनक के घर पर पहुँच गये। (इधर) राजा जनक ने (बरातियों के स्वागत के लिए अपने प्रेम-उद्यान के मख़मली फ़र्श को चंपा व मसवल के पुष्पों से सजा रखा था मूल्यवान् सामान को देख वे (राजा जनक) आश्चर्य करने लगे तथा बारात में ऐसे-ऐसे (राजा लोगों) महापुरुषों को देखकर वे शाद हो गये ॥ १० ॥ उन (बरातियों) को देख-देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और आशातीत रूप से ताज़ा हो गये। (सभी ने) ख़ुशियाँ मनाई और नगर (के बाज़ारों) में यह मुनादी कराई गई कि जो लाचार (निर्धन, दरिद्र) हों वे सभी मिलकर राजा जनक के घर

द्युतुक दरमस खज़ानु राज तु ताज ।
विला शक वाति योत युस आसि मोहताज ।।
स्यठाह् गव नगर खोश शादी तिमव दीठ ।
करिथ यंत्र दरम दान लगनस प्यठन वीठ्य ।। १४ ।।

लगनुक ग्यवुन

शेरस लागय पोश लवु हंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।।
शोक्लम करिथ ओम शब्दु सातिये ।
वीदु शास्त्रु द्रायि र्‌त्य र्‌त्य गोन ।।
वोलुबा वरुनख महागनुपतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। १ ।।

व्यज़या सूत्य छय वेयि सरस्वतिये ।
वनु वुनु मंज़ु शोव वासना द्राये ।।
शिवुनाथ वरुने आव पारुवतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। २ ।।

जमुना शारुदा छय सूत्य सूतिये ।
नमु ना पादन गण्डु हाय सोन ।।

पर आजायें, उनके लिए खज़ाने का सारा धन, राज और ताज लुटाया जायेगा। कोई मुहताज (निःसहाय) हो तो वह विलाशक (निश्चित होकर) यहाँ पहुँच जाय। नगर वहुत ही खुश हो गया और नगरवासी शादमानी करने लगे। (इस प्रकार) पर्याप्त दान-धर्म करके वे लग्न करने को बैठे ।। १४ ।।

लग्न का गीत

तेरे सिर पर ओस-सिक्त (ताज़े) पुष्प लगाऊँ, री सीता! तेरा विवाह काल आ गया। शुक्लम् (शुभ योग) में ओम् शब्द के साथ वेद एवं शास्त्रों की मंगल-वाणी प्रस्फुटित हो रही है। वल्लभा का वरण करने महागणपत आगये हैं—री सीता! तेरा विवाह-काल आ गया। १ (देवी) विजया के साथ सरस्वती भी है। मंगलगीतों से शुभवासना (शुभेच्छा) फूट रही है। शिवनाथ पार्वती को वरण करने आये हैं—री सीता! तेरा विवाह-काल आ गया। २ जमुना और शारदा (भी)

बूतीश्वर वरुनि आव रांगिन्यायि यैतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। ३ ।।

ह्यंगला मंगला बंदरुकल आये ।
ब्रह्मा करान ओस दारु पूज़ा ।।
दारस अरुग पोश लांग्य हंगि सांती ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। ४ ।।

ज़ाला लम्बोदर बेयि गणुपतिये ।
करिहय पोंपरु कौङ्ग पोशि डूरी ।।
बालुहामि वालिकायि वनुवुन ह्योतये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। ५ ।।

अंकिनगामि शिवायि वनुवुन ह्योतये ।
वौत्रसि वौमायि करनय जाय ।।
लोलु चानि ज़नु खुनि गरि छी यैतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। ६ ।।

सोम्बरिथ दीवी दीवता यैतिये ।
ब्रह्मा तु ब्रह्मन वीद परान ।।
लंगुनस वंछुखय रामस सांतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। ७ ।।

साथ-साथ हैं । तेरे चरणों में झुककर वे सोना बाँध रही है । भूतेश्वर राज्ञी को वरण करने आये हैं—री सीता ! तेरा विवाह-काल आ गया । ३ हिंगुला, मंगला और भद्रकाली (भी) आ गई है । ब्रह्मा (स्वयं) द्वार-पूजा कर रहे है । द्वार पर अर्घ्य व पुष्प उन्होंने सश्रद्धा लगाये—री सीता ! तेरा विवाह-काल आ गया । ४ ज्वाला, लम्बोदर और गणपंत ने पाँपोर गाँव में तेरे लिए केसर (कुमकुम) की बाटिका लगाई । वालुहाम गाँव की वालिका (देवी) ने भी मंगलगान शुरू किया—री सीता तेरा विवाह-काल आ गया । ५ अकिनगाम गाँव की शिवा भी मंगलगान करने लगी । उत्रस गाँव की उमा ने अपने दिल में तुझे बिठाया । ये सभी देवियाँ तेरे प्रेम में यहाँ जनक के घर विराज रही हैं—री सीता ! तेरा विवाह-काल आ गया । ६ सभी देवी-देवता यहाँ इक्ट्ठे हुए हैं और ब्रह्मा व अन्य ब्राह्मण वेद-पाठ कर रहे है । सभी ने लग्न-मण्डप पर सीता को राम के साथ देखा—री सीता !

त्रिसन्द लोंदरुसंद पवनु सांतिये ।
अज्ञान त्रांविथ व्योंन व्योंन नाव ।।
वशस्ट महार्यांश छुय सनिदान येंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह् काल ।। ८ ।।

छु राज़ु वुछान ब्रोंठु तय पंतिये ।
रोंपुबवानि रंट वासुकुरि जाय ।।
अंगनस कुन च्रु अथु दार येंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह् काल ।। ९ ।।

ब्रह्मा वीद परान ब्रोंठ तु पंतिये ।
सन्ज करनि आंयी बंदरुकाली ।।
रामुजुव वरुनि आव सीतायि येंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह् काल ।। १० ।।

क्रुश्नु जुवन अवतार दोरुन येंतिये ।
रादायि वरुने मन्ज़ द्वारिका ।।
नन्दु गोर्युन गरु आमुत छु येंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह् काल ।। ११ ।।

राजु सोन वोज़ वरन त्रिपुरसुन्दरिये ।
शीतला तु तोतला रख्या कार ।।

तेरा विवाह्-काल आ गया। ७ त्रिसन्ध्या (भी) लोंदरु-सन्ध्या और पवनु-सन्ध्या के साथ आ गई है। अज्ञान को त्याग कर उनके (पृथक्-पृथक्) स्वरूप को पह्चाना जा सकता है। मह्र्षि वशिष्ठ भी यहाँ पर सुशोभित हो रहे हैं। री सीता! तेरा विवाह्-काल आ गया। ८ राजा (कभी) आगे और (कभी) पीछे देख रहे हैं। वासुकुर गाँव की रूपभवानी ने भी अपना स्थान ग्रह्ण कर लिया। अग्नि के प्रति तेरे हाथ हैं—री सीता! तेरा विवाह्-काल आ गया। ९ ब्रह्मा (तेरे) आगे-पीछे वेद-पाठ कर रहे है। भद्रकाली तुझे (साज-सँवार कर) तैयार करने के लिए आ गई है। रामचन्द्र सीता का वरण करने के लिए आ गये हैं—री सीता! तेरा विवाह्-काल आ गया। १० कृष्णजी ने (जैसे) यहाँ अवतार धारण कर लिया है और द्वारिका में राधा को वरण करने के लिए आ गये हैं। वे (जैसे) नन्द-ग्वाल के घर यहाँ आ गये हों—री सीता! तेरा विवाह्-काल आ गया। ११

लखिमन जुव वरुनि आव पद्मावंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। १२ ।।

वेश्वामेत्रन म्युल करिथ द्युतुये ।
राज़ु दशरथ गरुहय आव ।।
बरथ राज़ु वरने आव बगवंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। १३ ।।

दशरथ तति कौलुबरदार दारी ।
सन्ज़ तय सामानु छुय करान ।।
शतुरगुण वरुनि आव पद्मावंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। १४ ।।

त्रिकूटी दीवुता सुत्य सुत्य संतिये ।
लांनिस चांनिस जय जय कार ।।
त्रिकारण त्रिभुवन सुत्य सुत्य यंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। १५ ।।

दीवी छय करान पोशन फौंतिये ।
राज़ु कौमारि करु पोशि पूज़ा ।।
शेरस पोश लागय वौज़िल्य नील्य छौंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवार काल ।। १६ ।।

सुनो, हमारा राजा त्रिपुरसुन्दरी को वरण कर रहा है। देवी शीतला और तोतला रक्षा करने आई हैं। लक्ष्मण जी पद्मावती को वरण करने के लिए आ गये हैं—री सीता! तेरा विवाहकाल आ गया। १२ विश्वामित्र ने यह संयोग कराया और राजा दशरथ फूले नहीं समा रहे हैं। भरत (भी) पद्मावती को वरण करने के लिए आ गये हैं—री सीता! तेरा विवाह-काल आ गया। १३ दशरथ (सूर्य) वंश के मुखिया का दायित्व निभा रहे हैं तथा सभी तरह के प्रबंध कर रहे हैं। शत्रुघ्न (भी) पद्मावती को वरण करने के लिए आ गये हैं—री सीता! तेरा विवाह-काल आ गया। १४ तीनों लोकों के देवता (तैंतीस करोड़ देवता) साथ-साथ हैं। तेरे भाग्य को जय-जयकार हो। त्रिकारण एवं त्रिभुवन (के स्वामी) भी यहाँ पर हैं—री सीता! तेरा विवाह-काल आ गया। १५ देवी पुष्पों के अम्बार बना रही है ताकि (हमारी) राजकुमारी की पुष्पों से पूजा की जाय। तेरे शीर्ष पर वह लाल, नीले

दीवता अंद्य अंद्य वुछान छी लंतिये ।
लायि वांये गंगु व्यसु मंगु नावेंख ।।
लायि वांये लायि छख दिच्र ग्रोंठु पंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। १७ ।।

लंख्यमी तु हांरी आयि परुवंतिये ।
अष्टादशु वोंज़ साल करान ।।
च्रंकरीशोंर वरुने आव वगुवंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। १८ ।।

दखिनायि येलि वेलु वोतुय संतिये ।
वसिष्ट महार्‌योंश थाल् ह्यथ द्राव ।।
पखिदार ब्रह्मनव नियि मोंहरु फोंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। १९ ।।

मंज़िमयोर मोंहरु मंगनि आवुय तंतिये ।
दखिना दिनु विज़ि कोंरुख याद ।।
नन्दुगूर दोंद ह्यथ आसय योंतुये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। २० ।।

व सफ़ेद पुष्प लगा रही है—री सीता ! तेरा विवाह-काल आ गया । १६ आस-पास बैठे सभी देवता (सब कुछ ध्यान से) देख रहे हैं । 'लायबोय'† और 'गंगव्यस'† को बुलाया गया । लायबोय ने आगे-पीछे खीलों की वर्षा की—री सीता ! तेरा विवाह-काल आ गया । १७ (देवी) लक्ष्मी और 'हारी' (शारिका) पर्वत से आ गई । अष्टादशभुज भोज का आयोजन कर रही हैं । चक्रेश्वर भगवती को वरण करने के लिए आ गये हैं—री सीता ! तेरा विवाह-काल आ गया । १८ जब दक्षिणा देने की वेला आई तो (कुल-ब्राह्मण) महर्षि वशिष्ठ थाली लेकर निकले (तथा अन्य) पक्ष के ब्राह्मणों को मोहरों की टोकरियाँ मिलीं—री सीता ! तेरा विवाह-काल आ गया । १९ दक्षिणा देने के समय मध्यस्थ को याद किया गया और वह मोहरों को माँगने स्वयं वहाँ (लग्न-मण्डप) पर पहुँचा । (विवाह में दूध की व्यवस्था करने के लिए) नन्द-ग्वाल स्वयं दूध लेकर वहाँ आये हैं—री सीता ! तेरा विवाह-काल आ गया । २० आपके प्रकाश से अन्धकार दूर हो गया । हे राम ! अब

† लग्न का एक विशिष्ट कृत्य । कन्यापक्ष के बालक और बालिका इसे सम्पन्न करते हैं । इन्हें क्रमश: लायबोय और गंगव्यस कहते हैं ।

प्रकाशि चाने गटु गंज्य येतिये ।
श्रीरामु असि वौन्य दर्शुन हाव ।।
अन्दुकार वौन्दु निशि कास वगुवंतिये ।
संतिये वोतुये व्यवाह काल ।। २१ ।।

व्यवाह (लंगुन)

वेशवामेत्रन लंगुन वोन राज़ु जनखस ।
अंनिख सीता तु पुशरुख रामुचन्दुरस ।।
रंनिख बूज़न अंनिख सारिय कबीलु ।
कोरुख व्यवाह तिमन रूदुक नु हीलु ।।
ज़नख राज़स पनुन्य अख आंस कोमारी ।
सों पुशरुन लंखिमनस खोश गास सारी ।।
ज़ु आसस बावुज़ु पुशरेन तिमन दोन ।
बरुथ बेयि ओस मोलिस सुत्य शतुरगोण ।।
करुख तीज़ी तु खोश सांपुत सु दशरथ ।
कोरुन खान्दर तु गरु गव च्रोर नोशि ह्यथ ।। ५ ।।

करुख शादी अराबन गंयि सवारा ।
ज़नख राज़ुनि गरि सांपुन्य रवाना ।।

आप हमें दर्शन दीजिए। हमारे दिल से, हे भगवती, आप अन्धकार मिटा दीजिए--री सीता ! तेरा विवाह-काल आ गया। २१

विवाह (लग्न)

विश्वामित्र ने राजा जनक को लग्न बताया और सीता को लाकर श्रीरामचन्द्र को सौंपा गया। अच्छे-अच्छे भोजन पकाये गये तथा सारे क़बीले वालों को बुलाया गया। विवाह (सानन्द) सम्पन्न हुआ तथा किसी को कोई शिकायत नहीं रही। राजा जनक की एक अपनी कुमारी (कन्या) थी जिसे उन्होंने लक्ष्मण को सौंपा तथा सभी खुश हो गये। उनकी दो भतीजियाँ भी थीं जिन्हें उन्होंने पिता के साथ आये हुए भरत और शत्रुघ्न को सौंपा। सभी ने (लौटने ने लिए) जल्दी की तथा राजा दशरथ खुश हो गये। विवाह के सम्पन्न हो जाने पर वे (राजा दशरथ) चार वधुओं को लेकर घर (अयोध्या) की ओर चल पड़े।। ५ ।।
खुशियाँ मनाते हुए सभी रथों पर सवार हो गये तथा जनक के घर से

सु दशरथ लीन गव पनुनिस हरस कुन ।
पकन गव लोलु सुत्य पनुनिस गरस कुन ।।
गर्म बाज़ार सांपुन दरम का राज ।
मनुष्य गंयि खोंश कांह छुनु कांसि मुहताज ।।
पकान गव वोत येलि तोंत बारगोराम ।
कमान फुटरुन दोंपुन तस कर चु आराम ।।
दोंपुन तस गछ चु पानस बेह खंटित रोज़ ।
नयाबत वांत्र वोन्य असि निश पोंज़ुय वोज़ ।। १० ।।

पकन सोंन रोंफ छकन गरुड़ा सवारी ।
समिथ त्रियि आयि लजि तस पार्य पारी ।।
तसुन्द दरशुन वुछित तिमु पान गालन ।
जु आलंत्र करन मोंक्तु रूद वालन ।।
यिवान दरशुन वुछिनि सारी गंडिथ गुल्य ।
करान आलंत्र जिगर गोशस वन्दन दिल ।।
वनुनि लंग्य शक्ति बोंड दय व्याद कांसिन ।
नंविस राज़स मुबारकबाद आंसिन ।।

रवाना हो गये । राजा दशरथ अपने हर (भगवान्) के ध्यान में लीन हो गये तथा प्रेमपूर्वक अपने घर की ओर प्रस्थान किया । दान-धर्म के प्रभाव से सभी बाज़ार (रास्ते) गर्म हो उठे (रास्ते-भर राजा ने ख़ूब दान-पुण्य किया) । सारे मनुष्य ख़ुश हो गये—कोई किसी का मुहताज न रहा (व्यापक दान के कारण कोई निर्धन नहीं रहा) । चलते-चलते उन्हें रास्ते में भार्गव राम (परशुराम) मिले । (दशरथ ने उनसे कहा,) आपकी कमान तोड़ दी जा चुकी है, आप आराम करें तथा कहीं बैठकर गुप्तवास करें । (इस बहाने से) हमारे पास एक दुर्लभ वस्तु (सीता) आ गई है—यह आप सच मानिए ।। १० ।। इस प्रकार (विपुल मात्रा में) सोने-चाँदी की दान-पुण्य में वर्षा करते हुए तथा गरुड़ पर सवार होकर वे (श्रीरामचन्द्र जी सीता सहित) आगे चलते गये । (अयोध्या में सीता-राम के आगमन की सूचना पाकर) नगर की सभी स्त्रियाँ इक्ट्ठी हुई तथा उन पर बलिहारी हुई । उसका (सीता का) दर्शन पाकर वे उस पर मर मिटीं । सभी ने दो बार आरती उतारी तथा मोतियों की वर्षा करने लगीं । दूसरे अनेक नर-नारी हाथ जोड़कर दर्शन करने हेतु आते गये तथा जिगर के टुकड़े (श्रीराम) की आरती उतारकर वंदना करने

मुबरिख गंज पुशिराविख गरीबन ।
सोनस तल गरक़ सॉपुन्य सारी बरह्मन ।। १५ ।।

वालकाण्ड समाप्त

लगे कि सर्वशक्तिमान् भगवान् हमारे दुःख दूर करें तथा नये राजा को मुबारिकबाद हो । खज़ानों के द्वार ग़रीबों के लिए खोल दिये गये तथा सारे ब्राह्मण सोने तले डूब गये (असीम दान पाकर स्वर्णमय हो गये) ।। १५ ।।

।। वालकाण्ड समाप्त ।।

अजोद्या काण्ड

राजतिलक

जमा सॉरी सपुन्य अरकानि दोलत ।
तिमव कर सारिवुय राज़स सुतिन कथ ।।
दोपुक नगरस समिथ खिर खण्ड ख्यावव ।
नविस राजस पलंगस बेह नावव ।।
मुक़रर गव पगा सुबहन प्रवातन ।
समिथ यिन रामुचन्दुरस ताज पुशरन ।।
ब्रहस्पत सिरियि बोद येलि गोस केन्दुरस ।
दपान नारद रेश्य वोन रामुचन्दुरस ।।

अयोध्या काण्ड

राजतिलक

सभी सभासद् जमा हो गये तथा उन सभी ने राजा के सामने प्रस्ताव रखा कि सारे नगर को इक्ट्ठा कर खीर और मिठाई खिलाइए और नये राजा को पलंग (सिंहासन) पर विठाइए । मुक़र्रर यह हुआ कि कल सुबह प्रभात-वेला में सभी इक्ट्ठे होंगे और रामचन्द्र को ताज सौंपा जायेगा । वृहस्पति, सूर्य और बुद्ध एक ही केन्द्र में आ गये और नारद ऋषि ने रामचन्द्र से

महाराजा नरायन छुख च़ु ज़ामुत।
ख़बर छय ना च़ुह् क्याह् छुख करनि आमुत ॥ ५ ॥

लीला

च़ेतनो हरु हरु लग सौरुने
असार ज़ान ज़न ब्रम समसार
मूह् रच़ि मनस क्याह् सनु सने
बेगानु गोंज़रुथ पननुय यार
अमरेथ त्राविथ वेह् लोग सु ख्येने
असार ज़ान ज़न ब्रम समसार ॥ १ ॥

कमन व्यसतारन लोग खसुने
यश क्या गन्ज़ुरुथ यिम छिम द्यार
बेंयि यिम शुर्य बांच़ छिम ब्रोंठकने
असार ज़ान ज़न ब्रम समसार ॥ २ ॥

काया दोंह् अकि लगियो प्येने
च़े कोनु मनस कोरुथ व्यच़ार
अस्तु अस्तु दारस लोंगुख खसुने
असार ज़ान ज़न ब्रम समसार ॥ ३ ॥

कहा—महाराज, आप तो (साक्षात्) नारायण हैं, आपको नहीं मालूम कि आप क्या-क्या करने आये हुए हैं ॥ ५ ॥

रे चेतन-जीव ! तू हर-हर का स्मरण कर तथा इस भ्रमपूर्ण संसार को असार जान। तेरे मोह से युक्त मन में भला क्या समायेगा, (तूने) अपने यार (इष्ट) को बेगाना समझा (तथा) अब अमृत छोड़ जहर खा रहा है—रे चेतन जीव ! इस भ्रमपूर्ण संसार को असार जान। १ तू न जाने किन-किन मंसूबों को बनाता रहा। तूने यश को (अपनी उपलब्धियों को) स्थायी धन गिन लिया और बाल-बच्चों को सदा के लिए अपने पास रहने की (मिथ्या) कल्पना की—रे चेतन जीव ! इस भ्रमपूर्ण संसार को असार जान। २ तेरी काया एक दिन गिरने लग जायेगी—यह विचार तूने मन में क्यों नहीं किया ? तू धीरे-धीरे मृत्यु के द्वार की ओर बढ़ रहा है—रे चेतन जीव ! इस भ्रमपूर्ण संसार को असार जान। ३ तूने माया (के प्रकोप) को न जाना। रे अन्धे ! तू

ज़ानिथ तु माया पानय नने
हा अनि कोनु गोख ख़बरदार
आख तय नोंनुय गछ्ख न्यथुनोंनुय
असार ज़ान ज़न ब्रम समसार ॥ ४ ॥

समुयस वातिथ प्यख च्रु वुने
अफ़सोस ख्यख अदु तेंलि क्याह् तार
सोंथ सूरिथ तु हरदु आख नटुने
असार ज़ान ज़न ब्रम समसार ॥ ५ ॥

दयि दयि सौरान यिम मंज़ मने
मोंख त्राविथ बोंड़ छु हृदयुक सार
हृदयिकि कोचि फेर बा हनि हने
असार ज़ान ज़न ब्रम समसार ॥ ६ ॥

शमित पानय आसय वनय
गाश डीशिथ च्रलि अन्दुकार
गटु दूर गंछिथ प्रकाश नने
असार ज़ान ज़न ब्रम समसार ॥ ७ ॥

(इससे) ख़बरदार (भी) क्यों न हुआ ? तू नंगा आया था और नंगा ही जायेगा—रे चेतन जीव! इस भ्रमपूर्ण संसार को असार जान। ४ समय आने पर तू (जब) सम्भल जायेगा तो अफ़सोस! उस समय तेरा कोई निस्तार न होगा। तूने बसंत (जवानी) का मज़ा तो ले लिया किन्तु शरद् (बुढ़ापे) में काँपने लग गया—रे चेतन जीव! इस भ्रमपूर्ण संसार को असार जान। ५ मात्र मुँह पर (दिखाने के लिए भगवान् का) नाम न लेकर, जो मन में उसका स्मरण करते हैं—वही हृदय के पारखी हैं। (तू भी) हृदय के प्रत्येक कूचे में तल्लीन होकर फिर—रे चेतन जीव! इस भ्रमपूर्ण संसार को असार जान। ६ मैं (अपनी इच्छाओं) का शमन कर तुझसे कह रहा हूँ कि तब प्रकाश के दर्शन होंगे और अन्धकार दूर हो जायेगा—रे चेतन जीव! इस भ्रमपूर्ण संसार को असार जान ॥ ७ ॥

कीकी हुन्द छल

च़ रूशिथ बेहतु लोलस पोन्य त्राविथ ।
यियि कुस योत नियी कुस मनु नाविथ ॥
दोपुस तम्य नारदो बोज़ख च़ु पानय ।
सपनि अज़ राथ क्युथ क्याह तां वकानय ॥
यिहय कथ येलि यन्दुराज़स निशि वाच़ ।
अनिन तम्य सरस्वती सूज़ुन तमी राच़ ॥
दोपुन तस वुन्य च़ु गछ़ कीकियी फिर मन ।
त्युथुय युथ रामु च़ंदुरस छुनि कड़िथ वन ॥
यहय शेछ्य आस यिछ़ कीकियी डोल मन ।
वनुन राजस ह्योतुन राज़न थोवुस कन ॥ ५ ॥

दपान येलि राज़ु गव कीकियी निश रात ।
दोपुस तमि दप मे मा मोंगमय च़े केंह ज़ात ॥
मंगय केंह छा मे दिनुकिन्य ती गछ़ेम द्युन ।
दोपुस तम्य तोरु द्युतमय वुन्य गछ़ेम न्युन ॥
अथस प्यठ वास दिथ कोरनस बन्दानय ।
च़ु योदवय ज़ुव मंगख पुशरय बु पानय ॥

कैकेयी का छल

तू प्रेम में कठोरता लाकर (उस पर पानी फेंककर) भले ही यहाँ रूठ कर बैठी रह, पर यहाँ तुझे मनाकर ले जाने के लिए कौन आयेगा ? इस पर उसने (कैकेयी ने) कहा—नारदजी, आप को स्वयं मालूम पड़ जायेगा, आज रात कुछ होकर रहेगा—ऐसा मुझे लग रहा है । यह बात जब राजा इन्द्र के पास पहुँची तो उसने सरस्वती को बुलवाया और उसी रात उसे (अयोध्यापुरी) भेजा । उसने (इन्द्र ने आगे) कहा—तू जा और कैकेयी का मन फेर जिससे वह रामचन्द्र को वन भिजवा दे । बस इतना ही कहना था कि कैकेयी का मन डोल (फिर) गया, और वह राजा से अपना मंतव्य कहने के लिए तैयार हो गई । ५ कहते हैं जब रात को राजा कैकेयी के पास गये तो उसने (कैकेयी ने) कहा—कहिए, आज तक मैंने (आप से) कुछ भी नहीं मांगा, यदि अब मैं कुछ माँगू तो देने की इच्छा से (अनायास ही) वह मुझे मिलना चाहिए । (इस पर) उसने (राजा ने) कहा—जा, दे दिया—अब माँग । हाथों में हाथ लेकर (राजा ने आगे)

छु क्याह चीज़ा मंगख आंसिथ दिमय ना ।
दपख योंत युन बु तोंत वुथिकिन यिमय ना ।।
वुछिव त्रियु वावुकिन येलि दोरुनस कन ।
त्युथुय ल्युथ गोस युथ करि हेस नु दुश्मन ।। १० ।।

दपन कीकी स्यठा तस आंस दिल ख़्वाह ।
दोंपुस तमि रामु चन्दुरुन राज छुम दाह ।।
कसम छुय ना ख्योमुत गछि वादु पालुन ।
मेंथुर रछुन शेंथुर गछि मूलु गालुन ।।
वरुथ गछि राज़ु आसुन राम वनवास ।
दपन कीकी वुछिव वादुबार क्याह आस ।।
त्युथुय बूज़िथ वंसिथ प्यव राज़ु वरख़ाक ।
कोंरुन जामन तु जानस सांरिसुय चाक ।।
ति बूज़िथ राज़ु बुथ्य किन्य तति पथर प्यव ।
त्युथुय युथ सारिवुय गंज़रुख सपुन शव ।। १५ ।।

वोंदुन वाराह दोंपुन तस क्याह यि कोंरथम ।
जिगर चोंटथम शिकम किथु नारु बोंरथम ।।

कहा, यदि तू जान तक माँगेगी तो मैं वह भी स्वयं पेश करूँगा । (भला) ऐसी कौन-सी चीज़ है जो तू माँगेगी और मेरे पास होते हुए भी तूझे न दूँ । तू मुँह के बल भी कहीं चलने को कहे तो मैं चला जाऊँगा । जब कैकेयी ने देखा कि राजा त्रिया-जाल में पूर्णतया फँस चुका है तो उसने उसकी (राजा की) ऐसी दुर्गति की जो दुश्मन भी नहीं कर सकता था । १० कहते हैं, कैकेयी उसकी (राजा की) बहुत ही लाड़ली रानी थी और उसने कहा--रामचन्द्र का राजा होना मेरे लिए दाह (जलन) समान हो रहा है । आपने कसम खाई है ना, अब वायदे का पालन अवश्य होना चाहिए तथा मित्र की रक्षा कर शत्रु को समूल नष्ट कर देना चाहिए । भरत राजा हो तथा राम को वनवास मिले । कहते हैं, देखिए, कैकेयी को वायदे की पूर्ति के लिए यह क्या सूझी जिसे सुनते ही राजा अपनी जान व वस्त्रों को चाक करते हुए गिर पड़ा । वह मुँह के बल नीचे गिर पड़ा और सभी को लगा जैसे वे शव हो गये हों (मर गये हों) । १५ वह खूब रोया और कैकेयी से कहने लगा कि यह तूने क्या किया जो मेरा जिगर चीर डाला और मेरा अन्तस् अग्निमय कर दिया । तुझे तो रामचन्द्रजी की खूब चाह थी, यह तूने क्या किया और क्या कहा--अब कौन-सा चारा

च्रे आंसुय रामुचन्दुरुन्य माय वाराह ।
कौरुथ ल्युथ क्या वोनुथ यथ क्या छु चारा ।।
यि दौपनय ज़िन्दय बरथा च्रु ज़ालुन ।
मथुस अमरेथ च्रु बंरगन मूलु गालुन ।।
यि कम्य दौपनय ज़िन्दय दिस दौन अंछिन तीर ।
मे छुम यी शाप पानस छुम नु तकसीर ।।
अमा करतम ख्यमा सोज़न नु वनवास ।
मरय तस रोस्त वौन्य करतम तम्युक पास ।। २० ।।

यि केंछा छुम ति सोरुय दिमु बरुथस ।
मे छुम रामुजुव वस छुम त्युतुय वस ।।
वंज़ानस ज़ुव वन्यानस वारु वारुह ।
जिगर च्रोटथम गंयम वालिजि पारुह ।।
म कर यिछ्र बाज़्य यथ मंज़ क्याह नफ़ा छुय ।
मे बूज़ुय युथ नु वौन्य बेयि कांह ति बोज़ि ।।
च्रु नय बोज़ख दौपुस तमि पान मारय ।
पगाह नेरय न्यबर कथ रज़ि खारय ।।
शुत्रुगौन वरथ मातामाल गामुत्य ।
गंयख शेछ्य तिम ति आसन तोरु आमुत्य ।। २५ ।।

(उपाय) हो सकता है। यह तुझसे किसने कहा (सिखाया) कि जीते जी (अपने) भर्त्ता को जला डाल तथा पत्तों में अमृत लगाकर मूल को नष्ट कर डाल। यह तुझसे किसने कहा कि तू (मेरी) दो आँखों में तीर फेंक, (खैर) तेरा इसमें कोई कसूर नहीं है है—यह मुझे शाप का फल मिला है*। (मैं याचना कर रहा हूँ) मुझे क्षमा कर। राम को वनवास न दिला—उसके विना तो मैं मर जाऊँगा, ज़रा उसका पास (लिहाज़) कर। २० मेरे पास जो कुछ भी है, वह मैं सब भरत को दे दूँगा—मेरे तो, बस, राम ही सब कुछ हैं, बस, वही सब कुछ हैं। (राजा ने अपनी ओर से) जी-जान अर्पण कर (बहुत अनुनय-विनय कर) धीरे-धीरे उससे (कैकेयी से) कहा—तूने मेरा जिगर छलनी कर दिया और दिल के टुकड़े कर दिये। तू ऐसा षड्यन्त्र न रच, इससे (तुझे) क्या लाभ (नफ़ा) होगा? (यह बात) केवल मैंने (अभी तक) सुनी है, कोई दूसरा इसे अब न सुने। (इस पर) कैकेयी ने कहा—यदि आप मेरी बात नहीं सुनेंगे तो मैं आत्मदाह

* संकेत श्रवण-प्रसंग की ओर है।

यिह्य कथ गंयि न्यबर सीरस ननेर गव ।
वदान आव रामुजुव राज़स परन प्यव ॥
में दिम रोंख़सत पलंगस बेह् च्रु पानु ।
वदनि लोंग मोख्तु ओंश ज़न दानु दानु ॥
दप्योस राज़न पलंगस बेह् वन्दय रथ ।
दोंपुस तंम्य शाफ बदलुन छुम नु ताक़त ॥
ह्योंतुन रोंखसत बेस वनवास सांपनुन ।
सुतेंन लंखिमन ह्योंतुन गंयि जंगलस कुन ॥
गरज़ुन ह्योंत लंखिमनन कांप्यव आकाश ।
दोंपुन राज़स रंटिथ राजस करस नाश ॥ ३० ॥

दोंपुस तंम्य रामुच्रन्दुरन बेह् शमित रोज़ ।
वनय वोंपदीश अद्यात्मुक कनव बोज़ ॥
ति बूज़िथ मांगी आसी श्रावुनुन ताफ ।
ति बूज़िथ पोंन्य लगी सोरुय च्रली पाफ ॥
सोंरुन मन च्रु तु वुनिक्यन दफ गछ्रव वन ।
यछ्रा गंज़राव यिछ्रय च्रंचल मु सांपन ॥

कर लूँगी तथा नगर-भर में आपके व्रत-पालन की पोल खोल दूँगी। शत्रुघ्न और भरत ननिहाल गये हुए हैं, उनको मैंने बुलावा भेजा है, वे आ ही रहे होंगे। २५ (आख़िर) यह बात बाहर गई (फैल गई) और रहस्य का उद्घाटन हो गया। रामचन्द्रजी रोते हुए आये, राजा को प्रणाम किया और कहा मुझे रुख़सत कीजिए, सिंहासन पर आप स्वयं बैठ जाइए और वे (रामचन्द्र जी) मोतियों के दानों के समान आँसू बहाने लगे। राजा ने (बहुत) कहा--(मेरे लाल!) तुझ पर बलिहारी जाऊँ, तू सिंहांसन पर बैठ। किन्तु उन्होंने उत्तर दिया--शाप (वचन) को बदलने की मुझमें ताक़त नहीं है। रुख़सत लेकर उन्होंने वनवास का भेस धारण कर लिया तथा अपने साथ लक्ष्मण को लेकर जंगल की ओर चल पड़े। (भाई के प्रति ऐसा अनाचार होते देख) लक्ष्मण गर्जने लगा जिससे आकाश काँप गया। वह कहने लगा कि मैं राजा को पकड़कर इस राज-सिंहासन का (ही) नाश कर डालूँगा। ३० रामचन्द्रजी ने समझाया--शान्त हो, मैं तुम्हें अध्यातम का उपदेश देता हूँ, उसे कानों से (ध्यान से) सुना। उसे सुनकर माघ मास की भाँति (जमे हुए) तुम्हारे चैतन्य का समस्त कालुष्य श्रावण की धूप द्वारा स्वच्छ हो जावेगा तथा पुण्य उत्पन्न होकर तेरे

च्रे यौदवय राज वोगुन छुय न्यबर नेर ।
गछक लंका वुछिथ राजिति निशि सीर ।।
वुछख रावुन करान क्या सौख तु आनन्द ।
रंटिथ यमु राज़ु थोवमुत गरि करिथ वन्द ।। ३५ ।।

पगाह कुस डस करि तस मरि कुहुन्दि सुत्य ।
सु मरिहे क़ोनु तस सुत्य बेयि मरन कुत्य ।।
सु येलि मरि तस दपान पोशस नु यम ज़ात ।
मरुन सारेन छु अदु कस तति बचन बात ।।
मरुन मशरोव येम्य तस रूद सोरुय ।
मरुन येम्य ज़ोन तम्य ज़ुव रथ खोरुय ।।
सु ज़नमस यियि नु येम्य सारुय दुयी त्रांव ।
दुयी तम्य त्रांव यस नाराम्य वथ हांव ।।
दुयी त्रावुन्य छ यी मायायि द्युन नार ।
मेथुर ज़ानुन शेथुर त्रावुन अहंकार ।।
दोयुम ईशर पनुन बब मोज़ ज़ानुन ।
त्रेयिम गोरु शब्द बूज़िथ वाति मानुन ।।

पापों का नाश हो जायेगा। तू मन में विचार कर तथा इस समय 'वन ही जायेंगे' ऐसा कह। इस वात को ईश्वर-इच्छा जान तथा चंचल न बन। यदि तू राज्य ही भोगना चाहता है तो (मेरे साथ) बाहर चल। लंका के राज्य-वैभव को देखकर तू अपने-आप संतृप्त हो जायेगा। तू (वहाँ) देखेगा कि रावण कैसे सुख व आनंद को भोग रहा है और उसने कैसे यमराज को पकड़कर बन्द कर रखा है। ३५। (यह सब देखने पर तुझे राज्य भोगने की इच्छा नहीं रहेगी)। (यदि हम यहाँ से न गये तो) कल उस (रावण) का नाश कौन करेगा तथा वह किसके द्वारा मारा जायेगा? वह अकेला नहीं अपितु उसके साथ और भी कितने मारे जायेंगे। कहते हैं यमराज भी उसका कुछ विगाड़ नहीं सकता है; किन्तु (इस दुनिया में) मरना सब को है, कोई बच नहीं सकता। जिसने मृत्यु को भुलाया उसका सब-कुछ यहीं रह गया और जिसने मृत्यु को याद रखा उसका जी-जान सँवर गया। जिसने द्वैत-भावना को त्याग दिया वह (दुवारा) जन्म न लेगा (मुक्त हो जायेगा); और इस द्वैतभावना का परित्याग नारायण (भगवान्) की अनुकंपा द्वारा ही सम्भव है। द्वैत-भावना को त्यागने से (अभिप्राय है) माया को जला डालना;

छ च्रूरिम कथ यिहय छारुन्य सतुच वथ ।
यि पांच्रिम पान मंशरावुन दयस पथ ॥ ४२ ॥

वनुवास गछुन

मुक़रर यी सपुन गछि राम वनवास ।
वोंलुन तंम्य वुरज़ु लोवुन ख़ासु अतलास ॥
अंनिख कीकी तु पुरिनख बुरज़ु जामु ।
परुनि लोंग शहर सोरुय रामु रामु ॥
वदन सीता पकन गंयि पान मारन ।
वदन आंस ख़ून न्येत्रव आंस हारन ॥
वदन सीता गंयख फंरियाद लोयुन ।
कंरिथ कीशन परेशान सीनु वोयुन ॥
दप्योनस रामुचन्दुरन रोज़ येतिय बेंह ।
दोंपुस तमि अमि वनुनु वांलिजि छम रेंह ॥ ५ ॥
दोंपुस तंम्य कोंत च्रु यिख छिय पाद पमपोश ।
दोंपुस तमि बोज़ कनस तल छु सोंनस बोश ॥

तथा शत्रु को भी मित्र समझना, व अहंकार को छोड़ देना। दूसरा, ईश्वर को माता-पिता समझना। तीसरा, गुरु के शब्दों (आदेशों) को अंगीकार करना। चौथा, सत्य के मार्ग को ढूंढना; और पाँचवाँ, अपने आप को भूलकर भगवान् में खो जाना ॥ ४२ ॥

वनवास जाना

(अन्त में) यही मुक़र्रर हुआ कि राम वन जायेंगे। उन्होंने भोज-पत्र के वस्त्र धारण कर लिये और ख़ासा व अतलस (के वस्त्र) त्याग दिये। कैकेयी को बुलाया गया और उसी ने ये वस्त्र उन्हें पहनाये। सारा शहर राम-राम कहने लगा। (रामचन्द्र जी वनवास को जा रहे हैं, यह समाचार सुनते ही) सीता रोती-विलाप करती हुई आ गई—उसकी आँखों से ख़ून के आँसू वह रहे थे। उसने रोते-रोते फ़रियाद की और अपने केशों को परेशान कर (अस्त-व्यस्त कर) छाती पीटने लगी। रामचन्द्र ने (सीता को) समझाया—तू यहीं पर रह। वह बोली—ऐसा कहकर आप मेरा हृदय जला रहे है। ५ उन्होंने (फिर) समझाया—तू कहाँ चल सकेगी, तेरे पाद कमल के समान हैं। वह वोली—सुनिए, सोना कानों तले ही सुहाता है। उन्होंने कहा—तू सफ़र की दुश्वारियों को सहन

दोंपुस तंम्य कर ह्यकख च्रांलिथ सफ़र ज़ात ।
दोंपुस तमि च्रे सिवा दोंह्स गछ्रेम रात ॥
दोंपुस तंम्य वूम नटि असि पकुनु चाने ।
दोंपुस तमि यी में ओसुम करमु लाने ॥
दोंपुस तंम्य वेह च्रु गिन्द ताम मोंख्तु मालन ।
दोंपुस तमि गछ्र च्रु रुमु अकि पान ज़ालन ॥
दोंपुस तंम्य वेह च्रु छख नोज़ुक गुलअन्दाम ।
दोंपुस तमि कंम्य कोंरुम वरमंदिन्यन शाम ॥ १० ॥

दोंपुस तंम्य बेह च्रु छख नोज़ुक गुल अन्दाम ।
दोंपुस तमि चानि दूरेरु नारु ज़ालन ॥
दोंपुस तंम्य बेह च्रु छख रस्बुवुन्य च्रोंदुश ज़ून ।
दोंपुस तमि चोन दूरेर छुम छोंकस नून ॥
दोंपुस तंम्य बेह च्रु छख नोज़ुख ह्यिये तन ।
दोंपुस तमि ह्यियि डीशिथ कंण्ड्य छि खोच्रन ॥
दोंपुस तंम्य वेह च्रु छख वागुच यंम्बुर ज़ल ।
दोंपुस तमि कंम्य वोंम्बरन कंरुम गांगल ॥

नहीं कर सकेगी। वह बोली—आप के सिवा तो मेरे लिए दिन भी रात हो जायेगा। उन्होंने कहा—तुम्हारे (वन में) चलने से भूमि काँप उठेगी। वह बोली—यही तो मेरे कर्म-लेख में बदा था। उन्होंने कहा—तू यहीं रह कर मोतियों की मालाओं से खेल (राजसी वैभव का भोग कर)। वह बोली—यदि आप गये तो मैं क्षण भर में अपना अंत कर डालूँगी। उन्होंने कहा—तू यही बैठ। तू तो नाजुक गुल की तरह है। वह बोली—न जाने मेरी (भरी) दुपहरी को किसने शाम (अँधियारे) में बदल डाला। १० उन्होंने कहा—तू यहीं बैठ, तू (तो) एक सुन्दर व नाजुक गुल (की तरह कोमल) है। वह बोली—आप की दूरी उसे जला डालेगी। उन्होंने कहा—तू यहीं बैठ, तू तो चौदहवीं का लुभावना चाँद है। वह बोली—आप की दूरी मेरे जख़्मों पर नमक का काम करेगी। उन्होंने कहा—तू यहीं बैठ, तेरा तन नाज़ुक चमेली (के समान) है। वह बोली—चम्पा को देख काँटे भी डर जाते हैं। उन्होंने कहा, तू यहीं बैठ, तू (तो) बाग की नरगिस है। वह बोली—तभी तो यह भौरा मुझसे छल कर रहा है। उन्होंने कहा—तू (यहीं) बैठ, तू तो बाग़ में (उगने-वाली) चमेली है। वह बोली—आपको (यों) देखकर मेरे होश उड़

दोंपुस तंम्य बेंह च्रु छख बागुच हियि पोश।
दोंपुस तमि च्रें वुछान रूदुम न केंह होश ॥ १५ ॥

दोंपुस तंम्य बेंह च्रु छखना ताज़ु गुलज़ार।
दोंपुस तमि यथ नु कुमत तथ गुलस नार ॥
दोंपुस तंम्य बेंह च्रें छिय अथु बरगि कोसम।
दोंपुस तमि च्रें वुछान यिमु चेंश्मु लोसम ॥
दोंपुस तंम्य बेंह च्रु गछ बागुच बबुर लाग।
दोंपुस तमि वह्य कथव थोंवथम दिलस दाग़ ॥
दोंपुस तंम्य च्रालु कर दोंख सख्त चोनुय।
दोंपुस तमि में लगी मा ज़ूनि ग्रुहनुय ॥
दोंपुस तंम्म बेंह च्रु छखना माहि ताबान।
दोंपुस तमि तोरु पादन तल दिमय जान ॥ २० ॥

दोंपुस तंम्य बेंह च्रु गछ शेंठ सोज़ माल्युन।
दोंपुस तमि तोरु ज़ोलथम तापु ताल्युन ॥
दोंपुस तंम्य बेंह च्रु राज़स पथ जिगर गाल।
दोंपुस तमि चोन नेरुन आसि तस काल ॥

गये हैं। १५ उन्होंने कहा--तू (यहीं) बैठ, तू तो एक ताज़ा गुलजार है। वह बोली--जिस गुल की कोई क़ीमत न हो उस गुल का जल जाना ही उचित है। उन्होंने कहा--तू (यहीं) बैठ, तेरे हाथ कुसुम के पत्तों के समान हैं। वह बोली--आप को देखते ही मेरी ये आँखे मुरझा गई है। उन्होंने कहा--तू (यहीं) बैठ और बाग़ में 'बबर' (कली-विशेष) की भाँति खिल। वह बोली--हाय! (आपकी) ऐसी ही बातों ने मेरे दिल पर दाग़ लगाया है। उन्होंने कहा--तेरा सख्त दुःख मैं (भला) कब सह सकूँगा। वह बोली--(आप के चले जाने पर) मेरे चाँद जैसे वदन को ग्रहण लग जायेगा। उन्होंने कहा--तू (यहीं) बैठ, तू तो माहताब है। वह फिर बोली--मैं आपके चरणों तले अपनी जान दे दूँगी। २० उन्होंने कहा--तू (यहीं) बैठ और अपने मायके वालों को सन्देश भेज। वह बोली--ऐसा कहकर आप मुझे भयंकर ताप में झुलसा रहे हैं। उन्होंने कहा--तू (यहीं) बैठ और राजा (दशरथ) की जिगर (दिल) से सेवा कर। वह बोली--आप का चले जाना उनके लिए काल-सदृश होगा। उन्होंने कहा--तू (यहीं) बैठ, कौशल्या तुझे प्रेम से रखेगी। वह बोली--यदि आप कुछ और कहना चाहते हैं तो वह भी अभी कह डालिए।

दोंपुस तंम्य बेह च़ु कौशल्या करी वाव ।
दोंपुस तमि सीर बावुन्य वोंन्य येती वाव ।।
दोंपुस तंम्य बेह च़ु छख सार्यन अंछन गाश ।
दोंपुस तमि वोंन्य करख पनुन्यन सिरन फ़ाश ।।
गोंलाबन कंरुन यंच़ आंजिज़ यंम्बरज़ोल ।
खटिथ च़न्दुरमु थोवुन तारुकन तल ।। २५ ।।

वनुनि लोंग रामुजुव सीतायि कुन वोज़ ।
म वद वोंन्य यंच़ वोंदुथ वाराह च़ ख़ोश रोज़ ।।
म वद वोंन्य वदुनु सूतिन प्रान लोर्योय ।
म वद वोंन्य वदुनु सूतिन गाश सोरियोय ।।
म वद वोंन्य वदुनु सूत्य गोय रंग वेरंग ।
म वद वोंन्य वदुनु सूत्य शीशस प्योय संग ।।
वोंलुख येंलि वुरज़ु त्रोवुख खासु मलमल ।
पकान गंयि त्रनुवय अज़ राहि जंगल ।।
ति यां वुछ शहरु क्यव लूकव रिवां द्राये ।
दोंपुक क्या सना वनस मंज़ कति रटन जाये ।। ३० ।।

दिलस प्यठ दाग़ रोंट वोंजुल्यव गुलालो ।
दोंपुक दूर्यर अंकिस सातस नु च़ालो ।।

उन्होंने कहा—तू (यहीं) बैठ, तू तो सभी के नयनों की ज्योति है। वह बोली—(अब ज़्यादा न बोलिए) कहीं अब आपके अन्य रहस्यों का पर्दाफ़ाश न हो जाये। (इस प्रकार) गुलाब (रामचन्द्र जी) को नरगिस (सीता जी) ने (अपनी युक्तियों से) धूमिल बना डाला और चन्द्रमा को तारों के पीछे छिपा दिया। २५ (इस पर) रामजी सीता से कहने लगे—सुन, अब तू इतना मत रो। तू बहुत रो चुकी, अब खुश हो जा। तू रो मत। रोते-रोते तेरे प्राण सूख गये है। तू रो नहीं, रोने से तेरी ज्योति रीती हो गई है। तू रो मत, रोने से तेरा रंग बेरंग हो गया है। तू रो नहीं, तेरे रोने से मेरे (दिल के) शीशे पर पत्थर गिरते हैं। (उन्होंने) भोजपत्र (के वस्त्र) धारण कर लिये और ख़ासा-मलमल (के वस्त्रों) को त्याग कर तीनों जंगल की राह चलते बने। यह दृश्य जब शहर के लोगों ने देखा तो वे रोते हुए (घरों से) निकल पड़े और कहने लगे कि भला ये (तीनों) क्यों जंगल में वास करने जा रहे है? ३० लाल गुलेलाला (पुष्प-विशेष) ने (विरह में) अपने दिल के ऊपर दाग़ ले लिया

गुलालस सोसुनुक ह्यु रंग सांपुन ।
ति डीशिथ हाल मसुवलि ह्योतुन कांपुन ।।
सपुन्य सारी प्रज़लुवुन्य गुल अवारा ।
फॊलन तॆलि यॆलि दरशुन दिन दोबारा ।।
पकान गंयि तथ कोंहस प्यठ आंल ह्यथ रोंग ।
बदल गव ज़ीठ्य पोशन कारुतिक्य कोंग ।।
सॊं कीकी शीनु छ्टि मंजूहर्य गंयि तेज़ ।
वनस कुन लंज्य खलांयिकन पोह्य पनस रेज़ ।। ३५ ।।

च्रोंटुख मंन्ज़िल रोंटुख मंज़ वन खोटुख पान ।
ख़लक़ पथ फीर्य सारी आयि रिवान ।।
तिथय तिम गंयि डण्डख वन मंज़ रंटुख जाय ।
ज़नुम करेछर तु करमस क्याह छु परवाय ।।
ख़बर यॆलि वूज़ क़ोशल्यायि कोंत गव ।
वनुनि लंज्य राज़ु पोंत्रस कुन च्रु कन थव ।। ३८ ।।

और कहने लगा कि उनकी दूरी मैं एक पल के लिए भी सह नहीं सकता । उसका रंग पीला पड़ गया और ऐसा हाल देखकर मसवल (पुष्प विशेष) का दिल भी काँपने लग गया । सभी तरह के चमकते गुल फीके पड़ गये (और कहने) हम पुन: तभी फूलेंगे जब वे दुबारा दर्शन देंगे । (उधर) लौंग (रामचन्द्र जी) इलायची (सीता जी) को साथ लेकर दूर उस पहाड़ की ओर चलते गये और इधर जेठ के पुष्पों का रंग कार्तिक (पतझर) के पीलेपन के समान हो गया । कैकेयी की (कुचाल रूपी) तेज़ हिम-वयार ने सभी व्यक्तियों को पौष मास में (निपातित) पत्तों के समान वन की ओर धकेल दिया । ३५ काफ़ी मंज़िल तय कर लेने के बाद वे (राम, लक्ष्मण और सीता) वन में कहीं छिप गये और ख़लक़त (जन-समुदाय) रोते-रोते वापस चले आए । ३५ इस प्रकार वे (तीनों) दण्डक-वन गये और वहीं अपना निवास बनाया । जिनका जन्म ही संघर्ष करने के लिए हुआ हो उनके कर्म (के लेख) को क्या परवाह है (अर्थात् यह कठिन यात्रा उनके लिए कोई चिंता का विषय न थी) । जब कौशल्या को ख़बर मिली कि वे कहाँ गये है, तो वह राज-पुत्र (राम) की ओर सम्बोधन कर जो कहने लगी, उसे कान लगा कर सुनो ।। ३८ ।।

कौशल्यायि हुन्द्य व्यलाफ

कौशल्यायि हुन्दि गोबरो
करयो गूरु गूरु
परयो रामु रामु
करयो गूरु गूरु ॥ १ ॥

कोंतू गोहम च्रु त्राविथ
कसू ह्यकु हाल वाविथ
अनी कुस मनु नाविथ
करयो गूरु गूरु ॥ २ ॥

लगयो पोंत छाये
ही कंरथस वो हाये
नारस वोंठ वु लाये
करयो गूरु गूरु ॥ ३ ॥

कनन छय कनु वाजे
श्री कृष्णु महाराजे
ज़गतुक छुख च्रु राजे
करयो गूरु गूरु ॥ ४ ॥

फेरु हय अंद्य अंद्यी
लागय पोशि गंदी
जामु चान्य सोंन संदी
करयो गूरु गूरु ॥ ५ ॥

कौशल्या का विलाप

(रे कौशल्या के नंदन) आ तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ, राम-राम पुकारूँ—आ तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ १ तू (मुझे) छोड़कर कहाँ चला गया, अब मैं अपना हाल किसे बता सकूँगी। तुझे अब कौन मनाकर लायेगा—आ तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ। २ तेरी छवि पर वलिहारी जाऊँ, मुझ चमेली को तूने मुरझा डाला। (अब) मैं आग में कूद पड़ूँगी—आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ। ३ तेरे कानों में श्रीकृष्ण महाराज की तरह बालियाँ (सुशोभित हो रही) हैं। जगत् का तू राजा है—आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ। ४ मैं तेरे चारों ओर फिर कर वलिहारी

लोल चोन वौन्य मे आमो
छारथो शहरु गामो
बेयि गोछुहम छु रामो
करयो गूरु गूरु ॥ ६ ॥

नेरुहा बाज़ारी
ह्यड़नम लूख सारी
पादन लगय बो पारी
करयो गूरु गूरु ॥ ७ ॥

नेरुयो दारि पंती
लागयो कारि पंती
तारि दिल गोम यंती
करयो गूरु गूरु ॥ ८ ॥

मे दप्योम रामु राजे
खौश ओय नु वोरु माजे
आदुनुकि सीरु बाजे
करयो गूरु गूरु ॥ ९ ॥

मे कमू शाफ आसी
तिम ति कोनु कांसि कासी

जाऊँगी। तुझ पर फूलों के गुलदस्ते चढ़ाऊँगी तथा सोने के वस्त्र पहनाऊँगी—आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ। ५ तेरे प्रेम में मैं विकल हो रही हूँ। तुझे मैं शहर और गाँव में तलाश करूँगी। मुझे तो बस एक राम चाहिए--आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ। ६ मैं तुझे बाज़ारों में ढूँढती, मगर लोक-लाज के कारण विवश हूँ। तेरे पादों पर बलिहारी जाऊँ--आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ। ७ तुझे खिड़कियों से देखूँ और तेरी परछाई पर बलिहारी जाऊँ। तेरे बिना मेरा दिल यहाँ विकल हो हो गया है--आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ। ८ तेरे राजा बनने का मैंने सपना देखा था किन्तु तेरी विमाता को यह खुश (अच्छा) न लगा। रे मेरे चिरपरिचित और अंतरंग!--आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ। ९ मुझे यह किन शापों का कुफल मिला और उनको (शापों को) क्यों किसी ने दूर न किया जिनके कारण तुझे बनवासी बनना पड़ा--आ, तुझे (हिण्डोले मे) झुलाऊँ। १० तूने भोजपत्र के वस्त्र धारण कर लिये और मैं राम-राम जपती हुई तुझे गाँव-गाँव ढूँढती फिरूँगी--आ, तुझे (हिण्डोले

च़ु गोह्म वनु वांसी
करयो गूरु गूरु ॥ १० ॥

च़्रे पूर्यथम बुरज़ु जामु
बो छारथ गामु गामु
परयो रामु रामु
करयो गूरु गूरु ॥ ११ ॥

लौलि मंज़ ललुनावथ
जिगरस मंज़ बु सावथ
वुनि ति नो कांसि हावथ
करयो गूरु गूरु ॥ १२ ॥

नेर्यो शामु लटे
बार्य म्यान्य छि च़्रे मटे
गाशरु लालु त़टे
करयो गूरु गूरु ॥ १३ ॥

दूर्येर नो वु च़ालु
कसू करथस हवालु
लांजिथस मायि ज़ालु
करयो गूरु गूरु ॥ १४ ॥

अंछिन हंद गाश कौत गोम
सिरियि प्रकाश कौत गोम
कोंह ति छम नु आश कौत गोम
करयो गूरु गूरु ॥ १५ ॥

में) झुलाऊँ । ११ तुझे गोदी में झुलाऊँ और जिगर में मैं सुलाऊँ । फिर तुझे किसी को न दिखाऊँ--आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ । १२ मैं तुझे ढूँढने के लिये वार-वार निकलूँगी । मेरा भार तेरे ऊपर है । मेरी नयन-ज्योति भी धूमिल पड़ गई है--आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ । १३ मैं तेरी दूरी सहन न कर सकूँगी । (तू तो चला गया मगर) मुझे तूने किसके हवाले किया ? तूने मुझे (यह किस) माया-जाल में डाल दिया--आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ । १४ मेरी आँखों का प्रकाश कहाँ चला गया ? सूर्य जैसा प्रकाश कहाँ चला गया ? मुझे अब कुछ भी आशा नहीं है । वह कहाँ चला गया ? --आ, तुझे (हिण्डोले में) झुलाऊँ ॥ १५ ॥

राज़ु सुंद ह्याल

वदुनि लोंग राज़ु येलि अह्वाल बूज़ुन ।
वनुनि लोंग राज़ु पनुनिस ईशरस कुन ।।
वोंदुन वाराह तु जामन कॅर्यन पारा ।
वनुनि लोंग क्यासना कोंत गंयि अवारा ।।
वसिष्ठन तस दोंपुन क्याह् छुख च्रु साद् ।
यि वुछ दयिकार यथ क्याह् ओस वाद् ।।
गोंबुर ज़नमस च्रे निश आमुत नारायन ।
वरन छुय शीश नागुक पानु लॅखिमन ।।
शतुरगुन बरत गांमित्य शॅखु च्रुकरस ।
छ सीता पानु आमुच्र बूम ज़नमस ।। ५ ।।
कशफ़ छुख पानु आंदुत कोंशल्या ।
बरुन छुय द्यन करुन छुय ज़नमु त्यागा ।।
कोंरुवुह तफ वारुयाह अंगनस हुमूवुह पान ।
वदान आंस आंदित टोठ्योस नारान ।।
दोंपुस तंम्य मंग गछ्री क्या कोंसु छय हान ।
दोंपुस तमि अख गोंछुम गोंबराह च्रे ह्यु जान ।।

राजा का हाल

अह्वाल (वृत्तांत) सुनकर राजा (दशरथ) ख़ूब रोने लगे ओर वस्त्रों को फाड़कर अपने ईश्वर से कहने लगे कि वे (राम) मुझे असहाय बनाकर कहाँ चले गये ! तब वसिष्ठ ने उनसे कहा--आप इतने अधीर क्यों हो रहे है ? यह तो दैव का विधान था और इसी अवसर की सब को प्रतीक्षा थी । (आप नहीं जानते ?) आपके यहाँ तो (स्वयं) नारायण ने पुत्र बनकर जन्म लिया है और शेषनाग के वर्ण (भेस) में लक्ष्मण आये हैं । शत्रुघ्न और भरत शंख और चक्र के रूप हैं और स्वयं सीता ने भूमि के रूप में जन्म लिया है । ५ आप स्वयं कश्यप है और कौशल्या अदिति हैं । (अब) आप को (कुछ) दित निकाल कर इस जन्म को त्याग देना है । (आप जानते हैं) आप ने ख़ूब तप किया था और अग्नि को ख़ूब होम देकर उसे प्रसन्न किया था । आपकी पत्नी रो रही थी और स्वयं नारायण उस पर प्रसन्न हो गये थे । उन्होंने उससे कहा था--"माँगो, क्या चाहिए, किस बात की कमी है ?" (इस पर) उसने कहा था--"बस, आप जैसा ही अच्छा पुत्र मुझे चाहिए ।" उन्हें स्वयं राक्षसों का क्षय (नाश) कर

युन ओसुस पानु तस अवतार दारुन ।
करिथ ख्यय राखिसन रावुन छु गालुन ।।
तवय वापथ सपुन सु पानु वनवास ।
हीथा सीतायि हुंदि लंकायि करि डास ।। १० ।।
तिथुय राजस सपुन दरहम तु बरहम ।
वोदुन वाराह तु सपुन गाश तस कम ।।
ति बूज़िथ राजु यंच्र सपुन वोदासी ।
तमिस बोनु प्राक ज़नमुक्य पाप आसी ।।
दपन पथ कुन दोह अकि वन गोमुत ओस ।
तती वनु पापु वशि सूत्य अथुशर गोस ।।
पकन अज़ दूरि तम्य वोनु डीठ छाया ।
गुमान तस यी सपुन कोंह क्याह बलाया ।।
कोडुन तरकश ख्युतुन तस तीर दारिथ ।
छुनुन तम्य बेख़बर रेशज़ादु मारिथ ।। १५ ।।
वुछुन रेश बालुकाह अख पोन्य सारन ।
तमिस तमि तीरु सूत्य ज़ख़्मी गमुत्र तन ।।
वदन वोनुनस वनुम वोन्य क्याह करन तिम ।
पनुन वब मोज नाब्यना गामुत्य छिम ।।

रावण को नष्ट करने के लिए आना था, अतः (राम के रूप में) अवतार ले लिया। इसीलिए वे (स्वयं इच्छापूर्वक) वनवास को गये और सीताजी के बहाने लंका को ढहा डालेंगे। १० यह सुनकर राजा का मन डाँवाँडोल हो उठा और इतना रोये की आँखों का प्रकाश कम हो गया। यह सुन कर राजा बहुत उदास हो गये। (दरअसल) उन्हें पिछले जन्मों का यह फल (मिल रहा) था। कहते है पिछले जन्म में एक दिन वे वन में (शिकार खेलने) गये हुए थे। वहाँ वन में पापवश उनसे एक भूल हो गई। दूर से उन्होंने नीचे एक छाया (चलती हुई) देखी। उन्हें गुमान (शक) हो गया जैसे कोई (जंगली) बला आ रही हो। तुरन्त तरकश से तीर निकालकर उन्होंने उसे दे मारा और बेख़बरी में उस ऋषि-ज़ादे (बालक) को मार डाला। १५ (निकट आने पर) उन्होंने पानी भरने के लिए आए हुए एक बालक को देखा जिसका तन उस तीर से ज़ख़्मी हो चुका था। (लोटते हुए) उसने कहा—मेरे बिना अब भला वे क्या करेंगे, मेरे माता-पिता अपंग हैं। अब आप ही मेरे बदले उनके (मेरे

च्रु गछ वोंन्य पानु ज़न बुय गोस दिख त्रेश ।
तिमन अदुह वाव तस क्याह आव दरपेश ।।
तिथय गव राज़ु पानस निशि न्यर आश ।
तिमन निश त्रेश ह्यथ गव ज़न पनुन गाश ।।
लंगिस तिम शानु छारुनि च्रीरय क्यथ आख ।
बदल ज़ोनुख जिगरस सांपनिख चाख ।। २० ।।
प्रुछुक तस छुक च्रु कुस अंस्य क्याह छि डेशन ।
अंछिन हुन्द गाश असि कोंत गव पोंज़ुय वन ।।
वनुन यामथ तिमन ह्योंत तंम्य पनुन पाप ।
वंसिथ पेयि दोनुवय तस यी दितुक शाप ।।
गोंबरु गोंवरुह करान योंत ताम गली प्रान ।
तसुन्द दर्शुन करुन रोज़ी च्रे अरमान ।।
तिथिस राजस बदल सांपुन नु रेश्य शाप ।
च्रु कर इन्साफ़ वोंन्य वात्या करुन पाप ।। २४ ।।

दशरथ सुन्द्य व्यलाफ

वन्दयो मोंन्य बु पादन
छांडुथो रामु रादन
व्यच्रार नांग्य वति लारय
नुनुरुकि तारु प्रारय

माता-पिता के) पास ज़ाकर उन्हें पानी पिलाइए और मेरा सारा हाल कहिए कि मेरे साथ क्या घटना हुई है। इस पर राजा निराश होकर वहाँ चल दिये और उन्हें उनके नेत्रप्रकाश (पुत्र) की भाँति पानी पिलाने लगे। उन्होंने (श्रवणकुमार के माता-पिता ने) उनके शानों (कंधों) को टटोलते हुए देरी का कारण पूछा। (राजा को) अजनबी जानकर उन दोनों का जिगर चाक हो गया। २० उन्होंने पूछा कि आप कौन हैं और हम यह क्या देख रहे हैं? हमारी आँखों का प्रकाश कहाँ चला गया है—सच-सच कह दीजिए। जब राजा ने अपने पाप का वृत्तान्त कहना शुरू किया तो वे दोनों (पृथ्वी पर) गिर पड़े और उन्हें शाप दिया—जब तक पुत्र-पुत्र करते तुम्हारे प्राण न गल जायें तब तक तुम्हारा पुत्र-दर्शन का अरमान न निकले। उस राजा तक के लिए जब शाप का प्रभाव बदल न सका, हे मनुष्य! तब (तू क्या चीज़ है) तू तो इन्साफ़ से काम ले और पाप न कर। २४

ब्रह्म् सरुह किन्य दिमय कन
छांड्थो रामु रादन ॥ १ ॥

अंछिन हुन्दि गाशि म्याने
खोंश यिवुवुनि नुन्दुबाने
कांल्य रांवुम हिये तन
छांड्थो रामु रादन ॥ २ ॥

कशि तीर लोयथम में
लशि छम नारु रेंह
अशि फ्यरेंन हेंरुम तन
छांड्थो रामु रादन ॥ ३ ॥

महांइशि किन्य यिमु यो
हरुमोंखु वंन्य दिमु यो
हमसु वारुह गंछिथ रटय वन
छांड्थो रामु रादन ॥ ४ ॥

च्रु रूदहस कथ शाये
क्रांकु नदी वोंठ बु लाये
गंगु बलु युन छु आदन
छांड्थो रामु रादन ॥ ५ ॥

दशरथ का विलाप

तेरे पादों को चूम लूँ और तुझे रामरादन[1] में ढूँढूँ। व्यचारनाग के मार्ग में तुझे देखूँ, नूनर के पुल पर प्रतीक्षा करूँ और ब्रह्मसर के निकट वाट जोहता रहूँ—तुझे रामरादन में ढूँढूँ। १ ऐ मेरे आँखों के प्रकाश! मनमोहन लाड़ले, (तेरी जुदाई के कारण) मेरा तन पुष्प की भाँति मुरझा गया है—तुझे रामरादन में ढूँढूँ। २ तूने मुझे जो तीर लगाया है उससे मेरी यह देह अग्नि के समान दहक रही है। अश्रुकणों के निरन्तर गिरने से यह तन सूख गया है—तुझे रामरादन में ढूँढूँ। ३ महोइशि की ओर से जाऊँ, हरमुख में तेरा रास्ता देखूँ और हंसवारुह में जाकर तुझे वन में देखूँ—तुझे रामरादन में ढूँढूँ। ४ तू कहाँ छिप गया, मैं क्रांकुनदी में कूद

---

१. स्थान-विशेष। कवि की कल्पनानुसार श्रीराम ने यही पर वास किया था। यह स्थान रामरादन तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थान तक पहुँचने के लिए विभिन्न पड़ावों का उल्लेख कवि ने इस गीत में किया है।

गोस् नो कॅन्ह मे चोनुय
दयन येलि बान् ज़ोनुय
चार् नो लॉन्य वदन
छांड्थो राम् रादन ॥ ६ ॥

च्रुज़य गोखो मे निशि दूर
यिज़े तेलि येलि गछ़्यम सूर
वुज़े पोन्य नाग् रादन
छांड्थो राम् रादन ॥ ७ ॥

नाव तन त्राव कीन्
वाव सिर दोंदम् सीन्
हाव मोख थाव लादन
छांड्थो राम् रादन ॥ ८ ॥

बरनि बल् युथ न् रावय
राम् राम् ऋख ब् त्रावय
आलव दिज़ि मे नादन
छांड्थो राम् रादन ॥ ९ ॥

न्यत्रन मंज़ रटय पाद
बुथ्य शीर किन्य दिमय नाद
मर्यो वुनि छु आदन
छांड्थो राम् रादन ॥ १० ॥

पड़ूँगा, फिर गंगुबल में सभी मिलेंगे--तुझे रामरादन में ढूँढूँ। ५ मुझे तुझसे कोई गिला नहीं है, दैव ने ही यह सब किया है, अदृष्ट को सहन करने में कोई चारा नहीं है--तुझे रामरादन में ढूँढूँ। ६ तू मुझ से दूर हो गया। अब उस समय आना, जब मेरा (तन) भस्म हो जाय। तब झरनों और स्रोतों का पानी भी उफन पड़ेगा--तुझे रामरादन में ढूँढूँ। ७ अब तू मन-मुटाव छोड़कर प्रसन्न मन से अपनी बात मुझसे कह। मेरा सीना जल रहा है। अब तू मुझे अपना मुख दिखा--तुझे रामरादन में ढूँढूँ। ८ वरनिवल पहुँचकर कहीं मैं खो न जाऊँ। मैं वहाँ ज़ोर-ज़ोर से राम-राम पुकारूँगा। मेरी आवाजों का प्रत्युत्तर देना--तुझे रामरादन में ढूँढूँ। ९ मैं नेत्रों में तेरे पाद ले लूँ और बुथ्यशीर में तुझे पुकारूँ। तेरे विना मैं मर जाऊँगा, अभी भी समय है--तुझे रामरादन में ढूँढूँ। १० नारायणनाग

नारान नागु प्रारय
वांगुति जायि छ़ारय
प्रारय सुत्य सादन
छ़ांडुथो रामु रादन ॥ ११ ॥

सिरियम छु गाश चोनुय
सुय छु प्रकाश चोनुय
सुय छु यूगु सादन
छ़ांडुथो रामु रादन ॥ १२ ॥

रज़ुसुन्द मरुन तु वरथु सुन्द युन

वनुनि लोंग राज़ु याँ अह्‌वाल बूज़ुन ।
करुनि लोंग ज़ारुय पनुनिस ईशरस कुन ॥
वोंदुन वाराह तु जामन कंरिन पारा ।
वनुनि लोंग क्या सना कति गोस अवारा ॥
वदुनि लोंग दरमु राज़न करमु यी ल्यूख ।
गंयस यी हाँ कौशल्यायि निश न्यूख ॥
दोंपुस तमि तोरुह क्याह कंरथम ज़ै नीकी ।
यि कंह ओसुय ति पुशरोवुथ ब कीकी ॥

में तेरी प्रतीक्षा करूँ, वांगुति स्थान में तुझे ढूँढूँ। साधुओं समेत तेरी प्रतीक्षा करूँ--तुझे रामरादन में ढूँढूँ। ११ सूर्य में तेरा ही प्रकाश है और यह प्रकाश सर्वत्र है। वही 'प्रकाश' यह योग साध रहा है--तुझे रामरादन में ढूँढूँ। १२

राजा की मृत्यु और भरत का आना

यह सुनकर (कि रामचन्द्रजी लौटकर नहीं आ रहे है) राजा अपने ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। वे खूब रोये और अपने जामों (वस्त्रों) को चाक कर डाला। वे कहने लगे कि यह मुझे क्या देखना पड़ रहा है। रोते-रोते कहने लगे कि धर्मराज ने (शायद) यही (सब-कुछ) मेरे कर्म-लेख में लिखा था। इस पर उन्हें कौशल्या के पास ले जाया गया। उसने (कौशल्या ने) कहा--आप ने यह कौन-सी नेकी की जो अपना सब-कुछ कैकेयी के हवाले कर दिया। उसने आगे कहा--आपका मेरे ऊपर क्या उपकार है? उलटा मेरे जिगर को चीर डाला और तन में अग्नि लगा

दोंपुस तमि तोरुह् क्याह् वोंपुकार कोंरुथम ।
जिगर ज़्रोटथम शिकम क्यथु नारु बोंरुथम ।। ५ ।।

अंछिन हुन्द गाश ओसुम रामु अवतार ।
कंडिथ छुनथम तु क्याह् च्युतथम ज़िंदय नार ।।
दोंपुन तस कुन दोंदुस मतु ज़ालतम वोंन्य ।
दज़न छुस यिम पज़न तिम पालतम वोंन्य ।।
परुनि लोंग रामु रामु सुबह् ता शाम ।
दज़न रातस प्रबातस ह्योंतुन आराम ।।
परुनि लोंग रामु रामु लीन सांपुन ।
सु अन्तर मोंख्त गव आंईनु सांपुन ।।
करन युस राज़ु लूकन प्यठ हुकूमथ ।
परन शिवु शिवु वदन न्यंत्रव होंरुन रथ ।। १० ।।

वलनु ज़न ओस आमुत क्रीडु ज़ालस ।
करुनि लोंग चाक दामानस तु नालस ।।
सपुन बेहोश तख़्त व ताज त्रोवुन ।
वुछिथ गव पांप्यन न्यदरश होवुन ।।
पंजिरु मंज़ुबाग येंलि लोंत लोंत न्यबर द्राव ।
वुछनि लोंग कस छु ज़ामुत कुस तमिस ज़ाव ।।

दी । ५ रामावतार मेरी आँखों के प्रकाश थे । उन्हें निर्दयतापूर्वक निकालकर आप ने मुझे जीते-जी अग्नि में धकेल दिया । तब राजा ने कौशल्या से कहा—मैं काफ़ी जला हूँ, अब मुझे और न जला । मैं भीतर से धधक रहा हूँ, तेरे मन में अब जो भी आये उसे कह डाल । (इस प्रकार) राजा सुबह-शाम राम-राम पढ़ने लगे और एकान्त में रात-दिन भीतर-ही-भीतर जलने लगे । राम-राम पढ़ने में वे लीन हो गये और इस प्रकार अन्तर्मुक्त हो उनका मन आईने की तरह (निर्मल) हो गया । जो राजा (कभी) लोगों पर हूकूमत किया करता था वही (आज) शिव-शिव (राम-राम) पढ़ता हुआ नेत्रों से रक्ताश्रु बहा रहा था । १० ऐसा लग रहा था जैसे मोह-माया से मुक्त होने के लिए छटपटा रहे हों । वे अपने दामन व गले को चाक कर रहे थे । वे बेहोश हो गये तथा तख़्त व ताज को त्याग दिया । कायारूपी पिंजरे से जब वे धीरे-धीरे बाहर निकलने लगे तो उन्हें भान होने लगा कि (वास्तव में) उनको किसने जन्म दिया है और उन्होंने किसको जन्म दिया है । सारे व्यवधान काटकर

च्रंटिन जवु जामु मोंकुलोविन अथु खोर ।
वंटिन नवदार छारुनि लोंग च्रोंदाह् पोर ॥
वुछुन नु काँह् गोंबुर न कांसि हुन्द मोल ।
अंकिस अख दूपु सूतिन दूफ ज़न ज़ोल ॥ १५ ॥
वोंदुन वाराह् तु समसारा रिवान ओस ।
दपन कीकियि प्यठ नाख़ोंश स्यठाह् ओस ॥
सोंनस येंलि नारुह् सूतिन ज़ोलनस ज़व ।
सों कीकी आयि मन तस साविदान गव ॥
शतुरगुन वरथ मातामाल गांमुत्य ।
गंयख शेंछ तिम ति आसन यूर्य आमुत्य ॥
शतुरगुन बरथ मालिनि मंगु नाविन ।
तिम आयस ताम तिमन अहवाल वांविन ॥
वननि लोंग वरुथ जामन कंरिन पारा ।
मंरिथ कति मोल मेल्यम बेंयि दोबारा ॥ २० ॥
मंछुन म्यंच्र सांरिसुय फ़रियाद लांयिन ।
यितम दर्शुन दितम तस नाद लांयिन ॥
पलन छोवुन कलु छोविन कलस पल ।
लवन कति सिरियि गोमुत अनिर्गंटिस तल ॥

उन्होंने अपने हाथ-पैर मुक्त कर डाले तथा नौ-द्वार वन्दकर वे चतुर्दश मंज़िल को ढूँढ़ने लग गये। वहाँ (पहुँचकर वे पिता-पुत्र के सम्बन्धों से वहुत ऊपर उठ गये) न पुत्र को ही देखा और न अपने को पिता-रूप में ही पाया। वस, ऐसा लगा जैसे एक दीप ने दूसरे दीप को जलाया हो। १५ वे ख़ूव रो रहे थे। संसार भी (उनके साथ-साथ) रो रहा था। कहते हैं कैकेयी पर वे वहुत नाख़ुश थे। राजा की सोने जैसी दमकती देह को जव उसने अग्नि से दहकते देखा तो उसका मन सावधान हो गया। शत्रुघ्न व भरत ननिहाल गए हुए थे। उन्हें सन्देश भिजवाया गया और वे वहाँ से आने को हुए। (कैकेयी ने) शत्रुघ्न और भरत को अपने मायके से वुलवाया। जैसे वे आये तो उसने उनसे सारा अहवाल (हाल) कहा। भरत वस्त्रों को फाड़कर कहने लगे—भला मरने के उपरान्त अव पिताजी मुझे दुवारा कहाँ मिलेंगे? २० उन्होंने (भरत ने) अपने सारे शरीर को मिट्टी में मिला दिया तथा रोते-रोते ज़ोर से फ़रियाद करने लगे—(हे तात!) आकर मुझे दर्शन दीजिए।

ड्रोंटुन सीनु ह्युतुन तस ज़ोरुह् नाला ।
दोंपुन तस कुन बु कस कोंरथस हवाला ।।
स्यठाह ल्युथ गोस यंत्र रथ ओस हारान ।
द्रपन यी ओस वोंन्य कीकी बो मारन ।।
वुछिन प्रथ जायि कौशल्यायि निश ज़ाव ।
वदन दोंपनस यि कंम्य छुन मोसूमन वाव ।। २५ ।।

वनुम वुन्य क्याह् सपुन नतु वन्य ख्यमय वेंह ।
दोंपुस तमि टाठि गोंबरो ब्रोंठु कनि बेंह ।।
कंरुन दीवानगी सीनस दितुन चाक ।
स्यठा कीकीयि प्यठ सांपुन ग़ज़बनाक ।।
दोंनवय कलु ह्यथ तमि ललु नांविन ।
जिगर मुच्रुरिथ तिमन सोंराख हांविन ।।
वदन दोंपनक लंसिव तोंहि आंसिनव आय ।
मे छम तस रामुचन्द्रस खोंतु तुहुंज़ माय ।।
दोंपनक क्रूद त्रांविथ रूज़ितव वोंन्य ।
तसुन्द कारन मे निश तोंह्य बूज़ितव वोंन्य ।। ३० ।।

अपना सिर उन्होंने पत्थरों से टकराया और पत्थरों को अपने सिर से टकराया। (वे कहने लगे) अँधेरे तले खोये उस प्रकाश को अब मैं कहाँ से पाऊँ? अपना सीना चाक कर उन्होंने जोर से आवाज़ दी—(हे तात!) आपने मुझे किस के हवाले कर दिया? (इस प्रकार) उन्होंने अपनी ख़ूब दुर्गति की तथा (आँखों से) रक्त (के आँसू) वहाने लगे और कहने लगे कि अब मैं कैकेयी को मार डालूँगा। उसने उसे (कैकेयी को) हर कहीं ढूंढा और (ढूँढते-ढूँढते) कौशल्या के कमरे में प्रविष्ट होकर रोते हुए कहा—हम मासूमों को यह किसने काल-कवलित कर डाला। २५ (आप) शीघ्रतापूर्वक कहें कि यह सब कैसे हुआ, अन्यथा मैं ज़हर खालूँगा। तब उसने (कौशल्या ने) कहा—मेरे लाल! सामने बैठ और ध्यान से सुन। दीवानगी के आलम में उसने अपना सीना चाक कर डाला और कैकेयी के ग़ज़ब (ज़्यादतियों) का वर्णन किया। दोनों (भरत व शत्रुघ्न) के सिरों को उसने सहलाया और अपना जिगर खोलकर उसमें सूराख़ दिखाये। रोते-रोते उसने कहा—अव तुम दोनों खुश रहो और चिरायु हो। मुझे अव उस रामचन्द्रजी से तुम दोनों की ही चाह है। अब क्रोध त्यागकर शान्त हो जाओ और उस कारण को विस्तार से सुनो। ३० तब उसने

दपन तम्य माजि प्यठ वाराह् नन्यर वौन ।
क़बीलु खौतु वाराह् दाद गव नौन ॥
वुछिव वौन्य वयाह् तिथिस राज़स वंनिथ आव ।
ग्युतुन ज़ुव ज़्यविह् प्यठ ह्यथ गोंवरु सुन्द नाव ॥
ख़बर छा रामुचन्द्रन बूज़ या ना ।
डण्डक वनु मंजुह् रोंटमुत तम्य मकाना ॥ ३३ ॥

बरथ जी सुन्द डण्डक वन गछुन

अंछिव लोंग रथ हरांने
रामु रामु लोंग परांने
शेरि प्यठु ताज त्रोवुन
बरथ राज़ु मंगुनोवुन
तनि जामु मंत्र रोवुन
रामु रामु लोंग परांने ॥ १ ॥

शापस कें्ह न यलाज
बरथो शेरि द्यू ताज
मोल मंरिथ मांज कर्‌या राज
रामु रामु लोंग परांने ॥ २ ॥

(भरत ने) अपनी माँ के सम्बन्ध में खुलकर बातें की और उसके क़बीले (परिवार) की अन्य बातें नंगी हो गई। देखिए, उस राजा (तक) की क्या हालत हो गई। उसने जीभ पर पुत्र का नाम लेते-लेते अपनी जान दे दी। मगर क्या ख़बर रामचन्द्रजी ने ये शब्द सुने अथवा नहीं। वे तो दण्डक-वन में वास कर रहे है। ३३

भरतजी का दण्डकवन जाना

(राजा) आँखों से रक्त बहाने लगा और राम-राम पढ़ने लगा। (उन्होंने) सिर से ताज उतार दिया और भरत को बुलाया। तन से सभी वस्त्र उतार दिये और राम-राम रटने लगा। १ शाप का कोई इलाज नहीं है। हे भरत! अब तुम सिर पर ताज पहनो। पिता के मरणोपरान्त क्या माता राज कर सकेगी? और राम-राम रटने लगा। २ आसमान में शोर हुआ और जहाँ में कँपकँपी हुई। राजा

शोर गव आसुमानस
ज़िलु ज़िलु गव जहानस
राज़ुह खोत प्यठ व्यमानस
रामु रामु लोंग परांने ॥ ३ ॥

संमिथ आव सोर क्रोनुय
कोंत गव राज़ुह सोनुय
चारु नो केंह ति ज़ोनुय
रामु रामु लोंग परांने ॥ ४ ॥

संमिथ आव सोर कबीलु
वन्याहस ज़ारु तु विलु
कालस केंह नु हीलु
रामु रामु लोंग परांने ॥ ५ ॥

च्रंसिथ आव सोर आलम
कीकीयि प्यठ कोरुख ज़म
कालस क्याह तम्युक ग़म
रामु रामु लोंग परांने ॥ ६ ॥

कीकी लंज्य वदांने
बुथिस लंज्य रब लदांने
मंरिथ गव क्याह मे बने
रामु रामु लोंग परांने ॥ ७ ॥

सोंम्यतर लंज्य रिवांने
ज़ोरुह लंज्य नालु दिने

विमान पर चढ़ा और राम-राम रटने लगा। ३ सारा कुटुम्ब एकत्र हो गया। (सभी कहने लगे) हाय! हमारा राजा कहाँ चला गया। होनी के सामने कोई चारा नहीं लगता। और राम-राम रटने लगा। ४ सारा क़बीला सम्मिलित हुआ और (राजा से रुकने के लिए) ख़ूब मनुहार व मिन्नतें कीं। काल के सामने कोई बहाना नहीं चलता और राम-राम रटने लगा। ५ सारा आलम सिमट कर आ गया और कैकेयी की सभी ने भर्त्सना की। काल को किसी का ग़म नहीं और राम-राम रटने लगा। ६ कैकेयी रोने लगी और मुँह पर कीचड़ मलने लगी। वे तो मर गये मगर मेरा अब क्या होगा; और राम-राम रटने लगा। ७

वौंद फेरि यी सपांने
रामु रामु लोंग परांने ॥ ८ ॥

कौशल्या आयि नालन
सोंम्बुल कंरिन दोंन गुलालन
दोंपुन तन नारुह ज़ालन
रामु रामु लोंग परांने ॥ ९ ॥

कौशल्यायि दोंप तिमन दोंन
ह्योंर खोंत किनु वोंथुम वोंन
सोंम्यत्रायि दोंप फंरुम सोंन
रामु रामु लोंग परांने ॥ १० ॥

मारनि लूख लंग्य पान
कीकियि प्यठ कंरुख हान
कालस क्याह छु अवमान
रामु रामु लोंग परांने ॥ ११ ॥

शुतुरगुन चाख दिथ द्राव
बोज़ुनु कैंह नु तस आव
दोंपुन प्यव मांसूमन वाव
रामु रामु लोंग परांने ॥ १२ ॥

वरथ राजुह द्राव लारन
अंछिव किन्य खून हारन

सुमित्रा विलाप करने लगी और ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगी—बुद्धि फिर जाने पर यही होता है; और राम-राम रटने लगा। ८ कौशल्या ज़ोर-ज़ोर पुकारने लगी—दो गुलों को उसने (राजा ने) मुरझा डाला। अब यह तन मैं अग्नि में जला डालूँ; और राम-राम रटने लगा। ९ कौशल्या ने उन दोनों (भरत व शत्रुघ्न) से कहा—क्या वे ऊपर गये या नीचे। सुमित्रा ने कहा—हमें अपनी ही सौत ने धोखा दिया; और राम-राम रटने लगा। १० सभी लोग सिर पीटने लगे और कैकेयी को दोष देने लगे। काल के सामने कुछ नहीं चलता; और राम-राम रटने लगा। ११ शत्रुघ्न (वस्त्रों को) चाक करते हुए निकल पड़े और उन्हें कुछ भी न सूझा। (वे कहने लगे) हम मासूम अब काल-कवलित हो गए; और राम-राम रटने लगा। १२ भरतजी पीछे-पीछे चल दिये और (आँखों से) खून

डण्डकवन वोत छारन
रामु रामु लोंग परांने ॥ १३ ॥
वुछुन येंलि सिरियि रूपस
ग्रहनु सुत्य गोंट गोमुत तस
कोंठ्यन तान्य वोतमुत मस
रामु रामु लोंग परांने ॥ १४ ॥
वुछुन येंलि मंलिशि ख़ानु
होरुन ओंश दानु दानु
प्योमुत ज़न आसमानु
रामु रामु लोंग परांने ॥ १५ ॥
वरथन येंलि सु हाल ड्यूठ
वंसिथ प्यव तान्य पथर ब्यूठ
दोंपुन पादन दिमस म्यूठ
रामु रामु लोंग परांने ॥ १६ ॥
बुछिन पम्पोश हिश तन
सर्पन्यमुत्र ख़ाक हन हन
मंथिन तिम पाद न्यत्रन
रामु रामु लोंग परांने ॥ १७ ॥
दोंपुस तंम्य रामु जुवन
बरथु छुख क्याज़ि रिवन

वहाने लगे। (सभी रामचन्द्रजी को) ढूँढते-ढूँढते दण्डकवन पहुँच गए; और राम-राम रटने लगा। १३ (भरत ने) सूर्य-रूप (रामचन्द्रजी) को ग्रहण द्वारा धूमिल हुआ देखा। उनके केश घुटनों तक बढ़े हुए देखे और राम-राम रटने लगा। १४ जब उन्होंने (भरत ने) रामचन्द्रजी की कुटिया देखी तो (उनकी) आँखों से अश्रु के दाने प्रवाहित हुए। वे जैसे आसमान से नीचे गिरे और राम-राम रटने लगा। १५ जब भरत ने यह हाल देखा तो वे गिरकर नीचे बैठ गए। उन्होंने कहा मैं (रामचन्द्रजी के) पादों को चूम लूँ, और राम-राम रटने लगा। १६ (भरत ने) कमल जैसे तेल को ख़ाक के समान मुरझाया हुआ देखा। उनके (रामचन्द्रजी के) पादों को (उन्होंने) अपने नेत्रों के साथ मला (मिलाया); और राम-राम रटने लगा। १७ तब रामचन्द्रजी ने कहा—

कौतू छुख योर यिवन
राम् राम् लोंग परांने ।। १८ ।।

बवन माजि कौरम् समवाद
वुछुम क्याह् छुम यि रॉयदाद
येति योर छुम न कैंह् याद
राम् राम् लोंग परांने ।। १९ ।।

बबस प्यठ नाल् त्रोवुन
दांद्य लद मन्द् छोवुन
वांयिस हाल बोवुन
राम् राम् लोंग परांने ।। २० ।।

बरथन हाल वोंनुनस
वंसिथ प्यव ज़ंफ ओंनुनस
दोंपुन कंम्य कोरुस वेकस
राम् राम् लोंग परांने ।। २१ ।।

कियव पुछि ओस सुय साथ
बवन कंर असि दोंहस राथ
बुमो प्योसस च्यतस ज़ाथ
राम् राम् लोंग परांने ।। २२ ।।

दोंख तु दांद्य सख़्त त्रांलिन
दर्मक्य वादु पांलिन

हे भरत ! तुम क्यों (इस प्रकार) विलाप कर रहे हो ? और भला तुम यहाँ क्योंकर आये ? और राम-राम रटने लगा । १८ माता-पिता ने मुझे कुछ कहा है । (आप स्वयं) मेरा हाल देखकर (उस बात का) अनुमान लगा सकते हैं । इसके अतिरिक्त मुझे कुछ भी याद नहीं है; और राम-राम रटने लगा । १९ (भरत) पिता के लिए विलाप करने लगे और अपने आप की निंदा करने लगे । भाई (राम) से सारा हाल कहा; और राम-राम रटने लगा । २० भरत ने हाल कहा (जिसे सुनकर रामचन्द्रजी) अचेत होकर गिर पड़े । वे कहने लगे—यह मुझे किसने असहाय वना डाला ! और राम-राम रटने लगा । २१ वे हमारे एक मात्र सहायक थे । उनकी मृत्यु ने अव हमारे दिन को रात वना दिया । उन्होंने मुझे (अंतिम समय में) स्मरण तो नहीं किया ? और राम-राम

दोंह येंलि नख वांलिन
रामु रामु लोंग परांने ॥ २३ ॥

वोंन्दुह वारियाह गोस
वरथस कुन वनान ओस
मन्दियन अनि गोंट गोस
रामु रामु लोंग परांने ॥ २४ ॥

कुसू ह्यकि व्याद कांसिथ
यि ओसुम ज़िन्दुह आंसिथ
बु नो वोंन्य तोर ह्यकय यिथ
रामु रामु लोंग परांने ॥ २५ ॥

वदुनि लोंग बब च्यतस प्योस
तिथुय युथ शुर सतु मोस
न्यठन च्रुह दिथ बोंरुन बोस
रामु रामु लोंग परांने ॥ २६ ॥

में नो वोंन्य कोंह कर्यम हान
बु कस करु मटि पनुन पान
कोंतू च्रोंलहम च्रुह वगवान
रमु रामु लोंग परांने ॥ २७ ॥

कोंतू च्रोंलहम में त्रांविथ
कसू ह्यकु हाल वांविथ

रटने लगा। २२ (उस राजा ने) खूब दुःख और संकट सहकर धर्म के वचन पाले। जब दिन पूरे हो गये और राम-राम रटने लगा। २३ (रामचन्द्रजी के) दिल को काफ़ी ठेस पहुँची। दिन में ही उनकी आँखों के सामने अन्धेरा छा गया तथा भरत से कहने लगे—और राम-राम रटने लगा। २४ अब मेरा यह दुःख कौन दूर कर सकता है? क्या यह दुःख मुझे ज़िंदा रहकर देखना था? अब मैं वहाँ (अयोध्या) नहीं जा सकता और राम-राम रटने लगा। २५ पिता की याद आने पर वे (पुनः) रो उठे, वैसे ही जैसे सात मास का शिशु रोता है। वे (वेबसी में शिशु की तरह) अँगूठा चूसने लगे और राम-राम रटने लगा। २६ अब मेरी कोई क़द्र नहीं करेगा। भला मैं अपने आपको किसके भरोसे रखूँ। हे मेरे भगवान्! आप कहाँ चले गये? और राम-राम रटने

अनी कुस मन नाविथ
रामु रामु लोंग परांने ॥ २८ ॥

सिरियस लोंगमु ग्रहनुय
में नो जाह मोल ज़ोनुय
वुछित येति हाल सोनुय
रामु रामु लोंग परांने ॥ २९ ॥

वरथो गछ़ नगर कुन
कौशल्या यूर्य सोज़ुन
में नो वौन्य तोर छु युन
रामु रामु लोंग परांने ॥ ३० ॥

गटि येलि सूर फोल गाश
सिरियन त्रोव प्रकाश
बरथस सूर यिनुच आश
रामु रामु लोंग परांने ॥ ३१ ॥

श्री रामु सुन्द ववस वदुन

दपन पंज़्य किन्य बव गोबुरस नरायन ।
वतव प्यठ लूख बबु रुस्यतेन छि लायन ॥

लगा । २७ आप मुझे छोड़कर कहाँ चले गये । मैं अब अपना हाल किससे कहूँ । आपको अब कौन मनाकर ला सकेगा और राम-राम रटने लगा । २८ मुझ सूर्य को ग्रहण लग गया । आज तक मैंने पिता के मूल्य को कभी नहीं जाना । अब यहाँ आकर हमारा हाल देख लेना और राम-राम रटने लगा । २९ हे भरत ! अब तू नगर (अयोध्या) की ओर जा और कौशल्या को इधर भेज देना । मैं अब वहाँ नहीं जा सकूँगा और राम-राम रटने लगा । ३० रात का अन्धेरा दूर होकर जब प्रभातागमन हुआ और सूर्य ने अपना प्रकाश छोड़ा तो भरत को (रामचन्द्रजी) के आने की आशा धूमिल दिखाई दी और राम-राम रटने लगा । ३१

श्रीराम का अपने पिता के लिए विलाप करना

सत्य कहा गया है कि पुत्र के लिए पिता नारायण (के समान) होता है । जिनके पिता नही होते उन्हें लोग सड़कों पर पीटते हैं ।

यिमन छि पापु सुत्य बब माजि रावन ।
तिमन अदुह वथ ति नो छुय काँह ति हावन ।।
प्योमुत ज़न छुय सु आसान आसुमानु ।
सु योंदवय मोख्तु फोल मोल छुस न दानु ।।
सु कर छुय कांसि कुन अदुह वुछिथ ज़ानन ।
तमिस छिय वति पकुनस तुरुह ज्ञानन ।।
तमिस छुय सारि चीज़ुक लूब सोरन ।
तमिस कर कांसि मंगनस चोंठ फोरन ।। ५ ।।

तमिस अदुह कर छ रोज़न कांसि हुंज़ कल ।
सु छुय डोलु डाफ दिवान कोलु बठेन तल ।।
सु छुय अदुह च्रूर ह्यू आसन रटन वन ।
गलन तस तापु सुतिन शीन ज़न तन ।।
गोंबुर मोलिस निशि छुय गटि अन्दर लाल ।
सु यूगी पोशि यस बब मोज यंत्र काल ।।
वनुनि लोंग सोंपनु वुछिहन पनुन मोल ।
यियम ना लोल कासेंम छुम गोमुत होल ।।
बु वनुहस गोसु कम कम छिम वनेमुत्य ।
सु वनिहेंम जामु छिय अशि सुत्य वनेमुत्य ।। १० ।।

जो माता-पिता को अपने पापों के कारण खो देते हैं, उनको फिर कोई सुमार्ग नहीं दिखाता है। ऐसे व्यक्ति मानो आसमान से गिर गए होते हैं। मोती के समान होने पर भी उनका मूल्य एक (मामूली) दाने के समान हो जाता है। ऐसे व्यक्ति किसी की ओर (निःसंकोच) देख भी नहीं सकते हैं और मार्ग में उनका चलना भी दुष्कर बन जाता है। उनकी सारी इच्छाएँ लुप्त हो जाती हैं और उनमें किसी से कुछ माँगने की हिम्मत भी चली जाती है। ५ उन्हें भी किसी की चिंता नहीं रहती है और वे नदी-किनारों पर डोलते-फिरते रहते हैं। वे फिर चोर की तरह वन में रहते (छिप जाते) हैं और ताप (पश्चात्ताप) के कारण उनका तन बर्फ़ के समान गलने लग जाता है। पिता तो पुत्र के लिए आँखों में पुतली के समान होता है। वह योगी है जिसके माता-पिता दीर्घकाल तक (जीवित) रहते हैं। वे (रामचन्द्रजी) कहने लगे—(काश !) पिता जी सपने में दर्शन देते और मेरी उद्विग्नता व संताप को देख लेते। मैं (उनसे) कहता—मेरे साथ क्या-क्या बीती है।

बु वनुहस गरु नेरुन गोम अवमान ।
सु वनिहेम गरु तति येति सोख छु आसान ।।
बु वनुहस गरि च्रोल काँह म्योन ह्यू नु ।
सु वनिहेम गरुह सुतिन कांसि न्यू नु ।।
बु वनुहस गंयम जन ब्योन ब्योन पनुन्य प्रान ।
सु वनिहेम सुत्य हेन कीवल कुनुय प्रान ।।
बु वनुहस क्याह बु करुह डोल सोर आलम ।
सु वनिहेम यस न डोल मन तस छु क्याह ग़म ।।
बु वनुहस छुस वुछान कुँह केंह दियम ना ।
सु वनिहेम येती छुसय बो पछ़ अनेम ना ।। १५ ।।

बु वनुहस यस नु बव तस क्याह छु पाय ।
सु वनिहेम तस छु ईशर जायि जाय ।।
बु वनुहस यस नु केंह दिन बाय तु वन्द ।
सु वनिहेम दय तमिस दियि सोख तु आनंद ।।
बु वनुहस यस नु कुनि आसी बसन जाय ।
सु वनिहेम दय छु तस केंह छुस न परवाय ।।

वे कहते—तुम्हारे सभी वस्त्र आँसुओं से भीग गये हैं (उन्हें निचोड़ डाल)। १० मैं कहता—मेरा घर से निकलना (सब के लिए) दु:खदायी रहा। वे कहते—घर वही है, जहाँ सुख है। मैं कहता—मेरी तरह कोई भी घर से नहीं भागा। वे कहते, घर को कोई साथ नहीं ले गया है। मैं कहता—मेरे प्राण जैसे पृथक्-पृथक् (खण्डित) हो गये हैं। वे कहते—केवल एक प्राण (परमात्मा) को साथ रख। मैं कहता—अब मैं क्या करूँ, सारा आलम मेरे विपरीत हो गया है। वे कहते—जिसका मन नहीं बदला, उसको कोई ग़म नहीं है। मैं कहता—मैं चाहता हूँ कि कोई मुझे कुछ दे (मेरी सहायता करे)। वे कहते, मैं यहीं तुम्हारे पास हूँ (तेरी सहायता करने के लिए)। १५ मैं कहता—जिसका पिता न हो, उसका क्या उपाय हो ? वे कहते—उसके लिए जगह-जगह पर (स्वयं) ईश्वर है। मैं कहता—जिसको भाई-बन्द कुछ भी न दें (उसका क्या उपाय हो ?) वे कहते—भगवान् उसको (स्वयं) सुख और आनन्द देंगे। मैं कहता—जिसको कहीं पर भी बसने की जगह न मिले (उसका क्या उपाय हो ?) वे कहते—उसके भगवान् हैं, उसको कोई परवाह नहीं है। मैं कहता—यह दु:ख और दर्द मैं किससे कहूँ ? वे कहते—उनसे कहना

बु वनुहस कस बु वनु यिम दोख तु दादी ।
सु वनिहेम तस निशन येम्य योग सारी ।।
बु वनुहस यस नु यिम संतान कैंह दिन ।
सु वनिहेम तस येन्दुरुह लूकस अन्दर नित ।। २० ।।
बु वनुहस यस छि सारी शत्र आसन ।
सु वनिहेम दय छु तस तिमु व्यांज़ कासन ।।
बु वनुहस कष्ट छुम वनुवास रोज़ुन ।
सु वनिहेम महाबारत वाति वोज़ुन ।।
बु वनुहस कोलि अन्दर छुस बोठ बु वाता ।
सु वनिहेम वोन्दुह कर शोद दय छु दाता ।।
बु वनुहस मुहिम छुम क्रेछर त्रल्या ज़ाथ ।
सु वनिहेम सुबह फोल सोरुनि लंज्य राथ ।।
बु वनुहस रछ परन तल छुख शुर्यन मोल ।
सु वनिहेम सारिनुय दय छुय रछन वोल ।। २५ ।।
बु वनुहस बोज़ि योग सोय छम गछुन हान ।
सु वनिहेम त्रोन योगन ईशर कुनुय ज़ान ।।
बु वनुहस थाव कन बु वनु कस कुन ।
सु वनिहेम ईशरस गछि पान पुशरुन ।।

जो सर्वयोगी (सर्वत्र वर्तमान) हैं। मैं कहता—जिसको सन्तान से कुछ न मिले (उसका क्या उपाय हो?) वे कहते—उसको इन्द्रलोक ले जाया जायेगा। २० मैं कहता—जिसका हर कोई शत्रु हो (उसका क्या उपाय हो?) वे कहते—भगवान् उसकी ये सारी व्याधियाँ दूर कर देते हैं। मैं कहता—वनवास करना मुझे कष्टदायी लग रहा है। वे कहते—(तुम्हें) महाभारत से प्रेरणा लेनी चाहिए। मैं कहता—मैं नदी में हूँ, भला पार कैसे लग सकता हूँ? वे कहते—मन को शुद्ध रखना, भगवान् दाता हैं। मैं कहता—मेरा भविष्य कठोर और अंधकारमय है। वे कहते—बस, अब रात ढल गयी और सुबह होने वाली है। मैं कहता—हमें अपने पंखों के नीचे शरण दीजिए, आप हमारे पिता हैं। वे कहते—भगवान् हर किसी का पालनकर्त्ता है। २५ मैं कहता—आने वाला युग सुनेगा (मुझे दोष देगा), यही एक चिंता है। वे कहते—चारों युगों के ईश्वर को एक जान। मैं कहता—आप कान धर कर मेरी सुनिए, नहीं तो मेरी कौन सुनेगा? वे कहते अपने आपको ईश्वर के भरोसे छोड़ना

बु छुस प्योमुत पथर अथ रोंठ करख ना ।
में दिख दरशुन सोंनुक वरशुन करख ना ॥
वोंदुन वाराह वदुनु सुत्य कल गंयस यी ।
वनुनि लोंग दादि सुत्य पनुनिस दिलस यी ॥
च्रे वोंनुमुत छुत मे युस सोंरि अरदुह रातन ।
तमी विज़ि छुस बु तस निश पानु वातन ॥ ३० ॥
यि वोंनुमय रात्य रातन कोनु योंत आख ।
यि कोंसु व्यद गंयि अपुज़ गछि दयि सुंद वाख ॥
च्रे वोंनुमुत छुत मे युस करि ग़मु अन्दुरुह याद ।
बु पानय वातु तस निश दूर च्रल्यस व्याद ॥
च्रे वोंनुमुत छुत येमिस अथि आसि न हार ।
बु तस कित्य थावुह लंद्य लंद्य मोंखतु देवार ॥
च्रे वोंनुमुत छुत येमिस अथु रोंठ न कांसे ।
तमिस करुह अथु रोंठ बो सारि वांसे ॥
बु छुस प्योमुत पथर छुक कोनु यिवान ।
ख़बर छा यिनु योंत माछी नु दिवान ॥ ३५ ॥
वोंनुथ च्रे यस नु आसे कांसि हुंज़ सथ ।
बु थावस कन कथन हावस दयूगथ ॥

चाहिए। मैं नीचे गिर गया हूँ (निस्सहाय हूँ), मेरा हाथ थामिए। मुझे दर्शन देकर मेरे ऊपर सोने की वर्षा कीजिए। वे ख़ूब रोये और रोने से उनका बुरा हाल हो गया। वे टूटे दिल से कहने लगे—आपने कहा है कि जो मुझे अर्द्धरात्रि में स्मरण करता है, मैं उसी समय स्वयं उसके पास आ जाता हूँ। ३० मैं कहता—मैंने तो रात-भर निवेदन किया तो फिर आप आते क्यों नहीं हैं? यह कौन-सी विधि है कि भगवान् का वचन झूठा हो जाय। आपने कहा है कि जो मुझे ग़म में याद करेगा, मैं स्वयं उसके पास पहुँच कर उसकी व्याधि दूर कर दूँगा। आपने कहा है कि जिसके पास फूटी कौड़ी भी न हो, मैं उसके लिए मोतियों की दीवारें खड़ी कर दूँगा। आपने कहा है कि जिसका कोई सहारा नहीं होगा, उसका मैं आयु-भर हाथ थाम लूँगा। मै असहाय अवस्था में हूँ, आप आते क्यों नहीं है? क्या ख़बर, कहीं आपको यहाँ आने से रोका तो नहीं जा रहा है? ३५ आपने कहा है कि जिसको किसी का भी सहारा नहीं होगा, उसकी बातों पर आप ध्यान देंगे और उसको दैवगति दिखाएँगे। मैं व्याधियों से

बु वोलुमुत व्याज़ छुस छिम प्रान नेरन ।
ख़बर छा कोनु ईशर छुख चुह फेरन ॥
च्चे वोनुमुत छुत येमिस नु काँह छु आसन ।
बु छुस तस पानु आयुत मोहरुह वासन ॥
च्चे वोनुमुत छुत गरे काँह गव अवारुह ।
बु ज़ालन तसुंदि बापथ लाँक नारुह ॥
च्चे वोनुमुत छुत यि केंछा काँसि प्यठ गव ।
बु छुस बोज़ान वनुनु रोंसतुय च्चु कन थव ॥ ४० ॥

तवय छोंपु माय लागिथ छुस बु रोज़न ।
मे बूज़ुम छुख वनुनु रोंसतुय च्चुह बोज़न ॥
अमा हारान छुस अदुह यूत क्याह च्चेर ।
खंटिथ रोज़ुन मे निशि थोंद वोंथ न्यबर नेर ॥
क़लम तुल करमु लीखा म्यान्य नव लेख ।
क़लम सुय दय ति सुय अज़ मा वोंपर ब्येख ॥
वुछुस यिम हल्य अछर तिम शेरु नावुस ।
यि छुस स्योद स्योद ति तत्य सोबूत थावुस ॥
छि यिम च्चोरय अछर लेखुन्य, छि न ज़्याद ।
गोंडन्य यि बूमि प्यठ वोंन्य दूर च्चलिन व्याद ॥ ४५ ॥

दोंयुम यि शत्रु काँह पोशुन गोंछुम नु ।
म्येतुरु मोखु काँह त्रेयुम रोशुन गोंछुम नु ॥

घिरा हुआ हूँ और मेरे प्राण निकल रहे हैं। क्या खबर, हे ईश्वर! आप क्यों (इधर) आते नहीं हैं। आपने कहा है कि जिसका कोई नहीं होता है, मैं स्वयं उसकी सेवा-सुश्रूषा करता हूँ। आपने कहा है कि यदि कोई विवश हो तो मैं उसके लिए लंका को आग लगा दूँगा। आपने कहा है कि किसी पर जो कुछ भी वनती है, मैं उसे कहे बिना जान जाता हूँ। ४० इसीलिए मैंने चुप्पी धारण कर ली है, क्योंकि मैंने सुना है कि आप विना कहे ही सब कुछ जान जाते हैं। मैं हैरान हूँ कि यह देरी फिर क्यों? अब आप अधिक छिपकर न रहिए और सामने आ जाइए। क़लम उठाइए और मेरा नया कर्म-लेख लिखिए। क़लम भी वही है, आप भी वही हैं मगर मैं बदल गया हूँ। जो इसमें (मेरे कर्म-लेख में) टेढ़े अक्षर आपको दिखे उन्हें ठीक कर दीजिए। जो सीधे हैं उन्हें वहीं पर क़ायम रखिए। बस, ये चार अक्षर लिखिए, ज़्यादा नहीं—

यि च़ूरिम कथ च़ुह् वेह् म्यानिस मनस मंज़ ।
तमी सुत्य च़ालु सारी दोख वनस मंज़ ॥
च़े वोनुमुत छुत बु छुस वोज़न तसुन्द ज़ार ।
येमिस आसि न वनुनस कांसि निश वार ॥
च़े वोनुमुत छुत बु तस छुस पान हावन ।
येमिस सोरुय कबीलु क्रोन त्रावन ॥
ख़बर छा कोनु छुख अदुह् म्योन वोज़न ।
गंयम मा ज़्यव कंज्य नतु ज़ंर्य च़े छिय क़न ॥ ५० ॥

च़े वोनुमुत छुत गछ़े कांह् कांसि प्यठ कूर ।
पोलादस च़ुनि करुह् तस शंसतुरस सूर ॥
च़े वोनुमुत छुत लमे कांह् कांसि नालस ।
च़टस पोलाद गर्दन चंश्मु ज़ालस ॥
च़ु कथ सना शायि रूज़िथ छुख न्यबर नेर ।
मे सापनुन छ़्चन वुनि छुख ना गछ़न सेर ॥
मे च़ायम तुरि नठ ज़न लावि मूरे ।
च़ुह् वुछतम मोज रूज़िथ दूरि-दूरे ॥

प्रथम, यह कि इस भूमि पर से अब (सब) व्याधियाँ दूर हों। ४५ दूसरा, कोई भी शत्रु मेरा मुक़ाबला न कर सके। तीसरा, मित्र की ख़ातिर कोई मुझसे रूठे नहीं। चौथा, आप मेरे मन में बैठ जाइए, उसी से इस तन के सारे दुःख दूर हो जायेंगे। अपने कहा है कि मैं उसकी प्रार्थना सुनता हूँ जो किसी के सामने भी अपना दुःख प्रकट न कर सके। आपने कहा है कि मैं उसे दर्शन देता हूँ जिसे सारे कुल-कुटुम्ब ने त्याग दिया हो। ५० न जाने तब आप मेरी क्यों नहीं सुन रहे है। कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी जीभ गूँगी हो गई है (मुझे कहना नहीं आता है) या फिर आपके कान बहरे हो गए हैं। आपने कहा है कि यदि कोई किसी पर क्रुद्ध होगा तो फ़ौलाद को कोयला और लोहे को राख बना दूँगा। आपने कहा है कि यदि कोई किसी का गला पकड़े तो उस (आततायी) की फ़ौलादी गर्दन पकड़कर उसकी आँखें (चश्म) जला डालूँगा। आप किस जगह पर छिपे हैं, बाहर आइए। मै उजड़ रहा हूँ और आप अभी तक़ संतुष्ट ही नही हो रहे हैं। साँट (डाली) की तरह मेरी कँपकँपी छूट रही है और आप दूर-दूर रहकर नजरा देख रहे हैं। शीत-लहर के कारण मेरा (यहाँ) श्रावण में ही माघ हो गया है और आप श्रीश्रमनाग की ओर

मे सोपनुन वावुह सुतिन श्रावनस माग ।
च्रुह गछ्तम नावु सोलस शीश्रम नाग ।। ५५ ।।

मे लोसम अंछ वुछान रातस तु दोहस ।
च्रुह गछ्तम छोह दिने कैलास कोहस ।।
बु कर वुछु मोख सोखस गलु मायि सुती ।
च्रुह गछ्तम हरुह मोखस गंगायि सुती ।।
मे ओश सूरुम अंछन ह्योतनम पकुन रथ ।
च्रुह गछ्तम साल खेनि हीमालु परबथ ।।
बु छुस प्योमुत पथर छिम प्रान नेरान ।
च्रुह छुख ब्रशबस खंसिथ आकाश्य फेरान ।।
मे राख्यस गंछ्यच नु पोशुन्य यिम करन माथ ।
च्रुह गछ्तम नन्दुकीशोर हचथ अमरनाथ ।। ६० ।।

मे रोटमुत वन छु रावुन च्रूरि जागन ।
च्रुह छुख ना वुनि हलमुत लोंद्र लागन ।।
मे वोन्य रावुन यि सीता च्रूरि गछि न्युन ।
च्रुह गछ्ख वीरुह बोदरस आगन्या द्युन ।।
गलन छुस शीन ज़न बेयि हाव दरशुन ।
दखिन्य गछि चोन वालुन सोनु वरशुन ।। ६३ ।।

नौका-सैर करने जा रहे हैं। ५५ (आप को देखते-देखते) मेरी आँखें मुरझा गईं और आप कैलास-पर्वत की ओर घूमने जा रहे हैं। मैं भला सुख का मुख कब देखूँ। आपकी चाह में तो मैं गलता जा रहा हूँ और आप हरमुख गंगा की ओर जा रहे हैं। मेरी आँखों का पानी (अश्क) सूख गया है और अब उनसे रक्त निकलने लगा है और आप जीमने के लिए हिमालय पर्वत की ओर जा रहे हैं। मैं नीचे गिर गया हूँ (असहाय पड़ा हूँ) और मेरे प्राण निकल रहे हैं और आप वृषभ पर चढ़कर आकाश में फिर रहे हैं। इधर मैं सोचता हूँ कि कहीं राक्षस मुझे पछाड़ कर मेरी मात न कर दे और उधर आप नंदिकेश्वर पर (सवार होकर) अमरनाथ (तीर्थ) जा रहे हैं। ६० मैंने वन ग्रहण कर लिया है तथा रावण छिपकर घात लगाये बैठा है और आप अभी तक वीर हनुमान व रुद्र का रूप धारण नहीं कर रहे हैं। अब (समय आ गया है कि) रावण को आकर मेरी इस सीता को चुरा लेना चाहिए और आपको अपने वीरभद्र को आज्ञा देनी चाहिये। मैं बर्फ़ के समान गल रहा हूँ, अब मुझे दर्शन दीजिए और दक्षिण

श्रीरामसुन्ज़ लीला

हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ।
दज़न छुम मन कथन कन कोनु थावन ॥
हरी हरुह खोंर क्रुमन हंसितिस कोरुन वन्द ।
कर्यायन ज़ोर बल वोतुस न कंह अन्द ॥
शरन अदु गोंय छुहन तति मोंकु लावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ १ ॥
शरन गव ना ज़्ञे कुन वुनि म्योन मन ज़ाथ ।
तवय गोम रांञ्च दोंह दोंहस गंयम राथ ॥
ज़्ञुह छुख गचि रांच सुबाह फोलनावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ २ ॥
गलन छुस राखिसन सुतिन गंयम कोम ।
अलन छुस व्यगनु सुतिन अनिगोंट गोम ॥
ज़्ञुह अमि अनिगटि अन्दुरु छुख गाश हावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ ३ ॥

की ओर (जिस ओर मुझे राक्षसों से युद्ध करने जाना है) आप सोने की वर्षा करें (वातावरण मेरे अनुकूल बनाएँ) । ६३

श्रीराम का भजन

हे मेरे हरिहर ! आप मुझे दर्शन क्यों नहीं दे रहे है ? मेरा मन विदग्ध हो रहा है, आप कान क्यों नहीं धर रहे है ? हे मेरे हरिहर ! जब ग्राह ने उस साथी का पैर पकड़ा और काफ़ी जोर-बल करने के उपरान्त भी जब उसकी एक न चली तो वह आपकी शरण में गया और तब आपने उसको मुक्त कर दिया था। हे हरिहर ! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं ? । १ क्या मेरा मन (पूर्णरूप से) अभी तक आपकी शारण में नहीं गया है ? जो मेरे दिन की रात और रात का दिन हो रहा है। आप तो अँधेरी रातों को सुबह में खिला देते हैं। हे हरिहर ! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं ? । २ मेरा काम (वास्ता) राक्षसों से पड़ा है—(यह सोच-सोचकर) गलता जा रहा हूँ। मैं काँप रहा हूँ और तरह-तरह के विघ्नों (की कल्पना कर) मेरी आँखों के सामने अँधेरा छा गया है। आप इस अन्धेरे में प्रकाश दिखानेवाले हैं। हे हरिहर ! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं ? । ३

त्रलन छुस नारु व्यगनुकि नेंशि बोंद ज़न ।
वुछन छुख ना शंतुर छिम पतु सुह ज़न ॥
त्रे वोंनुमुत छुत सुह्स अथि गाव चावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ ४ ॥

वनय क्याह ख्योंल पंहल्य डंल्य अथु त्रोवमुत ।
शरीरुक चोंर छु शालस अथि आमुत ॥
त्रे वोंनुमुत छुत चंरिस अथि शाल ख्यावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ ५ ॥

बु कस वनु छुख त्रुह बोज़न वोल म्योनुय ।
वदन छुय लूक शुर छुख मोल म्योनुय ॥
त्रुह छुख तिम त्रूरि ह्यथ दोंद दामु चावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ ६ ॥

बु कोताह चानि दरशनु पुछ्य वोंदासी ।
वोंदासी कोनु तिम यिम बक्त आंसी ॥
अंशिस सूत्य रथ छु ना प्रह्लाद हारन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ ७ ॥

विघ्नों की आग से (डरकर) मैं निर्बुद्धियों (अविवेकियों) की तरह विचलित हो रहा हूँ। क्या आप नहीं देख रहे है कि किस तरह शत्रु शेर के समान मेरे पीछे लगे हुए हैं। आप ने तो कहा है कि मैं शेर से गाय को दुहाऊँगा। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं? । ४ क्या कहूँ, चरवाहे (पशु चराने वाले) ने अपने पशुओं को ढीला छोड़ दिया है और मेरा शरीर रूपी (छोटा) बकरा गीदड़ के हाथ लग गया है। आपने तो कहा है कि मैं बकरे से गीदड़ को खिलाऊँगा, हे हरिहर! तब मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं? । ५ मैं किसे (यह दुःख) कहूँ। आप ही तो मेरे सुनने वाले हैं। यह आपका लोक-रूपी शिशु (पुत्र) रो रहा है। आप ही तो इसके पिता हैं। आप तो (अपनी संतान को लुक-छिपकर) दूध पिलाने के लिए प्रसिद्ध हैं। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे है? । ६ मैं आपके दर्शनों की ख़ातिर कितना उदास हूँ! (और फिर) जो आपके भक्त है वे उदास क्यों न हों? (आपका यह भक्त) प्रह्लाद की तरह आँसुओं के बदले रक्त बहा रहा है। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं? । ७

सु कस वनि यॆम्य नु वॊन पनुनिस मनस ज़ात ।
वु छुस खोच्रान तॅमिस लोंगमुत परुद्य गात ॥
तवय कर छुस अमिस निश सीर बावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ ८ ॥

यि कांसिद मन दपुस अन ख़त किताबत ।
यॆत्युक तोंत या तत्युक योंत अनि शेंछ कथ ॥
करन अथ गोश तु ख्यथ च्यथ ओंश छु त्रावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ ९ ॥

अॅमिस ज़िमु आंस कांमाह ख़त च्रे निश न्युन ।
यि मा गव ख़त रॅटिथ बन्दुत च्रटित ह्युन ॥
अॅकिस कथि हथ पनुनि छुस सिलु नावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ १० ॥

वु रटुनावन गॅजिम तन छुम यि कूह मन ।
ग्रज़न सुह ज़न दज़न छम नारुह हन हन ॥
दज़न छुम वर रज़न रूदन तु वावन ।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन ॥ ११ ॥

वह भला (अपना दुःख) किससे कहे जिसका मन ही साथ न दे रहा हो। मुझे डर है कि मेरा मन भी परायी ठौर पकड़ रहा है (वेक़ावू होता जा रहा है) इसीलिए मैं उसपर अपने रहस्य प्रकट नहीं कर रहा हूँ। हे हरिहर ! तव आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं? । ८ मैंने अपने मन रूपी क़ासिद (पत्रवाहक) से ख़त-कितावत करने (समाचार लाने-लेजाने) को कहा था, ताकि यहाँ की खवर उधर और वहाँ की इधर आ जाती। मगर वह वात को टालकर खाने-पीने में और (कृत्रिम) आँसू वहाने में लग गया। हे हरिहर ! तव आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं? । ९ इस (मन) के ज़िम्मे एक काम रखा था कि वह मेरा ख़त लेकर आप तक पहुँचाये। मगर वह ख़त को लेकर आपके और मेरे सम्वंधों को तोड़ने लगा। एक बात में उसने अपनी ओर से सौ वातें मिला दीं। हे हरिहर ! तव आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं? । १० मैं इसे (मन को) पकड़वाऊँगा। मेरा तन इसी अविश्वासी मन के कारण गलता जा रहा है। मेरे चारों ओर जैसे शेर गर्ज रहे है और मेरा अंग-अंग अग्नि में झुलस रहा है। मेरी (शरीर रूपी) रस्सी की ऐंठन (शक्ति) वर्षा और प्रभंजन के कारण

बु छुस जंगल रंटिथ ओंन राखिसव ग्यूर।
वुछिव सा वोंन्य यि बद मन कोर कुन फ्यूर॥
तिछुय गथ छय छु हंसितिस मोंह् पावन।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन॥ १२॥

यि मन ज़ानी तिथुय लांगित वोंपर गाथ।
ओंगजि सुतिन करान दोंन परबतन वाठ॥
बेंहन अदुह अन्दु योंततााम मन्दुह छावन।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन॥ १३॥

यि मन कति छुय पथर कुनि पर्‌य थावन।
छु मुच़ुरन मोंहरु वासन वांगुरावन॥
खरस सुन्द मांछ ह्यु ख्यावन तु चावन।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन॥ १४॥

न छस रातस नेंन्दुर न छुस दोंहस कार।
च़लन दरुयाव ह्यु लब तशनु कुनि तार॥
शिन्याहस प्यठ यि छुय बस्ती बसावन।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन॥ १५॥

क्षीण हो रही है। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं?। ११ मैंने जंगल की शरण ले रखी है और राक्षसों ने मुझे दुविधा में डाल दिया है। और देखिए, यह मेरा बद (दुष्ट) मन किस ओर फिर रहा है। आपकी गति तो ऐसी है कि आप मच्छर के भेस में हाथी तक को पछाड़ देते हैं। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं?। १२ यह मन पराया भेस धारण कर (बेकाबू होकर) दो पर्वतों को उंगली से मिला देता है—(उन्हें आपस में भिड़ा देता है।) और खुद दूर-दूर बैठकर तमाशा देखता है। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं?। १३ यह (मन) कहीं एक स्थान पर कहाँ टिका रहता है। यह सबको मूर्ख बनाता है और तरह-तरह की वासनाओं को जन्म देता है। गधे की तरह मधु को खाये-पिये जाता है। हे हरिहर! आप भी मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं?। १४ यह (मन) न रात को नींद लेता है और न दिन में ही कुछ करता है। बस, दरिया की भाँति प्रवाहित होता है और उसको पार करना मुश्किल हो जाता है। शून्य में वह अपनी बस्ती बसाता है। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं?। १५ यह रात-दिन न जाने कितने

दोंहस रातस छु कम कम ज़ाल वोनन।
सुवन कपटन च्रटन वोनन तु वोनन॥
हौंनर कांच्रा छि हेछमुत्र अंम्य हवावन।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन॥ १६॥

च्रटन वाटन यि कर छु कांसि हुंज़ कांम।
यि छुय नौंशि वनु नावन हशि कुन जांम॥
पखन प्यठ वुफ नखन प्यठ शुर छु रावन।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन॥ १७॥

अमा येंलि सुतरुह खांरन खुर छु कासन।
ह्यद वनु नांव्य पोंफन पेंचिन्यन त मासन॥
दियि मेंतरुथ कंरिथ कुक्चल्यन तु कावन।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन॥ १८॥

यनु यन्दुराज़ु डोंल गोतम रेंशुन गव।
तनु प्यठु च्रंदुरमस, च्रामुत सोंनस ज़व॥

जाल बुनता-उधेड़ता रहता है। तराशता रहता है, काटता एवं बुनता रहता है। इस सूक्ष्म पदार्थ ने कितने ही हुनर सीखे हैं। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं? । १६ यह (मन) तो काम काटता (बिगाड़ता) ही है। उन्हें जोड़ता (बनाता) कब है? यह तो वधू को सास व ननद के प्रति उकसाता है। इसके पंख सदैव फड़कते रहते हैं और मालूम ही नहीं पड़ता कि यह कब भाग जाता है। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं? । १७ (समय पड़ने पर मीठा बोलता है) और फूफी, चाची और मौसी को भी माँ-माँ कहकर यह अपने उलझे हुए कार्यों को सुलझा देता है। (इसी मीठी बोली से) यह कोकिल और कौए तक में मित्रता करा देता है। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे है? । १८ जब देवराज इन्द्र का मन डोल गया और वह गौतम ऋषि के यहाँ गया, तभी से (बेचारे) चन्द्रमा का सुनहरा बदन ज़ंग खा गया (उसपर धब्बा लग गया)। और क्या कहूँ। यह सब इस (सीमाब की तरह चंचल) मन की करतूत है। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं? । १९ हे हरिहर! अब आप स्वयं आ जाइए और मेरा मन साफ़ कर दीजिए। बस, ऐसा कीजिए जैसा श्रावण की धूप बर्फ़ के साथ करती है। इस (मन) पर जो अवांछित पर उगे हैं, उन्हें काट दीजिए। इन्हीं से यह

वनय क्याह कौरुम यॆम्य सीमाब खावन।
हरी हरुह कोनु छुख दरशुन मे हावन॥ १९॥

सदाशिवु पानु यिम यौत मन करुम साफ़।
करुस शीनस करान यि श्रावनुन ताफ॥
च्रटुस यिम पर वौंपर छुम लरि सावन।
हरी हरुह कोनु छुख मे दरशुन हावन॥ २०॥

वुछन लूसिम नैथुर यौत यिख परबातन।
गौवुय क्याह च्रेर वुनि छुख कोनु वातन॥
मे छम यी आश यिख प्रकाश त्रावन।
हरी हरुह कोनु छुख मे दरशुन हावन॥ २१॥

कीकी हुन्द ज़ार पारु तु बरथस खाव दिन्य

गंयस कीकी बरुथ हुचथ बॆयि वन्यानस।
वौंदुन त्युथ युथ छु रंग फमवारुह आबस॥
गंयस कीकी तौंतुय वौंनुनस स्यठाह ज़ार।
मे बख़्शुम यंच्र गंयस पापन गिरफ़्तार॥
ख़बर कॆंह छम नु वन्य क्याह वनु दयस बो।
करुन तस ओस यी पांप्य गंयस बो॥
ख़बर कॆंह छम नु यथ बोज़नु क्याह आम।
सपुन दिल सोख़्तु बाज़ा पौंख़्ता गव ख़ाम॥

मुझे पतित करता है। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं?। २० आप प्रभात-वेला में पधारेंगे, आपको देखते-देखते मेरे नेत्र मुरझा गए। आपको न जाने देरी क्यों हो गई और अभी तक आप पधारे क्यों नहीं? मुझे यही आशा है कि आप प्रकाश फैलाते हुए ज़रूर आयेंगे। हे हरिहर! तब आप मुझे भी दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं?। २१

कैकेयी की अनुनय-विनय और भरत को खड़ाऊँ देना

भरत को साथ लेकर कैकेयी ने (रामचन्द्र जी से) ख़ूब कहा और ऐसे रोने लगी जैसे पानी का फ़ुहारा फूटता है। कैकेयी उनके पास जाकर ख़ूब अनुनय-विनय करने लगी—मुझे बख़्शिए, मैं पापों में बुरी तरह गिरफ़्तार हो गई हूँ। मुझे कुछ भी ख़बर (सूझता) नहीं है कि भगवान् के पास जाकर क्या कहूँगी (क्या मुँह दिखाऊँगी)। उसे ऐसा ही करना था जो मैं पापिन बन गई।

दिच्हुम पानय बंरिथ गर्दन व शमशेर ।
दोंपुम पानय ज़ुवस पनुनिस न्यवर नेर ॥ ५ ॥
दपन छस वोंन्य ज़मीनस तल गंछ्हुम जाये ।
छसय पालुन्य च्हुह कंछ्हा वन्य करुम पाये ॥
वोंथुम थोंद पोशि थंर छस वरुह गांमुच्ह ।
वुछन छुखना वु ज़न आकाशि प्येमुच्ह ॥
असन दोंपनस च्हुह गछ्ह छख म्यांन्य माता ।
कुनुय ल्युख क्याह च्हुह कीकी क्याह कोंशल्या ॥
च्हुह कंह दोंख बंरिज़ि नु यंमि च्हलनु साने ।
दपन यी ल्यूखमुत ओस करमु लाने ॥
च्हुह योंत तान ज़िन्दु छख तोंत तान्य छम माये ।
मंरिथ आसी च्हे वयकोंठस अन्दर जाये ॥ १० ॥

विलाप

शामुरूपु रामुच्हंदुरु लांजिथस पामन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ॥

मुझे कुछ भी खबर न रही, कुछ भी दिखाई न दिया । मेरा दिल अब सोख्ता (विदग्ध) हो गया है और भरी-पूरी बाजी हाथ से निकल गई है । मैंने स्वयं अपनी गर्दन पर शमशेर चलाई और स्वयं अपने प्राणों को बाहर निकलने के लिए कहा । ५ बस, अब यही चाहती हूँ कि इस जमीन के नीचे समा जाऊँ । अब आप ही मुझे पाल (उद्धार कर) सकते हैं, इसके लिए आपको कोई उपाय करना होगा । उठिए, मैं शाख से कटी कली के समान हो गई हूँ । आप देख नहीं रहे हैं, मैं जैसे आकाश से नीचे गिर गई हूँ । (इसपर रामचन्द्र जी ने) मुस्कराते हुए कहा—आप लौट जाइए, आप तो मेरी माता हैं । मेरे लिए क्या कैकेयी और क्या कौशल्या, दोनों एक ही हैं । आप हमारी इस कठोर तपस्या (सहनशीलता) को देख मन में कोई दुःख न करना—हमारे कर्म-लेख में यही तो लिखा था । आप जब तक ज़िन्दा रहेंगी तब तक मुझे आप पर प्रीति रहेगी और मरने के बाद आपकी जगह वैकुंठ में होगी । १०

विलाप

हे श्याम-रूप रामचन्द्र ! आपने मुझे यह किन उलाहनों के लिए छोड़ दिया । मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है । आपकी दूरी अब

दूर्यर चोन वोन्य बु छस न ज्ञालन ।
ललुवुन थोंवथम ज़लु वुन नार ॥
छारुनि द्रायि सय शहरन तु गामन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ॥ १ ॥

ऋानि बो द्रायस ब्रह्मतींत छारन ।
मायायि पुछ्ठि कवुह गंयस बदनाम ॥
पामन लांजिथस तु लगयो नामन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ॥ २ ॥

पानु छु रामुजुव ईशर आसन ।
लंखिमन शंखि चंकुर बासांनी ॥
शतुरगुन बरथजी गंदादर आसन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ॥ ३ ॥

तसन्दी तीज़ुह सोर अगन्यान गालुन ।
मूहु मायि अगन्यानु दूर युस गव ॥
सन्तान असि ज़ाख तु सीर छुख नु बावन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ॥ ४ ॥

रामचंन्दुरु लगयो सहसरुह नामन ।
चें रोंस जांह मे छुम नु मोंकलन पाय ॥

मैं सहन नहीं कर सकती हूँ । आपने तो मुझे भड़कती विरहाग्नि में धकेल दिया है । मैं आपको ढूँढने के लिए शहरो और गाँवों में निकल पड़ी—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है । १ मैं घर से ब्रह्म-स्तुति के लिए निकल पड़ी थी, मगर माया के कारण बदनाम हो गई । बलिहारी जाऊँ नाम पर ! आपने मुझे उलाहने सहने के लिए छोड़ दिया—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है । २ आप (रामचन्द्रजी) तो स्वयं ईश्वर है । लक्ष्मण शंख और चक्र के समान हैं तथा शत्रुघ्न व भरत जी गदाधारी के समान हैं—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है । ३ आपके तेज से सारा अज्ञान गल सकता है और मोह-माया व अविद्या को दूर किया जा सकता है । आप तो हमारी ही सन्तान हैं (हमारे यहाँ जन्म लिया है) मगर फिर भी अपना रहस्य प्रकट नहीं कर रहे हैं—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है । ४ हे रामचन्द्र जी ! आपके सहस्रनामों पर वलिहारी जाऊँ । आपके विना मेरा कभी निस्तार नहीं हो सकता है । आ, इच्छापूर्वक (भावमग्न होकर) आपको दूध पिलाऊँ—मुझे तो

यंछिह सुत्य दिमयो दौंद च्रे दामन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ।। ५ ।।

रावनु सुंज़िह वेरि ज़नम आख दारन ।
बूमि बार कासुनि आमुत च्रुय ।।
लंखिमी छि सीता लंखिमन छु वाहन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ।। ६ ।।

दयि नाव टोठ छुय स्यदन तु सादन ।
रामुजुव वौंन्य ख़ोश आसतम चुय ।।
रोज़तम सहा छम मे मुहरु वासन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ।। ७ ।।

मौंक्तु मालु मुकुठी शेर छी आसन ।
सारिनी आवरन वासांनी ।।
परज़लु वुनि असि कोनु अनिगौंट कासन ।
कामन छम चांनि दरशनु ची ।। ८ ।।

तौंता कीकी गरिह गरिह बासन ।
वौंन्दुह दोद छुम नो कासांनी ।।
शिवुहजी छुय ना च्रे सुत्य सुत्य आसन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ।। ९ ।।

बस, आपके दर्शनों की कामना है। ५ आपने रावण की ख़ातिर यह जन्म धारण कर लिया और भूमि के भार को सहने के लिए आप आये। सीताजी लक्ष्मी हैं और लक्ष्मण जी वाहन हैं—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है। ६ आपका महिमाशाली नाम सिद्धों को, साधुओं को (अतीव) प्रिय है। हे रामचन्द्रजी ! अब आप मुझ पर ख़ुश हो जाइए। मेरे सहायक बनिए, मुझे आपका ही भरोसा है—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है। ७ आपके सिर पर मुक्ताओं की मालाओं से युक्त मुकुट रहता था और सभी तरह के आभूषण (आभरण) रहते थे। हे प्रज्वलित होनेवाले (देदीप्यमान)! आप हमारा भी अन्धेरा दूर क्यों नहीं कर रहे है? मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है। ८ कैकेयी तो बार-बार आपकी स्तुति कर रही है, फिर भी आप उसके हृदय का दर्द दूर नहीं कर रहे हैं। शिव जी भी आपके साथ-साथ रहते हैं—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है। ९ दशरथ ने कश्यप के रूप में जन्म लिया था और कौशल्या ने अदिति के रूप में। (आप) जब सीता को वरण करने गये तो उसे भी ऐसा ही लग रहा था—मुझे तो बस,

जनमस दशरथ कशफ ओस आसन ।
कौशल्या छ अदिती आसानी ॥
सीतायि वरुनि आख तस ति ओस बासन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ॥ १० ॥

रामुनाव छुय सारी वौन्दु दाद्य कासन ।
गटि मंज़ बाग गाश बासानी ॥
समसार सोरुय भ्रम छुय आसन ।
कामन छम चानि दरशुन ची ॥ ११ ॥

विलु ज़ार वनान शेर त्रावुह पादन ।
आदनु असि ज़ाख जान सन्तान ॥
पादन मन वन्दुयो लगयो नादन ।
कामन छम चानि दरशनु ची ॥ १२ ॥

रुच़ुह रुच़ुह कामि चानि करु वुनि आसन ।
मंज़ बाग वौन्दस च़ुय बासानी ॥
प्रकाश प्रथ जायि च़ुय छुख आसन ।
कामन छम चानि दरशुन ची ॥ १३ ॥

तसुंज़ लीला स्यठा येलि पानु बूज़ुन ।
करुन खोश खोश करिथ फीरिथ सो सूज़ुन ॥
तसली कोरुन बरथस गरुह सूज़ुन ।
अथस क्यथ खाव दिच़ुनस तिन यि बूज़ुन ॥

आपके दर्शनों की कामना है।१० रामनाम से दिल के सभी दर्द दूर हो जाते हैं और अन्धेरे में प्रकाश दिखने लग जाता है। यह सारा संसार एक भ्रम है—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है।११ मैं अनुनय-विनय कर आपके चरणों में यह सिर झुकती हूं। आप ही तो हमारे (कुटुम्ब में) एक अच्छी सन्तान हुए हैं—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है।१२ आपको तो अच्छे-अच्छे काम करने हैं। सभी के दिलों में आप ही वास कर रहे हैं। आप ही हर स्थान पर, प्रकाश के समान व्याप्त हैं—मुझे तो बस, आपके दर्शनों की कामना है।१३

। उसकी (कैकेयी की) प्रार्थना जब उन्होंने (रामचन्द्र जी ने) सुनी

दिलासा दिथ वरुथ सूज़ुन वख़ाना ।
अथस क्यथ ख़ाव दिथ कौरनस वन्दाना ॥
कंरुन यंच़काल तामत ख़ाव राजे ।
रंछिन ज़न ज़ुव पनुन तमि वोरुह माजे ॥
दपन यैलि रामुज़ुव आवारुह सांपनुन ।
वनुनि लोंग ग्राव मनुची लंखिमनस कुन ॥ ५ ॥

दपन यैलि तिम ज़ु वारुन्य गंयि वोंदासी ।
अकिस अख सथ करान बोंनु तिम ज़ुह आंसी ॥
प्रखुट तस राज़ुह श्रादुकि दोंह यिवान ओस ।
परव ह्यथ सुत्य तंमिस आप्या दिवान ओस ॥
दोंहा अख सांपनुन दितुनस नु दरशुन ।
खंच़ुस च़ख यमु राज़स क़हर सांपनुन ॥
योंदस गव तीर ह्यथ तखिकस हेंतिन प्रान ।
कंरुन तंम्य दरमु राज़ुन्य कांम आसान ॥
तमी दोंह पेंतरुह लोकुक सोंथ गंडिथ आव ।
पेंतर डीशिथ क्रेया करमुच गंडुन नाव ॥ १० ॥

तो उसे ख़ुशी-ख़ुशी वापस भेज दिया। भरत को भी तसल्ली देकर घर भेज दिया और उसके हाथों में (अपनी) खड़ाऊँ रखकर उसे गले से लगा लिया। इस खड़ाऊँ ने काफ़ी समय राज्य किया और (भरत व) सौतेली माँ (कैकेयी) ने इसकी रक्षा अपने प्राणों से भी अधिक की। कहते हैं (भरत, कैकेयी आदि के चले जाने पर) रामचन्द्र जी खिन्न-मन हो गए और अपने मन की वात लक्ष्मण से कहने लगे। ५
दोनों भाई वहुत उदास हो गए और (अम्वर के नीचे) एक दूसरे को सान्त्वना देने लगे। राजा (दशरथ) नित्य श्राद्ध के दिन हाथों में सकोरा लेकर उनको दर्शन देते थे और वे (रामचन्द्र जी) उन्हें पिण्ड-दान करते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि उन्होंने दर्शन नहीं दिया। (फलस्वरूप) उन्हें (रामचन्द्र जी को) गुस्सा आ गया जो व्यवधान डालने वाले के लिए क़हर वन गया। वे तीर-कमान लेकर युद्ध करने को निकले और उस अधमी (जिसकी वजह से व्यवधान पड़ गया था) के प्राण निकाल लिये। और इस तरह उन्होंने धर्मराज के लिए भी काम आसान बना दिया। उसी दिन से पितरलोक को सेतु से बाँध दिया और पितरों को देख क्रिया-कर्म रूपी नैया का प्रविधान किया। १०

अहल्यायि हुन्द कुस

अहल्या शापु निशि यैलि मौकु लांवुन ।
पुनम च्चन्दुरमु हिछ सीतायि हांवुन ॥
ख़बर छय ना तमिस क्याह पाप ओसुय ।
शरन सांपनुन्य दयन तस शाप कोसुय ॥
र्‌योशा अख गोतम आंसिस दपन नाव ।
दपन तस ओस ईशरुह सुन्द स्यठाह बाव ॥
त्रिया आंसुस प्रज़लुवुन्य माहि ताबान ।
करान सीवा रैशिस गंज़रान नारान ॥
करान तपस्या तपीशरुनी बौविन जय ।
दौहस रातस सौरांनी आंस्य तिम दय ॥ ५ ॥

प्रेम रैशिसुंद स्यठाह तस अहल्याये ।
वनस मंज़ बाग पुरिथ बुरज़ु काये ॥
दपन दौह अकि वोल यन्दुराज़ुह कामन ।
सपुन देवानु कर्‌य तम्य चाक जामन ॥
यन्दुरुह पदवी निश यैलि द्राव लारन ।
अंछिव किन्य ओस सु वाराह रथ हारन ॥

अहल्या का क़िस्सा

अहल्या को शाप से मुक्त करने के बाद (रामचन्द्र जी ने) उसे पूनमचन्द्र के समान अपनी सीता को दिखाया—तुझे नहीं ख़बर कि इसका पाप क्या था ? यह भगवान् के शरण में गई और इसका शाप दूर हो गया। एक ऋषि था, जिसका नाम, कहा जाता है, गौतम था। कहते हैं उस पर ईश्वर की असीस कृपा थी। उसकी त्रिया (पत्नी) माहताब (चाँद) के समान चमकीली थी। वह अपने ऋषि की (ख़ूब) सेवा करती थी और उसे ही अपना नारायण समझती थी। वे तपीश्वर (ख़ूब) तपस्या किया करते थे, उनकी जय-जयकार हो। दिन-रात वे भगवान को ही स्मरण किया करते थे। ५ अहल्या को उस ऋषि के साथ बहुत प्रेम था और दोनों वन में भोजपत्र धारण किये रहते थे। कहते हैं एक दिन इन्द्र को काम ने अन्धा कर दिया और वह (अहल्या के लिए) दीवाना हो उठा तथा उसने अपने वस्त्र चाक कर डाले। वह अपने सिंहासन को छोड़ कर चला आया, उसकी आँखों से ख़ून के कतरे गिर रहे थे। वन में

वनस मंज़ वोत तंम्य तति लोग स्युथ सांग ।
कौकुर लागिथ अर्दह रातस दिच्चुन वांग ॥
यि ऋख येलि कौकर सुंज़ रेशय बूज़ पानस ।
गंडवु ह्यथ वोथ नंदियि प्यठ द्राव श्रानस ॥ १० ॥

वनुनि लोग यन्दुर वोन्य यथ क्याह छु चारुह ।
दपन तंम्य दोर रेशय सुन्द रूफ़ वारुह ॥
पकान ता रेशयसुंदिस डेरस अन्दर गव ।
नदी लंज्य तस रेशिस वनुने यि क्याह गव ॥
च्रुह कवहु गोख अर्दुह रातन आरु क्रोंतुय ।
यन्दुर पतिक्रित्य गरस मंज़बाग वोतुय ॥
ति बूज़िथ र्‌योश नंदियि प्यठ आव लारन ।
वुछुन यन्दुराज़ु गोमुत ह्युरुह कारन ॥
द्युतुन तस शाफ यन्दुराज़स कोरुन क्रूद ।
बगन हुन्द पान सापनुन तस तिथय जूद ॥ १५ ॥

यन्दुराज़ु गव महादीवस निशि परन प्योस ।
करुन ज़ारी महादीव पानु टोठ्योस ॥
द्युतुन तस वर च्रे गछिनय नेथर पानस ।
सपुन दिलखोश शरन गव नारानस ॥

पहुँचकर उसने एक स्वाँग रचाया और स्वयं मुर्गा बनकर अर्द्धरात्रि को बांग दे दी। कुक्कड़ की यह आवाज जब ऋषि ने सुनी तो वह लोटा लेकर नदी पर नहाने धोने के लिए चल दिया। १० तब इन्द्र सोचने लगा कि अब ऐसा करने में कोई चारा नहीं रहा (रास्ता साफ़ है)। उसने हू-ब-हू ऋषि का रूप धारण कर लिया और वह ऋषि के डेरे के अन्दर गया। (इधर) नदी ऋषि से कहने लगी—तू आज अर्द्धरात्रि में ही कैसे जागकर आ गया। पीछे से इन्द्र तेरे घर में घुस गया है। यह सुनकर ऋषि वापस लौट आया और उसने इन्द्र को शंकित अवस्था में पाया। तब उस (गौतम) ने क्रुद्ध होकर उसे शाप दे दिया—तेरा शरीर भगों का बन जाये और उसमें उन्हीं की तरह छेद हो जायें। १५ तब इन्द्रराज महादेव के पास गये और उन्हें प्रणाम किया। काफ़ी अनुनय-विनय के बाद महादेव उन पर प्रसन्न हो गए और यह वर दे दिया कि तुम्हारे शरीर पर नेत्र बन जाएँ (और इस प्रकार) उनका दिल खुश हो गया और वे नारायण की शरण में गए। कहते हैं, अहल्या खूब रोने लगी और उसे (पति ने) यह शाप

दपन वाराह वदुनि लंज्य ना अहल्या ।
द्युतुस तंम्य शाफ गछ सापनन ज़ुह शिला ॥
पतो येलि राम् जुव तोत वाति पानय ।
करी सुय ज़िन्दुह तेलि चलिनय च़े होनी ॥
गरज़ येलि राम् लखिमन ब्येयि सो सीता ।
पकन तथ जायि गयि डीठुक सो शिला ॥ २० ॥
तसुन्दि अथु सुत्य वथिथ थोद गयि शिला ।
करुनि लंज्य राम-अवतारस यि लीला ॥ २१ ॥

लीला

मंशरिथ मोल मोज मंशरिथ च़े सारी ।
राम् जुव् लगय पार्‌य पारिये ॥
मछुह रूपु येलि आख क्रिमु अवतारी ।
अमर्‌यथ ज़ल सपुन ज़ारिये ॥
वुतु राथ खारथन वराहु अवतारी ।
रामुचन्दुरुह लगय पार्‌य पारिये ॥ १ ॥

हरिन्य कशफ क्याह ओस बोड़ अहंकारी ।
प्रह्लाद करुनि लोग ज़ारिये ॥

दिया कि तू शिला बन जा और जब रामचन्द्र जी स्वयं (तेरे) पास पहुँचेंगे तो वही तुझे ज़िन्दा करेंगे और तेरा बन्धन दूर हो जायेगा। गरज़ यह, कि जब राम-लक्ष्मण और वह सीता चलते गये और उस शिला को एक स्थान पर देखा। २० (रामचन्द्र जी के स्पर्श से) वह शिला उठ खड़ी हुई और रामावतार की स्तुति करने लगी। २१

लीला

माता-पिता को भुलाया, सबको भुलाया। हे राम जी! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ। जब मछली के रूप में मत्स्यावतार धारणकर आप आये, तो (चारों ओर) अमृत-रस का संचार हो गया। भूमण्डल को (आपने ही) वाराह अवतार के रूप में उबारा—हे राम जी! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ। १ हिरण्यकशिपु तो कितना बड़ा अहंकारी था। प्रह्लाद ने जब प्रार्थना की तो हे निराकारी! तत्काल

नरसिंह दोरुथ च्रे न्यराकारी ।
रामुच्रन्दुरुह लगय पा़र्य पा़रिये ॥ २ ॥

बलिदानवस आख वामनु अवता़री ।
बुतरा़त्र तल गव सु सोरुये ॥
वो़तपत चा़नी च्रो़वा पा़री ।
रामुच्रन्दुरुह लगय पा़र्य पा़रिये ॥ ३ ॥

बारगो राम यो़लि आख अवता़री ।
खा़ली सपुन्य तीरुह ना़रिये ॥
तं़म्य तीरुह सुत्य कुत्य खंतुर्य मा़री ।
रामुच्रन्दुरुह लगय पा़र्य पा़रिये ॥ ४ ॥

च्रुय छुख च्रो़तुरवो़ज़ च्रराच्रा़री ।
च्रुय छुख आसुवुन सा़रिये ॥
च्रुय आख कामुदीवुह रामु-अवता़री ।
रामुच्रन्दुरह लगय पा़र्य पा़रिये ॥ ५ ॥

कृश्नु रूपु यो़लि आख परवो़पका़री ।
गोकुलुक्य मो़ख्त गं़यि सा़रिये ॥

आपने नृसिंह अवतार धारण कर लिया—हे रामजी ! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ । २ बलि दानव के लिए आप वामन अवतार के रूप में आये और वह सारा का सारा भूमि के नीचे चला गया । आपकी ही माया चारों ओर व्याप्त है—हे रामजी ! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ । ३ जब भार्गव राम के रूप में आपने अवतार लिया तो तरकश के सारे तीर ख़ाली किये, उन तीरों से कितने ही क्षत्रिय मर गये—हे रामजी ! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ । ४ चर-अचर में निवास करनेवाले चतुर्भुज के अवतार आप हैं तथा सब कहीं समानेवाले भी आप ही है । हे कामदेव ! राम के रूप में आपने ही अवतार धारण किया—हे रामजी ! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ । ५ कृष्ण रूप धारणकर हे परोपकारी ! आप आये तो समस्त गोकुलवासी मुक्त हो गये और कंसासुर का संहार हो गया—हे रामजी ! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ । ६ बुद्ध अवतार के रूप में आप निद्रा-मग्न हो गये और जब कलियुग के लोग (पापों में) गिरफ़्तार हो जायेंगे

कमसा सौंर सांपनुन समहारी ।
रामुचन्द्रुरुह लगय पार्‌य पांरिये ॥ ६ ॥

नेन्दुर लांजिथ बौदुह अवतांरी ।
कलि यौगंक्य गछ़न गिरफ़्तांरिये ॥
दरशुन करनि यिन दीवता सांरी ।
रामुचन्द्रुरुह लगय पार्‌य पांरिये ॥ ७ ॥

गारिगीर् दांरिथ चराचांरी ।
सोरुय सांपनुनि समहारिये ॥
मौंकु लावुहख तिम ति नरकुनि नांरी ।
रामुचन्द्रुरुह लगय पार्‌य पांरिये ॥ ८ ॥

दिमुहय लोलुफल खेंन्य चांर्‌य चांरी ।
गंडुहय़ जामु ज़र कांरिये ॥
वन्दुहय ज़ुव कासतम लाचांरी ।
रामुचन्द्रुरुह लगय पार्‌य पांरिये ॥ ९ ॥

मनि गाल राख्युस तु चलि द्यव खांरी ।
सीनु ज़ोलथम लोलु नांरिये ॥
प्रकाश गाश अन चौंवा पांरिये ।
रामुचन्द्रुरुह लगय पार्‌य पांरिये ॥ १० ॥

तो देवताओं समेत वे आपके दर्शन करने के लिए आयेंगे—हे रामजी ! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ । ७ कल्कि अवतार धारण कर सारे चर-अचर पदार्थों का संहार होने पर आप ही सभी को नरकाग्नि से मुक्त कर देंगे—हे रामजी ! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ । ८ मैं आपको खाने के लिए भक्ति रूपी फल दे दूँगी और पहनने के लिए सोने के वस्त्र बाँधूँगी । आप पर यह जान निछावर करूँ । हे रामजी ! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ । ९ मेरे मन से (कुवासना रूपी) राक्षस को गला दीजिए, मेरा सीना आपकी भक्ति में दहक रहा है । चारों ओर प्रकाश को विकीर्ण कर दीजिए हे रामजी ! आप पर बलिहारी जाऊँ, बलिहारी जाऊँ । १०

अरन्य कांड

अगस्त डचूठुन तमिस निश व्यूठ यंत्रकाल ।
प्रछुन तस तम्य वोनुस सोरुय पनुन हाल ।।
वुछुख तथ परवतस प्यठ जानुवाराह ।
दोपुन लखिमन जुवस यथ क्याह छु चाराह ।।
तुलुन तरकश दोपुन तामथ दिमस तीर ।
तिथय तस जानुवारस वासना फीर ।।
बज़ारी आस पादन तल परन प्योस ।
दपन सुय जानुवार यागर पंछिन ओस ।।
जटायुन नाव ओसुस खोश तिमन आव ।
ह्योतुक पानस सूतिन कोरहस स्यठाह बाव ।। ५ ।।

पकन गय आस्य लोत लोत पूर्य त्रावन ।
लबन यथ जायि ज़ल तति पान नावन ।।
वुछन दयि गथ स्यठाह यंत्र आस्य तोशन ।
थवन आस्य मुश्कु बंर्य बंर्य सारी पोशन ।।
पकन येमि वति गछ्न तति पोशि व्रांगी ।
ख्यवन येति केंह वुज़न तति नागु रांदी ।।

अरण्यकाण्ड

(वे तीनों आगे बढ़े और) अगस्त्य (ऋषि) को देखा तथा उसके पास काफ़ी समय तक बैठे। उससे हाल पूछा और उसने अपना सारा हाल बताया। उन्होंने (पास के) परवत पर एक विचित्र पक्षी को देखा। तब (रामचन्द्र जी ने) लक्ष्मण से कहा कि उसका अन्त करने के सिवा अब और कोई चारा नहीं रहा। जैसे ही उन्होंने तीर चलाने के लिए तरकश उठाया वैसे ही उस पक्षी की प्रकृति बदल गई। बड़ी विनम्रता के साथ उसने (रामचन्द्रजी के) चरणों में प्रणाम किया। कहते हैं, वह पक्षी एक गिद्ध था। जटायु उसका नाम था जिसे देख कर (रामचन्द्रजी) बहुत खुश हुए। उसे (वे) अपने साथ ले गए और उसपर प्रेम बरसाया। ५ वे धीरे-धीरे क़दम बढ़ाते हुए चलते गए। जहाँ पर पानी दिखता वहाँ पर अपनी देह साफ़ करते। दैव की लीला (प्राकृतिक सौन्दर्य) देख-देखकर वे बहुत प्रसन्न होते।

दिवान वंन्य संन्य वौंगुन्य तति पोशि बाग़न ।
छ सीता रामुचन्दुरस पोश लागन ।।
दौंहि अकि गंयि तमिस निशि पथ ह्वावा ।
वुछन सीतायि निशि गव पादुह् कावा ।। १० ।।
द्युतुस तंम्य रामुचन्दुरन दरबि ह्नन्द तीर ।
चलिथ गव वुनि छस चलुनस कुनुय ज़ीर ।।
समय छु क्रूठ क्रेंछर आसि चालुन ।
ति आस्यस राखिसन ह्नन्द ब्योल गालुन ।।
कौंरुख येलि साविदान समसार ह्रन ह्रन ।
बौंरुख आनंद येलि ड्यूठुक डंडक वंन ।।
तपीश्वर रेंश्य स्यठाह् तति आंस्य आसन ।
तिमय यिम सारिनुय खुर आंस्य कासन ।। १४ ।।

शूपनखि सज़ा द्युन

रेंशव वोंन तति तिमव येलि आशरम थोंव ।
चयतस थाव प्रोन पथकुन वोज़ वौंन्य नोंव ।।

जिधर-जिधर से वे गुज़रते, उधर-उधर फूलों के बाग़ खिल जाते तथा उनमें विपुल सुगंध (राशि) भर जाती। जहाँ पर (बैठकर) कुछ खाते वहाँ पर झरने फूट पड़ते। (इस प्रकार) वे फूलों के इन बाग़ों में विहार करते व घूमते। एक दिन सीताजी रामचन्द्रजी को फूल लगा रही थीं कि वह कुछ पीछे हटी और उन्होंने (रामचन्द्रजी ने) देखा कि सीता के सामने एक कौवा पैदा हो गया है। १० तब रामचन्द्रजी ने कुश का एक तीर उसपर चलाया और वह (कौआ) उड़ चला, तथा उड़ता ही गया। कुछ अशुभ जानकर रामचन्द्रजी कहने लगे—आनेवाला समय बड़ा ही कठिन होगा और हमें वह सब सहना होगा। राक्षसों का बीज समाप्त करना होगा। इस प्रकार संसार को रहस्यमय लीला-क्षेत्र समझ कर वे आगे बढ़ते गए। वे उस समय बहुत आनंदित हुए, जब उन्होंने दण्डक वन देखा। वहाँ पर ऐसे अनेक तपीश्वर, ऋषि आदि थे जो सभी प्रकार की गुत्थियों को सुलझाने वाले (तत्वज्ञानी) थे। १४

शूर्पणखा को सज़ा देना

तब ऋषियों के कहने पर उन्होंने वहाँ अपना आश्रम बनाया। (इसी के साथ) अब तक जो हो चुका उसे याद कर और नया (आगे की

डंडक वन मंज़ रटुख आखुर बिहिन्य जाये ।
दोह् अकि रांटसा लारन तोतुय आये ।।
वर्यम ना रामुजुव रुत्य वेह् करान आस ।
अमा सीतायि कुन वुछ्य वुछ्य मरान आस ।।
करिथ रुत्य वेह् वुछिथ सीता रोटुन ग़म ।
दोपुन मचुरिथ निमस बरथा दिमस ब्रम ।।
दोपुस तम्य रामुचन्दुरन रछ पनुन दिल ।
दोयुम नेथुर करुन असि निश छु मुश्किल ।। ५ ।।
दोपुस तम्य रामुचन्दुरन लंखिमनस वन ।
योहय बोज़ी योहय थावी कथन कन ।।
वनुनि लंज्य रामुचन्दुरस वारुह वाराह ।
महाराजा चुह कर केंह म्योन चाराह ।।
दोपुस तम्य गछ यिथय पाठ्य हाल बावुस ।
तगी युथ त्युथ लोचर चुह हावुस ।।
वरी योदवय चे लंखिमन तस छु आसान ।
वनीये यछ चुह छख अदुह रछ पनुन पान ।।
ति यां वुज़ लंखिमनन तां कोर नमस्कार ।
दोपुन बायिस अमिस कर यियि मे सुत्य वार ।। १० ।।

कथा) भी सुन । दण्डकवन में उन्होंने आख़िर अपने रहने का एक स्थान चुन लिया । अनन्तर, एक दिन वहाँ पर एक राक्षसी आ निकली । रामचन्द्रजी उसे वरण करें—इसके लिए वह अनेक तरह के उपाय करने लगी । मगर सीता को देख-देखकर वह (भीतर-ही-भीतर) मरने लग गई । सुन्दर रूप धारणकर तथा सीता को ग़मभरी दृष्टि से देखकर उसने कहा कि मैं इस (सीता) को भ्रमित कर पति की याद से विमुख कर दूँगी । तब रामचन्द्रजी ने कहा—जाकर अपने दिल की रक्षा कर । मेरा दूसरा विवाह करना मुश्किल है । ५ रामचन्द्रजी ने (पुनः) कहा—जाकर लक्ष्मण से बात कर । वही तेरी सुनेगा और तेरी बातों पर कान धरेगा । वह रामचन्द्रजी से पुनः धीरे-धीरे अपना हाल कहने लगी—हे महाराज ! मेरा कुछ चारा कीजिए । उन्होंने कहा—जाकर ऐसे ही (लक्ष्मण से) अपना हाल कह और जितना हो सके उतना उसे रिझा । यदि लक्ष्मण तुझे वरण करना चाहे तो यह उसके लिए आसान है और यदि वह समझ गया कि तू यक्षिणी है तब फिर तेरी ख़ैर नहीं है ।

दोंपुस तंम्य लंखिमनन छुय तंबु लावन ।
अपुज़ छय कथ यि छुय वथ रावुरावन ।।
अमिस परवाह छु नु योंदवय वरी च्रे ।
अखा छस योंद तंमिस प्यठ कुन वरी च्रे ।।
च्रुह छुख राज़ा परी योंदवय च्रुह वरहन ।
अखा छय योंद सों त्राविथ ब्याख करहन ।।
ति यां तमि बूज़ वाराह गंयि क्रूदी ।
तसंदि क्रूदु सुतिन दयत मूदी ।।
दोंपुन लंखिमन जुवस कुन बोज़ म्योनुय ।
च्रुह नय बोज़ख बु लागय जूनि ग्रहनुय ।। १५ ।।
त्युतुय बूज़िथ सों रांटस आयि दरजोश ।
दोंपुन लंखिमन जुवस ख़ामोश ख़ामोश ।।
म फिर गर्दन दपान छुय ज़्युठ बरादर ।
च्रे योंदवय बेख़ दोलत छय में सुत्य कर ।।
परी छस कंह नु रुह रांटस न छस पंन्ज़ ।
ग़नीमत ज़ान आवुय दारि किन्य अंन्ज़ ।।

यह बात जैसे ही लक्ष्मण ने सुनी वैसे ही उसने नमस्कार करते हुए भाई से कहा कि इसका मेरे साथ भला कैसे निबाह हो सकता है। १० तब उसने (लक्ष्मण ने उस राक्षसी से) कहा--तुझे (रामचन्द्रजी) भरमा रहे हैं। ऐसा कदापि नहीं हो सकता, वे तो तुझे पथ-भ्रमित कर रहे हैं। (तुझे मेरे पास भेजने में तेरा मज़ाक उड़ाने, का भाव निहित है) उनको कोई परवाह नहीं है। वे चाहें तो तुझे वरण कर सकते हैं। उनके पहले से ही (पत्नी) है और तुम दूसरी हो जाओगी। इसके बाद लक्ष्मण ने उस राक्षसी पर व्यंग्य करते हुए रामचन्द्रजी से कहा—आप राजा हैं, इस परी को आप चाहें तो वरण कर सकते हैं। एक (पत्नी) आपके पास पहले से ही है, उसे त्यागकर दूसरी कर सकते हैं। ऐसे (व्यंग्यपूर्ण) वचन सुनकर वह क्रुद्ध हो उठी और उसके इस क्रोध से (कितने ही) दैत्य मर गए। उसने लक्ष्मणजी से कहा--मेरी बात मान। यदि नहीं मानता है तो मैं चन्द्रमा (सीता) को ग्रहण लगाऊँगी। १५ इतना कहते ही वह राक्षसी जोश में आगई और लक्ष्मणजी से बोली, ख़ामोश ! ख़ामोश ! अब तू अपनी गर्दन न फेर (इन्कार न कर)। ऐसा तेरे बड़े बिरादर भी कहते हैं। तुझे अगर दौलत की अपेक्षा है तो मेरे साथ (विवाह) कर। मैं परी हूँ, राक्षसी या बन्दरी नहीं। तू यह ग़नीमत जान कि तेरी खिड़की पर स्वयं

खटन छि मोंख कथन छि अथु दारन ।
सिरी च्रन्दुरमु तिमन राज़ह कोंमारन ॥
वनुनि लंज्य श्रुपुनख यथ क्याह छु चारुह ।
बु ज़ांजिनस रामुच्रन्दुरन लोलु नारुह ॥ २० ॥
मुरुनि लंज्य अथु योंद वोज़्यम सु रावुन ।
तिथय दज़ि दादि सुत्य हेयि प्रान त्रावुन ॥
वोंन्दस यी गोस वोंन्य सीता बु मारन ।
सों मारिथ आसुनम यिम पतु लारन ॥
वुछन येलि रामुच्रन्दुरन क्याह गंयस राये ।
च्रटुनस नस्त च्रंज बारव दिवान द्राये ॥
वोंनुन वति खर द्यवस लारन योंदस आव ।
वुछिथ बुथ रामुच्रन्दुरुन ज़न नु ज़ायाव ॥ २४ ॥

सीताहरण

दपन बोंनु ओस तस ज़्युठ बोय रावुन ।
च्रलिथ गंयि तस ह्योंतुन अहवाल बावुन ॥

हस आकर बैठ गया है (विना परिश्रम के तुझे सुफल मिल रहा है) । वह अपने असली मुख को छुपाए हुए थी और बातों में उन दोनों राजकुमारों को उलझा रही थी । शूर्पणखा (मन में) कहने लगी—अब इसमें कोई चारा नहीं रहा, मुझे तो रामचन्द्रजी की लगी ने जला डाला है । २० वह हाथ मलने लगी (और सोचने लगी) कि यदि रावण को (मेरी असफलता का) पता चल जाय तो पीड़ा के कारण प्राण त्याग देगा । उसने दिल में कहा—मुझे अब सीता को मार देना चाहिए । उसे मार देने के बाद ये दोनों मेरे पीछे-पीछे चल देंगे । जब रामचन्द्रजी को यह ज्ञात हो गया कि उसके दिल में क्या राय (कुटिलता) छिपी हुई है, तब उन्होंने (तुरन्त) उसकी नाक काट डाली और वह वहाँ से फ़र्याद करती हुई भाग खड़ी हुई । रास्ते में उसने खर दैत्य से (यह समाचार) कहा । वह तत्काल युद्ध करने को आ गया । मगर रामचन्द्रजी का मुख देखकर उसकी ऐसी हालत हो गई जैसे वह जन्मा ही न हो । २४

सीता हरण

क़हते हैं नीचे (पाताल में) उसका (शूर्पणखा का) एक बड़ा भाई रावण रहता था, वह भागकर उसके पास चली गई और उसके सामने अपना

वनुनि लंज्य श्रपुनख तस रावुनस यी ।
मे नय फ़रियाद बोज़ख पाप माछी ।।
शोंगिथ आंसुस मनूशा गाल दिनि आम ।
चंलिथ आयस दोंपुम लगि रावुनस पाम ।।
खरस बोवुम सु तंम्य पोवुम ब यक तीर ।
लंजिस कमि वावुह वोंन्य कस बावुह यिम सीर ।।
दपन छिस नाव सारी रामु अवतार ।
वनस मंज़ क्याह करान असरन छु समहार ।। ५ ।।

महा सोंन्दर वनय तस क्याह छि रूपीठ ।
सोंरुगु लूकस अन्दर येन्दुरन तिमा डीठ ।।
ति बूज़िथ रावुनस सांपनुन बदल रंग ।
खंनिन तंम्य गंग गयि तस तंथ्य अन्दर ज़ंग ।।
योंहय ओसुस मरनुक नाम व पैग़ाम ।
तिथय तसुन्दिस मद्यानस गोंट सपुन शाम ।।
वंथिथ आकांश्य गव छ़ोरुन सु मारिज ।
ख्योंमुत यंम्य रामुचंन्दुरुन तीरि हारिज ।।
जहलु सूत्य आव येलि मारिंज छ़ोरुन ।
ज़िन्दय छा रामुचंन्दुरन मा सु मोरुन ।। १० ।।

अहवाल कहा। शूर्पणखा यह कहने लगी कि यदि मेरी फ़र्याद न सुनोगे तो तुम्हें पाप लगेगा। मैं सोई हुई थी कि एक मनुष्य आकर मुझे गाली देने लगा। तब मैं यह जानकर वहाँ से भाग आई कि कहीं रावण (की इज़्ज़त) को आँच न आये। खर से अपना (दुखड़ा) कहा, मगर उसे उस (मानव) ने एक ही तीर में धराशायी कर दिया। मुझ पर यह क्या आन बनी है और अब यह (दुखड़ा) किससे कहूँ। सभी उसका नाम रामावतार बताते है। वन में वह असुरों का क्या संहार कर रहा है! ५
क्या कहूँ, वह कितना सुन्दर और तेजस्वी है—स्वर्गलोक के इन्द्र को भी इतना (सुन्दर व तेजस्वी) नहीं देखा। यह सुनकर रावण का रंग बदल गया। उसने (राम-लक्ष्मण के लिए) गंगा (नदी) खोदनी चाही, मगर उसमें उसकी स्वयं की टाँगें फँस गई। यही उसकी मृत्यु का पैग़ाम था और उसका मध्याह्न काली शाम में परिवर्तित हो गया। वह आकाश में उड़ गया और मारीच को ढूँढने लगा जिसने रामचन्द्रजी का तीर खाया था। क्रोध से भरकर वह मारीच के पास पहुँचा और यह देखने लगा कि

वुछुन गोमुत सु राख्यस बोज़ निश दूर ।
यंगर नारस गोमुत सूरस सुतिन सूर ॥
शम्योमुत ओस तस ख़फ़ख़ानु द्रामुत ।
कफालस यस सु निशतर ज़ोरुह आमुत ॥
अमा येलि आस रावुन बेयि लोगुस वाव ।
च्यतस तेलि येलि तमिस पतु वास्य रथ द्राव ॥
वुछुन तम्य ओस ह्योतुमुत ख़रकु वरतन ।
ति डीशिथ रावुनस दज़ नारुह हन हन ॥
दोपुन तस कुन च्रुह वनतम क्याह गोवुय हाल ।
शिकस्त आयी यि कमि आफ़च्र वोलुय नाल ॥ १५ ॥

वोलुथ क्यथु जन्दुह क्याह गोय ताज वोवुथ ।
च्रे केंह ओसुय नु रावुन मन्दु छोवुथ ॥
दोपुस तम्य रामुचन्दुरुन तीर यनु आम ।
तनु प्यठु लूब प्रचथ चीजुक मनस द्राम ॥
दोपुस तम्य रावुनन वोन्य कर म्यथुरु कार ।
मे बोज़ुम यी तु ह्योतनम जिगरस नार ॥
दोपुस तम्य रावुनन यथ क्याह छु तदबीर ।
कोरुस बो रामुच्रन्दुरन सख़्त दिलगीर ॥

क्या—अभी तक वह जिन्दा है, रामचन्द्रजी के तीर से मर तो नहीं गया ? १० (रावण ने) देखा कि वह तो अब राक्षसी बुद्धि से दूर हो चुका है और उसकी तामसी वृत्ति की राख बन गई है। उसका अंग-अंग शिथिल पड़ गया है और उसके कपाल पर (रामचन्द्रजी का) वह नश्तर (तीर) ज़ोरों से लगा है। जब उसने (मारीच ने) रावण को अपने पास देखा तो उसके ज़ख़्म और हरे हो गए और उसको पुरानी सारी घटनाएँ याद हो आईं। वह सब कुछ त्यागकर विरक्त हो गया है—ऐसा देखकर रावण का अंग-अंग जल उठा। उसने उससे कहा—यह तुमने अपना क्या हाल बना रखा है ? यह किस दरिद्रता व आफ़त ने तुझे आघेरा है ? १५ यह तूने चिथड़े क्या पहन रखे हैं ? तुझे क्या ऐसे ही रावण का नाम लजाना था ? तब उस (मारीच) ने कहा कि जब से रामचन्द्रजी का तीर मुझे लगा है तब से मेरे मन से सारी चीज़ों का लोभ निकल गया है। रावण ने कहा—उठो, अब अपने मित्र का एक कार्य करो। मेरी विनती सुनो, मेरा जिगर जल रहा है। रावण ने कहा—

कौरुन यौद वारयाह खर दीव मोरुन ।
रंटुन तंम्य श्रुपुनख तस सीनु छोरुन ।। २० ।।

दौयिम सौन्दरा छ तंमिस बागि आमुत्र ।
ख़बर छा पापिस कस आसि ज़ामुत्र ।।
तिथिस व्यरागिस दित्र यिछ परी कंम्य ।
गंडिथ कंन्य कौलि तमि निशि कोनु छुन्य तंम्य ।।
तिछुय प्रज़लन छि यिछ प्रज़ुलन च्रोदुश ज़ून ।
बु कस वनु वौन्य छौकस प्योमुत मे छुम नून ।।
सरोक़द ख़ौश यिवान ज़ेबा यंम्बुर ज़ल ।
कनव बूज़ुम अमा वनि छम अंछिन तल ।।
तिछ छस तन वनन युथ छु हियि पोश ।
कंड्यन प्यठ जाय शूब्या तस च्रुह कर होश ।। २५ ।।

छि कोसम पोश हि तंमि संद्य अथु खोर ।
छि मा तिम त्रे च्रुह गंज़रावुक छि न च्रोर ।।
दौपुस तंम्य तोरु फीरिथ छुम मे मोलूम ।
मे छुम मोलूम तौलि यौलि ओस मोसूम ।।

अब इसकी कोई तदबीर निकालो। मुझे रामचन्द्र ने सख़्त दिलगीर (उदास) कर रखा है। उसने खर दैत्य से युद्ध कर उसे मार डाला तथा शूर्पणखा को पकड़कर उसका सीना (वक्षस्थल) टटोलना चाहा। २० सुनते हैं, उसके संग कोई सुन्दरी है। न जाने किस पापी की वह संतान है। उस वैरागी को ऐसी परी न जाने किस (मूर्ख) ने सौंप दी है। इससे तो ठीक था कि उसे पत्थर बाँधकर नदी में फेंक दिया जाता। (सुनते हैं) वह ऐसे चमकती है जैसे चौदहवीं का चाँद चमकता है। अब मैं अधिक और क्या कहूँ। मेरे ज़ख्मों पर तो (उसके रूप का वर्णन करने से) नमक छिड़क जाता है। सरो-क़द वाली वह नरगिस की तरह आकर्षक और ख़ूबसूरत है। उसके बारे में केवल सुना ही है, मगर लगता है जैसे सामने हो। कहते है उसका तन चमेली की तरह है। भला काँटों पर उसका रहना शोभा थोड़े ही देता है—तू ज़रा होशकर (इस पर विचार कर)। २५ उसके हाथ-पैर कुसुमों की तरह (कोमल) हैं। वे सिर्फ़ तीन हैं, उनको चार न गिन (यानी उनसे भिड़ना मुश्किल नहीं है)। तब उसने (मारीच ने) कहा—मुझे (सब) मालूम है। मुझे तभी से मालूम है जब वे मासूम (छोटे) थे। खेलते-खेलते उन्होंने मुझे ऐसा तीर मारा था जिसकी बात

गिन्दन द्युतनम त्युथुय तीरा छ क्याह् कथ ।
अंछिव वुछ वुनि ज़ख़मन छुम पकन रथ ।।
ज़ख़ुम हाविन पथरि प्यठ पान त्रोवुन ।
वोंदुन वाराह् तमिस अह्वाल वोवुन ।।
पज़्या बरबादवुन्य बेयि ज़िन्दुगानी ।
सु आमुत आसि वुनिक्यन दर जवानी ।। ३० ।।

दोंपुस तम्य रावुनन फीरिथ व तदबीर ।
तगी ये कँह मु कर वुन्यकेन च़ु तक़सीर ।।
च़े वोंनमय सुत्य युन वोंथ शा निमोनख ।
मुफ़्त नय श्रुपुनख मावज़ु दिमोनख ।।
च़ु छुख ग़मख़्वार कर तम चारुह् साज़ी ।
यितम सुतिन च़लोनख ह्यथ व वाज़ी ।।
दोंपुस तम्य तोरु कम इफ़लास आयी ।
बसख कर कुनि सु योंद अख तीर लायी ।।
च़े कर छुय वुनि वुछमुत मोंख तसुन्द ज़ात ।
वुछख तेलि येलि गछी ना च़े दोंहस रात ।। ३५ ।।

बु छुस ज़ानिथ सु यामत मोंख च़े हावी ।
लगी दोंख सारिकुय सोंनुलांक रावी ।।

ही क्या है ! अपनी आँखों से देख, अभी भी इन ज़ख्मों से रक्त वह रहा है । उसने पृथ्वी पर लेटकर अपने जख्म दिखाए तथा बहुत रोकर अपना अहवाल (हाल) कह डाला । अब पुनः इस जिन्दगानी को बर्वाद करवाना नही चाहता और फिर अब तक तो वह पूरी जवानी में आ गया होगा । ३० इस पर रावण ने तदबीर निकाल कर कहा—यदि इस समय तुझसे कुछ होता हो तो कर और यों वहाने न बना । तू मेरे साथ चल और (हम लोग) उसकी पूँजी को उड़ा लें । मुफ़्त में नहीं, अपितु बदले में शूर्पणखा को मुआवज़े में उन्हें दे देंगे । तू मेरा ग़मख़्वार है, अतः मेरी चारासाज़ी कर । मेरे साथ चल ताकि उसे छल से उड़ा लें । इस पर उस (मारीच) ने कहा—यह तुझे क्या दरिद्रता सूझी है । यदि वह एक तीर तुझे मार दे तो तू कहीं भी नहीं बस सकता । तू ने अभी उसका मुख ही कहाँ देखा है, यदि तू देख ले तो तेरा दिन रात में बदल जायगा । ३५ मेरा विश्वास है कि जैसे ही वह तुझे अपना मुख दिखाएँगे तो तुझे हर प्रकार के दुःख (सताने) लगेंगे और तेरी सोने की लंका जाती रहेगी ।

दोंपुस तंम्य तोरुह राजिच शेंख लावुम ।
तसुंदि अमि गोंनु मेंं तिछ सोंनु लांक रावुम ॥
यि वोंनमय सुत्य युन तति विह च्रें हावुन ।
यियी लारान त्युथुय गछि तम्बुलावुन ॥
दोंपुस तंम्य चरखु योंद बुतरात फेरि ।
बु मंत्ररन रामु लंखिमन गरि नेरि ॥
तंमिस निशि योंद समन लछ सास रावन ।
अपुज़ छुनु तिम ति नेरन अथु हावन ॥ ४० ॥

छु ये नावाह पनुन तति मन्दु छावख ।
पोंज़ुय वोंनमय ञ्रुह राजुत रावुरावख ॥
दोंपुस तंम्य तोरुह वुन्य मारथ ब शमशीर ।
टुकन वोंथ छुस बु राजति निश गोमुत सीर ॥
मेंं वोंनमय बोज़ मारिंजो बु मारथ ।
जुव अय दरकार छुय वोंथ छार कांह वथ ॥
वदुनि मारिंज लोंग योंदवय यि मार्यम ।
नरुक बूगुन दिनम राछ्यस प्रकृत छम ॥
मेंं योंदवय रामुजुव मार्यम दियम कान ।
परन गछु रामु रामु अथि यिनम प्रान ॥ ४५ ॥

तब उस (रावण) ने कहा—अब मैंने राज्य की शंका (चिन्ता) भी छोड़ दी है। उस गुणवती के लिए मैं सोने की लंका भी त्यागने को तैयार हूँ। तू मेरे साथ चल और वहाँ पहुँचकर अपनी माया दिखा। वह तेरे पीछे भागेगी और तू उसे रिझाते (ललचाते) रहना। तब उस (मारीच) ने कहा कि यदि यह ब्रह्माण्ड भी हिल जाय तो भी राम-लक्ष्मण को ललचाना, उन्हें घर से निकालना, असंभव है। यदि उसके (रामचन्द्र के) सामने हज़ारों लाखों रावण भी इकट्ठे हो जायँ, तो वे भी खाली हाथ ही लौटेंगे—यह असत्य नहीं है। ४० तुम्हारा जो नाम शेष है, उसे भी लजाओगे—यह सच कह रहा हूँ, राज्य को भी गवाँ दोगे। तब उस (रावण ने) कहा—मेरी बात यदि मानते नहीं हो तो तुम्हें शमशीर से मार डालूँगा। जल्दी उठ, मैं राज्य से विरक्त हो चुका हूँ। रे मारीच! सुन, मैं कह रहा हूँ कि तुझे मार डालूँगा। यदि तुझे अपना जीवन दरकार है तो उठ और कोई रास्ता निकाल। तब मारीच रोने लगा (और सोचने लगा) कि यदि यह मुझे मारता है तो मुझे नरक प्राप्त होगा, क्योंकि राक्षस प्रकृति का हूँ।

तमिस सुत्य वोथ मनस यैलि यी गंयस राये ।
दोपुन ह्यवु व्यशनुलूकस मंज़ दिनम जाये ।।
सु रावुन ब्यूठ वोननि लोग ज़लुर्य जाज्य ।
सु गव तस्य रोस्य कट्य बोनु सोनु संज़ लाज्य ।।
पकन गंयि वरन वदुलाविथ डंडक वन ।
वुछिक सीता बिहिथ खोशदिल व गुलशन ।।
नज़र त्रावुन वुछुन अख जानवारा ।
तिलाई तन ब गर्दन मोख़्त हारा ।।
यिवन सीतायि यैलि बाग़स अन्दर ड्यूठ ।
पकन गंयि रामुचन्द्रुरस निशि खंटिथ ब्यूठ ।। ५० ।।

कुलिस प्यठ वरनु बदुलिथ जानवर ब्यूठ ।
दोपुन सूतायि यैलि युथ आश्चर ड्यूठ ।।
दोपुन तस रामुचन्द्रुरस कुन न्यबर नेर ।
ख़ंजरु या तीरु मारुन या ब शमशेर ।।
तमिस डीशिथ सो सापुन्य तीत्र बेताव ।
सपुनि युथ नारु सुतिन ख़ाम सीमाव ।।
वनुनि लंज रामुचन्द्रुरस कुन यि मारुन ।
गछी नीरिथ न्यबर ह्यास पतु लारुन ।।

यदि रामचन्द्रजी के तीर से मरता हूँ तो राम-राम स्मरण कर मेरे प्राणों को सद्गति प्राप्त हो जायगी । ४५ मन में यह विचार कर वह उस (रावण) के साथ हो लिया कि शायद विष्णुलोक में उसे जगह मिल जाये । रावण मायावी जाल बिछाने लगा और वह (मारीच) असली रूप को छिपाकर सोने का एक जानवर बन गया । दोनों वर्ण वदलकर दण्डक वन की ओर चल दिए और वहाँ पर एक गुलशन में सीता को खुशदिल रूप में देखा । उस(सीता)ने नजर उठाकर उस जानवर को देखा जिसका तन सुनहरा और गर्दन में मोतियों का हार था। जब सीता ने उसे बाग़ के अन्दर आता हुआ देखा तो वह रामचन्द्रजी के पास गई और (इतने में) वह ग़ायब ग़ायब हो गया । ५० और वर्ण वदलकर एक वृक्ष पर बैठ गया । जब सीता ने यह आश्चर्य देखा तो रामचन्द्रजी से कहा कि बाहर उस (जानवर) को ख़ंजर या तीर या शमशीर से मार डालिए । उसे देखकर वह इतनी बेताब हो गई जितना आग से ख़ाम सीमाव (पारा) हो जाता है । वह रामचन्द्रजी से कहने लगी—इसे मार डालिए । तब लक्ष्मण से रामचन्द्रजी ने कहा—यह

वनुन ह्योंत रामचंद्रन लंखिमनस कुन ।
छु राख्युस जानवर कुंह क्याह छु डेशुन ।। ५५ ।।

च्रु बेह येंत्य रांछ छय सुता हवालु ।
बु योत तामथ अंमिस गछु पोस वालु ।।
च्रलुनि मारिंज लोंग येंलि रामुजुव द्राव ।
रोंटुन वन च्रूरि छ्यफ दिथ जंगलस च्राव ।।
च्रलुनि मारिंज लोंग गोस पतु लारन ।
कंड़िथ गरि न्यून लोगुन कोहु सारन ।।
दितुस तंम्य तीर संजुरांविथ पथर प्यव ।
दोंदुय त्युथ युथ दज़ान नारस अन्दर ग्यव ।।
ब तुन्दी तीर लांयिथ सख़्त पोवुन ।
मरनु विज़ि राखिसन वोंनु नालु व्रोवुन ।। ६० ।।

मरनु विज़ि राखिसन यी दोंप यितांमो ।
कत्यू छुख लंखमनो दरशुन दितांमो ।।
अमी आवाज़ि गंल्य राख्यस ज़ें बुनियाद ।
दितुन बोंनु राखिसन लंखिमनु कंरिथ नाद ।।
यंहय ऋख दयतु सुन्ज़ सुतायि येंलि बूज़ ।
वदुनि लंज लंख्यमनस निशि गंयि वोंदुनि रूज़ ।।

जानवर के भेस में राक्षस दिखता है, न जाने क्या होनेवाला है। ५५ सीता तेरे हवाले है। तू तब तक यहीं उसकी रखवाली के लिए बैठ जब तक मैं उस (राक्षस) की खाल उधेड़कर लौटता नहीं हूँ। जब रामचन्द्रजी निकले तो मारीच (तेज़ी के साथ) भागने लग गया और वन के अन्दर छिप गया। मारीच भागता गया और वे उसका पीछा करते रहे। (मारीच) उन्हें घर (आश्रम) से निकालकर दूर पहाड़ों आदि की ओर ले गया। तब उन्होंने तीर मारा जिससे वह नीचे गिर गया और ऐसे जलने लगा जैसे आग में घी जलता है। तीक्ष्ण तीर मारकर उन्होंने उसको गिरा दिया। मरते समय उस राक्षस ने ज़ोर से आवाज दी। ६० मरते समय उस राक्षस ने यह कहा—आ-जाना, हे लक्ष्मण! तू कहाँ है? मुझे दर्शन दे दे। इस आवाज़ को सुनकर सभी राक्षस जलने लग गए (कि कुछ होनेवाला है)। दैत्य की यह आवाज जब सीता ने सुनी तो वह रोती हुई लक्ष्मण के पास जाकर खड़ी हो गई और उसने कहा—भाई तुझे ढूँढ रहा है। तू जल्दी जा और कोई उपाय कर। लक्ष्मण ने कहा—उन्हें कोई परवाह

वननि लंज लंखिमनस गछबा च़ु लारन ।
कंरिव कँह पाय छुय हो वोय छारन ।।
दोंपुस लंखिमन जुवन कँह छुनु परवाय ।
गंज़र वुन्य वाति पानय छोपु कर माय ।। ६५ ।।

तंमिस कुस पोशि नारायन छु पानु ।
गोंवुय क्याह मांज ह्यस रूदुय नु दानु ।।
तिथुय वूज़िथ सों सुता लंज वदने ।
होंरुन ओंश नार गोंडुनस हियि तने ।।
च़ोंटुन सीनुह दोंपुन क्याह गोम क्याह गोम ।
वोंन्य अय यंति कँह गछ्यम पतु मारुनम ज़ाम ।।
दोंपुस लंखिमन जुवन बेंह छख च़ु मोसूम ।
च़े कर छी राखिसन हुन्द्य विह्य मोलूम ।।
दोंयुम कर रामुजुव दियि यूत फ़रयाद ।
त्रेयुम कर कांसि हुन्द तथ जायि इमदाद ।। ७० ।।

च़ु चूरिम रोज़ बेग़म क्याह छु तलवास ।
गंज़र वुन्य पोंस वांलिथ यूर्य ह्यथ आस ।।
दोंपुस तमि तोरु कथ गंज़ुराव मुशकिल ।
मे ज़ोनुम छुय ख़याले ख़ाम दर दिल ।।

नहीं है। वे बस आते ही होंगे। हे माता! आप विचलित न हों। उनको कौन परास्त कर सकता है। ६५ वे तो स्वयं नारायण हैं। हे माता! आप ऐसा क्यों सोचती हैं? ऐसा सुनते ही वह सीता रोने लग गई तथा आँसू बहाने लगी। उसका चमेली-सा तन-बदन दग्ध होने लगा। उसने अपना सीना चाक कर दिया, और कहा कि हाय! यह मैं क्या देख रही हूँ। अगर अब (उन्हें) कुछ हो गया तो ननदें मुझे मार डालेंगी। तब लक्ष्मण ने कहा—आप यहीं बैठिए। आप मासूम हैं। आप राक्षसों के स्वाँग को नहीं जानतीं। दूसरा (यह भी सोचिए कि) भला रामचन्द्रजी यों फ़र्याद क्यों करते और तीसरा (यह भी सोचने की बात है कि) उस स्थान पर उन्हें भला इमदाद की क्या जरूरत होगी। ७० चौथा आप बेग़म (निश्चिंत) रहें, उद्विग्न क्यों हो रही हैं? आप (पल) गिनती रहें, वे अभी (उस दैत्य) की खाल उतारकर आ ही रहे होंगे। तब उस (सीता) ने उधर से कहा—तू इसे (मेरी बात को) ऐसा-वैसा न समझ, अपितु इसे एक मुश्किल बात जान। अब मुझे मालूम हो गया कि तेरे दिल में

यि छुख गँजुरन ति वुनि छस ना बु ज़ानन ।
मे प्यठ कुस नक़ुश गोँडमुत आसुमानन ॥
मुरुख सुय युस पनुन वन्दि वोरु बायन ।
सु तस कुन लोलु कनि छुय गोलि मारन ॥
गोँडन्य यी वोरु बायन हुन्द्य छि अतुवार ।
दोँयुम आसी मे डीशिथ दिल गिरफ़्तार ॥ ७५ ॥

त्रेँयुम त्रावुन च्रे बोय लसिनय शतुरगुन ।
यि च्रूरिम चारु क्याह् ओसुय यि दुशमन ॥
बु काँच्राह् आसु हशि हुंजुह पामु च्रालन ।
वनस दिमु नार वुन्य येँत्य पान ज़ालन ॥
जिगुरस छोँख लगन गेलुन लुकन हुन्द ।
पनुन ज़ुव कोनु पनुनिस बरथहस वन्द ॥
अपुज़ छुय युथ नु वोँन्य अमि रायि रावख ।
सु त्राविथ नाव तम्यसुन्द मन्दुछावख ॥
गोँडन्य यी मालिन्यन निशि कस बु ज़ायस ।
दोँयुम व्यवाह् करिथ कति गरु आयस ॥ ८० ॥

त्रेँयुम वरथा पनुन ओसुम मे नारान ।
वुन्योम सामथ करिथ गोम डाक माँदान ॥

ख़ाम ख़याल हैं (तेरी नीयत ठीक नहीं है) जाने इस आसमान ने मेरे साथ यह क्या छल किया है। (अब मै जान गई) वह मूर्ख है जो सौतेले भाइयो पर अपना जी जान गँवाए। वे तो प्रेम के बदले में गोलियाँ दागते हैं। अव्वल तो सौतेले भाइयों के कर्म ही ऐसे होते हैं। दूसरा, मुझे देख तेरा दिल गिरफ़्तार हो रहा होगा। ७५ तीसरा, तू भाई (रामचन्द्रजी) को छोड़ अपने (असली) भाई शत्रुघ्न के पास चला जा। चौथे, अपने इस भाई (रामचन्द्रजी) से तूने यह अच्छी दुश्मनी निकाली। मैं भला अब सास के ताने कैसे सहूँगी (यदि रामचन्द्रजी को कुछ हो गया तो)। इस वन को आग लगाकर मैं यहीं पर अपने आप को जला डालूँगी। औरों का ताना जिगर पर ज़ख़्म के समान (पीड़ादायक) होता है। मैं अपना शरीर अपने भर्त्ता पर क्यों न वारूँ। तू इस ग़लतफ़हमी में मत रहना कि मैं निःसहाय हूँ और उसे (यों अकेला) छोड़कर अपना नाम मत लजा। प्रथम, मैंने मायके में जन्म ही क्यों लिया और दूसरा, विवाह के बाद यह किस घर में आ गई। ८० तीसरा, मेरा भर्त्ता नारायण

यि च्रूरिम छम च्रे कुन वुछ वुछ लगन थाख ।
शेतुर छुख किनु मेथुर ह्यू सूत्य सूत्य आख ॥
यि पूंच्रिम पाम छम कलु च्रंट सपुन्य तन ।
शेयिम सनकी छे क्याह् ज़िन्दु छुख च्रु लखिमन ॥
बु कांच्राह च्रालु लूकन हुन्ज़ु पामय ।
हरुनि लंज ओंश परुनि लंज रामु रामय ॥
वु मारय पान वुन्य ख्यमु वेह च्रली ज़ाग ।
ति बूज़िथ लखिमनन ह्योत वर जिगर दाग़ ॥ ८५ ॥

तिथय नेरन छु लख्मिमन ज़ुव गछ़न वन ।
यिथय पांठिन कोंकरमन प्रान नेरन ॥
च्रटन जामह् वदन गव जंगलस कुन ।
सपुन पांदा सु रावुन ज़ूग्य लोगुन ॥
सु याम गव ताम सपुन पांदा सु रावुन ।
अथव सूतिन ह्योतुन तस सूतायि हावुन ॥
अंगन वसमा मलिथ आँगन अन्दर च्राव ।
अथस क्यथ गंडवु ह्यथ आंही करान आव ॥
अलख ऋख लायिनस वूज़िथ न्यवर द्राय ।
दोंपूनस दान दिम रामस लगी आय ॥ ९० ॥

(के समान) था, पर वही मुझे निःसहाय छोड़ गए और मेरा बुरा हाल हो गया। चौथा, तुझे देख-देख मुझ पर छुरियाँ चलती हैं। (सोचती हूँ) तू मित्र है या कि शत्रु, जो हमारे साथ-साथ चला आया। पाँचवा, यह मेरा तन अब बिना सिर के हो गया है और छठे, यह सब देखते हुए भी रे लक्ष्मण, तू जिन्दा है? अब मैं लोगों के ताने कैसे सहन करूँगी और इस तरह वह आँसू बहाने लगी और राम-राम रटने लगी—मैं अभी यहीं पर ज़हर खाकर अपना शरीर मार डालूँगी और तभी तेरा अन्धकार दूर हो जायगा। यह सुनकर लक्ष्मण के जिगर को दाग़ लग गया। ८५ और वह (तभी) वन के लिए निकल पड़ा, जैसे कुकर्मियों के प्राण निकलते हैं। वह रोता-बिलखता जंगल की ओर निकल पड़ा और जैसे ही वह निकला, उधर से (वह) रावण (फ़क़ीर का) भेस धारण कर पैदा हो गया और हाथों से सीता को इशारा करने लगा। अंग में भस्म मले तथा हाथों में लोटा लेकर वह (रावण) आँगन के अन्दर प्रविष्ट हुआ तथा आशीर्वाद देता हुआ सामने आया। उसने अलख लगाकर दान की याचना की जिसे सुनकर वह

दोंपुस तमि गोम वुन्य गंडनम दिलस रेह ।
दोंपुस तंम्य वोंथ टुकान लंकायि प्यठ बेह ।।
दोंपुस तमि गछ़ च़ु तथ लंकायि दिस नार ।
ति बूज़िथ राखिसन तस होव व्यंखचार ।।
दोंपुस तमि रामच़ंन्दुरुन बुथ वुछुथ ना ।
दोंपुस तंम्य ख़ोश गछ़ख डीशिथ च़ु लंका ।।
दोंपुस तंम्य कवु दोंदुय येंति तापु ताल्युन ।
दोंपुस तमि कूर गछ़ि कर पानु माल्युन ।।
दोंपुस तंम्य पख वुछुन लंका नबस सूत्य ।
दोंपुस तमि कूर गछ़ि पनुनिस बबस सूत्य ।। ९५ ।।

दोंपुस तंम्य छख च़ु गामुच़ प्यति वोंदासी ।
दोंपुस तमि ज़ान वांरिवि गरि बु दांसी ।।
दोंपुस तंम्य चोन गछ़ि लंकायि प्यठ युन ।
दोंपुस तमि ज़ामुतुर गछ़ि वीगि फिरु न्युन ।।
ति बूज़िथ रावुनस गव कूद पांदा ।
हरुनि लंज ओंश मरुनि लंज क्याह सों सूता ।।

(सीता) बाहर आगई । उस (रावण) ने कहा—मुझे कुछ दान दे जिससे (तेरे) राम की आयु बढ़ेगी । ९० वह बोली—वे तो अभी-अभी कहीं चले गए हैं और मेरे दिल में अग्नि की ज्वाला भड़क उठी है । उसने कहा उठ जल्दी कर और (मेरे साथ) चलकर लंका का वैभव स्वीकार कर । वह बोली—जा और उस लंका को जला डाल । यह सुनकर रावण ने उसे अपना (विकराल) वास्तविक रूप दिखाया । वह बोली—तूने शायद अभी तक रामचन्द्रजी का मुँह नहीं देखा है । उसने कहा—तू लंका को देखकर खुश हो जायगी—तू यहाँ (इस निर्जन में) क्यों मारे गर्मी के अपने आप को तपा रही है । वह बोली—भला पुत्री अपने मायके कैसे जायगी ? उसने कहा—चल, तुझे (नभ) आकाश को छूती हुई लंका दिखाऊँ । वह बोली—पुत्री तो अपने पिता के साथ ही जायगी । ९५ उसने कहा—तू पति के लिए क्यों उदास हो रही है । वह बोली—ससुराल में मुझे तू दासी के समान जान (मैं अपने पति की अनुगामिनी बनी रहूँगी)। उसने कहा—तुझे लंका में चलना ही चाहिए । वह बोली—अपने जामातृ को लग्नोपरान्त वहाँ ले जाना चाहिए था । यह सुनकर रावण में क्रोध पैदा हो गया और (वह) सीता निःसहाय होकर आँसू बहाने लगी । (तब रावण ने कहा–)

च़ु छख ना परज़ुनावान अय गुल अंदाम ।
गॉसोन्य त्रावुन मे रावुन छिम दपान नाम ।।
दया कर वॊथ मे प्यठ त्रावुन सु संन्यास ।
थवय सीवा करुनि हूरस शुराह सास ।। १०० ।।

यि कथ बूज़िथ तॅमिस सुतायि गव गश ।
दपन ज़न रावुनस त्रोवुख कॅरिथ खश ।।
गॊलाबस सोसुनुक ह्युव रंग तस गव ।
ह्लव आयीनु ज़न वॊन कनि प्यठ प्यव ।।
वुछिव सुतायि येलि आकाशय ह्यथ गव ।
रॅटिथ तुज तॅम्य वदन द्रायस फॅटिथ ज़्यव ।।
खॅटिथ यमुराज़ु गव ह्यथ अमर्यतुच त्रेश ।
गरुडुह सुन्दि बीमु सरफव दरबि दित्य फेश ।।
च़ॊदुश च़न्दरमु कॊर कीतन अवारुह ।
वॅसिथ आकाशि पॆयि सॉरी सितारुह ।। १०५ ।।

तिथुय वॊनु ज़ोन सिरियन ती गछ्यम जान ।
दितुन च़न्दुरमु मॊकुलोवुन पनुन पान ।।
वॅछुस येलि कालु गटु नॆथुरन अन्युव प्योस ।
तुजिन कीशव रॅटिथ आकाशयु ह्यथ गोस ।।

अरी फूलों की रानी! तू क्या मुझे नहीं पहचानती है? उस जोगी को छोड़, मुझे रावण कहते हैं। उठ, मुझपर दया कर और उस संन्यासी को त्याग दे। मैं तेरी सेवा के लिए सोलह हज़ार हूरों (अप्सराओं) को रखूँगा। १०० यह बात सुनकर वह सीता ग़श खा गई और रावण की हालत ऐसी हो गई जैसे उसे काट दिया गया हो। (सीता के) गुलाब की तरह चमकते मुखमण्डल का रंग धूमिल हो गया और जैसे चमकते आईने को नीचे पत्थर पर फेंक दिया गया हो। जब सीता को वह (रावण) जोर से पकड़ ऊपर आकाश में उड़ाकर ले गया तो रो-रोकर उसकी जीभ बाहर फटने को आगई। (रावण-रूपी) यमराज अमृत-पेय (सीता) को छिपा कर ले गया। गरुड (रावण) के भय से सभी सर्प (विवश होकर) कुश को चूसने लगे। चौदहवीं के चन्द्र को केतु ने ग्रस लिया जिसे देख आकाश के सभी सितारे निपातित हुए। १०५ सूर्य ने इसी में अपनी ख़ैर समझी और उसने अपने आप को बचाकर चन्द्रमा को सामने कर दिया।

च़लन गव त्यूत वावस वथ सपुन्य तंग ।
वनन आकाश सॉपुन सोसुनुक रंग ॥
तिथुय तुल शोर वनुक्यव जानुवारव ।
संमिथ तिम आयि सॉरी पान मारव ॥ १०९ ॥

जटायन सुन्द योद तु सुताथि हुन्द क़ाद

ख़बर बूज़िथ जटायन गव ख़बरदार ।
क़फ़स फुटरुन तु लारन गव ब यकबार ॥
पुनिम च़्रन्दरस वुछुन येलि ह्यथ च़लन कीत ।
दोंपुन तस ओय म्रत पापुक गोंवुय हीत ॥
दिच़ुन तस क्रख वोंथुय युथ क्याह् अन्दुकार ।
कवो बापत गरस पनुनिस दितुथ नार ॥
कंरुथ आवारु कवु बापत पंरी ज़ात ।
रुमाह् कर सबुर लबुनावथ मुकाफ़ात ॥
परुकि दकु सुत्य छुस आकाशि त्रावन ।
ज़मीनस प्यठ अंडिजि छुस फुटुरावन ॥ ५ ॥

उस रावण की मति पर जब काली घटा छा गई तो उसकी आँखें अन्धी हो गई जिससे उसने उस (सीता) को केशों से पकड़कर उठा लिया और आकाश में उड़ा ले गया। वह इस तेज़ी से भागा कि वायु का मार्ग तंग हो गया तथा कहते हैं कि आकाश का रंग पीला पड़ गया। वन के पक्षी कोलाहल करने लगे और वे सभी अपनी जान देने को इकट्ठे हो गए। १०९

जटायु से युद्ध और सीता का क़ैद होना

(सीताहरण की) ख़बर सुनकर जटायु खबरदार हो गया तथा एकदम अपनी जगह छोड़कर दौड़ता हुआ बाहर आ गया। जब उसने पूनम के चन्द्र (सीता) को केतु द्वारा (ग्रसित) भगाया हुआ देखा तो वह (रावण से) कहने लगा—तेरी मौत आगई है जो तू यह पाप करने पर उतारू हो गया है। उसने ज़ोर से आवाज़ देकर कहा—यह तुझे किस अन्धकार ने घेर लिया है जो अपने घर को स्वयं अपने हाथों से (इस कुकृत्य द्वारा) भस्म कर रहा है, किस लिए तू इस परी समान (सुन्दरी) को दुखी कर रहा है। क्षण भर के लिए रुक जा ताकि मैं तुझे इसका अंजाम बतलाऊँ। (तब जटायु ने) उसे पर के धक्के से ऊपर आकाश में उछाला

कंमी कंह कंर नु तंम्य तति ज़ोर हांविन ।
परव सुतिन पथुरि प्यठ वातुनांविन ॥
रटन ओमुस च्रटन ओमुस पंजन तल ।
च्रटन छुस कलु तामथ छुस करन छल ॥
सपांनन वंयि तंमिस सोवूथ्य सांरी ।
अंकिस कलस सुतिन तस प्रान लांरी ॥
स्यठाह रावुन करान ओस ज़ोर तं वल ।
कलन दहन नर्‌यन वूहन कुनुय छल ॥
तुजिन तंम्य रावुनन शमशेर लांयिस ।
च्रंटिनस पर च्रूरि पांठिन ज़ोरु लांयिस ॥ १० ॥

पथर प्यव पर च्रंटिथ गव छुसनु छोरन ।
वन्यस क्याह रावुनस छुनु चोंट फोरन ॥
दोंपुस सुतायि कर वोंन्य जिन्दु छोरी ।
च्रें च्रंटिथस पर तम्युक पादाश होरी ॥
वोंनुन सुतायि वुन्य येंत्य बु मारथ ।
नतु हावुम अंमिस निशि मोंकलनुच वथ ॥
अंनिन सखती तंमिस सुतायि वोंन हाल ।
अंमिस जानावरस किथु पांठ्य छुस काल ॥

और जमीन पर गिराकर उसकी हड्डियों को तोड़ डाला। ५ अपनी ओर से उसने कोई कमी न रखी और खूब जोर दिखाए। परों के धक्कों से वह उस (रावण) को नीचे पृथ्वी पर ले आया। वह उसे पकड़कर पंजों से नोचने लगा और छल-वल से उसके सिर काटने लगा। मगर उसके सिर वापस सावूत वन जाते। वस, एक ही (विशिष्ट) सिर के साथ उसके प्राण वंधे थे। रावण खूब ज़ोर और वल दिखाने लगा तथा दस सिरों व वीस वाहों से मिलकर छल (कौशल) दिखाने लगा। तव रावण ने शमशीर उठाकर उस पर जोर से दे मारी और चुपके से उसके पर काट डाले। १० पर कटते ही वह (जटायु) नीचे गिर पड़ा, मगर फिर भी रावण को नहीं छोड़ा। रावण भला क्या कहता, उसका मुँह ही वंद हो गया। सीता ने कहा—अव यह तुझे जिन्दा कहाँ छोड़ेगा। तूने इसके पर काटे, अव वह इसका प्रतिशोध लेगा। तव रावण ने सीता से कहा—मैं तुझे अभी यहीं पर मार डालूँगा, अन्यथा इससे मुक्त होने का कोई मार्ग वता। सीता पर (उस रावण ने) वहुत सख्ती की जिससे

दोंपुस तमि रथ मंथिथ दिस पल च्रु दांरिथ ।
यि छुनि न्यंगुलिथ तु ज़ानि नु पतु लांरिथ ।। १५ ।।

पतव येंलि रामुचन्दुरस बावि अहवाल ।
वंनिथ वोंबरावि अदुह बुथ हांविनस काल ।।
यि योंत ताम रामुसुन्द दर्शुन करी न ।
वन्यस योंत ताम शेंछ तोंत तां मरी न ।।
दितिस तंम्य रथ मंथिथ पल खेंन्य गोंबिथ प्यव ।
लंबुन वथ रावुनन सूतायि ह्यथ गव ।।
नियन आकांश्य वोंठ लंकायि प्यठ वोत ।
दज़ुवुन नारुहोंट ह्यथ गरु पनुन वोत ।।
नियन दर शहरि लंका वातुनांवुन ।
खंटिथ च्रांनिन रंटिथ दर बाग़ थांवुन ।। २० ।।

अशक वन बाग़ ओसुस तंत्य सों थांवुन ।
अंनिन मन्दूदंरी दोंद दामु चांवुन ।।
दितुन फ़रयाद तेंलि येंलि सख़्तु त्युथ आस ।
लबन काशस तु आकाशस बुन्युल आस ।।

सीता ने वह सारा हाल (तरीक़ा) बताया जिससे उस पक्षी का काल आ सकता था। वह बोली—रक्त से सने हुए बड़े-बड़े पत्थरों को इसके ऊपर फेंक दो। उन्हें यह निगल जायेगा और इस तरह तुम्हारे पीछे नहीं उड़ेगा। १५ फिर जब रामचन्द्रजी से यह सारा अहवाल (वृत्तान्त) बयान करेगा तब ही काल उसे अपना मुँह दिखाएगा। जब तक यह रामचन्द्रजी के दर्शन कर उसे (मेरी) सारी ख़ैर-ख़बर नहीं सुनायेगा तब तक यह (कभी) मरेगा नहीं। रावण ने उसे रक्त से सने बड़े-बड़े पत्थर खाने को दिए (जिन्हें खाकर) वह भारी होकर गिर पड़ा। तब रावण को भागने का मार्ग सूझा और सीता को लेकर उड़ गया। उसने आकाश में छलाँग लगाई और लंका में पहुँच गया तथा उस जलते हुए (प्रदीप्त होते हुए) अग्निपुंज (सीता) को अपने घर ले आया। लंका शहर में पहुँचकर उसने उसे छिपाकर अपने बाग में रख दिया। २० वह अशोकवन का बाग़ अत्यन्त सुन्दर था, उसी में उसे रख दिया तथा मन्दोदरी को बुलवाकर उसे दूध पिलवाया। जब उसपर सख्ती की गई तो उसने फ़रियाद की, जिससे दीवारों में दरारें पड़ गई और आकाश में भूचाल आ गया। वह रोने लगी कि जाने (मेरी कुण्डली में) सूर्य-ग्रह इस समय किस घर में चला गया है। मेरे

वदान आंस सिरियि गोत्रर कथ गरस गोम ।
कंरिथ जीवस तु ज़न्मस वंकरि छुम वोम ।।
शनशचर मीशि अुठिमि जायि तस व्यूठ ।
गंछ्रिथ परदीश तमि क्रेछर स्यठाह ड्यूठ ।।
तंमिस सुतायि येलि वॊलका दशा यस ।
सपुन्य आवारु चारु नु लांन्य न्यायस ।। २५ ।।

शोंकुर तस नालु च्रंकरुक खोंवुरि कनि व्यूठ ।
कोंडुन संकट तंमिस द्यन छुय वरुन कूठ ।।
दपन येलि राखिसन रंट गिल सॊ ज़ालुह ।
अंनिन मन्दूदरी कंरनस हवालुह ।।
दोंपुन तस कुन रछिन्य च्रे शन र्यतन छय ।
करुस सीवा च्रें सुत्य योंत तां गछ्र्यस लय ।।
वदन मन्दूदरी वांलिजि शर छुम ।
बेयन शंतरन वनुन लायक मे कर छुम ।।
तुजिन तमि कोंछि क्यथ ह्यथ ललुनांवुन ।
गंमुत्र कोंलि येलि लंबुन लोंलि क्यथ सॊ सांवुन ।। ३० ।।

वुछिव तस माजि मा माज़ुक मुशुक आव ।
लबन येलि छस ववन दोंद ठींचि तस द्राव ।।

मेरे जीवन व जन्म को (बिगाड़कर) भौम, लगता है, वक्र गति से चल रहा है, तथा मेप राशि का शनिश्चर आठवें घर में बैठा हुआ है जिसने परदेश में लाकर (मुझे) कठोर दुःख दिखाया। उस सीता पर शनि की दशा लगी हुई थी जिससे वह असहाय हो गई—भाग्य के लेख का भला क्या किया जाय। २५ उसके जन्मचक्र में शुक्र वाम दिशा में बैठा हुआ था, जिससे वह संकट में घिर गई तथा दिन बिताने मुश्किल हो गए। कहते हैं, जब उस राक्षस (रावण) ने उस सुन्दरी को जाल में पकड़ लिया तो मन्दोदरी को बुलाकर उसे उसके हवाले कर दिया। उस (रावण) ने (मन्दोदरी से) कहा—इसे छः महीने तक पालना होगा। तब तक इसकी सेवा करती रह जब तक कि यह तेरे साथ हिल-मिल नहीं जाती। मन्दोदरी रोते हुए कहने लगी—(इसे देखकर) मेरे कलेजे को तीर लगा है। उस बात को (कि सीता को मैंने ही नदी में फेंकवाया था) कहने के लायक़ भला अब मैं कैसे रही ! तब उसने उसे गोद में उठाकर झुलाया तथा पानी में फेंकी उस (सीता) को पुनः पाकर अपने अंक में सुलाया। ३०

लंबुन येंलि मायि ज़ालह् वलनु आये ।
ज़िन्दुह् ज़न गाड़ गंयि मन्ज़ तीलु क्राये ॥
तिथय पानस पेंयस लोलुचि दंतुरे ।
लंबुन कोनु श्राख यीसु वांलिजि कतरे ॥
पेंयस ज़न नारु व्रठ वसवास आतश ।
लंजिस ज़न शीनु छ्ठ यंत्र तुरु व्रायस ॥
अमार वोंनुन नु कुनि किन्य न करुन वार ।
जिगरस क्यथ खंटिथ थोवुन बोंसुर्य नार ॥ ३५ ॥

रोंटुन दम क्या सना ज़ोनुन वोंटुन आंस ।
छोंपुह् शमशेरि तंमि वादस व्रोंटुन आंस ॥
तवय वांलिजि तमि कंर नीलुवठ कंन्य ।
अवय कुनि किन्य गछ़्यम मा सीरु कथ नंन्य ॥
ख़बर छसना यि कस वनु यंत्र गछ़्यम हाछ़ ।
मुव्रुर येंलि हांगिन्यव मोंख मोंखतु गव काछ़ ॥
खंटिथ थावुनु जिगर छुय चरख़ु फेरन ।
फंटिथ अदु लोलु नारुच रेंह छ नेरन ॥

(दैव की करामात देखिए)अपने रक्त (मांस) की गंध पाकर माँ (मन्दोदरी) के स्तनों से दूध की धारा द्रुत गति से फूट पड़ी। उसे पाकर वह (मन्दोदरी) सांसारिक मायाजाल में पड़ गई और उसकी हालत गर्म तेल की कड़ाही में पड़ी एक ज़िन्दा मछली की-सी हो गई। उसके शरीर पर वात्सल्य की सुरसरी दौड़ पड़ी तथा छुरी से अपने कलेजे को चीरने के लिए उद्यत हो उठी। उसके ऊपर जैसे अग्नि की गाज गिरी और जैसे बर्फ़ की हवा लगकर वह काँपने लगी। मन का अरमान (दिल की बात को) उस (मन्दोदरी) ने न किसी से कहा और न किसी से जताया। बस, जिगर में उस सुलगती आग को छिपा कर रखा। ३५ उसने अपने दम (साँस) को पकड़ लिया तथा कुछ सोचकर मुँह वंद कर लिया और चुप्पी रूपी शमशीर से वचन (बात) का मुँह काट डाला। अपने कलेजे को उसने सख़्त पत्थर वनाया ताकि कहीं से उसका वह भेद खुल न जाय (कि सीता को मैंने ही नदी में फेंकवाया था)। इसे (शायद) खबर नहीं कि यदि मैं किसी से वह भेद कहूँ तो मुझ पर लांछन लगेगा। जव उस रूपसी (सीता) ने मुँह खोला तो मुक्ताओं की आभा फीकी पड़ गई। (मन्दोदरी सोचने लगी) मैं इसे छिपाकर रखूँगी, मेरा जिगर चरखे की तरह चक्कर

मुरुनि लंज अथु क्याह सनुह कौसु सना छम ।
छुन्यायम कौलि कूराह सय वना छम ॥ ४० ॥
वौदुन डोम्ब ज़्यथ नखस प्यठ छुय खसन वोर ।
मरन येलि तेलि छु गरदनि प्यठु वसन वोर ॥
गछी युस वेरि ज़्यवने कोरि सुत्यन ।
च्रंटुन गरदन पनुन्य तम्य तोरि सुत्यन ॥
कौरुन अहंकार युथ अवतार कम्य दोर ।
तुलुन तम्य शेरि प्यठ व्रोव मुत पथर वोर ॥
वुछिनि लंज तस मोखस कुन परज़ुनावुन ।
रंटुन वालिजि तल दोद दामु चावुन ॥
वनुनि लंज यि छे सय यसु छम मे ज़ामुत्र ।
वन्याहस रावुनस मारुनि आमुत्र ॥ ४५ ॥
लस्यय व्यवाह करिथ सांपुनि वनवास ।
वस्यय कुनि तोरु फीरिथ लांकि करि डास ॥
तवय वापथ छुनी तमि तथ ज़लस मंज़ ।
नरायन छुय लदान रूज़ी पलन मंज़ ॥
प्रछुनि लंज तस च्रु कम्य दोद दामु चावुख ।
रंछिख कम्य ज़्यववुवुनुय येलि माजि त्रावुख ॥

खा रहा है तथा वात्सल्य की लपटें उससे फूटकर निकल रही हैं। वह हाथ मलने लगी कि यह मेरी वही पुत्री तो नहीं है जिसे मैंने नदी में फेंकवाया था। ४० वह खूब रोई और कहा—सन्तानोत्पत्ति से कन्धों पर उत्तरदायित्व आ जाता है और मरने के बाद ही वह भार गर्दन से उतर जाता है। जो अपनी ही पुत्री पर कुदृष्टि रखे उसकी गर्दन समूले से काट दी जाती है। उसने (मेरे पति रावण ने) अंहकार किया और उन्हें (नारायण को) अवतार धारण करना पड़ा तथा पृथ्वी के भार को सिर पर उठना पड़ा। वह (मन्दोदरी) उस (सीता) के मुख को (एकटक) देखने लगी और उसे पहचान गई। उसे कलेजे के साथ लगाकर दूध पिलाया। (वह मन में कहने लगी) यह वही है जो (मेरी कोख से) जन्मी है और अब रावण को मारने के लिए यहाँ आई है। ४५ विवाहोपरान्त इसे वनवास मिला और अब यहाँ रहकर लंका का नाश करेगी। (सम्भवतः) इसीलिए वह इस जाल में फँस गई है। (नारायण की लीला अपरंपार है) वे पत्थरों के नीचे पड़े कीटों तक को रोजी पहुँचाते

दोंपुस तमि बो ज़नक राज़न रछीनस ।
ख़बर कॅह छमनु योत क्याह् करनि आयस ।।
वॅनिख यॅलि सीर सांरी पानुवांनी ।
करुनि लजि हान वुछ वुछ ल्यल तु वांनी ।। ५० ।।
दपन गव लांकि ख्यय र्‌यय लंजिसु माज़स ।
वोंदुन वाराह् वनुनि लंज दरमु राज़स ।।
दरमु राज़ो च़ु क्याह् ज़ानख यि क्याह् गव ।
पॅयी कुनि दोंहु मा प्यतुरावुन च्‌यतस थव ।।
यि क्याह् अव्यच़ार पानस ज़ेन्य गंछुय कूर ।
नतय सुतायि हिश प्यतुरुन्य गंछुय कूर ।।
यि क्याह् गव कलमु छुख तलवार मारन ।
यि त्रावन मील छा किनु ख़ून हारन ।।
यि कमि विज़ि छुख च़ु लूकन लोन लेखन ।
दोंपुस तंम्य क़लम छुय नरकोन लेखन ।। ५५ ।।
सपुन शीतल यि अख नर बॅयि कोनुय ।
यि कर रुत लेखि लूकन करमु लोनुय ।।

है। तब वह (मन्दोदरी) उससे (सीता से) कहने लगी—तुझे किसने दूध पिलाया और जब माँ ने जन्मते ही फेंक दिया तो किसने तेरा लालन-पालन किया ? वह बोली—मुझे राजा जनक ने पाला-पोसा और अब यह ख़बर नही कि यहाँ किस लिए आई हूँ। दोनों ने एक दूसरे से अपने रहस्य कहे और वह (मन्दोदरी) अफ़सोस करते हुए अपनी छाती और सिर पीटने लगी। ५० तो क्या यह हमारी लंका का क्षय कर डालेगी और उसके मांस पर जैसे चींटियाँ दौड़ने लगीं। वह ख़ूब रोयी तथा धर्मराज से कहने लगी—हे धर्मराज ! तुम क्या जानो कि यह क्या हो गया है। किसी दिन तुम्हें ख़ुद को निबटाना होगा—यह ध्यान रखना। यह कौन-सी ना-समझी है तेरे विधान की ? काश ! तेरे ख़ुद के कोई पुत्री जन्मी होती या फिर सीता जैसी पुत्री को तुझे पालना पड़ता। तू अपनी भाग्य-लेखनी (क़लम) को तलवार की तरह चलाता है और वह स्याही नहीं बल्कि ख़ून फेंकती है। जाने किस घड़ी तुम लोगों के भाग्य लिखे जाते हों, यह तुम्हारी लेखनी नहीं बल्कि अन्धी नली है। ५५ एक तो यह पोली है और फिर अन्धी। तो भला यह लोगों का अच्छा भाग्य लिख ही कैसे सकती है ? मैं उस (क़लम) के गले पर छूरी फेर दूँगी अन्यथा मेरे भाग्य के सीधे अक्षर लिखकर व्याधियों को दूर कर दे। उसने कितने ही लोगों

दपन छस तस हंटिस प्यठ श्राख ऑसिन ।
नतय लीखिन अछर सॆद्य व्याद कॉसिन ।।
कॅरिन तिम डाख लूकन हुंज़ि वॉसे ।
यि छा ज़ानन यि वोज़ुनु यियिनु कॉसे ।।
यि छा गंज़रन छु दशरथ राज़ु सोरुय ।
ख़बर छयना छु यथ लॆंजि वाज़ु सोरुय ।।
हंटिस प्यठ रामु ज़ुव यॆलि श्राख थाव्यस ।
मुच़ॉर्यस चोंट पोंज़ पोंज़ बोलुनाव्यस ।। ६० ।।
अमा अंन्य बाज़ुरस कान्यन छु क्याह राह ।
कॅरिथ लूट मूट गोंय शामन छु क्याह राह ।।
पोंज़ुय वनि गाटुल्यव यिमु कथु पथ कुन ।
व्यच़ारु वति युस नु पकि तस अथु पथ कुन ।।
क़लम तुल लेख रुत रुत जायि जाये ।
मु अन फिर्‌य फिर्‌य पॅतिमि प्राने बलाये ।। ६३ ।।

सुतायि हुन्द तलाश

पगाह यॆलि सिरियि खोंत पॆयि ज़ून तस याद ।
अथस क्यथ ह्यथ वोंदुनि वोंथ तेगि फ़वलाद ।।

की आयु को ख़ाक में मिला दिया । वह समझती है (कि उसके द्वारा लिखे गए अक्षरों को) कोई देख नहीं सकता है । वह समझती है कि राजा दशरथ ही सब कुछ हैं मगर उसे ख़बर नहीं कि इस हँडिया (देह) में बावरची (मन) ही सब कुछ है । जब (उसके) गले पर रामचन्द्रजी छुरी रखेंगे तो उसका मुँह खोलकर उससे सच-सच बुलवाएँगे । ६० अन्धे बाज़ार में कानों का क्या दोष ! लूटमार करके (लोगों के भाग्य के साथ अन्याय कर) वह शाम को तेरे पास आती है । बुद्धिमानों ने सचमुच यह बात ठीक ही कही है कि जो विचारशीलता के मार्ग पर नही चलता है उसके दोनों हाथ पीछे की ओर हो जाते हैं (वह निष्क्रिय बन जाता है) । इस लिए तू क़लम उठा और स्थान-स्थान पर शुभ अक्षर लिख और पुरानी बलाओं की पुनरावृत्ति न कर । ६३

सीता की तलाश

कल जैसे ही सूर्य चढ़ा तो उसे चाँद याद आ गया । वह हाथ में फ़ौलाद की तेग़ (बड़ी तलवार) लेकर खड़ा हो गया ।

हरुनि लोंग ओश करुनि लोंग दोंन पखन वाश ।
येंछिन दय अनि गंटिस पेंयि दोंन अंछिन गाश ।।
नज़ुरि येंलि दोंह वोंथ छारुनि लोंग रांत्र ।
कथा छा छारिना बांत्रस पनुन बांत्र ।।
यिवन येंलि दोंह गछ्न तेंलि कोंत सना रात ।
ति कस वनु पानु वांन्य मेलन नु तिम ज़ात ।।
दोंहन यामथ प्रबातुक जामु छुन नांल्य ।
वनुनि लोंग रांत्र कुन बुथ खट सोंन्दर मांल्य ।। ५ ।।

बुथिस तमि बुरकु द्युत तमि लोग दरबार ।
कोरुन ख्योंन चोंन तु ह्योंन द्युन गरुम बाज़ार ।।
शोंगन येंलि तिम ज़ु तेंलि वथुरन रंतुन छी ।
तवय यिम जीव सांरी अंछ वटन छी ।।
खंटिथ येंलि कालु सरफव थोंव त्रन्दन कुल ।
फंटिथ लोंग मुशुक नेरुनि फोंल यि सोंबुल ।।
सु यामथ कीशि बन्द छुय मुत्रुरावन ।
पंजरस थोंव लंदिथ छोंत पांज़ कावन ।।
परन दोंन तल खंटिन कावन पंत्य ठूल ।
लंबिख कर कांसि ज़ाजायख स्यठा ज़ूल ।। १० ।।

आँखों से आँसू वहाने लगा और अपने दो पंखों को फैलाकर कामना करने लगा कि अँधियारे की आँखों में भी प्रकाश व्याप्त हो जाय ! नजरों से जब दिन ढल गया तो वह अपनी रात को ढूँढने लगा। क्यों न हो, अपने प्रिय को प्रेमी क्यो न ढूँढे ? जब दिन आता है तो जाने रात कहाँ चली जाती है—किसे यह ख़बर है कि वे दोनों कभी एक दूसरे से मिलते भी हैं या नहीं। दिन ने जैसे ही प्रभात का चोला पहन लिया तो रात से कहने लगा—री सुन्दरी, अब तू अपना मुखड़ा छिपा ले। ५ वह मुँहपर बुरका पहनकर कार्यकलाप करने लगी तथा खाना-पीना लेना-देना आदि प्रारम्भ हुआ। जव वे दोनों (दिन और रात) सोते हैं (समागम होता है) तो उनकी सेज पर रत्न जड़ जाते है और सारे जीव उन्हें देख आँखें बंद कर लेते हैं। जव काले सर्पो ने चन्दन के वृक्ष को छिपा दिया (ढक दिया) तो उसकी सुगंध (मुश्क) फटकर वाहर निकल आई और सुम्बुल (एक प्रकार की महकीली घास) खिल उठा। वह (चाँद) जैसे ही अपने केश-वन्द को खोलता है तो लगता है जैसे सफ़ेद बाज़ को कौवे ने पिंजरे में डाल रखा

अमा यिम लालु लंट्य छिस शोलु दिवान ।
अमी सूत्य तोति कँछा द्रींठ्य यिवान ।।
मुलाहज़ु नय दुहुक कँह आसिहे रांत्र ।
अपुज़ छुनु राविहे वांत्रस पनुन वांत्र ।।
दोंहुच सूरत वुछन छुख रांत्र हुंज़ डेश ।
सरापा रात सांरुय सोंनु संज़ डेश ।।
रोंपु तनि नांल्य छुस ज़ंगांर्य अलवान ।
छि तारख मोंखतु हारव कनि अवेज़ान ।।
त्रोंदुश त्रन्दरमु मा छुय तरंगु तंमिसुन्द ।
सवुज़ रंगु पूत्रि प्यठ छुस लोगुमुत गोंन्द ।। १५ ।।

यि गटु यिछ त्रंन्दुरमस हन हन छि गालन ।
ति मा तथ पूत्रि सु व्योंन व्योंन छु वालन ।।
वंछ अथ नारस तु गटुकारस अन्दर कुन ।
सन्ध्या समयस प्रबातन लाटि ह्योंत वन ।।
यिथय पांठिन सफ़ेदी हुन्द छु प्रकाश ।
यिथय पांठिन यिवन छुय गटि अन्दर गाश ।।

हो, या कौवे ने अपने पंखों के नीचे जैसे अण्डों को छिपाकर रखा हो जो किसी को भी मिलते नहीं। भले ही उसके लिए कितने प्रयत्न किए जाएँ। १० गले में (आस-पास) लाल-जवाहर की मालाएँ प्रकाशित होती हैं और इसीसे वह दिखने में आ जाता है। यदि रात को दिन की (तड़पन का) कुछ ख़याल होता तो यह झूठ नहीं कि प्रिय से प्रिय कभी नहीं बिछुड़ जाता। दिन की सूरत देखकर अब तू रात को भी देख जो नख से शिख तक गहनों में डूबी हुई है। उसके रजत तन पर पीले रंग का चोला सुशोभित है और मुक्ताओं के हार के बदले तारक (तारे) झूल रहे हैं। चौदशी का चन्द्रमा उसका तरंग[1] है और उस पर लगा सब्ज़ रंग (का दाग़) एक गमला है। १५ अन्धकार इतना गहन है कि चन्द्रमा धीरे-धीरे चलता जाता है और उसकी तहें अलग-अलग होकर गिर रही है। अग्नि व अन्धकार में वह (रात) कूद पड़ी और प्रभात व सन्ध्या के समय उसकी लाली दिखाई देने लगी। इसी तरह फिर प्रकाश, फिर अन्धकार और फिर

---

१ कश्मीरी हिन्दू स्त्रियों का पहनावा। पगड़ी की तरह इसमें कई तहें होती हैं तथा इसे सिर पर पहना जाता है।

सिरियि हरमोखु छु तथ गचि रांग्र मंज़बाग ।
छे तथ अन्दर ज़ु अछ ज़न अमर्यतुक नाग ।।
यि अमर्यथ युस चवन तस व्याद कासन ।
दपन तथ मंज़ छु मा याक़ूत आसन ।। २० ।।

गंडिथ तथ तारुकव सूतिन छि पंलयार ।
गिलन मारन पलन प्यठ कर छि शहमार ।।
क्रुहुन शहमार तति सिरियस खटन छुय ।
यि क्याह् गव नालुमति नारस रटन छुय ।।
चरुख दिथ नारु प्यठु रुम रुम छि फेरन ।
दज़न छिनु बँयि छि तिम सोबूथ्य नेरन ।।
यि गव नाराह् सु यथ दूरी वंछुस प्रव ।
दंज़िथ गव नारु सूत्य युथ छुय दज़न ग्यव ।।
सिफ़त सरफन छु योंत गुज़ुरन बुछन छी ।
तिमव बुछ तिम तिमन कुन यिम वुछन छी ।। २५ ।।

स्यठा अमि पुछि तंथी पथ कुन छि रोज़न ।
तवय अंन्य रात क्युत शोंग्य शोंग्य छि रोज़न ।।
अमा बुछनुक तु दज़ुनुक तस दवा छुय ।
अंछिर वालन अन्दर वोलमुत गवाह छुय ।।

प्रकाश आता-जाता है । काली अन्धेरी रात में सूर्य छिपा रहता है और हरमुख (तीर्थ विशेष) के निकट दो झीलें अमृत से भरी दो आँखों के समान चमक उठती हैं, जिनका पानी पीकर सारी व्याधियाँ दूर हो जाती हैं । क्योंकि कहते हैं, उसमें याक़ूत (बहुमूल्य पत्थर) रहता है । २० उसके तट तारकों से युक्त होते हैं और साँप की तरह उसका पानी बल खाता है । काले नाग जैसे सूर्य को छिपा देते है और अग्नि को जाने क्यों गले से लगा लेते हैं । आग पर फिर-फिर कर वे अपने रोम-रोम को भुना देते हैं मगर फिर भी वे जलते नहीं बल्कि साबूत (पूरे) रहते हैं । इस अग्नि के प्रकाश व ताप में वे ऐसे गलते हैं जैसे ज्वाला से घी । साँपों की यह विशेषता है कि वे जहाँ से गुज़रते है वहाँ पर उनकी ओर देखनेवालों (छेड़नेवालों) को काटते है । २५ अपनी ओर से वे बहुत पीछे रहते है (काटना नहीं चाहते) और अन्धेरे में लेटे रहते हैं । वैसे, साँप के

गौनन गंज़ुरन दवा यामथ छु हावन ।
मंरिथ तंमि सुत्य मनश अंछ मुच्चुरावन ।।
गरज़ यैलि रामुजुव्य लंखिमन यिवन ड्यूठ ।
दौपुन क्याह् तां सपुन डोख दिथ पथर ब्यूठ ।।
मुच्चुर अंछ रामच्चन्दुरन दूत गोलुन ।
स्यठाह् सखती कंड़िथ तस पोस वोलुन ।। ३० ।।

तुलुन अकि तरफ़ु यां ओसुस ज़ि खंजर ।
गछ्न बैयि तरफु तां ओसुस बराबर ।।
दौपुस ताम राखिसन अख यी कौरुय फ़न्द ।
किजव सुतिन ज़ंमीनस सुत्य कौरुन वन्द ।।
दितुन तस शाफ गछ्न गुह्य र्यून्ज़ सांपन ।
वौनुथ सुलि कोनु यौत तां वोत लंखिमन ।।
पकन गव गरकुन ड्यूठुन सु लंखिमन ।
प्रछुनि लौंग तस कौरुथ तति क्याह् पौज़ुयवन ।।
दौपुस लंखिमन ज़ुवन सोरुय तसुन्द हाल ।
पकन गंयि जंगुलस मंज़ फीर्य यंच्चकाल ।। ३५ ।।

काटने की दवा भी हैं । इस गुणप्रद दवा को जैसे ही सामने लाया जाता है तो मरा हुआ मनुष्य आँखें खोल देता है । ग़रज यह (संक्षेप में) कि जव रामचन्द्रजी ने (दूर से) लक्ष्मण को अपनी ओर आते हुए देखा तो वे सोचने लगे कि अवश्य ही कुछ (अनोखा) हुआ है और वे सहारा लेकर नीचे बैठ गए। दैत्य को रामचन्द्रजी ने मार डाला था और ख़ासी सख़्ती के बाद उसकी खाल उतारी थी । ३० वे जैसे ही खंजर उठाकर उस पर एक तरफ़ से वार करते तो वह एकदम दूसरी तरफ़ करवट बदल लेता । तभी उस राक्षस ने उनसे कहा कि आप के साथ छल किया गया है और (रामचन्द्रजी ने) उसे खूँटियों द्वारा जमीन में बंद कर दिया । तब (रामचन्द्रजी ने) उसे शाप दिया कि जा तू गोवर का एक छोटा गोला बन, क्योंकि तूने यह बात पहले क्यों नहीं बताई, जो लक्ष्मण यहाँ पहुँच भी गया । वे (तुरन्त) घर की ओर चल दिए और लक्ष्मण को (मार्ग में) देख लिया । उससे वे पूछने लगे—वहाँ के क्या हाल हैं, सच-सच कहना । लक्ष्मण ने (सीता का) सारा हाल कहा और दोनों जंगल में काफ़ी समय तक फिरते रहे । ३५ दोनों चलते गये । उन्होंने वृक्षों को रोते और विलाप करते

पकन गंयि कुल्य रिवन डीठिक दिवन नाद ।
ग्रहुन गव चन्दुरमस दिथ दाद व बेदाद ।।
पकन गंय वंन्य दिवान कोहन तु बालन ।
सों गांमुत्र दाग़ थांविथ दौन गुलालन ।।
पकन गंय नालु त्रावन कोहु सारन ।
प्रछ़न शेंछ आंस्य वनुक्यन जानवारन ।।
न कुनि आंसी बेंहन नु कुनि रोज़न ।
यि वोंन सीतायि ती प्रथ जायि बोज़न ।।
वुछुख ड्यूठुख जटायुन सख़्त ग़मनाक ।
प्योंमुत बर ख़ाकि ग़म जामन दितुख चाक ।। ४० ।।

वंनिन शेंछ रावुनुन्य सांरुय तिमन कुन ।
वंतिथ वोंबरोव दीहु निशि मोंख़्त सांपुन ।।
दितुख तस दाह मछ़न प्यठ मोंख़्त सांपुन ।
पकन गंयि बांय बारुन्य तिम कोंहन कुन ।।
तंमिस तति रामुचन्दुरुन वादु पोलुन ।
मछ़न दौन प्यठ जटायुन पानु ज़ोलुन ।। ४३ ।।

देखा। सभी यही कहते कि चन्द्रमा को ग्रहण लग गया। दोनों कोहिस्तानों व पहाड़ियों को खोजते-ढूँढते चलते गये। वह (सीता) गुले-लालों[1] को अपना दाग़ देकर जाने कहाँ चली गई। वे नालों व पर्वतमालाओं को पीछे छोड़ते हुए चलते गये तथा वन के जानवरों (पशु-पक्षियों) से (सीता जी के) समाचार पूछते जाते; न कहीं पर बैठते और न कहीं पर रुकते। सीता जी ने जहाँ-जहाँ जो समाचार रखा था उसे सुनते और आगे बढ़ते जाते। (एक स्थान पर) उन्होंने जटायु को देखा जिसकी हालत बहुत ग़मनाक (दयनीय) थी। उसे ख़ाक में मिला हुआ देख दोनों ने अपने वस्त्र चाक कर डाले। ४० उस (जटायु) ने उन्हें रावण की सारी बात बताई और यह कहकर (वह प्राण त्याग) देह से मुक्त हो गया। रामचन्द्रजी ने उसका अपनी भुजाओं पर दाह-संस्कार किया और वह मुक्त हो गया। तब वे दोनों भाई पहाड़ों की तरफ़ चल दिए। देखिए, रामचन्द्रजी ने अपनी रीत निभाई और अपनी दो भुजाओं पर जटायु का दाह-संस्कार किया। ४३

१ एक पुष्प जिसके मध्य मे दाग़ होता है।

लीला

गंयामय राम जुव वन कोनु आमय,
मरस तय वौन्य परस वो रामुरामय।

दपन यी आस्य जानावार सारी,
गंयायस अंस्य पनुन्य कलु दार्‌य दारी।
म बर दौख कर चु यथ तनि सानि जामय,
मरस तय वौन्य परस वो रामु रामय ॥ १ ॥

करस तथ मील यिम छिम दौन अंछन लाल,
कलम छारुन्य छिनुह तिम छिम अंछिरवाल।
यि वौन सुतायि ती लेखस बु नामय,
मरस तव वौन्य परस बो रामु रामय ॥ २ ॥

वुछुक मेंच्रि सुत्य मेंच्र गोमुत जटायन,
वदन यंच्र वाकि पानस श्राकु लायन।
दपन छी वुरजु खोतन यंच्र दज़ामय,
मरस तय वौन्य परस बो रामु रामय ॥ ३ ॥

भजन

रामचन्द्रजी वन में गये थे, जाने वे लौटकर क्यों नहीं आये। हम उनके विना अब राम-राम रटते हुए मर जाएँगे। सभी पशु-पक्षी यही कहने लगे कि हमने तो अपनी ओर से अपने सिर खूब पटके (पर सीता को उस क्रूर राक्षस के चंगुल से न वचा सके) अब हे रामचन्द्रजी ! आप दुखी न हों, आप हमारे तन के वस्त्र वनाएँ (हम आपके लिए अपनी जान निछावर करने को तैयार है)—हम उनके विना अव राम-राम रटते हुए मर जाएँगे। १ (रामचन्द्रजी कहने लगे) मेरी आँखों की ये दो पुतलियाँ दो दावातें हैं और उनसे वहने वाले आँसू स्याही है। क़लम को ढूँढने की ज़रूरत नहीं है, वरौनी यह कार्य करेंगी। सीता ने जो कुछ भी कहा उसे मैं (आद्यन्त) लिख डालूँगा—हम उनके विना अव राम-राम रटते हुए मर जाएँगे। २ उन्होंने जव जटायु को मिट्टी के साथ मिट्टी वना हुआ देखा तो भावविभोर होकर विलख पड़े और उनके शरीर पर जैसे छुरियाँ चल पड़ीं। वे कहने लगे कि भोजपत्र जैसे तुरन्त जल जाता उससे तेज़ गति से हमारा हृदय जल रहा है—हम उनके विना अव राम-राम रटते हुए मर जाएँगे। ३ सीता के साथ जो कुछ भी बीती सवको

यि कैंछाह् रंग तस सुतायि प्यठ गव,
ति वोंबरोवुन वंनिथ सोरुय सपुन शव।
लंबुन ना मोख्त मछन दोंन प्यठ दज़ामय,
मरस तय वोंन्य परस बो रामु रामय॥ ४॥

पकन गंय परवतस प्यठ वांदरव डीठच,
वुछिख येंलि कोह् ही वांदर पथर बीठ्य।
तिमव वोंन क्याह् छि यिम सुबह् रूपु शामय,
मरस तय वोंन्य परस बो रामु रामय॥ ५॥

कमाना ह्यथ नखस प्यठ यिम छि लारन,
यिमन क्याह् रोवमुत यिम क्याह् छि छारन।
प्रुछुनि तोंत पानु हलमुत लोंदुर आमय,
मरस तय वोंन्य परस बो रामु रामय॥ ६॥

प्रुछुनि लंग्य पानुवांन्य बांविख पनुन्य रंग,
समुनि लंग्य नखु तु मुज्रुरांविख पनुन्य लंग।
हनूमानस दोंपुन मेंय शेंछ लज़ामय,
मरस तय वोंन्य परस बो रामु रामय॥ ७॥

हनूमानन वोंनुस सोरुय सु कारन,
सु वाली क्याज़ि सुगरीवस छु मारन।

कहकर वह (जटायु) शव हो गया (उसने प्राण त्याग दिये)। तब दो भुजाओं पर जलकर उसने मुक्ति पाई—हम उनके बिना अब राम-राम रटते हुए मर जाएँगें। ४ वे दोनों पर्वत की ओर चलते गए और (वहाँ पर) वानरों ने उन्हें देख लिया। उन्हें पर्वत की ओर आते देख वानर नीचे बैठगए और आपस में कहने लगे कि ये सुबह और शाम के रंग के कौन है? हम उनके बिना अब राम-राम रटते हुए मर जाएँगे। ५ ये कन्धे पर कमान रखे चले आ रहे है, भला इनका क्या खोया है और ये किसे ढूँढ रहे है? (तभी) उनके पास स्वयं हनुमान (समाचार) पूछने आये—हम उनके बिना अब राम-राम रटते हुए मर जाएँगे। ६ एक दूसरे का हाल-चाल पूछकर सभी पुलकित हो गए। उनके इर्दगिर्द दूसरे (वानर) इकट्ठे हो गए। हनुमान से उन्होने (रामचन्द्रजी ने) कहा—मैं ने ही तुम्हें यहाँ बुलाया है हम उनके बिना अब राम-राम रटते हुए मर जायेंगे। ७ हनुमान ने (रामचन्द्रजी से) वे सारे कारण बताये कि क्यों सुग्रीव को यह वालि मारता है और तब रामचन्द्रजी ऋष्यमूक पर्वत की ओर गए—हम

तवय तस मनकु रेंश्य सुन्द गरु गंयामय,
मरस तय वौन्य परस वो रामु रामय ॥ ८ ॥

ऑनुन सुगरीव पादन तल परन प्योस,
वुछुन दरशुन स्यठाह मन साविदान गोस।
दोंपुस तंम्य चोन दरशुन मे मंजामय,
मरस तय वौन्य परस वो रामु रामय ॥ ९ ॥

दोंन्दुव सौर दूत येंलि तंम्य वालियन मोर,
मना सौर राखिसन कैंह क्याह कौरुन ज़ोर।
वोंथुस वाली सु छ्यफ ह्यथ गौफि त्रामय,
मरस तय वौन्य करस वो रामु रामय ॥ १० ॥

वुहर्य गौफि निशि रतुक दंरियाव होवुन,
गंलिस तमिकिस सु परबुत ठानु थोवुन।
त्रेयिमि वुहरि सु वाली तोरु द्रामय,
मरस तय वौन्य परस वो रामु रामय ॥ ११ ॥

कौरुन यंत्र क्रूद वायिस प्यठ असथ ओस,
असतु किन्य ज़ोरु तस तारायि ह्यथ गोस।
दितुन जुव कमि असतुकि क्रूदु कामय,
मरस तय वौन्य परस वो रामु रामय ॥ १२ ॥

उनके बिना अब राम-राम रटते मर जायेंगे। ८ सुग्रीव आए और उनके (रामचन्द्रजी के) चरणों में प्रणाम किया। दर्शन पाकर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए। उस (सुग्रीव) ने कहा कि आप के दर्शनों की मुझे खूब चाह थी हम उनके बिना अब राम-राम रटते मर जायेंगे। ९ दुंदुभि दैत्य को जब उस वालि ने मारा तो मनसुर (मायावी राक्षस) ने काफ़ी ज़ोर लगाया। वालि ने उसका प्रतिकार किया और वह गुफ़ा में घुसकर छिप गया--हम उनके बिना अब राम-राम रटते मर जायेंगे। १० एक साल के बाद गुफ़ा के मुँह पर एक बड़ा पर्वत खण्ड रख दिया। तीसरे वर्ष के बाद वह वालि वहाँ से (बाहर) निकल आया--हम उनके बिना अब राम-राम रटते मर जायेंगे। ११ उसने (वालि ने) खूब क्रोध किया और भाई (सुग्रीव) के विरुद्ध हो गया। असत्य (अधर्म) पर चलकर उसकी पत्नी को छीन लिया तथा इस अधर्म व क्रोध के कारण अपनी जान भी दे दी--हम उनके बिना अब राम-राम रटते मर जायेंगे। १२ (वालि ने कहा) आपने मुझ जैसे बलवीर को क्यों मारा। मैंने क्या किया था जो आपने चोरी छिपे मुझ

वन्यानस क्याज़ि मोरुथ त्युथ बलवीर,
मे क्या कौरमय च्रे दितुथम च़ूरि त्युथ तीर।
ति मा ज़ोनुथ च्रे मा दिन वीर पामय,
मरस तय वौन्य परस बो रामु रामय॥ १३॥

दोंपुस तम्य तोरु च्रे इन्साफ़ छुयना,
नियथ गरि बाय काकन्य पाफ खंतीना।
मे कर कौरमय च्रे केंह इन्साफ़ आमय,
मरस तय वौन्य परस बो रामु रामय॥ १४॥

॥ अरन्यकांड समाप्त॥

पर तीर चलाया। आपने यह नहीं जाना कि बाद में वीर लोग आपको उलाहने देंगे—हम उनके बिना अब राम-राम रटते मर जायेंगे। १३
इस पर उस (रामचन्द्रजी) ने कहा—तुझे ज़रा भी इन्साफ़ न रहा। तूने अपनी भाभी को घर में रखा तो क्या तुझे पाप नहीं लगा? मैंने तेरे साथ कुछ भी तो नहीं किया है (यह सब तेरे कुकर्मो का फल है)—हम उनके बिना अब राम-राम रटते मर जायेंगे। १४

॥ अरण्यकाण्ड समाप्त॥

किशकिन्दा कांड

वाली सुन्द मारुन् गछुन

करिथ गंयि चाक जामन खाक वर सर ।
वुछिक कोहस अंकिस प्यठ आस्य वांदर ।।
तिमव येलि वुछ तुलुख यंत्र नालु फ़र्ययाद ।
दोंपुख यिम दीव छा किनु आदमी ज़ाद ।।
कमाना ह्यथ नखस प्यठ कोंत छि लारन ।
यिमन क्याह् रोवुमुत यिम क्याह् छि छारन ।।
हनूमानन दोंपुख कस क्याह् छु मोलूम ।
छि साहिबज़ादु जोराह लूक्य मोसूम ।।
बं छुस ज़ानान छि यिम वारुन्य बलावीर ।
ज़मीनस सुत्य सुवन आकाश अज़ तीर ।। ५ ।।

समन्दर तीरु सुत्य ज़न गासु ज़ालन ।
यिवन युस ब्रोंठु दुशमन तस छि गालन ।।
दोंपुन प्रुछुहख गंछिथ यिम योर कोंत आय ।
मेथुर छा किनु शेथुर योंद करनि मा आय ।।

किष्किन्धा काण्ड

वालि का मारा जाना

अपने वस्त्रों को चाक करते हुए वे (राम-लक्ष्मण) आगे बढ़ते गये और (एक स्थान पर) उन्होंने पर्वत पर वानरों को देखा। जब उन्होंने (वानरों ने) उनको देखा तो वे जोर से शोर मचाने लगे और कहने लगे कि ये देव हैं या आदमजाद! कन्धे पर कमान लिये ये कहाँ जा रहे हैं? इनका क्या खो गया है और ये किसे ढूँढ़ रहे हैं? हनुमान ने (वानरों से) कहा—मालूम नहीं, क्या बात है। ये दो साहबजादे (राजकुँवर) हैं, जो अत्यन्त मासूम व कमसिन लग रहे हैं। मैं इन्हें अच्छी तरह जानता हूँ। ये दोनों भाई बड़े बलवीर हैं तथा आकाश को जमीन के साथ तीरों से सी कर रख देनेवाले हैं। ५ समुद्र तक को अपने तीरों द्वारा घास की भाँति जला सकते हैं और उनके सामने जो कोई भी आता है, उसको गला (नष्ट) कर रख देते हैं। हनुमान ने कहा कि मैं जाकर उनसे यह

पकन गव पानु हलमुत रंग बूज़ुन ।
स्यठाह ख़ोश गव पनुन पाग़ाम सूज़ुन ।।
ओंनुन सुगरीव पादन तल परन प्योस ।
दपन सुगरीव वांदर पादशाह ओस ।।
करुख शादी दिलुक्य ग़म गोसु त्राविख ।
अंकिस अख पानुवान्य अहवाल बाविख ।। १० ।।
परन येलि प्योस लीला वारु वंनिनस ।
शरन सांपुन दपन तंम्य आर ओंनुनस ।। ११ ।।

सुगरीव छु असतुती करान

लोलु 'अंस्य करहोय पोशि वरशुन ।
श्री रामु असि हाव शोंबु दरशुन ।।
मनुकिस बाग़स सन्तूशि ब्योल वव,
अमुर्‌यतु ज़लु सूत्य सगुनावतम ।
न्यरमल वोंन्दु कर अमुर्‌यतु मूलु आसन,
श्री रामु असि हाव शोंबु दरशुन ।। १ ।।

पूछ लेता हूँ कि वे यहाँ कैसे आयें ? वे (हमारे) मित्र हैं या शत्रु । कहीं हमारे साथ वे युद्ध करने को तो नहीं आये हैं ? हनुमान स्वयं उनके पास गया और उनके समाचार सुने । वह बहुत ख़ुश हुआ और उसने (सुग्रीव के पास) पैग़ाम भेजा । सुग्रीव को बुलवाकर उसने (सुग्रीव ने) रामचन्द्रजी के पादों में प्रणाम किया । कहते हैं, वह सुग्रीव वानरों का पादशाह था । दोनों एक-दूसरे से मिलकर ख़ुश हो गये । वे दोनों ग़म व दुःख भूल गये तथा एक-दूसरे को अपना अहवाल कहने लगे । १० सुग्रीव ने (उनके चरणों में) प्रणाम कर उनकी स्तुति की और उनकी शरण में जाकर उनके हृदय में दया-भाव जगाया । ११

सुग्रीव द्वारा स्तुति करना

हम प्रेम-मग्न होकर आप पर पुष्प-वर्षा कर रहे है, हे श्रीराम ! हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । हमारे मन-रूपी बाग़ में संतोष का बीज बो दीजिए और उसे अमृत के जल से सींचिए । हमारे हृदयों को निर्मल कर दीजिए ताकि उनसे अमृत-मूल निकल आयें—हे श्रीराम ! हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । १ हम इच्छापूर्वक आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे और हर

यछ़ वंर्य वंर्य अंस्य अंमिस आंस्य गारन,
छ़ारन छ़ारन प्रथ जाये ।
सथ वावुह सुतिन ज्रेय छी गारन,
श्री रामु असि हाव शोवु दरशुन ॥ २ ॥

दीवताह आसिथ रूफ अंस्य दारन,
जन्मस चानि पुछ़ि योत यिवान ।
तनु मनु मनु तनु येछ़ि शुत्य गारन,
श्री रामु असि हाव शोवु दरशुन ॥ ३ ॥

फीरिथ वाली छु ज़ोरआवर मारन,
कोहन तु वालन छे रंटमुत्र जाय ।
तंम्य सुन्दि वीमु सुत्य तनु छुस वं थारन,
श्री रामु असि हाव शोवु दरशुन ॥ ४ ॥

मनु किन्य वावय ईशरुह कारन,
मनाह सोर राख्युसा ज़ोर आवार ।
योदस वाली तरा गव लारन,
श्री रामु असि हावं शोवु दरशुन ॥ ५ ॥

कोहन त्राविथ लागिन गारन,
वेयि वुहरि वाली फीरिथ द्राव ।

जगह आपको ढूंढ़ रहे थे । अव सद्भाव से आपकी वंदना कर रहे हैं—हे श्रीराम! हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । २ हमने देवताओं का रूप धारण कर लिया और आपकी खातिर जन्म लेकर यहाँ आ गये । तन से, मन से और मन से व तन से आपकी हम वंदना कर रहे है—हे श्रीराम! हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । ३ वालि हमारा विरोधी वन गया है और हम पर ज़ोर-जब्र कर रहा है । (इसलिए) हमने इस पर्वत पर अपनी जगह वना ली है । उसके भय से मेरा तन थरथराता है—हे श्रीराम! हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । ४ हे ईश्वर ! मन से उन कारणों को कह रहा हूँ जिनसे वालि मेरे विरुद्ध हो गया । मायावी राक्षस एक वहुत वड़ा जोरावर राक्षस था । वालि उसके पीछे युद्ध करने को भागा—हे श्रीराम! हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । ५ पर्वतों को पारकर वे (एक) गुफा में घुस गये और तीन साल के वाद वालि उस गुफ़ा से वापस निकल आया । मैंने उस गुफ़ा के सिरे पर एक वड़े पत्थर को (क्यों) रखा था, इस वात पर

ठानु पुछ्य छारान तनु छुम मारन,
श्री रामु असि हाव शोंबु दरशुन ।। ६ ।।

ह्यथ गोम तारायि लोंगुस कोहुसारन,
बीमु तसुन्दि सुतिन कांपान छुस ।
येंछि सुत्य वोंनमय ईशरुह कारन,
श्री रामु असि हाव शोंबु दरशुन ।। ७ ।।

येंछि हुन्दि सरुह मंजु पम्पोश खारन,
लागय शेरस श्री रामु च्रेय ।
च्रुय छुख ब्रह्मु वेंशिन वोंनुमय कारन,
श्री रामु असि हाव शोंबु दरशुन ।। ८ ।।

आकाशि वानी प्रकाश वावन,
अन्दुकारु गटु कास प्रकाशि सुत्य ।
रात दोंह च्रेय छुय "प्रकाश" छारन,
श्री रामु असि हाव शोंबु दरशुन ।। ९ ।।

रामु च्रन्दुर छु सुगरीवस सुत्य समवाद् करान

वोंनुख याम रामु च्रन्दुरन हालि सुता ।
वंसिथ प्यव बर ज़मीन सुगरीव अज़ पा ।।

वह तब से मुझे (बार-बार) मारने को आता है—हे श्रीराम ! हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । ६ वह मेरी पत्नी (तारा ?) को ले गया और मैं तब से इन कोहिस्तानों मे भटक रहा हूँ तथा उसके भय से काँपता हूँ । हे मेरे ईश्वर ! मैंने इच्छापूर्वक (सच-सच) आपको सब कारण बता दिये हैं—हे श्रीराम ! हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । ७ मैं अपने मन-सरोवर में खिले हुए कमल को निकालकर, हे रामचन्द्रजी ! आपके शीर्ष पर लगाऊँ ! आप ही ब्रह्मा व विष्णु हैं । मैंने आपको सब कारण कह डाले —हे श्रीराम हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । ८ आकाशवाणी हुई और (चारों ओर) प्रकाश फैल गया । (हे रामचन्द्रजी !) आप अपने प्रकाश से हमारा अन्धकार दूर कर दीजिए । रात और दिन आपके ही प्रकाश को ढूँढ़ते हैं—हे श्रीराम ! हमें अपने शुभ दर्शन दीजिए । ९

रामचन्द्रजी का संवाद सुग्रीव के साथ

जब रामचन्द्रजी ने सीता का हाल कहा तो (वह) सुग्रीव पीड़ित होकर ज़मीन पर गिर पड़ा । उसने (सुग्रीव ने) कहा कि आपका दुश्मन

दोंपुन तस कुन च़े छुय वेगानु दुशमन ।
मे छुम दुशमन पनुन ज़्युठ बोय थव कन ॥
दपान सुगरीव छुम ज़्युठ वोय वाली ।
सु करान आंश बु फेरान बाल्य वाली ॥
मनासोंर राख्युसा अख ओस यैच्र क्रूर ।
नज़ुरि अकि सृत्य करान ओस परवतन सूर ॥
नबुच व्रठ ज़न ज़मीनस प्यठ प्यवान ओस ।
प्यवन युस व्रोंठु दुशमन तस ख्यवान ओस ॥ ५ ॥

ख़ेयन येलि वारुयाह् वदराह् सांपुन ।
करुनि लोंग आज़मायिश वांदुरन कुन ॥
अंनिन व्रख वालियस राख्युस बु मारन ।
गंयस यक्रवार अंस्य वारुन्य ज़ु लारन ॥
सु गव कमज़ोर व्रोंल गारस अन्दर व्राव ।
तोंतुय लारयोस वाली पथ कोंरुन वाव ॥
गंलिस प्यठ ग़ारुकिस रूदुस वं ठानह् ।
वुहुर्य तति रथ वुछुम नेरन निशानह् ॥

तो वेग़ाना (ग़ैर) है, पर मेरा दुश्मन तो खुद मेरा ज्येष्ठ भ्राता है, आप ज़रा यह ध्यान से सुनें। सुग्रीव ने कहा कि मेरा वड़ा भाई वालि है, जो खुद ऐश कर रहा है और मैं मारा-मारा फिर रहा हूँ। मनासुर (मायावी) नामक एक अत्यन्त क्रूर राक्षस था जो अपनी एक नज़र से पर्वतों को राख कर देता था। वह वज्र के समान ज़मीन पर गिरता था और जो कोई दुश्मन उसके सामने आता उसे खा जाता था। ५ जब उसने वहुत सारों को खा डाला तो काफी असंयत हो गया और वानरों की आज़माइश करने लगा (उन पर धावा वोलने लगा)। उसने वालि को छेड़कर उसके क्रोध को जगाया और हम दोनों भाई उसको मारने के लिए उसके पीछे भागे। वह कमजोर हो गया (हम दोनों की शक्ति का मुक़ावला न कर सका) तथा एक गुफा में घुस गया। वालि उसी (गुफा) के अन्दर वायु की तरह उसका पीछा करते हुए घुस गया। उस गुफा के सिर पर मैं (काफी दिनों तक) ढक्कन की तरह रखवाली करता रहा। एक साल के वाद (मैंने उस गुफा से) रक्त निकलते देखा। जव मैंने देखा कि वहुत-सारा रक्त नमूदार हो रहा है (निकल रहा है) तो मुझे गुमां हुआ (मैं यही समझ वैठा) कि वालि गुफा के अन्दर मर

स्यठाह् रथ यॅलि वुछुम सॉपुन नमूदार।
गुमां यी गोम वॉली मूद दर गार॥ १०॥

सपुन मुश्किल दोपुम कथ छम नु आसान।
तुलुम परबत दितुम तमिकिस गॅलिस ठान॥
वदन फ़र्याद लोयुम वाय्र वॉली।
कोरुग सार्यन वॅज़ीरन हाल हॉली॥
वदन तिम पॅंज़्य तु वांदर आस्य यकजा।
त्रॅयुम वॅरियाह् सपुन ताम गव सु पांदा॥
दोपुन मोरुम सु यॅलि ग़ारस अन्दर त्रास।
दितुनम ठान दीन वॅरियन न्यबर द्रास॥
न्यबर मा नेरि कवु थोवथम मे ठानह्।
न्यबर नीरिथ कड़थ वोन्य तानु तानह्॥ १५॥

ति वोंबरोवुन वॅनिथ ताराथि ह्यथ गोम।
पनुन आसिथ गॅयम परद्यन सुतिन कोम॥
यि कॅह् ओसुम ति सोरुय न्यूनम यकबार।
लोगुम मारुनि तु लारुनि त्रॉनिनम लार॥

गया होगा। १० मुझे इस घटना ने मुश्किल में डाल दिया। तब मैंने एक पर्वत-खण्ड को उस गुफा के सिरे पर ढक्कन की तरह रख दिया और रोते-रोते आवाज़ दी—हाय बालि! तब मैंने सभी वज़ीरों से यह हाल कहा। सभी वानर मिलकर इस समाचार को सुन रोने लगे। तीन साल जब बीते तो वह (बालि) पैदा हो गया (वापस आ गया)। उसने कहा कि गुफा में घुसने के बाद मैंने उस राक्षस को मार डाला मगर इस (दुष्ट सुग्रीव) ने ढक्कन रखकर मुझे अन्दर ही बन्द कर दिया। मैं कहीं बाहर न निकल सकूँ—इसलिए इसने ढक्कन रखकर मुझे बन्द करना चाहा। मगर अब मैं इसकी बोटी-बोटी नोच लूँगा। १५ यह कहकर उसने मेरी दुर्गति बनायी और मेरी पत्नी (तारा?) को ले बैठा। अपना होकर भी वह मेरे लिए पराया बन गया। जो कुछ भी मेरे पास था, उसे वह एकबारगी उड़ाकर ले गया। वह मुझे मारने लगा तथा डरा-धमकाकर उसने मुझे भगा दिया। मैं भागकर इस पर्वत पर आ गया, क्योंकि मेरे लिए बचने का और कोई स्थान न था। (इस पर्वत पर वह आ नहीं सकता) क्योंकि अगर वह इस पर्वत पर आता है तो उसका सिर कट जायेगा। कहते हैं, बहुत पहले उसने दुंदुभि दैत्य को मारा

खोंतुस पथ परवतस प्यठ छमनु कुनि वाथ ।
छ्येन्यस तेलि कलु योदवय वाति योत ज़ाथ ।।
दपन पथ कुन दोंन्दुव सोंर देव मोरुन ।
तसुन्द रथ रूद ह्यु प्रथ जायि वोलुन ।।
मनक रेश्य रथ वुछिथ दोंप कंम्य यि कोंर पाफ ।
स्यठाह ज्रख आयि तस अदु यी दितुन शाफ ।। २० ।।

लग्यस यथ परबतस प्यठ येलि तसुन्द पाद ।
दपन यमुराजु दियि तस वालियस नाद ।।
तवय असि आस रंटमुज्ञ येत्य बिहिन्य जाय ।
च्रु कर केंह पाय पादन तल छ्पुनि आय ।।
दोंपुस तंम्य रामु च्रन्दरन गछ च्रु दिस नाद ।
कंरिव तोंह्य योंद यिमय बो करु इमदाद ।।
दपन सुगरीव गोंडु हावुम पनुन्य ज़ोर ।
तुलन कलु दोंन्दुबुन तंम्य लोग तथ खोर ।।
ओंगुजि सुतिन कोंरुन तथ अख इशाराह ।
गंछिथ प्यठ दूर गंयि तथ पारु पाराह ।। २५ ।।

दोंपुस तंम्य येलि सु वाली ज़ोर हावन ।
अकी अथु सुत्य यिम कुल्य अलुरावन ।।

था, जिसका रक्त वर्षा की तरह हर कहीं गिरा था । मनक (मतंग) ऋषि ने जब यह रक्त देखा तो (गुस्से में आकर) कहा कि यह पाप किसने किया है? क्रुद्ध होकर उन्होंने यह शाप दिया— २० कि जब उस पापी (बालि) के पैर इस पर्वत से लगेंगे तो उसे यमराज का बुलावा आयेगा । इसीलिए हमने यहाँ पर इस स्थान को अपना निवास बनाया है । अब आप कोई उपाय कीजिए, हम आप के पादों पर गिरते हैं । तब रामचन्द्रजी ने कहा—जाकर उसे बुलाओ और युद्ध के लिए ललकारो । मैं फिर तुम्हारी इमदाद (सहायता) करूँगा । इस पर सुग्रीव ने कहा—पहले आप मुझे अपने ज़ोर (अपनी शक्ति) दिखायें (ताकि मैं आश्वस्त हो जाऊँ कि आप बालि को मार सकते हैं) तब रामचन्द्रजी ने दुंदुभि दैत्य के कपाल को (जो एक बहुत बड़ा सरोवर बन गया था) पैर लगाया और उँगली के इशारे (धक्के से) उसे दूर फेंक कर उसे खण्ड-खण्ड कर दिया । २५ उसने (सुग्रीव ने) कहा कि जब बालि ज़ोर दिखाने पर उतरता है तो एक ही हाथ से इन सभी वृक्षों को हिलाकर रख देता है ।

कमां तुज्य रामु च्रन्दुरन ज़ोर होवुन ।
गिलुनि सूतिन सु परबत दूर त्रोवुन ।।
ति डीशिथ ख़ोश सपुन सुगरीव दिल तंग ।
दोंपुन ब्रायिस न्यबर कुन नेर कर जंग ।।
तिथुय बूज़िथ सु वाली द्राव लारन ।
अंछिव किन्य नारु वुज़ुमलु ओस हारन ।।
कलस च्युतनस अखा बे खोंद वंसिथ प्यव ।
खमन बुतुरांत्र प्यठ द्रायस फंटिथ ज़्यव ।। ३० ।।

सु गव फीरिथ सोंखस ओसुस नु परवाय ।
सु गव तस रामु च्रन्दुरस सूत्य कोरुन न्याय ।।
मे कर आसुम ख़बर छुख यूत कमज़ोर ।
मे शानन प्यठ लोंदुथ बेंयि त्रोवमुत बोर ।।
अपुज़ वोंनथम तु अपुज़ि कन मे थोवुम ।
शोंगिथ दुशमन दुबारह वुज़ुनोवुम ।।
च्रु साहिबज़ादु ओसुख नाज़ परवर्द ।
तवय दर वख़ति मरदी द्राख नामर्द ।।

तब रामचन्द्रजी ने कमान को हाथ में उठा लिया और एक ही झटके से उस पर्वत को दूर फेंक दिया। यह देखकर वह तंगदिल (संकोची) सुग्रीव बहुत खुश हो गया और भाई को बाहर निकलकर जंग करने के लिए चुनौती दी। यह सुनते ही बालि दौड़ता हुआ बाहर आ गया। उसकी आँखों से बिजली की तरह ज्वालाएँ छूट रही थीं। (आते ही) उसने उसके (सुग्रीव के) सिर पर एक (घूँसा) जमाया, जिससे वह नीचे गिर पड़ा और पृथ्वी पर लौटकर उसकी जीभ बाहर निकल आयी। ३० वह (बालि) खुशी-खुशी लौट गया और यह (सुग्रीव) अपनी दुर्गति का वर्णन करने के लिए पुनः (रामचन्द्रजी के) पास गया और न्याय के लिए प्रार्थना करने लगा—मुझे यह कहाँ ख़बर थी कि आप इतने कमज़ोर हैं। आपने तो वापस मेरे कन्धों को बोझिल बना दिया (वालि पुनः मुझसे क्रुद्ध हो गया) आप मुझसे झूठ बोले और मैने भी आपके झूठ पर कान धर लिया। सोये हुए दुश्मन को मैने जगा दिया (अब मैं क्या करूँ ?) आप राजपुत्र हैं और हमें आप पर नाज था। मगर (अफ़सोस !) मर्दानगी के वक्त (जब आपको अपना पौरुष दिखाना था) आप नामर्द बन गये। तब उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—(भाई !) मैं तुम दोनों में कोई तफ़ावत

असन दोंपनस में नो बूज़ुम तफ़ावत ।
च्रें सुत्य तस वॉलियस लगि यीच्र फ़ुरसत ।। ३५ ।।
दपन सुगरीव ज़ोरुचि तीरु मोरूयम ।
गछ़स येलि वॉन्य सु मा अदु ज़िन्दु छोरूयम ।।
दिलासा दिथ सु गव बेंयि लोयिनस नाद ।
ति बूज़िथ द्राव वॉली दितुन फ़रियाद ।।
दपन तारायि दोंपनस अंय पहलवान ।
मं गछ़ वुन्यक्यन बु छस खोच्रान हेंयी जान ।।
ख़बर छा रामु ज़ुव मा आसि ज़ामुत ।
च्रें आसी पॉपियो मारुनि आमुत ।।
गुल्यन गंड़ रज़ परन प्यस गछ़ वनुस ज़ार ।
दपुस बख़शुम में आमुत छुख च्रु अवतार ।। ४० ।।
ओंगुद छुय गाश चंशमन हुन्द सु सोज़ुन ।
गोंनाह बख़शी शरन सॉपन तंमिस कुन ।।
च्रु नय बोज़ख सु नय सोज़ख खंटिथ रोज़ ।
पोंज़ुय वोंनमय गछ़ीये ज़ुव पोंज़ुय बोज़ ।।
तितुय बूज़िथ सु वॉली गव गज़वनाख ।
बं तुन्दी द्राव तंम्य जामन दितुन चाख ।।

(भेद) न कर सका, अन्यथा तुम्हारे साथ (भिड़ने में) उसे ज़्यादा फ़ुर्सत न मिलती । ३५ तब सुग्रीव ने कहा—यदि मैं अब वापस उसको ललकारूँ तो वह मुझे तीर से मार डालेगा और कभी ज़िन्दा न छोड़ेगा । दिलासा पाकर वह पुनः गया और उसको (वालि को) ललकारा । यह सुनते ही वालि बाहर आ गया और ज़ोर से गरज पड़ा । कहते हैं, तारा ने उसे (बहुत) समझाया—रे पहलवान ! इस वक्त तू न जा, मुझे डर है कहीं वह तेरी जान न ले ले । हो सकता है, रामचन्द्रजी ने जन्म ले लिया हो और तुझ पापी को मारने यहाँ आ गया हो । अतः हाथों में रस्सी बाँध उनके सामने प्रणाम कर और विनती कर कि हे रामावतार ! मुझे बख़्शिये । ४० अंगद जो तेरे चश्मों (आँखों) का प्रकाश है, उसे उनके पास भेज । वही तेरे गुनाहों को बख़्शेंगे । जा और उनकी शरण में चला जा । यदि तू (मेरी) न सुने और उसे (अंगद को) भी न भेजे तो फिर अपने आप को कहीं छिपा दे । सच कह रही हूँ यदि तुझे अपनी जान चाहिए तो इस सबको सच जान । यह सुनते ही वह वालि गज़ब

ज़लुनि सुगरीव लोंग गोस पतु लारन।
रोंटुन यामथ दोंपुन तामथ बु मारन ॥
वुछुन आकाश ह्यु गंज़ुरुन पनुन पान।
दितुस तंम्य रामुज़्रंन्दरन ज़ूरि त्युथ कान ॥ ४५ ॥

वंसिथ प्यव परबतस तल सूर तस गव।
वनन तस रामुज़्रंन्दुरस मा परन प्यव ॥
रंछिथ नामर्द क्यथु मोरुथ दिलावार।
ज़ु पानय छुख दपान कुस छुय ज़्रे अवतार ॥
खंटिथ तीरा दितुथ रूदुय नु इन्साफ़।
में पापा ओस न पानस खोंतुय पाप ॥
दोंपुस तंम्य रामुज़्रंन्दुरन लोयमय कान।
तवय बांयिस नियथ आशन्य ति छा जान ॥
कंरिथ अपराद यिथ्य तिथ्य कोंह कर्या ज़ाथ।
करन योंदवय वंसिथ पेंयि नब ब बुतराथ ॥ ५० ॥

त्युतुय बूज़िथ अंगुद सूज़ुन गंड़िथ गुल्य।
यि रंछिज़्यन वोंन्य में पापुक्य फल पनुन्य तुल्य ॥

ढाने लगा (अत्यन्त क्रुद्ध हुआ) और वस्त्रों को चाक करता हुआ तीर-कमान लेकर चल पड़ा। सुग्रीव (उसे देख) भागने लग गया और वह उसके पीछे हो लिया। (बालि ने) उसे पकड़ लिया और कहा कि अब मैं इसे मार ही डालूँगा। उसने जैसे ही विकराल रूप धारण किया तो रामचन्द्रजी ने छिपकर उसपर तीर चलाया, ४५ जिससे वह पर्वत से नीचे गिर गया और उसकी राख बन गयी। उसने रामचन्द्रजी के चरणों में प्रणाम नहीं किया था, इसीलिए उसकी यह दशा हो गयी। (बालि ने तड़फते हुए कहा—) आपने एक नामर्द (सुग्रीव) की रक्षाकर एक दिलावर (बलवीर) को मार डाला—यह आपके अवतार-स्वरूप को शोभा नहीं देता है। आपने छिपकर तथा इन्साफ को भूलकर मुझ पर तीर चलाया। मेरा तो कोई पाप नहीं था, बल्कि अब आपको (मेरे वध का) पाप लगा है। तब रामचन्द्रजी ने कहा—मैंने तीर (जानबूझकर) मारा, क्योंकि तूने अपने भाई की पत्नी को छीना था, क्या यह उचित था? तूने ऐसे-ऐसे अपराध (पाप) किये, जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती और जिनको सुनकर नभ (आकाश) व पृथ्वी गिर सकते है। ५० यह सुनकर उस (बालि) ने अपने (पुत्र) अगद को हाथ जोड़कर भेजा

दोंपुन बायिस च्रु गरि रंछिज़्यन परन तल ।
में युथ कोंर त्युथ में वोंन्य लूनुम तम्युक फल ।।
वोंनुन तस यी तु दिहि निशि गव वोंदासी ।
गोंडहस नार आंसिन सोंरगुवासी ।।
वुछुख नेंछितुर ख़बर अगरो नगर गय ।
सपुन सुगरीव शाह टोठ्योव तस दय ।।
छु सथ यी याद रूज़ुस बाय सुंज़ कथ ।
ओंनुन अंगुद तंमिस पुशरुन वज़ारथ ।। ५५ ।।

ओंनुख हलमुत दिच्रुख तस पेशकारी ।
बलावीरस लगस पादन बु पारी ।।
छुन्यख ज़ोमूवनस त्रटु मालु नाली ।
करुख तस मटि मुलकुच कुटवाली ।। ५७ ।।

।। किशकिन्दाकांड समाप्त ।।

और कहा कि अव इसकी रक्षा आप ही करें, मुझे तो अपने पापों का फल मिल गया। अपने भाई (सुग्रीव) से उसने (वालि ने) कहा कि इसे (अंगद को) अपने आश्रय में रखना, मैंने जो कुछ (तुम्हारे साथ) किया, उसका फल मुझे मिल गया है। इतना कहकर वह देह से उदास हो गया (मर गया) और उसका दाह-संस्कार किया गया, उसको स्वर्ग प्राप्ति हो ! उचित नक्षत्र (मुहूर्त्त) को देखकर चारों ओर ख़बर भिजवायी गयी और सुग्रीव को शाह (राजा) वनाया गया, क्योंकि स्वयं भगवान की उस पर अनुकम्पा थी। सत्य यह है कि (सुग्रीव को) अपने भाई की वात याद रही तथा अंगद को बुलाकर उसे वजारत (मन्त्री का काम) सौंप दी। ५५ हनुमान को बुलाकर उसे पेशकारी का पद सौंपा गया —उस वलवीर के पादों पर बलिहारी जाये। जाम्बवान् के गले में बिजली की मालाएँ पहनायी गयी और उसको मुल्क (उस प्रदेश) की कोतवाली करने का काम दिया गया। ५७

।। किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ।।

सोन्दर कांड

वान्दर छि सुताथि छारान

दोंपुख तंम्य लोलुक्यन शीशन फिरिव मय ।
अंनिव पैगाम सुता कोर कुन गंय ॥
हेयिव लशकर सुतिन येंछि सुत्य दियिव छ्रोंह ।
छ्रंडिव समसार सोरुय राथ तय दोंह ॥
असन तिम द्रायि फीरिथ आयि दीशन ।
वुछिख येलि मनशि लूकस सार हन हन ॥
वुछुख खोवुर दंछुन सोरुय पछम पूर ।
खोंनुख पाताल गंछिनख चंशमि बद दूर ॥
पतव लाकन तिमव येलि अख गोंफा डीठ ।
वुछिख संन्य नीलुकंन्य गांमुत्र स्यठाह क्रीठ ॥ ५ ॥
अंत्रिथ तथ अख अंकिस कुन थफ करान आंस्य ।
प्यवान बुथ्य किन्य वंसिथ ज़न तफ करान आंस्य ॥
वुछुख बाग़ा बिहिशता सोंरगुदारा ।
पलंगस प्यठ बिहिथ अख गुलज़ारा ॥

सुन्दर काण्ड

वानरों का सीता को ढूँढ़ना

उस (सुग्रीव ने वानरों से) कहा—अपने सौहार्द्र-रूपी शीशों (प्यालों) में मय उँडेलो और यह पैग़ाम लेकर आओ कि सीता किस ओर चली गयी है। लशकर लेकर तुम लोग जाओ। इच्छापूर्वक (लगन से) उसे ढूँढ़ निकालो। रात-दिन सारा संसार छान मारो। (यह सुनकर वानर) हँसते हुए निकल पड़े और देश-देशांतर में फिरने लगे तथा मनुष्य-लोक का चप्पा-चप्पा छान मारा। दायें, बायें—सारा पश्चिम और पूरब देखकर उन्होंने पाताल को खोदना शुरू किया (उनका यह उद्योग स्तुत्य है) चश्म-बद दूर हो। अंत में उन्होंने एक गुफा देखी, जो बहुत ही गहरी और कठोर थी। ५ वे एक-दूसरे का हाथ थामकर उसमें घुस गये। वे कभी-कभी मुँह के बल गिर पड़ते, जैसे (किसी को) नमन करते हों। (अन्दर जाकर) उन्होने बिहिश्त की तरह एक स्वर्गिक स्थान को देखा,

सरवु कदु कामता आशोबि आलम ।
परी या प्रज़ुलवुन्य रूपस नु कॅंह कम ।।
करन तपसी शरन गांमुत्र दयस कुन ।
गंमुत्र रुत्र वासुना मीलिथ पयस कुन ।।
दोंपुख तस रांव सूता रामुत्रन्दुरस ।
दोंपुख तमि अंछ्य वॅटिव वातिव मकानस ।। १० ।।

वचख येलि चेशमु मुत्रुराव्यख वुछुख रंग ।
कोंहिसताना मकाना अख स्यठाह तंग ।।
वचख येलि अंछ्य वुछुख अख परबथा कूर ।
स्यठाह थोंद ज़न सु तमि आकाशि निशि दूर ।।
दपन कैलास तथ निशि अख कथा ओस ।
छि क्याह कथ व्रन्दुवन तति अख वथा ओस ।।
दपन बाहुवुन्य बरूजन ओल मा सुय ।
असुनि लंग्य तथ सुमीरस मोल मासुय ।।
असन फेरन स्यठाह तिम ओंस्य खेलन ।
तती छुय़ अदु तिमन समपाट मेलन ।। १५ ।।

जहाँ एक पलंग पर गुलज़ार की तरह कोई बैठी हुई थी। वह भव्य दिखनेवाली एक कमनीय स्त्री थी, जिसके ऊपर सारे आलम की शोभा छिटकी हुई थी। परी की तरह वह चमक रही थी और उसका रूप भी कम न था। वह तपस्या कर रही थी और अपने भगवान् की शरण में चली गयी थी। उससे (वानरों ने) कहा—हमारे रामचन्द्रजी की सीता खो गयी है। उसने कहा—तुम लोग अपनी आँखें बन्द कर डालो, अभी गंतव्य स्थान पर पहुँच जाओगे। १० जब उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर वापस खोलीं तो एक अजीब रंग देखा—उन्होंने एक कोहिस्तान पर तंग मकान को देखा, आँखे मीचकर जब उन्होंने दुबारा आँखें खोलीं तो एक कठोर पर्वत को देखा, जो काफी ऊँचा था और आकाश से ज़्यादा दूर न था। कहते है, कैलास (पर्वत) उसके सामने कुछ भी न था और विन्ध्याचल की वात ही क्या! वह तो उसके एक भाग के भी वरावर न था। वे कहने लगे-- लगता है, यह सभी पर्वतों का घोंसला (घर) है और सुमेरु का बाप है। वे हँसने व उछलने-कूदने लगे और तभी उन्हें समपाट (संपाती) मिल गया। १५ सभी उदास हो गये और इस बला को अपनी ओर आते देख सभी सीता का ध्यान भूल गये। उन्होंने इस

वोंदासी गयि वुछिख येलि तंग जाया ।
मंठुख सुता यिवान ड़ीठुख बलाया ।।
यिवान लारान तिमव जानावरा ड्यूठ ।
सुमीरा ह्यु स्यठाह् बोंड़ वारुयाह ज़्यूठ ।।
सु यंत्र बोछ ओस डीशिथ नग़मु तंम्य लोग ।
दोंपुन अज़ ईशरन लोंदुनम योंतुय बोग ।।
अंगुद तामथ वनुनि लोंग ह्‌लमतस कुन ।
हनूमानो युथुय ओसो जटायुन ।।
त्युतुय बूज़िथ सु जानावर वंसिथ प्यव ।
दोंपुख तंम्य पारु कंरिवम वारु वंन्यतव ।। २० ।।

तिमव दोंपहस सु क्याह वाती पोंज़ुय वन ।
दोंपुख तंम्य बोय वात्यम थांवितव कन ।।
अंछिन दोंन गाश ज़न ओसुम लोंकुट बोय ।
च्रोंलुम त्रांविथ में तंम्य वांलिजि छोंख लोय ।।
ज़ु बारुन्य आंस्य ज़ोरावर पहलवान ।
ज़ेंहन गयि अंस्य करव सिरयस सुतिन मान ।।
अहंकारन पनुन्य येलि कोंड़ पखन वाश ।
यिछुय तुज ज़ोरु वुफ तोंत वांत्य आकाश ।।

जानवर को अपनी ही ओर आते देखा जो सुमेरु की तरह विशालकाय और काफी लम्बा था। वह बहुत भूखा था। अतः उन्हें देखकर वह खुशी में कहने लगा कि आज तो ईश्वर ने मुझे बैठे-बिठाये इतना भोजन भेजा है। तभी अंगद हनुमान से कहने लगा—हनुमान ! जटायु भी बिल्कुल इसी की तरह था। यह सुनते ही वह जानवर एकदम गिर पड़ा और कहने लगा कि ज़रा यह बात फिर से कहना, मेरा दिल फट रहा है। २० तब उन्होंने उससे पूछा कि सत्य कहो वह तेरा क्या लगता था। उसने कहा—सुनो, वह मेरा भाई लगता था। इन दो आँखों के प्रकाश के समान वह मेरा छोटा भाई था। मुझे अकेला छोड़कर उसने मेरे कलेजे को आहत कर डाला। हम दो भाई बड़े ही ज़ोरावर (बलशाली) पहलवान थे। हमारी बुद्धि (एक दिन) फिर गयी जो हमने सोचा कि सूर्य से हम टक्कर लें। अहंकार-वश हमने अपने पंखों को फैलाया और ज़ोर से आकश की ओर उड़ चले। सूर्य को क्रोध आया और उसने अपने ताप को तीव्र कर दिया, जिससे उसके

तुलुन तापुन तत्रर सिरयस त्रख आये ।
दज़ुनि लंग्य पर तमिस रूदुस वु छाये ।। २५ ।।

दंदिम पर तापु सूत्य रूदुम नु कँह होश ।
ज़लस कनि अंगुनु जोशस लौंगुस पम्पोश ।।
त्रौदाह शथ वांस गंयि यनु प्यठु मे सांपुन ।
वुछान आसम मे लोसान चंशमु तस कुन ।।
मे ओसुम माजि कौरमुत नाव समपाट ।
जटायुन नाव तस मेल्यम नु मा ज़ाथ ।।
वुछन यथ कुन वु छुस तथ कुन प्यवन ताफ ।
विहिथ छम शन हतन क्रूहन नजर साफ़ ।।
हनूमानन वंनिस तस वांय सुन्द्य कार ।
स्यठाह टोठ्योव तस प्यठ रामु अवतार ।। ३० ।।

वौंनुस यामथ ति तंम्य तामथ वदुन आस ।
दौंपुन करि ना मे प्यठ तस वांय सुन्द पास ।।
तिमव प्रुछ्हस त्युथुय सूता वुछिथ मा ।
दौंपुख तंम्य वौंनु सौं छवु दर बागि लंका ।।
जटायुन वोय ओसुस ह्यौंतुन कांपुन ।
परुनि लौंग रामु रामु मौंख्त सांपुन ।।

(जटायु के) पंख जलने लग गये और मैंने उसको अपने पंखों से ढँक लिया ।२५ मेरे पंख भी (बाद में) जल गये और मुझे कोई होश न रहा तथा मेरा कमल-जैसा शरीर जल के स्थान पर अग्नि के जोश (ताप) में झुलस गया। इस हालत में मेरी चौदह सौ साल की आयु बीत गयी और तब से मेरी आँखें बराबर उसको (जटायु को) निहारती रहीं। माता ने मेरा नाम संपाट (संपाती) और उसका जटायु रखा था, जो अब कभी भी मुझ से मिल नहीं सकता है। मैं जिधर भी देखता हूँ वहीं (उधर ही) प्रकाश पैदा हो जाता है और यहाँ बैठे-बैठे मेरी नजर छः सौ कोस तक साफ़ तौर पर जा सकती है। तब हनुमान ने उसको उसके भाई (जटायु) के सुकृत्य की बात कही और कहा कि उसे रामावतार ने खूब प्रेम दिया है ।३० जैसे ही उसने (हनुमान ने) यह बात कही तो उसे रोना आ गया और उसने कहा कि काश ! मेरे भाई की तरह वे मुझ पर भी दया करते। तब उन्होंने (वानरों ने) उससे पूछा—तुमने सीता को तो नहीं देखा ? उसने उत्तर दिया—वह नीचे लंका के एक बाग़ में है।

च्रौंलुस कांपुन तु सांपुन मोख्त पानुह ।
तिमन सुतायि हुन्द होवुन निशानुह ।।
थोंगिस खंत्य कोहुकिस डीठुख पलस मंज़ ।
जवाहिर ज़न सं लंका तथ ज़लस मंज़ ।। ३५ ।।

ज़लस मंज़ ज़न पुनिम च्रंन्दरमु छि क्याह् कथ ।
अमा तोंत वातुनुक मा कांसि ताकथ ।।
तम्युक बंगालु येलि वुछ आसुमानन ।
सु कर तेलि ओस फीरिथ चरख ज़ानन ।।
शुराह शथ क्रूह तोंत तामथ तरुन ज़ल ।
शुराह शथ क्रूह तमिकिस दामुनस तल ।।
शुराह शथ क्रूह थोंद छय द्रीठ्य यीवान ।
ज़लस मंज़ सिरियि ज़न आंस शोलु दीवान ।।
हरन ओंश क्याह् करन तिम वीर लारन ।
तरन कोंत आंतु किन्य तिम छालु मारन ।। ४० ।।

करन तदबीर यथ किथु पांठ्य लबव तार ।
छु दंरियावाह तरुन यिम दयि सुन्द्य कार ।।
पंरिन्दन पर फुटन डीशिथ तरुन ओस ।
कथा छा केंह शुराह शथ क्रूह तरुन ओस ।।

इस प्रकार जटायु का वह भाई कांपने लगा और राम-राम पढ़ते हुए मुक्ति पा गया। सीता की निशानी उन्हें बताकर उसकी कॅपकँपी मिट गयी और वह पूर्णतया मुक्त हो गया। वे सभी एक कोह (पर्वत) की चोटी पर चढ़ गये और उन्हें जल-रूपी पत्थर के बीच में एक जवाहर के समान वह लंका चमकती हुई दिखायी पड़ी, ३५ जैसे जल में पूनम का चन्द्रमा चमक रहा हो। मगर वहाँ तक पहुँचने की किसी में भी ताक़त न थी। आसमान उसको छूता था और (सूर्य) उसके पास से निकलता था। उस तक पहुँचने के लिए १६०० कोस का जल-मार्ग तर जाना था—पूरे सोलह सौ कोस की दूरी ! वह (लंका) सोलह सौ कोस की दूरी से ऐसे दिखायी पड़ रही थी, जैसे जल में सूर्य हचकोले ले रहा हो। सभी वीर (मायूस होकर) आँसू बहाने लगे कि अब वे क्या करें, कैसे पार लगें तथा कैसे इतनी दूरी लाँघ सकें ? ४० सभी तदबीर (उपाय) खोजने लगे कि कैसे इस दरिया (समुद्र) को तर कर भगवान् के कार्य को पूर्ण किया जाए ? इस (विशाल) दूरी को देख परिन्दों तक के

सलाह छारन सलाह छारन थंचिख वाह ।
अकुलि किन्य तिम ज़लस मारुनि लंग्य थाह ।।
वनुनि लोंग अख वुहन कूहन तरस बो ।
दपन ब्याखा वुहन ताम वौंठ दिमस बो ।।
दपन ब्याखा बु नमुनमुतन दिमस छाल ।
दोंपुख ज़ोमूवनन ब्रदुवाव छुम काल ।। ४५ ।।

वनुनि लोंग लूक ओसुस बालुयावस ।
तुजिम आकाश्य वौंठ अंकिसुय हवावस ।।
बु ओसुस वाव ह्यु आकाश्य फेरन ।
मे डीशिथ आस्य दयतन प्रान नेरन ।।
कंरिम वुह चरख गंज़ुरिथ मनशि लूकस ।
तिथय रेंश्य अंक्य वुछुस बोंनु ब्रख अंनिन तस ।।
दिझुन दारिथ दरुबि तुज्य वुछ तपुक ज़ोर ।
महा बलियस तिथिस फुटुरोवनम खोर ।।
अंगुद ह्योर गव वंथिथ वुन्य छाल मारस ।
अनन रावुन रंटिथ शुर्य बाझ मारस ।। ५० ।।

तम्युक ओसुम नु गम वुन्य मारहस छाल ।
अमा खोझान छुस वलुनम असोंर नाल ।।

पंख टूट जाते—सोलह सौ कोस को पार करना कोई मामूली बात तो नहीं है ! सलाह-मशविरा करते-करते वे थक गये और अपनी अक़्ल के अनुरूप जल को वृथा पीटने लगे । एक कहने लगा—बीस कोस तक तो मैं जा सकता हूँ—बीस कोस तक । दूसरा कहने लगा—तीस कोस तक मैं छलाँग लगा सकता हूँ । एक और कहने लगा कि निन्यानवे कोस तक तो मैं भी छलाँग मार सकता हूँ । तब जाम्ववान् ने कहा—मैं तो इस समय वृद्धावस्था से गुज़र रहा हूँ ४५ जब मैं बचपन में छोटा था तो एक क्षण में सारे आकाश में उड़ गया था । मैं वायु की तरह आकाश में फिरा था और मुझे देख दैत्यों के प्राण निकल गये थे । मैंने गिनकर मनुष्य लोक के २० चक्कर लगाये और तभी (नीचे) एक ऋषि ने देखा और उसे क्रोध आ गया । उसने कुश का तीर बनाकर मुझ पर अपने तप के ज़ोर से फेंका, जिससे मुझ महाबली का पैर टूट गया । अंगद उछलकर बोला—मैं अभी छलाँग लगाकर उस रावण को पकड़कर लाऊँगा और उसके बाल-बच्चों को मार डालूँगा; ५० मगर मैं डरता हूँ कि कहीं

अंगुद्य दोपनख मे छुम यावुन पनुन पूर।
दिमस वोठ वुन्य गछ़स शहरस करस सूर॥
हनूमानन दोपुस छिनु चान्य यिम कार।
बु येति आसु सुत्य तति कर छय च़े अनुवार॥
हनूमानन दोपुख यावुन मु हारिव।
बु मारस छाल यिमु अद्यायि त्राविव॥ ५४॥

लीला

वान्दर छि हनूमानस वनान

वान्दर सारी तस शरन।
हनूमानु अंस्य छिनु दरानी॥
मरुह मरुह कास अंस्य दरुह लग्य तारन,
वोपाय तरनुक कर केंह च़ुय।
दरशनु समन्दर अंस्य सार्‍य खोच़न,
हनूमानु अंस्य छिनु दरानी॥ १ ॥
ज़ामूवन बलुवीर सारी वीर गलन,
तवु किन्य अंस्य आयि शरन च़ेय।

वहाँ असुर मेरे गले न पड़ जायँ। वैसे, अंगद ने आगे कहा—मुझमें पूरा यौवन है और मैं अभी उसके शहर (लंका) में जाकर उसका संहार कर डालूँगा। तब हनुमान ने कहा—यह तुम्हारा काम नहीं है। जहाँ पर मैं तुम्हारे साथ हूँ, वहाँ पर तुम्हें किस बात की चिंता है? हनुमान ने कहा—तुम लोग अपना यौवन (धैर्य एवं साहस) न हारो (मन को निराश न करो)। मैं छलाँग मारूँगा, तुम लोग ये (निराशा की) बातें छोड़ दो। ५४

वानरों का हनुमान से विनती करना

सभी वानर उसकी शरण में गये और कहने लगे—हनुमान! हम तो भय से काँप रहे हैं। हमें जो 'मर जायेंगे, मर जायेंगे' का भय लगा है, उसे दूर कर दीजिए और पार उतरने का कोई उपाय निकालिए। समुद्र के दर्शन-मात्र से हम डर रहे हैं—हनुमान! हम तो भय से काँप रहे है। १ जाम्बवान् के साथ-साथ सभी वीर गल रहे है। अतः हम आपकी शरण में आये हैं। (यदि हम सीता जी की सूचना न ला सके

रामु जुव तु सुगरीव असि मा मारन,
हनूमानु अंस्य छिनु दरांनी ॥ २ ॥

वीरुबल च्रेय छुय समन्दर ज़ालुन,
लालन हारि सुत्य मोल करिनु कांह ।
रामु जुव मोल करि च्रेय मोखतुहारन,
हनूमानु अंस्य छिनु दरांनी ॥ ३ ॥

सुगरीव मोखतुहार च्रेय कित्य छु वुरन,
अंस्य आयि शरन छी चान्य दास ।
ज़ायि कर पापन हाय हाय करन,
हनूमानु अंस्य छिनु दरांनी ॥ ४ ॥

वांली बलुवीर तस गव शरन,
हरु हरु राथ दोंह करांनी ।
रावुन बलुवीर आयाव शरन,
हनूमानु अंस्य छिनु दरांनी ॥ ५ ॥

रावुन शें र्‌यथ त्रोवुन गीरन,
अंगोचस वलनु आयाव तस ।
अथु त्रोवुन च्रोंल अंछव ख़ून हारन,
हनुमानु अंस्य छिनु दरांनी ॥ ६ ॥

तो) रामचन्द्रजी और सुग्रीव हमको मार डालेंगे—हनुमान ! हम तो भय से काँप रहे हैं। २ हे बलवीर ! आपको ही यह समुद्र जला देना है। भला लाल और कौड़ी का एक ही मोल कौन कर सकता है ? रामचन्द्रजी ही आप-जैसे मोती का मूल्य जानते हैं—हनुमान ! हम तो भय से काँप रहे है। ३ सुग्रीव आपके लिए ही मुक्ताओं की माला पिरो रहे हैं। हम आप की शरण में आये हैं। हम आपके दास है। आप हमारे पापों को जाया करें (मिटायें)—हनुमान ! हम तो भय से काँप रहे हैं। ४ बालि-जैसा बलवीर उसकी शरण में गया और (रात-दिन) हर-हर कहने लगा। रावण-जैसा बलवीर भी उसकी शरण में आ गया —हनुमान ! हम तो भय से काँप रहे हैं। ५ रावण को उसने अंगोछे में बाँधकर छः महीने के बाद छोड़ दिया था। हाथ से छूटने के बाद वह आँखों से खून बहाता हुआ भागा था—हनुमान ! हम तो भय से काँप रहे हैं। ६ उसकी (बालि की) बुद्धि पापमयी हो गयी थी, जो उसने

पापु बोंद गंयस सुगरीव बु मारन,
हनूमान ज़ोमूवन बलुवीर ह्यथ।
तारा बोंड़िथ गंयि मंज़ ह्बरु कारन,
हनूमानु अंस्य छिनु दरांनी ॥ ७ ॥

रामु जुवुनि तीरु सूत्य पांपी मरन,
आह कार तारा लंज्य करुंने।
अंगुद सुगरीव सांपुन शरन,
हनूमानु अंस्य छिनु दरांनी ॥ ८ ॥

सुगरीवु दोंपनस क्याह छुख करन,
सुता कोंनु छुख छारांनी।
वान्दर सांर्य ह्यथ वारह गव शरन,
हनूमानु अंस्य छिनु दरांनी ॥ ९ ॥

वनुनि लोंग हलमुत समन्दर बु ज़ालन,
रावुन बु ज़ालन लंकायि सान।
प्रकाश तमि सूत्य वेंबीशन बु थावन,
हनूमानु अंस्य छिनु दरांनी ॥ १० ॥

हनूमानु सुन्द्य कार

वुछव वोंन्य रावुनस येंलि आस इफ़लास।
तरस वोंठ दिथ करस वुन्य सांरिसुय डास ॥

हनुमान, जाम्बवान् आदि बलवीरों सहित सुग्रीव को मारने की सोची। तारा (सुग्रीव को) दुबारा जंग करने के लिए आता देख हैरान हो गयी थी—हनुमान ! हम तो भय से काँप रहे हैं। ७ रामजी के तीर से पापी मर जाते हैं, तभी तारा विलाप करने लगी थी। अंगद और सुग्रीव उसकी शरण में आ गये—हनुमान ! हम तो भय से काँप रहे हैं। ८ सुग्रीव से उन्होंने कहा—आप क्या कर रहे हैं। सीता को ढूँढ़ते क्यों नहीं हैं ? तब वे सभी वानरों को लेकर उनकी शरण में चले गये—हनुमान ! हम तो भय से काँप रहे हैं। ९ हनुमान कहने लगा कि समन्दर को जला दूँगा और रावण को लंका सहित जला डालूँगा और उसके प्रकाश में विभीषण का राज्याभिषेक कराऊँगा—हे हनुमान ! हम तो भय से काँप रहे हैं। १०

समन्दर तीरु सुत्य ग्यव ज़न बु ज़ालन ।
छु कस यावुन महारावुन बु गालन ॥
अमा आस्यय सों सुता आयि सानुय ।
नखस क्यथ वुन्य अनन लंकायि सानुय ॥
वनुन्य ज़ोमूवनन हेंत्य हलमतुन्य कार ।
छु थोंवमुत रामुचन्दुरन हलुमुतुय सार ॥
दोंदस सुतिन चोंमुत मा लोल तंम्य सुन्द ।
वोंन्दस तसुंदिस अन्दर मा ओल तंम्य सुन्द ॥ ५ ॥

वनुनि लोंग येंलि हलुमुत दोंद चवान ओस ।
सिरियि ड्यूठुन दोंपुन रट्नुक मनस गोस ॥
तुजिन आकाशिय वोंठ सिरियन यिवन ड्यूठ ।
दोंपुन रोंटनस समीरस तल खंटिथ ब्यूठ ॥
यि कथ सथ क्याह छि तति तस रावुनुन्य ज़ोर ।
चु केंह वंनिज़्यस नु योंत तामथ खस्यस वोर ॥

हनुमान के कार्य (कारनामें)

हनुमान कहने लगा— रावण का आख़िरी समय आ गया है। मैं छलाँग मारकर उसका सर्वस्व नष्ट कर डालूँगा। तीर से समन्दर को घी की तरह जला डालूँगा तथा अपने यौवन (बल) से उस महारावण को जला डालूँगा। यदि वह सीता मेरी पहुँच के भीतर हुई तो उसे लंका-समेत यहाँ कन्धे पर उठा ले आऊँगा। तब जाम्बवान हनुमान के कार-नामों का वखान करने लगा और उसने कहा— रामचन्द्रजी ने हनुमान को ही अपना सार मान रखा है। (लगता है) उसने (हनुमान ने) दूध के साथ रामचन्द्रजी का प्रेम पी लिया है और दिल के घोंसले में उन्हें छिपाकर रखा है। ५ (एक बार जब शैशवावस्था में) वह दूध पी रहा था तो सूर्य को देखकर उसे पकड़ लेने की इच्छा उसके मन में हुई। उसने आकाश में छलाँग मारी और सूर्य ने जब उसे अपनी ओर आते देखा तो वह कहने लगा कि अब यह मुझे पकड़ (ही) लेगा अतः सुमेरु पर्वत के पीछे छिप गया। (ऐसे वलवीर के सामने) यह सत्य है कि भला उस रावण के ज़ोर क्या काम कर सकते हैं? आप उससे तब तक कुछ भी न कहना जब तक कि उस पर (पाप का) भार पूर्ण रूप से चढ़ता नहीं है। उपदेश देते हुए (जाम्बवान् ने) आगे कहा— एक बात मन में रखना कि उसी वेग से आगे वढ़ना, जिस वेग से रवि सुमेरु के पीछे छिप गया था।

वरन दीवन दोंपुस तिमु कथु मनस थव ।
त्युथुय पख युथ समीरस छुय पकन रव ॥
वुछिथ सुता ख़बर ह्यथ यिज़ि टुकन यूर्य ।
सु पानय ज़ानि यॆलि तिम दोह यिनस पूर्य ॥ १० ॥

हनूमानन परुन ह्योत रामु रामय ।
वनुनि लोंग रामुचन्दरुन लोल आमय ॥
वछुस रेह नारुह तमिसुंदि नावु सुती ।
वोथन यिछ रेह छि नारस वावुह सुती ॥
वदुनि लोंग लोलु सुतिन लोंग हरुनि पान ।
लोंदुन तति रामुचन्दरुनि दोनि प्यठ कान ॥
करुनि लोंग नालु मोंत बब ज़न च्यतस प्योस ।
निंदरि होंत वुज़ुनावुन निंदरि होंत ओस ॥
रोंटुन तम्य राज़ुह रामुन मोंख मनस याद ।
वंथिथ गव कोह ह्युव पर सॉपुनिस बाद ॥ १५ ॥

दपन यॆलि संगरि प्यठु तम्य ज़ोरु दिच्र छाल ।
वंसिथ परबत दपान गव ज़ेरि पाताल ॥
सु परबत जुस्तु तम्य सुन्दि सुत्य तल गव ।
अमा तति तल गंछिथ पातालु बॊन गव ॥

सीता को देख उसकी ख़बर लेकर तुरन्त यहाँ आ जाना । उसे (रावण को) स्वयं सब मालूम हो जायेगा, जब उस (पापी रावण) के दिन पूरे हो जायेंगे । १० तब हनुमान राम-राम पढ़ने लगा और कहने लगा कि मुझ में रामचन्द्रजी का प्रेम उमड़ रहा है । (रामचन्द्रजी के) नाम का उच्चारण करते ही उसके अन्दर आग की ज्वाला भड़क उठी, वैसे ही जैसे वायु से आग की लपटें भड़क उठती हैं । प्रेम-पुलकित होकर उसकी आँखों से आँसू गिर आये और वह रामचन्द्रजी की कमान से निकले तीर की तरह वायु को गले लगाता हुआ उड़ गया, जैसे उसे अपने पिता की याद आ गयी हो (पिता मिल गये हों) । अपने इस कार्य से उसने सभी (राक्षसों) की नींद खोल दी । मन में राजा राम का (नाम) मुख बसाकर वह (विशालकाय) पर्वत की तरह वायु को अपने (पंख) बनाकर उड़ता गया । १५ कहते हैं, जब उसने पर्वत से ज़ोर से ऊपर (उड़ने के लिए) छलाँग मारी थी तो वह पर्वत एकदम पाताल में धँस गया था । उसकी छलाँग से वह परवत सोना बन गया और सोना बनकर वह पाताल

सु परबत छालि तंम्य सुन्दि सुत्य सोंन गव ।
अमा तोंत सोंन गंछ़िथ पातालु बोंन गव ।।
तमी दोंहु चरखु फेरन गंयि नबस ज़ीर ।
अमा बुतरात तमि दोंहु चरखु मा फीर ।।
तिथुय येंलि वाव ह्युव हलमुत वंथिथ गव ।
गंछ़िथ लंकायि कुन लंकायि प्यठ प्यव ।। २० ।।

स्यठाह बोंड अजदहा तति डेड़ि प्यठ ओस ।
गंछ़िथ हलुमुत तंमिस आंसस अन्दर गोस ।।
दपान तस रामुच़न्दुरस कुन गोंमुत मन ।
लोंबुन वर हलुमतुन त्रामुव गंयस तन ।।
सोंरुन येंलि रामु रामु गव सु आज़ाद ।
वंथिथ गव वाव ह्युव दिल सांपुनुस शाद ।।
देवी सपथा छि मा तंमिसुय दपान नाव ।
तसुन्द वीरुथ वुछिथ बलु वीर पथ द्राव ।।
दोंपुस दीवो हनूमानस च़ु वुछ बल ।
यिथिस दशिरावुनस सुत्य क्या करी छ़ल ।। २५ ।।

च़े बल छुय त्यूत युथ पोशी नु कांह ज़ाथ ।
च़ु गछ़ टुकान अदु मेली सु कर ज़ाथ ।।

के नीचे चला गया। उसी दिन आकाश में हलचल होने लगी और शायद उसी दिन से पृथ्वी भी चक्कर काटने लगी। इस प्रकार वायु को चीरता हुआ हनुमान उड़ता गया और लंका की ओर जाकर लंका में आन पड़ा (उतरा)। २० उस (लंका) की ड्योढ़ी पर एक बहुत बड़ा अजदहा था, जिसके मुँह के अन्दर हनुमान घुस गया। कहते है, उस (हनुमान) का मन चूँकि रामचन्द्रजी में अनुरक्त था अतः आशीर्वाद पाकर उसकी देह तुरन्त ताम्बे की हो गयी। राम-राम का स्मरण कर वह उस (अजदहा) से आज़ाद हो गया और उसका दिल शाद (खुश) हो गया। (आगे चलकर उसका सामना एक ऐसे राक्षस से हुआ) जिसका नाम 'सपथा' था। उसकी वीरता देखकर बड़े-बड़े बलवीर पीछे हट जाते थे। उसने अपने एक साथी दैत्य से कहा— रे देव! तू जाकर देख, हनुमान कितना बलशाली है तथा वह रावण से क्या छल कर सकता है। २५ तेरे पास इतना बल है कि कोई भी तेरा सामना नहीं कर सकता। तू भाग कर जा, अन्यथा वह तुझे (बाद में) मिल नहीं सकता।

वनी कव पुछ्य सु तथ लंकायि प्यठ आव ।
करुनि मा पाप नाशस रावुनस आव ।।
च़ु गछ़ वुछ बल तंमिस असुरन सु पोशा ।
गछ़ि नु न्यरबल गछ़ुन अद मा सु रोशा ।।
पवनु रूपह सु दयत तथ डेड़ि प्यठ ब्यूठ ।
कोरुन जोदू तु दिह दोरुन स्यठाह क्रूठ ।।
कोरुन वेखच़ार तंम्य तस रूफ त्युथ होव ।
तसुन्दि रूपुह सुतिन हलुमुत ति खोर्योव ।। ३० ।।

तंलिम वोठ लंज़ सों पातालस सुत्यन ज़ीठ ।
पेंठिम वोठ दिच़ुन आकाशस स्यठाह क्रुठ ।।
मोच़र तंम्य कोर नु तति पानस छ़ि क्या कथ ।
कोडुन तंम्य काड वाराह ज़्यूठ छ़ुय सथ ।।
हनूमानन परुन ह्योत रामु रामय ।
यि वेखच़ारुय वुछ़िथ लोल चोन आमय ।।
वुछुन येलि मोख तसुन्द सोर द्रेंठ तस आव ।
मनुशि लूक येन्दरु लूक द्रेंठ तस आव ।।
वनुनि लोग यि छु राख्युस विह्य दारिथ ।
अमी रूपु सुती छ़ुनि मा असि मारिथ ।। ३५ ।।

उससे तू पूछ कि वह किस कारण से लंका में आया है तथा क्या वह पाप का नाशकर रावण का अन्त करने तो नहीं आया है ? तू जाकर उसका बल देख कि क्या वह असुरों का मुक़ाबला कर सकता है ? वैसे उसे निर्बल नहीं होना चाहिए । तब वह दैत्य पवन-रूप धरकर ड्योढ़ी पर बैठ गया तथा जादू करके (माया से) अत्यन्त विकराल देह धारण कर ली । उसने भयकंरता दिखाकर अपना ऐसा रूप बनाया कि उसे देखकर हनुमान सहम गया । ३० उसने (उस मायावी दैत्य ने) नीचे छलाँग लगायी तो पाताल तक पहुँच गया, ऊपर लगायी तो आकाश को पहुँच गया । अपनी देह को ऐसा सिमटा दिया कि पहचान में न आया और अँगड़ाई ली तो अत्यन्त लम्बा हो गया । तब हनुमान ने राम-राम पढ़ना शुरू किया और (उस दैत्य की) विकरालता देख उसे (रामचन्द्रजी) याद आ गये । जब उसने उस (दैत्य) का मुँह देखा तो (उसमें) सब कुछ दिखायी दिया— मनुष्य लोक, इन्द्रलोक आदि सभी कुछ । वह (हनुमान) कहने लगा कि यह (ज़रूर कोई) कोई मायावी राक्षस लगता है, जो कहीं अपनी माया से मुझे मार

दोंपुन तस कवु पुछ्य कोंरथस बु च्रंच्रल ।
गछ्री क्या मंग दिमय मतु करतु युथछल ॥
दोंपुस तंम्य वुछ मे वनुसुय छुय च्रे सामरथ ।
दोंपुस तंम्य क्या गछ्री कथ कुन च्रे छय व्रथ ॥
दोंपुस तंम्य चोन मामस गछ्रि मे आसुन ।
दोंपुस तंम्य दार आंस वुन्य खुर छु कासुन ॥
ति बूज़िथ दोर तंम्य आंस कोंरुन मान ।
पज़ुन पोलुन द्युतुन तसुन्दिस मोंखस पान ॥
यि दयि गथ वुछतु येंलि तंम्य तस कोंरुन ग्रास ।
कोंरुस तंम्य छल गोंहिसतानु किन्य न्यबर द्रास ॥ ४० ॥

करुनि लोंग बलुवान तति योंद स्यठाह ज़ोर ।
हनूमानन दोंपुस वोंन्य कोंत च्रलख ओर ॥
म छम तस रामु च्रंन्दुरुनि ख्राविं हुंज द्रुय ।
करथ ब येंत्य शान्त नतु वन पाय क्या छुय ॥
दोंपुस तंम्य कर ख्यमा कैंह मा मे मोंगुमय ।
ब गोस मोंख्त चानि दरशनु जय च्रे बंविनय ॥
मे आसन जाय छमना हरमकानस ।
कंरुम आंगन्या मे दीवव येंथ्य मकानस ॥

न दे । ३५ तब उसने कहा—(रे दैत्य !) तू क्यों मुझे विचलित कर रहा है ? तुझे जो चाहिए, माँग । मैं दे दूँगा, मगर यह छल (माया) न कर । इस पर उसने कहा—मुझे बस तेरा मांस चाहिए। वह बोला—तू मुँह खोल, मैं अभी तेरी क्षुधा को शान्त कर देता हूँ । यह सुनकर उसने मुँह खोला और (हनुमान ने) उसके वचन का मान रखा और सत्य का पालनकर उसके मुँह में अपने आपको दे दिया । दैवगति देखिए, जब उस (दैत्य) ने उसको ग्रास बनाया तो वह (हनुमान) छल करके उसके गुह्यस्थान (मलद्वार) से बाहर निकल आया । ४० इसके बाद वह बलवीर हनुमान उसके साथ काफ़ी ज़ोर से युद्ध करने लगा और कहने लगा कि अब तू भागकर कहाँ जायेगा ? मुझे उन रामचन्द्रजी की खड़ाऊँ की क़सम है कि मैं तुझे यहीं पर शान्त कर देता हूँ, अन्यथा बोल तेरा रहस्य क्या है ? तब उसने कहा—मुझे क्षमा कर दीजिए । मुझे कुछ भी नहीं चाहिए । मैं तो बस आपके दर्शन से मुक्त हो गया, आपकी जय हो । मेरा (असली) निवास देवलोक में है । मुझे वहाँ से यहाँ आने की आज्ञा

मे दोंपुहम गछ च्रु हलुमुत तति वुछिथ यिन ।
छु बलुवीराह च्रु तमिसुन्द बल वुछिथ यिन ॥ ४५ ॥
तवय बापथ मे चोनुय बल वुछामय ।
मे बखशुम वोन्य मनस मा केंह लंजी खय ॥
शरन आसय तु पादन बो दिमय मीठ्य ।
च्रे बंविनय जय उमुर आंसिनय स्यठाह ज़ीठ ॥
वोंदुनि वोंथ हलुमतस प्यठ आलुवुन पान ।
करुन लीला तमिस पादन वोन्दुन पान ॥ ४८ ॥

लीला

दीवी सपथा राख्युस छु हनूमानु सुन्द गोन ग्यवान

ज़ुव पान वन्दुहय चान्यन पादन ।
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ॥
रामु जुव्य आगिन्या कर तोरु फेरुनस,
सोरुय समसार छंडि़थ तु आख ।
वाख दोश च्रोल पोश लागय पादन,
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ॥ १ ॥

मिली । मुझसे कहा गया—जा और वहाँ हनुमान को देख । वह बलवीर है । उसका बल देखकर आ । ४५ इसी कारण मैंने आपका बल देखना चाहा था । मुझे माफ़ कर दीजिए और मन से मेरे प्रति मैल को निकाल दीजिए । मैं आपकी शरण में आया हूँ और आपके चरणों को चूम रहा हूँ । आपकी जय हो और आपकी आयु सुदीर्घ हो । तब वह उठ खड़ा हुआ और हनुमान पर बलिहारी गया और पादों को चूमकर वन्दना करने लगा । ४८

'सपथा' राक्षस द्वारा हनुमान के गुणों का बखान

तन-मन आपके चरणों पर वारूँ, यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । रामजी ने आपको यहाँ आने की आज्ञा जैसे ही दी; आप सारे संसार को छानकर यहाँ आ गये, और आपका जन्म धन्य हो गया (बन्दर-योनि में उत्पन्न होने का दोष दूर हो गया)—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । १ मैं आपके चरणों की शरण में आ गया हूँ, मेरे भाग्य का उदय हो गया है, जो आपने मुझे दर्शन

च़रुनन चान्यन शरुनुय आसय,
वाग्य आम वौदुयस लोबुम दरशुन ।
दरशनु चानि मूख्य गंयम अपरादन,
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ॥ २ ॥

आरुत्य आस्य चान्य आरदना करान,
गाल पाप शाप सन्ताप कामन ।
पास कर छुख ख्यमा सागर च़ु आसन,
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ॥ ३ ॥

वोलुसनु बु आसय छारान छारान,
लारान दीवी तु दीवता ह्यथ ।
बल च़ें द्युतुनय लगुयो पादन,
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ॥ ४ ॥

हलुमतु बलुवीरु क्याज़ि छुख कांपन,
चानि अथु वोपुकार प्रथ ज़ीवस ।
लयि यितु ल्यूखुमुत छुय यी वादन,
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ॥ ५ ॥

हलुमुत शरन गव अदुह रामु पादन,
सुता रामु रामु लंज परुने ।

दिये । आपके दर्शन से मेरे अपराध (पाप) मुक्त हो गए—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । २ भक्त लोग आपकी आराधना करते हैं । आप उनके पाप और शाप तथा उनका संताप दूर करनेवाले हैं । हम पर दया कीजिए, क्योंकि आप क्षमा के सागर हैं —यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी चाह है । ३ आपको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मैं प्रेम-मग्न हो गया । ढूँढ़ने के लिए अनेक देवी-देवता मेरे साथ थे । (श्रीरामचन्द्रजी) आपको अपार बल दे गये हैं । आपके पादों पर बलि-हारी जाऊँ—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । ४ हे बलवीर हनुमान ! आप काँप क्यों रहे हैं ? आपके हाथों से प्रत्येक जीव का उपकार होता है । आप अब अपना प्रताप दिखाकर वचन निभायें —यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । ५ हनुमान राम के पादों की शरण में गया और सीता राम-राम पढ़ने लगी । (हे मनुष्य!) तू भी सदैव राम के चरणों की शरण में जा—यह रक्त भी चढ़ाऊँ,

गरि गरि शरन गछ अदु रामु पादन,
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ।। ६ ।।

यूगु तय ग्यानु सुत्य लांयतव नादन,
प्रखटुय प्रावख मोंखती थान ।
परमानन्दु रूपु प्रावख सादन,
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ।। ७ ।।

प्रथ जायि आसिथ आहम नु वने,
बलु बोड़ वुछतन मुहु अग्यान ।
पज़ि किन्य पोश ज़न लागुयो पादन ।
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ।। ८ ।।

मायायि चानि तोर युस हनि हने,
सुय वुछि सनमोंख चोनुय ध्यान ।
ध्यान चोन वुछिथ शेर त्रावय पादन,
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ।। ९ ।।

छोरुमख मुनीशोंरु मनु सनि वोंगुनी,
यूगियि यूगु मंज़ु हावतम पान ।
बखति मंज़ु डच्यूठमख प्रज़ुलान सादन,
लादन थांवथम तु वन्दुयो रथ ।। १० ।।

मुझे तो बस आपकी ही चाह है । ६ योग और ज्ञान से जो उसे ढूँढ़ेगा, उसे प्रत्यक्ष मुक्ति का धाम मिल जायगा और परमानंद-रूपी सिद्धि प्राप्त हो जायेगी—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । ७ हर जगह व्याप्त होकर भी आप में अहंकार नहीं है तथा बलशाली होकर भी आप मोह व अज्ञान से दूर हैं । मैं सच्चे मन से आपके पादों पर पुष्प लगाता (अर्पित करता) हूँ—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । ८ जो आपकी माया में पूर्ण रूप से खो गया, वही आपको ध्यानपूर्वक अपने सम्मुख पायेगा । आपके इस रूप को देखकर मैं अपना शीर्ष आपके पादों पर रखता हूँ—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । ९ हे मुनीश्वर ! मैंने आपको अपने मन में आगे-पीछे ढूँढ़ा । हे योगी ! अपने योगी-स्वरूप मे मुझे अपना रूप दिखाइए । भक्ति में प्रज्वलित हो रही सिद्धि की तरह आप मुझे दिखायी दिये थे—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो वस आपकी ही चाह है । १० आप तक पहुँचने के

मुहु ज़ाल रूदुम तोरु च्रे कने,
निशि आसिथुय मे रावुम ज़ान ।
मुहु ज़ाल कासुवुन च्रुय छुख सादन,
लादन थावथम तु वन्दुयो रथ ॥ ११ ॥

जूती रूफ छुख मुह कासुवोनुय,
गटि मंज़ु वासतम दूफ ज़न मे ।
रूफ चोन प्रज़ुलन स्यदन तु सादन,
लादन थावथम तु वन्दुयो रथ ॥ १२ ॥

लोलु नार चोन युस हेयि मंज़ मनय,
सनि क्या तस यस मनि रोज़ि ज़ान ।
हान करतु रावुनस छुय चोन वादन,
लादन थावथम तु वन्दुयो रथ ॥ १३ ॥

प्रकाशि चारु क्याह लानिन्यन वादन,
बलु बोड़ हलुमुत वथित गव ।
गरि गरि सोरवुन सुय रामु पादन,
लादन थावथम तु वन्दुयो रथ ॥ १४ ॥

लिए मेरे (मार्ग में) मोह-जाल खड़ा हो गया । पास में रहते हुए भी आपका परिचय मैं भूल गया था । अब मेरा यह मोह-जाल काटिए, क्योंकि आप सिद्ध हैं—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । ११
आप ज्योति-रूप में मोह को काटनेवाले हैं । अतः अन्धकार में दीप की तरह प्रकाशित हो जाइए । आपका ही रूप सिद्धों और साधुओं में प्रज्वलित हो रहा है—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । १२
आपकी प्रीति की अग्नि जो अपने मन में सँजो ले, उसके मन में और कोई भी बात समा नहीं सकती । अब आप अपने वायदे के अनुसार रावण का पतन कीजिए—यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । १३
'प्रकाश'[1] कहता है कि कर्म के लेख का कोई चारा नहीं होता । (यह स्तुति सुनकर) बलशाली हनुमान उठ खड़ा हुआ तथा बार-बार राम-नाम का स्मरण करने लगा । यह रक्त भी चढ़ाऊँ, मुझे तो बस आपकी ही चाह है । १४

१ ग्रन्थ के रचयिता 'प्रकाशराम' ।

सुतायि हुन्द दरशुन

पकन गव ओस लौत्य लौत्य पूर्य तावन ।
वुछन सुता प्रुछन आवन तु कावन ॥
वुछुन येलि शहर लंका आश्चरस गव ।
वनुनि लोंग गत छि चानी ही सदाशिव ॥
वुछुन तति बारि कनि रोंफ सेरि कनि सोंन ।
बिलोरुक्य थम जंरिथ जवहर लबन चोंन ॥
पथर रवुकन वथुर्यमुत्य लाल व याकूत ।
सबुज़ तालव तु तारख मोखतु ज़मुरूत ॥
वुछुन दरवाज़ु सोंनु तालव पंत्युम वुज़ ।
पचव कनि पंर्ययि लागिथ फ़ोज दर फ़ोज ॥ ५ ॥

दनेशट कोमार वेशि करुम आस्य शेरन ।
बरन, दार्यन, वोट्यन, ब्रान्दन तु हेरन ॥
हेरा सोंठुकुच वुछिन सारुय सरापाय ।
दपन सोरगस अन्दर येन्दरस नु तिछ जाय ॥
वुछुन येन्दराज़ु सांपुनमुत छु गिलकार ।
संबालान सातु सातु दर तु दीवार ॥

सीता का दर्शन

वह (हनुमान) धीमे-धीमे पग डालता हुआ चलता गया और सीता को (बेचैनी की अवस्था में) पशु-पक्षियों से (कुछ) पूछते हुए देखा। जब उसने लंका शहर को देखा तो आश्चर्य करने लगा और कहने लगा—हे सदाशिव ! यह आप की ही गति (माया) है। उसने पलस्तर की जगह चाँदी और ईंटों की जगह सोना देखा। बिल्लौर के खम्भे देखे तथा चारों दीवारों में जवाहर जड़े हुए देखे। नीचे फ़र्श पर लाल व याकूत (लाल रंग के बहुमूल्य पत्थर) बिछे हुए थे तथा सब्ज़ रंग की छत पर तारकों की भाँति मोती जड़े हुए थे। (उसने) मुख्य दरवाज़े को सोने का देखा, जिसमें लकड़ी की जगह पर्याप्त मात्रा में सोने के तख़्ते लगे हुए थे। ५ धनेश, कुमार व विश्वकर्मा (इस भवन के) द्वार, खिड़कियाँ, कमरे, बरामदे व सीढ़ियाँ ठीक कर रहे थे। उसने देखा कि उसने भवन का प्रत्येक भाग चमक रहा है। कहते हैं, स्वर्ग में इन्द्र का स्थान भी ऐसा नहीं है। उसने देखा कि राजा इन्द्र स्वयं गिलकार (राज, मेमार)

दनेश्ट कौमार वेशि करुम ओस वरपा।
कमर वसतु चव गुलदसतु बं यकपा॥
येती नेरन तोतुय बेयि आस्य वातन।
सन्ध्यावकतन चन्दुर यिथुकन प्रबातन॥ १० ॥

तिमन पेठ्य किन्य वुछिन तस रावुनस जाय।
तिथिस असुरस मनशु सुन्द क्याह् छु परवाय॥
दौसव कनि रेश्य वुछिन लंगिमुत्य सितारन।
लबन वुछ्य वुछ्य लबन ज़न मोख्तु हारन॥
वुछन गव सारिनुय बाहुवुन्य वरूजन।
वथुरमुत फ़रुश ज़न आकाश हन हन॥
सौ लंखिमी वुछिथ लंखिमी वुछिन मगरूज़।
यिवान ब्रह्मा करान न्यथ ठोकरस पूज़॥
वंनिथ हेकिज़्या अंगुन तति ओस वाज़ुह।
करुम मुहरिर तु नाज़िर दरमु राज़ुह॥ १५ ॥

शुमालुक वाव तति प्रथ सातु आसन।
डुवन सुय दादि सुत्य आमन तु खासन॥

बने हुए थे, जो दरवाज़े और दीवारों को समय-समय पर सम्भालते (ठीक करते)। धनेश, कुमार और विश्वकर्मा कमर कसकर काम पर लगे हुए थे तथा गुलदस्ते की तरह (भवन को) सजा रहे थे। (भवन की बनावट विचित्र थी।) जहाँ (जिस कमरे) से निकलते, वहीं वापस पहुँच जाते, जैसे चन्द्रमा प्रभात-काल में अदृश्य हो कर पुनः सन्ध्या समय दिखायी पड़ता है। १० उसने देखा कि रावण (के बैठने) की जगह सबसे ऊपर थी और ऐसे असुर को भला मनुष्य की क्या परवाह थी। दीवारों में ऋषियों को सितारों की तरह चमकते देखा, जो मोतियों की तरह दिखायी दे रहे थे। हर तरह उस (हनुमान) ने सभी चौसियों बुर्जों को देख लिया, जिनका फ़र्श आकाश (के तारों) से जड़ा हुआ था। (लंका के) वैभव (लक्ष्मी) को देखकर उसने लक्ष्मी का गर्व भंग हुआ पाया। ब्रह्मा नित्य आकर (रावण के) ठाकुरद्वार (स्थापना-गृह) की पूजा करता था। और क्या कहें! अग्निदेव वहाँ खुद बावरची बने हुए थे। कर्म मुहर्रिर व धर्मराज नाजिर बने हुए थे। १५ शुमाल (उत्तर) की वायु वहाँ हरदम बहती रहती, जो हर आम व खास को नीरोग रखती। वरुण स्वयं पनहारा बनकर वहाँ चला आता और इस

वरुन पान्युर यिवन तोंत पान्य पानुह ।
दपन दयि गरु दशिरावुन बहानुह ।।
कंज़ल वन चूकिदर तस क्याह छि मारन ।
नखस क्यथ ज़िन्य गेंड़ा ह्यथ पानु लारन ।।
गंमुत्र बुतराथ कं'ड़च हुर हिश वुछिव छल ।
यिवन पानय प्रबातन ठोकुरस तल ।।
बिहिथ तति रांगिन्या लांगिथ संन्य वांर ।
तिमन सार्‌यन सों सूता वातुनुच तांर ।। २० ।।

यि केंछा तति ति कर सांरिस जहानस ।
रंटिथ यमुराज़ु थोवमुत कांदख़ानस ।।
तिमय सामानु येलि तंम्य पानु तति डीठ्य ।
हनूमानन तंमिस पादन दिमस मीठ्य ।।
स्यठाह खोश गव वुछिन येलि जान जाया ।
दोंपुन करुनांव कंम्य यिछ़ वेंशनु माया ।।
दोंपुस ताम नारुदन वुछ क्या वुछन छुय ।
वोंमा दीवियि दोंहु अकि यी यछ़ा गय ।।
शरन सांपुन्य शिवस रोंटनस बहाना ।
गछेम आसुन बिहुन क्युत़ रुत मकाना ।। २५ ।।

तरह वहाँ सभी कुछ था। चन्दनवन का स्वामी वहाँ स्वयं कन्धे पर लकड़ियों का गट्ठा लेकर चौकीदारी करता। पृथ्वी को (उस रावण ने अपनी शक्ति से प्रकंपित कर रखा था और वह स्वयं प्रभात-वेला में स्थापना-गृह में उपस्थित हो जाती। राज्ञी देवी वहाँ एक ओर बलि के बर्तन में बैठी हुई थी। सभी को बस सीता के आगमन की प्रतीक्षा थी। २० जो कुछ वहाँ (लंका में) था, वह भला सारे जहाँ में कहाँ है। उस (रावण) ने यमराज को पकड़कर क़ैदख़ाने में डाल रखा था। इस तरह जब ऐसे-ऐसे सामान (अनोखे प्रसंग) हनुमान ने वहाँ देखे तो वह प्रसन्न हो गया। एक अच्छे स्थान को देखकर वह बहुत ख़ुश हो गया और कहने लगा कि भला ऐसी माया किसने रची है ? (ऐसा सुन्दर भवन किसने बनाया है ?) तभी नारदजी ने (प्रकट होकर) कहा—देखो, तुम्हें भी क्या सूझी है ? (तब वे आगे कहने लगे—) एक दिन उमादेवी की इच्छा जागी और वह शिवजी की शरण में जाकर उनसे निवेदन करने लगीं—मेरे रहने के लिए एक रुचिकर (सुन्दर) मकान (भवन)

शिवन याम बूज़ुनस थंत्र ख़ौश स्यठाह गोस ।
करन तप रावुनन मोंगमुत यि कर ओस ।।
दनेश्ट कौमार वेंशि करुम मंगुनाविन ।
लोंदुन गरु त्युथ दपख युथ तम्बुलाविन ।।
पकन गय तिम जु येलि सोरुय छंडिथ आय ।
प्रज़ा प्रथ जायि निशि परायी दपिथ द्राय ।।
वुछिख येलि बूम तिमव सारुय बराबर ।
वंथिथ आकाश गंयि ड्यूठुक समन्दर ।।
तती पानिस अन्दर ड्यूठुक ज़ुवाह जान ।
दोंपुख क्या सनु कंम्य कोरमुत छु युथ दान ।। ३० ।।

प्रुछुख ब्रह्मा ज़ुवस सोरुय यि ज़ल ओस ।
ज़लस मंज़ सौरगुदारा पादुह कर गोस ।।
दोंपुस ब्रह्मा ज़ुवन येलि ना गरुड़ ज़ाव ।
लंजिस बौछि गव वंथिथ कशफस निशि आव ।।
दोंपुन मालिस च्रु कंछा ख्यन टुकन दिम ।
दोंपुस तंम्य ख्यन च्रु अख मद होंस्त बेंयि क्रुम ।।
त्रे हथ क्रुह थंद्य छि तिम तवु खोतु दोगन ज़ीठ्य ।
करुनि लंग्य योद स्यठाह गरडन तिथय डीठ्य ।।

होना चाहिए । २५ शिवजी ने जैसे ही सुना वे बहुत—खुश हो गये । इधर रावण ने तप कर उनसे (इसे बाद में) माँग लिया । उन्होंने (शिव ने) धनेश, कुमार व विश्वकर्मा को बुलवाया और उन सभी ने ऐसा घर (भवन) बनाया, जिसे देख सभी मचल उठे । उधर वे दोनों (शिव और पार्वती) सभी जगहों को देखते हुए वहाँ आ पहुँचे । प्रजा उन्हें पराया जानकर हर जगह से निकल गयी । जब उन्होंने सारी भूमि एक-जैसी देखी (सर्वत्र यही हाल देखा) तो वे आकाश की ओर उड़ गये और नीचे उन्होंने एक समन्दर देखा । वहाँ पर पानी में उन्होंने एक जीव को देखा । वे कहने लगे भला ऐसा दान किसने किया है ? ३० उन्होंने ब्रह्माजी से पूछा कि यहाँ तो सर्वत्र जल था, यह जल में स्वर्ग-द्वार (रमणीक भवन) कब पैदा हुआ ? तब ब्रह्माजी ने कहा—जब गरुड़ ने जन्म लिया तो उसे (बहुत) भूख लगी और वह उठकर कश्यप के पास आ गया । उसने अपने पिता (कश्यप) से कहा—जल्दी से मुझे कुछ खाने को दीजिए । उन्होंने कहा—जा, उस मदमस्त हाथी और ग्राह को खा

वंथिथ गव वाव ह्युव जागिथ गछिथ प्योख ।
पंजन दोन क्यथ तुलिन आकाश्य ह्यथ गोख ॥ ३५ ॥

दपन तति पारिज़ातुक ओस ना कुल ।
वुछिव तम्य मासूमन कोताह तच़र तुल ॥
दुज़ोलिस मंज़ येलि तिम ह्यथ थवुन ज़ंग ।
गोब्यरु सुतिन कुलिस वोथ च़ुस्तु अख लंग ॥
रंटिन तिम तोंति सुतिन वुछ तसुन्द्य गोन ।
रटुनु योदवय वंसिथ बुतराथ गछि बोन ॥
दपन पानिस अन्दर दारिथ ह्युतुन लंग ।
अलुनि लंज बूम बेयि आकाशि प्यठु गंग ॥
लंगुक गोड़ ब्यूठ पातालस सुतिन सुव ।
लंजन हर हांगुलन तमिक्यन सपुन ज़ुव ॥ ४० ॥

लोंदुख गरु ईशरस येलि गंयि मनुशा ।
लंगुक कंन ब्यूठ तथ प्यव नाव लंका ॥
लंज़ुख यिछ़ लांक थंज़ डीठुथ च़े पानुह ।
वुछख वोन्य क्या कर्यस सुता वकानुह ॥

डाल, जो तीन सौ कोस ऊँचे और उससे भी दुगुने लम्वे है। वे दोनों युद्ध कर रहे हैं। गरुड़ ने उन्हें देख लिया। वह वायु की तरह उड़ गया और उनपर टूट पड़ा तथा अपने दो पंजों में पकड़कर उन्हें आकाश मार्ग की ओर ले गया। ३५ कहते हैं, वहाँ (स्वर्ग में) जो पारिजात वृक्ष था, उसे काफ़ी दुःख उठाना पड़ा। क्योंकि जब उसने (उनको लेकर) उस वृक्ष के भुजान्तर में अपना पैर रखा तो भार से उस वृक्ष की एक डाल छिलकर टूट गयी। तब उस गुणी (गरुड़) ने उन्हें (हाथी व ग्राह को) अपनी चोंच में थाम लिया और (कहा कि) यदि मैं इन्हें छोड़ दूँ तो कहीं पृथ्वी (इनके भार से) नीचे धँस न जाए! तब उस डाल को उसने पानी में फेंक दिया, जिससे नीचे भूमि और ऊपर आकाश में गंगा हिलने लगी। उस डाल का एक सिरा पाताल के साथ जा लगा और उसके पत्तों व टहनियों में जीवन का संचार हो गया। ४० ईश्वर की मंशा के अनुसार आधार वनाकर—उस पर मकान वनाया गया, जिसका कि नाम लंका पड़ा। ऐसी लंका बनी, जिसे आपने स्वयं देख लिया है। अव आप ख़ुद देखेंगे कि सीता उसकी क्या दुर्गति वनाती है! वह लंका मनुष्य-लोक में अँगूठी के ऊपर नग के समान बन गयी है, जिसे शिव ने धर्म का पालन कर अपना संरक्षण

मनुशि लूकस अन्दर गंयि वाजि प्यठ ॠख ।
कंरुस प्राविश शिवन दरमुक द्युतुन शंख ।।
मुनीशर रेंश्य तु ब्रह्मन आयि सालस ।
तिमव दरशुन वुछिथ मंग कंर नु मालस ।।
पौलस्तस सुत्य पुतुर लंकायि येंलि च्राव ।
शिवन येंलि ड्यूठ वाराह खौश तंमिस आव ।। ४५ ।।

कंरुन येंलि पूज़ पातुर च्राल वोवुन ।
दोंपुन दखिना मंगिव कस क्या गछ्यव द्युन ।।
दोंपुस तंम्य रावुनन लंका मे मंजमय ।
गछ्यम दरमस मे दिन्य बोंड दातु छुख दय ।।
दिच्रुन लवु सांरिसुय कंरनस हवालह ।
तनय प्यठु पानु फेरान वालु वालह ।।
सरापा सोंनु सुंज़ कंरनस हवालह ।
यि दीवी दार लांगिथ थोंवनु ज़ालह ।।
ह्यवन छुय मुशक प्रथ पोशस बरन लोल ।
स्यठाह च्रालन तु गालन नु कांसि हुंद बोल ।। ५० ।।

यिमव कंर्य तप तिमन येंलि गव अहंकार ।
दपन वोंनु राखिसन द्युतहख रंटिथ मार ।।

प्रदान किया । (अनेक) मुनीश्वर, ऋषि व ब्राह्मणों को निमन्त्रण दिया गया, जिन्होंने लंका को देख (दान-दक्षिणा) की कामना न की । पुलस्ति (ऋषि) के साथ जब उसका पौत्र (रावण भवन में) प्रविष्ट हुआ तो शिव उनको देखकर बहुत खुश हो गये । ४५ जब उन्होंने पूजा की तो (शिव ने) कहा—आप जो चाहें दक्षिणा में माँग लीजिए। रावण ने (तुरन्त) कहा–मै लंका को माँगता हूँ, यह मुझे धर्म के नाम पर मिल जानी चाहिए—आप ईश्वर-रूप में सबसे बड़े दाता हैं । तब उन्होंने चारों ओर पानी छिड़क कर (लंका को) उसके हवाले कर दिया और तब से वे (शिव) स्वयं पर्वत-पर्वत घूमने लगे । सारा सोना व ज़ेवर उसके हवाले कर दिया और इस भवन को सौपकर उसे (एक तरह से) जाल में फँसा दिया । (पहले पहल) वह (रावण) प्रत्येक फूल (पुष्प) को सूँघकर उस पर प्रेम बरसाता था और सब कुछ सहनकर किसी पर भी हाथ न उठाता था । ५० मगर जब अत्यधिक तप करने के बाद भी कोई अहंकारी बने (तो उसका क्या उपाय हो !) कहते है, नीचे राक्षसों ने ब्राह्मणों को पकड़कर

कौरुन त्युथ तेंलि येंलि युथ ज़न मनस गोस ।
दौंह्य दीवन तु असरन यौंद स्यठाह् ओस ।।
असर येंलि मार्‌य तंम्य येंन्दराज़ु वीरन ।
कौंलव किन्य द्रायि राख्यस बायि यीरन ।।
यौंदस येंन्दराज़ु गव प्यव राखिसन वाव ।
वुछिव क्यथु पाँठ्य च्रुनि फौंति मंज़ु त्यंगुल द्राव ।।
र्‌यौंशा अख बौंड पौंलस्तु ओस तस नाव ।
प्रबातन वौंथ नंदियि प्यठ बुथ छलनि द्राव ।। ५५ ।।

सौंन्दूका अख वुछुन पानिस ईरान ओस ।
रौंटुन थफ दिथ अन्दर वुछनुक मनस गोस ।।
वुछुन मुच्रुरिथ त्रुया डीठुन ह्‌यरिथ प्रान ।
दौंयिम तस दौंद चवान कनिखा वुछिन जान ।।
कन्यख खारुन तु नारी छुनिन त्राविथ ।
थंवुन पनुनिस गरस मंज़ पानु खारिथ ।।
नियन गरसुत्य पानस वातुनावुन ।
गरस पनुनिस अन्दर तंम्य वारु थावुन ।।
करुन तंम्य यी प्रतेंग्या पानुसुय कुन ।
थवन गोंबरस व्यवाह् अज़ मनु सावन ।। ६० ।।

उन्हें पीटना शुरू कर दिया और ऐसे-ऐसे कार्य करने लगे जिससे ब्राह्मणों का मन (कष्ट से) भर आया। उधर, देवताओं और असुरों में युद्ध ठन गया। जब उस वीर इन्द्र ने असुरों को मारना शुरू किया तो नदियों में राक्षसियाँ बहने लगीं। इन्द्र स्वयं युद्ध करने को निकले और राक्षसों की शामत आ गयी। अब देखिए कि कोयले की टोकरी में से कैसे एक अंगारा निकला। कहते हैं, एक बहुत बड़ा ऋषि था, जिसका नाम पुलस्ति था। (एक दिन) वह प्रभातवेला में नदी पर मुँह धोने को निकला। ५५ उसने देखा कि एक सन्दूक पानी में तैर रहा है। उसने उसे पकड़ लिया और उसे खोलने पर उसमें एक स्त्री को देखा जो प्राण त्याग चुकी थी; और दूसरी वस्तु उस स्त्री से (चिपटी) दुग्धपान करती एक सुन्दर कन्या को देखा। कन्या को उसने ऊपर ले लिया और उस स्त्री को फेंक दिया। उस (कन्या) को अपने घर में लाकर रख दिया और वहाँ पर अच्छी तरह उसकी देखभाल की। अपने-आप से उसने यह प्रतिज्ञा की कि इसका अपने पुत्र के साथ विवाह रचाऊँगा। ६० वह

सपन्य यंत्र टाठ रंछ्य तंम्य आठ नवु मास ।
बंड़िथ बूज़ुन सों आंखुर राखिसेंन्य आंस ।।
वुछिव त्रयि बावु येंलि तस आव यावुन ।
प्रसुनि लंज्य ज़्युठ गोंबुर तस ज़ाव रावुन ।।
वुछिख तस दंह मोंख नरि दह दोंगुनि वुह ।
मोंचर वाराह तु ज़ेछर सासु वंद्य क्रुह ।।
वंनिथ हेंकिज़्या तसुन्द मोंख ओस अंगुनु कोंड़ ।
मोंखस मंज़ दन्द तस ज़न च्रमुरुव्य मोंड़्च ।।
मंज़ुलि मंज़वाग येंलि कोंड़नख ज़ंगन काड़ ।
वोंतर कुन शेर दखिनस कुन दितिन पाद ।। ६५ ।।

ति डीशिथ खूच्र र्‌योंश दोंपनस युतुय प्रस ।
तंमिस पतु ज़ाव तस खर देव तु रांण्टस ।।
लोंगुस रस बेंयि कोंम्बु करनस च्रंटुन नान ।
स्यठाह र्‌योंश खूच्र अंगुनस लोंग हुमुनि पान ।।
असर येंलि गोस वीदुक ज़ास वेंबीशन ।
तंमिस पतु थनु प्यव बेंयि वेंशरवन ।।

उसकी लाड़ली बन गयी और आठ-नौ मास तक उसका पोषण किया। जब वह बड़ी हुई तो उसे (बाद में) मालूम पड़ा कि वह तो एक राक्षसी थी। जब (वह) स्त्री-सुलभ यौवन को प्राप्त हुई तो उसका प्रसव हुआ और पहला पुत्र रावण जन्मा। उसके दस मुख और (दस दूने) बीस बाँहें थीं। वह काफ़ी मोटा और हजारों कोस लम्बा था। उसके मुँह के बारे में क्या कहें? उसका मुँह जलते हुए अग्नि-कुण्ड के समान था और उस मुँह के अन्दर दाँत, मानो चमड़े के बड़े-बड़े गट्ठे थे। तब उस (राक्षसी) ने एक अँगड़ाई ली और उत्तर की तरफ उसका सिर और दक्षिण की तरफ उसके पाँव हो गए। ६५ उसका यह रूप देखकर (पुलस्ति) भयभीत हो गया और कहने लगा (निवेदन किया) कि बस, अब तू प्रसवकाल को और आगे न बढ़ा। उसके बाद उससे खर देव (दैत्य) और राक्षसी शूर्पणखा पैदा हुए और फिर कुम्भकरण की नाल काट ली गई। तब वह ऋषि बहुत डर गया और अग्निदेव को आहुतियाँ देने लगा। इस वैदिक रीतिके प्रभाव से विभीषण पैदा हो गया और उसके बाद वेंशरवन (वैश्रवण?) कोख से निकला। (इस प्रकार) दो सत्यकर्मी निकले और चार राक्षसी प्रकृति के निकले, जिनके सिर पर सींग और पैर पीछे की ओर मुड़े

ज़ु करमी ज़ायि राख्यस द्रायि तिम ज़ोर ।
कलस प्यठ ह्यंग पथ कुन ह्ल्य तिमन खोर ।।
दयस हावुन यि रावुन वुछ कों बुन्ययाद ।
रुम अलमासुक्य कनिव ज़म अंड़िजि पौवलाद ।। ७० ।।

मनस यी गोस तस ती ओस हावुन ।
करुन छुस पानु गव देवानु रावुन ।।
दौपुन तस नारदस थंवथम ज़े लादन ।
हनूमानस वन्दस बो चंशमु पादन ।।
पकन गव ओस तस सूतायि छारन ।
लंबुन मा लाल चंशमव मौखतु हारन ।।
लौबुन बाग़ा बिहिशता सौरगु दारा ।
वुछिन तति आसु फेरान डानु वाराह ।।
समिथ आस्य सारि समसारुकय तती गुल ।
अमा तति बाग़बान कावुय नु बुलबुल ।। ७५ ।।

वुछुन ह्यौतमुत दिलस प्यठ दाग़ लालन ।
दपन दूर्यर बु नो छुस यारु ज़ालन ।।
अंरिन्य खंज़मुज़ नखस प्यठ दान पोशन ।
दपन जाफ़ुर गौलाबस छुस नु पोशन ।।
यंम्बुर ज़ल बरु गंमुज़ ज़न बरगि कोसम ।
दपन कोताह ज़ंरिथ ह्यकु चंशमु लोसम ।।

हुए थे। देखिए, उस रावण को दैव ने कैसी प्रकृति दी थी। उसका रोम-रोम अलमास (जवाहर) का, चमड़ी पत्थर की तथा हड्डियाँ फ़ौलाद की थीं। ७० उसके मन में अहंकार पैदा हो गया, क्योंकि ऐसा ही होना था। करना तो सब-कुछ उन्हें (भगवान् को) होता है, अतः रावण दीवाना (अहंकारी) बन गया। उन्होंने नारद से कहा--आपने मेरी बात रखी और हनुमान के पादों पर ये आँखें वारूँ। (इस तरह) वह (हनुमान) सीता को ढूँढ़ने के लिए चलता गया और उसे (एक स्थान पर) आँखों से मुक्ता (के समान आँसू) बहाते पाया। उसने एक बाग़ देखा जो बिहिश्त के समान स्वर्गिक वैभव से युक्त था और जिसके अन्दर बहुत सारी डायनें घूम रही थीं। सारे संसार के गुल वहाँ इकट्ठे थे। वहाँ के बागवान कौए थे, बुलबुलें नहीं। ७५ उसने देखा कि गुलेलाला ने अपने दिल पर एक दाग़ ले लिया है और

वबुर बेताब गामुत्र पान मारन ।
बतख़ लीटिस दपान वुछ गुल अनारन ।।
लडर पोशस दपान वट्टु फंट्य तु ज़िन्दोर ।
फौलख नय पानु असि वात्या करुन ज़ोर ।। ८० ।।
वदन पम्पोश आसस चंशमु लोसन ।
तमिस शमशीर ह्यथ गव लारि सोसन ।।
समिथ सोम्बुलन सुतिन नरगिस रटन ही ।
दपन तस कारि पत्य मज़लामु मा छी ।।
सपुन रू ज़र्द सोन्य पोशन स्यठाह होर ।
कोंगन वुछ पोम्पुरे रूज़िथ गंयस खोर ।।
गोलाबस आस लायान नाद मसवल ।
यितम छम तोर कुन रातस दोहस कल ।।
ग़रज़ सुतायि सोरगुचि हियि गमुत्र हाय ।
तिथय यिथु पापियन नरकस अन्दर जाय ।। ८५ ।।

वह कह रहा है कि अपने यार की दूरी अब सही नहीं जाती । अरिन्य[1] अनार-पुष्प के कन्धे पर चढ़ गयी है और गेंदा गुलाब से कह रहा है कि मैं असमर्थ हो रहा हूँ । नरगिस वर्ग-कोसम[2] की तरह जर्जरित हो गयी है और कह रही है कि मेरी आँखें बुझ गयी हैं, अब मैं ज़्यादा सहन नहीं कर सकती । बबुर[3] बेताबी से शरीर (सिर छाती आदि) पीट रही है और बतख लीटिस[4] से कह रही है कि गुले-अनार की ओर देख । लड़र-पोश[5] से वट्फंट्य[6] और ज़िन्दोर[7] कह रहे हैं कि फूलने के लिए हमें ख़ुद जोर लगाना होगा । ८० कमल की आँखें रोते-रोते बुझ गयीं, उसके ऊपर सोसन[8] ने शमशेर लेकर आक्रमण किया । सुम्बुलों के साथ नरगिस ने 'ही'[9] को घेर लिया और कहा कि उस बेचारी की गर्दन के पीछे (दु:ख) दाग़ लगा हुआ है । सोन्यपोश[10] बिछोह में काफ़ी ज़र्द हो गया और पाम्पोर[11] की केसर को देखकर उसके हाथ-पाँव ठिठक गये । गुलाब (राम) से मसवल (सीता) कह रही है कि अब तुम आ जाओ, दिन-रात मुझे तुम्हारी ही चिंता है । ग़रज़ यह कि स्वर्ग की हूर सीता मुरझा गयी थी और जिस प्रकार पापी नरक के अन्दर दु:ख उठाता है उसी प्रकार वह दुखी थी । ८५ उसके दिल में दूरी (वियोग) का दाग़ लगा था और तभी रावण बाग़ के अन्दर प्रविष्ट होकर कुछ कहने लगा ।

१—१० पुष्पों के नाम ।
११ उस स्थान का नाम जहाँ केसर पैदा होती है ।

वुछुन व्रामुत दिलस तस दूरिरुक दाग़ ।
वनुनि लोंग ताम सु रावुन वोत दरबाग़ ।।
कुलिस प्यठ खोत सु हलुमुत छायि होंल ब्यूठ ।
यि केंछा कोंर तिमव सोरुय ति तंम्य ड्यूठ ।।
वुछिव दरबाग़ यामथ व्राव रावुन ।
परिरियि फुट्य पर ह्योंतुन सामानु त्रावुन ।।
यंम्बुर ज़लि नारु सुतिन कारि पंत्य गय ।
पेयस आयीनु पानस डेशुवुन खय ।। ८९ ।।

लीला

सूता जी हुंज़

व्रोंतुर बोंज़ु वेशनु रूपुह नारानो ।
प्रारु कोनु छुहमो छारानो ।।
ज़गि हुन्दि राजु श्री बगवानो,
प्रथ जीवु ज़ाव्र मंज़ छुख आसानो ।
कासतम वेंगुन छस बु थारानो,
प्रारु कोनु छुहमो छारानो ।। १ ।।
बाग़स बों आंसुस फेरानो,
अछि पोश वीरय पोश सोंम्बरानो ।

हनुमान वृक्ष के ऊपर चढ़ गया और छिपकर बैठ गया। उन दोनों के बीच जो संवाद हुआ, वह उसने देख (सुन) लिया। जैसे ही रावण बाग़ में घुसा तो उस (सीता) ने सारा सामान तितर-बितर कर दिया। वह नरगिस (सीता) क्रोध से दहक उठी और उसे (रावण को) देखने पर उसके आईने के समान तन पर ज़ंग लग गई। ८९

सीताजी का भजन

हे चतुर्भुज विष्णु-रूप नारायण ! मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, आप मुझे ढूँढ़ क्यों नहीं रहे हैं ? हे जगत् के राजा श्रीभगवान् ! आप प्रत्येक जीव-जाति में विद्यमान हैं। आप मेरा विघ्न दूर कीजिए, मैं काँप रही हूँ—मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, आप मुझे ढूँढ़ क्यों नहीं रहे हैं ? १ मैं बाग़ में विचरण कर रही थी, तथा अछिपोश और वीरिपोश (पुष्प-विशेष) इकट्ठे कर रही थी कि वह रावण भेस बदलकर आ गया—मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ,

रावुन मे आम विह्य दारानो,
प्रारु कोनु छुह्मो छारानो ॥ २ ॥

आकाशय ह्यथ गोम दोरानो,
तनु छस तमि सूत्य लरज़ानो ।
मनु छस रामु रामु परानो,
प्रारु कोनु छुह्मो छारानो ॥ ३ ॥

कनन मंज़ कंरनम कनुवानो,
लंखिमनु कोनु छुख च़ु बोज़ानो ।
च़खि सूत्य वंथित गव दज़ानो,
प्रारु कोनु छुह्मो छारानो ॥ ४ ॥

जटायुन ओस नालु दीवानो,
राख्यसु कोनु छुख च़ु ज़ानानो ।
यि च़ु छुख पनुन पान गालानो,
प्रारु कोनु छुह्मो छारानो ॥ ५ ॥

च़ुय छुख करमु हांड़ कासानो,
च़ुय छुख ज़ग तु जीव वासानो ।
तनु मनु छसथ वु छारानो,
प्रारु कोनु छुह्मो छारानो ॥ ६ ॥

राख्यसु सुन्द गोम वकानो,
वु आंसुस वाग़स पकानो ।

आप मुझे ढूँढ़ क्यों नहीं रहे हैं ? २ वह मुझे आकाश में उड़ा ले गया और तव से मैं दुखी हो रही हूँ । मन में मैं राम-राम पढ़ रही हूँ—मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, आप मुझे ढूँढ़ क्यों नहीं रहे हैं ? ३ उसने मेरे कान वहरे वना डाले, हे लक्ष्मण ! तुम सुन क्यों नहीं रहे हो ? वह ग़ुस्से में जलता-भुनता मुझे ले गया—मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, आप मुझे ढूँढ़ क्यों नहीं रहे हैं ? ४ जटायु (अपनी ओर से) वहुत चिल्लाया कि हे राक्षस ! तू समझता क्यों नहीं है ? ऐसा करने से तू अपने आपको गला रहा है—मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, आप मुझे ढूँढ़ क्यों नहीं रहे हैं ? ५ आप ही कर्म का फेर मिटानेवाले हैं, आप ही जग और जीव में व्याप्त हैं । मैं तन-मन से आपको ढूँढ़ रही हूँ—मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, आप मुझे ढूँढ़ क्यों नहीं रहे हैं ? ६ राक्षस मेरे पीछे पड़ गया, मैं वाग़ में घूम रही थी जव

वनु मंजु येंलि गोख च्रु लारानो,
प्रारु कोनु छुहमो छारानो ॥ ७ ॥

प्रथ मनस मंज़ छुख च्रु आसानो,
प्रकाशि गटु छुख च्रु कासानो।
नरकुनि नारु तारु तारानो,
प्रारु कोनु छुहमो छारानो ॥ ८ ॥

सुताथि तु रावनु सुंद संवाद

दोंपुन तस रावुनस लानत च्रे लारी।
बु मारय पान बरथा म्योन मारी ॥
दोंपुस तम्य तोरु तम्य सुन्द बीम कम हाव।
दोंपुस तमि ओय लसुनुच शेंक वोंन्व त्राव ॥
दोंपुस तम्य गोंछ्ह सु योंत युन कासिही व्याद।
दोंपुस तमि येंलि यियी योंत तेंलि पेंयी याद ॥
दोंपुस तम्य रोज़ खोंश वोंन्य गव सु वनुवास।
दोंपुस तमि ओय वुन्य लंकायि करि डास ॥
दोंपुस तम्य कर छे तस में पोशिनुच बाथ।
दोंपुस तमि क्याज़ि आहम च्रूरि ह्यथ राथ ॥ ५ ॥

आप उस (जानवर) के पीछे भागते हुए वन में गये--मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, आप मुझे ढूँढ़ क्यों नहीं रहे है ? ७ आप प्रत्येक के मन में रहते हैं और अपने प्रकाश से अंधकार को दूर कर देते हैं, तथा नरक की अग्नि से तार देते हैं--मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, आप मुझे ढूँढ़ क्यों नहीं रहे हैं ? ८

सीता और रावण का संवाद

तब उस सीता ने रावण से कहा--तुझ पर लानत है। मैं अभी अपने आपको मार डालूँगी और तुझे मेरा भर्त्ता मार डालेगा। उसने उधर से कहा--उसका भय ज़्यादा न दिखा। वह बोली--अब तो जीने की आशा छोड़ दे। उसने कहा--वह यहाँ आ जाता और तेरी सारी व्याधियाँ दूर कर देता। वह बोली--वह जब आयेगा, तभी तुझे (याद) मालूम पड़ जायेगा। उसने कहा--तू ख़ुश हो जा। वह तो (पुनः) वनवास को गया है। वह बोली--तेरी लंका को वही नष्ट कर डालेंगे। उसने कहा--उसमें भला मुझसे मुक़ाबला करने की शक्ति कहाँ है ? वह बोली

दोंपुस तंम्य रोज़ ख़ोश वादुक्य शें र्‌यथ सूर्‌य ।
दोंपुस तमि वुन्य यियम बरथा पनुन यूर्‌य ।।
दोंपुस तंम्य वोंथ सोंखुक्य सामानु पाराव ।
दोंपुस तमि चोन दोंख डीशिथ च़ेतस थाव ।।
दोंपुस तंम्य म्योन पूज़ुन छुय ग़ंनीमथ ।
दोंपुस तमि कर च़ु बेंयि दोंह पांशि फ़ुरसत ।।
ग़रज़ तस कुन वुछिथ सुतायि गंयि हान ।
ख़बर छा कोनु पुशरोवुन दयस पान ।।
तंमिस मन्दूदंरी ह्यथ कोंछि क्यथ आंस ।
र्‌यतन शन ज़न स तस ज़ामुच़ सतह मांस ।। १० ।।

वनुनि लंज्य रावुनस योंदवय बु वावस ।
अंनिथ सुतायि हुन्द ज़ातुख बु हावस ।।
यि मा मार्‌यम बु मा गछ़ु नरकु वांसी ।
तमिक्य सांरी लख्यन तस याद आंसी ।।
दोंपुन आंखुर तंमिस रुसवा गछ़खना ।
यि मारी पान अदु अफ़सूस ख्यख ना ।।
त्युतुय बूज़िथ सु रावुन बेंयि न्यबर द्राव ।
हनूमानन वुछुन सुतायि निश आव ।।

--तो फ़िर मुझे चोरी से (छिपकर) क्यों लाया था ? ५ उसने कहा—तू अब ख़ुश होजा, वायदे के छः मास भी बीत गए । वह बोली—मेरे भर्त्ता अभी यहाँ आजाएँगे । उसने कहा--उठ और सुख से अपना दामन सजा । वह बोली--मुझे तेरा दुःख देखना होगा, ऐसा याद रख । उसने कहा--मेरा पूजना ग़नीमत जान । वह बोली--अभी तू चार-पाँच दिन के लिए और फ़ुर्सत रख (इन्तजार कर) । ग़रज़ यह कि उसे देख सीता को नफ़रत हो गयी और न जाने क्या सोचकर अपने को भगवान् के हवाले न किया (प्राण न त्यागे) । तब मन्दोदरी ने उसे गोद में ले लिया, जैसे वह सात मास की बच्ची (कोमलांगी) उसी की कोख से जन्मी हो । १० वह कहने लगी-- यदि मैं सीता की जन्मपत्री लाकर रावण पर यह रहस्य (कि सीता मेरी ही पुत्री है) प्रकट कर दूँ तो वह मुझे मार डालेगा और मेरा वास नरक में होगा, और नरक के सारे लक्षण मुझे याद हैं । इसलिए आख़िर में उसने रावण से कहा--तू (यों छल-बल करेगा तो) रुसवा होगा । यह अपने आपको मार डालेगी और तुझे फिर अफ़सोस होगा । यह सुनते ही वह

वोंदुन तस कुन वुछिथ तन सूरुनोवुन ।
कंड़ुन तस रामु चंन्दुरुन्य वांज हावुन ।। १५ ।।

अंछिन तमि वांज लांजिन गाश बेयि आस ।
मुदा ओसुस गोमुत शव बेयि जुव त्रास ।।
वोंदुन्य वंछ हलुमुतस प्यठ आलुवुन पान ।
वन्दुनि लंज्य रामुचंन्दुरुनि वाजि जुव जान ।।
ख़ोशी सूतिन करान सूता छि शांदी ।
ख़ोशी मंज़ लंज्य वनुनि सारी सों दांदी ।। १८ ।।

लीला

सूतां जी हुंज़

आव बहार बोलु बुलबुलो ।
सोन वोंलो बरुयो शांदी ।।

द्राव कठ कोंश ग्रयज़ु पां छलो,
ज़रु त्रलुनो वन्दुक्य दांदी ।
वुज़ु नेंन्दुरे वुनि छयनु सुलो ।।
सोन वोंलो बरुयो शांदी ।। १ ।।

रावण वापस बाहर निकल आया । जब हनुमान ने यह देखा तो वह सीता के पास आ गया । उसको देखकर वह रोने लगा और रामचन्द्रजी की अँगूठी निकालकर उसको (सीता को) दिखायी । १५ उसने उसे (अँगूठी को) आँखों के साथ लगाया और (उसकी आँखों का) बुझा प्रकाश लौट आया । उसका शरीर शव-जैसा हो गया था, उसमें वापस जीवन समा गया । वह उठ खड़ी हुई और हनुमान की वन्दना करने लगी और रामचन्द्रजी की अँगूठी पर जी-जान निछावर करने लगी । ख़ुशी में वह सीता शादमानी करने लगी और अपने दुःख-दर्द को व्यक्त करने लगी । १८

सीताजी का भजन

बहार आ गयी, बुलबुल ! तू बोल और आ, हम दोनों ख़ुशियाँ मनायें । पाला टल गया । अब तू बेखटके अपने तन को नहला और जाड़े की यातनाएँ भूल जा । तू नींद से जाग, देर न कर—आ, हम दोनों ख़ुशियाँ मनायें । १ कौए, पेंडुकी और पोशनूल गुल से पुकार-पुकार कर फ़रियाद कर रहे हैं कि वह भी मन की कथा व गिले-शिकवे कह डाले—आ,

काव़ु क़ुमुरी वुछु पोशि नूलो,
आव नालन ज़न फ़र्‌य यादी ।
बाव वोन्दुक्य ग़म ग़ोसु गुलो ।।
सोन वोलो बर्‌यो शादी ।। २ ।।

नाव़ु हियि तन नेर सोम्बुलो,
ह्यथ ज़मीनस खति आज़ादी ।
प्यालु ह्यथ छय यम्बुरज़लो ।।
सोन वोलो बर्‌यो शादी ।। ३ ।।

हाव दरशुन असि न्यरमलो,
छिम मे गामुत्य लोलुन्य लादी ।
शीशि करान छी कुलि कुलो ।।
सोन वोलो बर्‌यो शादी ।। ४ ।।

व्राव सोंथ तय नब गव खुलो,
बुतरात्र प्यठ च्रोल फ़सादी ।
टेकु बटुनि तु यिरु कुम्य फोलो ।।
सोन वोलो बर्‌यो शादी ।। ५ ।।

नाव मन तन त्राव ज़िलु ज़िलो,
द्राव शुहुल पोन्य कमि नागुरादी ।
खसु परवत वसु तुलुमुलो ।।
सोन वोलो बर्‌यो शादी ।। ६ ।।

हम दोनों ख़ुशियाँ मनायें । २ (हे राम !) आप राहु पुष्प-जैसे अपने बदन को धोकर सुम्बुल के समान बन जायें और इस ज़मीन के लिए आज़ादी लेकर आयें । मैं नरगिस आपके लिए अधीर होकर प्रतीक्षा कर रही हूँ—आ, हम दोनों ख़ुशियाँ मनायें । ३ मुझे (आप) अपने निर्मल (रूप के) दर्शन दिखायें । मेरे हृदय में प्रेम के अम्बार लगे हुए हैं । अब कहीं यह मन-दर्पण टूट न जाये—आ, हम दोनों ख़ुशियाँ मनायें । ४ बहार आ गयी और आकाश खुल गया, तथा पृथ्वी पर से सभी फ़साद (सारे दुःख-दर्द) दूर हो गये । री टेकबटनी[1] और विरक्योम[2] अब तुम भी खिल उठो—आ, हम दोनों ख़ुशियाँ मनायें । ५ अपने तन-मन को साफ़ कर दे और तन से भय को मिटा दे । झरनों से ठण्डा पानी फूट पड़ा है

१-२ स्थानीय पुष्पों के नाम ।

छाव अछि पोश लछि नावि गुलो,
रुख़ ख़बर दिथ वुछ म्यान्य दादी ।
बाकुय फ़ाज़िल बोज़ डाम्बलो ॥
सोन वौलो बरुयो शादी ॥ ७ ॥

हाव प्रकाश गाश हो फौलो,
वुछू सिरियन फीर मुनादी ।
छमनु यिवान रातस ज़ौलो ॥
सोन वौलो बरुयो शादी ॥ ८ ॥

लंकायि नार द्युन

हनूमानन दोंपुस वुन्य क्यन ह्यमव वथ ।
दपख योंदवय बु तस निश वातुनावथ ॥
दोंपुस तमि तोरु फीरिथ छुख च़ु सादुह ।
मे वात्यम मोल रावुन यी छु वादह ॥
डंजिस येंलि वासुना तथ यी छु दसतूर ।
सोंनस सरतल अहंकारस करुन सूर ॥
दोंयिम तस रामुच़न्दुरस रोज़ि पामा ।
नियन अदुह रावुनस निशि च़्रूरि सुता ॥

जो पर्वतों से होता हुआ तोलामुला में बहने लगा—आ, हम दोनों खुशियाँ मनायें । ६ रे लाखों नामों वाले गुल ! तू अच्छी तरह से खिल जा । तू अच्छी ख़बर सुना और मेरे दु:खों को देख । शेष से मुझे कोई मतलब नहीं है—आ, हम दोनों ख़ुशियाँ मनायें । ७ सबेरा हो गया है । अब तू प्रकाश दिखा । देख, सूर्य ने मुनादी की है । मैं रात को एक पल भी नहीं सोती हूँ—आ, हम दोनों ख़ुशियाँ मनायें । ८

लंका को आग लगाना

(तब) हनुमान ने कहा—अब मैं अपना रास्ता पकड़ता हूँ (चला जाता हूँ) । यदि आप कहें तो मैं आपको उन तक पहुँचा दूँ । उसने (सीता ने) उत्तर में कहा—आप कितने सीधे है ! रावण मेरा बाप लगता है और यही सत्य है । जब किसी की वासना (नीयत) बिगड़ जाये तो यही दस्तूर (होता) है । अब उसके सोने को पीतल और अहंकार को राख कर देना है । दूसरे, उन रामचन्द्र पर लांछन रहेगा कि उन्होंने

च्रु वनतस म्यानि ज़ोंवि यीतन सु पानय ।
में नी तन मौकुलाविथ क़ैदु ख़ानय ।। ५ ।।

सु गारत गोस कौत कावस ह्युतुन कान ।
नियस वौन्य रावुनन ज़ोनुन यि आसान ।।
परनि लंज्य रामु रामह् हाय क्याह् ग़ोम ।
गंयम परज़न ख्रियन सूतिन में क्याह् कोम ।।
गुलाह् त्युथ यथ नु जामन दाग़ ख्रामुत ।
यि गुल छुख ना वुछन क्याह् वरु गोमुत ।।
त्युतुय बूज़िथ हनूमान द्राव अज़ बाग़ ।
दौपुन तस रावुनस थवुह् हा दिलस दाग़ ।।
पगाह् यिन रामु लंखिमन तिम करन जोश ।
बु कौंह् कथ शायि रूज़िथ आसु ख़ामोश ।। १० ।।

वलावीर अवदु बंद्य आसन तिमन सूत्य ।
जमह् आमुत्य जमह् यिन वुनि कौंह् कूत्य ।।

रावण के यहाँ से सीता को चोरी-छिपे छुड़ाया । आप उन्हें मेरी ओर से कहें कि वे ख़ुद आयें और मुझे इस क़ैदख़ाने से निकालकर ले जायें । ५ उनकी वह ग़ैरत (पौरुष) कहाँ गयी, जब उन्होंने उस कौए[1] पर तीर मारा था । अब तो मुझे रावण ने उड़ा लिया है, उसे वे सरल क्यों समझ रहे हैं ? तब वह राम-राम पढ़ने लगी और कहने लगी--हाय ! मुझे क्या हो गया ? यह किन परायी स्त्रियों से मेरा काम पड़ा ? मैं ऐसा गुल हूँ कि जिसकी पंखुड़ियों पर अभी दाग़ नहीं लगा है । आप इसे देख नहीं रहे हैं कि अब यह कैसे मुरझा रहा है । इतना सुनकर हनुमान उस बाग़ से निकल गया और (उसने) कहा कि मैं उस रावण के दिल पर दाग़ लगाऊँगा । कल स्वयं राम-लक्ष्मण आकर अपना जोश (बल) दिखायेंगे और मैं किसी स्थान पर अकेला ख़ामोश बैठा रहूँगा । १० उनके संग असंख्य बलवीर होंगे । असंख्य बलवीर यहाँ इकट्ठे हो जायेंगे और असंख्य वे साथ लेते आयेंगे । तब उसने विचारकर कहा (उस समय मुझे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने का मौक़ा नहीं मिल सकता, अतः) इसी फ़ुरसत की घड़ी में ग़नीमत है कि मै अपनी बलवीरता को यहाँ पर दिखाऊँ ।

१ कहते है एक बार एक देवता कौए का रूप धारणकर सीता से खेलने लग गया । रामचन्द्रजी ने क्रोधवश उस पर कुश का तीर चलाया ।

त्युथुय गंज़ुरुन दोपुन वुन्य छुम ग़नीमत ।
बलावीरी पनुन्य हावुन्य छे फ़ुरसत ॥
वोदुनि वोथ सारुय तिम बाग़ुक्य चन्दन कुल्य ।
कडुनि लोग मूलु दयतन छुनिन तुल्य तुल्य ॥
सपुन यंच्र शोर तंम्य दशि रावुनन बूज़ ।
ग्रज़ुनि लोग राखिसन हुन्द फ़ोज तंम्य सूज़ ॥
हनूमानन तिमन यागर पछीनन ।
कजेनख लंजि ब्योंन ब्योंन च्रिर बचन ज़न ॥ १५ ॥

ख़बर येलि रावुनन बूज़ुन बराबर ।
नेचुव सूज़ुन स्यठाह ह्यथ फ़ोज व लशकर ॥
हनूमानस दपन गंयि ज़ोर पादा ।
थंवुन नु राखिसन लसुनुच वोमेदा ॥
हनूमानन दपन कंरुय वारुयाह छल ।
अंनिन हुर मुर कंरिथ थांविन च्रकुजि तल ॥
पंजन तल ह्यथ कंड़िन तिम तानु तानय ।
तिथय यिथु दछ ख्यवान छी दानु दानय ॥
नेचिव तंम्य सुन्द्य दपान कंरुय वारुयाह छल ।
ओंनुन छांरिथ ह्युतुन दांरिथ पंजन तल ॥ २० ॥

वह खड़ा हो गया और उस बाग़ के सभी चन्दन के वृक्षों को मूल से उखाड़ कर दैत्यों के ऊपर उठा-उठाकर फेंकने लगा। इससे इतना शोर हुआ कि उसे रावण ने सुन लिया। वह गरज उठा और राक्षसों की फ़ौज (हनुमान को पकड़ने के लिए) भेज दी। हनुमान ने गीध की तरह उन पिद्दी-सरीखों के अंग-अंग अलग कर डाले। १५ जब रावण को इसकी ख़बर मिली तो अपने पुत्र को बहुत बड़ी फ़ौज व लश्कर सहित भेजा। कहते हैं, हनुमान के अन्दर और ज़ोर पैदा हो गया (बढ़ गया) और राक्षसों के लिए जीने की उम्मीद बाक़ी न रही। हनुमान ने अनेक प्रकार के छल (करतब) किये। कभी सभी को घसीटकर अपने नितम्बों के नीचे दबा देता तो कभी अपने पंजों में पकड़कर उनकी धज्जियाँ उड़ा देता—वैसे ही जैसे अंगूर के एक-एक दाने को खाया (अलग) किया जाता है। उस (रावण) के पुत्र ने भी अनेक छल किये, मगर उसे हनुमान ने ढूँढ़कर अपने पंजों में दबा लिया। २० तब क्रुद्ध होकर रावण ने एक और लशकर भेज दिया तथा अपने बड़े पुत्र इन्द्रजीत को ढूँढ़कर साथ कर

हंज़ीमत रावुनन लशकर ख्यवन डीठ ।
ओंनुन छ्रांड़िथ नेंचुव ज़्युठ ह्युव येन्दुरजीठ ॥
दोंपुन तस कुन च्रे छुयना दानु इनसाफ़ ।
वुछन छुखना यि ज़म्बु वारस प्योंवुय ताफ ॥
हेंव्रन लशकर सुतिन येंलि गव सु लारन ।
वनुनि लंग्य कैंह ख़बर छे नु कुत्य मारन ॥
त्युथुय तिम हलुमुतस लारन योंदस आय ।
दितिन दांरिथ ब आकाश ज़न नु आयाय ॥
जमह सांर्य अवदु बंद्य सांपुन्य छि क्याह् कथ ।
कडुनि लोंग मूलु कोंह थोवुन तिमन प्यठ ॥ २५ ॥

स्यठाह् तंम्य येन्दरु जीठन तप कर्यायन ।
द्युतुस दरशुन शिवन वर ती मंजायन ॥
कमन्द यस बो दिमन दांरिथ गंछ्रिन बन्द ।
दयस ओसुस करुन तस यी कोंरुन फन्द ॥
दपन तंम्य लांय रज़ हलुमुत कोंरुन बन्द ।
सु ख़ोंश सांपुन हनूमानन कोंरुस फन्द ॥
कमन्द यामथ तंमिस दांरिथ दिवान ओस ।
पंजव सुतिन च्रंटिथ तामथ छुनान ओस ॥

दिया । रावण ने उससे कहा—तुझे ज़रा भी इन्साफ़ (का ख़याल) नहीं है कि तेरे बगीचे में आग लगी हुई है । तब वह लशकर को साथ लेकर दौड़ता हुआ गया और सभी कहने लगे कि आज न जाने कितने मर जायेंगे । जैसे ही वे भागते हुए हनुमानको मारने के लिए आये तो उस (हनुमान) ने उन्हें आकाश में उछाल दिया, जैसे वे आये ही न थे । इतने में असंख्य राक्षस और जमा हो गये और (हनुमान ने) एक पर्वत को उखाड़कर उन पर छोड़ दिया । २५ इन्द्रजीत ने कठोर तप किया था, जिससे शिवजी ने दर्शन देकर उसे यह वर दिया था कि जिस पर तू इस कमंद (फंदेदार रस्सी) को फ़ेंक देगा वह इसमें बन्द हो जायेगा । दैव को ऐसा ही करना था, अतः ऐसा ही हुआ । कहते हैं, उसने क़मंद फेंकी और हनुमान उसमें बंद हो गया । (इन्द्रजीत) अपने इस कृत्य पर बहुत ख़ुश हो गया । इससे पूर्व जब हनुमान पर उसने कमंद फेंकी थी तो वह अपने पंजों से उसे बार-बार काट देता था । तभी नारदजी वहाँ आ पहुँचे और हनुमान से कहा कि तू इसे अब की बार अपनी गर्दन में

त्युथुय ताम वोत नारुद वुछनि कारन ।
दोंपुन ताम हलमुतस कुन रठ बं गरदन ।। ३० ।।

त्युथुय नारुद्य हनूमानस वंनिन सन्द ।
म छुन लांविथ च़ रठ वुनिक्यन सपुन बन्द ।।
कंरुन नरमी तु वंनिनस तति स्यठाह ज़ार ।
म छुन त्रांविथ च़ु दिन दांरिथ ब जुनार ।।
सपुन लाचार ब्रह्मा जुव कोंरुन याद ।
पकान आव वीद परान येंलि तस ब्यूतुन नाद ।।
दोंपुस ब्रह्मा जुवन क्या वन मनस छुय ।
दोंपुस तंम्य राखिसन असतुर अपुज़ छुय ।।
दोंपुस तंम्य तोरु येंम्य बो कोंरुस लाचार ।
वुछन फुटवुन तु मे ह्योंतनम दिलस नार ।। ३५ ।।
सु गव निशि हलमुतस वंनिनस स्यठाह ज़ार ।
सपुन ब्रह्मुन ब गरदन रठ यि जुनार ।।
वुछिव ब्रह्मा जुवन कोंर तस नमस्कार ।
अंनिन तंम्य रज़ तु लोंग अदु गव गिरफ़तार ।।
रंटिथ तस रावुनस निश वातुनोवुन ।
गंडिथ तसुंदिस पलंगस सूत्य थोवुन ।।

ग्रहण कर। ३० उन्होंने हनुमान से आगे कहा—इस वार इसे काटना नहीं, अपितु इसमें बन्द हो जाना। नारद ने नर्मी से व अनुनय-विनय-पूर्वक कहा—इसे न काट तथा गुस्से की अग्नि को छोड़ दे। हनुमान न माना तो लाचार होकर (नारद ने) ब्रह्मा को याद किया। वे, आवाज़ सुनकर वेद पढ़ते हुए वहाँ पहुँच गये। ब्रह्मा ने (नारद से) पूछा—(तुम्हारे) मन में क्या वात है? उसने कहा—इस राक्षसों के सब अस्त्र झूठे हैं (काम नहीं कर रहे हैं।) उन्होंने कहा—इसने मुझे (भी) वहुत लाचार कर दिया है। मेरे दिल में भी अग्नि दहक रही है। ३५ तव वे (ब्रह्मा) स्वयं हनुमान के पास गये और उसे खूब समझाया—तू ब्राह्मण वन जा और इस रस्सी को स्वेच्छा से गर्दन पर ग्रहण कर। देखिए, ब्रह्मा ने उसे नमस्कार किया, रस्सी मँगवाकर उसे गिरफ़्तार करवाया। उसे पकड़कर रावण के पास ले जाया गया और उसके पलंग के साथ उसे बाँधकर रखा गया। तव, विभीषण उसकी वन्दना करता हुआ रावण से कहने लगा कि क़ासिद (दूत) को मारना उचित नहीं है। यह सुनकर रावण

वॆबीशन आव लीला करनि तस कुन ।
दॊपुन तस कर यि कासिद वाति मारुन ।।
ति बूज़िथ यॆम्त्र सपुन क्रूदी सु रावुन ।
मत्रर कॊर तॆम्य हनूमान ह्योतुख पावुन ।। ४० ।।
ति याम वुछ रावुनन कोताह सपुन शाद ।
वनुनि लॊग बर पिसर सद आफ़रीन बाद ।।
दॊपुन असुरन वॆथिव थॊद वारु पाव्यून ।
वरस प्यठ पोस्त वालिथ ज़िन्दु थाव्यून ।।
तिमन असरन कमी मा कॆंह ति ज़ोरन ।
अमा हरकत मुलय करनखनुनु खोरन ।।
तमना यॆलि तिमन असुरन पनुन सूर ।
वटुन तॆम्य ज़ंग तिम त्राविथ छुनिन दूर ।।
कलस हरकत करुन रावुन वॆसिथ प्यव ।
पथर प्यव तख़्त दरियावस अन्दर गव ।। ४५ ।।
सपुन रुसवा सु रावुन यॆलि वुछुन जोश ।
हनूमान प्यव पथर ज़न गव सु बेहोश ।।
वॊनुन दर वेख़ुदी ज़न पान्य पानस ।
मे कर मारन ख़लिश कासन जहानस ।।
छुन्यम कुस नाल्य कांह परबत बॆगरदन ।

बहुत क्रुद्ध हो गया और हनुमान को पछाड़ा (सताया) जाने लगा। ४० यह सब जब रावण ने देखा तो वह बहुत ख़ुश हो गया तथा अपने बेटे को सौ-सौ आफरीवाद (सराहना के शब्द) कहने लगा। (रावण ने) असुरों से कहा कि उठकर उसे पछाड़ डालो और द्वार पर खड़ाकर उसकी चमड़ी जिन्दा ही उधेड़ डालो। यों तो असुरों में ज़ोर (बल) की कोई कमी न थी। मगर उस (हनुमान) के पैर तनिक भी हरक़त (हिल) न कर सके। जब उन असुरों की तमन्ना सूख गयी (पूरी न हो सकी) तो उस (हनुमान) ने टाँगें समेट लीं और वे असुर बहुत दूर जाकर गिर पड़े। उसने सिर हिलाया तो रावण गिर पड़ा और तख़्त दरिया में जा गिरा। ४५ वह रावण रुसवा हो गया तथा उसे जोश आ गया। तभी हनुमान नीचे गिर गया, जैसे बेहोश हो गया हो। वह जैसे बेख़ुदी में अपने आपसे कहने लगा—भला, जहान में ऐसा कौन है, जो मुझे मार सकता है? कौन मेरी पर्वत-जैसी गर्दन में रस्सी

लंटिस कर नार गंडुनम ज़ालुनम तन ।।
टुकन गंयि परबतस सूराख तोरुख ।
सपुन डंडूरुह हलुमुत लोंदुर मोरुख ।।
ओंनुख सारिस जहानस फम्ब छ्रांरिथ ।
वोंलुख तस लचि तु च्युतहस तील दारिथ ।। ५० ।।

सपुन इरशाद वोंन्य तस नार गछि च्युन ।
दज़ुन हेंयि जल्द गछि सुतायि निश न्युन ।।
सं येलि डेशस तंमिस मशि रामु सुन्द नाव ।
वदुन हेंयि क्याज़ि हलुमुत लांकि प्यठ आव ।।
सं सुता येलि दज़न तस डेशि नारह ।
तिमन शेंछ सोज़ि कांह यियिन दुबारह ।।
मुदा तस ती कोंरुख वुछतव तसुन्द्य कार ।
लुरुन लंका तु गोंडुनस सारिसुय नार ।।
दज़वुन दूफ तस सुतायि निश न्यूख ।
वदुनि लंज्य क्याह दयन म्यानिस डेकस ल्यूख ।। ५५ ।।

वदुनि लंज्य युथ सपुन सेलाब सोरुय ।
छि खोचान गव यि आलम आब सोरुय ।।

डाल सकता है ! (मैं तो यह सोच रहा हूँ) कि कब मेरी पूँछ को ये लोग आग लगाकर मेरे तन को जला दे । सभी असुर भागकर गये और यह मुनादी की कि हमने पवन-पुत्र हनुमान को मार डाला (वश में कर लिया) है । सारे जहान से वे रूई ढूँढ़कर ले आये और उसकी पूँछ पर लपेट कर उस पर तेल डाला गया । ५० ऐसा आदेश मिला कि अब इस (पूँछ) में आग लगा दी जाये और जैसे ही वह जलने लगे तो उसे सीता के पास ले जाया जाये । जब वह उसे देखेगी तो उसे (अपने आप) राम का नाम भूल जायेगा और (तब वह) रोते हुए कहेगी कि हनुमान लंका में आया ही क्यों था ? वह सीता जब उसे आग में जलता हुआ देखेगी तो उन्हें (राम-लक्ष्मण को) यह सन्देश भेजेगी और फिर उन में से यहाँ कोई दुबारा आने की हिम्मत न करेगा । अन्ततः ऐसा ही किया गया और उस (हनुमान) के कारनामे देखिए । उसने सारी लंका में आग लगा दी और उसे खंडित कर दिया । जलते हुए दीप की तरह उसे सीता के पास ले जाया गया । वह रोने लगी कि दैव ने मेरे भाग्य में यह क्या लिखा था । ५५ वह (सीता) इतना रोयी कि चारों ओर सैलाब आ गया और सभी

अशिकि तमि आवुलुनि वंछ नावि मंज़ बाग़ ।
ज़िन्दय ज़न गाड़ गंयि तत्रि तावि मंज़बाग़ ॥
मुरुनि लंज्य अथु दोंनुवय वुठ छि च्रापन ।
हनूमानो च्रु वोंलखो म्यांन्य शापन ॥
च्रे गंडुनय रेंह मे गोंडनम जिगरस नार ।
शरन गछ़ु वनु बु अंगनस वीलु तह ज़ार ॥
अंगुनु राज़ो यि ज़ालुन मुफ़ुत नो छुय ।
छु कासिद रामुच्रन्दुरुन गुफ़ुत नो छुय ॥ ६० ॥

यि मो ज़ालुन सु मो आकाश ज़ाली ।
अंगुनु अकि ख्यनु मंज़ु बुनियाद गाली ॥
सु मो वोज़ी यि मो रोज़ी खंटिथ वोंन्य ।
यि तंच्र रेंह नालु प्यठु नेरी फंटिथ वोंन्य ॥
दज़न छस खोच्र वोंन्य त्रिबुवन वु ज़ालय ।
च्रु नय वोज़ख अशुक संहलाब वालय ॥
मे छम तस रामु च्रन्दुरुनि खावि हुंज़ द्रय ।
येमिस खोंतु टोठ बेयि कुनि कांह मे नो छुय ॥

डरने लगे कि कहीं सारा आलम जलमग्न न हो जाये । उसकी जीवन-नैया आँसुओं के भँवर में ऐसे फँस गयी, जैसे गर्म तवे के ऊपर जिन्दा मछली । वह (बेवसी में) अपने हाथ मसलने लगी तथा होंठ भींच कर कहने लगी--हे हनुमान ! तुम भी मेरे शाप के कारण घिर गये । तुम्हें लपटों में देख मेरा जिगर जलने लगा है । अब (तुझे मुक्ति दिलाने के लिए) मैं अग्निदेवता की शरण में जाऊँगी और उन्हीं से विनती करूँगी । हे अग्निराज ! इसे जलाना मुफ़्त (सरल) नहीं है, यह रामचन्द्रजी का क़ासिद (दूत) है । यह बात किसी से गुप्त नहीं है । ६० इसे तू न जला, अन्यथा वे (राम) सारे आकाश को जला डालेंगे । हे अग्निदेव ! क्षण-भर में तुम्हारी बुनियाद वे नष्ट करके रख देंगे । वे जान जायेंगे, क्योंकि यह बात उनसे छिपी न रहेगी । अब यह (मेरी) लपटें मेरे गरेबान से प्रकट होकर ही रहेंगी । मैं जल रही हूँ । तू कुछ तो डर जा, नहीं तो मै सारे त्रिभुवन को जला डालूँगी । तू फिर भी नहीं सुनता है तो अपने आँसुओं से मैं सैलाब ला दूँगी । मुझे श्रीरामचन्द्रजी की पादुकाओं की सौगन्ध है, जिन (पादुकाओं) से बढ़कर मुझे कुछ भी प्रिय नहीं है, कि इस (हनुमान) के जलने से मेरा दिल जल रहा है ।

में सॉपुन असुन्दि सूत्य वॉलिंजि मंज़ नार ।
ख्यमा कर्मय में मा वॉन्य यियि च्रे प्यठ आर ।। ६५ ।।
दज़ुन् निशि अंगुन् असि ज़ोनुख च्रु न्यरलय ।
करय छ्यचतु वुन्य ति साख्यात तथ में छुम दय ।।
थवय नो अंगुन् त्रन बवुनन अन्दर जाय ।
अशिकि संहलाबु सूत्य करु हलुमतुन पाय ।।
दॉपुस अंगनन मे मार्यम दय छु दाता ।
वॉपर छुमनह यि छुम सन्तान माता ।।
ख़बर छयना यि हलुमुत बापॉथुर छुम ।
बु ज़ालन लॉक महारावुन शॅथुर छुम ।।
यि मा लोस्यम कॉम्वकु बापथ ब यॉत आस ।
कॉमारी डचकु बेंड़ पॉफ मॉज क्याह मास ।। ७० ।।
अंगुन तॅलि वाति पुशरुन महा कालस ।
ख़लल यॉदवय अंमिस गछि मोयिवालस ।।
च्रु माता वॉन्दु पनुन वॉन्य साविदान थव ।
ननी सॉन नारुह नीरिथ यॅलि दज़्यस ज़व ।।

मैंने तो तुझे अब तक क्षमा कर दिया, परन्तु अब मुझे तुझ पर दया नहीं आयेगी । ६५ हे अग्नि देव ! मैं जान गयी कि जलना तेरा सहज स्वभाव है । मैं अभी तेरी यह आग बुझा दूँगी--मुझे साक्षात् ईश्वर की सौगन्ध है । ऐ अग्नि ! मैं तीनों भुवनों में से तुझे उखाड़ कर फेंक दूँगी और अश्कों (आँसुओं) के सैलाब ही से हनुमान के लिए उपाय निकालूँगी । तव अग्निदेव ने कहा—(आप ऐसा न करें, नहीं तो) मुझे वे (राम) मार डालेंगे जो सब के दाता हैं । माता ! यह (हनुमान) मेरे लिए पराया नहीं है, अपितु मेरी अपनी ही संतान है । आप नहीं जानतीं, यह हनुमान मेरा भतीजा है । मैं लंका को (इसके द्वारा) जला डालूँगा, क्योंकि वह महारावण मेरा भी शत्रु है । कहीं यह (हनुमान) थक न जाये, इसीलिए मैं कुमक (मदद) देने के लिए यहाँ आ गया था । आप सौभाग्यवती रहें, आप मेरे लिए भी फूफी, माँ और मौसी आदि के समान हैं । ७० अग्नि को (यानी मुझे) तब आप महाकाल के सुपुर्द कर दें, यदि बाल के बराबर भी मैं व्यवधान उपस्थित करूँ । हे माता ! अब आप अपने हृदय को प्रसन्न रखें । आपको स्वयं मालूम हो जायगा, जब सोना (हनुमान) जलकर कुंदन बन जायेगा । तत्पश्चात्, अग्नि और वायु मिलकर लंका को तहस-नहस करने लगे और उसे आमूल गिराने

दपन अंगुनन तु वावन कोर अथह् वास ।
लुरुनि लंग्य लांक कोरुहस सारिसुय डास ।।
यि ओसुस सोन ति फुटुरुन तमि संगुरु सुत्य ।
वनुनि लंग्य तथ सोनस तल ग़रक़ गय कुत्य ।।
वनन कुनि जायि मा ओसुस चन्दन दार ।
फिरूनस लोट तु गोंडुनस सारिसुय नार ।। ७५ ।।

स्यठाह् वोथ शोर काह्शथ पोर ज़ालिन ।
सतन गव सूर वेयि तिम चोर वालिन ।।
कथा छा काह् शथ क्रूह् बंड़ पनाह्दार ।
करुन रातस बराबर वुछ तसुन्द्य कार ।।
त्युथुय तम्य राखिसन जबरूत होवुन ।
बाह्व बुरजव निशन अख बुरुज थोवुन ।।
वदुनि लंग्य राखिसन समुहार चोट गव ।
त्युथुय लंकायि शह्रस अनिगोट गव ।।
करुन सुता तमिस अनि गटि अन्दर लाल ।
लोदुन तस रामु चन्दुरस प्यठ यि सत फ़ाल ।। ८० ।।

हनूमानु सुंज़ वापुसी

दिच्छुन वेयि छाल तम्य लंकायि निशि द्राव ।
तसुंज़ तीज़ी वुछिथ शरमंदुह् गव वाव ।।

लगे । जहाँ-जहाँ भी सोना था, उसे तोड़ डाला गया और कहते हैं, उस सोने के नीचे न जाने कितने दब गये । एक स्थान पर चन्दन का द्वार था, उसे पूँछ से उखाड़कर आग लगा दी । ७५ काफ़ी शोर-शराबा हुआ और देखते ही देखते ग्यारह सौ मंज़िलें जल गयीं । सात सौ तो राख हो गयीं और चार सौ गिर गयीं । यह लंका कोई मामूली न थी --ग्यारह सौ कोस लम्बी और चौड़ी ! उसके (हनुमान के) कारनामे देखिए, ऐसी लंका को उसने रात की तरह (काला) बना डाला । तब उस राक्षस (रावण) ने जोर-जब्र किया और बारह बुर्जों में से एक को सुरक्षित कर डाला (जलने से बचाया) ! सारे राक्षस रोने लगे और उनका संहार होने लगा तथा सारी लंका में अंधियारा छा गया । सीता इस अँधियारे में लाल की तरह चमकने लगी तथा इस प्रकार हनुमान ने रामचन्द्र के प्रति अपने कर्त्तव्य को उत्साहपूर्वक निभाया । ८०

नखस क्यथ कोह् ह्यथ गव प्यव बराबर ।
तोंतुय ना यथ कोंह्स प्यठ आंस्य वान्दर ।।
तिमव बोंर चाव येलि ह्लुमुत यिवन ड्यूठ ।
गंछ्यिथ सुगरीवुनिस बाग़स कोंरुख लूठ ।।
गंछ्यिथ वोंन पादशाहस बाग़वानन ।
बु क्याह करु छुय नु वोंन्य ह्लुमुत च्रे मानन ।।
हुनुनि सुगरीव लोंग जामन छोंनिस तंन्य ।
ति ज़ोनुन ह्लमुतन रुच्रुच ख़बर अंन्य ।। ५ ।।
वनुनि रुच्रुच ख़बर लोंग याम हनूमान ।
पकन गंयि रामु च्रन्दुरस निशि ख़ोंशी सान ।।
तिमन डीशिथ बरुनि लोंग लोल अंकिस अख ।
करुनि लंग्य तिम तंमिस मंज़िल मुबारख ।।
वोंनुख राज़स हनूमान बाख़ोंशी आव ।
बरुनि लोंग रामुजुव सूतायि हुन्द चाव ।।
प्रुछुनि लोंग तस सों सूता कस गंमुच्र दास ।
ज़िन्दय छा किनु मंरिथ गंयि क्या बंनिथ आस ।।

हनुमान की वापसी

तब उसने वापस छलाँग मारी और लंका से वह निकल पड़ा। उसकी तेज़ी देख वायु भी शर्मिन्दा हो गया। कन्धे पर एक पहाड़ लेकर वह वहाँ जाकर उतर गया जहाँ पर शेष वानर (उसकी प्रतीक्षा कर रहे) थे। वे ख़ुशी से फूले न समाये जब उन्होंने हनुमान को आते देखा और सभी ने सुग्रीव के बाग़ में जाकर (मारे प्रसन्नता के) लूट मचायी। बाग़बान ने बादशाह (सुग्रीव) के पास जाकर कहा कि हनुमान मान नहीं रहे हैं तथा अब मैं क्या करूँ। सुग्रीव का तन (खुशी के कारण) फूलने लगा और उसके कपड़े फटने लगे। वह जान गया कि हनुमान कोई अच्छी ख़बर लेकर आया होगा। ५ तब हनुमान ने अच्छी-अच्छी ख़बरें सुनायीं और दोनों ख़ुशी के साथ रामचन्द्रजी के पास गये। उनको देखकर वे (राम-लक्ष्मण) एक-दूसरे पर प्रेम बरसाने लगे और उसको (हनुमान को) मंज़िल पार करने के लिए मुबारकबाद देने लगे। रामचन्द्रजी से कहा गया कि हनुमान ख़ुशी-ख़ुशी वापस आया है और तब रामचन्द्रजी सीता की (शीघ्र) प्राप्ति को जानकर गद्गद् हो गये। वे (हनुमान से) पूछने लगे कि वह सीता किस की दासी बनी हुई है (किसके आधीन है।) वह

चु येलि वुछनख च्यतस मा कॅंह् कौरुन म्योन ।
सौखस प्यठ छा तॅमिस मा कांसि हुन्द कोन ॥ १० ॥

वदुनि किनु लंज्य असुनि येलि लांकि प्यठ वीठ ।
बु मा प्योसस च्यतस येलि रावुनन डीठ ॥
वनन क्याह् वन गोमुत बरथा छुसा याद ।
असन मोखु आस किनु तस गोसु बेदाद ॥
सु मा लंखिमन मे तस निशि ओस थोवमुत ।
तॅमिस त्रॉविथ सु मे पतु ओस आमुत ॥
तसुन्द मा ग़ोसु कॅंह् तमि वोननु बायन ।
चे मा प्रुछथस अंमिस मा तिम छि लायन ॥
सों दंज़ुमुत्र आस ना ज़लु अन्दरु नारह् ।
दोपुन मा वोरु हशि करनस अवारह् ॥ १५ ॥

अपुज़ छुनु माजि मॉलिस चूरि ज़ामुत्र ।
वोनुन मा कस बु छस बागुनि आमुत्र ॥
ख़बर छा रूज़मुत्र आस्या तॅमिस ज़ान ।
यि यामत वोननु ताम बेयि तस खस्यस हान ॥

ज़िंदा है या मर गयी है और उसका क्या हाल है? जब तुमको उसने देख लिया तो क्या मेरी कुछ याद उसे आयी या नहीं? क्या वह सुखी थी, उसे किसी चीज़ का दुःख तो नहीं था? १० लंका (के सुख-वैभव) को देखकर क्या वह रोयी थी, या हँस दी थी? जब रावण ने उसे देखा तो क्या मैं उसे याद तो नहीं आया? उसने तुमसे क्या कहा, क्या उसे अपना वनवासी भर्त्ता कुछ याद है या नहीं? उसके मुख पर हँसी थी या उस पर ग़म व दुःख अंकित था? मैं लक्ष्मण को अपने पीछे उसके पास छोड़कर आया था और उसे छोड़कर वह मुझे देखने के लिए मेरे पास आया था। उसकी (लक्ष्मण की) कोई शिकायत तो नहीं बयान की उसने? तुमने उससे यह पूछा कि उसको वहाँ पर (राक्षस लोग) पीटते तो नहीं हैं? वह पानी में रहकर भी जल तो नहीं रही थी? उसने यह तो नहीं कहा कि सौतेली सास ने मेरी यह दुर्दशा कर दी? १५ वह अपने माता-पिता की लाड़ली है—यह असत्य नहीं, उस (लाड़ली) ने यह तो नहीं कहा कि मैं किस मुहूर्त में आयी थी? (जो मेरी यह हालत हो गयी।) क्या ख़बर उसे (अब) मेरी कुछ जान-पहचान (याद) शेष रही होगी या नहीं! अगर उसने ऐसा कहा हो तो दोष उसे ही लगेगा। अपनी माँ से उसने सास

दोंपुन मा माजि निशि हृशि हुन्द मलालह् ।
में मा रोंट बब तसुन्द कुनि दोंहु नालह् ।।
दोंपुन मा वरदनव कनि बुरज़ु छुम नांल्य ।
बु छुस थारान ति मा बूज़ुम तसुन्द्य मांल्य ।।
च्रे वोंनथस ना यि गव दय मन्दुछावुन ।
अपुज़ पोंज़ वांरिव्युक मालिनि बावुन ।। २० ।।

वन्यन तिमु ग्रावु मा तस माजि मांलिस ।
छुनुन मा अंछ वंटिथ अथु सरफु आंलिस ।।
दोंपुन मा वीगि प्यठु वनुवास करनस ।
बु आंसुस रांन्य कमि येंछि दास करनस ।।
ति मा वोंनुनख में खांली ख्यव वोंपल हाख ।
ति येंलि वोंनुनख तु तमि मा पोल सत वाख ।।
ति मा वोंनुनख में त्रांविथ गव शिकारस ।
कोंरुन तमि आवुहन सूरस तु नारस ।।
बु छुस गंज़ुरिथ यि कथ मा करि स्यठाह तूल ।
अमी कथि सुत्य गलन तस मालिनिक्य मूल ।। २५ ।।

की बुराई तो नहीं की ? वैसे, मैंने तो आज तक कभी उसके पिता से कोई शिकायत नहीं की है। उसने यह तो नहीं कहा कि शादी के जोड़े के बदले मुझे भोजपत्र के वस्त्र पहनने पड़े ? मैं डर रहा हूँ, कहीं यह बात उसके पिता ने तो नहीं सुन ली हो ? तुमने उससे नही कहा कि ससुराल की बातें मायके में कहना अनुचित है तथा पति को लजाने के बराबर है। २० उसने अपने माता-पिता से मेरी शिकायत कर जान बूझकर आँखें बंदकर साँप के बिल में हाथ तो नहीं डाला ? उसने यह तो नहीं कहा कि विवाह-मण्डप से उतरते ही मुझे वनवास मिला, मै तो रानी थी और मुझे यों दासी बनाया गया। उसने वहाँ (सब लोगों से) यह तो नहीं कहा कि मुझे जंगली कन्द-मूल खाकर निर्वाह करना पड़ा ? यदि उसने ऐसा कहा हो तो उसने सत्य (धर्म) का पालन नही किया है। उसने (उनसे) यह तो नहीं कहा कि मुझे (अकेला) छोड़कर वे शिकार करने को चले गये ? यदि उसने ऐसा कहा हो तो उसने अग्नि व राख का आह्वान किया है। मुझे लगता है कि उसकी यह बात कोई बवण्डर न खड़ा कर दे और इसी बात पर उसके मायकेवाले समूल गल न जायँ। २५ तब उस (हनुमान) ने रोते-रोते उस सीता का हाल कहा

वदन तंम्य तस वोंनुन सुतायि हुन्द हाल ।
ख़बर छा कोनु ओंन तस ईशरन काल ।।
ख़बर छा नेंछतुरस प्यठ कथ छि ज़ामुत्र ।
ख़वर छा करुनि क्याह ज़नमस छि आमुत्र ।।
स यिछ आवारु बेंयि त्युथ कांह मु आंसिन ।।
मंरिन या दय कंरिन तस व्याद कांसिन ।
कसम छुम चोन छुख प्रथ चीज़ु निशि पाक ।।
प्यवन छुम याद छम वांलिजि लगन श्राक ।
कसम छुम चोन तस निशि छुस बु त्रंहरन ।।
प्यवन छुम याद छिम ज़न प्रान नेरन ।। ३० ।।

वदन यंत्र गाशि निशि डीठुम वुनेमुत्र ।
गंमुत्र अफ़सरदुह ज़न आकाशि पेमुत्र ।।
अमा वुछमस त्रुया अख छस वफ़ादार ।
रछन बेकस तु तस ज़न मांज गमख़ार ।।
गलन यख ज़न छलन अशि सुत्य जामह ।
हरन ओंश तमि पोंरुन ज़न रामु रामह ।।

—क्या ख़बर, क्यों ईश्वर उसके लिए काल को नहीं भेज रहे हैं ! क्या ख़बर वह जन्म लेकर क्या करने आयी है! वह इतनी दुखी है कि उस-जैसी और कोई न हो। या तो वह मर जाय या फिर दैव उसकी व्याधि दूर कर दें। मुझे आपकी क़सम है, आप तो हर चीज से पाक (पवित्र) है। जब मुझे उसकी वह मूरत याद आती है तो हृदय पर छुरियाँ चलने लगती हैं। मुझे आपकी क़सम है, उसको देखकर मैं विक्षुब्ध हो उठा। जव उसकी याद आती है तो जैसे मेरे प्राण निकल जाते हैं। ३० वह इतना रोयी थी कि उसके (नेत्रों का) प्रकाश रीता हो गया था। वह पूर्णतया जर्जर हो गयी थी, मानो आकाश से गिर गयी हो। हाँ, मैंने उसके साथ एक स्त्री को देखा, जो मुझे (काफ़ी) वफ़ादार लगी। वह उस बेकस की ऐसे देख-भाल (रक्षा) कर रही थी, जैसे उसकी माँ हो। बर्फ़ की तरह वह गलती जा रही थी और अपने वस्त्रों को अश्क से धो रही थी। आँसू बहाते समय वराबर राम-राम रटती जाती थी। मैंने ऐसा ही देखा और आप से ऐसा ही कह रहा हूँ। और भी कुछ वातें उस (हनुमान) ने कहीं, जो (रामचन्द्रजी के दिल के) निशाने पर बैठ गयीं (उनके मर्म को छू गयीं)। ऐसा सुनते ही रामचन्द्रजी बेताब हो गये और

वुछुम यी ती मे वोंनमय बोज़ पानह ।
वन्यन कॅह कथ् तंमिस आयस निशानह ॥
ति बूज़िथ राम् जुव बेताब सांपुन ।
जिगांरस नार पानस आब सांपुन ॥ ३५ ॥
त्युथुय वोंथ शोर आकाश ह्योंतन् कांपुन ।
स नारुच रेंह वुछिथ सीमाब सांपुन ॥ ३६ ॥
॥ सोंन्दर कांड समाप्त ॥

उनके जिगर में आग लग गयी और तन पानी-पानी हो गया । ३५ तभी आकाश में शोर हुआ और सभी काँप उठे; वैसे ही जैसे अग्नि की लपट को देख सीमाब काँपता है । ३६

॥ सुन्दरकाण्ड समाप्त ॥

योद कांड

लंकायि कुन फ़ोज कंशी

ख़बर गंयि गरुम सोंम्बरोवुख क़शूना ।
कथा वांली तु ज़ोमूवन नमूना ॥
पकन मोंख़तह छकन वान्दर तु तिम पंज़्य ।
दपन कॅह छाल मारव कॅह तरव मंज़्य ॥
संमिथ गंयि वांत्य तति ड्यूठुक समन्दर ।
वुछिथ पांनिस पंरिदन फुटुनि लंग्य पर ॥

युद्ध काण्ड

लका की ओर फ़ौजकशी

ख़बर गर्म हो गयी (यह ख़बर तुरन्त फैल गयी कि रामचन्द्रजी आदि लंका पर आक्रमण करने जा रहे हैं) और फ़ौज को इकट्ठा किया गया । बाली व जाम्बवान् के नमूने (उनके श्रेष्ठ वीर) इकट्ठे हो गये । सभी वानर व प्रवंग मोती बरसाते हुए चलते गये । (ख़ुशी में) कुछ कहने लगे कि हम छलाँग मारेंगे और कुछ कहने लगे कि हम बीच में से होकर पार हो जाएँगे । सभी मिलकर आगे बढ़े और उन्हें समन्दर दिखाई दिया । पानी को देखकर जैसे उनके पर (पंख) टूट गए । तब

करुनि लोंग रामु जुव वरुनस मदारा ।
मे यथ पानिस च़ु कुनि किन्य हाव तारा ॥
दिलासा करुनु सुत्य बूज़ुस नु वरुनन ।
तुलुन ताम तीर ज़ल ज़ालन बु हन हन ॥ ५ ॥

वरन सांपुन शरन कोरनस दिलासह ।
बं चोनुय बन्दु यामथ ज़िन्दु आसह ॥
कोरुन रद तीर वोतरा खंडु किन्य प्यव ।
सपुन तति डाक दोंद सोरुय शिन्याह गव ॥
दोंपुस वरुनन दोंबाह अख ओस आसन ।
छलन वसतुर रेशन जोग्यन संन्यासन ॥
वनस मंज़ वांदुराह अख ओस नल नाव ।
खंच़ुस च़ख दोंब वुछिथ यंच़ तस हसद आव ॥
वनुनि लोंग तस दोंबिस मे ति केंह छलन आस ।
छलख नय छोंलमुतुय मे ति केंह वलन आस ॥ १० ॥

नतय पानिस अन्दर छुनुनय छलन कंन्य ।
प्रलुयस ताम गछान आसी नु ज़ाह नंन्य ॥

रामचन्द्रजी वरुण को मनाने लगे कि मुझे इस पानी (सागर) से पार लगने का कोई भी मार्ग किसी भी तरह दिखा दे । अनुनय-विनय करने पर जब वरुण ने कुछ न सुना तो समुद्र का कण-कण जला डालने के उद्देश्य से पानी में वे (रामचन्द्रजी) तीर चलाने को हुए । ५ तभी वरुण शरण में आ गया और दिलासा देकर कहने लगा—मैं जब तक जिन्दा हूँ, आपका ही बन्दा बना रहूँगा । तब उन्होंने (रामचन्द्रजी ने) समुद्र में तीर चलाना रद्द किया और उसे उत्तराखण्ड की ओर चला दिया, (और) वहाँ पर सब कुछ जलकर शून्य (वीरान) हो गया । तब वरुण ने कहा—(बहुत पहले) एक धोबी रहा करता था जो ऋषियों, जोगियों, संन्यासियों आदि के वस्त्र धोया करता था । किसी वन में एक वानर रहता था जिसका नाम नल था । धोबी को देखकर उसे क्रोध आया और उसके प्रति ईर्ष्या जागी । उसने धोबी से कहा कि मेरे वस्त्र भी तो धोया कर । यदि धोता नहीं तो (कम-से-कम) ओढ़ने के लिए कुछ धुले कपड़े तो दिया कर । १० अन्यथा तेरे इस धुलाई के पत्थर को मैं पानी में डाल दूँगा और प्रलयपर्यन्त वह तुझे मिल न सकेगा । इस प्रकार उसने धोबी को खूब परेशान (लाचार) किया और तब वह धोबी एक ऋषि के पास जाकर अपना

मुदा तंम्य ती कौरुन दौंब आव लाचार ।
रेशस निश दौंब वदन गव यंच्र वंनिन जार ॥
कोड़ुन तंम्य वाक यौंसु कंन्य छुनु बं दंरियाव ।
बंरिथ दियि तस ज़लस मंज़ सो पुनिन नाव ॥
सदाशिवु छुय नु रेश्य सुन्द वाक फेरन ।
यि कंह पानिस अन्दर छुन तंम्य ति ईरन ॥
सु छुय वुनिकचन दिवन लशकरि अन्दर छौंह ।
करान खंदमुत सु चांनी रात तु दौंह ॥ १५ ॥
ति बूज़िथ रामु जुव कोताह सपुन शाद ।
वनुनि लौंग बर वरन सद आफ़रीन बाद ॥
बंठिस प्यठ रामु जुव येलि फ़ोज ह्यथ गव ।
तंमिस तामथ बलावीरुन च्यतस प्यव ॥
मुनादी द्रायि सौंथ गंड़ुनस दियिव छौंह ।
अथस क्यथ पंज़्य तु वान्दर आयि ह्यथ कौंह ॥
अनन पल नल थविन पानिस अन्दर तंम्य ।
गोंडुन सौंथ तावं लंका बंयि यि कौंर कंम्य ॥
ख़ौशी गंयि सारिनुय सौंथ जान क्याह गोस ।
खजर हथ क्रूह जेछर च्योर हथ ओस ॥ २० ॥

दुखड़ा कहने लगा। ऋषि ने (नल को) शाप दिया कि वह जो भी पत्थर दरिया (पानी) में फेंक देगा वह जल पर नाव की तरह तैरने लगेगा। हे सदाशिव (राम!) ऋषि का शाप कभी फिरता (बदलता) नहीं है। उसने जो कुछ भी पानी में फेंका, वह तैरने लगा। वही (नल) इस समय आपके लशकर में विद्यमान है और आपकी दिन-रात ख़िदमत करता है। १५ यह सुनकर रामचन्द्रजी बहुत प्रसन्न (शाद) हो गये और वरुण को शतशः आफरींबाद कहने लगे। (समुद्र के) किनारे पर जब रामचन्द्रजी फ़ौज लेकर गये तो उन्हें उस बलवीर (नल) की याद आ गई। उन्होंने यह मुनादी कराई कि इस समुद्र पर सेतु बनाने के लिए सभी सहयोग दें और तभी वानर-सेना हाथों में पत्थर लेकर आ गई। नल पत्थरों को पानी में डालने लगा और इस तरह लंका तक सेतु बन गया जिसे अब तक कोई भी न बना सका था। सुन्दर सेतु को देखकर सभी ख़ुश हो गये। इस सेतु की चौड़ाई सौ कोस और लम्बाई चार सौ कोस थी। २० चिहिल रोज़ः (चालीस दिन में खत्म होने वाला) काम उन्होंने तीन दिन में तैयार कर लिया और

दोंहन व्रन सोंथ दितुख तंर्य ता चिहल रोज़ ।
त्रे आलम जमह आमुत्य आस्य पोंज़ बोज़ ॥
ख़बर येलि गरुम सोंपुन्य दूर व नज़दीक ।
सपुन त्रस रावुनस दोंह गोस तारीक ॥
ख़बर बूज़िथ सु रावुन गव ख़बरदार ।
हुकुम कोंर तंम्य गंड़िव लंकायि दीवार ॥
अंगुद पयग़ाम ह्यथ गव बेयि दुबारह ।
खोंतुस ज़ांजिन तु वांजिन वारु वारह ॥
दोंपुस तंम्य रावुनन सिर बाव क्याह छुय ।
पथर बेह वन चे आंखुर नाव क्याह छुय ॥ २५ ॥
पनुन कुस छुय कंमिस सुत्य छुख कंमिस ज़ाख ।
मरुनि किनु ज़िन्दुह रोज़ुनि क्याह करुनि आख ॥
पोंज़ुय वन क्याह चे आंख़ुर कीनुह दरदिल ।
चे लूरुथ लांक अमि निशि क्याह चे हांसिल ॥
असान अंगदन जवाबाह द्युतनु दिलख़ाह ।
त्युथुय युथ रावुनस तमि सुत्य सपुन वाह ॥
दोंपुस तंम्य तोरु तंम्यसुय छुस बु ज़ामुत ।
अंगोचस यस च्रु ओसुख वलनु आमुत ॥

(बाद में) सभी उस (सेतु) पर से होकर (पार) उतर गये। उन्हें देखने के लिए तीनों आलम जमा हो गए—यह सत्य है। जब यह समाचार दूर-नज़दीक फैल गया तो रावण बौखला गया और उसका दिन तारीकी (अंधेरे) में बदल गया। यह ख़बर सुनकर वह रावण ख़बरदार हो गया और उसने (तुरन्त) यह हुक्म दिया कि लंका के इर्द-गिर्द एक दीवार बाँधी जाये। जब दुबारा अंगद उसके (रावण के) पास पैग़ाम लेकर गया और धीरे-धीरे मंतव्य समझाने लगा, तब उस रावण ने कहा—तू अपना रहस्य बता (कि तू कौन है?) नीचे बैठकर कह कि तेरा आखिर नाम क्या है? २५ तेरा अपना कौन-कौन है? तू किस के साथ आया है और किससे जन्मा है? तू यहाँ मरने या जीने या फिर क्या करने आया है? सच-सच कह कि तेरे दिल में क्या गिला है? तूने लंका को जला दिया, इससे तुझे क्या हासिल हुआ? तब अंगद ने इस तरह से हँसते हुए जवाब दिया कि रावण जलभुन उठा। उसने कहा—मैं उससे जन्मा हूँ जिसने तुझे अपने अँगोछे में लपेट लिया था। मैं उसी का जाया (पुत्र) हूँ जो नदी पर

बु छुस तसुन्दुय नंदी प्यठ येम्य करयोव श्रान ।
अंगोचस वलुनु आख अंय देवि नादान ।। ३० ।।

बु ओसुस दौद चवान तमि वखुतु मासूम ।
मौठुय क्यथु स्योन वुथ कर वारुह मालूम ।।
बु ओसुस दौद चवान आसुस लज़ोमख ।
चु न्यूहम अथु तिमव वारा वज़ोमख ।।
तिथह रौटमख यिथह हूनिस रटन सुह ।
नतह यिथु दौदु शुर खंज़ुरस दिवन चुह ।।
करुम तंम्य वालियन ऋख अथु त्रावुन ।
पज़्या में दौशटु वुनिक्यन ज़ोर हावुन ।।
दौपुस तंम्य रावुनन कोंत गव सु वाली ।
ज़िन्दय छा किनु कौरुन तंम्य खानु खाली ।। ३५ ।।

वदन वौनुनस कौरुन तंम्य चोन ह्यू पाफ ।
ह्यौतुस ज़ुव रामु चन्दुरन कर चु इनसाफ़ ।।
दौपुस तंम्य तोरु फीरिथ अंय बरादर ।
पिसर नय काशके आसुख चु दौख़्तर ।।
किथव तस माल्यसुन्द करतूत त्रोवुथ ।
ज़िन्दय आसिथ मरिथ किथु सन्दुछोवुथ ।।

स्नान कर रहा था और रे देव-ए-नादान ! (नादान दैत्य!) जिसके अँगोछे से तू लिपट गया था । ३० उस वक़्त मैं दूध पीता एक मासूम (बच्चा) था । तू मेरा चेहरा क्यों भूल रहा है ? ज़रा अच्छी तरह याद कर । मैं (उस वक़्त) दूध पीता बच्चा था और तुझको मैंने मुँह में डालने की सोची थी कि तभी तुझे मुझसे छीना गया । फिर भी मैंने तुझे पकड़ लिया; वैसे ही जैसे कुत्ते को शेर पकड़ता है, या फिर दूधपीता शिशु जिस तरह खजूर को चूसता है । वह (वाली मुझ पर) चिल्लाया था कि इसे छोड़ दे (अन्यथा मैंने तुझे तभी मार दिया होता) । रे दुष्ट! भला अब तू मुझे क्या ज़ोर दिखायेगा ! तब रावण ने पूछा—वह बाली अब कहाँ है ? क्या वह जिन्दा है या उसका ख़ाना ख़ाली हो गया है (यानी मर गया है) ? ३५ रोते हुए (अंगद ने) कहा—उसने तुम्हारी ही तरह पाप किया और रामचन्द्रजी ने उसकी जान ले ली । इसलिए तू भी अब अपने साथ इन्साफ़ कर(यानी सम्हल जा)। इस पर उस (रावण) ने उत्तर में कहा—रे बिरादर ! काश, तू अपने बाप का पुत्र न होकर (दुख़्तर) पुत्री होता ! तू

तसुन्द अनुदनु क्यथु परद्यन द्युतुथ ख्योन ।
च्रे ह्युव सन्तान तस मोलिस गोछ़ा ज़्योन ।।
छुयय ताक़त च्रु पख सुतिन यिमय बो ।
ह्यमव तस ख़ून अज़ अफ़सूनुह जादू ।। ४० ।।

दिमय हिसु सारिकुय सतुकिन्य बरय लोल ।
गुमान गछ़ि सारिनुय ज़न ज़िन्दु गोंय मोल ।।
दोंपुस तंम्य तोरुह कमज़ातो यि मो वन ।
यिनय गरदन दिनय वुन्य रामु लंखिमन ।।
पोंज़ुय वोंनमय छयय इक़बालमंन्दी ।
शरन सोंपन मु कर वोंन्य ख़ोंद पसन्दी ।।
त्युतुय वूज़िथ सु रावुन आव दर जोश ।
गोंडुख अंगुद दोंपुख अंगदुन कंरिव होश ।। ४५ ।।

मे योंदवय मारुहम क्याह् चोन पाये ।
पतव लाकन लगख म्याने बलाये ।।
वोंदुनि वोंथ ताज पोंविथ न्यूनस अज़ ज़ोर ।
कलस द्युतनस अखाह् सोंपुन स्यठाह् शोर ।।

कैसे अपने उस पिता की स्मृति को (प्रतिशोध लेने की भावना को) भूल गया। ज़िन्दा रहकर भी तू (एक तरह से) मरा हुआ है। तुझ पर धिक्कार है! तूने उसके (अपने पिता के) अन्न व धन को परायों के खाने के लिए क्यों सुलभ कराया। तुझ जैसी संतान को उस पिता से कभी जन्म नहीं लेना चाहिए था। यदि तुझ में ताक़त है तो मेरे साथ चल और उस (रामचन्द्र) से ख़ून का बदला ले। ४० मैं तुझे सब में अपना हिस्सा दे दूँगा और तुझ पर प्रेम रखूँगा, जिसे देखकर सभी को यह गुमान होगा कि जैसे तेरे पिता ज़िन्दा हो गए हों। इस पर उसने कहा—रे कमज़ात! तू ऐसा न कह। वे राम-लक्ष्मण अभी आते ही होंगे और तेरी गर्दन उड़ा देंगे। मैं सच कहता हूँ, यदि ख़ैर (इक़बाल, ख़ुशी) चाहता है तो उनकी शरण में चला जा और ख़ुद-पसन्दी (अहंमन्यता) का अनुकरण न कर। यह सुनकर वह रावण जोश में आ गया तथा अंगद को बाँध लिया गया। ४५ उसने (अंगद ने) कहा—मुझे यदि मार देगा तो तेरा कोई चिह्न भी न रहेगा और आख़िरकार मेरी वजह से ही बलि हो जायगा। तब वह (अंगद) खड़ा हो गया और ज़ोर से (बलपूर्वक) उस (रावण) का ताज गिरा दिया तथा उसके सिर पर प्रहार किया, जिससे काफ़ी शोर मचा। राक्षस जमा

जमा राख्यस सपुन्य तस आवुरुख तन ।
मथन मारन वंथिथ गव छ्हालु मारन ।।
अथस क्यथ ताज ह्यथ राज़स निशह गव ।
शरन सॉंपुन तु पादन तल परन प्यव ।। ४९ ।।

वेबीशन सुंद शरन युन

दपन यैलि रावुनस न्युव ज़ोरु तंम्य ताज ।
वेबीशन तेलि कोरुन तंम्य मुल्कु इख़राज ।।
प्रुछानस तंम्य वनुम यथ क्या छु तदबीर ।
दोंपुस तंम्म तोरु पानस छुय यि तक़सीर ।।
सहल ज़ॉनिथ कथा ऑस आसान ।
सपुन्य मुशकिल तु मन्दुछोवुथ पनुन पान ।।
सोंखस प्यठ दोंख वुछिथ पानय पशुन ओय ।
वुछिथ शमशेरि कुन गरदुनि कशुन ओय ।।
च्रे क्या ग़म छुय यि गोलुथ राखिसन ब्योल ।
गछी वोंन्य ल्युथ यि ज़ोलुथ ना पनुन ओल ।। ५ ।।
वन्यानस पंज़ नंसीहत ज़हरि क़ातिल ।
वनुन आसां अमा बोज़ुन छु मुशकिल ।।

हो गए तथा उसके तन को खसोटने लगे और वह सबको मारता हुआ छलाँग मारकर निकल गया। हाथों में ताज लेकर वह राजा (रामचन्द्र) के पास गया और उनकी शरण में जाकर उनके पादों में प्रणाम करने लगा। ४९

विभीषण का शरण में आजाना

कहते हैं जब उस (अंगद) ने बलपूर्वक रावण का ताज ले लिया तब उस (रावण) ने विभीषण को मुल्क से निकाल बाहर कर दिया। (रावण ने विभीषण से पूछा था कि) अब इसकी क्या तदबीर करें, तो उसने कहा था कि यह आपका ही दोष है। आपने इस (बड़ी) वात को सहल (सरल) जाना जिससे अब आपके लिए मुश्किल हो गई है और आपकी दुर्गति बन गई है। सुख को आपने स्वयं दुःख में वदल दिया है और शमशेर देखकर आपकी गर्दन में स्वयं खुजली मची है। आपको क्या ग़म है। गला तो राक्षसों का बीज है। अब (शीघ्र ही) आप ख़ाक में मिल जायेंगे और आपका घोंसला जल जायेगा। ५ अपनी ओर से उस

अमी कथि सुत्य रावुन शोरुनोवुन ।
वदुनि लोंग जहलु सुतिन जीगु त्रोवुन ॥
कोरुन आवारुह तमि गरु वारु निशि गव ।
शरन गव रामु चन्दुरस प्यठ परन प्यव ॥
द्युतुस तम्य रामु चन्दुरन रावुनुन ताज ।
दोपुन तस च्रे दिमय लंकायि हुन्द राज ॥ ९ ॥

रावुनस तु सुगरीवस दरिम्यान ख़त व किताबत

तबल वोयुख योदस प्यठ द्रायि ख़ोशदिल ।
पक्रुनि लग्य लांकि कुन मंन्ज़िल व मंन्ज़िल ॥
योहय येलि रावुनन पयग़ाम बूज़ुन ।
सोखासोर वान्दुरन ह्यथ नामु सूज़ुन ॥
मुदा यी लोदनु सुगरीवस नमस्कार ।
मे छुम ती याद छुम सुगरीव मा यार ॥
अमा बूज़ुम च्रे कंम्य तामथ वंरी कन ।
तवय मारुनि ह्यथ आहम चु दुशमन ॥
यि छुयना याद येलि तम्य वोय मोरुय ।
ति बूज़िथ राखिसन वोथ सारिनुय हुय ॥ ५ ॥

(विभीषण) ने भली नसीहत दी, मगर वह (उसके लिए) ज़हरे-क़ातिल सिद्ध हो गई, क्योंकि कहना सरल है और सुनना मुश्किल । इस बात से रावण जल-भुन उठा तथा ग़ुस्से में आकर उसने आभूषणों को पटक दिया । (विभीषण को उसने) घर-बार से च्युत कर दिया और वह रामचन्द्रजी की शरण में जाकर प्रणाम करने लगा । रामचन्द्रजी ने उसे रावण का ताज दिया और कहा तुझे मै (बहुत जल्दी) लंका का राज्य दे दूँगा । ९

रावण और सुग्रीव के दरम्यान ख़तो-किताबत

तबला (ढोल) बजाया गया और युद्ध करने के लिए सभी ख़ुशदिल होकर लंका की ओर मंजिल-ब-मंज़िल चलने लगे । जब यह पैग़ाम रावण ने सुना तो सुखासुर के हाथों वानरों के पास एक नामा (ख़त) भेजा जिसमें सुग्रीव के लिए नमस्कार भेजा गया था (और लिखा था) कि मै बस यही जानता हूँ कि सुग्रीव मेरा यार है । मैंने सुना कि तुम्हारे कान किसी ने मेरे विरुद्ध भरे हैं, इसलिए तुम मेरे दुश्मन का साथ देकर मुझे मारने को आ रहे हो । क्या तुम्हें याद नही है कि (जिसका तुम

च़ु योदवय मेथुर छुख वोलु यावरी कर ।
संमिथ शेथरस ह्यमव ख़ूनि बरादर ।।
च़े कोंह कमि सातु मारी छयनु केंह बात ।
ग़नीमथ छुय च़लिथ वोलु योत मे निश वात ।।
यियी नय वथ यिनस पथ च़ल खंटिथ रोज़ ।
दज़न छुम दिल पोंज़ुय वोनमय पोंज़ुय बोज़ ।।
च़ु नय यिख डेश अदु चरुवस करय गूल ।
तमी सुत्य ज़ालु यथ लंकायि प्यठ जूल ।।
गछ़ीयय ज़िन्दगी गछ़ि आन मानुन्य ।
ख़बर करमय ख़बर गछ़ि शरथ ज़ानुन्य ।। १० ।।

सपुन दिल खस्तु तंम्य मावुज़ु तम्युक ल्यूख ।
कोरुख सर बसतु निशि तस रावुनस न्यूख ।।
मुच़ुरुन येलि पोरुन चेशमव होरुन ख़ून ।
अछ़र शमशीर तम्युक मज़मून छोकस नून ।।
मुदा यी ल्यूखुनस पंज्यकिन्य च़ु छुख दोस्त ।
अमा फ्यूरुख च़े वालुन वोन्य पज़ी पोस्त ।।

साथ दे रहे हो) उसने तुम्हारे भाई को मारा है। इस छल को देखकर (उस वक़्त) सभी राक्षस क्रुद्ध हो उठे थे। ५ यदि तुम मेरे मित्र हो तो आकर मुझे सहयोग दो ताकि हम दोनों मिलकर बिरादर (भाई) के ख़ून का प्रतिशोध लें। तुम्हें न जाने वह किस वक़्त मार डालेगा, कह नहीं सकता। तुम ग़नीमत जानकर मेरे पास चले आओ। यदि यहाँ आने का रास्ता तुम्हें न सूझे तो आने से पीछे हट जाना और छिप जाना। मेरा दिल जल रहा है, सच कह रहा हूँ और तुम भी इसे सच ही मान लेना। यदि तुम न आये तो तुम्हारी चर्बी को निकालकर उससे लंका में दीपमाला जलाऊँगा। यदि तुम ज़िन्दगी चाहते हो तो मेरा कहना मान लो। मैंने तुम्हें ख़बर भेज दी है और इसे ही शर्त मान लेना। १० तब ख़स्ता-दिल से उस (सुग्रीव) ने उस ख़त का उत्तर लिखा और उसे रावण के पास ले जाया गया। जब (रावण ने) उसे खोलकर पढ़ा तो उसकी आँखों में ख़ून उतर आया। उस (ख़त) का एक-एक अक्षर शमशेर की तरह तथा उसका मज़मून घावों पर नमक छिड़कनेवाला था। ख़त में लिखा था कि सचमुच तुम मेरे दोस्त हो, मगर तुम्हारी बुद्धि फिर गई है। अतः तुम्हारा पोस्त (खाल) उधेड़ा जाना चाहिए। हमारे भगवान् बेपरवाह (निश्चित) हैं। वे सब कुछ शून्य (उजाड़) कर सकते हैं, उन्हें किस

छु बे परवा दया वनुनुच छै क्या जाय।
शिन्या करि सा्र्यसुय तस क्या छु परवाय ॥
छु क्या अदु म्योन पाय या चोन तस ग़म।
गछ्र्यस दर्ययावु मंजु अख पां फ्योंरा कम ॥ १५ ॥
न्यरंजन बोंड छु नारायन न्यराकार।
करुन छुस पानु लूकन प्यठ लदन बार ॥
करुन यी तस चॆ राख्यस वासुना फीर।
फंरुय येंलि ज़्यव कंरुय येंलि नारुदन ज़ीर ॥
मे क्या मटि चान्य गर्दन चोन ज़ुव जान।
बु पनुनी पापु सुत्य छुस हालि हारान ॥
छु नारायन वुछान मोंख़तार पानय।
ख़ोंशी आस्यस तु करि सोरुय वहानय ॥
ख़बर कर कोंह चॆ छय कस सुत्य गंयीकाम।
वुछन छुख त्वयि नज़ुरि छय नोंशि हुंज़ ज़ाम ॥ २० ॥
चु छुख पांपी चॆ कर वाती अंगुन ह्योंन।
चु वातख अंछ कंड़िथ होंन्यन ज़िन्दय ख्योंन ॥
छियय कोंह ज़ोर हावुन्य हाव वुन्यक्यन।
नतय वोंलु गुल्य गंन्डिथ लीला दयस वन ॥

बात की चिंता है ? उन्हें मेरी क्या ज़रूरत या तुम्हारा क्या ग़म (भय) है ? (मेरे न रहने से) उनके शक्ति-रूपी दरिया में जैसे एक बूंद कम हो जायेगी। १५ वे निरंजन व निराकार नारायण हैं। करना तो सब कुछ स्वयं उन्हीं को है और नाहक़ (हम) लोगों पर (श्रेय का) भार डालते हैं। उन्हें तो यही करना था तभी तुम्हारी वासना (बुद्धि) फिर गई। नारद के कहने में आकर तेरी जीभ ने स्वयं तुझे ठग लिया। मुझे भला तेरी गर्दन व जी-जान से क्या सरोकार है। मेरा तो ख़ुद अपने पापों से हाल ख़राब है। नारायण स्वयं सब कुछ स्वतंत्र रूप से देख रहे हैं। यदि वे ख़ुश हो जायें तो सब कुछ कर सकते हैं। तुम्हें भला यह कहाँ ख़बर है कि तुम्हारा किस से वास्ता पड़ा है। तुम जिस पर पत्नी की नज़र रखते हो, वह तो तुम्हारी पुत्र-वधू की ननद है (यानी तुम्हारी पुत्री है.)। २० तुम पापी हो। तुम्हें तो ज़िन्दा ही आँखें निकलवाकर कुत्तों को खाने के लिए छोड़ देना चाहिए। यदि तुम कुछ ज़ोर दिखाना चाहते हो तो दिखा देना। अन्यथा (अभी भी समय है) हाथ जोड़कर

च़ु नय यिख आयी अस्य लंका गछी हैंन्य ।
अदय तथ पाफ कैंह तिम चानि गरुदन्य ।।
यि ख़त यैलि रावुनन पौंर पानुसुय ओत ।
दपन ताम रामु चन्दुरुन फ़ौज तौंत वोत ।। २४ ।।

रावुनन्य बाज़्यगॅरी

ति बूज़िथ गव सु रावुन बाज़्य हावुन ।
करुन माया तु सुता तम्बुलावुन ।।
कौरुन तम्य रामुचन्दुरुन शेर वारह ।
मुकटु गौंडनस तु छुनिनस मौखतु मालह ।।
ओंनुन सुतायि निशि वौंनुनस यि रौंयदाद ।
यि मा ओस चोन बरथा गोस बेदाद ।।
लड़ुनि आयाव मे सुतिन चानि बापथ ।
सिपाह सालार ऑसिस पॅंज़्य तु हापथ ।।
ब यैलि गोसस यौंदस च़ौल ख़ून हारन ।
मॅरिथ गॅयि कैंह तु कैंह लॅंग्य कोहसारन ।। ५ ।।
च़ु कर शांदी सौंखुक्य सामानु पाराव ।
ग़मुक मल च़ौल तु प्रांनी व्याद मॅशराव ।।

भगवान् की शरण में आ जाओ। यदि तुम नहीं आते तो हम आजायेंगे और तुम्हारी लंका पर छा जायेंगे। उसमें जो भी पाप बनेंगे वे तुम्हारी ही गर्दन पर लगेंगे। यह ख़त रावण ने अकेले पढ़ा और कहते हैं इस बीच रामचन्द्रजी की फ़ौज वहाँ पहुँच गई। २४

रावण की बाज़ीगरी (माया)

यह सुनकर वह रावण बाजीगरी करने लगा और माया दिखाकर सीता को ललचाने लगा। उसने रामचन्द्रजी का सिर बनाया और उस पर मुकुट लगाकर मुक्ताओं की मालाएँ पहनायीं। उसे सीताजी के पास ले जाकर कहने लगा कि यही तुम्हारा भर्त्ता तो नहीं था? यह तुम्हारे कारण मेरे साथ लड़ने को आया था और इसके सिपाहसालार वानर और रीछ थे। मै जब युद्ध करने गया तो सब ख़ून बहाते हुए भाग खड़े हुए। कुछ तो मर गए और कुछ पहाड़ों की ओर चले गए। ५ अब तू ख़ुश हो जा और सुख के सामान जुटा। ग़म की मैल अब धुल गई है, तू पुराने दुःखों को भूल [illegible]। सीता ने उस (सिर) को यथावत् देखा

वुछुन सुतायि येलि ड्यूठुन यथावत ।
ब आयीनु सुय तमिस नज़ि केह तफ़ावत ।।
रोटुन येलि नालु वुछिनस वाल्य त्रालह ।
खत्रस ज़ालह दोपुन तन नारु ज़ालह ।।
मुरुनि लंज्य अथु करुनि लंज्य नालु फ़रियाद ।
गुलालन दोन कोरुन अज़ दाग़ बेदाद ।।
दोपुन कीकियि येलि कोरनख त्रु वनवास ।
बु हेत्रथस सुत्य लखिमन रूद असि दास ।। १० ।।
सु दशरथ राज़ु असि पत्यकिन्य मरिथ गव ।
करिथ राजुत स्यठाह दूर्यर ज़रिथ गव ।।
डंडक वनस अन्दर राख्यस त्रे गालिथ ।
दुशमन वालिथ रेशन हृन्द्य वाक पालिथ ।।
त्रत्रर होवुथ तिमन दयतन कोरुथ डास ।
तपोवनु मंज़ु बिहिथ मारिथ शुराह सास ।।
बु अनिनस रावुनन तमि शायि त्रूरे ।
दज़ुवुन नार थोवथम लावि मूरे ।।
मे बूज़ुम येलि तमिस दयतस कड़िथ प्रान ।
टुकन त्रोवुथ त्रे कशकिदायि प्रस्तान ।। १५ ।।

(रामचन्द्रजी के समान देखा), जैसे आईने की तरह वही उसकी नज़रों के सामने हो। जब उसने उसे (रामचन्द्रजी को) गले से लगाया तो उसके कुण्डल देख लिये। वह विक्षुब्ध हो उठी और कहने लगी कि मैं भी अब अपने इस तन को जला दूँगी। वह हाथ मलने लगी और फ़रियाद करने करने लगी तथा इस अत्याचार से आहत हो गई। वह सोचने लगी (हे राम !) जब कैकेयी ने आपको वनवास दिया तो मुझे साथ ले लिया और लक्ष्मण हमारा दास बना रहा। १० वह राजा दशरथ बहुत दिनों तक राज्य करने के बाद हमारी दूरी (वियोग) को न सहकर मर गया। दण्डकवन में आपने कितने ही राक्षसों को मार डाला। दुश्मनों का गर्व भंगकर आपने ऋषियों के वचन पाले। अपनी शक्ति दिखाकर आपने बड़े-बड़े दैत्यों को नष्ट कर डाला और वन में बैठकर (रहकर) सोलह हज़ार राक्षसों को मार डाला। मुझे रावण उस जगह (वन) से चोरी-छिपे उठाकर ले आया और (जीवन को) मेरे लिए दहकती आग बना गया। मैंने सुना था कि आपने जैसे ही उस दैत्य (बालि) के प्राण हर लिये तो आपने तुरन्त किष्किन्धा से प्रस्थान कर लिया था। १५ हनुमान ने यहाँ आकर मेरा

हनूमान वोत यौंत कौंरनम मदारा ।
बु आसुस मौंरदु करनस ज़िन्दु वाराह ।।
दज़न छस यंत्र मे वुन्यक्यन क्याह बनिथ आम ।
बु आसा ज़िन्दु च्रु आसख मौंरदु श्रीराम ।।
जिगर च्रोंटथम च्रे रोंटथम दूर मांदान ।
मंरिथ गछु वुन्य तंरिथ सीनस लोंगुम कान ।।
दोंयुम यैलि बोज़ि कोशल्या यि अह्वाल ।
वदन छ्रेत्य लाल गछुनस तेलि यियस काल ।।
त्रेयिम तिम बांय यामथ चोन बोज़न ।
गछ़न तिम शांत अदु मा ज़िन्दु रोज़न ।। २० ।।
यि च्रूरिम छम लगन सीनस मे तलवार ।
सु राजुत डाक गछ़ि कैंह ओय ना आर ।।
यि नय पूंच्रिम करुन तस ईशरस ओस ।
शेंयिम शंका गंजिम वोंन्य दंय मे खुर कोस ।।
संतिम सथ यी बु सुता पान मारह ।
गंयस आवारु वोंन्य कैंह छुम नु चारह ।।
अष्ट बांरव च्रे प्रारान दरशनस छी ।
शोंबह दरशनु अमर्यतु वरशनस छी ।। २४ ।।

उत्साह बढ़ाया था। मैं तो मुर्दा हो गई थी मगर उसने मुझे ज़िन्दा कर दिया था। अब मेरा हृदय जल रहा है कि यह मेरे ऊपर क्या बीत गई है। आप मुर्दा हों और मैं ज़िन्दा—भला यह कैसे हो सकता है? आप मुझसे दूर हो गये, मुझसे मेरा जिगर कट रहा है। अब मैं भी मर जाऊँगी, क्योंकि इस सीने पर (आपकी जुदाई का) तीर लगा है। दूसरा, जब यह अहवाल कौशल्या सुनेगी तो रोते-रोते उसकी आँखे सफ़ेद हो जायेंगी और उसे काल आजायेगा (यानी मृत्यु को प्राप्त होगी)। तीसरा, जब आपके भाई सुनेंगे तो वे शान्त हो जायेंगे और ज़िन्दा नहीं रहेंगे। २० चौथा, मेरे सीने पर जैसे तलवार चल रही है कि आपको मुझ पर जरा भी दया न आई। पाँचवा, शायद उस भगवान् को यही करना था। छठा, मेरी शंका दूर हो गई है और अब भगवान् ही मेरी दुविधा दूर कर सकते है। सातवाँ, सत्य यही है कि मैं सीता अपने आप को मार डालूँगी क्योंकि अब मैं असहाय हो गई हूँ, और अब (इसमें) कोई चारा नहीं रहा है। अष्ट भैरव आपके दर्शनों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे आपके शुभदर्शन और अमृत-वर्षा की प्रतीक्षा कर रहे हैं। २४

सुता व्यलाप करान

श्री रामु यथ कामि क्या ओस कारन,
छारान छ्रेय पतु लारान छस।
कीकियि हुंदि वाकु लग्य कोहुसारन,
तोंत कोनु वरुथ शतुरगुन आव।
तमि किन्य लजायि अस्य जंगलन तु खारन,
छारान छ्रेय पतु लारान छस ॥ १ ॥
रोशि रोशि फेरान आस्य पोशि ज़ारन,
वुछान हनि हनि वेशनु माया।
बाग़न तु नागन तु दीवी दारन,
छारान छ्रेय पतु लारान छस ॥ २ ॥
बाज़्य हावनम राखिसन वाज़्यगारन,
आवारु करनस तु फिरुनम राय।
व्यनत करमय तु गोहस लारन,
छारान छ्रेय पतु लारान छस ॥ ३ ॥
कथु म्यानि गयि कोचन तु बाज़ारन,
शेरस प्यठ आसिनम चान्य जाय।
वुछिनस तु बुछिनस कालु शहमारन,
छारान छ्रेय पतु लारान छस ॥ ४ ॥

सीता का विलाप करना

हे श्रीराम ! इस बात के पीछे कौन-सा कारण था, मैं तो आपको ही ढूँढने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। हम कैकेयी के कहने से उन पर्वतों की ओर गये थे। वहाँ पर भरत और शत्रुघ्न भला क्यों नहीं आये। उन्हीं की वजह से तो हम इन जंगलों व ख़ारों (काँटों) की ओर लगे थे। मैं तो आपको ही ढूँढ़ने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। १ हम गुमसुम होकर पुष्पों की वाटिकाओं में फिरते थे और विष्णु की माया को बाग़ों, झरनों व देवी-द्वारों में देखते थे। मै तो आपको ही ढूँढ़ने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। २ मुझे बाजीगर राक्षस ने बाज़ीगरी दिखाई। उसने मुझे असहाय कर दिया तथा मेरा उत्साह भंग कर डाला। मैंने (भूल से) विनती की थी और तू उस पर टूट पड़ा। मैं तो आपको ही ढूँढ़ने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। ३ (अब) मेरी बातें कूचों और

ह्यसु निशि डांजिनस येंम्य समसारन,
गांजिनस तु जांजिनस क्याह छु स्योन पाय।
रावुन आम ब्रह्मनु विह दारान,
छारान च्रेय पतु लारान छस ॥ ५ ॥

कीशव रंटिथ गोम ह्योर ह्योर खारन,
जटायुन आयोस तु कोंरनस न्याय।
तीज़ी क्याह हांव तंम्य ज़ोरवारन,
छारान च्रेय पतु लारान छस ॥ ६ ॥

केंह रेशय वुछय दयि सुन्द ध्यान दारन,
केंच्रन नु ज़्यनु मरुनुक परवाय।
केंह वेशन मंत्य केंह वावु हारन,
छारान च्रेय पतु लारान छस ॥ ७ ॥

क्रूदु सान नियिनस तंम्य बदकारन,
अशक वन मंज़ मे कंरनम जाय।
सनु गोम वनु कस तनु छस बु थारान,
छारान च्रेय पतु लारान छस ॥ ८ ॥

वाज़ारों में फैल गई हैं। मेरे सिर पर आपका स्थान (सलामत) रहे। मुझे काले नाग ने देखकर डस लिया है। मैं तो आपको ही ढूँढने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। ४ उसने मुझे इस संसार से (एक तरह से) दूर कर दिया। मुझे गलाया और जलाया, अब भला मेरा क्या उपाय हो सकता है? रावण ब्राह्मण के वेश में आया था। मै तो आपको ही ढूँढने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। ५ वह मुझे केशों से पकड़कर ऊपर की ओर ले गया। जटायु न्याय की माँग के लिए आया और ज़ोरावर ने (अपनी ओर से) काफ़ी तेज़ी दिखाई। मै तो आपको ही ढूँढ़ने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। ६ कुछ ऋषियों को भगवान् के नाम का स्मरण करते देखा मगर कुछ को जन्म-मरण की कोई परवाह नहीं है। कुछ विपयों (दुष्प्रवृत्तियों) के पीछे पागल हैं और कुछ विपन्नता के मारे दुखी हैं। मैं तो आपको ही ढूँढ़ने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। ७ वह वदकार (दुराचारी) मुझे क्रोध में आकर ले भागा और अशोकवन (वाटिका) में मुझे डाल गया। मैं अत्यन्त क्षीण हो गई हूँ। किससे (अपना दुखड़ा) कहूँ। मेरा यह तन भी काँपने लग गया है। मैं तो आपको ही ढूँढने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। ८ (हे राम!) आप

थोंद वोंथ कन थाव कथन नारान,
लसुनुच बाथ छमनु बसनुच जाय।
छ़ांरिथ गामन तु वेंयि शहारन,
छ़ारान च्रेय पतु लारान छस ॥ ९ ॥

प्रकाशि गाश अन मूहु अन्दुकारन,
दयि सुन्द नाव रठ क्या छु परवाय।
मेंञ्रि हुंद मोंल ज़ान मोंहरन तु द्यारन,
छ़ारान च्रेय पतु लारान छस ॥१०॥

सोंरमा सुतायि दिलासु दिवान

ति डीशिथ गव सु रावुन खोंश न्यबर द्राव।
करुनि लोंग शांद्य वाराह लोंग बरुनि चाव॥
दपन सोंरमा तंमिस सुतायि आयस।
वनुनि लंज्य तस प्यवान छख ना च्रु पायस॥
यि रावुन छुय च्रे हावान वांज्यगांरी।
कवय बापत कंरुथ पानस च्रे खांरी॥
सपन खोंशदिल दपन योंत रामु जुव वोत।
वुछख वुन्य रावुनस मूलस दियस द्रोत॥

उठिए और मेरी बातों की ओर कान धरिए। मेरे लिए अब जीवित रहने के लिए कोई स्थान नहीं रहा है। मैं आपको गाँवों में व शहरों में ढूँढूँगी। मैं तो आपको ही ढूँढ़ने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। ९ मोह में पल रहे अंधकार-वासियों को अपने प्रकाश की छटा दिखाइए। भगवान् का नाम पकड़ लेने से फिर कोई परवाह नहीं है। (हे मनुष्य!) मुहरों (अशर्फ़ियों) और धन को तू मिट्टी के समान जान। मैं तो आपको ही ढूंढने के लिए भागती-फिरती रहूँगी। १०

सुरमा (त्रिजटा) का सीता को ढाढस बंधाना

यह देखकर वह रावण ख़ुश होकर बाहर निकल आया तथा पर्याप्त ख़ुशी व आनंद मनाने लगा। कहते है, सोंरमा (त्रिजटा) उस सीता के पास आगई और कहने लगी तू अभी तक बात को समझ नहीं सकी है। यह रावण तुझे अपनी बाज़ीगरी दिखा रहा है। तूने भला क्यों अपनी यह दुर्दशा कर डाली है। तू दिल को ख़ुश रख। कहते हैं, रामजी यहाँ पहुँच गये हैं और तू अभी देखेगी कि कैसे उस रावण को समूल उखाड़

न्यरंजन पानु नारायन छु श्री राम।
येमिस दशि रावुनस थवि यावुनस पाम ॥ ५ ॥
मदारा कौरनु तस केंह छुय नु परवाय।
नियी पानस सूत्यन वातक च्रु बरजाय ॥ ६ ॥

येन्दुर जेठु सुन्द जंग

समन्दर रामु जुव शहरस अन्दर व्राव।
अंगुद सांपुन अंगुन हलमुत लौदुर वाव ॥
खोंवुर्य किन्य तिम ज़ु ज़ंन्य मारुनि लंग्य दीव।
दंछिन्य किन्य द्राव जोमूवन तु सुगरीव ॥
पकुनि लोंग रामुजुव अंन्द्य अंन्द्य पलाटन।
टुकन द्राव ब्रोंठ सार्यन पानु लंखिमन ॥
लंज़ुन सूतायि शोंछ अंस्य आयि खोंश रोज़।
ह्यमव ज़ुव रावनस बेंयि सातु अकि बोज़ ॥
युहय येलि रावुनन पयग़ाम बूज़ुन।
नेंचुव ज्युठ ह्युव सिपाह ह्यथ तोर सूज़ुन ॥ ५ ॥
संमिथ तिम अबदु बंद्य राख्यस ति तैयार।
इन्दुर जीटस सूतिन लारेयि यकबार ॥

देते हैं। श्रीराम स्वयं निरंजन नारायण हैं और इस दश-रावण के यौवन को नष्ट करके रख देगे। ५ इस तरह उसने उसे धीरज बँधाया कि चिंता करने की कोई भी बात नहीं है। वे जल्दी ही तुझे अपने साथ ले आएँगे। ६

इन्द्रजीत के साथ जंग

समन्दर को पारकर रामचन्द्रजी शहर के अन्दर प्रविष्ट हुए। अंगद अग्नि बन गया और हनुमान और रुद्र वायु बन गए। बाएँ ओर वे देवों (राक्षसों) को मारने लगे और दाएँ ओर से जाम्बवान् व सुग्रीव आगे निकल पड़े। रामचन्द्रजी आगे-आगे बढ़ रहे थे और उनके दाएँ-बाएँ पलटन चल रही थी। तभी लक्ष्मण दौड़कर सब के आगे निकल गये। उन्होंने सीता को समाचार भेजा कि तुम अब ख़ुश हो जाओ, हम आ गये हैं। इस रावण की हम जान लेकर ही रहेंगे—यह तुम अच्छी तरह जान लेना। जब यह पैग़ाम रावण ने (भी) सुना तो अपने ज्येष्ठ पुत्र (इन्द्रजीत) को सिपाहियों के सहित वहाँ भेजा। ५ वहाँ अरबों (असंख्य) राक्षस तैयार

गछ़न कुनि विह्य कॅरिथ अन्दीऱ्य लागन ।
पकन कुनि वरनु वदुलिथ च़्रूर ज़ागन ॥
गछ़न कुनि नारु वुज़ुमलु कुनि गछ़न विह्य ।
गछ़न कुनि ऑस्य हापथ कुनि गछ़न सुह ॥
गछ़न कुनि पॅंज़्य तु कुनि तिम सॉपुनन जिन ।
ऑबुर लागन तु वालन रूद या शीन ॥
यॊदस यॆलि मील्य तिम राख्यस तु वान्दर ।
तिमन असरन सपुन ज़न कोरि खांदर ॥ १० ॥

वुछिथ ज़ोमूवनस ग़ॉरथ स्यठाह् आस ।
खंच़ुस च़ख यंच़ तु मॉरिन सासु वंद्य सास ॥
हनूमानन असर यॆलि मॉऱ्य वाराह् ।
इन्दुरजीठ वनुनि लोंग यथ क्याह् छु चारा ॥
खंसिथ गव बर हवा तंम्य तीर त्रॉविन ।
स्यठाह् मॉरिन तु वाराह् च़लु नॉविन ॥
वनुनि लोंग रामु च़न्दुरस कुन वॆवीशन ।
ख़बरदारी कॅरिव गछ़ि मारु लॅखिमन ॥
यियस जादू कॅरिथ दॉरिथ दियस तीर ।
गछ़्यस हलमुत सिपर च्युन यी छु तदबीर ॥ १५ ॥

थे जो इन्द्रजीत के साथ एकदम चले आए। कभी वे राक्षस माया रचकर चारों ओर अन्धेरा कर देते, कभी वर्ण बदलकर छिप जाते। कभी आकाश में बिजली चमक उठती और कभी वे रीछ और कभी शेर बन जाते। कभी वानर बन जाते और कभी जिन्न। कभी बादल बनकर वर्षा या बर्फ़ गिराते, आदि-आदि। जब राक्षस व वानर युद्ध करने को परस्पर मिले तो वही हाल हुआ जो पुत्री के विवाह पर होता है (यानी ख़ूब शोर-शरावा हुआ)। १० जाम्बवान् का पुरुषार्थ उत्तेजित हो उठा और उन्हें ग़ुस्सा आया तथा हज़ारों राक्षसों को उन्होंने मार डाला। हनुमान ने जब अनेक असुरों को मारा तो इन्द्रजीत कहने लगा कि अब इसमें कोई चारा नहीं रहा। वह हवा में उड़ा और तीर चलाने लगा जिससे कई वानर मरे और कई भागे। तब विभीषण रामचन्द्रजी से कहने लगे—ख़बरदार रहें, (लगता है) लक्ष्मण मारे (आहत हो) जाएँगे। (इन्द्रजीत) जादू करके उन पर तीर फेंक देगा जिसे हनुमान को अपने सिर पर रोकना होगा। १५ बस, यही उनके बचने की एक तदबीर है। तब हनुमान

हनूमानस वनुनि लोंग रामु अवतार।
सुतिन पख लंखिमनस रोज़ुस ख़बरदार॥
बहिकमत रात दोंह तस सूत्य सूत्य ओस।
क़ज़ा यैलि आस परहेज़ुक मंशिथ गोस॥
नेंन्दुर पेयि हलमुतस ख़ोश गव इन्दुरजीठ।
बंरिश लायिन तु सय तस लंखिमनस बीठ॥
ग़रज़ लंखिमन व ज़ख़मे तीरे जादू।
सपुन वेहोश तस होशुक नु अख मू॥
ख़बर यैलि बूज़ मरुनुच राजि रामन।
मथुनि लोंग ख़ाक द्युत तंम्य चाक जामन॥ २०॥

वदुनि लोंग ज़ोरुह त्राविन नालु फ़रियाद।
दोंपुन क्याह कोंर में आकाशन यि बेदाद॥
वदन यी राज़ु दशरथ ग़म ख्यवन गव।
तंमिस पतु प्यालु ज़हरुक लंखिमनन चव॥
तंमिस पतु पान मारुन म्योन आसान।
बु मांरिथ पान सूता आसि हांरान॥
तंमिस यैलि लुख वनन दियि नार पानस।
तिथुय वदि युथ गछ़न छलु आसमानस॥

से रामावतार कहने लगे—तुम लक्ष्मण के साथ-साथ रहना और उसकी ख़बर रखना। हुक्म के मुताबिक़ वह रात-दिन उनके साथ-साथ रहा। मगर जब दुःख की वह घड़ी आई तो परहेज़ (ख़बर) रखना वह भूल गया। हनुमान को नींद आ गई और इन्द्रजीत खुश हो गया। उसने शक्ति-बाण चलाया और वह लक्ष्मण को लग गया। ग़र्ज़ यह कि उस जादू के तीर से लक्ष्मणजी ज़ख़्मी हो गये और बेहोश हो गये—होश ज़रा भी न रहा। जब राजा राम ने (लक्ष्मण के) मरने (आहत होने) की ख़बर सुनी तो वे अपने तन पर ख़ाक मलने लगे। २० वे रोने लगे और ज़ोर-ज़ोर से फ़रियाद करने लगे कि आकाश (ऊपर वाले) ने मेरे साथ यह क्या अन्याय किया है! (पहले तो) राजा दशरथ ग़म खाते व रोते हुए गये और अब उनके पीछे लक्ष्मण ने ज़हर का प्याला पी लिया। मैं तो उसके बिना अपना यह शरीर मार डालूँगा और मुझे मरा देख सीता हैरान रह जायेगी। जब लोग उसे (सीता को) यह समाचार कहेंगे तो वह अपने आपको जला डालेगी और इतना रो देगी कि आसमान टूट

तम्युक ओसुम नु ग़म यी छुम यिवन आर ।
पतव लाकन वेंत्रीशन गछ़ि गिरिफ़तार ।। २५ ।।

यि क्या करि ज़ानि वोंन्य कथ शायि रूज़िथ ।
दियस कर सोंख सु रावुन हाल बूज़िथ ।।
वोंदुन वाराह् वरुथ योंद आसिह्म योर ।
मे प्यठ कर वाति हे युथ कांसि हुन्द ज़ोर ।। २७ ।।

लंखिमनु सुन्द ज़िन्दु गंछिथ इन्दुर जीठ मारुन

वेंबीशन वनुनि लोंग कुस आसि त्युथ वीर ।
कमर गंडि वुन्य वनस दवु हुक बु तदवीर ।।
छु गासा अख वनन अमर्यत संजीवन ।
कोंह्स प्यठ रात क्युत प्रज़लन शमा ज़न ।।
अने कांछा गंछिथ सुबह्न प्रवातन ।
सिरी खसुनय सु बेंयि गछ़ि ज़िन्दु लंखिमन ।।
अमा तोंत ताम गछ़ुन वाराह् छु मंज़िल ।
शुराह् शथ क्रूह् बेंयि योंत युन छु मुशकिल ।।
मन्दुछि होंत ओसना ह्लुमुत टुकन द्राव ।
त्युथुय तुल तंम्य क़दम युथ छुय वुफन वाव ।। ५ ।।

जायेगा । मुझे उसकी (भी) कोई चिंता न थी मगर इस विभीषण पर दया आ रही है कि यह गिरफ़्तार हो जायेगा (इस पर मुसीवत आयेगी) २५ यह भला क्या करेगा और कहाँ रहेगा ? वह रावण इसे कहाँ सुख देगा ? वे वहुत रोने लगे (और कहने लगे), आज अगर भरत यहाँ होता तो मेरे ऊपर भला किसका ज़ोर चल सकता था ! २७

लक्ष्मण का ज़िन्दा होकर इन्द्रजीत को मारना

तब विभीषण कहने लगा कि (हममें) ऐसा कौन वीर है जो कमर कस ले । मैं अभी उसे तदवीर वताता हूँ । एक घास है जिसे अमृत संजीवनी कहा जाता है । यह पहाड़ पर रात के समय शमा की तरह चमकती है । यदि कोई जाकर उसे प्रभात होने से पूर्व ला दे तो सूरज चढ़ने से पहले ही लक्ष्मण ज़िन्दा हो सकता है । हाँ, वहाँ तक की मंज़िल (सफ़र) काफ़ी लम्वी (लम्वा) है । सोलह सौ कोस पार करके लौटना मुश्किल है । (यह सुनकर) हनुमान फ़ुर्ती से निकल गया और ऐसे क़दम उठाने

रुमाह् तथ परबतस प्यठ वोत यकबार ।
वुछुन तति राखिसव दिथ थोवमुत नार ॥
दपन येलि रावुनन बूज़ुन यि रोयदाद ।
सपुन बेह्यस तु कालु यमनस ह्युतुन नाद ॥
वनुनि लोंग तस च्रु गछ संनियास लांगिथ ।
करिथ आसन च्रु बेह् तथ जायि ज़ांगिथ ॥
करुन बांबुरि नतु गछि अनि सु अवशद ।
सपुनि नोंव ज़िन्दु लंखिमन गव स्यठाह् बद ॥
च्रु छुख ग़मख़ार गछ शेरस गंडय ताज ।
दिमय ओड़ राज ज़ांह् थावथ नु मोंह्ताज ॥ १० ॥

त्युतुय बूज़िथ सु गव तोंत वोत यकवार ।
मोंलुन बसमाह् वंजिन सुह् ख्रम जटादार ॥
करन तपसी अथव सुमरन फिरान ओस ।
वुठव सूतिन अपुज़ पोंज़ कंह् ज़पान ओस ॥
हनूमान वोत येलि तथ जान जाये ।
र्योशाह ड्यूठुन सु पूरिथ बुरज़ु काये ॥
परन प्यव तस रेशिस कोंरनस नमस्कार ।
शरन सांपुन तु वंनिनस वीलु तह ज़ार ॥

लगा जैसे वायु दौड़ती है। ५ अत्यल्प समय में वह एकदम उस पर्वत पर पहुँच गया। वहाँ पर उसने देखा कि राक्षसों ने आग लगा दी है। इधर, कहते हैं, जब रावण ने यह बात सुनी (कि लक्ष्मण को जीवित करने के लिए संजीवनी बूटी मँगवायी जा रही है) तो उसने कालनेमि को बुलवाया और उससे कहा कि तू एक संन्यासी बनकर वहाँ चला जा और वहीं कहीं जगह ढूँढकर घात में बैठ जा। जल्दी कर, नहीं तो वह (हनुमान) जाकर औषधि ले आयेगा, जिससे लक्ष्मण ज़िन्दा हो जायेगा और यह (हमारे लिए) ठीक न होगा। तू मेरे ग़मों को दूर करनेवाला है। जा, मैं तेरे सिर पर ताज लगाऊँगा और आधा राज्य दे दूँगा। तुझे फिर किसी बात की मुहताजी (परतंत्रता) नहीं रहेगी। १० यह सुनकर वह एकदम वहाँ (उस पर्वत पर) पहुँच गया और भस्म मलकर व जटा-जूट धारण कर उसने शेर की खाल ओढ़ ली। तपस्या में लीन होकर वह हाथों में माला फेरने लगा और होठों पर सच-झूठ (जो भी उसे याद था) जपने लगा। हनुमान जब उस सुन्दर स्थान पर पहुँचा तो उसने वहाँ पर

स्यठाह ज़ारी कॅरिथ मुछ्यनस यि तॅम्य वाख ।
लॉकुटि वान्दुरु च्रु कमि आशायि योत आख ।। १५ ।।

दोंपुस तॅम्य तोरु सूज़ुस रामुच्रन्दुरन ।
बॅरिशि सुतिन गोमुत तस मारुह लॅखिमन ।।
तॅमिस प्योमुत नज़ा दशि रावुनस सुत्य ।
लछन हुंज़ कथ छै क्याह तति मारुह गॅयि कुत्य ।।
तसुन्दी मरनु छुम वाराह मे दिल रेश ।
ग्रज़न छुस छम दज़न वॉलिज लॅजिम त्रेश ।।
निमस अवशद सु गछि नोंव ज़िन्दु पानह ।
मे दिम रोंख़सत तु फ़ुरसत छम नु दानह ।।
दोंपुस तॅम्य रेश्य म गछ अज़ रोज़ रातस ।
बॅ पानय वातुनावथ तोंत प्रवातस ।। २० ।।

ग़माह त्रॉविथ च्रु गछ चतु त्रेश नागन ।
दमाह दम दिथ ख़ोशी छ्य फेर बाग़न ।।
यि ज़ल छुम च्रूरि यॅन्दराज़स मे ओंनमुत ।
तपुकि बलु सुत्य छुम यॅति सर मे खोंनुमुत ।।

एक ऋषि को देखा जिसने भोजपत्र के वस्त्र धारण कर रखे थे। उस ऋषि को नमस्कार कर वह उसके चरणों में गिरा और शरण में जाकर अपना दुखड़ा कह सुनाया। काफ़ी अनुनय-विनय के बाद उसने ज़ुबान खोली और कहा—रे बालवानर ! तू यहाँ किस कारण से आया है ? १५ उसने उत्तर में कहा—मुझे श्रीरामचन्द्रजी ने भेजा है, क्योंकि तीर से उसका लक्ष्मण मर गया है। उसका वास्ता वहाँ रावण से पड़ा है। लाखों का तो क्या कहना, वहाँ पर असंख्य अब तक मर चुके हैं। उस (लक्ष्मण) के मरने से मुझे भी बहुत दुःख है। मेरा दिल जल रहा है और अपार प्यास लगी हुई है। मैं उसके लिए (यहाँ से) औषधि ले जाऊँगा, जिससे वह नयी ज़िन्दगी पायेगा। अतः मुझे रुख़सत कीजिए, क्योंकि मुझे और अधिक कुछ कहने की फ़ुरसत नहीं है (समय बहुत कम है)। उस ऋषि ने कहा—अभी न जा। आज तू यहीं रह जा। मैं स्वयं तुझे प्रभात-वेला में पहुँचा दूँगा। २० ग़म भूल जा और जाकर उस सोते का पानी पी। थोड़ा-सा सुस्ता कर इन बाग़ों में ख़ुशी के साथ घूम। इस स्रोत का जल मैं इन्द्र के यहाँ से चोरी करके लाया हूँ और तप के बल से इस स्रोत को मैंने यहाँ पैदा किया है। तू इसकी लम्बाई व

गछुस ज़ेछर खजर छारुस तु लारुस ।
ह्यकख नय वांत्य किन्य अदु छालु मारुस ॥
ज़लस कुन वोथ तु मनु किन्य ओस दिल तंग ।
क्रमा अख ओस ज़लु मंजु तस्य रंटुस ज़ंग ॥
बंठिस खोरुन कलस लायिनि लोंगुस टाफ ।
तसुन्दि दरशनु सुतिन ज़्रोल तमिस शाफ ॥ २५ ॥

सपुन आशचर तु वंनिनस वारुह वारह ।
स्यठाह लीला तु कोंरनस ज़ारुह पारह ॥
मे ओसुम शाफ ती कोंरथम बराबर ।
वनय वोंन्य अख कथा तथ कर ज़्रु बावर ॥
यि र्योश वुछथन यि छुय राख्युस दग़ाबाज़ ।
करन छुय रोंट नि अवशद कर ज़्रु परवाज़ ॥
ति वूज़िथ गव तमिस दयतस हनूमान ।
रोंटुन ज़ागिथ ज़्रोंटुन ब्योंन ताविनस तान ॥
सु मारिथ कोंर नु गन्दवरन सुतिन न्याय ।
छुनिन मारिथ तु केंह ओसुस नु परवाय ॥ ३० ॥
दपन संज़ीवनस लार्यव बज़ूदी ।
हेंज़्रुस तम्य छ्यफ तु सांपुन वारुह क्रूदी ॥

चौड़ाई देख और प्रसन्न होकर इसका पानी पी । जैसे ही वह (हनुमान) जल में उतरा तो एक ग्राह ने जल में उसकी टाँग पकड़ ली । (हनुमान) उसको तट पर ले आया और उसके सिर पर प्रहार किया । तभी उस (ग्राह) का शाप उस (हनुमान) के द्वारा दूर हो गया । २५ (हनुमान को) आश्चर्य हुआ और उस (ग्राह) ने उसकी पर्याप्त वंदना और भक्ति की तथा कहा—मुझे शाप मिला था जिससे आपने मुक्त कर दिया । अब मैं आपको एक बात बताता हूँ, आप उस पर ध्यान दें । जिस ऋषि को आपने अभी देखा है, वह दरअसल दग़ाबाज है । वह आपको रोकना चाहता है, अतः आप औषधि लेकर तुरन्त उड़ जाये । यह सुनकर हनुमान उस दैत्य के पास गया और उसको पकड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले । उसको मारकर उसने अन्य राक्षसों को भी मार डाला और उनकी परवाह न की । ३० तब वह संजीवनी को जोर से उखाड़ने लगा, मगर वह छिप गई, जिससे उसको और भी क्रोध आया । उसने सोचा यदि (संजीवनी नहीं मिली) तो वे ईश्वर (राम) मुझे अपराधी मानेंगे और

दोंपुन गछ़नय सु ईशर मा लद्यम वोर ।
दोंयिम दपनम में वान्दर द्राख कमज़ोर ।।
सलाह छुम यी निमन परबत कुल्यव सान ।
बोंज़न प्यठ वातुनावन तोंत बु आसान ।।
तुलुन परबत नखस क्यथ आव आकांश्य ।
नबस सांपुन बुन्युल तिम करनि लंग्य कांश्य ।।
बरुथ बेदार सांपुन तम्बुलिथ द्राव ।
वुछुन आकांश्य यॆलि ड्यूठुन व्रलन वाव ।। ३५ ।।

नखस क्यथ ह्यथ व्रलन ज़न सोंनु सुंज़ लांक ।
द्युतुन तस तीर आंसुस रावनुन्य शॆंख ।।
हनूमानस सु बरथुन तीर यॆलि आव ।
वुछिव क्यथु पांठ्य प्यव वुतरांव्र प्यठ वाव ।।
परुनि लोंग रामु रामु क्या यि बेदाद ।
यि जिन छा देव छा किनु आदुमी ज़ाद ।।
त्युतुय बूज़िथ बरुथ गव नालु त्रावन ।
सियाह तन गंयि कोंसतूर्यन तु कावन ।।
तसुंज़ि ज़ॆवि बांय सुन्द यॆलि नाव बूज़ुन ।
पत्थर प्यव यंव्र वोंदुन बेताव सांपुन ।। ४० ।।

दूसरा, मुझे अपने ही (भाई) वानर कमज़ोर वतलायेंगे । अच्छा यही है कि इस पर्वत को ही वृक्षों समेत ले चलूँ और भुजाओं पर उठाकर वहाँ पर पहुँचा दूँ । तव उसने उस पर्वत को कन्धे पर उठाया और आकाश-मार्ग से चल पड़ा, जिससे नभ में जैसे भूचाल आ गया । भरतजी जाग गये और वे हड़बड़ाकर (कुटिया से) बाहर निकल आये । उन्होंने आकाश में वायु के वेग की तरह किसी को कन्धे पर सोने की लंका जैसा कोई भवन उड़ाते हुए देखा । ३५ उन्होंने तीर चलाया क्योंकि उन्हें सन्देह हो गया था कि वह रावण ही होगा । हनुमान को भरत का वह तीर जब लगा तो वह पवनपुत्र आहत होकर पृथ्वी पर राम-राम जपते हुए गिर पड़ा और कहने लगा कि न जाने यह किस जिन्न, देव या आदम-ज़ाद ने मुझे गिरा दिया । यह सुनते ही भरत उसके पास आर्त्तनाद करते हुए गये और (तभी से) कोयल व कौए की देह स्याह (काली) हो गई । उस (हनुमान) के मुँह से जब उसने अपने भाई का नाम सुना तो वे रोते हुए गिर पड़े व अत्यन्त वेताव (अधीर) हो गये । ४० रोते

वदन वोंनुनस छु क्याह् तस बांय सुन्द हाल ।
मे तस निशि दूर गोमुत वोत यॅच्रकाल ।।
हनूमानन वोंनुन तस हाल सोरुय ।
सु लॅखिमन इन्दरजीटन राथ मोरुय ।।
तसुन्दि लसुनुक दवा यथ परबतस ओस ।
च्रे ह्युतथम तीर परबत ह्यथ वॅसिथ प्योस ।।
दोंपुस बरथन तम्युक नो यारु छुय ग़म ।
बु तीरस प्यठ छुनथ तोंत निथ ब यकदम ।।
तुलख परबत करख यामथ कुनी कथ ।
च्रु तीरस प्यठ बु लंका वातुनावथ ।। ४५ ।।
हनूमानस ति बूज़िथ ख़ोश सपुन मन ।
वॅथिथ गव कोह ह्यथ प्यव दर अशक वन ।।
वॅबीशन आव छोरुन नवशदादो ।
ह्युतुख चोंन लॅखिमनस तस च्रोंल सु जादो ।।
सपुन बॅयि ज़िन्दु लॅखिमन द्रायि आवाज़ ।
कोंरुख हलमुत लोंदुर तामथ सरफ़राज़ ।।
सु याम गव ज़िन्दु बांयिस गाश बॅयि आस ।
खंजर ह्यथ पानु वोंथ असरन कोंरुन डास ।।

हुए उन्होंने पूछा कि मेरे भाई का क्या हाल है ? मुझे उनसे दूर हुए काफ़ी समय हो गया है। तब हनुमान ने उन्हें सारा हाल कह-सुनाया और बताया कि कल रात लक्ष्मण को इन्द्रजीत ने मारा था। उसके स्वस्थ होने की दवा इस पर्वत पर थी मगर आपने तीर मारकर मुझे पर्वत समेत नीचे गिरा दिया। भरत ने कहा--तू चिंता न कर। मैं अभी तीर पर बिठाकर तुझे वहाँ एकदम पहुँचा दूँगा। तू पर्वत को उठाकर जब तक एक वात करेगा तब तक तीर पर बिठाकर तुझे लंका में पहुँचा दूँगा। ४५ यह सुनकर हनुमान का मन खुश हो गया और पर्वत को उठाकर वह अशोकवन में जा गिरा। विभीषण ने आकर उस घास (औषधि) को ढूँढ़ा और उसका रस लक्ष्मण को पिलाया, जिससे उसकी मूर्च्छा (वेहोशी) हट गई। लक्ष्मण फिर ज़िन्दा हो गया—यह आवाज चारों ओर से आने लगी और पवनपुत्र हनुमान की प्रशंसा की जाने लगी। वह पुनः ज़िन्दा हो गया तो उसके भाई (राम) (के नेत्रों) का प्रकाश जैसे लौट आया। तव वह (लक्ष्मण) खंजर लेकर राक्षसों को नष्ट

वेँबीशन लँखिमनस सूत्य रूद पानह ।
इन्दुरजीठुन तँमिस होवुन निशानह ।। ५० ।।
सँ याम लँखिमन जुवन बाज़ीगरी डीठ ।
खँटिथ छ़ोरुन रँटिथ मोरुन येँन्दुरजीठ ।।
अंगुद बेँयि ज़ोमूवन हलमुत लोँदुर द्राव ।
गँछ़िथ पेँयि राखिसन सँहलाब ज़न आव ।। ५२ ।।

कोँम्बुकरनस सूत्य जंग

सपुन देवानु रावुन तरानु लोर्‌यव ।
इन्दुरजीठुन्य ख़बर बूज़िथ सु मोर्‌यव ।।
दपान तस ओस बोयाह अख दिलावार ।
शेँ र्‌यथ सूरिथ गछ़ान ओस नेँन्दरि बेदार ।।
महा बँलिया स्यठाह सुय ओस बलुवान ।
ज़िराअत श्यन र्‌यतन हुन्द ओस च़ापान ।।
सपुन क्रूदी तु मनु किन्य ओस बे ह्यस ।
दोँपुन वीरन गँछ़िव निशि कोँम्बु करनस ।।
बज़ारी थोँद तुलिथ वँन्य तोस रोँयदाद ।
ब ग़ायरत यियि द्यवु असि कासि यिछ़ व्याद ।। ५ ।।

करने के लिए (रणक्षेत्र में) उतरा । विभीषण लक्ष्मण के साथ-साथ सहायता के लिए रहे और इन्द्रजीत पर निशाना लगाने की तरकीब बताई । ५० जब (इन्द्रजीत की) माया उसने देख ली तो ढूँढ़कर उसे पकड़ लिया और मार डाला । अंगद, जाम्ब्रवान्, हनुमान, रुद्र आदि भी निकल पड़े, और राक्षसों के ऊपर टूट पड़े, जैसे वे सब सैलाब में घिर गये हों । ५२

कुम्भकर्ण के साथ जंग

रावण इन्द्रजीत की (मृत्यु की) ख़बर सुनकर दीवाना हो गया और जैसे मर गया । कहते हैं उसका एक दिलावर भाई था जो छः मास के बाद नींद से बेदार हो जाता था । वह महाबली बहुत ही बलवान् था और छः मास का भोजन एक ही बार चबा जाता था । रावण अत्यन्त क्रुद्ध हो गया तथा मन उसका डूबने लगा । उसने अपने वीरों से कहा कि कुम्भकरण के पास जाओ और विनती कर उसे सारा वृत्तान्त कह सुनाओ । शायद उसकी ग़ैरत (स्वाभिमान) जागे और हमारी व्याधि

ति बूज़िथ द्रायि तिम सारी ब यकबार ।
वज़ीर तु वीर तिम गाटुल्य तु हुशियार ॥
वुछुख कोम्बुकरुन ज़न ओस कोहि कालास ।
शोंगिथ ड्यूठुख प्योमुत तिम ब्रोंठ कुन आस ॥
हवावय नसति हुन्दि तिम च्रलुनाविन ।
पलन छांविन तु गरि निशि दूर त्राविन ॥
करिथ तदबीर लग्य तिम करुनि ततु कार ।
फिर्योहस हस्य तु गुर्य प्यठु गव नु बेदार ॥
अनिख दह सास कनिकन हुन्द्य स्यठाह जान ।
ज़ंगन ज़ंगूलह मोख ज़न सिरियि ताबान ॥ १० ॥

नोंच्रुख त्युथ युथ नच्रन तावूस बागस ।
मुशुक त्युहुन्दुय तमिस बोनु गव द्यमागस ॥
अमी सुत्य गव वथित ज़न व्यन्दुह परबत ।
ओनुख ख्योंन चोंन तमिस वीरव वनय कथ ॥
शुराह सास ज़ीव तम्य तति बोछि हत्य खेय ।
शराबुक्य सास नट्य तम्य त्रेशि हत्य चेय ॥
वोनुख तस कोम्बुकरनस हाल सोरुय ।
इन्दुरजीठ त्युथ नेचुव रामन च्रे मोरुय ॥

(मुसीबत) दूर कर डाले । ५ यह सुनकर वे सभी एकदम चल पड़े । उनमें वज़ीर, वीर, बुद्धिमान व प्रबुद्ध, सभी थे । उन्होंने देखा कि कुम्भकरण कैलास (पर्वत) की तरह सोया पड़ा है और वे उसके निकट आ गये । (ख़र्राटे मारने से उसकी नाक से) जो हवा निकलती थी, उससे कुछ पत्थरों से जा टकराये और कुछ दूर जा कर गिरे । उसको जगाने के लिए वे सभी मिलकर कोई तदबीर निकालने लगे । उसके ऊपर से हाथी व घोड़े फिराए गये, मगर वह बेदार न हुआ । दस हज़ार सुन्दर कन्याएँ (नर्तकियाँ) बुलाई गई, जिनके पैरों में (ज़ंगुल) घुँघरू बँधे थे और जिनके मुख सूर्य के समान चमक रहे थे । १० वे ऐसे नाचीं जैसे बाग़ में ताऊस (मोर) नाचता है । उनकी मुश्क (सुगंध) उसके दिमाग़ में चली गई जिससे वह विंध्याचल पर्वत की तरह उठ खड़ा हुआ । वीर उसके लिए खाने-पीने की सामग्री ले आए । उस भुक्खड़ ने सोलह हज़ार जीव खा डाले और प्यास बुझाने के लिए शराब के एक हज़ार मटके पी डाले । तब (उन्होने) उस कुम्भकरण से सारा हाल कह डाला

करुन तीज़ी स्यठाह राख्यस करिन पथ।
सपुन दिलखसतु रावुन चानि बापथ ॥ १५ ॥

कमर गंड़ नेर वौन्य वीरुत पनुन हाव।
करुख तिम शान्त सारी नाव पनुन थाव ॥
तिमन लोंग सथ करुनि बुय व्याद कासस।
पकन गव वोत मंज़ तथ आम व ख़ासस ॥
तमिस डीशिथ वथिथ थोंद गव सु रावुन।
वुछुन तस मोख तु तखतस बेहनोवुन ॥
दोंपुन तस बायि म्याने कोनु छुय आर।
मे वोत संहलाब खोरन तल च्रु द्यू तार ॥
ख़वर छय ना इन्दुरजीठ क्याह पहलवान।
तिथिस ज़ोरावरस द्युत लखिमनन कान ॥ २० ॥

तनय प्यठु गोस यंत्र आवारुह ड्यूठुम।
गलन छुस शीन ज़न मो दूर रोज़ुम ॥
दोंपुस तम्य तोरु छुय ना होश पानस।
च्रे छुय यमराजु थोंवमुत कांद ख़ानस ॥

कि इन्द्रजीत जैसा तुम्हारा पुत्र राम ने मार डाला है। वह तेज़ी से आगे बढ़ रहा है और राक्षस परास्त हो रहे हैं। तुम्हारे अभाव में रावण अत्यन्त असहाय हो रहा है। १५ कमर कसकर अब निकल पड़ और अपनी वीरता दिखा तथा उन सभी को शांत करके अपने नाम को सार्थक बना। तब वह (कुम्भकरण) उनको सांत्वना देने लगा कि मैं उसकी (रावण की) सभी व्याधियों को दूर कर डालूँगा तथा वह स्वयं चलकर उस दरबार (आम व ख़ास) में जा पहुँचा। उसको देखकर रावण खड़ा हो गया और उसका मुख देखकर उसे (कुम्भकरण को) तख़्त पर बिठाया। उसने उससे कहा—हे भाई! तुम मुझ पर दया क्यों नहीं करते हो? मैं सैलाव में घिर गया हूँ, अब तुम ही पार लगा सकते हो। तुम्हें खबर नहीं कि इन्द्रजीत जैसे पहलवान व ज़ोरावर को लक्ष्मण ने तीर मार दिया। २० तभी से मैं विक्षुब्ध हो उठा और वर्फ़ की तरफ गल रहा हूँ। अब तुम भी मुझसे दूर न रहो। तब उसने (कुम्भकरण ने) कहा—तुम्हें क्या इस वात का होश (ध्यान) नहीं है कि तुमने अपने क़ैदख़ाने में यमराज को डाल रखा है। तुम तो वीर हो और उन सभी का नाश कर सकते हो। इन्द्र भी तुम्हें शाबाशी देता है।

च़ु छुख वीराह तिमन सार्यन करख नाश ।
करान यंन्दुराज़ु छुय शाबाश शाबाश ।।
मे यौदवय हुकुम फ़रमावख बु लारख ।
रटख गरदन च़टख छ़ारख तु मारख ।।
स्यठाह सख़ती कॅरिथ यॅलि वुज़ुनोवुन ।
वदुनि लोंग तस पनुन अह्‌वाल बोवुन ।। २५ ।।

दोपुस तॅम्य कौम्बुकरनन कर च़ु फ़ुरसथ ।
बु यामथ नॅन्दरि वोथु तामथ चमख रथ ।।
कोडुन तरकश ज़िरह जबु जामु तॅम्य वॅल्य ।
नखस प्यठ ह्यथ कमानाह द्राव बॅल्य बॅल्य ।।
अॅछिन फश फश दिवन लारन यौदस आव ।
खॅलिस मंज़ बाग पादर सुह ज़न च़ाव ।।
रटन यस तस च़टन सर ज़न कपर थान ।
करन पारह दुबारह कुनि नु तस जान ।।
वुछन यस तस बुछन अंजदर ह्यवन जान ।
च़लन युस तस वलन ज़न मारि पेचान ।। ३० ।।

तुलन यस तस दिवन दॉरिथ ब आकाश ।
दपन तस कुनि न रोज़न बसुनुच्य आश ।।

यदि तुम मुझे हुक्म दोगे तो मैं उनके पीछे पड़ूँगा तथा उन्हें गर्दन से पकड़कर व ढूँढ-ढूँढकर मार डालूँगा। बड़ी कठिनाई से जगाए हुए उस (कुम्भकरण) के सामने रावण रो-रोकर अपना अहवाल सुनाने लगा। २५ तब कुम्भकरण ने कहा—तुम (फ़ुरसत) धैर्य रखो। मै नींद से जाग गया हूँ और अव उनका रक्त पी जाऊँगा। तरकश निकालकर उसने ज़िरिह-बक्तर पहन लिया और कन्धे पर कमान लेकर जल्दी-जल्दी निकल पड़ा। आँखों को मसलता-मसलता वह युद्ध करने आया जैसे रेवड़ (भेड़ों) के बीच में बबर-शेर घुस पड़ा हो। जिसे भी वह पकड़ लेता उसका सर वह कपड़े के थान की तरह काट देता और फिर उसके टुकड़े-टुकड़े कर उसकी ज़ान ले लेता। जो भी नजरों के सामने पड़ता अज़्दहा की तरह उसकी जान ले लेता था और जो भाग जाता उसे नागपाश के समान जकड़ लेता था। ३० जिसे उठा लेता उसे आकाश की ओर फेंक देता और फिर उसके जीने की आशा बाक़ी न रहती। इस तरह उसने कितनों को मारकर दूर फेंक दिया, कितनों को पकड़कर निगल डाला। वह तेज़ी

स्यठाह मॉरिन तु मॉरिथ दूर त्रॉविन ।
रॅटिन वाराह रॅटिथ तिम न्यंगुलॉविन ॥
कॅरुन तीज़ी तु ख़ूनरीज़ी करन आव ।
कॅरिन मॉदान ख़ॉली ज़न नु कांह ज़ाव ॥
पथर पेॅयि सॉर्य वान्दर ख्योख हज़ीमथ ।
ति सुगरीवन वुछुन नेॅतरन खोॅतुस रथ ॥
खंच्रुस येॅलि च्रख तॅमिस लारन योॅदस आव ।
तिथय तिम मील्य यिथु नारस सुत्यन वाव ॥ ३५ ॥

सपुन आकाश मेॅच्र बुतराथ गॅयि कॅन्य ।
तिथय मा शीशि नागस थर गॅयस नॅन्य ॥
कमान फॅट तीर सूरिथ द्रायि शमशीर ।
च्रॅटिख ज़बु जामु थफ लॉयिख रॅटिख गीर ॥
गरा लथ अख अॅकिस लायन गरा मुश्त ।
गरा बुथि किन्य प्यवन तिम पुश्त वर पुश्त ॥
गराह गुर्य सॉपुनन इसतादुह रोज़न ।
गराह च्रापन बदन ख़ूनी गछ़न तन ॥
गराह तिम ज़र ककव लागां खसां ह्योॅर ।
प्यवान बुथि किन्य वॅसिथ येॅलि यंच्र यिवान ग्यूर ॥ ४० ॥

व ख़ूँरेज़ी करता हुआ आगे बढ़ता गया और मैदानों को ख़ाली करता गया, जैसे वहाँ कोई जन्मा ही न था। सभी वानर नीचे गिर गये और वे भयातुर हो उठे। यह हाल जब सुग्रीव ने देखा तब उसकी आँखों में रक्त चढ़ आया। उसे क्रोध आया और वह युद्ध करने के लिए दौड़ता हुआ उसके (कुम्भकरण के) सामने गया। वे दोनों ऐसे मिले जैसे अग्नि के साथ वायु। ३५ आकाश में मिट्टी उड़ी और पृथ्वी पत्थर बन गई और जैसे (पृथ्वी को धारण करनेवाले) शेषनाग की पीठ नंगी हो गई। जब दोनों की कमानें टूट गईं और तीर समाप्त हो गये तो दोनों ने शमशीरें निकालीं। दोनों ने एक-दूसरे के वक्तर फाड़ डाले तथा झपटकर एक-दूसरे के गले को पकड़ लिया। कभी एक-दूसरे पर लात मारते; कभी मुक्के। कभी मुँह के बल गिर जाते और कभी पीठ के बल। कभी घोड़े बनकर खड़े हो जाते, कभी (एक-दूसरे का) वदन चबाते और और दोनों के तन ख़ून से लथपथ हो जाते। कभी जानवर (पक्षी) के सामान ऊपर उड़ जाते और चक्कराकर मुँह के बल गिर नीचे जाते। ४० कभी बकरे

गराह कठ सांपुनन जबरूत हावन ।
दिवान दख अख अंकिस कुन कलु छावन ॥
सतन दोहन सतन रांछन कौरुख जंग ।
दितिख पातालु पंच्च आकाशि किन्य ह्यंग ॥
पतव लाकन असुर सांपुन ज़बरदस्त ।
ह्युतुन दारिथ पथर सुगरीव गव पस्त ॥
सपुन बेहोश येलि बुथि किन्य वसिथ प्यव ।
कंरुस कौम्ब कौम्बु करनन ह्यथ तमिस गव ॥
रंटिथ येलि वान्दुरन हुन्द पादशाह न्यून ।
अंगुद हलमुत पतय गंयि याम तिमव च्यून ॥ ४५ ॥

सपुन साथा गंछिथ बेदार सुगरीव ।
वुछुन ह्यथ कौछि वयथ ओसुस च्लान दीव ॥
दंदव सूत्य नस रंटुनस दौन अथन कन ।
कंड़िन तस मूल त्राविन परबथा ज़न ॥
पकन गव रामुचन्दुरस निशि असान ओस ।
सु राख्युस त्युथ कंरिथ लारन पतय गोस ॥
पकन गव रथ छकन येलि वान्दुरव मंज़्य ।
वुछिनि लंग्य तस बुथिस ज़न छिस पैमुत्य पंज़्य ॥

बनकर अपनी शक्ति दिखाने लग जाते और सिर धुनते । इस तरह सात दिनों और सात रातों तक वे जंग करते रहे तथा आकाश व पाताल को उन्होंने एक कर दिया । अन्ततः उस असुर (कुम्भकरण) ने ज़बरदस्ती की और सुग्रीव को नीचे पटक दिया जिससे वह पस्त (हतोत्साह) हो गया । मुँह के बल गिर जाने से वह बेहोश हो गया और कुम्भकरण बाहों में भरकर उसे ले भागा । जब वानरों के बादशाह को वह ले गया तो हनुमान व अंगद उसके पीछे दौड़ पड़े । ४५ कुछ देर के बाद सुग्रीव बेदार हो गया (होश में आ गया) और उसने देखा कि देव (कुम्भकरण) उसे बाहों में भरकर कहीं भगाकर ले जा रहा है । दाँतों से उसने उसकी नाक पकड़ ली तथा दो हाथों से कान और उन्हें समूल उखाड़कर फेंक दिया, जैसे पर्वत फेंके हों । तब वह रामचन्द्रजी के पास लौट आया और वह राक्षस भी उसके पीछे भागता हुआ आया । जब वह रक्त गिराता वानरों के बीच में होकर निकला तो सभी ने उसके मुख को देखा जिस पर जैसे खड्ढे पड़ गये हों । जो कोई उसकी ओर देखता वह ख़ौफ खा

वुछन यिम आंस्य तस कुन तिम छि खोच़ान ।
टुकन वोथ रामुजुव ताम तस च्युतुन कान ।। ५० ।।
सुमीरा ह्युव वंसिथ बुतराच़ प्यठ प्यव ।
फुटुस हन हन तु अंडिजन सोरमु तस गव ।।
ख़बर बूज़िथ तवर ज़न रावनस आय ।
स्यठाह गव आशच़रस छारुनि लोग पाय ।।
स्यठाह लाचार येलि सांपुन सु रावुन ।
गंयस यी बोद दयस ती ओस हावुन ।।
ति येलि बूज़ रावुनन त्युथ ह्युव असुर प्यव ।
सपुन बांबुरि वेगुनु सुत्य शीन व्यगल्यव ।।
सलाह कोंर तंम्य दिलस यथ क्याह छु चारह ।
यि शेछ बूज़िथ गछन छिम पारुह पारह ।। ५५ ।।
अमा कस ह्यकु वंनिथ वुठ छुस बु फेशन ।
पनुन्य गरदन बु छुस पोलाद डेशन ।।
होंखन मोंख छुम दज़ान ज़हराह ख्यवान छुस ।
गंजिम कान राखिसन हुंज़ वेंह ख्यवान छुस ।।
सिलाह सांरी अथव निशि व्यलुरन छिम ।
अंमिस रामुन्य ज़खुम वांलिजि लगन छिम ।।

जाता । तव रामचन्द्रजी तुरन्त उठे और उस पर तीर चलाया । ५० वह सुमेरु की तरह पृथ्वी पर गिर पड़ा और उसका अंग-अंग टूट गया तथा हड्डियों का सुरमा (बुरकुस) वन गया । यह ख़वर सुनकर रावण पर जैसे कुल्हाड़ी का प्रहार हुआ । वह अत्यन्त आश्चर्य करने लगा और कोई उपाय ढूँढने लगा । वह रावण बहुत लाचार हो गया और भगवान् की करनी पर रुष्ट हुआ । जव उसने सुना कि उस (कुम्भकरण) जैसे असुर का पतन हो गया तो वह हड़बड़ाया और विघ्न को आते देख वर्फ़ की तरह गलने लगा । तव उसने दिल में सलाह की कि अव इसमें कोई चारा नहीं रहा । यह ख़वर सुनकर मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े हो रहे है । ५५ अव मैं अपना दुःख भला किससे कहूँ, मेरे होंठ सूखते जा रहे हैं । (फिर भी) मुझे अपनी गर्दन फ़ौलाद जैसी लग रही है । मेरा मुख सूख रहा है और भीतर ही भीतर जहर के घूँट पीकर जल रहा हूँ । राक्षसों का वंश गल रहा है—यह देखकर (दिल में) जहर उमड़ रहा है । हाथों से सभी उपाय निकलते जा रहे हैं और इस राम द्वारा दिये गये

यि लोंदुनम नामु पांगाम सुय में पोलुम ।
डोंलुम कथ शायि कलु सोंनु लांक रांवुम ।। ५९ ।।

महिरावुनस मदद मंगुन

यि रावुन ह्योंत पनुनि बोंज़ नांशिरावुन ।
वनुनि लोंग यी में छुम गोंर महिरावुन ।।
सु छुम लायक तु संगरामस दियम दाय ।
येन्दुरु पदुवी निश तस छम बसन जाय ।। ।।
तमिस सुत्य वांसि हुंज़ छम दोसदारी ।
गछ्‌स बावस पनुन्य अह्‌वाल सारी ।।
वोंथुस गटुकार गुमानन डांजिरोवुय ।
वुछिव पनुने असुरु बोंज़ नांशिरोवुय ।।
तिथय गव तस निशन वोंनुनस यि अहवाल ।
कोंम्बु करनस तिथिस रामन ओंनुन काल ।। ५ ।।
हुकुम तमिसुन्द त्युथुय वावस ति नठ आंस ।
वुछिथ रावुन महाकालस ति नठ आंस ।।
ख़बर छयना सु क्याह सुह ओस ग्रज़ान ।
तसुन्दी बीमु पृथ्वी आंस लरज़ान ।।

ज़ख्म दिल को कचोट रहे हैं। जो उस (राम) ने कहा था वैसा ही होता दिख रहा है। न जाने मेरी मति कहाँ फिर गई जो यह सोने की लंका मुझ से छूटती जा रही है। ५९

महिरावण से मदद माँगना

अपनी ही बुद्धि से जब रावण का नाश होने लगा तो वह कहने लगा कि मेरा गुरु महिरावण (अभी शेष) है। वह (सर्वथा) योग्य है तथा मुझे युद्ध के लिए कुछ उपाय सुझा सकता है। वह इन्द्र की पदवी के समान रहता है। इस तरह अन्धकार में वह (रावण) इधर-उधर हाथ-पाँव मारने लगा और देखिए अपनी ही राक्षसी बुद्धि ने उसका नाश कर दिया। तब वह उस (महिरावण) के पास गया और सारा अहवाल कहा कि उस कुम्भकरण (जैसे वीर) के लिए राम काल ले आया। ५ जिस (रावण) के हुक्म से वायु काँपती थी। जिस रावण को देखकर महाकाल थर्राता था—(उसकी आज यह शोचनीय स्थिति है।) आपको ख़बर ही है कि वह (कुम्भकरण) किस तरह गर्जता था। उसके भय से पृथ्वी काँपती

तसुन्दी मरनु छुम वाराह जिगर रेश ।
गंयम सोंनु लांक हुन्य अंजदर्य् य चुतुम फेश ।।
हनूमानन सों लंका नारु ज़ांजिन ।
दोंयिम तंम्य राखिसन हुंज़ कान गांजिन ।।
संमिथ नेरव तिमन सुत्य योंद करव ज़्याद ।
कथा छा रावुनुन गरु गछि वरबाद ।। १० ।।

त्युथुय कर केंह तिलिसमा युथ हटावुन ।
तगी युथ त्युथ च्रु कर रावुन बचावुन ।।
दोंपुस तंम्य तोरु तस सुत्य चोन छुनु पाय ।
सलाह कर वुनि तिमन सुत्य छोंपु कर माय ।।
यि गव पथ कुन तु तथ मतु तुलतु परखाश ।
महारावुनु करी मा रामु जुव नाश ।।
युथुय वोंनुनस त्युथुय यंच्र आव दर जोश ।
वनुनि लोंग वोंन्य बु करुह ज़हरे हिलाल नोश ।।
त्युथुय जहलस सपुन आतश रोंटुन जेब ।
वनुनि लंग्य नरकुनिशि वोंन नार गव ग़ेव ।। १५ ।।

रंफ़ीक़ा युथ वनुन कर ओस दसतूर ।
रंफ़ीक़ सुय युस रफ़ाक़ंच्र सुत्य सपुनि पूर ।।

थी (वही मर गया!); उसके मरने से मेरा जिगर और छलनी हुआ है । मेरी सोने की लंका समाप्त हो गई, उसे हनुमान ने जला डाला । दूसरा, उसने राक्षसों के वंश को जला डाला । आइए, अब मिलकर उनसे युद्ध करें । वे भला रावण के घर को यों कैसे बर्बाद कर सकते हैं ? १० कोई ऐसा (तिलस्म) जादू कीजिए जिससे वे रास्ते से हट जाएँ तथा जैसे भी हो रावण को बचा लीजिए । तब उस (महिरावण) ने कहा—तुम उनके सामने ठहर नहीं सकते । अब तुम चुपके से उनके साथ सुलह कर लो । जो पीछे हो गया उससे अब वापस रंजिश न बढ़ाओ, क्योंकि वह राम महिरावण तक का नाश कर देगा । जब उसने ऐसा कहा तो (रावण को) जोश आया और कहने लगा कि अब मैं (अभी) जहर खा लूँगा । वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ तथा आग बरसाने लगा, जिससे नरक की अग्नि ग़ायब हो गई । १५ मित्र ऐसा कहे—यह कहाँ का दस्तूर है ? मित्र वह है जो मित्रता का निर्वाह कर समय पर काम आ जाये । तुम्हें क्या ग़म (चिंता) है, तुम अपने पलंग पर बैठे रहो । सारे जहान में लज्जित तो

च्रे क्याह् छुय गाम पलंगस बेह् च्रु पानस ।
खंजिल ज़दुह गछि पगाह् रावुन जहानस ।।
मरुद नामरुद गोख दर वक़्त मरदी ।
लज़ा छयना च्रे श्रावुन खेयि सरदी ।।
मो लाग कमज़ोर पनुन्य मंजलिस गरुम छय ।
ज़िन्दय रावुन ति वुनि वाराह शरुम छय ।।
हनूमाना पहलवाना तिमन छुय ।
तगी योदवय च्रु गोडुनी मारुनुय सुय ।। २० ।।
दिलावारन अन्दर ड्यूठुम दिलावार ।
दिलावारी किनी असुरन दितुन मार ।।
न बोडवुन पानि न दज़ुवुन छु नारह् ।
न होखुवुन तापु न मरुवुन हंथ्यारह ।।
त्रहरवुन मा दनुरडण्ड छुस गिरांबार ।
सिपाहन फ़ोजदारन हुन्द छु सालार ।।
शनाई राम सुय आथम बन्योमुत ।
शरीरस रामु लंखिमन तस सन्योमुत ।।
कलमु सूतिन लीखिथ गोमुत दर्म छुस ।
करुम छुस रामु लंखिमन बोड़ सरुम छुस ।। २५ ।।
सिलाह सोरुय दिमय सूतिन योदस नेर ।
मंकर केंह तार टुकन साना पनुन्य शेर ।।

रावण होगा। मर्द होकर भी तुम ऐन मौक़े पर नामर्द बन गये। श्रावण में ही मुझे सर्दी खा जाए, क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा? तुम कमज़ोर न बनो। अभी बहुत कुछ शेष है। अभी रावण भी ज़िन्दा है। तुम चिन्ता न करो। उनके साथ हनुमान नाम का एक पहलवान है। यदि तुम उसको सबसे पहले मार सको (तो मैदान हमारे हाथ है)। २० वह दिलावरों में दिलावर मुझे दीखा। अपनी दिलावरी से उसने (असंख्य) राक्षसों को मार डाला। वह न पानी में डूबता है और न अग्नि में जलता है। न वह ताप से सूखता है और न हथियार से मरता है। उसके साथ त्रस्त करनेवाला धनुर्दण्ड के समान एक भारी शस्त्र रहता है और वह सिपाहियों व फ़ौजियों का सिपाहसालार है। उसकी आत्मा राममय हो गई है और उसके शरीर में राम-लक्ष्मण सने हुए हैं। धर्मराज अपनी क़लम से राम-लक्ष्मण का कर्म उस पर लिख गये हैं। २५ मैं तुम्हें सारे सामान साथ दे दूँगा। तुम बस

महा बहादुर महा बलवान सांना चार ।
रथन वेंशि वौलंग तुल सपदि नाचार ॥
च्रु शेरस ताज लाग राजुत छु चोनुय ।
च्रु दिख सम्पात तिमन ताजुथ छु चोनुय ॥
गंडिव जबु जामु वुन्य नेरव यौंदस जूद ।
ख़बर शहरस सपुन्य रावुन नशा मूद ॥
तबल वांयिव छे बलवान सान्य लशकर ।
पकव बुतराथ च्रटन सांरी बराबर ॥ ३० ॥

अराबा त्युथ करव युथ कांपि आकाश ।
महे रावुनु नतह रावुनस सपुनि नाश ॥
तुलव तीरव सुतिन आकाश तोंत ताम ।
च्रलन तिम युथ वनन खेंनि आयि कम ताम ॥
अंनीखा फ़ोज ह्यथ डेशन तिम यामथ ।
मजाल छा तोंत ह्यकन यिथ पथ च्रलन पथ ॥
यि शेछ बूज़िथ वनुनि लोंग महिरावुन ।
ख़ोंशी कर रावुनो यौंद छुनु थावुन ॥
छु क्याह दौरलब तिथ्यन मनुशन सुत्यन यौंद ।
कुनुय अथु छुख स्यठाह कंम्य रावुरुय बौंद ॥ ३५ ॥

युद्ध के लिए निकल पड़ो । देर न कर जल्दी से अपनी सेना तैयार करो । अत्यन्त बहादुर व बलवान सेनापति की तरह तू तूफ़ान पैदा कर । तू अपने सिर पर ताज लगा, यह राज्य तेरा ही है । तू उन सब को मिटा दे, यह ताजोतख्त भी तेरा ही है । अस्त्र-शस्त्र सम्भालकर तू मेरे साथ अभी युद्ध को निकल, ताकि शहरवाले जान जाएँ की रावण अभी मरा नहीं है । तबला बजाओ (ढिंढोरा पीटो) कि हमारा लशकर बलवान है । जब हम निकल पड़ेंगे तो पृथ्वी हिल उठेगी । ३० हमारा रथ ऐसा होगा कि आकाश काँप उठेगा। हे महिरावण! अन्यथा रावण का नाश हो जायेगा । हम तीरों पर आकाश को तब तक उठा लेंगे जब तक कि वे यह कहते हुए डरकर भाग न जाएँ कि कोई हमें खाने को आ रहे हैं । जब (हमारी) असंख्य फ़ौज को वे देखेंगे तो क्या मजाल कि वे सामने आएँ । वे पीछे भाग जाएँगे, पीछे ! यह बात सुनकर महिरावण कहने लगा—हे रावण ! तू खुश हो जा । युद्ध ज़्यादा देर तक नहीं चलेगा । उन मनुष्यों से युद्ध करना कोई कठिन (दुर्लभ) नहीं है । उनके लिए (मेरा) एक हाथ ही काफ़ी है ।

तिमन हिह्य सासु बंद्य छिम आच्रुमना ।
हृदय हावय न्यंगुलमुत छुम जहाना ।।
वनुनि लोंग वोन्य करख बरबाद सोरुय ।
वुछिथ मोंख म्योन छुनन तिम पानु मोरुय ।।
महारावनु च्रु फ़ुरसथ करतु रातस ।
गछी मालूम पगाह सुबहस प्रबातस ।।
मं बोंड वेंगनन अन्दर कवु छुख ख्यवन वेंह ।
च्रु गछ राजुत करुनि लंकायि प्यठ बेंह ।।
वतन तंहंज़न ज़मीनस च्रुह दिमखना ।
यियम युस ब्रोंठ तस तति रथ चमख ना ।। ४० ।।

खेंलिस मंज़ बाग पादर सुह दोरख ।
मजाल छा कांह कुने अदु ज़िन्दु छोरख ।।
पकुनु म्याने बुन्युल सपन्यख जहानस ।
चिकार क्याह र्‌यय छि अंज्रदरुहनिस दहानस ।।
च्रें क्याह छुय ग़म च्रु पानस बेंह खोंशी सुत्य ।
दिमख शबख़ूं करख यिरुह रतस सुत्य ।।
त्युथुय नेरव योंदस जबरूत हावव ।
जहानस आलमस मंज़ नाव थावव ।।

तू मतिभ्रष्ट क्यों हो रहा है ? ३५ उन जैसे हज़ारों मेरे लिए आचमन के बराबर हैं, तू मेरे हृदय (पेट) को देख, मैंने जहान भर को निगल डाला है। वह कहने लगा कि अब मैं उनका सब कुछ बर्बाद कर डालूँगा और मेरा मुख देखते ही वे स्वयं अपने आपको मार डालेगे। हे महारावण! तुम बस रात भर के लिए और इन्तज़ार करो। कल सुबह (प्रात:काल) को तुम्हें सब कुछ मालूम हो जायेगा। तू चिन्ताओं में डूबकर ज़हर न खा। तू जा और राज्य करने के लिए लंका के सिंहासन पर बैठ। (वे जिन मार्गों से आएँगे) उन मार्गों की ज़मीन को मैं चूस लूँगा और जो कोई सामने आयेगा उसका रक्त पी लूँगा। ४० उनकी भेड़ों के झुण्ड-रूपी सेना में मैं बवर शेर की तरह दौड़ पड़ूँगा। मजाल है कि फिर किसी को ज़िन्दा छोड़ूँ। मेरे चलने से जहान में भूकंप आयेगा। अज़्दहा के मुँह के सामने भला चींटी की क्या बिसात ? तुझे किस बात का ग़म है, तू ख़ुशी से यहाँ बैठ। रात को उनपर अचानक आक्रमण कर मैं उन्हें काटकर रक्त में बहा दूँगा। युद्ध में हम वीरता दिखाएँगे तथा अपना नाम रखेंगे। हम करोड़ों और अरबों की संख्या

करोर तुह अब्दु वंद्य नेरव सवारह ।
वसुम सपन्यख सिपाहन अकि इशारह ॥ ४५ ॥
गोंडन्य यिम पादशाह छिख तिम ज़ु बालख ।
सहलु पांठिन तिलिसमु सूत्य सम्बालख ॥
ख्यमख सांना चमख रथ यम प्यमख ज़न ।
पगाह डेशख कुनी तति रामु लंखिमन ॥
त्युतुय बूज़िथ सु रावुन लांकि प्यठ गव ।
महि रावुन तंमिस पतु कोर कुन गव ॥
अंनिन तदबीर दान दोंपनख दियिव राय ।
सपुन रावुन गिरिफ़्तार क्याह छु यथ पाय ॥
कंरिव तदबीर केंछाह ठीकुरांविव ।
स्यहर या बाज़्य या तदबीर हांविव ॥ ५० ॥
नतय रावुन मंरिथ गछि छुस बु खोच़न ।
महि रावुन पतव कर अदुह छु रोज़न ॥
तबल वांयिव त्युथुय नेरव अराबस ।
अनव मदहंसत्य हुकुम सोज़व शराबस ॥
तिमव वोंनहस वुन्यक्यन योंद करव नह ।
योंदस वशि ख़बर तति मा दरव नह ॥

में निकलेंगे तथा उनके सिपाहियों को एक इशारे से भस्म कर डालेंगे। ४५ सर्वप्रथम जो उनके राजा हैं, उन दो बालकों (राम व लक्ष्मण) को तिलस्म (माया) से सम्भाल लूँगा। उनकी सेना को खा डालूँगा और जो भी आगे आयेगा उसका रक्त पी डालूँगा। कल तू राम-लक्ष्मण को भी न देखेगा। यह सुनकर वह रावण लंका में गया और उसके पीछे महिरावण भी चला गया। तब उस (महिरावण) ने अपने सलाहकारों को राय देने के लिए बुलाया और कहा कि रावण कठिनाई में गिरफ़्तार हो गया है, उसके लिए कोई उपाय बताओ, कोई तदबीर बताओ। (सिह्र) माया, बाज़ीगरी या कोई तदबीर बताओ। ५० मैं डर रहा हूँ कि अगर रावण मर गया तो फिर महिरावण ज़िन्दा रहकर क्या करेगा। तबला बजाओ और हम रथों पर सवार होकर निकल जाएँ। मदमस्त हाथियों को बुलाएँ और शराब के लिए हुक्म (आदेश) भेजें। तब उन्होंने (सलाहकारों ने) कहा कि इस समय हम युद्ध न करेंगे, क्योंकि लगता है कि हम युद्ध में टिक न सकेंगे। हे महिरावण! राम से युद्ध करना सरल नहीं है। यदि आप

महि रावुनु रामुन योंद छुनह गुफ़्त ।
सलाह योंदवय छु कॉली हुंद करव ज़फ ।।
अंनिख ब्रह्मण तु सोंम्बरॉविख पंडित ज़न ।
मनुश हुमुनस लगी अख रामु लंखिमन ।। ५५ ।।

च्रु कर फ़ुरसथ ज़पुक हंगामु लागव ।
संहल पॉठ्य पादशाहन च्रूरि ज़ागव ।।
ह्यसस रोज़न नु यामथ वाति अड़राथ ।
नखस क्यथ तिम गछ़न वालुन्य ब यकसाथ ।।
शोंगिथ तिम बर संगि मर मर छि आसन ।
कंरिव गफ़लत तिमन आमन तु खासन ।।
तिछ्युय बाज़्याह कंरिव गॉफ़िल बनाव्यूख ।
गछ़न बे ह्यस तु नेन्दुरा मस्त पॉव्यूख ।। ५९ ।।

रामु लंख्यमन च्रूरि निन्य

कंरुख मुक़रर यिहय कथ आयि ब्रह्मन ।
निशे तस रामु च्रन्दुरस गव वेंवीशन ।।
शरन सॉंपुन तु वंनिनस सॉर्य कारन ।
महि रावुन तु रावुन वाज़्य छ़ारन ।।

सलाह दे तो सभी मिलकर काली माता का जाप करें। तब ब्राह्मणों को बुलाया गया और पण्डितजनों को एकत्र किया गया। नर-बलि देने के लिए राम-लक्ष्मण उचित पात्र ठहराये गये। ५५ (सलाहकारों ने कहा—) आप धैर्य रखे। अभी जाप का हंगामा शुरू कर देंगे और फिर सुगमता से उन दो वादशाहों (राम-लक्ष्मण) को चोरी उड़ा लाएँगे। रात को (वे दोनो) नींद में होंगे तो कन्धे पर उन्हें उठाकर एक-साथ ले आना चाहिए। वे संगेमरमर के फ़र्श पर सोते है (उनके बाहर सुरक्षा के पर्याप्त साधन रहते है) आप उन रक्षकों को किसी तरह गफ़लत में डाल दें (चकमा दें)। आप कोई ऐसी वाजीगरी दिखाएँ कि वे गाफ़िल बन जाएँ तथा नींद में मस्त होकर बेहोश हो जाएँ। ५९

राम-लक्ष्मण को चोरी ले जाना

यह वात मुक़र्रर कर ब्राह्मणों को बुलाया गया। और इधर, रामचन्द्रजी के पास विभीषण गये और शरण में जाकर कहने लगे कि महिरावण और रावण बाजीगरी करनेवाले हैं। सन्ध्या समय से लेकर

सन्ध्या समुये प्यठय तामथ प्रबातस ।
ख़बरदारी करुन्य गछि रात्य रातस ॥
सिपाहन हुन्द गंडिव अन्द्य अन्द्य पलाटन ।
महाराजा पलाटन दर पलाटन ॥
युतुय बूज़िथ ति हनुमत मंगुनोवुन ।
सिपाहन सारिनुय सालार थोवुन ॥ ५ ॥
हुकुम सांपुन युथुय रूज़िव ख़बरदार ।
ख़बरदार रात्यरातस रोज़ि बेदार ॥
त्युथुय तंम्य हनुमतन अन्द्य अन्द्य गोंडुन गेर ।
वनुनि लोंग रामचन्दुरुन हुकुम छुम शेर ॥
दयूगत वुछ तिमन सारिन्य नेन्दुर पेय ।
महि रावुनस तमी बहानु गव ख्यय ॥
करुन छुस पानु नाहक़ हान खारन ।
यि मा छुय समुयि पुछ्य बहानु छारन ॥
छु पानय बुलबुल व गुलज़ार पानय ।
छु पानय सोंबुल व सबज़ार पानय ॥ १० ॥
छु पानय सिरियि तेज़ पानय छु न्यरमल ।
छु पानय लछ करोर पानय छु कीवल ॥
छु पानय दय ब्रह्मा वेशन छु पानय ।
छु पानय श्री कृष्ण श्री राम पानय ॥

प्रभातागमन तक हमें रात भर ख़बरदार रहना चाहिए । सिपाहियों का चारों ओर से एक मोर्चा बाँध लेना चाहिए और इस मोर्चे के बाहर एक दूसरा मोर्चा तैयार करना चाहिए । यह सुनकर उन्होने हनुमान को मंगवाया (बुलवाया) और उसे सभी सिपाहियों का सिपाहसालार नियत किया । ५ उन्हें यह हुक्म दिया कि रातभर ख़बरदार रहना तथा जागते रहना । तब उस हनुमान ने चारों ओर से एक दीवार बनाई और कहने लगा कि रामचन्द्रजी का हुक्म सिर पर है । दैवगति देखिए कि उन सभी को नींद आ गई और महिरावण को क्षय (नष्ट) होने का बहाना मिल गया । भगवान् करते तो सब कुछ स्वयं है और दूसरों को यों ही दोषी बना देते हैं । वे दरअसल, समय के अनुसार बहाने ढूँढते हैं । वे स्वयं बुलबुल और स्वयं ही सब्जज़ार हैं । १० स्वयं ही तेजपूर्ण है और स्वयं ही निर्मल भी हैं । स्वयं ही लाख-करोड़ हैं और स्वयं ही

छु पानय यात्रा पानय दीवीदार ।
छु पानय दीवुह् रूफ बंविनस नमस्कार ।।
छु पानय पानु दय आसन बहानह ।
न्यराकारन थोंवुन आकार निशानह ।।
मुडो सथ ज़ान त्रन तारन ज़गुच सुय ।
ज़रस ज़ेरस शरीरस छुय प्रकंत्र सुय ।। १५ ।।

ज़गत रखिपाल छुय वोंपुकार तंम्यसुन्द ।
शेंरीर म्योनुय यि छुय प्रकाश तंम्यसुन्द ।।
नरायन दोंन अंछन मंज़ गाश चोनुय ।
नरायन आश छम प्रकाश चोनुय ।।
महि रावुन यि वुछतन क्याह् कों बुनियाद ।
बराबर अरदु रातन प्यव तंमिस याद ।।
सु दयत येंलि पनुनि मंजलिसि मंज़ु न्यबर द्राव ।
यंन्दुरु पदुवी तु यंन्दुराज़स बुन्युल आव ।।
छ्यपुनि यंन्दराज़ु लोंग यामत सु खोंत ह्योंर ।
सपुन ग़रकि अरक यंत्र आस ज़न ग्यूर ।। २० ।।

सपुन असतस सिरियि चंन्दुरमु यि क्याह् गव ।
महि रावुन खंसिथ दरथियि प्यठ प्यव ।।

केवल भी हैं। स्वयं दैव, ब्रह्मा और विष्णु हैं और स्वयं ही श्रीकृष्ण व श्रीराम हैं। स्वयं यात्रा व स्वयं देवी-द्वार (तीर्थ) हैं। स्वयं देवता स्वरूप हैं, उनको नमस्कार हो। भगवान् स्वयं हर चीज़ के निमित्त होते है और निराकार में आकार का रूप भरते हैं। रे मूर्ख ! तू यह सत्य जान कि तीनों भुवनों में वही है और प्रत्येक जड़ व चेतन की प्रकृति में वही व्याप्त है। १५ वह जगत् की रक्षा करनेवाला उपकारी है। यह शरीर मेरा है, मगर (उसमें दिखाई देनेवाला) प्रकाश उसका है। हे नारायण ! इन दो खिड़की-रूपी आँखों में तुम्हारी ही ज्योति है। हे नारायण ! मुझे आपके ही प्रकाश का आसरा है। तब महिरावण को आधी रात को (अपना काम) याद आया और वह दैत्य अपनी मजलिस (अपने स्थान) से वाहर निकला, जिससे इन्द्र का सिंहासन व स्वयं इन्द्र हिल उठा (भूकंप आ गया)। जैसे ही (महिरावण पाताल से) ऊपर आया तो राजा इन्द्र छिपने लग गया और पसीने से तर होकर चकराने लगा। २० सूर्य और चन्द्रमा अस्त होने लगे और कहने लगे कि यह क्या हो गया जो महिरावण

सितारह पेयि वंसिथ ज़न जूनि लोंग ग्राह ।
महि रावुन गंछिन नाशस छु बदख़ाह ।।
मुदा तोंत घोत शोंगिथ डीठुन स सांना ।
वनुनि लोंग रावुनन बेंयि लंब सों लंका ।।
सपुन यंच्र ख़ोंश तु आकाशस तुजिन छाल ।
अंछिन मंज़बाग तुलिन नेंतरन हुन्दी लाल ।।
तुलिन असतह दपान जुसतह वंथिथ गव ।
वंथिथ गव जायि पनुने प्यठ टुकन गव ।। २५ ।।

थंविन तिम वारुह पांठिन आसुनस प्यठ ।
वनुनि लोंग यिम ज़ु छिम ख़ुरकासुनस प्यठ ।।
सपुन साथा गंछिथ बेदार वेंबीशन ।
वुछिनि लोंग ब्रोंठुह पतु कति रामु लंखिमन ।।
वुछिन सेना सों गांसुच्र मस्त मदहोश ।
वनुनि लोंग वुन्य बु करुह ज़हरे हिलाल नोश ।।
जिगंरस रेंह लंजिस दज़ुवुनि लशि सूत्य ।
में दोंप गव नार छ्यतु नरकस अशि सूत्य ।।
च्युतुन शेंखा सपुन्य बेदार सेना ।
शब्द बूज़िथ तु रूज़िथ गंयि ब यक पा ।। ३० ।।

धरती पर आ गया । सितारे टूटने लगे और चन्द्रमा को ग्रहण लग गया । (सभी कहने लगे) महिरावण का नाश हो, वह वदख्वाह (बुरा चाहनेवाला) है । इस तरह वह वहाँ (जहाँ राम-लक्ष्मण आदि थे) पहुँचा तथा सेना को नींद में पाया । वह कहने लगा कि अब रावण को वह लंका वापस मिल गई । वह अत्यन्त ख़ुश होकर आँखों के बीच में से पुतलियों की तरह उन दो (राम-लक्ष्मण) को उठाकर ले उड़ा । उन दो को उसने धीरे से उठाया और अपने स्थान की ओर दौड़ता हुआ गया । २५ उन्हें उसने सम्भालकर आसन पर रखा और कहने लगा कि अब इन्हीं से हमारी सारी दुविधाएँ दूर हो जाएँगी । थोड़ी देर के बाद जब विभीषण वेदार हो गया तो आगे-पीछे देखने लगा कि राम-लक्ष्मण कहाँ चले गए । उसने देखा कि सेना मस्त-मदहोश हो गई है । तब वह कहने लगा कि अब मैं ज़हर पी लूँगा । उसका जिगर जलने लगा और उसके आँसुओं से नरक की अग्नि बुझ गई । उसने शंख बजाया जिससे सेना वेदार हो गई । शंख-ध्वनि सुनकर (जब सेना जागी) तो सभी

वुछिनि लंग्य अख अंकिस कुन पानु वांनी ।
ख्यवन अफ़सूस कौंत गंयि वीर सांनी ।। ३१ ।।

सांरी छि वदान तु व्यलाप करान

हरुनि लंग्य वावुह पोंह्य पन,
कौंत गंयि रामु लंखिमन ।
बरूनख सीनुह लोलन,
रुमु रुमु रामु बोलन ।
नून ज़न प्योख ज़खमन,
कौंतू गव रामु लंखिमन ।। १ ।।
सीनस वौंन्य दितुख चाख,
पानस लंग्य मथुनि खाक ।
पान मारान वेंबीशन,
कौंतू गंयि रामु लंखिमन ।। २ ।।
सारिवुय ह्यौतुख रीवुन,
लोल आव रामु जुवुन ।
पापु दशि सुत्य लौंग छ्यन,
कौंतू गंयि रामु लंखिमन ।। ३ ।।
बेंयि दियिना सु दरशुन,
अमुर्यतु शौंबु वरशुन ।

हक्का-बक्का रह गए । ३० सभी एक-दूसरे की ओर देखने लगे और अफ़सोस करने लगे कि हमारे (दो) वीर कहाँ चले गये । ३१

सभी रोते और विलाप करते है

सभी सूख गए, जैसे पतझर में पत्ते सूख जाते हैं; (और कहने लगे) जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गए ? उनके सीने (हृदय) में (राम का) प्रेम उमड़ आया तथा उनका रोम-रोम राम बोलने लगा—जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गये । १ उन्होने सीना चाक कर डाला और शरीर पर खाक मलने लगे । विभीषण शरीर (सिर) पीटने लगा—जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गये ? २ सभी रोने लगे और सभी में रामचन्द्रजी का प्रेम उमड़ आया । जाने किस पाप के कारण यह बिछोह हो गया—जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गये ? ३ जाने वे कब पुनः मिलेंगे

वुछान लंज्य जून चेंशमन,
कोंतू गंयि रामु लंखिमन ।। ४ ।।
बावु किन्य आंस्य छारान,
नेंतरव खून हारान ।
फ़िराक़ह जून छि गलन,
कोंतू गंयि रामु लंखिमन ।। ५ ।।
गंलुनि लंग्य लोलु सूती,
अलुनि लंग्य होलु सूती ।
अंगुद सुगरीव ज़ोमूवन,
कोंतू गंयि रामु लंखिमन ।। ६ ।।
वांलिजि गंयख पारह,
बेंयि यिन ना दुबारह ।
शेंछि प्रुछान कावन,
कोंतू गंयि रामु लंखिमन ।। ७ ।।
प्रंयमु पुछि लंज्य रुमन र्‌यय,
दरशुन हाविना दय ।
सिरी छारोन प्रबातन,
कोंतू गंयि रामु लंखिमन ।। ८ ।।
गटि मंजु दूफ छु प्रज़ुलन,
रामु ज़ुव बेंयि लंखिमन ।

तथा अमृत की शुभ वर्षा करेंगे ? (उनकी राह देखते-देखते) आँखों में झाँई आ गई—जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गये ? ४ आर्द्र भाव से (प्रेमार्द्र होकर) वे उन्हें ढूँढने लगे और नेत्रों से खून बहाने लगे। इस जुदाई में चन्द्रमा भी गलने लगा—जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गये ? ५ सभी बिछोह में गलने गगे। निराशा में अंगद, सुग्रीव व जाम्ववान् भी काँपने लग गए—जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गये ? ६ सभी के हृदयों के टुकड़े-टुकड़े हो गए (और कहने लगे) क्या अब वे दुबारा नहीं आयेंगे। (सभी) कौवों से समाचार पूछने लगे—जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गये ? ७ बिछोह में उनका रोम-रोम सिहर उठा। काश ! हमारे भगवान् (राम) हमें दर्शन देते। प्रभात तक हम अपने सूर्य (राम) को ढूँढ लेंगे—जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गये ? ८

प्रकाश ती छु यछ्न,
कोंतू गंयि रामु लंखिमन ।। ९ ।।

सारुय सेना छि पानस हंत्रर लदान तु वदान

सपुन्य शरमंदुह हंत्रर पानस लदुनि लंग्य ।
शरन गंयि रामुचन्दुरस यंत्र वदुनि लंग्य ।।
रतस माज़स लंजिख सुसर रुमन र्‌यय ।
संमिथ सारी बलावीरी निश प्यय ।।
मोंहा हलुमुत तिमन मंज़ ओस बलुवान ।
सपुन तस दीदुह गिरयान सीनु बिर्‌ययान ।।
सांपुनुक त्रस वदुनि येलि लोंग हनूमान ।
अशे वाने सपुन नंदियन ति अवमान ।।
त्युथुय हाला वुछिथ दीवन ति त्रस गव ।
सिरियि शीतल ति तमि रफ़तारुह निशि प्यव ।। ५ ।।

संमिथ सार्‌यन दोंदुख नारुह बदन ज़न ।
थुपुर आयख वदन अंछ दाद्‌य लद ज़न ।।
खत्रख यमु जालु ज़न यिछु ह्योंतुख कांपुन ।
वज़ारी आयि सारी हलुमुतस कुन ।।

अन्धकार में जिस प्रकार दीप जलता (प्रज्वलित) होता है उसी प्रकार राम-लक्ष्मण भी (कहीं) प्रज्वलित हो रहे है । 'प्रकाश' भी यही चाहता है—जाने हमारे राम-लक्ष्मण कहाँ चले गये ? ९

सारी सेना का अपने ऊपर दोष लादना व रोना

(सेना) शर्मिन्दा हो गई तथा अपने ऊपर दोष लादने लगी और ख़ूब रोकर रामचन्द्रजी की शरण में गई । उनका रक्त व मांस रोमांचित हो गया और रोम-रोम सिहर उठा । सभी अपनी बल-वीरता भूल गए । उनमें जो हनुमान बलवीर था उसकी नज़रें झुक गई और सीना फटने लगा । जब हनुमान रोने लगा तो सभी बिलख पड़े और आँसुओं की धार देखकर नदियाँ भी शर्मा गई । यह हाल देखकर दैत्य भी पिघल गए और सूर्य शीतल बन गया व अपनी रफ़्तार भूल गया । ५ सभी के बदन मिल कर जैसे अग्नि में जल उठे । सभी की आँखें रो-रोकर बीमारों की-सी हो गई । सभी के (शरीरों से) जैसे मृत्यु की कँपकँपी छूटने लगी और

वोन्दस वेशह् स्यठाह् तिम आंस्य ग़मगीन ।
शरन सांपुन्य हनूमानस सपुन्य लीन ।।
महाराजा ज़्‌ रछ पनुन्यन परन तल ।
छु चानी काम गछि हावुन पनुन बल ।।
मु वोड ख्यूवन अन्दर वोथ नेर ज़लथ त्राव ।
बलावीरो बलावीरी पनुन्य हाव ।। १० ।।

यि क्याह् गव रामु लंखिमन दूर सांपुन ।
जिगरस दंदिमुतिस क्यथु सूर सांपुन ।।
च़टुख सीनुह् रंटिख तस हलुमुतुन्य पाद ।
च़ु छांडुन रामु लंखिमन दाद व बेदाद ।।
वनुनि लग्य हलुमुतस कुन थाव असि कन ।
मंगन छी दयि निमित अंस्य रामु लंखिमन ।।
जिगर दोदमुत कन्यन प्यठ ज़न दिवन फेश ।
यछान दरशुन मंगान छी त्रेशि ह्त्य त्रेश ।।
छि होंखिमुत्य अंस्य गंमुत्य लव तशनु सांरी ।
मंगान छी रामु लंखिमन अंस्य वज़ारी ।। १५ ।।

कंरुख आंही दोपुख रामुन लंगिन राज ।
शे खंडह दीव महा रेंशन छि तिम ताज ।।

सभी हनुमान के पास विनती करने के लिए आ गए । उन सभी का दिल अत्यन्त ग़मगीन था और सभी हनुमान की शरण में आकर लीन हो गए । हे महाराज! आप (हम) सबकी अपने पंखों तले रक्षा कीजिए । यह (अब) आपका ही काम है, आपको अपना बल दिखाना चाहिए । आप सोच में न पड़ें और उठकर आलस्य त्याग दें । हे बलवीर ! अपनी बल वीरता दिखाइए । १० यह क्या हो गया जो राम-लक्ष्मण (हम से) दूर हो गए और हमारे जिगर को जलाकर राख कर गए । सभी ने अपने सीने फाड़ डाले और हनुमान के पाद पकड़कर कहने लगे कि आप राम-लक्ष्मण को कहीं से भी ढूँढकर ले आइए । वे हनुमान से कहने लगे कि आप ज़रा कान धरकर सुनिए—हम तो भगवान् के नाम पर बस राम-लक्ष्मण को माँगते है । उन सभी के जिगर जल गए और पत्थरों को (जीभ से) चाटने लगे । उन प्यासों को बस (राम-लक्ष्मण के) दर्शनों की चाह थी । उन सभी के मुँह सूख गए थे और होंठ ऐंठ गए थे तथा सभी विलाप करते हुए राम-लक्ष्मण की इच्छा प्रकट कर रहे थे । १५ सभी ने (मिलकर)

त्युथुय बूज़िथ वदुनि लोंग तां हनूमान ।
च्रोंटुन जिगर ज़मीनस प्यठ मोंथुन पान ।।
वनुनि लोंग वीलुह ज़ार तस कुन दिच्रुन तन ।
हरुनि लोंग ओंश सोंरुनि लोंग रामु लंखिमन ।। १८ ।।

हनूमानु सुंज़ वीलुज़ारी

वोंदय सांपुन हृदय फोंलुनाव ।
रामु लंखिमनु शोंबु दरशुन हाव ।।
दयासागरुह छुय दयावानो,
शामु रूपुह रामु च्रन्दुरु नारानो ।
च्ररनन तल रछ परवन पोन्य त्राव,
रामु लंखिमनु शोंबु दरशुन हाव ।। १ ।।
अंस्य छी आंरुत्य करान वीलुज़ार,
कंल्य गंयि बोलुवुन्य जानावार ।
सथ मंगलु सुत्य असि ति वारुह बोलुनाव,
रामु लंखिमनु शोंबु दरशुन हाव ।। २ ।।

प्रार्थना की और कहा—रामचन्द्रजी का राज (सर्वव्यापी) हो क्योंकि छहों खण्डों के वे देवता और महर्षियों के वे ताज हैं। ऐसा सुनते ही हनुमान रोने लगा और जिगर फाड़कर ज़मीन पर लोट गया। वह अपने मन का दुख-दर्द कहने लगा और राम-लक्ष्मण का स्मरणकर (आँखों से) आँसू बहाने लगा। १८

हनुमान का विलाप

आप उदित हों और हमारे हृदय को खिला दें—हे राम-लक्ष्मण! हमें अपना शुभ-दर्शन दीजिए। हे दया के सागर! आप दयावान हैं। श्याम रूप में नारायण के (अवतार) आप ही हैं। अपने चरणों में (आश्रय देकर हमारी) रक्षा कीजिए और पानी टपकाकर (हमारी प्यास बुझाइए)—हे राम-लक्ष्मण! हमें अपना शुभ दर्शन दीजिए। १ हम सभी भक्त विलाप कर रहे हैं। चहचहाते पक्षी भी (आपके वियोग में) गूंगे हो गये हैं। अपने प्रताप से उनके साथ-साथ हमें भी बुलवाइए—हे राम-लक्ष्मण! हमें अपना शुभ दर्शन दीजिए। २ हम भक्त (आपकी शरण में) आए हैं, हमारे क्लेश दूर कर दीजिए। हम सब आपके पैरों के दास हैं। हम दासों पर दया कीजिए तथा यह दुःख हमें और न भुगतवाइए—

आरुत्य अंस्य आयि आरछ़र सोन कास,
सपुन्य अंस्य चानि खौरु तलुकी दास ।
दासन पास कर क्रेछर मु बूगुनाव,
रामु लंखिमनु शौबु दरशुन हाव ॥ ३ ॥

दरथी तु वरथी सर्वस्रेष्ट चानी,
आकाशि वंछ दीवु दृष्ट चानी ।
ओसुख च्रुय असि चोनुय चिकुचाव,
रामुलंखिमनु शौबु दरशुन हाव ॥ ४ ॥

यौदु कामुनायि यियि रावुन फ़ोज ह्यथ,
राख्यस यिन विह्य दारिथ कुत्य ।
तारुवुन च्रुय छुख यथ नंदियि वौलंगाव,
रामुलंखिमनु शौवु दरशुन हाव ॥ ५ ॥

गव शरन लौग वनुनि हलुमुत त्युथ ग्यान,
बावु सुत्य टोठ्योस श्री नारान ।
ना हक़ जन्मु पुछ्य हलुमुत मंदुछाव,
रामुलंखिमनु शौवु दरशुन हाव ॥ ६ ॥

नोंन नेर समुयस रावनस गछ़ि नाश,
आश छम गाशि प्रारुह फौलि प्रकाश ।

हे राम-लक्ष्मण ! हमें अपना शुभ दर्शन दीजिए । ३ यह धरती और पाताल सब आपके ही सर्वश्रेष्ठ परिणाम हैं । आकाश से उनरने वाली दैव-दृष्टि भी आपकी ही है । हमारे तो बस आप ही एक थे और हम आप (के ही भरोसे) पर कूदते-फाँदते थे—हे राम-लक्ष्मण ! हमें अपना शुभ दर्शन दीजिए । ४ युद्ध की कामना से अव रावण (पुनः) फ़ौज लेकर आयेगा और कितने ही राक्षस भेष बदलकर मुकावले के लिए आयेंगे । आप ही तो इस नदी से तारनेवाले हैं, अतः हमें उल्लंघवाइए—हे राम-लक्ष्मण ! हमें अपना शुभ दर्शन दीजिए । ५ (इस प्रकार राम-लक्ष्मण की) शरण में जाकर हनुमान ऐसी-ऐसी ज्ञान की बातें करने लगा जिससे उसकी भक्ति पर श्रीनारायण प्रसन्न हो गये । नाहक़ ही हनुमान अपने जन्म को लजाने लगा था (चिंतित होने लगा था)—हे राम-लक्ष्मण ! हमें अपना शुभ दर्शन दीजिए । ६ (नारायण ने कहा—) तू समय को पीछे छोड़कर आगे निकल जा, तभी रावण का नाश होगा । मुझे पूर्ण आशा है और मैं प्रतीक्षा करूँगा कि प्रकाश पुनः फूटे । आईने की ज़ंग दूर हो

व्रलि खय आंयीनस अमुर्यत ज़ल चाव,
रामुलंखिमनु शोंबु दरशुन हाव ।। ७ ।।

हलुमुत छु वदान

वदुनि हलुमुत लोंग अशि कनि होंरुन खून ।
नरायनु चोन दूर्यर छुम छोंकस नून ।।
सिरी रूपुह व्रु साथा हावतम पान ।
शोंबु दरुशनु सूत्य शोंद गछि हनूमान ।।
व्रु हाव दरशुन फुलय लगि जेठु पोशन ।
संगरमालन तु बालन अंद गोशन ।।
बसंत यैलि आव हार्यन गोंल वंदुक मल ।
फोंलिथ यिन मस्त दपन शीनस व्रु पथ व्रल ।।
यियख यावुन तु श्रावुन मुशक त्रावन ।
मुशकु सूत्य सूत्य बदन अदुह फोंलु नावन ।। ५ ।।
बहांदुर प्यथ छुहक व्रय खीरु सागुर ।
दुवत्राह वोंपुनिशदन हुंद व्रु आगुर ।।
प्रयिमु अमुर्यतु बोंरनख सीनुह लोलन ।
अशोव्रुक मोंख वुछिथ शोलन तु बोलन ।।

जायेगी और अमृत-जल का सभी पान करेंगे--हे राम-लक्ष्मण ! हमें अपना शुभ दर्शन दीजिए । ७

हनुमान का विलाप (क्रमशः)

इस प्रकार हनुमान रोने लगा और आँसुओं के बदले ख़ून बहाने लगा —हे नारायण ! आपकी दूरी मेरे लिए जख़्मों पर नमक छिड़कने के समान है । हे सूर्य-रूप ! आप क्षणभर के लिए मुझे दर्शन दीजिए ताकि आपके शुभ दर्शनों से हनुमान शुद्ध हो जाय । आप दर्शन दें ताकि ज़ीठ-पोश (ज्येष्ठ मास में खिलनेवाले पुष्प विशेष) खिल ज़ाएँ । पर्वत-मालाएँ और उसके अँचल खिल उठे । बसंत जब आया तो मैनाओं के (दिल से) जाड़े की मैल (पीड़ा) गल गयी और फूल मस्त होकर खिल गये तथा वर्फ़ से कहने लगे कि अब तुम पीछे हट जाओ । श्रावण रूपी यौवन के आ जाने पर (पुष्प) मुश्क (सुगन्धि) विकीर्ण करने लगे । ५ भाद्रपद के रूप में आप ही क्षीरसागर हैं तथा सार गर्भित उपनिषदों के आप ही (आगार) है । प्रेम के अमृत से हमारे (स्रोत) सीने भर दीजिए । क्योंकि हम

कतक वाँतिथ छि सरदी पान हावन ।
बतख नेरन छि कर तिम पूर्य त्रावन ॥
मगर क्याह् करि मगरमछ फेरि दरथस ।
दन्यशटस साथ छुस क्याह् डास करतस ॥
पोंह्स डीशिथ दोह्न तिथ्य जामु छुन्य नाल्य ।
गंछिथ तर चश्मु दरशुन हावि यंच्र काल्य ॥ १० ॥
पेंयस अदु माग न्यरमल करु पनुन पान ।
तसुन्द दरशुन वुछिथ सार्यन च्रलन हान ॥
फगन वाँतिथ लगन छुय इज़तिरावस ।
दिवान जवह्र तु जेवर आफ़तावस ॥
च्रिथुर वाँतिथ सु करि सार्यन शेंतुर नाश ।
असुर पथ च्रलि सिरियस गछि नोंन गाश ॥
वह्यख वाँतिथ छु पाँनिस पोन्य मेलन ।
खोंशी सुतिन असन गिन्दन तु खेलन ॥
दिलुक मल छल गुन्यानुक करतु दरबार ।
यथावथ पानु ईशर छुक च्रु अवतार ॥ १५ ॥

शोक का मुख देख-देखकर व्यथित हो रहे हैं। कार्त्तिक के आने पर सर्दी अपना रूप दिखाती है। बत्तखें (पानी में) निकल पड़ती हैं—तट पर पैर रखती ही नहीं। परन्तु मगरमच्छ का क्या करें जो उनके पीछे-पीछे, उन्हें नष्ट करने के लिए लगा रहता है। पौष के आने पर दिन ऐसे जामे (वस्त्र) धारण कर लेता है कि आँखें तर हो जाती हैं; क्योंकि अब वह (दिन) देर से दर्शन देने लगता है (रातें लम्बी हो जाती हैं)। १० माघ (मास) के आने पर मैं अपने शरीर को निर्मल कर डालूँगा और उनके दर्शन से सभी का दुःख मिट जायेगा। फाल्गुण के आने पर सभी की (इज़्तिराब) बेचैनी बढ़ गई है और सभी सूर्य को जवाहर व जेवर भेंट करते हैं। चैत्र के आगमन पर सभी शत्रुओं का नाश होगा तथा असुर (-रूपी मेघ) पीछे हटकर सूर्य के उजाले को प्रत्यक्ष कर देंगें। वैशाख के आने पर पानी के साथ पानी मिल जायगा (बर्फ़ गलनी शुरू हो जायेगी) और वह पानी हँसते-खेलते खुशियाँ मनाते हुए बहेगा। दिल का मैल धो डालिए और ज्ञान का स्मरण कीजिए क्योंकि आप स्वयं यथावत ईश्वर के अवतार है। १५ मेरे दुःखों व जख्मों की दवा आप ही देंगे। मुझे यही आशा है कि आप मुझे अपने चरणों में रखेंगे। मेरी प्रकृति ऐसी है कि मैं बार-बार आपसे यही दान माँगूगा कि हे नारायण !

दवाह् दाद्यन छोंकन म्यान्यन दिह्म च्रुय ।
मे छम यी आश च्ररनन तल ह्यह्म च्रुय ।।
प्रकृत छम म्यान्य गरि गरि यी मंगय दान ।
नरायनु शरमि रांछी सारिनुय सान ।।
कोंखंडेच्र म्यानि सूतिन कवुह् खोटुथ पान ।
दितम दरशुन नरायनु कासतम ह्ान ।।
मे वोतुम जान बर लब जामु अज़ तन ।
मरुनु वक्तन सोरुन गछि रामुलंखिमन ।।
दिलो जानम फ़िदाये रामुलंखिमन ।
सरे मन ज़ेरि पाये रामुलंखिमन ।। २० ।।

सरफ गाम नाल्य करिह्म आल्य जिगरस ।
जिगर पारुह मे गंयि परकाल्य जिगरस ।।
बु छुस प्योमुत पथर वुनिक्यन यितम ब्रोंठ ।
ज़नुमु खंडेच्र सूत्यन सोरुय दितुम चोट ।।
नरायनु वोंन्य च्रे रोसतुय कांह गोछुम नह ।
च्र रोसतुय कांसि कुन कीवल वोनुम नह ।।
च्रु छुख ना तरन तारन आलुमन दोन ।
च्रु छुख त्रेयिलूकु सामी च्रुय थवुम कन ।।

आप हम सब की शर्म (लाज) की रक्षा करना। मेरी एक भूल के कारण आपने क्यों अपने आपको छिपा दिया। हे नारायण! अब दर्शन दीजिए और मेरे दुःख दूर कीजिए। मेरी जान तन से निकलकर लब पर आ गई है और मरते समय भी मैं राम-लक्ष्मण का स्मरण कर रहा हूँ। मैं दिलो-जान से राम-लक्ष्मण पर फ़िदा हूँ तथा मन कर्म से राम-लक्ष्मण का हूँ। २० मेरे गले में सर्प लटक गए हैं जो जिगर में बिल बना रहे हैं जिससे मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो गए है तथा उसमें छेद हो गये हैं। मैं इस वक़्त नीचे गिर गया हूँ, आप आगे बढ़कर मेरा उद्धार कीजिए। इस खण्डित-जन्म (भूल) नें मेरा सब-कुछ बिगाड़ दिया है। आपके सिवाय, हे नारायण! अब मुझे और कोई भी न चाहिए। आप को छोड़ और किसी को मैंने 'केवल' नहीं माना। आप दोनों आलमों से तारने-वाले हैं, आप त्रिलोक के स्वामी हैं—आप ज़रा कान धरिए। (हे भगवान्) इस मन को आपके विना और कुछ न सूझे और आपके पादों के नीचे यह मेरा माथा (हमेशा) टिका रहे। २५ मैंने जीवन-भर के लिए

यि म्योनुय मन च्रे रोंसतुय कॆंह मु वासिन ।
पदन चान्यन तलुय ड्यकु म्योन आसिन ।। २५ ।।

रोटुम दामानुह चोनुय सारि वांसे ।
च्रे रोंसतुय कर वु लारय पतुह कांसे ।।
यि मन पनुनुय च्रे वयुत रंछ़ुस वंदुरपीठ ।
चु छुख ना आसुवुन सोंन्दर तु रूपीठ ।।
ह्यमथ वोंन्दि मंज़ ठोकुरुह गोंड दिमयना ।
छलय दोंदुह खोंर च्ररनामरत चमयना ।।
दोंयिम माता च्रे प्रारान दोंद दियी ना ।
कोंसेंल्या रामुलंखिमनु खोंनि हेंयीना ।।
सों मा आसी वदान वुनि राजि ज़ादन ।
यिनम ना रामलंखिमन सूत्य सादन ।। ३० ।।

चु दिख दरशुन वछन दोंद ठेंचि नेर्यख ।
वोंन्दुकि दादे वंनिथ सिरमाय फेर्यख ।।
यिमय छम श्राकु जिगरस वाकि वदुना ।
हटिकि रतु रामु च्रन्दुरस नामु लदुना ।।
त्रेंयिम मा राजु दशरथ आसि प्रारान ।
यियम मे त्रेश दियम कर हरि नारान ।।

आपका दामन पकड़ रखा है, आपको छोड़ मैं किसी और के पीछे कभी न जाऊँगा। इस मन को मैंने आपके लिए ही सुरक्षित रखा था क्योंकि आप सुन्दर और कमनीय हैं। मैं आपको अपने दिल के स्थापना-गृह में रखकर आपकी पूजा किया करूँगा तथा दूध से पैर धोकर चरणामृत पिया करूँगा। माता आपको दूध पिलाने के लिए प्रतीक्षा कर रही होगी तथा राम-लक्ष्मण को गोद में लेने के लिए आकुल हो रही होगी। कहीं वे आप दोनों युवराजों की खातिर रोती ही न रह जायँ और सोचती ही रह जायँ कि राम-लक्ष्मण आते ही होंगे। ३० आप उन्हें दर्शन दें और देख लें कि किस तरह उनके स्तनों से दूध की धारा फूटेगी। दिल का दर्द कहकर कैसे आपके प्रति उनकी प्रीति का स्रोत वहेगा। उनके जिगर पर छुरियाँ चल रही होंगी तथा दिल उनका ज़ोर से रोने को व्यग्र हो रहा होगा। वे गले को काटकर अपने रक्त से रामचन्द्रजी को नामा (संदेश) भेजने को तत्पर हो रही होंगी। तीसरी वात यह कि कहीं राजा दशरथ भी राह न देख रहे हों कि कव नारायण रूप (मेरे लाल श्रीराम) आएँ और मेरी प्यास

यि च़ूरिम याम सुता बोज़ि अह्‌वाल ।
मरुनु ब्रोंठुय तमिस बुथ हावि मा काल ॥
मोंखस सपुन्यस बदल रंग तनि गछ़यस सूर ।
वेशामेतुरस रेंशिस वनि क्याह् ओनुथ खूर ॥ ३५ ॥

यि पांच्रिम मेतरु बावह् छुय वेबीशन ।
छु शेरस लोगुमुत तंम्य रामुलंखिमन ॥
तमिस क्याह् पाय शरनागत छु चोनुय ।
वोपाय शरनागतन पतुवथ छु चोनुय ॥
शेयिम छुय शेतुर रावुन पेयि सु गालुन ।
संतिम सथ यी छु सुता मोकुलावुन्य ॥
अशटु बैरव छि प्रारान दरशनस च़ेय ।
शोबह् दरशनु अमर्‌यतु वरशनस च़ेय ॥
नंपिथ नवदार थव प्रज़लुनु यियी दूफ ।
यतन करिथ रटुन छ़ारुन सिरी रूफ ॥ ४० ॥

दंह्युम दिशायि किन्य छुख दश सोन्दरु च़ुय ।
मोंदुर वानी तु ईकादश लोंदुर च़ुय ॥

वुझाएँ। चौथी बात यह कि जैसे ही सीता यह अहवाल सुनेगी तो मरने से पहले ही वह काल-कवलित हो जाएगी। उसके मुख का दूसरा ही रंग हो जायेगा और उसकी तन राख जैसी हो जायेगी तथा विश्वामित्र ऋषि से कहेगी कि यह आपने मेरे लिए कौन-सा संकट खड़ा किया ! ३५ पाँचवी बात यह है कि विभीषण मैत्री-भाव निभा रहा है और उसने राम-लक्ष्मण को अपने सिर पर धारण कर लिया है। अब उस (बेचारे) का क्या हाल होगा ? वह तो आपकी शरण में आया हुआ था। अतः शरणागत के लिए उपाय ढूँढ़ना आपका कर्तव्य है। छठी बात यह है कि रावण शत्रु है अतः उसे गलाना ज़रूरी है। सातवीं बात यह है कि सीता को मुक्त करना है, यह सत्य है। अष्ट-भैरव आपके दर्शनों के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं, आप के शुभ दर्शनों व अमृत वर्षा के लिए ! नव-द्वारों को वन्द कर दीजिए तभी जीवन-दीप प्रज्वलित हो जायगा। यत्न करके सूर्य रूप को ढूँढ़ निकालिये। ४० दसवीं बात यह कि सभी दिशाओं में आप सबसे सुन्दर हैं। मीठी वाणी और एकादश रुद्र भी आप ही हैं। ग्यारहवीं बात यह कि लंका पर आपका राज्य है और बारहवीं बात यह कि छहों खण्डों में आपका साम्राज्य है। तेरहवीं बात यह है कि (अब)

कंह्मि लंकायि प्यठ राजुत छु चोनुय ।
शें खंडह्क्यन रथन ताजुत छु चोनुय ॥
त्रयोदशि सिरियि वौन्य यंत्र शीन गालुन ।
च्वोदुश च्चन्दुरमु सुता मोंकुलावुन ॥
वहत्र वुरजव निशन छुम गाश चोनुय ।
दितम दरशुन तु कासतम जूनि ग्रोनुय ॥
पुनिम हुन्दि रामु जुवु मोंख हाव शहारस ।
अनोनय राजुह दशरथ जारुह पारस ॥ ४५ ॥

राम लंखिमन सुन्द तलाश

वनुनि लोंग हलमुतस कुन यी वेंवीशन ।
दिमय वुन्य नेव कति छी रामुलंखिमन ॥
नतु सारी मरन हलमुतु खंती र्‌यन ।
प्रलय मा सपनि वुनि छुखना च्चु नेरन ॥
वेंवीशन लोंग वनुनि तस वीरु वोंदुरस ।
च्चु गछ टुकान पकन वोंन पातालस ॥
त्युतुय वूज़िथ हनूमान आव लारन ।
वंथित गव वाव ह्यूव श्री राम छारन ॥

आप सूर्य वनकर (रावण रूपी) वर्फ़ को गला दीजिए और चौदहवीं के चन्द्रमा के समान सीता को मुक्त करा दीजिए । सभी ओर से मुझे आपका ही प्रकाश (अवलम्बन) दिख रहा है । आप दर्शन देकर मुझ चन्द्रमा पर लगे ग्रहण को कर दूर कर दीजिए । हे पूनम के रामचन्द्र! आप शहरनिवासियों को (हम सवको) अपना मुख दिखाइए । हम (आपके लिए) राजा दशरथ को अनुनय-विनय के लिए लाये है । ४५

राम-लक्ष्मण की तलाश

(तव) विभीपण हनुमान से कहने लगे—मैं तुम्हें अभी पता वताता हूँ कि राम-लक्ष्मण कहाँ गए हुए हैं । (तुम तुरन्त वहाँ जाओ) अन्यथा हम सभी मर जाएँगे और इसका पाप तुम पर चढ़ेगा (लगेगा) । तुम नहीं जाओगे तो कही प्रलय न हो जाए, अतः तुरन्त निकल पड़ो । विभीपण ने उस वीरभद्र (हनुमान) से कहा—तुम भागकर नीचे पाताल की ओर जाओ । यह सुनते ही हनुमान दौड़ता हुआ गया और श्रीरामचन्द्रजी को ढूँढने के लिए (पाताल) में पहुँच गया । उसका मन खूव चंचल (उद्विग्न) हो

स्यठाह च्रंच्रल गोंमुत ओसुस पनुन मन ।
दिवन वंन्य संन्य वोंगुन्य वुछहन नरायन ।। ५ ।।

ख़बर छा ज़न्मु पुछ्य कवु हाच्र कंरथम ।
लोंगुम खोंरुह खूंत नाहक़ काछ कोंरथम ।।
रोंटुन पाताल डीठुन जान जाया ।
वुछिन बंड़ बारगाह अंन्द्य अंन्द्य कलाया ।।
तरीका लांकि हुन्ज़ तथ जायि प्यठ मा ।
वुछुन अख़ बालुकाह तति डीड्य वाना ।।
असुनि हलुमुत लोंग यामत सु ड्यूठुन ।
असन तामत वनुनि लोंग बालुकस कुन ।।
च्रु गछ पानस अन्दर अच्रुनस में दिम वथ ।
में छुम पयग़ाम न्युन केंह छम करुन्य कथ ।। १० ।।

असुनि बालुक लोंगुस यामत यि बूज़ुन ।
योंदस वेशे दपान इसतादुह सांपुन ।।
हनूमानन दोंपुस क्याह छुय ख़यालाह ।
मं गछ इसतादुह चावथ ज़हरु प्यालाह ।।

रहा था तथा वह आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ हर तरफ़ नजरों को घुमाने लगा ताकि उसे कहीं नारायण (रामचन्द्रजी) दिख जाएँ। ५ (वह मन में कहने लगा--) जाने किस जन्म का पाप सामने आया है जो थोड़ी-सी ग़लती के लिए इतना दुःख उठाना पड़ रहा है। पाताल में पहुँचकर उसने एक सुन्दर स्थान देखा जहाँ एक बहुत बड़ा भवन था और उसके इर्द-गिर्द एक दीवार खड़ी थी। उसका तरीका (उस भवन की शैली) लंका से मिलती-जुलती थी। उसने (हनुमान ने) देखा कि उस भवन का द्वारपाल एक बालक है। उसे देख हनुमान हँसने लगा और हँसते हुए (उस बालक से) कहने लगा--(रे बालक!) सामने से हट और दूर चला जा, मुझे अन्दर जाने का रास्ता दे, मुझे भीतर एक पैग़ाम ले जाना है तथा कुछ बातें करनी हैं। १० यह सुनकर वह बालक हनुमान के कथन पर हँसने लगा और युद्ध करने की मुद्रा में (हनुमान के सामने) खड़ा हो गया। (तब) हनुमान ने कहा कि तेरा ख़याल क्या है? यों मुझे न ललकार वर्ना तुझे जहर का प्याला पिला दूँगा (मौत के घाट उतार दूँगा), मेरा वज्र (शस्त्र) भयानक है। इससे तुझे कौन छुड़ाएगा? और कौन तुझे यहाँ दुग्धपान कराएगा? (तू अभी दूध पीता बालक है अतः मुझसे न टकरा)

बयानक छुम वज़ुर कुस मोंकुलावी ।
कुसू अदुह योंत यियी दोंदुह दाम चावी ॥
पियादह छुख सवारन सुत्य दिवान राद ।
च्रु पथ च्रल नतु दिमथ सुत्य गरदि बरबाद ॥
च्रु बेंह पानस शेंमिथ कवुह छुख मंगन म्रत ।
गछ्रुख ज़ख़्मी अंगव अंगव छकख रथ ॥ १५ ॥

मशान खेल सुत्य वीरन मारु सपनख ।
हशान च्रुय शीर खार आवारुह सपनख ॥
त्युतुय बूज़िथ सु बालुक आव दर जोश ।
वनुनि लोंग वुन्य दोदुक्य पोंठिन करथ नोश ॥
च्रु क्याह वीराह पनुन वीरुत छुख हावन ।
गंज़ुरथस शुर तवय छुख तम्बुलावन ॥
त्युथुय पथ फ्यूर कोंरनस कानु वरशुन ।
हनूमान लोंग मंगुनि रामुन सोंदरशुन ॥
त्युथुय वीरुत वुछिथ त्रंहर्यव हनूमान ।
शरन सांपुन तु अंगनस लोंग हुमनि पान ॥ २० ॥

वुछिथ तस कुन गलुनि लोंग होलु सुती ।
रटुनि लोंग तीर तंम्यसुन्द्य लोलु सुती ॥

तू तो अभी प्यादा है, सवारों से क्यों जूझता है ? पीछे हट, वर्ना अभी धूल में मिला दूँगा । तू शांत होकर बैठ, भला क्यों (जान-बूझकर) मौत को बुला रहा है । (मेरे हाथों) ज़ख़्मी हो जाएगा और फिर तेरे अंग-अंगों से रक्त बहेगा । १५ वीरों से टकराकर तू सारी सिट्टी-पिट्टी भूल जाएगा, अत: मुझ से न भिड़, नहीं तो काँटों में मिलकर कहीं का न रहेगा । यह सुनकर वह बालक जोश में आ गया और कहने लगा कि युद्ध में तुझे नष्ट कर डालूँगा । रे वीर ! तू यों अपनी वीरता का क्यों बखान कर रहा है ? शायद तू मुझे बच्चा समझता है और इसीलिए फूलता जा रहा है । यह कहते हुए वह (बालक) पीछे हटा और उस (हनुमान) पर तीरों की वर्षा करने लगा । तब हनुमान ने (मन में) रामचन्द्रजी के सुदर्शन चक्र की कामना की । उस बालवीर की वीरता देख हनुमान ठिठक गया और अग्निदेव की शरण में चला गया । २० (उस बालवीर की वीरता से प्रभावित होकर) हनुमान स्नेहवश द्रवित होने लगा और उसके तीरों को प्रेम के साथ रोकने लगा । वह (हनुमान) मन में कहने लगा कि इस

वनुनि लोंग नालु रटुहन लोल बरुहस।
गंछिथ नखु दीन गुलालन बोसु करुहस।।
वनुनि लोंग लोलु सुतिन क्यथु दिमस तीर।
गोंछुम आसुन युथुय नेंचुवाह वलावीर।।
तुलुन तरकस तु तस कुन बीम होवुन।
मोंखस तसुन्दिस प्यठ कर तीर त्रोवुन।।
कोंडुन कश तरकशस सीनस दितुन चाक।
दपान प्रुछुहस गंछिथ कति आख कस ज़ाख।। २५ ।।
वनुनि लोंग यि छु बालुक दीवता रूफ।
प्रज़लवुन गटु कुठिस मंज़बाग ज़न दूफ।।
प्रबातुक सिरियि ज़न प्रज़लन प्रज़ाये।
करन गटु दूर परन ओम नमः शिवाये।।
यियम कर अथि अथन वुछिहस बु अछर।
लबन लब लागुहस क्या सनु लवन कर।।
ह्यमन वोंन्दि मंज़ खोंनि मंज़ आपुरस शीर।
कंरिथ वालिज वंछ हावस दिलुक्य सीर।।
अनन छारिथ थवन मंज़बाग अतरस।
जिगर पारस जिगर दीबाचि वथरस।। ३० ।।

(बालक) को गले से लगाकर इस पर प्रेम बरसाऊँ और इसके दोनों गालों को चूम लूँ। (हनुमान प्रेमार्द्र होकर कहने लगा—) भला ऐसे वीर पर कैसे तीर चलाऊँ। काश ! मेरा भी ऐसी ही बलवीर पुत्र होता। उसने तरकश सम्भाला और मात्र भय दिखाने की गर्ज़ से उस बालक के मुख पर तीर चलाने की कोशिश की। तभी उसने तरकश को दूर फेंक दिया और सीना चाक कर डाला। मन में आया कि उससे पूछे कि तू कहाँ से आया है और किससे जन्मा है ? २५ (तभी आकाशवाणी हुई कि) यह बालक देवतास्वरूप है और अन्धकार के बीच में दीप की तरह प्रज्वलित हो रहा है। प्रभात के सूर्य की तरह यह प्रज्वलित होता है और नित्य ओम नमः शिवाय पढ़ता हुआ अँधियारे को दूर करता है। (हनुमान सोचने लगा—) काश, यह मेरे हाथों में पड़ता ताकि इसकी बाहों पर खुदे अक्षरों को मैं देख लेता ! जाने मैं इसे पा सकूँगा भी या नहीं ? (यह मेरे पास आ जाता तो) गोदी में झुलाकर इसे दूध पिलाता और अपने दिल को खोलकर इस पर सारे रहस्य प्रकट कर देता। इसे अपने दिल में बिठा लेता और इस जिगर के टुकड़े पर अपना दिलोजान निछावर कर देता। ३० इसे

रंटिथ निमुहन तु वुछिहस लोलु माये ।
यि करिना ग्राय लगुहस पोंत छाये ।।
अमा क्याह करुह यि दूफ गोंछि नु छ्यतु गछुन ।
यि गोंछि वोंन्य रामुचंन्दुरुन नाव यछुन ।।
यि लोलुच रेंह स्यठा प्रसन्द छि थावन ।
करन रुसवा यि खलकत ह्यस नु थावन ।।
वुछिव वोंन्य लोलु नार कोताह तुलन जोश ।
करन सूर शेंसतुरस थावन नु कैंह होश ।।
वोंन्दस वशये तंमिस यी गव प्रयूज़न ।
योंदुक हीथा कंरिथ तनि लागुहस तन ।। ३५ ।।
वोंनुन यी ज़न्मु त्यागस प्यठ लंज़ुन लथ ।
शिकारा ह्युव सु लार्यव शमुअस पथ ।।
खंटुन पोंपूर्य तन ड्यूठुन सु शमह ।
वतन छुस सोंत पथ कर फेरि दमाह ।।
गोंडन्य छुस वरनु आश्रम पान तारुन ।
पतो छुस रामु चंन्दुरुन रूफ छारुन ।।

पकड़कर इस पर अपना स्नेह बरसाता और इसका प्रेम देखता । यह जब प्रेममग्न होकर केलि करता तो इसकी छवि पर बलिहारी जाता । पर क्या करूँ ! कहीं यह दीप बुझ न जाए । काश, रामचन्द्रजी के नाम के प्रति इसकी प्रीति बढ़ जाती ! प्रेम की अग्नि व्यक्ति को प्रसन्न भी करती है और कर्त्तव्य से हटाकर कभी-कभी रुसवा भी कर देती है । देखिए, इस (वात्सल्य) प्रेम की अग्नि ने कितना जोश (तूफ़ान) पैदा किया कि लोहा तक राख हो गया और उस (हनुमान) के होश उड़ गए । दिल (के जज़्बातों) से वशीभूत होकर उस (हनुमान) ने सोचा कि (अब) युद्ध के बहाने से ही उसके तन से अपने तन को मिला सकता हूँ । ३५
उसने कहा कि वह (वीर बालक) जन्म-त्याग के लिए अड़ा हुआ है, अतः अपने शिकार पर टूट पड़ा जैसे शमा पर शलभ (पतगा)। जब उसने उस (बालक का) शमा रूपी तन देखा तो शलभ (हनुमान) पीछे हटने को हुआ । मगर उस शलभ का वतन वसंत है, अतः वह भला पीछे कहाँ हट सकता था ? पहले तो उसे उत्तरदायित्व से मुक्त होना है और दूसरा रामचन्द्रजी के रूप को ढूँढ़ना (देखना) है । वह (बालवीर) हनुमान को निशाना बनाकर कुशल तीरंदाज की तरह तीर फेंकने लगा । तब दिलावर (हनुमान) ने (उस बालवीर की वीरता देख) शाबाश ! शाबाश !!

लदुनि लोंग तीर तीर अन्दाज़ि कामिल ।
हनूमानस निशानस प्यठ मुकाबिल ॥
दिलावारन कोरुस शाबाश शाबाश ।
दिला दिलदार बरख़ोरदार तू बाश ॥ ४० ॥

च्रु लस वीरो करख हो वीरुनी कार ।
बबस माजे तिथिस ब्व्यनय नमस्कार ॥
गोंबुर बब पानुवानी माछि खेलन ।
नतुह छुय पोन्य पानिस सुत्य मेलन ॥
नतुह पानस हनूमान छुय बरन लोल ।
योंदुकि बहानु कासान जिगुरस होल ॥
फुटिथ तदबीर तीर लायिथ कमन्दह ।
फरुक शमशीर गिन्दन शेरे दरिन्दह ॥
सतन दोहन सतन राच्रन कोरुख योंद ।
पथुरि प्यठ प्यव हनूमान गव ज़ख़ुम ज़द ॥ ४५ ॥

दितुस मा लोलु तीरन शानु पथर ।
ज़ख़ुम ज़द गव ज़ख़ुम ज़द गव सु अबतर ॥
परुनि लोंग रामु रामह शाद सांपुन ।
दमाह दिथ बेयि दपन यिसतादु सांपुन ॥

कहा । हे दिलदार ! बरख़ुरदार ! ! तू जिन्दा रह । ४० हे वीर ! तू चिरायु हो और वीरतापूर्ण कार्य करता रह । तेरे माता-पिता (जिन्होंने तुझ जैसे बालवीर को जन्म दिया है) धन्य हैं, उन्हें मेरा नमस्कार ! (वे दोनों शायद यह नहीं जानते थे कि) पुत्र और पिता आपस में खेल (लड़) रहे हैं और पानी से पानी मिल रहा है । हनुमान प्रेममग्न होकर युद्ध के बहाने उस बालवीर के बार-बार सामने आ रहे थे और अपने जिगर के दर्द को दूर कर रहे थे । जब तरकश से सभी तीर निकल गए तो दोनों ने दरिन्दों की तरह शमशेरों से खेलना (लड़ना) शुरू किया । सात दिनों व सात रातों तक वे युद्ध करते रहे और हनुमान ज़ख्मी होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा । ४५ शायद वात्सल्य के तीर ने उसे नीचे गिरा दिया और वह (जगह-जगह) ज़ख़्मी हो गया । वह राम-राम पढ़ने लगा और (तभी) प्रसन्न (शाद) हो गया तथा कुछ ही देर बाद पुनः खड़ा हो गया । तब वह (उस बालवीर के) पीछे ऐसे भागा जैसे वायु, और उछलकर कहने लगा कि अब मैं इसे पकड़कर मार ही डालूँगा । हनुमान को बहुत ग़ुस्सा

त्युथुय लार्योव युथ छुय वाव लारन ।
वोनुन वोंठ दिथ रटन तामथ बु मारन ॥
करुन सख थफ हनूमानस खशुम आव ।
त्युथुय खेलन युथुय नारस सुतिन वाव ॥
अखा दिचुनस कलस वोवुन पथुरि प्यठ ।
कोंडुन खंजर कोरुन स्योद यंच खंचुस टचठ ॥ ५० ॥

पंजन तल ह्यथ सु वालुक यॅलि कोरुन गीर ।
वुछिव तस बालुकस कोंसु वासुना फीर ॥
त्युथुय वोनुनस मे वाती बब हनूमान ।
सु योद बोज़ी यि कथ मारी हॅयी प्रान ॥
सों कथ वूज़िथ हनूमान आछरस गव ।
वोनुन तस वारु वनतम मे यि क्याह गव ॥
चें कमि कारुनु वाती बब हनूमान ।
बु नो मारथ तम्युक वन नेबो निशान ॥
चु योदवय पोंज़ वनख शरबत बु चावथ ।
कोंठिस प्यठ कलु रॅटिथ वो ललुनावथ ॥ ५५ ॥

तॅमिस कति त्रय शिन्याह प्यठ छा फोंलन गुल ।
तम्युक दिम नेव अदु मारथ नु बिलकुल ॥

आया और उसने उसे जोर से पकड़कर दबाया । दोनों लड़ने लगे जैसे वायु के साथ अग्नि । (हनुमान ने) उसके सिर पर एक (थप्पड़) जमाया तथा वह नीचे गिर पड़ा और तब वह खंजर निकालकर वार करने लगा । ५० पंजों में जकड़कर जब उस बालक को उसने दबा लिया तब (देखिए) बालक की वासना (प्रकृति) बदल गई और वह बोल पड़ा—हनुमान मेरा पिता है, वह यदि सुनेगा (देखेगा) तो तेरे प्राण हर लेगा । यह बात सुनकर हनुमान आश्चर्य करने लगा और कहने लगा कि यह बात ज़रा फिर कहना । हनुमान किस कारण से (किस प्रकार से) तुम्हारा पिता लगता है ? मैं अब तुझे मारूँगा नहीं मगर इस बात का सारा नेबो-निशान बता दे । यदि तू सच कहे तो मैं तुझे शर्बत पिलाऊँगा और गोद में लेकर तुझे झुलाऊँगा । ५५ मगर, उसकी तो कोई त्रिया (पत्नी) ही नहीं है, फिर भला शून्य में गुल थोड़े ही खिल सकते है ? तू मुझे सारी बात बता दे, फिर मारूँगा नहीं और तुझे अपने पिता से मेल करा दूँगा जो सूर्य की तरह नभ (आकाश) में चमक रहा है । तब उस (बालवीर ने)

दोंयिम दिमय करिथ म्युल तस वबस सुत्य ।
सिरियि सुन्द्य पाठ्य युस चमकन नबस सुत्य ॥
दोंपुस तंम्य मोंखतुसर पाठ्य थावतम कन ।
च्रे रोंसतुय कस बु वनु कुस वोंन्य थव्यम कन ॥
ज़न्मु अन्तर यि कंह बूज़ुम ति बावय ।
मे छम द्रुय चान्य कंह कर छायि थावय ॥
दपन योंलि हलमुतन लंकायि गोंड नार ।
बलावीरन असर मारिन बं यकबार ॥ ६० ॥

दज़िथ लंका वुफिथ आकाश्य वथिथ गव ।
अरकु होंत ओस शोंकुर बोंनु तस वसिथ प्यव ॥
समन्दरु ओस गाड़ा ओस दारिथ ।
सु अमर्यत ब्यन्द तमि छुन न्यंगुलाविथ ॥
खवर कंह छमनु योंत कोंत आस कस ज़ास ।
लोंगुस शाठन कमन क्रुडन वलुनु आस ॥
स छम माता प्यता हलमुत छु म्योनुय ।
यियम कर सनु कास्यम जूनि ग्रोनुय ॥
महाराजा च्रु वुन्यक्यन थवतु लादन ।
मगर वुज़नावतम प्यमुहख बं पादन ॥ ६५ ॥

मुख़्तसर (संक्षेप) रूप में कहा, ज़रा कान धरिए--अब आप के बिना मैं और किससे अपनी बात कह सकूँगा और कौन मेरी बात पर कान धरेगा। जन्म लेने के अनन्तर जो कुछ मैंने सुना, उसे कह दूँगा। मुझे आपकी क़सम है जो मैं कुछ भी छिपाऊँ। कहते है, जब हनुमान ने लंका में आग लगा दी और उस बलवीर ने अनेकों असुरों को एक बार में मार डाला। ६० तो वह लंका को जलता हुआ छोड़ आकाश में उड़ गया। (वह बहुत थक गया था) उसके शरीर से स्वेद-रूपी शुक्राणु नीचे गिर गये। नीचे समुद्र में कोई मछली मुँह खोले थी। वह अमृत-बिन्दु (अणु) वह (मछली) निगल गई। उसके बाद मुझे यह खबर नहीं कि मैं यहाँ कैसे आया और किससे जन्मा? किन घाटों से टकराया और किन विपत्तियों से जूझा। वह हनुमान ही मेरा माता-पिता है। न जाने वह कब आयेगा और मुझ चाँद का ग्रहण दूर करेगा। हे महाराजा! इस समय मुझ पर ज़रा दया करना। वे (मेरे पिता) जब आएँ तो मुझे जगाना ताकि मैं उनके पादों में गिर जाऊँ। ६५ हे महाराजा! उनके

महाराजा तिहुंज़ि पुछि छुस परेशान ।
ख़बर कौंसु हान छम वब छुस नह डेशान ॥
ज़न्मु खंड्यच्र लोंगुस कति अंजदहन मंज़ ।
हनूमानस च्रु वनतम द्यवु करयम संज़ ॥
वनुनि लोंग युस ब्बस निशि परह छ्योंन गव ।
वनन क्या व्यथु वावस न्यथु नोंन गव ॥
यिमन वहेंक्य फुलय लगि सारि पोशन ।
अशोच्र वांतिथ छि रोज़ान अदु गोशन ॥
यिवन ज़ेठ पोन्य फेरान नागुरादन ।
कतक वांतिथ बतख़ लंट्य गंयि मज़ारन ॥ ७० ॥

गलन हांर्य तुलुकतुर आशाड़ डेशन ।
अलन मांग्य वावुह मूर पोह ज़ालु खसन ॥
बहादुर वेबहा वूज़ुम हनूमान ।
मकर दोंज़ छुस बु तसुन्दुय टोठ सन्तान ॥
फगन येंलि वोत बेशक तेंलि प्यवन ताफ ।
च्रिथुर वांतिथ गल्यम दुशमन च्रल्यम पाफ ॥
हनूमानन पोंज़ुय वूज़ुन थि रोयदाद ।
च्रोंटुन जिगर कोंरुन फ़रयियाद फ़रयियाद ॥

बिना मैं परेशान हूँ। न जाने किस शाप से मैं अपने पिता को नहीं पा रहा हूँ। जन्म खण्डित कर मैं न जाने क्यों इन अजदहाओं (राक्षसों) के बीच में आन पड़ा। आप ज़रा हनुमान से (मेरी स्थिति) कह दें ताकि वे कोई उपाय निकालें। वह आगे कहने लगा—जो अपने पिता से बिछुड़ गया वह मानो ठण्डी वायु के सामने नंगा हो गया हो। ये वैशाख के पुष्प मेरे लिए काँटों के समान दुःखदायी हो रहे है। ज्येष्ठ के आने पर झरनों में पानी बहने लगता है तथा कार्तिक के आगमन पर 'बतख लेट्य' (पुष्प-विशेष) मज़ारों के आस-पास खिलते है। ७० आषाढ़ के आने पर (पहाड़ों पर जमी) बर्फ़ गल जाती है और माघ में सभी काँपते हैं तथा पौष में वृक्षों से पत्ते गिर जाते हैं। मैंने सुना है कि हनुमान बहुत बहादुर हैं और मैं मकरध्वज उन्हीं की संतान हूँ। फाल्गुन के आ जाने पर बेशक धूप और चैत्र के आने पर मेरा दुश्मन गल जायगा तथा मेरा शाप दूर हो जाएगा। हनुमान को यह सारा वृत्तान्त सच लगा और उसने जिगर फाड़कर फ़रियाद की। उसने (उस बालवीर) की ओर देखा जो नेत्रों से आँसू बहा

वुछन तस कुन नेंतरव ओंश हरन ओस ।
नरायेंन्य सारिनुय असि अनि गोंट कोस ।। ७५ ।।

कवो आंयीनस दिवान ज़ंगारु दूर्यर ।
कवो जह्लस दिवान मिलुच़ार दूर्यर ।।
वोंनुन तस वालुकस बो छुस हनूमान ।
शरन गछ्र रामु च़न्दुरस सूत्य गंयी ज़ान ।।
तितुय बूज़िथ वंथिथ गव प्योस पादन ।
कंरुन तोंता तु बावुक्य पोश लागन ।। ७८ ।।

हनूमानस ज़ारी करान

करुन तोंता बबस कुन वंनिनु ज़ारी ।
हनूमानो लगय पादन बु पारी ।।

में दर्शनु चानि सुतिन अन्दुकार च़ोंल,
च़ोंलुम मंलच़ार बेंयि राख्युस मनुक गोंल ।
गंछिथ न्यरमल वनान च़ेंय कुन बं ज़ारी,
हनूमानो लगय पादन बु पारी ।। १ ।।

रहा था । नारायण ने उन दोनों का अन्धकार दूर कर दिया । ७५
जाने क्यों आईने में ज़ंग दूरी ले आती है ! (उसकी बिम्बशक्ति में न्यूनता लाती है!) (वह बालवीर हनुमान का ही प्रतिबिम्ब था मगर जाने क्यों वह उसे पहचान न सका !) और जाने क्यों मैत्री में जहालत (क्रोध) दूरी ले आती है ! तब उसने उस बालक से कहा कि मैं ही हनुमान हूँ । अब तू रामचन्द्रजी की शरण में जा क्योंकि उनसे अब तेरा परिचय होनेवाला है । यह सुनते ही वह (बालवीर) उठ खड़ा हुआ और उसके पादों में जा गिरा तथा उस (हनुमान) की पुष्पों से वंदना करने लगा । ७८

हनुमान की वंदना करना

वह अपने पिता की वंदना कर विनती करने लगा—हे हनुमान ! आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । आपके दर्शन से मेरा अन्धकार दूर हो गया तथा मेरे मन का राक्षस व कालुष्य (मैल) गल गया । अब मैं निर्मल होकर आपसे विनती करता हूँ—हे हनुमान ! आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । १ आपके दर्शन से मेरा दिल शाद हो गया और आपके आने से राक्षसों में तूफ़ान आ गया । मैं सभी पुष्पों को इकट्ठा कर आपके

मे दर्शनु चानि सुत्य दिल शाद सांपुन,
यिनह चानि राखिसन तूफ़ान सांपुन।
बु सोंम्बरिथ शेरि लागय पोश सारी,
हनूमानो लगय पादन बु पारी ।। २ ।।

चु छुख बलुवीर छुस बो लीन च्रेय कुन,
शरन गोमुत स्यठाह पनुनिस बबस कुन।
परन प्यमुह रामु चन्दुरस आम अवतारी,
हनूमानो लगय पादन बु पारी ।। ३ ।।

मे दर्शनु चानि सुतिन आम प्रकाश,
वुछिथ येति मो चलुम आम दोन अंछिन गाश।
लगय ना चरनु कमुलन पार्‌य पारी,
हनूमानो लगय पादन बु पारी ।। ४ ।।

महिरावुनस सुत्य जंग

करुनि लंग्य नालुमत्य ग़म गोसु त्राविख।
मनुक्य हथ होल जिगरुक्य हाल बाविख।।
मोखस तंम्य बोसु कोरनस गोसु मा छुय।
छलय खोर दोदुह सुतिन लोसु मा छुय।।

शीर्ष पर लगाऊँगा—हे हनुमान ! आपके पादों पर वलिहारी जाऊँ। २ आप बलवीर हैं और मैं आपके प्रति लीन हो गया हूँ। अब मैं अपने पिता की शरण में आ गया हूँ। मैं रामचन्द्रजी को प्रणाम करूँगा जो अवतार धारणकर मेरे यहाँ आए हैं—हे हनुमान ! आपके पादों पर वलिहारी जाऊँ। ३ आपके दर्शन से मुझे प्रकाश मिला जिससे मेरा मोह (अन्धकार) दूर हो गया तथा इन दो आँखों में (नई) ज्योति आ गई। आपके चरण-कमलों पर वलिहारी क्यों न जाऊँ—हे हनुमान ! आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। ४

महिरावण के साथ जंग

दोनों ग़म व गिला छोड़कर एक-दूसरे के गले लगे और मन का भार व जिगर का हाल (एक दूसरे पर) प्रकट करने लगे। तव उस (हनुमान) ने उसके मुख को चूमकर कहा—अब कोई गिला तो नही है तुझे। मैं दूध से तेरे पैर धो डालूँगा। (इसके बाद) हनुमान ने उससे सारा अहवाल

हनूमानन तमिस अहवाल बोवुन ।
शंथुर रावुन तु महिरावुन छु पावुन ।।
ति वोंबरोवुन वंनिथ ताम डेडि तमि त्राव ।
करुन शादी सोंरुनि लोंग रामुसुन्द नाव ।।
तमी दोंहु रामुचन्दरन कोंरनु समवाद ।
सुत्यन तस लंखिमनस हलमुत कोंरुन याद ।। ५ ।।

सु गछिना पादुह क्या सनु वातिना योर ।
सु करिहे पाय केंछाह हाविहे ज़ोर ।।
नतय वोंन्य लंखिमनो यथ क्याह छु चारह ।
दोंनुवय अंस्य गंमुत्य येंति यंत्र अवारह ।।
नतय वोंन्य लंखिमनो केंछा चु कर पाय ।
मनुश हुमुनस परोह्यत ब्रोंठु कनि आय ।।
दोंपुस तंम्य तोरुह बगवानो प्रनय क्याह ।
महा यूगीशोंरो वीरो वनय क्याह ।।
यि केंह करुनुय ति करुनुय छुय त्रे पानय ।
मनोशन प्यठ लदन कवु छुख यि हानुय ।। १० ।।

चु छुख पानय न्यरन्ज़न बोंड न्यराकार ।
तपन वीदन ज़पन हुन्द सवु आकार ।।

कहा और बताया कि महिरावण उसका शत्रु है जिसे हमें मार गिराना है । यह कहकर वह (हनुमान) ड्योढ़ी के भीतर गुस्सा और शाद होकर रामचन्द्र जी का नाम स्मरण करने लगा । (उधर यज्ञमण्डप के सामने बलि चढ़ाए जाने हेतु राम व लक्ष्मण बैठे हुए थे) आज रामचन्द्रजी कुछ भी संवाद नहीं कर रहे थे (वे चुप थे) । वस (मन-ही-मन) लक्ष्मणजी के साथ हनुमान को याद कर रहे थे । ५ काश ! वह (हनुमान) पैदा हो जाता और यहाँ आ जाता व अपने ज़ोर दिखाकर (हमारी मुक्ति का) कोई उपाय निकालता । नहीं तो, हे लक्ष्मण ! अब कोई चारा नहीं रहा (कि हम ही कोई उपाय निकालें) ; हम असहाय हो गए हैं । हे लक्ष्मण ! अब तुम ही कोई उपाय निकालो क्योंकि नर-बलि कराने के लिए पुरोहित-गण भी सामने आ गए हैं । इस पर उसने उत्तर दिया--हे भगवन् ! आपसे क्या छिपाऊँ । हे योगेश्वर वीर ! आपसे क्या कहूँ । जो कुछ भी होना है, वह आपको ही अपने आप करना है । आप मनुष्यों पर उसका भार क्यों लादते हैं ? १० आप निरंजन और निराकार हैं तथा कहते हैं वेदों और शास्त्रों के सर्वेसर्वा

छि यिम तफ ज़फ यंगुन्य च्रेय निशि बन्यामुत्य ।
करुम कुशमांड च्रेय निशि छी नन्यामुत्य ।।
यि कमि पुछ्य छुख लुकन प्यठ बोर खारन ।
ख़ोंशी कर आसि हलुमुत यूर्य लारन ।।
तिथय गव अख इशाराह वोत हलुमुत ।
तिमव यामथ सु वुछ तामथ असुन ह्योंत ।।
वुछिनि हलुमुत लोंग डीठुन कुनी तन ।
अतीथा हिव्य छि गांमुत्य रामु लंखिमन ।। १५ ।।

सु कति सनु प्रंग पलंग कति पासबानी ।
सं कति सनु पादुशाही हुकुमरानी ।।
सु कति सनु जाह व हशमत माल व दवलत ।
सं कति सनु शानु शवकत आंश व अशरत ।।
सिरियि च्रन्दरस छु कीतन नाल वोंलमुत ।
दुबारह ज़न डन्डक वन मंज़ छु च्रोंलमुत ।।
वुछिथ हलुमुत करुनि लोंग त्राहि त्राहे ।
वुछुन येलि गोंट गोंमुत सिरियि प्रज़ाये ।।
असुनि लंग्य बांय बारुन्य येलि सु तोंत वोत ।
हनूमान तंहुन्दि दर्शनु पुछ्य गोंमुत क्रोंत ।। २० ।।

भी आप ही हैं । ये तप, जप, यज्ञ आदि सब आपसे ही बने हैं । कर्म और कर्मकाण्ड भी आपसे ही निकले है । आप भला लोगों पर क्यों भार लादते है ? (क्योंकि उन्हें कर्त्ता बनाते हैं, सब कुछ करनेवाले तो आप ही हैं) तभी एक इशारे (एक पल में) हनुमान वहाँ पहुँच गए । उन्होंने (राम-लक्ष्मण ने) जब उसे देखा तो वे मुस्करा दिए । हनुमान उनके विवस्त्र तन को देखने लगा और उसने राम-लक्ष्मण को लाचारी की स्थिति में पाया । १५ वह तख़्त कहाँ, आराम के लिए वह पलंग कहाँ, वह बादशाही कहाँ, वह हुक्मरानी कहाँ, वह मालो-दौलत कहाँ, वह शानो-शौक़त कहाँ और वह ऐशो-इश्रत कहाँ ? सूर्य व चन्द्रमा को जैसे केतु ने घेर लिया हो और जैसे वे दुबारा दण्डक-वन में आ गए हों । हनुमान त्राहि-त्राहि करने लगा, जब उसने प्रज्वलित होते हुए सूर्य को अन्धकार-ग्रस्त देखा । वे दोनों भाई उसे देख मुस्कराने लगे और उधर हनुमान उनके दर्शनों के बिना काफ़ी विकल हो गया था । २० दर्शन पाकर उसने उनके पादों पर अपनी आँखें बिछाईं तथा आँसू बहाकर राम-लक्ष्मण का स्मरण करने लगा ।

कौरुन दर्शुन मथुनि लोंग पाद चंशमन।
हरुनि लोंग ओंश सौरुनि लोंग रामु लंखिमन ।।
ज़पुक सामानु डीशिथ आछरस गव।
नमस्काराह् करिथ राज़स परन प्यव ।।
शरन सांपुन योंदस प्यठ कौडनु इरशाद।
स्यठाह् दिल खोंश सपुन पर सांपुनिस बाद ।।
वुछुन दयतन हुन्दुय अन्द्य अन्द्य तिमन गेर।
स्यठाह् खोंश गव योंदस प्यठ द्राव चूं शेर ।।
तिमन मंज़ शेरि नर ह्युव ग्रज़ुनि लोंग।
अरुदु रातन नकाराह् ज़न वज़ुनि लोंग ।। २५ ।।

पियादह् अबदु बंद्य लछि बंद्य सवारह्।
पकन बुतराथ च्रटन तिम संगि खारह् ।।
सपुन्य गगराय ऋख तंमिसुन्ज़ बं क्रूदी।
तमी गगरायि सुतिन दयत मूदी ।।
कोंडुन गोंरज़ह् दपन दयतन कौरुन ख्यय।
स्यठाह् तति मूद्य वाराह् ज़खुमज़द गय ।।
जमा सारी सपुन्य राख्यस तु मिमबर।
सिलाह् गंन्ड्य गंन्ड्य हनूमानस बराबर ।।
सियाह् रोयह् सियाह् तन तिम रवन्दह्।
सियाह् जामह् वंलिथ ज़हरुन्य गज़न्दह् ।। ३० ।।

जप (यज्ञ) का सामान देखकर वह आश्चर्य करने लगा और उसने नमस्कार कर राजा (रामचन्द्रजी) को प्रणाम किया। शरण में जाकर उसने युद्ध करने के लिए आदेश प्राप्त किया और उसका दिल ख़ुश हो गया तथा उसके पर (पंख) वायु बन गए। दैत्यों ने उसे चारों ओर से घेर रखा है--यह देखकर वह और भी ख़ुश हुआ तथा युद्ध करने के लिए जैसे शेर की तरह कूद पड़ा। उन (दैत्यों) में वह बबर शेर की तरह गर्जने लगा जैसे अर्द्धरात्रि में नक्कारा बज रहा हो। २५ अरबों, लाखों पैदल व सवार पत्थरों को काटते-तोड़ते हुए भूमि पर चलने लगे। उस (हनुमान) की आवाज ही उनके लिए गर्जना-समान थी जिससे वे दैत्य एक-एक करके मरने लगे। उसने अपनी गदा उठाई और दैत्यों का क्षय करके लगा। अनेकों मर गए तथा अनेकों ज़ख़्मी हो गए। तब सभी (प्रधान) राक्षस व दैत्य अस्त्र-शस्त्र बाँध कर हनुमान के सामने जमा हो गए। उनका

तिमन क्याह् मांछ्रुह् कुलाह् त्युथ ख़यालस ।
पज़िनह् वनुन तिहुन्ज़ नठ आंस कालस ।।
तिथ्यन दयतन मनुश क्याह् यिन ख़यालस ।
गंमुत्य आंसी अवेज़ान मोयिवालस ।।
दपन तिम दयथ येंलि सांरी संमिथ आय ।
हनूमान लोंग वनुनि श्री रामु कर पाय ।।
हनूमानस दितुन बल वीरनुय हुन्द ।
करुनि लोंग पानु वरशुन तीरनुय हुन्द ।।
यिवन युस ब्रोंठु तस ज़न सुह् चवन रथ ।
यिवन युस पतु तस दांरिथ दिवन पथ ।। ३५ ।।
दिवन केंछ्रन कमन्द केंछ्रन दिवन तीर ।
दिवन केंछ्रन ख़न्जर मारन बलावीर ।।
वुछिथ गांरथ तिमन दयतन सपुन तेज़ ।
हंज़ीमत ख्यथ सांरी गंयि ख़ूनरेज़ ।।
करुनि लंग्य वाज़्यगांरी सांर्य व्योंन व्योंन ।
हनूमान रामुचन्दरस निश कुनुय ज़ोंन ।।
हनूमानन सं येंलि वुछ बाज़्य गांरी ।
अनुनि लोंग कोंह् कोंहन तल कंरिनु सांरी ।।

तन स्याह् व उनका मुख स्याह् था । स्याह् वस्त्र पहनकर वे जैसे ज़हर उगल रहे थे । ३० उनके खयाल में हनुमान एक पिद्दी से बढ़कर न था । सच तो यह है कि काल भी उनसे डरता था । ऐसे दैत्यों को भला इस मनुष्य (हनुमान) से क्या चिंता हो सकती थी ? वे सभी वार करने के लिए तैयार हो गए । कहते हैं, जब वे (असाधारण) दैत्य इकट्ठे हो कर (युद्ध करके को) आए तो हनुमान (मन में) राम-कृपा की प्रार्थना करने लगा । तब हनुमान को (असंख्य) वीरों जैसा बल प्राप्त हो गया और वह तीरों की वर्षा करने लगा । जो कोई सामने आता उसका रक्त सिंह की तरह पी जाता और जो कोई पीछे से आता उसको पीछे धकेल देता । ३५ किन्हीं पर कमन्द से प्रहार करता और किन्हीं पर तीर से और किन्हीं पर खंजर से वह बलवीर वार करता । उसका यह (बल) देखकर उन दैत्यों की ग़ैरत तेज़ हो उठी और रीस खाकर वे सब के सब ख़ूँरेज़ी पर उतर आए । सभी अलग-अलग बाज़ीगरी (माया) करने लगे और हनुमान रामचन्द्रजी के सामने अकेले रह गए । हनुमान ने जब उनकी यह बाज़ीगरी (माया) देखी तो वह एक कोह (पर्वत) उठा लाया और

हज़ीमथ ख्योख अबुदु बंद्य मारु येलि गंय ।
हनूमानुनि प्रचंड़ु आवारुह तिम गंय ।। ४० ।।

दपन ज़न तुलुकतुरिस प्योख तौंत ताफ ।
बंयकसात सा'र्य गा'लिन छनु कें'ह बाथ ।।
महे रावुनस निशे गंयि कें'ह छकन रथ ।
हनूमानन लंबुन साथाह फ़रागथ ।।
नखस प्यठ रामुलंखिमन तति तुलिथ न्यून ।
महे रावुनस दपन ज़न प्यव छौंकस नून ।।
दज़ुनि लौंग अंगनु कौन्ड तसुन्दिस मौखस मा ।
हनूमानन छ्नुस ज़हराह छौंकस मा ।।
तिथुय लारन पतय बौंनु ऋख करन आव ।
बौंरुन चाव तस निशि छुय आदमी खाव ।। ४५ ।।

तिथुय पथ फ्यूर कौंरनस अख इशाराह ।
कजे नस लंजि तु कंरिनस पारुह पारह ।।
दौंयिम यिम यिम तंमिस सुतिन रंटिन तिम ।
पंजन तल ह्यथ पनुक्य पांठिन ज़्रंटिन तिम ।।
पकन रतु कौलु दपन बेदाद सांपुन ।
वनुनि लंग्य राखिसन तूफ़ान सांपुन ।।

उस कोह के नीचे सभी को दबा दिया। रीस खाकर (परजय का मुँह देख कर) अरबों दर अरबों (दैत्य) मारे गए और हनुमान के प्रचण्ड बल के आगे वे असहाय हो गए। ४० कहते हैं, उन दैत्यों की काया रूपी बर्फ़ पर जैसे हनुमान के बल की गर्म धूप पड़ी, जिससे वे एक-साथ गलने लगे। कुछ (दैत्य) महिरावण के पास रक्त गिराते हुए चले गए और हनुमान को क्षण भर के लिए फराग़त (फ़ुर्सत) मिल गई (विश्राम के लिए समय मिल गया)। वह राम-लक्ष्मण को कन्धे पर बिठाकर वहाँ से ले गया और (यह समाचार सुनकर) महिरावण के ज़ख़्मों पर जैसे नमक छिड़क गया। वह जलभुन उठा और उसका मुख जैसे एक अग्निकुण्ड बन गया, क्योंकि हनुमान ने उसके ज़ख़्मों पर ज़हर गिराया था। तभी वह ज़ोर से चिल्लाता हुआ उनके पीछे दौड़ा और (अपने शिकार को देखकर) चाव भरने लगा, प्रसन्न होने लगा। ४५ मगर तभी (हनुमान ने) पीछे मुड़कर एक क्षण में उसको पकड़कर उसके अंग-अंग उखाड़कर तोड़ डाले। दूसरे जो उसके साथ थे उनको भी पकड़ लिया और पंजों के नीचे जकड़कर धागे की तरह

वलावीर रामुचन्दरन वुछ हनूमान ।
थ्यकुनि लोंग लंखिमनस कुन वोंनुन असान ॥
च्रु वुछ लंखिमनु कम गंयि वीरुनी कार ।
दौंपुस लंखिमन जुवन छुख पानु अवतार ॥ ५० ॥

महाराजा च्रे निश कतरह लवव न ।
समन्दर चांनिसुय अन्तर लवव न ॥
यि कंह करुनुय ति पानस पानु मा छुय ।
वलावीर हलमतुय वहानु मा छुय ॥
ग़रज येंलि शथुर नाशस गव यि समान्त ।
खंसिथ पातालु हलुमुत आव वंयकसात ॥
मकानस प्यठ थंविन तंम्य रामु लंखिमन ।
असन खेलन गिन्दन तोंत वोत वेंवीशन ॥
संमिथ सारी त्रुजगतुक्य दीवताह आय ।
निशे तस रामुचन्दरस दर्शनस च्राय ॥ ५५ ॥

कंरिथ दर्शुन सपुन हलुमुत सरफ़राज ।
मुवारकवाद छुवु वेंयि क्यथु लोंवुवु तार ॥
अन्यख तश पेशकंशी पोंशि मालह ।
छुनेहस नालय गंजेहस वालय च्रालह ॥

उन्हें काट डाला। रक्त की नदियाँ वहने लगीं और सभी कहने लगे कि राक्षसों के ऊपर तूफ़ान आ गया है। हनुमान की वल-वीरता देख रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी से मुस्कराते हुए बड़ाई करने लगे—हे लक्ष्मण! देखो, ऐसे होते हैं वीरों के कार्य! तव लक्ष्मण ने कहा—आप स्वयं अवतार हैं। मैं क्या जानूं। ५० हे महाराज! आपसे न क़तरा अलग है और न समुद्र ही। जो कुछ भी होना है, वह आप ही करवाते हैं। यह वलवीर हनुमान तो वहाना-मात्र है। ग़र्ज यह कि जव शत्रु (महिरावण) का अंत हो गया तो हनुमान (राम-लक्ष्मण को लेकर) पाताल से एकदम ऊपर आ गया। एक मकान (स्थान) पर राम-लक्ष्मण को रखा और तभी वहाँ पर विभीषण हँसते-खेलते पहुँच गए। त्रिजगत् के देवता मिलकर वहाँ आ गए और रामचन्द्रजी के दर्शन करने लगे। ५५ सभी का दर्शन कर हनुमान का उत्साह वढ़ गया और उसे सभी मुवारिकवाद देने लगे, क्योंकि उसी की वजह से राम-लक्ष्वण को निस्तार मिला था। उसके लिए पुष्पमालाएँ लाई गईं और उसके गले में डाली गई तथा कानों

यिवन यिम तिम करन मंन्ज़िल मुबारक।
मुबारक सद मुबारक सद मुबारक॥
वनुनि लोंग दीवताहन कुन वेंबीशन।
नेंथुर छुवुह हलुमतुन अख रामु लंखिमन॥
योंदस शेरि गरां नेरान हनूमान।
लोंकुट आंसिथ मुकटु शेरान हनूमान॥ ६० ॥

बरुगि सबज़ा वरुन ह्यथ हलुमुतस आव।
लंदुर यथ छी वनान पोंज़ बोज़ कन थाव॥
ति येंलि बूज़ हलुमुतन होवुन निशानह।
तुजिन कंन्य तान्य फुटरुन दानु दानह॥
वुछुन पतु ब्रोंठु सोरुय क्या यि रोंयदाद।
ति फीरिथ राजु वरुनन कोंर नु समवाद॥
दिलस टकराह लोंगुम बावुम यि अन्तर।
अन्यामय पेशकंशी वांलिज हुन्द हर॥
करन ज़ारी वनुनि लोंग तस यि हलुमुत।
मनस गोम रामु रामह आसि मा युत॥ ६५ ॥

तवय फुटरुम तु बंर्य बंर्य ह्युतमु पथर।
चें क्या छुय ग़म ख्यवन छुख क्याज़ि ख़तर॥

में कुण्डल पहनाए गए। जो-जो भी वहाँ आता, मंज़िल को (सकुशल) पार कराने के लिए (हनुमान को) सौ-सौ बार मुबारिकवाद देता। तब (पधारे हुए) देवताओं की ओर (देखकर) विभीषण कहने लगा—हनुमान राम व लक्ष्मण की आँखों का तारा है। युद्ध में वह शेर की तरह गर्जता हुआ निकलता है तथा सब से छोटा होते हुए भी मुकुट धारण करने के योग्य है। ६० तब बहुमूल्य मोतियों की माला लेकर वरुण हनुमान के पास आया और इसकी श्रेष्ठता का बखान करने लगा। जब हनुमान ने यह सब सुना तो निशाना साधकर एक पत्थर से उसे खण्ड-खण्डकर दिया; उन टुकड़ों को उसने आगे-पीछे हर ओर से देखा। राजा वरुण ने यह देखकर कहा—इस कृत्य से मेरे दिल को ठेस लगी है। तुमने ऐसा क्यों किया? ज़रा इसका रहस्य तो बताना। मैं तो तुम्हारे लिए दिल से यह सौग़ात (पेशकश) लाया था। तब हनुमान विनम्रतापूर्वक कहने लगा—मेरे मन में यह विचार आया कि इन (मोतियों) में शायद राम-राम निहित हो। ६५ इसीलिए इस (माला) को तोड़ा और पृथ्वी पर पटक दिया।

महावरनस लंजिस र्यय ज़न हौंखिथ गव ।
शरीरस छा लेंखिथ समवाद ती गव ॥
हनूमानन ति बूज़िथ कौंड़नु जामह ।
तुलुन थोंद पोस होवुन रामु रामह ॥
ति यैलि वुछ सारिवुय शरमन्दु सॉपुन्य ।
पद्यन तसुन्द्यन तल वोसह हैंतिख दिन्य ॥
संमिथ तसुन्द्यन पद्यन तल आयि यकजा ।
सौंरुनि लंग्य रामु लंखिमन कंरुख लीला ॥ ७० ॥

लीला

हलुमतु बलुवीरु च्रुय बागिवानो ।
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥
ब्रह्मा वरुन लोंदरु गन मरुत गन,
सॉरी वावु किन्य छी चे छारान ।
सारुगी तोंता गीत गावानो,
रामुलंखिमन पानु नारानो ॥ १ ॥

दय लयि यियि असि रावुन गछ़ि नाश,
दास छी चान्य मतु करतु लतुवास ।

आप भला क्यों ग़मग़ीन हो रहे है और क्यों विगड़ रहे हैं ? इस पर महावरुण जलभुन कर जैसे सूख गए और (व्यंग्यपूर्ण वाणी में) कहा—तेरे शरीर पर उसका नाम लिखा हो तो मानें ! यह सुनते ही हनुमान ने वस्त्र हटाकर अपनी खाल (पोस्त) को उधेड़ा और राम-राम दिखाया । सभी ने जब यह (हृदय) देखा तो वे शरमिन्दा हो गए और उस (हनुमान) के तलवों को चूसने लगे । सभी मिलकर उसके पादों के क़रीब आ गए और राम-लक्ष्मण का स्मरण कर उसकी वंदना करने लगे । ७०

भजन

हे हनुमान ! हे बलवीर ! आप भाग्यवान् है तथा राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं । ब्रह्मा, रुद्रगण, मरुतगण सभी भावमग्न होकर आपको ही ढूँढ रहे हैं और सभी आपकी स्तुति के गीत गा रहे है—राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं । १ दैव की जब अनुकम्पा होगी तब रावण का नाश हो जायगा । हम आपके दास हैं, आप हम से रूठना नहीं और हमारे हृदयों

हृदयस म्यानिस मंज़ दितु थानो,
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥ २ ॥
वोंपनीशिदनुय मंज़ छुख च्रु सार,
अनुग्रहु पनुने कास अन्दुकार ।
यिहुन्दि सोंरूपुह सुत्य दीश प्रज़ुलानो,
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥ ३ ॥
दासस गंयि दास रेंश तु बेंयि स्यद तु साद,
अन्थस चांनिस छिनु लवान आद ।
ध्यानु दारुनायि प्रानु च्रेंय सोंरानो,
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥ ४ ॥
दीवु रूपु ज़ीवुज़ात कंरुथ वोंतपत,
नष्ट कंरुथ ओसुख च्रुय पतुवथ ।
अन्तर ज़ीवु दीवु छुख सादानो,
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥ ५ ॥
बोंड छुख तु दरमस कुन असि वथ हाव,
महा बयि समसारुह निशि मोंकुलाव ।
आंरुत्यन आंरच्रर छुख च्रु कासानो,
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥ ६ ॥
बावुह सुत्य चावुह सुत्य आव वेंबीशन,
शेरस लोगुमुत छु रामु लंखिमन ।

में निवास करना—राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं । २ उपनिषदों के आप सार है । अपने अनुग्रह से आप हमारा अन्धकार दूर करना । आपके स्वरूप से ही देश-देशान्तर प्रज्वलित होते हैं—राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं । ३ कितनें ही दासों के दास, ऋषि, सिद्ध व साधु आपके आदि व अन्त का रहस्य न पा सके । ध्यान, धारणा व प्राणों से हम आपको स्मरण कर रहे हैं—राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं— ४ दैवरूप में आप जीवों की उत्पत्ति करते हैं और आप ही अनादि काल से उन्हें नष्ट भी करते आ रहे हैं । जीव के अन्तर्मन को आप ही सुलाते या जगाते हैं—राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं । ५ आप महान् हैं, हमें धर्म की ओर प्रवृत्त करें तथा संसार के महाभय से मुक्त कराएँ । आप याचकों का दुःख-दर्द दूर करनेवाले हैं—राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं । ६ विभीषण भावमग्न होकर आपके पास आया है । उसने राम-लक्ष्मण को शिरोधार्य

हटिके रतु सुत्य गोंड़ दिवानो,
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥ ७ ॥

दय येलि येलि यियि सांपुनि शंतरुनाश,
सिरियि खोंत पृथ्वी प्यव प्रकाश ।
आयि ग्रायि मारान द्रायि थेंकानो,
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥ ८ ॥

च्रुय छुख आकार च्रुय छुख न्यराकार,
च्रुय छुख शामु रूपु रामु अवतार ।
च्रुय छुख छायि रोंस्त दूफ चमकानो,
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥ ९ ॥

ही कंबीरुह, ही वीरुह, ही श्री रामो,
ही यादवुह ही कृष्णु नामो ।
ही मादवु पांछ तोंत च्रु आसानो,
रामु लंखिमन पानु नारानो ॥१०॥

हनूमानन सु बालुक मंगुनोवुन ।
पद्यन प्यठ रामुचन्द्रुरस निशि थोवुन ॥
करुनि बालुक स्यठाह लोंग वीलु तह ज़ार ।
हनूमान लोंग थेंकुनि तस बालुकुन्य कार ॥

कर रखा है । वे अपने गले के रक्त से राम-भक्ति के मूल को सींच रहे हैं--राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं । ७ जब-जब दैव (भगवान्) अवतार लेंगे तब-तब शत्रु का नाश होगा तथा (नव) सूर्य का उदय होकर पृथ्वी पर प्रकाश फैलेगा । सभी (देवतादि) प्रसन्न होकर वहाँ से चल दिए । --राम लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं । ८ (सभी कहने लगे--)आप ही साकार और ही आप निराकार हैं । आप ही श्याम रूप रामावतार हैं । आप ही छाया रहित दीप की तरह चमकनेवाले है--राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं-- ९ हे कबीर ! हे वीर ! हे श्रीराम ! हे यादव ! हे कृष्ण ! हे माधव ! पाँच तत्व आप ही हैं--राम-लक्ष्मण स्वयं नारायण हैं । १०

(तब) हनुमान ने उस बालक को मँगवाया और उसे रामचन्द्रजी के चरणों के समक्ष नवाया । वह बालक प्रार्थना व विनम्रता के भाव प्रकट करने लगा और हनुमान बालक के कारनामों का बखान करने लगा । यह सुनकर रामचन्द्रजी बहुत प्रसन्न हुए और उस बालक को देख उनकी छाती

ति बूज़िथ रामुजुव वाराह् प्रसन्द गोस ।
वुछुन बालुक वुछिथ तस शानु वोंगन्योस ॥
रंटिथ तम्य मोखतु मालाह् नाल्य छुनिनस ।
कनन कनुदूर सोंनुसुन्द्य वाल्य छुनिनस ॥
प्रसन्द गोस महिरावुनुन राज द्युतनस ।
मुकटु गोंडुनस कलस प्यठ ताज थोंवुनस ॥ ५ ॥
महिरावुनुन राज तस ठीकुरोवुन ।
पलंगस महिरावुनुनिस बेंह् नोवुन ॥
गंलिथ राख्यस गन्दरब वशस अन्दर गंय ।
गरुम बाज़ार दरमुक राज बोंविनय ॥ ७ ॥

मंकीशोरुह् सुन्द कुसु

ख़बर बूज़िथ तबर ज़न रावुनस आय ।
स्यठाह् गव आछरस छारुनि लोंग पाय ॥
स्यठाह् लाचार येंलि सांपुन सु रावुन ।
गंयस यी बोंद दयस ती ओस हावुन ॥
ख्यवान अफ़सोस यंच्र च्रापुनि लोंग ज़्यव ।
मोंठुस क्या वोंन्य च्यतस तस प्यव सदाशिव ॥
स्यठाह् कांप्योव यंच्र तस प्योस तलवास ।
ओंनुन पोसतुक तु गव बर कोहि कांलास ॥

फूल गई। उसके गले में उन्होंने मोतियों की माला डाली तथा कानों में सोने के कुण्डल पहनाए। प्रसन्न होकर उन्होंने उसे महिरावण का राज दिलाया और ताज पहनाकर उसे पलंग पर बिठाया। ५ राक्षस गल गए व गन्धर्व वश में आने लगे, तथा इस प्रकार धर्म का बाज़ार गर्म होने लगा। ७

मक्केश्वर का क़िस्सा

(महिरावण के पतन का) समाचार सुनकर रावण के (पैरों पर) जैसे कुल्हाड़ी गिरी तथा वह आश्चर्य करने लगा और कोई अन्य उपाय ढूंढने लगा। अपनी कुबुद्धि के कारण जब वह रावण वहुत लाचार हो गया तव अफ़सोस (रंज व ग़म) के कारण अपनी जीभ चबाने लगा (विवशता प्रकट करने लगा।) सब कुछ भूलकर उसे सदाशिव की याद आ गई।

शरन सांपुन शिवस वोनुनस बज़ारी।
परन प्योस पादिकमुलन लोंग सु पारी ।। ५ ।।

दोपुन तस रामुचन्द्रुरन कोरमु बेदाद।
दितिन बारव वोदुन फ़रियाद फ़रियाद ।।
परन तल गव महादीवस परन प्योस।
शरन सांपुन प्रखुट शिव पानु टोठ्योस ।।
मंकीशोर तस दितुन गछ् लांकि प्यठ वात।
थवुन तति रामु जुव वाती नु तोंत ज़ात ।।
अमा येति थावुहन तति थोद वोथी नह।
मुलय तमि जायि अदुह हरक़त करी नह ।।
मंकीशोर सुत्य पानस येलि सु ह्यथ आव।
वुछिव क्यथु पाठ्य तस नारुद प्रकंज्र ज़्राव ।। १० ।।

यि गव छ्ल आव ज़ल तस लोंग वुछिनि दूर।
दोपुन कांछाह गोछुम रटिहम यि ठोकूर ।।
वुछुन बुडु ब्रहमुना ड्यूठुन यिवन ताम।
दोपुन तस कुन रटुम ठोकुर में ज़ल आम ।।

वह काँपता व छीजता हुआ उठा तथा कैलास पर्वत (कोह) की ओर चल दिया। शिवजी की शरण में जाकर उसने विनती की और उनके पाद-कमलों की वंदना करने लगा। ५ उसने (शिवजी से) कहा—रामचन्द्र ने मुझे क्षुब्ध कर डाला है। उसने रो-रोकर फ़रियाद की और अपना दुखड़ा सुनाया। महादेव को प्रणाम कर उस (रावण) ने उन्हें तुष्ट किया और वे प्रसन्न होकर प्रकट हो गए। मक्केश्वर (शिवलिंग का एक स्वरूप) उसके हवाले कर (महादेव ने) कहा—इसे लेकर लंका लौट जा (युद्ध में यह लिंग तेरी विपत्तियों से रक्षा करेगा)। इसे तू अपने पास रख, रामचन्द्रजी तेरा कुछ भी न कर सकेंगे। मगर हाँ, मार्ग में यदि तू इसे कहीं धर देगा तो फिर यह (लिंग) वहाँ से उठेगा नहीं--लाख प्रयत्न करने पर भी हरकत न करेगा (यह बात याद रखना)। जब वह (रावण) उस मक्केश्वर को लेकर लौटा तो देखिए कैसे नारद ने उसकी दुर्गति बना दी। १० उसने छल किया और रावण को लघुशंका जाने की आवश्यकता हुई। वह मन में कहने लगा--काश! कोई मिल जाता ताकि इस लिंग को उसे पकड़ाता (क्योंकि यदि इसे नीचे रखता हूँ तो फिर यह वापस उठेगा नहीं)। तभी उसने एक बूढ़े ब्राह्मण को सामने से गुज़रते हुए देखा।

दोंपुस तंम्य तोरु दानवुह ओरु कनि फेर ।
मे छुम मंन्ज़िल गछुन वाराह गछ्यम च्रेर ।।
दोंपुस तंम्य तोरु रठ यिमु पान नांविथ ।
दोंयिम गंर येंलि गछ्यम तेंलि छुन ब्रु वांविथ ।।
रोंटुस तंम्य येंलि सु रावुन गव न्यबर द्राव ।
पकुनि लोंग ज़ल तंमिस दंरियाव दंरियाव ।। १५ ।।

सपुन लाचार रावुन लोंग रिवांने ।
दिब्रुन ऋख ज़ोरुह ज़ल आव कोरु कने ।।
दोंपुस तंम्य ब्रहमुनन वोंन्य सूर वादह ।
थोंवुन ठोकुर मांलक इसतादह ।।
वुछिव क्यथु पांठ्य रावुन छंलुरोवुन ।
मुनीशोंर गव मंकीशोंर वोंदनि थोवुन ।।
लजाव तस ठोकुरस रावुन वन्दुनि रथ ।
वोंथुम थोंद तंम्य मुलय कंरनस नु हरकत ।।
मंकीशोंर सुत्य न्युन सूरुस तमन्ना ।
तसली गोस फीरिथ गव बं लंका ।। २० ।।

उसने उससे कहा—कृपा कर इस लिंग को थाम लेना । मैं अभी लघुशंका से निवृत्त होकर आता हूँ । उस (बूढ़े) ने उत्तर दिया—रे दानव ! अपना रास्ता नाप । मेरी मंज़िल बहुत दूर है, अतः मुझे देर हो जायेगी । (तव) उस (रावण) ने पुनः कहा—मैं अभी पल भर में लौटकर आता हूँ । यदि ज़रा भी देर हो जाती है तो तुम इस लिंग को नीचे रख देना । १५ इस पर उस (वृद्ध ब्राह्मण) ने उस (लिंग) को पकड़ लिया और रावण (लघुशंका से निवृत्त होने के लिए) चला गया । रावण का (जल) पेशाब दरिया की तरह चलने लगा (समाप्त ही न हुआ) और वह लाचार होकर बड़-बड़ाने लगा । वह चिल्लाया—पेशाब ज़ोरों से चल रहा है (अभी आता हूँ) । इस पर ब्राह्मण ने आवाज़ दी—अब वायदा टूट गया और उसने लिंग को नीचे रख दिया । देखिए, किस तरह से रावण के साथ छल किया गया । मुनीश्वर चला गया और लिंग वहीं पर खड़ा रह गया । रावण उस लिंग पर अपना रक्त वारने लगा मगर वह ज़रा भी न हिला और न हरकत ही की । आखिर, मक्केश्वर को साथ लेने की रावण की तमन्ना (आशा) सूख गई और निराश होकर पुनः (खाली हाथ) लंका की ओर चल दिया । २०

रावुनुन हवन करुन

ऑनुन छॉरिथ शोंकुर ओसुस पनुन गोर ।
दोंपुन तस क्याह् करव रूदुमनु कॅह् ज़ोर ।।
छुखय गॉर म्योन पोंज़ुय वोंनमय पोंज़ुय बोज़ ।
दपुस तॅम्य संकलप कॅरिथ खॅटिथ रोज़ ।।
यि कथ सथ छय सतन दोंह्न अंगुन ज़ाल ।
ज़ॅपिथ मनथुर हुमुन पोरी नु ज़ांह् काल ।।
अमा योंदवय यि ज़फ करि कांह् अवारह ।
शेतुरु सुन्दि मोंखु तॅलि सॉ‍पुनिनु मारह ।।
खॅनिन तॅम्य सॅन्य गॉफाह् मंज़बाग़ तथ ब्यूठ ।
अंगुन ज़ोलुन तम्युक दुह् वॉय तस ड्यूठ ।। ५ ।।
गॅछ़िथ तॅम्य हलमुतस ह्योंत हाल बावुन ।
च़ु गछ़ रावुन अंगुनु निशि नॉशिरावुन ।।
गॅयस लारान अंगुद हलमुत वॅबीशन ।
वुछुख रावुन तपस प्यठ मूदुमुत ज़न ।।
मुलय थोंद वोंथ नु तस असरस दितुख मार ।
करुनि लोंग ज़फ तपस तसुन्दिस नमस्कार ।।

रावण का हवन करना

तब वह (रावण) अपने गुरु शुक्र को ढूँढ लाया और उससे कहा कि अब मैं क्या करूँ । मेरे जोर अब रहे नहीं । आप मेरे गुरु हैं । सच कह रहा हूँ और इसे सच ही मानिए । (इस पर शुक्र ने कहा—) गुप्त-वास करके आप एक संकल्प (यज्ञ) कीजिए । यह सत्य है कि यदि आप सात दिनों तक अग्नि को होम देकर जाप-मन्त्र करते रहेंगे तो काल आपका कुछ भी नहीं कर सकता। जो कोई मन से इस जाप(यज्ञ)को करेगा उसको शत्रु कभी भी मार नहीं सकेगा । तब उसने एक गहरी गुफा खोदी और उसके बीच में बैठकर अग्नि जलाई जिसका धुआँ उसके भाई (विभीषण) ने देख लिया । ५ वह(तुरन्त)हनुमान के पास गया और उससे सारा हाल समझाकर कहा कि (शीघ्र) जाकर रावण को तप (यज्ञ) से वियुक्त करो । इस पर अंगद, हनुमान और विभीषण भागकर उसके पास गए और उन्होंने रावण को तप में पूर्णतया निमग्न पाया । उसको उन्होंने खूब पीटा मगर वह लाख प्रयत्न करने पर भी वहाँ से हिला नहीं और जाप में लगा रहा । उसके जाप को नमस्कार हो ! तब हनुमान से विभीषण कहने लगा—तू

हनूमानस वनुनि लोंग यी वेबीशन ।
च़ु गछ मन्दूदरी सख़ती स्यठाह अन ।।
सु गव मन्दूदरी ओंनुनस सितेज़ह ।
दोंपुन तस वुन्य छुनय वालिजि नेज़ह ।। १० ।।

करुनि लोंग ना सज़ा मन्दूदरी कुन ।
गंछिथ तमि हाल सोरुय रावुनस वोंन ।।
यिवन छिम पंन्ज़्य तु वान्दर छिम परन फ़ाश ।
च़्रोलुम त्राविथ गोबुर वोंन्य छम कंहुंज़ आश ।।
कोंरुन फ़ंरियाद नेतरव किन्य होंरुन रथ ।
ति बूज़िथ द्राव रावुन आस गारथ ।।
वोंदुन वाराह ड्यकस पनुनिस दिच़ुन च़्रण्ड ।
दयस ओसुम करुन तपसुय गंयम खंण्ड ।।
दोंपुस मन्दूदरी वोंन्य छुय नु ताक़त ।
दोंहय वोंनमय च़्रें ज़ाँह बूज़ुथ नु काँह कथ ।। १५ ।।

दोंपुस तंम्य रावुनन यिम रामु ज़ुव्य मार्‍य ।
तिमव यिय पाप कंरिमुत्य आंस्य तिम हार्‍य ।।
ख़बर छय ना नारायन पानु अवतार ।
मुदा छुम मोंख्त गछुन यिथ्य छुस करन कार ।।

जाकर मन्दोदरी पर सख़्ती ला । वह मन्दोदरी के पास गया और उसे ख़ूब कष्ट देकर कहा कि अब मैं तेरे कलेजे में अभी नेज़ा (भाला) घुसेड़ दूँगा । १० वह मन्दोदरी को ख़ूब परेशान करने लगा जिससे वह रावण के पास गई और उससे सारा हाल कहा--बन्दर और रीछ आ-आकर मेरा अपमान करते हैं । पुत्र भी मुझे छोड़कर चला गया, अब भला मुझे किस की आशा है । फ़रियाद कर वह नेत्रों से रक्त बहाने लगी । यह सुनकर रावण की ग़ैरत खौल उठी और वह (ग़ुस्से में) बाहर निकल आया । बाद में, वह ख़ूब रोया और माथा पीटकर कहने लगा कि दैव को ऐसा ही करना था तभी तो मेरा तप खंडित हो गया । तब मन्दोदरी ने कहा कि अब आपमें ताक़त नहीं रही । मैं आपको हर बार समझाती रही, मगर आपने मेरी बात कभी न मानी । १५ तब वह रावण कहने लगा--जो-जो रामचन्द्रजी द्वारा मारे गए उन्हें अपने पापों का फल मिल गया । तुमको ख़बर नहीं कि उनके रूप में स्वयं नारायण ने अवतार लिया है । मुझे भी उन्हीं के द्वारा मुक्त होना है, अतः ऐसे-वैसे

सिलाह् सोरुय गोंन्डुन सूतिन तंमिस द्राव ।
दज़न तस दिल ग्रज़न सुह् ज़न योंदस आव ।। १८ ।।

लीला

श्री रामुसुन्द नाव युस हेंयि तनु मनु ।
सुय आसि वयकोंठु वांसिये ।।
वगवत माया रंगु रंगु आसुवुन्य,
कासुवुन्य अन्दुकांरियन अन्दुकार ।
सुय युस त्रुजगत आसुवुन आसी,
सुय आसि वयकोंठु वांसिये ।। १ ।।
बगवान छु पानय अवतार दांरिथ,
असि पांपियन गछि पाप हांरिथ ।
लोलु सूत्य चावान अमर्यतु खांसी,
सुय आसि वयकोंठु वांसिये ।। २ ।।
मोंख्त गछि बगवानु सुन्दि अथु सूतिन,
कांपुनु गमु मंज़ु क्याह् नेरे ।
आशा चांन्य छम आनन्दु वांसी,
सुय आसि वयकोंठु वांसिये ।। ३ ।।
नेरुहानु नेरुनस कैंह छुनु चारुह,
क्या सना व्यन्दि ना व्यछ्रारुह ।

कार्य कर रहा हूँ। (इसके वाद) उसने अस्त्र-शस्त्र धारण कर लिये और जलते दिल से सिंह की तरह गरजता हुआ युद्ध के लिए निकल पड़ा । १८

भजन

जो श्रीराम का नाम तन-मन से लेगा, वह वैकुण्ठवासी होगा। भगवत्-माया अपरंपार है, वह अन्धकार-वासियों का अन्धकार दूर कर देती है। वही त्रिजगत् में व्याप्त है--वह वैकुण्ठवासी होगा। १ भगवान् ने स्वयं अवतार धारण कर लिया है और हम पापियो के पाप अव दूर हो जाएंगे। प्रेम से वे सवको अमृत के प्याले पिलाएँगे--वह वैकुण्ठवासी होगा। २ भगवान् के हाथों से (सब) मुक्त हो जाएँगे, अतः ग़म में कांपने से क्या निकलेगा ? हे आनंदवासी ! मुझ (रावण) को आपकी ही आशा है--वह वैकुण्वासी होगा। ३ मैं (युद्ध करने के लिए) निकलता नहीं, पर

नेंन्दुर छम तु पतु मन छुम वोंदासी,
सुय आसि वयकोंठु वासिये ॥ ४ ॥
लोलु सुतिन चान्य लीला करुहा,
मरुहा नाव चोन गोंडु सोंरुहा ।
युस सोंरि बगवान बागिवान सु आसी,
सुय आसि वयकोंठु वासिये ॥ ५ ॥
वेंबीशन हलुमुतस कुन ओस वनान,
रावुन छु छारान बगवानस ।
अमि तपु निशि प्योस अंमिस युथ नासी,
सुय आसि वयकोंठु वासिये ॥ ६ ॥
ताक़त छुमनु कोंह योंद करुहानह,
पापव मूजूब तुरु हा नह ।
आपदा पानु तस बगवान कासी,
सुय आसि वयकोंठु वासिये ॥ ७ ॥
ही नारायनु चानि नामु सुमुरनु सुत्य,
मोंख्त गामुत्य वुनि बेंयि गछन कुत्य ।
चानिस दरशनस प्रारान आंसी,
सुय आसि वयकोंठु वासिये ॥ ८ ॥
पापु दशि सुतिन मन छुम मे लरुज़न,
परज़ुनावान छुसनु कांछाह नोंव ।

इसमें अब कोई चारा नहीं; क्योंकि इन कुविचारों का क्या करूँ। मैं नींद में हूँ तथा मन उदास है--वह वैकुण्ठवासी होगा । ४ मैं प्रेम से आपकी स्तुति करता तथा मरने से पूर्व आपके नाम का स्मरण करता । वास्तव में जो भगवान् का स्मरण करेगा वह भाग्यवान् है—वह वैकुण्ठवासी होगा । ५ विभीषण हनुमान से कहने लगा--रावण अब भगवान् को ढूँढ रहा है। उसे तप (हवन) से निराशा ही हाथ लगी है--वह वैकुण्ठवासी होगा । ६ (रावण कह रहा है—) मुझ में अब युद्ध करने की ताक़त नहीं रही । अपने पापों पर मैं लज्जित हूँ। भगवान् अब स्वयं मेरी आपदाएँ दूर कर देंगे--वह वैकुण्ठवासी होगा । ७ हे नारायण! आपके नाम का स्मरण करने से कितने ही मुक्त हो गए और कितने ही मुक्त होंगे। मैं आपके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा था--वह वैकुण्ठवासी होगा । ८ पाप के कारण मेरा मन काँप रहा है और मुझे कुछ भी नया नहीं सूझ रहा है। पाप का

पापुक सुतायि हुन्द वहानु आसी,
सुय आसि वयकोंठु वांसिये ॥ ९ ॥
'प्रकाशि' पनुनि सुत्य अनिगोंट कासतम,
प्रेंयमुह सुत्य हावतम गटि मंज़ु गाश ।
तस क्याह छु यस चोन प्रकाश आसी,
सुय आसि वयकोंठु वांसिये ॥१०॥

वाज़ि हुंज़ सुता मारुन्य

कंरुन जोदूगंरी वुछतव तसुन्द्य कार ।
कंरुन मायायि हुंज़ सुता नमूदार ॥
कनन कनुदूर तनि तस सोंरगु जामह ।
वनेमच्रु अंछ पोंरुन तमि रामु रामह ॥
पुनिम च्रंन्दरमुह मोंख तस शोलु दीवान ।
अमा दशि रावुनस प्यठ आंस रीवान ॥
लंज़ुन शोंछ तस वोंदुन वाराह कंडिन केश ।
बदन दोंदुमुत छि हावान छम नु कुनि लेश ॥
रथस खांरिथ अंनिन सांनायि मंज़ बाग ।
ति डीशिथ रामस गव श्रावुनस माग ॥ ५ ॥

बहाना सीता बन गई--वह वैकुण्ठवासी होगा । ९ (हे भगवान्) अब अपने प्रकाश से मेरा अन्धकार दूर कर दीजिए और प्रेम से उसमें अपनी ज्योति जलाइए । फिर उसको क्या चिंता है जिसे आपका प्रकाश प्राप्त हो जाय--वह वैकुण्ठवासी होगा । १०

बाज़ीगरी (माया) की सीता को मारना

तब उस (रावण) ने जादूगरी (माया) रचकर करतब दिखाए और एक अन्य सीता को नमूदार किया । उसके कानों में कुण्डल और तन पर स्वर्गिक वस्त्र थे । द्युतिहीन आँखों से वह राम-राम पढ़ने लगी । उसका मुखमण्डल पूनम के चन्द्रमा के समान आलोकित हो रहा था और वह दशरावण पर जैसे रो रही थी । वह खूब रोयी और रो-रोकर उसने अपने केश उखाड़ डाले । उसका वदन जल रहा था और त्राण का कोई उपाय नजर न आ रहा था । तब रथ पर चढ़ाकर (रावण) उसे सेना के बीच में (घसीटकर) लाया जिसको देख रामचन्द्रजी स्तम्भित रह गए । ५ वह राक्षस (रावण) युद्ध करने पर (पुनः) आमादा हो गया

यॊदस प्यठ आव राख्युस यॆच्र गॊमुत शेर ।
तुजिन शमशेर तस त्रॊवुन च्रॆटिथ शेर ॥
ति याम बूज़ रामुच्रन्दुरन लॊग वनुनि ज़ार ।
वॊदॊसी गव तु ह्यॊतनस सॊरिसुय नार ॥
दिच्रुन ऋख ज़ोरुह् क्याह् रोदाद सॊंपुन ।
यॆमिस सुतायि हुन्द बेदाद सॊंपुन ॥
असुन्दि बापथ बु फ्यूरुस च्रॊन देशायन ।
च्रॆटिम मॆंज़िल तु गरि छ्यनु गोस बायन ॥
ख्यमाकॊरी ज़नख राज़ुन्य कॊमॊरी ।
मॆरिथ गॆयि छ्रॅय मे सॊंपुन्य तीरु नॊरी ॥ १० ॥

बु किशकन्दायि यॆलि सपनुस रवानह् ।
हनूमान सूज़ुमस लॊदुमस निशानह् ॥
दॊपुन तस रामुज़ुव यथ जायि यियितन ।
नरकु मंज़ बाग मॊकुलॊविथ मे नियितन ॥
बु क्याह् करुह् खॆच्र सॆ सॊरगस प्यठ व्यमानस ।
पकन गछु फेरु वॊन्य सॊरिस जहानस ॥
वॆबीशन आव कॊरनस ज़ारुह् पारह् ।
च्रु कवु बापथ सपुनमुत छुख अवारह् ॥
बु गछु पानस च्रलन वान्दर किनारन ।
वनन मंज़ वॆन्य दिमस प्रथ जायि छारन ॥ १५ ॥

और उसने शमशेर उठाकर उस (सीता) के शीर्ष को अलग कर डाला। जब रामचन्द्रजी ने यह देखा तो वे विलाप करने लगे तथा बहुत उदास हो गए। वे ज़ोर से चिल्लाए कि यह क्या हो गया। मेरी सीता का यह क्या हाल हो गया। इस (सीता) के लिए मैं चारों दिशाओं में फिरा। अनेक मंज़िलें पार कीं और यहाँ तक कि अपने भाइयों से भी बिछुड़ गया। हे जनक राजा की कुमारी ! मुझे क्षमा करना। तू मर गई (और मैं देखता ही रह गया), मेरे तीर ख़ाली चले गए। १० मैं जब किष्किन्धा वन से रवाना हुआ था तो मैंने हनुमान को तेरे पास अपनी निशानी देकर भेजा था। तब तूने उससे कहा था कि रामचन्द्रजी जल्दी यहाँ आ जाएँ और मुझे इस नरक से मुक्त करा के ले जाएँ। अब मैं क्या करूँ। तू विमान में बैठकर स्वर्ग चली गई। मैं तो अब सारे जहान में (उदास) डोलूँगा। तब विभीषण आ गए और ख़ूब अनुनय-विनय

लीला

मनु नोम हौंस्त गंड़ कांद कर लूबस ।
खंडुह खंडुह छांडोन श्री बगवान ।।
पानय ईशर छुख अवतारस,
आकाशि दीवताह छी तौंतान ।
पानय लौंगमुत छुख व्यवुहारस,
खंडुह खंडुह छांडोन श्री बगवान ।। १ ।।
कुनि बौंद वाति नु यथ दयि कारस,
पानय कामि करुवुन आसान ।
जुव पान वन्दुहा गंगादारस,
खंडुह खंडुह छांडोन श्री बगवान ।। २ ।।
यूत छा मूहु ब्रम यथ समसारस,
ग़म त्राव कोनु छुख दम दिवान ।
पम्पोश लागुहय पूज़ि ओमकारस,
खंडुह खंडुह छांडोन श्री बगवान ।। ३ ।।

कर उन्हें सांत्वना दी--आप क्यों विचलित हो रहे हैं ? मैं और वानर उसे वनों में तथा हर स्थान पर ढूंढ ही निकालेंगे (आप निश्चित रहें) । १५

भजन

मन-रूपी हाथी को बाँध व लोभ को क़ैदकर हम अपने श्रीभगवान् को प्रत्येक खण्ड (स्थान) में ढूंढेंगे । आपने स्वयं ईश्वर के रूप में अवतार धारण किया है । आकाश में देवतागण आपकी ही स्तुति करते हैं । (ईश्वर होकर भी) आप सांसारिकता (व्यवहार) में लगे हुए हैं--हम अपने श्रीभगवान् को प्रत्येक खण्ड (स्थान) में ढूंढेंगे । १ दैव की गति को सीमित मनुष्य-बुद्धि समझ नहीं सकती है । करना-धरना सब उनको ही होता है (मनुष्य तो बहाना मात्र है) यह जी-जान, हे भगवान् (गंगा-धारी) आप पर निछावर करूँ—हम अपने श्रीभगवान् को प्रत्येक (स्थान) में ढूंढेंगे । २ इस संसार का मोह-भ्रम क्या इतना प्रबल है (जो आप हमारी सुध नहीं ले रहे हैं ?) ग़म छोड़कर आप दम क्यों नहीं भर रहे हैं (हम पर प्रसन्न क्यों नहीं हो रहे हैं) हे ओंकार-स्वरूप ! पूजा में आपको कमल(पंकपुष्प) लगाऊँ--हम अपने श्रीभगवान् को प्रत्येक खण्ड (स्थान) में ढूंढेंगे । ३ सीता बीच गुलज़ार में बैठी हुई है । क्षण-क्षण उसे आपके ही ध्यान का स्मरण हो आता है तथा वह दिन-रात आपको ही मनाने में

सुता छे बिहिथ मंज़ गुलज़ारस,
ख्यनु ख्यनु द्यान चोन मनि सौरान ।
द्यन रात लंजमुज्ञ च्रेय ज़ारुह पारस,
खंडुह खंडुह छांडोन श्री बगवान ।। ४ ।।

पछ मु कर रावुनस जोदूगारस,
रंगु रंगु माया छुय हावान ।
टंगु आयि अंस्य ति सोज़ुन सु यमु दारस,
खंडुह खंडुह छांडोन श्री बगवान ।। ५ ।।

लंडुनस नेर ज़न द्राख शिकारस,
छारुन तु मारुन लायुस कान ।
वालुन यैति ज़ालुन नारस,
खंडुह खंडुह छांडोन श्री बगवान ।। ६ ।।

प्रकाशि गाश अन मुहु अन्दुकारस,
वथ हावतम सथ व्यचारु सान ।
न्यथ पूज़ुहथ प्रथ ठोकुर दारस,
खंडुह खंडुह छांडोन श्री बगवान ।। ७ ।।

रावुनस सुत्य जंग

ति बूज़िथ वोथ योदस लार्योव यकबार ।
अंगुद सुगरीव सांपुन छतरुह बरदार ।।

लगी हुई है—हम अपने श्रीभगवान् को प्रत्येक खण्ड (स्थान) में ढूँढेंगे । ४ आप इस जादूगर रावण (की शक्ति) का भरोसा न करें । यह तरह-तरह की माया दिखा रहा है । अब हम इससे बहुत तंग आ गए हैं, कृपया इसे यमद्वार भेज दीजिए—हम अपने श्रीभगवान् को प्रत्येक खण्ड (स्थान) में ढूँढेंगे । ५ आप इसके साथ वैसे ही लड़ने के लिए निकलें जैसे आप शिकार खेलने के लिए निकले हों । ढूँढकर इसे तीर द्वारा मार दीजिए ताकि यह जलकर राख हो जाए—हम अपने श्रीभगवान् को प्रत्येक खण्ड (स्थान) में ढूँढेंगे । ६ 'प्रकाशराम' कहते हैं (हे श्रीरामचन्द्रजी !) आप हमारे मोह-रूपी अन्धकार में प्रकाश लाएँ ताकि सुविचारों से हमारा पथ प्रशस्त हो जाए और आपको हर जगह हम पूजते रहें । ७

रावण के साथ जंग

यह सुनकर वे (रामचन्द्रजी) युद्ध करने के लिए तुरन्त उठ खड़े हुए

गोंडुन वसतुर मुकटु शेरस सम्बोलुन ।
कमान ह्यथ वोंथ तु असुरन व्योल गोलुन ॥
वंदुनि लोंग लंखिमन जुव जान पादन ।
तंमिस मोंरुछलु करुनि लोंग गन्दुमादन ॥
हनूमान जोमूवन तिम द्रायि सारी ।
कोंरुख त्युथ योंद कन्यन गव खून जारी ॥
वेंबीशन फ़ौज ह्यथ पोंक वारुह वारह ।
ति डीशिथ रावुनस गंयि पारुह पारह ॥ ५ ॥
मुकाबलु द्राव तस डीशिथ सु पानह ।
वनुनि लोंग तस कडथ वोंन्य तानुह तानह ॥
च्रे पानय पांन्य पानस बाज़्य खारुथ ।
च्रु पापी छुख महारथ म्योन होरुथ ॥
करुनि लंग्य योंद अंकिस अख तीर लायन ।
च्रलन राख्यस गलन शमशेर वायन ॥
सपुन श्री राम क्रूदी तीर त्रोवुन ।
पथर पोवुन तु प्यठ बुतराच्र सोवुन ॥
ब जलदी मन्दुछि होंत बेंयि थोंद वंथिथ गव ।
सपुन रुसवा स्यठाह च्रापुनि लोंग ज़्यव ॥ १० ॥

और अंगद व सुग्रीव उनके छत्रबरदार (छत्रधारी) बने । वस्त्रादि पहन कर तथा शीर्ष पर मुकुट धारणकर वे हाथों में कमान लिये असुरों का बीज नष्ट करने के लिए चल दिए । लक्ष्मणजी उनके पादों पर जी-जान निछावर करने लगे तथा गन्धमादन (एक बलवीर वानर) मोर-पंख डुलाने लगा । हनुमान, जाम्बवान् आदि सभी निकल पड़े और ऐसा युद्ध हुआ कि पत्थरों से खून निकलना जारी हो गया । विभीषण फ़ौज लेकर धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया और उसे देख रावण का जिगर टुकड़े-टुकड़े हो गया । ५ उसे देख वे (श्रीरामचन्द्रजी) स्वयं मुक़ाबला करने को निकले और कहने लगे कि अब इस (रावण) का अंग-अंग समूल उखाड़ाना ही होगा । (वे रावण से आगे कहने लगे--) तूने स्वयं अपनी बाजी अपने हाथों से गँवा दी । तू पापी है, मेरा कहना तूने टाल दिया । इस प्रकार दोनों युद्ध करने लगे और एक-दूसरे पर तीर फेंकने लगे जिससे राक्षस भाग गए और शमशेर चलाते-चलाते गल गए । तब श्रीराम क्रुद्ध हो गए और उन्होंने एक तीर चलाया जिससे वह (रावण) नीचे गिर गया और पृथ्वी पर लोटने लगा । वह खिसियाकर पुनः जल्दी उठ खड़ा हुआ ।

तुलुन असतुर तु वान्दर मारुह सांपुन्य ।
मंरिथ गंयि कैंह तु कैंह आवारुह सांपुन्य ।।
कंरुन यंत्रकाल तामथ ज़ोरवांरी ।
दोंपुन ख्यमुह वेंह असर गंयि मारुह सांरी ।।
कुनुय ज़ोन येंलि सु गव गांटन अन्दर काव ।
गंयस हुन्य लांक यिरुवुन्य सांपुनिस नाव ।।
संगुरि प्यठ सिरियि लूसुस अनिगोंट गोस ।
बदन आट्युक अमा फवलाद होंट गोस ।।
तबल वांयिख अराबन प्यठ योंदस द्राव ।
हरन यंत्र ओंश पकन दंरियाव दंरियाव ।। १५ ।।

समय सोरुय वोंलुन पानस क़बाह् ज़न ।
त्रह मोंछि आकाश वोंथ पृथ्वी निशि बोंन ।।
कमां क्रूदुच कमन्द अज़ काम लांजिन ।
सिपर मायायि सुत्य सखती सम्बांजिन ।।
रथाह लूबुक लोंदुन रज़ि प्यठ अहंकार ।
टिकन गव ब्यूठ सूरस तल खंटिथ नार ।।

वह ख़ूब रुस्वा हुआ तथा मारे बेवसी के जीभ चबाने लगा। १० तब उसने अस्त्र उठाये जिससे अनेक वानर मारे गए। कुछ मरे और कुछ जख़्मी हो गए। काफ़ी समय तक (वह) रावण जोरावरी दिखाता रहा (प्रतिकार करता रहा) मगर जब सभी असुर मारे गए तो वह कहने लगा कि अब मैं जहर खा लूँगा। जब वह चीलों के बीच में अकेला कौआ रह गया तो उसकी आशाएँ मिट गई और उसकी जीवन-नैया इधर-उधर भटकने लगी। उसके जीवनरूपी क्षितिज से आशा का सूर्य डूब गया और उसे चारों ओर अन्धकार दिखने लगा। उसका सारा बदन गुँधे आटे की तरह नर्म बन गया, मगर गर्दन उसकी फ़ौलाद की तरह (सख़्त) हो गई। तब नगाड़े बज उठे और रथ पर सवार होकर (आख़िरी बार) युद्ध करने को निकल पड़ा। (मार्ग में) वह आँसू बहाने लगा जिससे दरिया उमड़ पड़े। १५ सभी अस्त्र-शस्त्र लेकर वह गुफ़ा में घुसा और आकाश (ऊपर) से पृथ्वी में वह तीस मुष्टिकाएँ नीचे रहा। वह क्रोध-रूपी कमान को काम में लाने लगा और माया का सिपर सम्हाल कर सख़्ती बरतने लगा। लोभ-रूपी रथ में अहंकार की रस्सियाँ बाँधी और भागकर पृथ्वी के भीतर छिप गया, जैसे राख में चिनगारी। उसने ज़िरह-बख़्तर पहन लिया और पृथ्वी में ख़ंदक बनाकर उसमें छिप गया। उसके रथ को जो क़ोई भी खींचता,

वोलुन जबु जामुह रेश्य खन्दुच दिन्नुन खूद्य ।
रथस यिम लग्य लमुनि तिम ग़म ख्यवन मूद्य ।।
वदन बुतराथ येलि वदज़ाथ ड्यूठुन ।
सपानुस न्नस दोपुन वुथ हावु कसकुन ।। २० ।।

पकन येलि गव वुछुन सारिस जहानस ।
कुनुय रावुन तु प्यतुरुन प्योस पानस ।।
कमां क्रूदुच तुजिन याम लायि हे तीर ।
दपन तामथ अंछिन तस वीठ अन्दीर्‌य ।।
ति डीशिथ पंज़्य तु वान्दर आयि लारन ।
सु पंज़्य किन्य रामुचन्दरस ओस छारन ।।
शरन सांपुन्य परन नारायनस पेय ।
वुछिथ तस राखिसस पानस लंजिस रेय ।।
वनुनि लग्य तस छु रावुन वीह दारिथ ।
त्युथुय युथ सारिनुय छुनि न्यंगुलाविथ ।। २५ ।।

महाराजा दया कर छुख नारायन ।
छि अंस्य सार्‌य वीर गलन च्रेंचल मु सांपन ।।
यि मरतबु रावुनन मोंगमुत ति दिख च्रुय ।
यि द्युत मुत छुय तमिस सोरुय ति निख च्रुय ।।

वही ग़म खाकर मर जाता। पृथ्वी ने जब इस बदज़ात (रावण) को अपने भीतर समाया हुआ देखा तो वह रोने लगी; वह दुःखी हो उठी तथा कहने लगी कि अब मैं किसको अपना मुँह दिखाऊँ। २० जब (रामचन्द्रजी) उसको सारे जहान में ढूँढते-ढूँढते वहाँ पहुँचे (जहाँ रावण छिपा था) तो रावण ने उनको देख लिया। क्रोध की कमान उठाकर जैसे ही वह तीर चलाने को हुआ, कहते हैं तभी उसकी आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। यह देखकर वानर और रीछ भागते हुए आ गए। वह (रावण) वास्तव में रामचन्द्रजी को ढूँढ रहा था। वह उनकी शरण में गया और उन नारायण को प्रणाम किया। तभी उसका राक्षसी शरीर भेद खोलने लगा जिसे देखकर (वानर व रीछ रामचन्द्रजी से) कहने लगे कि इस रावण ने स्वाँग रचा है और यह हम सबको निगलनेवाला है। २५ हे महाराजा! हम पर दया करिए, आप स्वयं नारायण हैं। हम सब वीर गल रहे हैं, आप (कृपा कर) चंचल न हों। रावण (अपने कर्मलेख में) जो गति माँगकर लाया है उसे वह आपके द्वारा ही प्राप्त होनी है।

समन्दर छुख च़ु अस्य छी पां बुबर ज़न ।
हवावाह् वोथ च़ु दवा पानु सांपन ।।
टुकन वोथ रावुनस सुतिन च़ु कर छल ।
नारायनु रछ च़ु असि पनुन्यन परन तल ।।
छु बूगुन यूत क्रेछर छु ताकत ।
नारायनु हाव रुच़ुरस कुन पनुन्य वथ ।। ३० ।।
नारायनु गटु कासिथ हावतम गाश ।
नारायनु छुय वनान लीला यि 'प्रकाश' ।। ३१ ।।

लीला
(सारी छी रामच़ंन्दरस ज़ारी करान)

नेशकलु नेशकामह ।
बजन कर रामुह रामह ।।
गोरु सुन्द ध्यान सोरुन,
तंथी प्यठ गछ़ि दरुन ।
ती गव मान करुन,
निरावमान रामु रामह ।। १ ।।

और जो कुछ आपने उसे दिया है, उसे आप ही उससे ले लेंगे। आप समुद्र हैं और हम पानी के बुदबुदे। आप बवंडर की तरह उठिए तथा हमारी दवा (रक्षा) कीजिए। जल्दी कीजिए और रावण से (आप भी) कोई छल रचिए। हे नारायण ! उठिए और हम सबकी अपने परों तले रक्षा कीजिए। लगता है हमें अभी थोड़ा-सा कठिन समय और देखना है। हे नारायण ! हम सबको अच्छाई का पथ दिखाइये। ३० हे नारायण ! हमारा अन्धकार दूर कर हमें प्रकाश दिखाइए। हे नारायण ! यह भजन आपके लिए 'प्रकाशराम' गा रहा है। ३१

भजन
(सभी का रामचन्द्रजी से विनती करना)

निष्फल और निष्काम भाव से राम-राम का भजन कर गुरु का ध्यान कर तथा उसी पर डटा रह, क्योंकि उसका मान करना निरभिमानी राम का मान करना है। १ गणपति डचोढीवान है और वह भवानी की रक्षा कर रहा है। उससे तू (हे जीव !) परिचय बढ़ा क्योंकि वही आदि-शक्ति राम हैं। २ अन्दर

गनुपत छु डीडच वानुय,
तस सूत्य थाव च़ु ज़ानुय।
यौंसु छय मांज ववांनी,
आदि शखुत्य रामु रामह ।। २ ।।

अंन्दरी अच़ू अन्दर,
तति छुय शिवु मन्दर।
तंथ्य अन्दर शामुसौन्दर,
न्यरमल रामु रामह ।। ३ ।।

वेशनु रूपुह हाव में दरशुन,
शौंबु अमर्यतु वरशुन।
कर्यो पोशि वरशुन,
ख्यनुह ख्यनुह रामु रामह ।। ४ ।।

शान्त गव मनि शमुन,
शेंमि येलि छुसनु भ्रमुन।
वासुनायि निशि हमुन,
हनि हनि रामु रामह ।। ५ ।।

वांनी सथ ववांनी,
नंव नंव छय नवांनी।
प्रजुनिथ सौंय प्रमांनी,
बोंज़ वेंशि रामु रामह ।। ६ ।।

गोंरस मीलिथ वु कुनुय,
तति क्याह रोज़ि ब्योंनुय।

से तू और अन्दर चला जा। वहाँ पर तुझे शिवमन्दिर दिखेगा। और वहीं पर निर्मल श्यामसुन्दर राम हैं। ३ हे विष्णु-रूप! मुझे दर्शन दीजिए। मैं अमृत व पुष्पों की वर्षा प्रतिक्षण राम के ऊपर करता रहूँगा। ४ शांत होने का मतलब है मन का शांत हो जाना। जब मन शांत हो जायेगा तो फिर भरमाएगा नहीं और वासना (कुबुद्धि) से, राम-कृपा से धीरे-धीरे पीछे हट जाएगा। ५ सत्यवाणी द्वारा नित्य नवीन सुखों की प्राप्ति होगी और उसी से परमात्म-सिद्धि, बुद्धि-वेत्ता राम की कृपा से मिल जाएगी। ६ गुरु से मिलकर मैं एक हो गया तथा फिर कोई भेद न रहा और रामचन्द्र के प्रकाश से सत्-स्वरूप प्रत्यक्ष हो गया। ७

सथ सौंरूप द्राव नोंनुय,
सौं प्रकाश रामु रामह ॥ ७ ॥

असथ ज़ानुन यि माया,
माया बेयि काया ।
ठोंर पनुन कास च्रु छाया,
सौं प्रकाशि रामु रामह ॥ ८ ॥

तीज़ येलि मेलि तीज़स,
वनतु हान कथ चीज़स ।
दवाह सुय प्रथ मरीज़स,
वीदुह मोखु रामु रामह ॥ ९ ॥

ह्यमु गोरुह द्यान चोनुय,
सुय मे अमर्‌यथ ज़ोनुय ।
वन्दुयो सोर क्रोनुय,
त्ररुनन रामुह रामह ॥ १० ॥

वेवीक थव सथ व्यच्रारस,
वातख मूखि दारस ।
मेलुन छु बालुयारस,
नाथु म्यानि रामु रामह ॥ ११ ॥

छुस नु च्रिह्न छुय सु आदी,
न्यर व्यवाद न्यरवोपादी ।
मानह तथ ज़ानि सादी,
सथज़न रामुह रामह ॥ १२ ॥

इस माया को असत्य जान । इस माया को व इस काया को भी । तू (आँख की) फुल्ली को (इस माया को) रामचन्द्र के प्रकाश द्वारा दूर कर । ८ जब तेज से तेज मिल जाता है तो फिर किस चीज की कमी रह जाती है ? वही वेदमुख श्रीराम हर मरीज़ की दवा हैं । ९ हे गुरु ! मैं आपका ध्यान धरूँ । इसमें मुझे अमृत प्राप्त होगा । हे राम ! आपके चरणों पर सारा कुटुम्ब निछावर करूँ । १० (रे जीव!) विवेक द्वारा सत्‌विचारों को जमाकर, तभी मुख्यद्वार (परमसिद्धि) तक (निर्विघ्न रूप से) पहुँच पायेगा और तब तुझे नाथों के नाथ श्रीराम मिल जाएँगे । ११ उनका कोई चिह्न नही है, वे आदि हैं । वे निर्विवाद व निरुपाधि हैं । श्रेष्ठ साधु-संतों व

मव गछ़ मूह़ व्रमस,
लय कर सूं ह्‌मस ।
साँपुनी ज़्याद़ह कमस,
शब्दु ब्रह्मु रामु रामह़ ।। १३ ।।

तमी वोनुमय च्रु थव कन,
सतस सूत्य आशरुन मन ।
सोनस छ़त गाल ह़न ह़न,
यूगु तलु रामु रामह़ ।। १४ ।।

ज़ानु खय छ़ुख च्रु सथ वाव,
सतुची कथि कन थाव ।
अपज़िस प्यठ मह़ वर चाव,
सथ सोवावुह़ रामुह़ रामह़ ।। १५ ।।

तिछ़ वोद कति अंतिरे,
सथ सोरूप प्रज़ली च्रे ।
प्रज़ुनिथ सुय च्रु बंतिरे,
मनु किन्य रामुह़ रामह़ ।। १६ ।।

यस नु खसि रामुह़ रूफुय,
न्यर लीफ न्यर अलीफुय ।
त्रेया त्युथ अन अंतीथुय,
नामुह़ रूपुह़ रामुह़ रामह़ ।। १७ ।।

सज्जनों का भी श्रीराम के सम्बंध में यही कहना है । १२ तू मोह के भ्रम में न उलझ तथा सोऽहम् से प्रीति रख, उसी से तेरी विपन्नता सम्पन्नता में बदलेगी । (इस कार्य में) शब्द ब्रह्म रामचन्द्रजी भी तेरे सहायक होंगे । १३ इसीलिए कह रहा हूँ, तू ज़रा कान धर । सत्य के साथ अपने मन को मिला दे तथा योगी रामचन्द्रजी की कृपा से अपनी सोने की (काया को) तपाकर उसका सारा मैल गला दे । १४ यदि (हे जीव !) तू जाने, तो तू जानकार है । सत्य की बात पर ज़रा कान रख और रामचन्द्रजी की भाँति सत्-स्वभावी बनकर असत्य पर रीझ न । १५ वह बुद्धि तुझ में जाने कब आएगी जब सत्स्वरूप तेरे मन में प्रज्वलित हो उठे और रामचन्द्रजी की कृपा से उसे मन में पहचानकर तुझे आत्मज्ञान हो । १६ राम का कोई रूप नहीं है । वे निर्लिप्त व निर्लेप हैं । ऐसे रामचन्द्रजी के स्वरूप को अपने मन में (रे जीव !) तू बिठा । १७ उनका रूप मेरी

नाम रूफ लोंग में दीह्स,
काम क्रूद गछि बे ह्यस ।
अमर्यत बनि वेंह्स,
लूब गंलिथ रामुह रामह ।। १८ ।।

मान मो ज़ान अवमान,
सोंय छय दोंह्स प्यठ हान ।
त्रुख छुख पान परज़ान,
बोंज़ अन्दर रामुह रामह ।। १९ ।।

ज़ुरुन येंलि गछि जामह,
छिस दिवान लूख पामह ।
छुस नु कुनि आरामह,
नेंशिवुन रामुह रामह ।। २० ।।

मुरुख मन गछि मारुन,
सथ असथ व्यच्रारुन ।
अब्यासुचि हेरि खारुन,
ज़ेरि ज़ेरि रामुह रामह ।। २१ ।।

सथ ज़लुह मन छलुन,
सुय गव ब्यन गलुन ।
पोशि बाग़ हेंयि फोंलुन,
समु बावु रामुह रामह ।। २२ ।।

देह में समा गया जिससे काम-क्रोध अचेत हो गए और रामचन्द्रजी की कृपा से लोभ गल गया व विष अमृत बन गया । १८ मान (अभिमान) को तू अपना न समझ । इसी से तेरी देह नष्ट हो जायेगी । यदि तू प्रबुद्ध है तो रामचन्द्रजी की कृपा से बुद्धि द्वारा अपने आपको पहचान । १९ जब यह तेरी काया जीर्ण हो जायेगी तो लोग (हर कोई) तेरा तिरस्कार करेंगे और तुझे कहीं पर भी आराम नहीं मिलेगा । रामचन्द्रजी द्वारा ही तू पार लग सकता है । २० मूर्ख मन को मारकर सत्य-असत्य का विचार करना चाहिये तथा रामचन्द्रजी की कृपा से उसे अभ्यास की सीढ़ी

पशि पंश्य फल च्रे च्रली,
पंश्य बाव येलि गली।
शिव ज़ान थलि थली,
शेशिकलुह रामुह रामह ॥ २३ ॥

दोह अकि दीह च्रु त्रावख,
पंश्य बावुह पशितावख।
टाठ्यन निशि रावख,
प्रावख रामुह रामह ॥ २४ ॥

मोमता सार त्रावुन,
परम् पद प्रखुटावुन।
हृदयि कमल फोलुनावुन,
सोयम्बरुह रामुह रामह ॥ २५ ॥

कोताह छस वु दुयन,
ज़नमस कांह मु यियिन।
गाश हो आम लुयन,
सोप्रकाशि रामुह रामह ॥ २६ ॥

वालुबावुह गिन्दुमु हारन,
यावुन ओस दूरि प्रारन।
बुजर आम पतुह लारन,
छेति केशु रामुह रामह ॥ २७ ॥

युस गव दयि वते,
ज़नुम तंम्य खोर रथे।

एक दिन तुझे यह देह छोड़ देनी होगी और तब तू अपनी पशुवृत्ति पर पछतायेगा तथा प्रियजनों से विमुख होकर रामचन्द्रजी को प्राप्त हो जायेगा। २४ सकल ममता को त्यागना होगा तभी परम-पद प्राप्त हो जायेगा और हृदय में (तेरे) रामचन्द्रजी की कृपा से कमल खिल उठेंगे। २५ (जन्म लेकर) मैं कितना दुःखी हुआ था। मगर रामचन्द्रजी के प्रकाश से मेरा अंग-अंग प्रज्वलित हो उठा (प्रकाशित हो उठा, मैं आनन्द का अनुभव करने लगा)। २६ वचपन मैंने खेलने में बिताया तथा (बाद में) यौवन ने मेरा इन्तिज़ार किया। इसके वाद बुढ़ापा आया और (रामचन्द्रजी) का स्मरण करो-करते) मेरे केश-श्वेत हो गये। २७ जो ईश्वर-मार्ग पर चला उसने

कालस लोंग नु अथे,
ज़्रि ज़ीवु रामुह रामह ॥ २८ ॥

सुय छुय मूखी दाता,
मोल मांज बन्द तु भ्राता।
तस रोंस केंह नु बाथा,
रछि वुन रामुह रामह ॥ २९ ॥

सोंदामुन कोंम फोंलुय,
त्रुबवन ह्यथ सु ज़्रोंलुय।
तोति तंम्य लोग कोंलुय,
नेंश बोंद रामुह रामह ॥ ३० ॥

मनस कर सूरुह सेकल,
आयीनुह गछि न्यरमल।
वुछुन पानय सु नेंशकल,
नेंशचल रामुह रामह ॥ ३१ ॥

पकुन गछि बजि वते,
सोंर थाव गोंरुह कथे।
रोवुमुत यियि अथे,
पानय रामुह रामह ॥ ३२ ॥

युस छटि कमि नेरी,
अब्यासुचि ज़ेरि ज़ेरी।
रुत फल ह्यथ सु नेरी,
हेंलि हेंलि रामुह रामह ॥ ३३ ॥

अपने जन्म को सँवार लिया और काल के मुँह का रामचन्द्रजी की कृपा से वह (जीव) ग्रास न बना। २८ वही मुक्तिदाता है, वही माँ, बाप व भ्राता हैं। उनके बिना और कोई बात नहीं है। रामचन्द्रजी ही रक्षाकारी हैं। २९ सुदामा के तण्डुल चुराकर वही तीन भुवनों में भागे और फिर भी कृतज्ञता प्रकट करते रहे। रे निब्बुद्ध ! रामचन्द्रजी की महिमा समझ ! ३० अपने मन को राख से माँज। तब वह (मन) आईने की तरह निर्मल होगा और उसमें तुझे स्वयं निष्कल व निश्चल रामचन्द्रजी दिख जायेंगे। ३१ सदैव श्रेष्ठ पथ पर चलना चाहिये और गुरु के कथन पर ध्यान देना चाहिये जिससे तेरा खोया हुआ रामचन्द्रजी की कृपा से प्राप्त हो जायेगा। ३२ जो झंझटों से निकलकर अभ्यास द्वारा

तस क्याह् करि करुम,
ज़ोन यॆम्य सूर ज़नुम ।
मॉनिथ ती मे वोनुम,
साख्यात रामुह् रामह् ।। ३४ ।।

मो गछ़ बांबुरे,
कालु बयि तन हरे ।
दीहु नाव क्यथु दरे,
गण्डुह रंज़ रामुह रामह् ।। ३५ ।।

दयि लोन यी मे ओसुम,
ती नाव कॉसि कोसुम ।
च़ोक मोंदुर च़ालुन छुम,
करमु फलु रामुह रामह् ।। ३६ ।।

दीहु दपान छुमनु अबाव,
मॆय मंज़ सोर प्रबाव ।
पॉन्च़न तां लोंगुम नाव,
पॉन्च़ु जनु रामुह रामह् ।। ३७ ।।

वासुनायि रंस्य यिमय,
ज़ानान तस छि तिमय ।
यस छु वोंदयुन समय,
तस ति नष्ट रामुह रामह् ।। ३८ ।।

धीरे-धीरे मन को साधने लगेगा उसे रामचन्द्रजी की कृपा से विपुल मात्रा में श्रेष्ठ फल की प्राप्ति होगी । ३३ उसे भला भाग्याधीन रहने की क्या ज़रूरत है जिसने अपने जन्म को पहचान लिया हो । इसीलिए मैं तुझसे कह रहा हूँ कि रामचन्द्रजी की साक्षात् कृपा का पात्र बना । ३४ (रे जीव !) तू व्यर्थ जल्दी न कर, इससे तेरा तन सुख न पायेगा और फिर तेरे देह की नाव बिना रामचन्द्रजी की कृपा-रूपी रस्सी द्वारा कैसे बँधी रहेगी ? ३५ जो मेरे (तेरे) भाग्य में लिखा है, वह कोई भी मिटा नहीं सकता । रामचन्द्रजी द्वारा निर्दिष्ट कर्मफल के खट्टे—मीठे अनुभवों को सबको भोगना ही है । ३६ (अहंकर, वश) देह कहती है कि मुझे कोई अभाव नहीं है, मुझमें सब प्रभाव हैं । इसीलिए रामचन्द्रजी की कृपा से मेरा नाम पंचभूत पड़ा । ३७ जो वासना-रहित हैं वही उसको जान सकते हैं । जिनका समय (भाग्य) उदय पर हो वे भी रामचन्द्रजी के इशारे पर

यियि हम च्यथ लये,
सुमुरनि चानि दये ।
च्रलि ह्यम कालु बये,
ज़नमु ज़नमु रामु रामह ॥ ३९ ॥

गुन्यानुच लय च्रु करि ज़े,
वेंगन्यानु थ्यत च्रु बंर्‌य ज़े ।
मूहु स्यन्दि कोनु तंरिज़े,
वोंटि अकि रामुह रामह ॥ ४० ॥

प्रंयमुचि हांकले,
लयि गछ प्रज़ले ।
गलि तति मूहु मले,
च्यथ वेंमरशि रामुह रामह ॥ ४१ ॥

शीन ज़न छुस बु गलन,
नोंव नोंव दीह छु फोंलन ।
कालु बयि तोतु कलन,
बोलुवुन रामुह रामह ॥ ४२ ॥

तस क्याह वेंत्रि वनुन,
येंम्य नु ज़ोन ज़ीव पनुन ।
नारुह विज़ि क्रूर खनुन,
मुरखु बोंज़ रामुह रामह ॥ ४३ ॥

नष्ट हो सकते हैं । ३८ रामचन्द्रजी का स्मरण करने से तेरे सभी दुःख दूर हो जायेंगे तथा काल के भय से तेरा निवारण होगा, व जन्म-जन्म के लिए तू सुखी हो जायेगा । ३९ ज्ञान से तू प्रीति रख तथा अज्ञान से दूर रह । तब रामचन्द्रजी की कृपा से तू मोह की नदिया को एक ही छलाँग में पार कर जायेगा । ४० यदि तू प्रेम की साँकल को पकड़कर लीन हो जाए तो तेरा (चित्त) प्रज्वलित हो उठेगा और रामचन्द्रजी की कृपा से तेरा चित्त निर्मल होकर मोह का मैल गल जायेगा । ४१ बर्फ़ की तरह मैं गल रहा हूँ पर फिर भी यह देह नित्य नवीन गुल खिलाती रहती है । काल के भय से जो वाणी अवाक् हो जाती है वही रामचन्द्रजी की कृपा से सवाक् हो उठती है । ४२ उपदेश उसे भला क्या करे जिसने अपने जीव (मन) को जाना न हो । रे मूर्ख-बुद्धि ! आग लगने के समय कुआँ खोदने से क्या लाभ ? ४३ रे मन ! तू भला क्यों भरमाया ? तू सत्य के साथ घुला

हा मनु क्याज़ि ब्रम्योख,
सतस सूत्य कोनु शम्योख।
गॊरस पथ कोनु नम्योख,
न्यर अबिमानु रामुह रामह ॥ ४४ ॥

तिम बंखुत्य कति आसन,
नॆशकल न्यरवासन।
त्यागित सूर फासन,
लूब ह्यथ रामुह रामह ॥ ४५ ॥

च्यतु निशि च्यहन वूज़े,
वॆमरुश कर बॊज़े।
वॉनी द्रायि पूज़े,
तथ सथ रामुह रामह ॥ ४६ ॥

शब्द द्राव शिनि मंज़य,
यिमु शॆछि गॊरु सुंज़य।
सथ सॊरूप सॊरसुंज़ुय,
ब्यन्दु नादुह रामुह रामह ॥ ४७ ॥

सुतायि आयि वजे,
ऑपुदायि दूर च्रजे।
असरन लारुह लजे,
दयतन ति रामुह रामह ॥ ४८ ॥

रुत फल बूमि बॊवन,
सथ ज़न कोनुह नवन।

क्यों नहीं ? रामकृपा पाकर गुरु के सामने नमन क्यों नहीं किया ? ४४ ऐसे भक्त भला कहाँ मिल सकते हैं जिनका मन शुद्ध और वासना-रहित हो तथा जो रामकृपा से लोभ को त्यागकर संन्यासी बन जायें। ४५ (शुद्ध) चित्त से (शुद्ध) चेतना उपजती है तथा शुद्ध विमर्श से शुद्ध वाणी उदित होती है और फिर तत्सत् का साक्षत्कार हो जाता है। ४६ शून्य में से शब्द निकला, शब्द से गुरु की बात निकली और फिर रामचन्द्रजी की कृपा से (परम शक्ति का) सत् स्वरूप प्रकट हो गया। ४७ सीता चिरायु हो (उसी के कारण) आपदाएँ दूर हो गईं और असुर व दैत्य रामचन्द्रजी की कृपा से भाग गये। ४८ भूमि पर उन्होंने (रामचन्द्रजी ने)

आशरस छुय त्रुबोवन,
सथ सोंबावुह रामुह रामह ॥ ४९ ॥

मनि मंज़ जाय करय,
अँछिन हुन्दि गाशरय।
कर्‌यो च्रामरय,
दीपुह दपुह रामुह रामह ॥ ५० ॥

दरियाव यैलि बन्योम,
सागर तेलि नन्योम।
मान अवमान छेन्योम,
हनि हनि रामुह रामह ॥ ५१ ॥

दुपस त्रे तोथ छि आसिथ,
च्रोंग ग्यव बेयि सोयथ।
ज़ालुतन तु च्रलि दोयथ,
गाशि चानि रामुह रामह ॥ ५२ ॥

च्रोंग दिल बंखुत्य रोगन,
सोयथ परान द्रायि रोशन।
दुपस रेह छि तोशन,
गटु कास रामुह रामह ॥ ५३ ॥

जोय वंछ आगरय,
छोंख लोंगुम आरुबलय।
संगम गोम यारुबलय,
बूल यैलि रामुह रामह ॥ ५४ ॥

श्रेष्ठ फल (बीज) बोये ऐसे सत्स्वभाव वाले सज्जन के समक्ष हर कोई नमन क्यों न करे और त्रिभुवन आश्चर्य क्यों न करे ! ४९ आपको मैं अपनी आँखों में बिठाऊँगा और आँखों की पलकों से चँवर डुलाऊँगा व रामकृपा पाकर धूपदीप जलाऊँगा। ५० दरिया को देखकर मुझे सागर का अनुभव हुआ और मान-अपमान की भावना धीरे-धीरे रामकृपा से लुप्त हो गई। ५१ दीप के तीन अवयव होते हैं—दीप, घी और बाती। (रे जीव!) तू उसे जलाये तो रामकृपा से तुझे प्रकाश की प्राप्ति हो जायेगी। ५२ दिल को तू दीप मान व भक्ति को घी। फिर दीप से जो लौ झूम उठेगी वह रामकृपा से अन्धकार को दूर कर देगी। ५३ हृदय के स्रोत से झरना फूट

योंत यिथ क्याह् में कौरुम,
दयि नाव कोनु सौरुम।
ज़ोनुम नु चूर फौरुम,
कों वासुनायि रामुह रामह्॥ ५५॥

कहुवचि नेरि सोंनुय,
सोंन गालुन छु मनुय।
वस्त वनि शूवुवुनुय,
रम्बुवुन रामुह रामह्॥ ५६॥

मोंखतु येंलि जेंरिज़ि सोंनस,
शूवुवुन वस्त वन्यस।
तिथय पा‌ठ्य आत्मु दीहस,
वीदावीद रामुह रामह्॥ ५७॥

वीद यैंलि रोज़ि व्योंनुय,
अंवीद द्राव ब्रह्म कुनुय।
ब्रह्मु रूप द्राव नोंनुय,
न्यरमायि रामु रामह्॥ ५८॥

समसार कूड़ ज़ालुय,
केंच्रन वौलनु नालुय।
केंह् रूद्य अन्द खौशहालुय,
वहालि रामुह रामह्॥ ५९॥

पड़ेगा और सारा शरीर उसमें आप्लावित हो जायेगा और फिर रामकृपा से एक संगम का प्रादुर्भात होगा। ५४ यहाँ (इस संसार में) आकर मैंने कुछ भी न किया। भगवान् के नाम का स्मरण भी नहीं किया। मैं भगवत् नाम से अनभिक्ष रहा, तभी मैं लुट गया और रामकृपा से मुख मोड़कर कुवासना में उलझ गया। ५५ मन रूपी सोने को गलाकर उसे (विवेक की) कसौटी पर कसना है और तब रामकृपा से एक सुन्दर आभूपण गढ़ा जा सकता है। ५६ सोने पर जब मोती जड़े जायेंगे तो एक सुन्दर आभूषण बन जायेगा। इसी प्रकार रामकृपा से भेद–अभेद मिट जायेगा और मन निर्मल हो जायेगा। ५७ भेद जब मिट जायेगा तो फिर केवल अभेद रूपी ब्रह्म रह जाएँगे और फिर रामकृपा से ब्रह्म का यही रूप स्थायी (प्रत्यक्ष) हो जाएगा। ५८ संसार में आकर कुछ माया के जालों में पूरी तरह से उलझ गए और कुछ रामकृपा से निर्लिप्त रहकर खुशहाल बने रहे। ५९

वुछुम यैलि समदुरुय,
पकुनस कैंह नु ठोरुय।
शंमिथ आनन्द बोरुय,
यैन्दुरियव रामुह रामह ॥ ६० ॥

यूगियन छि करमु कलुय;
सुय छु अमर्‌यतु फलुय।
यूग तस दिथ छु दलुय,
दोयि प्रानुह रामुह रामह ॥ ६१ ॥

प्रंच्र यैलि प्योस सौरस,
शरन गोस सथ गौरस।
म्यूलुस बु च्रा च्ररस,
थुलु सुखिमुह रामुह रामह ॥ ६२ ॥

समसार सोपनुमाया,
पवुनस प्यठ छि काया।
वनुनुच छनुह जाया,
यमुह नेमुह रामुह रामह ॥ ६३ ॥

समसार छुनु दोरुय,
मव ज़ान मस तु मोदरुय।
कंम्य तति गरुह कोरुय,
आदि रोंस रामुह रामह ॥ ६४ ॥

जब मैंने (ध्यान-मग्न होकर) भगवत् कृपा प्राप्त की तो मैं आगे बढ़ता ही गया (ध्यान करता ही गया) और मुझे अपार आनन्द की प्राप्ति हो गई। ६० (परम) योगी कर्म में विश्वास रखता है और उसी से उसे अमृत—फल की प्राप्ति हो जाती है और फिर योग के सहारे व रामकृपा से उसके मन से द्वैतभावना दूर हो जाती है। ६१ जब मुझे प्रत्यक्ष ध्यान हुआ तो मैं सत्गुरु की शरण में चला गया और फिर रामकृपा से चराचर के साथ मिल गया। ६२ यह संसार स्वप्न—माया है तथा (मनुष्य की) काया पवन पर आधारित है। (इस सम्बंध में) तो बहुत कहा जा सकता है पर रामकृपा से कहा कुछ भी नहीं जा रहा है। ६३ संसर टिकाऊ नहीं है अतः संसार की खुशियों को अधिक मधुर न समझ। यहाँ कोई भी रामकृपा के बिना सुदृढ़तपूर्वक घर न कर सका। ६४ यह संसार एक भँवर है अतः इससे दूर ही रह। इस भव-सागर से मात्र भक्तिभाव द्वारा व रामकृपा द्वारा पार

समसार आवुलुनुय,
तमि निशि रोज़ व्योंनुय।
वखति बाव तारुवुनुय,
बवु सरुह रामुह रामह ॥ ६५ ॥

वोंशे त्रावुन ज़हरज़न,
यिथुह क्रोंछ त्रोव सरफन।
दयस कर चु पान अरपन,
सातु सातु रामुह रामह ॥ ६६ ॥

रूपु किन्य नाव मनुश प्योम,
नफसुन गोम गुदोम।
क्रूठ ती चालुन प्योम,
ज़रुह कूत रामुह रामह ॥ ६७ ॥

व्यचारुच क्रय कंरिज़े,
आत्मुच थ्यथ वंरिज़े।
रिन्दय छुख ज़िन्दु मंरिज़े,
ज़िन्दु ज़ान रामुह रामह ॥ ६८ ॥

दीवकी ज़ाख नन्दुन,
ह्योतनय कलुह वन्दुन।
मोलुनय छोंत चन्दुन,
ड्यकु श्री रामुह रामह ॥ ६९ ॥

उतरा जा सकता है। ६५ (संसार की ख़ुशियों को देख)आहें भरना ज़हर उगलना है जैसे साँप केंचुली वदलता है। तू बस अपने आपको भगवान् को अपर्ण कर। ६६ आकार-प्रकार से मेरा नाम मनुष्य पड़ा और नफ़स (सांसारिक जंजाल) की रस्सी गले में पड़ गई जिसे सहन करना मेरे लिए मुश्किल हो गया है। हे राम ! अब मैं इसे और अधिक कितना सह पाऊँगा। ६७ सुविचारों का आधार लेकर तू (हे मनुष्य !) परमात्मा को ढूंढ। यदि तू सहृदय (रिन्द) है तो रामकृपा द्वारा तू (वास्तव में) ज़िन्दा रह पाएगा। ६८ देवकी के यहाँ जब नन्दन-रूप में आपने जन्म लिया तो सभी आप पर वलिहारी हुए। तब शुभ्र चन्दन आपके माथे पर (रामकृपा) से मला गया। ६९ देव (भगवान्) का नाम सभी स्मरण करें तथा उसे किसी को न सुनाएं (मिथ्या-प्रदर्शन न करें) तब अमृत पीकर रामकृपा से हर कोई जीव-जाति जी उठेगी। ७० यह गीत भक्त वासुदेव ने कहा है जिसे

दयि नाव सौंरिज़ि रसय,
यिनुह कांह बोज़ि ठसय ।
अमुर्यथ च्यथ बु लसय,
ज़ीवु ज़ाथ रामुह रामह ॥ ७० ॥

बंखुत्य वंन्य वासुदीवन,
वेंशनुह पाद मनि सीवन ।
अमर गछ़ि नारायन,
सों प्रकाशि रामुह रामह ॥ ७१ ॥

पद्यन प्यठ शेरुह निशि त्रोवुख अमामह ।
परुनि लंग्य पंज़्य तु वान्दर रामुह रामह ॥
वदुनु सूत्य पान येंलि नोवुख वंनिख ज़ार ।
शरन गंयि ईशरस त्रोवुख अहंकार ॥
स्यठाह गोख साविदां मन गोलखु दुशमन ।
शंमिथ बीठ्य वारुह संतूशस दित्रुख तन ॥
लबख पोंज़ अन्त थावख योंद यि कथ याद ।
गली राख्युस तु अदुह सारुय ज़ली व्याद ॥
कुनी कथ बोज़ मनु गछ़ ईशरस कुन ।
परुन अद्या सतुच हावी सु दरशुन ॥ ५ ॥

मुनकर मनुष्य को विष्णु–पाद के प्रति भक्ति जागेगी तथा नारायण की कृपा से वह अमर हो जाएगा और रामकृपा से उसे स्व-प्रकाश (आत्मशांति) प्राप्त हो जाएगा । ७१

(तब) सिर से (अपने–अपने) दस्तार उतारकर और उन्हें रामचन्द्रजी के चरणों के सामने रखकर सभी वानर राम-राम पढ़ने लगे । रो-रोकर और दुखड़ा कहते-कहते जब उनका शरीर धुल गया तो स्व-अस्तित्व भूलकर (अहंकार छोड़कर) वे ईश्वर की शरण में चले गए । तदुपरान्त उनका मन प्रसन्न होने लगा और (भयरूपी) दुश्मन गलने लगा । वे (वानर) संतोषवृत्ति का अनुसरण कर एकाग्रचित्त होकर बैठे रहे । सच है, व्यक्ति को तभी परमार्थ की प्राप्ति हो सकती है, तभी उसका (दुष्प्रवृत्ति रूपी) राक्षस गल सकता है और सारी व्याधियाँ मिट सकती हैं यदि वह एक बात याद रखे । (सौ बात की) एक बात यह है कि व्यक्ति उस ईश्वर की शरण में चला जाए और सत्य को न छोड़े । तब वे दर्शन (अवश्य) देंगे । ५ कहते हैं, जब रामचन्द्रजी ने रावण को देखा

दपन यॅलि रामु च्रन्दुरन ड्यूठ रावुन ।
यिमव युथ वुछ तिमन त्युथ ओस हावुन ।।
वनुनि लोंग वान्दुरन कुन क्याह छु चारुह ।
असुर डीशिथ गछ़न वुतरांच्र पारुह ।।
वॅनिव वुनिक्यन कॅमिस छिवु रावुनुनी ज़ोर ।
अॅनिव तस कलु च्रॅटिथ समुयस कॅरिव दोर ।।
दपान सार्यन तिमन सॉपुन्य ज़वान वन्द ।
हुमुनि लॅग्य पान यिथुह अॅगनस हुमन कन्द ।।
शरन सॉपुन्य परन तिम रामुह रामह ।
छॆ असि चॉनी दया श्री रामुह रामह ।। १० ।।

लीला

सॉरी छि रामजियस जारु पारुह करान

च्रोंतुर बोजुह वॅशनु रूपुह च्रराचरो ।
आंसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।।

आदिशक्ति हुन्दे आदिकारो,
यॅमि बवुसरुह मंज़ु असि द्यू तार ।
समसारुह सागरुह मंज़ु छुख सारो,
आंसिनय च्रॆय सोन जय जयकार ।। १ ।।

तो उन्होंने उसे वैसा ही पाया जैसा औरों ने देखा था । तव वे वानरों से कहने लगे—अव इसमें कोई चारा नहीं रहा, इस असुर को देख भूमि भी खण्ड-खण्ड होने लगी है । अतः इसका पतन करना आवश्यक है । वोलो, तुम में से किसमें इतने ज़ोर हैं जो रावण को धराशायी कर सके और उसका सिर काटकर काल-विजयी वन जाए । यह कहते-(यह सुनकर) उन सभी (वानरों) की ज़ुवान बन्द हो गई और रामचन्द्रजी के समक्ष अपने-आपको अर्पण करने लगे जैसे हवनाग्नि में घृत, कंद आदि । वे सभी राम-राम पढ़ते हुए रामचन्द्रजी की शरण में गए और कहने लगे हम सब तो बस, आपकी ही दया पर टिके हुए हैं । १०

भजन

सभी का रामचन्द्रजी को अनुनय—विनय करना

हे चतुर्भुज ! विष्णु—रूप ! चर-अचर में निवास करनेवाले ! आपकी जय—जयकार हो । १ हे आदि—शक्ति के अधिकारी ! इस भवसागर से हमें

पाँच प्रान सान्य छी च्रेय गारानो,
तारान च्रुय छुख नारानो।
शामु रूपुह रामु जुवुह बडि बगवानो,
आँसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। २ ।।

हलमुत लोंदुर ओस ओंश हारानो,
थारान रावुनुनि अन्दुकारु सुत्य ।
दयतन हुन्द योल छुख गालानो,
आँसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। ३ ।।

यथ ज़गुतस मंज़ छुख च्रु शूबानो,
शूबायि सुत्य छुख च्रु बोंड बगवान ।
शोडशी कलायि सुत्य जय बगवानो,
आँसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। ४ ।।

वुछतन यि समसार प्रानी वाँसे,
परज़ुनावान छुनुह काँह काँसे ।
यिथि अन्दुकारुह निशि रछ्तु नारानो,
आँसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। ५ ।।

ब्रह्मा पनुनि पानु मायायि सुती,
कायायि निशि छुनु कांछाह दूर ।
माया च्रेय निशि गोंडुह वोंपुदानो,
आँसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। ६ ।।

पार उतारिए। आप इस सागर-रूपी संसार के सब-कुछ हैं—आपकी जय-जयकार हो। १ हमारी पँच-इन्द्रियाँ आपको ही ढूँढ रही हैं। इस संसार से पार लगानेवाले आप ही हैं। श्याम-रूप रामचन्द्रजी ! आप बहुत बड़े भगवान् हैं—आपकी जय-जयकार हो। २ हनुमान और उसके साथी अश्रु बहा रहे हैं और रावण के अन्धकार (प्रकोप) से काँप रहे हैं। दैत्यों का बीज तो आपको ही गलाना है—आपकी जय-जयकार हो। ३ आप इस जगत् में सुशोभित हो रहे हैं और अपनी शोभा से आप बहुत बड़े भगवान् हैं। षोड़श कलाओं से युक्त, हे भगवान् ! आपकी जय-जयकार हो। ४ इस संसार की पुरानी रीत देखिए (थोड़ी-सी उन्नति करने पर) कोई किसी को पहचानता भी नहीं है। हे नारायण ! ऐसे अन्धकार से हमारी रक्षा कीजिए—आपकी जय-जयकार हो। ५ ब्रह्मा अपनी माया से ही कुछ हैं और सारे जीवों की काया भी इसी (माया) द्वारा क्रियाशील

आपुदा कोनु छुख असि कासानो,
वासान च्रुय छुख हृदुयस मंज़ ।
वासान व्याद वेगुन छुख कासानो,
आसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। ७ ।।

ओमकार शबुद चोन मनि ज़पानो,
ओमुकुय शब्द तारुह तारानो ।
त्रुज़गत दीव छी च्रेय सूत्य आसानो,
आसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। ८ ।।

ही कृष्नु ही रामु ही वारगवरामो,
दोखु क्रूदु निशि रछतु सुवह् शामो ।
चानि नावु सूत्य सोर ज़गत मोकुलानो,
आसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। ९ ।।

सुगरीव अंगुद छी च्रेय छ़ारानो,
रावुनुनि मुहु निशि तिम ति थारान ।
अन्दुकारुह निशि छुख बोन वालानो,
आसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। १० ।।

असारुह समुसारु निशि वोन्य मोकुलाव,
पनुने अनुग्रह सूतिन वथ हाव ।
कामु क्रूदु लूबु निशि रछु वगुवानो,
आसिनय च्रेय सोन जय जयकार ।। ११ ।।

रहती है । यह माया सर्वप्रथम आपके द्वारा ही उत्पन्न की गई—आपकी जय-जयकार हो । ६ हमारी आपदा आप दूर क्यों नहीं कर रहे हैं ? आप तो हमारे हृदय में वसे हुए हैं । अव हमारी व्याधियों और विघ्नों को दूर कर दीजिए—आपकी जय-जयकार हो । ७ आपके ओंकार शब्द से ही पार लगा जा सकता है । त्रिजगत् के देवता आपके ही संग रहते हैं—आपकी जय-जयकार हो । ८ हे कृष्ण ! हे राम ! हे भार्गव-राम! हमारी दुःख व क्रोध से सुवह-शाम रक्षा कीजिए। आपके नाम-मात्र से सकल जगत् मुक्त हो सकता है—आपकी जय-जयकार हो। ९ सुग्रीव और अंगद आपको ही ढूँढ रहे है। रावण की मोह माया से वे भी भय खा रहे हैं (काँप रहे हैं) आप अन्धकार से मुक्त करने वाले हैं—आपकी जय-जयकार हो । १० इस असार संसार से अव हमें मुक्ति दिलाइए और अपने अनुग्रह से सत्पथ दिखाइए । काम, क्रोध और लोभ से हमारी रक्षा कीजिए—आपकी जय-जयकार हो । ११

सोरुय ज़गत च्रेय नमुने आमुत,
च्रामुत यथ दोखु गरसुय मंज़ ।
मायायि अन्दुकारु सूत्य छुनु ज़ानानो,
आसिनय च्रेय सोन जय जयकार ॥ १२ ॥

कात्या आयि कूत्य गंयि पकानो,
कात्या मूद्य कुनि रोज़ुवुन नु कांह ।
कात्या दयत चानि अथु मरानो,
आसिनय च्रेय सोन जय जयकार ॥ १३ ॥

बंखुत्यन यिथु छुख प्रसन्द रोज़ानो,
सोरुय छुख तिमन मंज़ बासान ।
प्रेयमु बावु तिम छी च्रेय ज़ानानो,
आसिनय च्रेय सोन जय जयकार ॥ १४ ॥

प्रकाशि पनुनि छुख गटु कासानो,
बासान तिमन छुख मंज़ हृदुयस ।
अनि गटि मंज़ छुख गाश हावानो,
आसिनय च्रेय सोन जय जयकार ॥ १५ ॥

श्री राम छु रावुन मारान

दपन येलि रामु च्रन्दुरन बूज़ लीला ।
वोंदुनि वोंथ ह्यथ अथस क्यथ त्रुशीला ॥

सारा जगत् आपको नमन करने आया है। सकल जगवासी अत्यन्त दुःखी हो रहे हैं क्योंकि माया के अन्धकार के कारण उन्हें कुछ भी नहीं सूझ रहा—आपकी जय-जयकार हो। १२ कितने ही (दैत्य) आए और कितने ही चलते बने। कितने ही मरे और कहीं कोई न रहा। अब कितने ही दैत्य और आपके हाथों से मरनेवाले हैं—आपकी जय-जयकार हो। १३ आप अपने भक्तों पर सदैव प्रसन्न रहते हैं और उनमें अपनी प्रति-छाया देखते हैं। वे भी आप में प्रेम-भाव देखते हैं—आपकी जय-जयकार हो। १४ अपने प्रकाश से आप (भक्तों का) अन्धकार दूर कर देते हैं और उनके हृदय में वास करते हैं। घने अन्धकार में आप उन्हें प्रकाश दिखाते हैं—आपकी जय-जयकार हो। १५

श्रीराम का रावण को मारना

कहते हैं, जब रामचन्द्रजी ने यह स्तुति-गीत सुना तो हाथों में एक

पकान गव पानु दयतन लोंग करुनि डास ।
ति यैलि वुछ रावुनन वैयि ग्रोंठ कुन आस ।।
ज़्रटुनि लोंग कलु दंह तस तीरुह सूती ।
तमी तीरु सूत्य अदु कूत्य दयत मूदी ।।
सु कांह्युम कलु ज़्रटुनि लोंग तस सु वगवान ।
दपन सुय कलु तस मा ओस गोंनुवान ।।
ज़्रंटिथ दहं कलु वैयि तस गंयि वरावर ।
त्युथुय ओस सांमियन द्युतमुन तंमिस वर ।। ५ ।।

प्रबातन न्यथ वोंथान पूज़ाह करान ओस ।
ज़्रंटिथ दंह कलु शिवु पूज़ा परान ओस ।।
दोंहु अकि पानु शिव जी तस प्रसन्द गव ।
ज़्रटुनि लोंग कलु कांह्युम दोंपनस युथुय थव ।।
तमी विजि ओस महाकाल तति गोंमुत दूर ।
गंयस व्यसुरिथ वोंद अदुह सांपुनुस सूर ।।
दपन यैलि रामुज़्रन्दुरन वुछ यि अहवाल ।
वनुनि लोंग रावुनस किथु पांठ्य यियसकाल ।।

त्रिशूल लेकर वे उठ खड़े हुए । वे आगे वढ़ते गए और दैत्यों को दलित करते गए । यह हाल जव रावण ने देखा तो वह (प्रतिकार के लिए) सामने आया । तव (रामचन्द्रजी ने) तीरों से उसके दस सिर काट डाले और इन तीरों से और भी कितने दैत्य मर गए । तव वे भगवान् (रामचन्द्रजी) उसका ग्यारहवाँ सिर काटने को प्रस्तुत हुए । कहते हैं, उसका वही सिर गुणवान था । (इतने में) कटे हुए दस सिर पुनः वरावर हो गए--क्योंकि स्वामी (शिव) ने उसे ऐसा ही वर दिया था । ५ वह रावण नित्य प्रभातवेला में जागकर पूजापाठ किया करता था तथा अपने दस सिर काटकर वह शिवपूजा किया करना था । एक दिन स्वयं शिवजी उसपर प्रसन्न हो गए । (उन्हें देखकर) वह ग्यारहवाँ सिर भी काटने को उद्यत हुआ मगर तभी शिवजी ने उसे रोका और इसे यथावत् रखने का आदेश दिया । उस समय महाकाल जाने कहाँ दूर निकल गए थे । अतः (रावण की) वुद्धि चकरा गई और उसका पतन निश्चित हो गया । इधर, रामचन्द्रजी ने जव यह अहवा (हाल) देखा (कि रावण के कटे सिर पुनः जीवित हो जाते हैं) तो वे कहने लगे कि जाने इस रावण का काल कैसे आ सकता ! सभी (वानर आदि) डरकर उनकी (रामचन्द्रजी) की शरण में चले गए और यह देखने को प्रस्तुत हो गए कि अव रावण की क्या दुर्गति होनेवाली है । १०

शरन सांपुन बेयन पुछ्य खूत्र पानुह ।
वुछख वोंन्य रावुनस क्या गछि वकानुह ।। १० ।।
त्रटुनि तस कलु दंह लोंग बेयि दुबारह ।
त्रंटिथ ब्योंन ब्योंन त्रांविनस वारुह वारह ।।
यि कांह्युम कलु त्रटुनि येंलि लोंग तंमिस यी ।
दपान तान रावुनन होवुनस पनुन वीह ।।
त्युथुय अदुह आव नारुद गुल्य गंन्डिन तस ।
दोंपुन तस रामुचन्द्रुरस बस युतुय बस ।।
छु अमुर्यतु नोंट अंमिस हृदुयस मंज़वाग ।
प्रसन्द रोज़ तीर ह्यथ अंमिसुय अंती ज़ाग ।।
नतय शिवु वर छुनह ज़ांह कांसि फेरन ।
तमी वरुह कर अंमिस छी प्रान नेरन ।। १५ ।।
कंरिव तोंह्य ध्यान शिवुसुन्द पानु सोंर्य तव ।
सलाह ज़ानिव तसुन्द व्रथ पानु वंर्यतव ।।
यि कथ बूज़िथ शिवुह मन्थुर परुनि लोंग ।
करुनि लोंग जफ तु व्रथ तंम्य सुन्द वरुनि लोंग ।।
तिथय तस आव शिव जी पानु लारन ।
वुछुन बगुवान तंमिसुन्द ध्यान दारन ।।

तब (रामचन्द्रजी) उस (रावण) के सिरों को दुबारा काटने के लिए प्रस्तुत हुए और उन्हें अलग-अलग काटकर नीचे गिरा दिया। जब उसका ग्यारहवाँ सिर काटने को वे तैयार हुए तो कहते है उसी समय रावण ने अपना अत्यन्त विकराल रूप दिखाया। तभी नारदजी हाथ जोड़कर प्रत्यक्ष हो गए और रामचन्द्रजी से कहने लगे—बस कीजिए, बस ! इस (रावण) के हृदय के बीच में एक अमृत का घड़ा है। आप प्रसन्न हो जाइए और तीर द्वारा इसी स्थान को भेदने की ताक में रहिए। अन्यथा शिव का वर फिर नहीं सकेगा और उस वर के फलस्वरूप इसके प्राण नहीं निकल सकेंगे। १५ आप भी स्वयं शिव का ध्यान और स्मरण करें और इस उपाय को सार्थक बनाएँ। यह बात सुनकर वे (रामचन्द्रजी) शिव मन्त्र जपने लगे और इस जाप द्वारा उनकी (शिवजी की) अनुकंपा का व्रत साधने लगे। तब शिवजी स्वयं उनके पास भागते हुए आ गए और उन्होंने देखा कि भगवान् (रामचन्द्रजी) ने उनका ध्यान (तन-मन से) धारण कर रखा है। तब प्रणाम करके (शिवजी) नारायण (रामचन्द्रजी) की शरण में चले गए और अत्यन्त खुश होकर वापस जाने के लिए रुख़सत (आज्ञा)

शरन सांपुन परन नारायनस प्यव ।
स्यठाह् खोँश गव तु बेँयि रोँखसत हेँनि गव ॥
तमी विज़ि रावुनस गव नाश पानुह ।
करुन ओसुस तु तंम्य कोँरनस बहानुह ॥ २० ॥
मुकाबलु द्राव तस सूतिन सु पानुह ।
वनुनि लोँग तस कडथ बो तानु तानुह ॥
च्रे पानय पांन्य पानस बांर्य खारिथ ।
च्रु पानय छुख स्यठाह मारिथ तु खारिथ ॥
सपुन श्री राम क्रूदी तीर त्रोवुन ।
पथर पोवुन तु प्यठ बुतरांच्र सोवुन ॥
ब जलदी मन्दछिहोँत येँलि थोँद वंथित गव ।
स्यठाह रुसवा सपुन च्रापुनि लोँग ज़्यव ॥
तुलुन असतुर तु वान्दर मारु सांपुन्य ।
मंरिथ गंयि केँह तु केँह आवारुह सांपुन्य ॥ २५ ॥
ति डीशिथ रामुजुव वोँथ गोस लारान ।
सिपर लांजिन तंमिस लायिनि लोँग कान ॥
दया कंर रामु च्रन्दुरन याम तिमन प्यठ ।
तिथय वोँथ रावुनस तामथ खंच्रुस नठ ॥

माँगने लगे। उस समय रावण का (सचमुच) नाश ही हो गया क्योंकि उसने देखा कि (शिवजी ने) उनके साथ अच्छा बहाना बनाया है। २० इसके बाद रामचन्द्रजी उस (रावण) के साथ मुक़ाबला करने के लिए निकले और कहने लगे—अब तेरी बोटी—बोटी उखाड़ डालूँगा। तूने स्वयं अपने ऊपर इतने पाप चढ़ाए, कितनों को मरवाया और कितनों को ऊपर भिजवाया। क्रुद्ध होकर रामचन्द्रजी ने तीर छोड़ा जिससे वह रावण पृथ्वी पर गिर पड़ा और लोटने लगा। शरमिन्दा होकर वह जल्दी से वापस उठ खड़ा हुआ और रुसवा होकर (जीभ) होंठ चबाने लगा। उसने पुनः अस्त्र सम्भाले जिससे वानरों पर आफ़त आ गई। कुछ तो मर गए और कुछ इधर—उधर भाग गए। २५ यह देखकर रामचन्द्रजी उसके पीछे भागे और निशाना साधकर उसपर तीर छोड़ने को हुए। मगर उसी क्षण रामचन्द्रजी ने उसपर दया की और रावण काँपता हुआ वहाँ से निकल भागा। तब एक बार फिर उन्होंने (रामचन्द्रजी ने) कमान को घुमाया और उस पापी को निशाना बनाकर तीर छोड़ा। सत् विचारों के पथ को प्रतिष्ठित करने के लिए उस (पापी) की गर्दन पर ऐसा तीर मारा

तुजिन क्रूदुच कमान तस रावुनस कुन ।
निशानस पापियस प्यठ तीर त्रोवुन ।।
व्यच्चारुच वथ वुछिथ द्युतुनस बंगर्‌दन ।
रतस सूत्य म्यूल त्युथ ह्युव दशिरावुन ।।
ब्रह्मह असतरुह सूत्य दंह सर तमिस पेय ।
च्चचस वुह नरि श्री रामन लोबुन जय ।। ३० ।।

दपन आकाशि प्यठ वोयुख नकारह ।
सपुन्य तिम पंज़्य तु वान्दर ज़िन्दु दुबारह ।।
तिथिस वीरस बन्यव क्या हालि बे हाल ।
नतह छुय गछ़ दयस पथ जुव पनुन गाल ।।
वुछिव येलि रामु च्चन्दुरन मोर रावुन ।
दपान तामत वोनुन तस लखिमनस कुन ।।
च्चु गछ़ निशि रावुनस तामत वनुस यी ।
च्चे मा महाराज केंह अबिलाश ओसुय ।।
दपान तामत सु लखिमन तस निशह गव ।
दोपुन तामत बु कस करुह येति आलव ।। ३५ ।।

तिथय तामत तमिस शेरस खसिथ गव ।
वनुनि लोग गत छि चानी ही सदाशिव ।।
दशि रावुनु बु सूज़ुस रामु च्चन्दुरन ।
दपूनम गछ़ च्चु रावुनस निश यि कथ वन ।।

जिससे वह दशरावण रक्त के साथ मिल गया । ब्रह्मास्त्र द्वारा (उन्होंने) उसके दस सिर गिरा दिए और बीस भुजाएँ काट डालीं और इस प्रकार रामचन्द्रजी को विजयश्री की प्राप्ति हो गई । ३० कहते है, तभी आकाश में नक़्क़ारे बज उठे और वे वानर और रीछ वापस जीवित हो गए । देखिए, कैसे उस वीर का हाल बेहाल हो गया । सत्य है, दैव गति के सामने किसी की कुछ नहीं चलती । जब रामचन्द्रजी ने रावण को धराशायी कर दिया तो कहते है, उन्होंने लक्ष्मणजी से कहा—तुम रावण के पास जाकर यह पूछ लो कि हे महाराज ! आपकी कोई अभिलाषा तो नहीं है ? कहते हैं, तब वह लक्ष्मण रावण के पास गया और सोचने लगा कि यहाँ पर किससे क्या पूछूँ । ३५ तथा उस (रावण) के शीर्ष की ओर जाकर खड़ा हो गया । वह (लक्ष्मण) कहने लगा—हे दशरावण ! मुझे रामचन्द्रजी ने यह कहने के लिए भेजा है कि रावण से यह बात पूछ कि

च़े मा महाराज कँह ओसुय अबिलाश ।
गछ़ुस शेछ ह्यथ छु क्या सुय पानु आकाश ।।
मुदा त्येयि लटि यी वोनुनस कनस तल ।
वंनिव महाराज मे गव च़ेर छ़ुम गछ़ुन जल ।।
दपन तम्य तोरु फीरिथ कँह नु वोनुनस ।
त्युथुय फीरिथ सु आव निशि रामु च़न्दुरस ।। ४० ।।
गंण्डिथ गुल्य तम्य दोपुन ती रामु च़न्दुरस ।
दोपुस तम्य तोरुह किथु पाठिन च़े वोनुथस ।।
दोपुस तम्य तोरुह फीरिथ रामुच़न्दुरन ।
ख़बर कँह छय नु कुस ओस दशिरावुन ।।
दोपुस तम्य तोरुह शेरस किन्य बु गोसस ।
मुदा तम्य तोरुह कँह वोनुनम नु वापस ।।
बं क्रूदी तम्य त्युथुय तामत दोपुस पय ।
त्रे प्रकरमु दिथ गंडिथ गुल्य बेयि दोपुस यी ।।
परन प्यथ दशिरावुनस लोग वनुनि ज़ार ।
गोनाह बखशुम बु क्या छुस यंच़ गिरिफतार ।। ४५ ।।
मुदा गरि गरि परन प्यथ येलि वोदुन ।
स्यठाह खोश गव तमिस प्यठ दशिरावुन ।।

'हे महाराज ! आपकी कोई अभिलाषा तो नहीं है ?' मैं उनके पास आपका सन्देश लेकर जाऊँगा (और वे उसे पूर्ण कर देंगे) क्योंकि वे सर्वशक्तिमान हैं । मुद्दा यह कि यह बात उस (लक्ष्मण) ने उस (रावण) के कान में तीन बार यों कही—'हे महाराज ! जल्दी कहिए क्योंकि मुझे देर हो रही है । कहते हैं उस (रावण) ने उत्तर में कुछ भी न कहा और वह (लक्ष्मण) लौटकर रामचन्द्रजी के पास आ गया । ४० और हाथ जोड़कर रामचन्द्रजी से सारी बात ज्यों-की-त्यों कही इस पर रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण से कहा कि तुमने उससे किस तरह बात की । तुम्हें ख़बर नहीं कि वह दशरावण कौन था ! तब उस (लक्ष्मणजी) ने कहा—मैं सिर की ओर से उसके पास गया था मगर उसने अनेक प्रयत्न करने पर भी कुछ न कहा । तभी क्रुद्ध होकर (रामचन्द्रजी ने) उपाय सुझाते हुए कहा—जाकर उसकी तीन परिक्रमाएँ लगाओ और हाथ जोड़कर पुनः निवेदन करो । तब उस (लक्ष्मण) ने दशरावण का प्रणामकर विनती की—मेरे गुनाह बख्शिए-क्योंकि मैं इनमें गिरफ़्तार हो गया था । ४५ मुद्दा यह कि जब बार-बार रोते हुए उसने प्रणाम किया तो उस पर दशरावण बहुत ख़ुश हो गया ।

गंछिथ खोश रावुनस फीरिथ वन्योनस ।
वनुनि लोंग ती दपान यी ब्रोंठ वन्योनस ।।
दोंपुस तंम्य तोरुह त्रेय आंसिम मे अबिलाश ।
गोंडन्य यी अंगनुह राज़स दुह करस नाश ।।
करन कांछाह प्रेयमुह पुछ्य हुम यंगुनि ज़फ ।
अनान सोंम्बरिथ तंमिक्य चीज़ वारुह बोज़ख ।।
बिहान तिम ज़फ करुनि ब्रह्मन पंडित ज़न ।
दुहकि ज़ोरुह प्यूंच्र ओंश यकसां छु सपनन ।। ५० ।।
दोंयुम ओसुम बं आकाश तान्य लदन हेर ।
यूगी कांह सोंरगु लूकस खसि चूं शेर ।।
त्रेयुम ओसुम सोंनस करुहा मुशुक जान ।
यिथय पांठिन गुलन छुय मुशुक आसान ।।
त्युथुय मुशकाह सोंनस युथ ताज़ु हियि गोंन ।
नतय यकसान क्याह सरतल तु बेयि सोंन ।।
अमा क्याह करुह करुन दयस नु खोंश आम ।
बु क्याह करुह हा मे गव बर मन्दियन शाम ।।
ह्योंतुन रोंखसत तंमिस निश आव लारन ।
पकान ओस वति मनुकिन्य ओस थारन ।। ५५ ।।

रावण को खुश देखकर उस (लक्ष्मण) ने वही दुहराया जो वह पहले कह चुका था। तब उस (रावण) ने कहा—मेरी तीन अभिलाषाएँ थीं। प्रथम यह कि अग्निराज के धुएँ का नाश कर दूँ। कोई प्रेम से यज्ञ रचकर अग्नि को होम देता है। कई तरह की सामग्री व अन्य चीजें इधर-उधर से जमा करता है। जाप करने के लिएं ब्राह्मण व पंडित विठाता है। मगर इस धुएँ से आँखों में आँसू आ जाते हैं और आँखें दुखने लग जाती हैं। ५० दूसरी अभिलाषा यह थी कि आकाश तक एक सीढ़ी बनाऊँ ताकि कोई भी योगी (विना किसी कठिनाई के) स्वर्ग-लोक में चला जाए। तीसरी अभिलाषा यह थी कि सोने में मुश्क (सुगंध) रूपी जान डालता वैसे ही जैसे गुलों में मुश्क (खुशवू) होता है। वैसी ही (सुगंध) जैसी ताजा चम्पा में होती है, अन्यथा पीतल और सोने में एक जैसी न दिखनेवाली बात ही क्या रहती है! अमां (परन्तु) अब क्या हो सकता है! दैव को मेरा यह सब खुश न आया। अब मैं कर ही क्या सकता हूँ? अव तो मेरी भरी दुपहरी शाम में वदल गई है। तब (रावण से) रुखसत लेकर वह (लक्ष्मण) भागकर लौट आया। मन उसका काँप रहा था। ५५ जैसे ही वह

त्युथुय वोथ रामचन्द्रस निश परन प्यव ।
परन प्यव हालि हाली करनु कांप्यव ।।
त्युथुय वोनुनस यि वंन्यतव क्याह यि वने ।
यि तंम्य वोनुनम ति अज़ तान्य कोरनु कांसे ।।
तिथय वोनुनस छे कोसु कथ क्याह नु बने ।
दपख यी बनि नु बंखतियि सुत्य वने ।।
कनव बोज़ कथ यि रावुन ओस वंखती ।
करान पूज़ा संमीरस प्यठ शिवहु नी ।।
च्रटान दंह कलु लागान ओस शिवस ।
दोंह्य पूज़ा करान ओस प्यठ संमीरस ।। ६० ।।
कंरिथ पूज़ा दपान येलि ओस मोकुलन ।
कलु दंह बेयि बराबर आस्य सपुनन ।।
यि कथ बूज़िथ सु लंखिमन आशच्ररस गव ।
वोनुस वोपुदीश श्री रामन च्यतस थव ।।
वुछिव रावुन महारथ क्युथ वलावीर ।
मरुन ओसुस तु कथ कुन सांपुनिस ज़ीर ।।
च्र कर दयि दयि पयस वातख लबख वथ ।
असथ त्रावख तु अदु प्रावख सतुच गत ।।

रामचन्द्रजी के पास पहुँचा तो उसने प्रणाम किया और कहा कि आप ही कहें कि ऐसा भला कैसे हो सकता था ! जो कुछ भी उस (रावण) ने कहा वह तो आज तक कोई भी नहीं कर सका है। तव (रामचन्द्रजी ने) कहा—ऐसी कौन-सी वात है जो न बन सके। सच तो यह है कि हर बात वन सकती है और अटूट भक्तिभाव रखने से बन सकती है। (हे लक्ष्मण!) कानों से सुन (ध्यान से सुन)—यह रावण (बहुत बड़ा) भक्त था। नित्य शिव की पूजा सुमेरु पर करता था। अपने दसों सिर काटकर शिव को भेंट करता था। यह पूजा वह नित्य किया करता था। ६० कहते हैं, जब पूजा समाप्त हो जाती तो उसके दस सिर पुनः बरावर (जीवित) हो जाते। यह सुनकर लक्ष्मण आश्चर्य करने लगा और रामचन्द्रजी ने उसे उपदेश दिया जिसे (हे मनुष्य !) भू भी याद रख—देखिए, उस जैसे महावलवीर रावण का क्या हो गया। उसे मरना था (उसका पतन होना था) अतः उसका मन बिगड़ गया। हे मनुष्य ! यदि तू ईश्वर का नाम लेता रहे तो तुझे सत्पथ की प्राप्ति होगी और असत्य त्यागने पर तुझे सद्गति मिल जाएगी। इसके वाद सभी ने ख़ुशियाँ मनायीं और विभीषण को ताज

कंरुख शादी मुनादी द्रायि दिथ ताज ।
वेंबीशन लांकि प्यठ गव दरुम का राज ।। ६५ ।।
दपान योंत तान्य छु ताबान सिरियि च्रन्दुरम ।
कोंरुन राजुत बंलंका कैंह नु तस ग़म ।।
सपुन येंलि लांकि प्यठ असुरन यि समुहार ।
दपान फीरिथ पकान गव रामु अवतार ।।
रंटिथ येंलि तिम असर तति मूद्य सारी ।
सपुन्य तिम पंज्य तु वान्दर ज़िन्दु सारी ।। ६८ ।।

सीताजी हुंज़ अंगुनु परीख्या

वन्दुच सरदी वुछिथ हंन्दुर्योव बुलबुल ।
तवय गुल छारुनस तंम्य कोंर तग़ाफ़ुल ।।
ति मा ज़ोनुन हरुद अछ्रनय गुलालन ।
वन्दस मा नारु सुतिन चशमु ज़ालन ।।
बबुर छ्यफ दिथ खंटिथ रूज़िथ यंम्बुरज़ल ।
तिथय यिथु पाठ्य सबुज़ी कोंलु बठ्यन तल ।।
गुलि कोसम तु बेंयि वटु फंट्य तु ज़िन्दोर ।
च्रलन पानस ज़ंमिसतानस लदन बोर ।।

पहनाया गया तथा लंका में धर्म का राज्य स्थापित हो गया । ६५ कहते हैं, (रामचन्द्रजी ने यह आशिष दी) जब तक सूर्य और चन्द्रमा चमक रहे हैं तब तक विभीषण लंका में राज्य करता रहे । और उसे किसी प्रकार का ग़म न रहे । लंका पर सभी असुरों का संहार कर, कहते हैं, रामावतार (श्रीराम) वापस मुड़ गए । (युद्ध में) जितने भी असुर मर गए थे उनके स्थान पर वानर और रीछ पुनः ज़िन्दा हो गए । ६८

सीताजी की अग्नि-परीक्षा

जाड़े की सर्दी देख बुलबुल[1] (श्रीराम) दुःखी हो गया था । गुल को ढूँढने में उसने कोई कसर शेष न रखी थी । मगर उस (वेदर्दी) ने यह नहीं जाना कि उधर जाड़े-भर (बुलबुल की तलाश करते–करते) गुल (सीताजी) की आँखें कैसे बुझ गई होंगी । (जाड़े में) बबुर[2] छिप गई थी और येम्बुरज़ल[2] भी नज़रों से ओझल हो गई थी वैसे ही जैसे सरिता-तट पर से सब्ज़ा ज़ार

१ कश्मीरी साहित्य में बुलबुल को पुल्लिंग माना गया है ।
२ पुष्पों के नाम-विशेष ।

संमिथ सारी बहारुक्य गुल बद यखहाल ।
वन्दुक बोज़न खंटिथ रोज़न बं पाताल ।। ५ ।।

गुमां गव तस वन्दन मा कोंर गुलन लूठ ।
त्युथुय वुछ दरम बूगुन ज़नुम छुय कूठ ।।
टकुर दूर्यर शीशस ककुर प्योस ।
वन्दुक बहानु मन तस पानु हंन्दुर्योस ।।
मनस मा गव तंमिस सुतायि करतां ।
बु छस रातस दोंहस चन्दरमुह प्रज़ुलान ।।
बु नय नेरख छि तारख पान मारन ।
संमीरस सारिसुय छुम सिरियि छारान ।।
स्यठाह ओसुस गोंमुत तीज़ुक अहंकार ।
में प्यठ देवानुह गोमुत रामु अवतार ।। १० ।।

वोंनुन मन्दूदंरी मातायि याने ।
चु वनतम क्याह में ओसुम करमलाने ।।
यि कोंसु व्यद गंयि में गव मालिनि त्रांविथ ।
यि क्या रेंश्य ख़न्दह कंरिथ गव मन्दु छांविथ ।। १२ ।।

(हरियाली जल के अभाव में) लुप्त हो जाता है। गुले-कोसम,[1] वट्-फंट्य[2] और ज़िन्दोर[3] सभी लुप्त हो गए थे। बहार में खिलने वाले ये सभी गुल जाड़े के आगमन का समाचार सुनते ही पाताल में छिप गए थे। ५ उस (सीताजी) के बहार जैसे जीवन को भी (इसी) जाड़े ने लूट लिया था और उसे यह सब भोगना पड़ रहा था। जाड़े के बहाने से उसकी हँसती-खेलती जीवन–कली पर तुषारपात हुआ था और उसका मन दु:खी हो गया था। उसे (शायद) यह गुमाँ हो गया था कि मैं रात-दिन चन्द्रमा के समान चमकती हूँ (अतीव सुन्दर हूँ) मैं यदि नहीं निकलूँ तो तारों का कोई मूल्य नहीं और पहाड़ों से निकलकर सूर्य मुझे ही ढूँढता है। उसे खुद के तेज (रूप-लावण्य) पर बहुत अहँकार हो गया था और वह सोचती थी कि मेरे ऊपर रामावतार (श्रीराम) जैसे (महापुरुष) दीवाने हो गए हैं। १० वह खूब रोयी और मन्दोदरी (याने अपनी माता) से कहने लगी–आप ही बतलाइए कि मेरे कर्मलेख में क्या लिखा है। यह कौनसी रीत है कि वे (रामचन्द्रजी) मुझे मायके में छोड़कर चल गए और वनचारी (महर्षि) बनकर मेरा मखौल उड़ाया। १२

१, २, ३,—पुष्पों के नाम—विशेष

सुता जी छि लीला परान

दियिना दरशुन तु यियि ना सोन।
करुसय पोशि वरशोनुये॥

तापुह सुत्य शीन ज़न तन छम गलन,
करनम गिलन तु क्याह छु म्योन पाय।
हाञलन लोगनम काञु ज़ूनि ग्रोन,
करुसय पोशि वरशोनुये॥ १॥

कमि शाठुह लाजनस कौंतुय गोम त्राविथ,
कस ह्यकु वांसे हाल बाविथ।
सायि रुछ्रि ज़ोलुनम तापुह ताल्योन,
करुसय पोशि वरशोनुये॥ २॥

शाह पसन्द्य खावुन्द्य खन्दु हय कौरनम,
वनुहस वौन्दुह मंज़ुह वारिव्य ग्राव।
सौम्बुरिथ वन्दुहस मालिन्य क्रोन,
करुसय पोशि वरशोनुये॥ ३॥

माह दरुह लाजिनस नाह नाह गंजिम,
ज़ाह ति नय ज़्यथ कुनि ओसुम करार।
क्या सना ल्यूखुनम ड्यकु करमुलोन,
करुसय पोशि वरशोनुये॥ ४॥

सीताजी का भक्तगीत गाना

जाने वे कब आएँगे और दर्शन देंगे। (वे आते तो) मैं उन पर पुष्प-वर्षा करती। विरह-ताप से मेरा तन बर्फ़ की तरह गल रहा है। वे मुझे छोड़ गए, भला अब मेरा क्या उपाय हो? उस निठुर के कारण मेरी चन्द्रकाया को ग्रहण लग गया—(वे आते तो) मैं उन पर पुष्प-वर्षा करती। १ मुझे बीच मंझधार में छोड़कर जाने वे कहाँ चले गए! भला अब मैं किससे अपना हाल कह सकूँगी। छाया के अभाव में मेरा सिर विरह-ताप के कारण जल रहा है—(वे आते तो) मैं उन पर पुष्प-वर्षा करती। २ उस भीरु खाविन्द ने मुझे कहीं का नहीं रखा। वे मिल जाएँ तो मैं उन्हें दिल के गिले-शिकवे कह डालूँ तथा मायकेवालों को सकुटुम्ब उन पर निछावर कर दूँ—(वे आते तो) मैं उन पर पुष्प-वर्षा करती। ३ प्रतीक्षा करते-करते मेरा अंग-अंग गल गया है। जन्मकाल से लेकर अब तक मुझे कभी

प्रकाश प्रथ जायि कति छ्रारोन,
सुबुहुक सिरियि रम्बुवोनुय।
ज़लुवुन थोवनम नार ललुवोन,
करुसय पोशि वरशोनुये ।। ५ ।।

सुताथि हुंज़ मांज (मन्दोदरी) छि वनान

दपन तमि लोलु सुतिन दोंप तमिस कुन।
यिथय पाठिन ज़नुम सारयन छु बूगुन ।।
तवय बापथ च्ञे लाजिथ नारुह वुज़ुमल।
खंटिथ च्ञन्दुरमु थोवुथ तारुकन तल ।।
कवय बापथ च्ञे लोगुथ अंशकु पेचान।
मतय वदुतम क्यथय खोरुथ रज़े पान ।।
कवय बापथ यम्बुरज़ल बरुह करथम।
होंरुथ रथ वारुयाह ब्यब नारु बंरथम ।।
कवय बापथ च्ञे नीलेयी वोंज़ुल्य नम।
ख्यवन छख ग़म गछी अमि सुत्य क्याह कम ।। ५ ।।
कवय बापथ वदन छख मोंखतु हारन।
कवय सोसन करिथ दोंन गुलि अनारन ।।

भी क़रार (आराम) न मिला। जाने विधाता ने मेरे कर्मलेख में क्या लिखा है—(वे आते तो) मैं उन पर पुष्प-वर्षा करती। ४ 'प्रकाश' कहते हैं कि सुबह का लुभावना सूर्य भला हर समय कहाँ देखने को मिलता है। वह (निठुर) मुझे विरहाग्नि को सहन करने के लिए छोड़ गया—(वे आते तो) मैं उन पर पुष्प-वर्षा करती। ५

सीता की माता (मन्दोदरी) का संलाप

कहते हैं (तब) उस (मन्दोदरी) ने प्रेम में विह्वल होकर उससे कहा—(दरअसल) इसी तरह (हम) सबको जन्म भोगना था। तभी तू बिजली की तरह चमकी (अत्यन्त रूपवती बनी) और चन्द्रमा-तारकों के बीच छिप गया। री! अब तू ज़्यादा न रो और अपनी लतारूपी कोमल तन को यों न सुखा। री! अब तू क्यों अपने नरगिसी वदन को जर्जरित कर रही है, तू रक्त के आँसू ख़ूब रोयी है। अब चुप हो जा। री! (शक्तिहीन होकर) तेरे लाल-लाल नाख़ून अब नीले पड़ गए हैं। तू मात्र ग़म खा रही है, इससे भला तेरा दुःखदर्द कैसे कम हो जाएगा? ५ री! किस कारण से

कंमी दोंपनय लोंकट्टय आवारुह सांपन।
कंमी दोंप रावुनस होमाल फोंज्य वन॥
कंमी दोंपनय मकर कुनि जायि आराम।
कंमी दोंपनय च्रे गंछिनय मन्दुन्यन शाम॥
में बूज़ुम ही नियम बोंनु नांगिरांयी।
यि कंम्य योंछिनम ज़िन्दय गंछिनवु जुदांयी॥
बु नय वोंन्य चोन ग़म ख्योंन यूत त्रालय।
यितम सुतिन यिमय करु तस हवालय॥ १०॥

वदन मन्दूदरी गंयि यंत्र वंनिन ज़ार।
वोंदुन त्युथ युथ ज़ि नरुकस छ्यतु गव नार॥ ११॥

लीला

नारायनु छुख च्रु न्यराकांरी।
पादन लगय पांर्य पांरिये॥
त्वंयि लूकुक राजि च्रुय माजि ज़ामुत,
लंखिमन शंतुरगुन ह्यथ आमुत।
बरथ राज़ु आमुत शंखु चंकुर दांरी,
पादन लगय पांर्य पांरिये॥ १॥

अब तू रो-रोकर आँखों से मोती बहा रही है। क्यों इन दो नयन-कमलों को तूने इतना दुर्बल बना डाला ? री ! किस कारण से तू इस भरी जवानी में ही विपत्तियों का शिकार हो गई। भला किसने रावण को यह बताया था कि वन में चम्पाकली खिली है। री! किसने तुझे यह कहा (शाप दिया) कि तुझे कहीं भी आराम न मिले, किसने यह बददुआ दी कि भरी दुपहरी में ही तेरी सन्ध्या हो जाए। मैं तो तुम दोनों की सुख–समृद्धि चाहती थी, जाने यह किसने चाहा कि जीते जी तुम दोनों की जुदाई हो। अब मैं तेरा इस तरह से ग़म खाना सहन न करूँगी। तू मेरे साथ चल और तुझे उस (रामचन्द्रजी) के हवाले कर दूँ। १० इस प्रकार वह मन्दोदरी ख़ूब रोने लगी और (रो-रोकर) अपने उद्‌गार व्यक्त किए। वह इतना रोई कि नरक की अग्नि भी बुझ गई। ११

भजन

हे नारायण ! आप निराकार हैं। आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। हे त्रिलोक के राजा ! आपने लक्ष्मण और शत्रुघ्न के साथ जन्म लिया है।

वुछहथ हरुदयकि कोचि किन्य नेरुहा,
फेरुहा चञ्चल मन शेरुहा।
दरशुन हावतम चलिहम ख्वारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ २ ॥

सुगरीव पादुशाह चे करुनोवथन,
मनुनावथन तारा माता।
जान पान वन्दुहय छम ज़ीवुह दारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ ३ ॥

दशरथ राज़ुह बेयि कौसल्या माता,
नाव चोन सौरान हर सातय।
प्रयम चोन ओसुख वंरिथख सारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ ४ ॥

वाली वुछतन क्या ओस बलुवान,
रावुन तस निशि ओस लरुज़ान।
मौख्त गव रामुचन्दुरनि तीरुह कारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ ५ ॥

ब्रशबस खंसिथ च़ुय छुख आसुवुन,
कासान च़ुय छुख पापियन पाप।
च़ुय छुख आसुवुन गरुडा सवारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ ६ ॥

शँख व चक्रधारी भरत भी आपके साथ ही पधारे—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। १ आपको हृदय के कूचे में देख लेती और (फिर) उस कूचे में घूमती-फिरती तथा अपने चंचल मन को संयत कर लेती। अब मुझे दर्शन दीजिए ताकि मेरी इच्छा पूर्ण हो जाए—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। २ सुग्रीव को आपने ही बादशाह बनाया और तारा माता का—आपने ही उद्धार किया। आप पर यह जान और माल निछावर करूँ—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। ३ राजा दशरथ और माता कौशल्या हर समय आपका ही नाम स्मरण करते थे। उन्हें आपसे अत्यधिक प्रेम था—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। ४ वाली को देखो, वह कितना बलवान था। रावण भी उससे काँपता था। मगर वह भी रामचन्द्रजी के तीर से ही मुक्त हो गया—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। ५ आप सर्वत्र व्यप्त हैं और पापियों के पाप दूर करनेवाले हैं। गरुड के सवार भी आप ही हैं—आपके पादों पर

पादन पनुन्यन तल रछ बगवानो,
नादन सान्यन कन दारतो ।
च्रुय छुख शंखु च्रंकुरु गदादारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ।। ७ ।।

लंखिमन च्रेय सुत्य छुय आसुवुन,
लंखिमी सोसति सानि बगवानो ।
दरशनु चानि सुत्य मोखत गछ्न सारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ।। ८ ।।

मायायि निशि न्यर माया छी तिम,
यिम दरशनु पनुनि सुत्य वंर्‌यथक ।
येमि बवुसरुह मंज़ुह तार्‌यथक सारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ।। ९ ।।

असि तार पनुनी अनुग्रह सुती,
कुती आरती गामुत्य छी ।
चानिस दरशनस सारी लारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ।। १० ।।

वसुदीव राज़ुनि बावुनायि पारी,
येति आख क्रश्नु ज़ुव अवतारी ।
कमुसा सोर त्यूत गव समुहारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ।। ११ ।।

बलिहारी जाऊँ। ६ हे भगवान् ! अपने पादों तले हमारी रक्षा कीजिए और हमारे आर्त्तनादों पर कान धरिए। आप ही शँख व चक्रधारी हैं—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। ७ लक्ष्मण आपके साथ हैं पर लक्ष्मी (सीताजी) हमारे यहाँ हैं। आपके दर्शनों से सभी मुक्त हो जाते हैं—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। ८ जिनको आपने अपने दर्शनों से उपकृत किया वे माया से मुक्त हो गए। आपने कितनों को ही इस भव-सागर से पार लगाया—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। ९ हमें भी अपने अनुग्रह से तार दीजिए, हम कितने निःसहाय हो गए हैं। आपके दर्शनों के लिए हर कोई तड़प रहा है—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। १० वासुदेव राजा के यहाँ कृष्णजी के रूप में अवतार लेकर आपने उसकी भक्तिभावना को सार्थक बना दिया और कंसासुर जैसे दुर्दान्त (राक्षस) का संहार कर दिया—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। ११

कमि कारनु गोख सुता च्रु त्राविथ,
यिम दाद्य कर ह्यकु ललुनाविथ।
जय आसिनय छुख च्राचारी,
पादन लगय पार्य पारिये ॥ १२ ॥

हीथ ओसुय चोन वनवास गछुन,
मूल ओसुय ब्योल राखिसन गालुन।
बगवान तवय आख रामु अवतारी,
पादन लगय पार्य पारिये ॥ १३ ॥

रंगु रंगु करिथम रंगु रंगु विह्य च्रे,
रंगु रंगु दरशनस आयिसय च्रे।
त्रेयिलूकुक्य दीवता च्रे सूत्य सारी,
पादन लगय पार्य पारिये ॥ १४ ॥

च्रे पतुह सुता ह्यथ बो द्रायस,
यिम दीव कोनु छी यिवान दायस।
च्रुय छुख कृश्नु जुव परवोपुकारी,
पादन लगय पार्य पारिये ॥ १५ ॥

हाच्रलु सुता कवुह गोख त्राविथ,
यिम दोख वोन्य ह्यकुह कस बाविथ।
बोज़न यिमुकथु दिन पामु सारी,
पादन लगय पार्य पारिये ॥ १६ ॥

जाने किस कारण से आप सीता को छोड़कर चले गए। वह (बेचारी) इस जुदाई की पीड़ा को कैसे सहन कर सकेगी। हे चराचर में बसने वाले! आपकी जय हो—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। १२ वनवास जाना मात्र एक वहाना था। दरअसल, आपको राक्षसों का बीज व मूल गला देना था। हे भगवान्! तभी आप रामावतार के रूप में आए—आपके पादों पर वलिहारी जाऊँ। १३ आपने समय-समय पर तरह-तरह के रूप धारण किए और इन्हीं रूपों को देखने के लिए मैं आई हूँ। त्रिलोक के सभी देवता आपके साथ हैं—आपके पादों पर वलिहारी जाऊँ। १४ मैं सीता को आपके पास लाने के लिए निकली हूँ। जाने अन्य देवता आपको इस सम्वंध में कुछ मशविरा क्यों नहीं दे रहे हैं? आप ही हे परोपकारी! कृष्ण जी भी हैं—आपके पादों पर वलिहारी जाऊँ। १५ हे सद्‌बुद्धि! सीता को यों छोड़कर कहाँ चले जा रहे हैं? वह बेचारी अपने दुःख भला अव

अमि खोंतुह मारतम छसय कलु दारिथ,
सुता त्रावुन्य बं मा बोज़य ।
दोनुवय माजि कोरि छय करान ज़ारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ १७ ॥

नार गोंडथम छम मन तन दज़ान,
यिथु प़ाठ्य अंगुन राज़ु दज़ान छुय ।
येमि वदुनु छ्‌यतुह गंयि अंगनु कोंड सारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ १८ ॥

मालिनि त्रावथन शेंछ फीर नंगुरस,
अमि कथि सुतायि होल छुम जिगुरस ।
हरु हरु करन दित्य तमि पानु मारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ १९ ॥

सोंख तु दोंख वनुहय मनुकिन्य बोज़तम,
यिमु कथु थाव्यथ पतुह फरुनय ।
बे वंसीलन हुन्द छुख न्यराकारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ २० ॥

त्रेयिलूकियि प्यठ कांसि मु बंनिन,
कूर कांसि फीरिथ ज़ाँह मु यियिन ।

किससे कहेगी ? जो कोई यह बात सुनेगा वही उलाहना देगा—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । १६ इससे तो अच्छा यह है कि आप मुझे ही मार डालिए, मैं अपना सिर खम किए हूँ । पर सीता को यों छोड़ देना मैं कभी भी स्वीकार न करूँगी । हम दोनों माँ और पुत्री विनती कर रहे हैं—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । १७ आपकी बेरुखी से मेरा मन व तन ऐसे जल रहा है जैसे अग्निराज जलते हैं । इधर, अब इस रोने से सारे अग्नि-कुण्ड भी बुझ गए—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । १८ आपने इसे (सीता को) मायके में छोड़ रखा है, यह समाचार सारे नगर में फैल गया है और (मेरी) सीता के जिगर पर इस बात से तीर-सा लगा है । हर-हर जपते वह बेचारी मार्ग में ही अपने आपको मारने लगी है—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । १९ मैं आपको अपना सुख और दुःख सुना रही हूँ, ज़रा मन से सुनिए । इन बातों को आप अच्छी तरह याद रखना । असहायों के, हे निराकार ! आप ही (सहायक) हैं—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । २० संपूर्ण त्रिलोक में कभी किसी के साथ ऐसी न बीती कि उसकी पुत्री

तमि खोंतु जान छुस पकुन यमुह्दारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ २१ ॥

तस मनुशस गछि अलमास ख्योंन जान,
यस मनुशस आसि कूर सन्तान।
येमिस कोरि बरथा छुख च्रु अवतारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ २२ ॥

करमुच हान कोनु छुख कासानी,
असि वौन्य च्रुय छुख ही सामी।
च्रुय छुख आसुवुन नरसिह्‌म अवतारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ २३ ॥

हान कासुवुन छुख च्रु बगवानु पानय,
ज़ानय नु कॅंह कमु कथु बावय।
ज़ारुह पारुह म्योन बोज़ वराह अवतारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ २४ ॥

ज़ारुह पारुह करुहय रोज़तम च्रु साथा,
पादन दोंन मन वन्दुहय च्रेय।
छुखना च्रु आसवुन कूर्मु अवतारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ २५ ॥

दयावान च्रुय छुख आसुवुन बगुवान,
रगु प्रान वन्दुहय पादन बंय।
बगुवान बोंड छुख मछु अवतारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ॥ २६ ॥

-पुनः अपने मायके आ गई हो। उससे तो अच्छा यह है कि वह यमद्वार में प्रवेश कर जाए (अपना अंत कर दे) आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। २१ उस मनुष्य के लिए ज़हर खा लेना ठीक है जिसकी संतान पुत्री हो। हमारी पुत्री के हे रामावतार! आप ही भर्त्ता हैं—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। २२ आप हमारे कर्म के कुलेख को क्यों मिटा नहीं रहे हैं? हमारे तो अब आप ही स्वामी हैं। नृसिंह अवतार भी आप ही हैं—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। २४ मैं विनती करती हूँ, क्षण भर के लिए इधर आ जाइए। आपके दो पादों पर अपने मन को वारूँ। कूर्म अवतार भी आप ही हैं—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। २५ हे भगवान्!

मनुकिन्य करुहय लीला तु वीला,
गंगादर छुय सुत्य त्रिशीला ।
येंछि मायि सुत्य आख वामनु अवतारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ।। २७ ।।

वौन्य आख च्रौतुर बौज़ वेशनुरूफ दारिथ,
असि पापियन गछ पाप हारिथ ।
आहम दयावान रामु अवतारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ।। २८ ।।

ही कृश्नु शामु रूपु दरशुन हावतम,
गाश आव चानि लोलुचि वेरे ।
बोज़तम विलुज़ार बौदु अवतारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ।। २९ ।।

लीला करान ऑस ओश ऑस हारान,
चानिस दरशनस ऑस प्रारान ।
रात्य रातस ऑस करान बेदारी,
पादन लगय पार्‌य पारिये ।। ३० ।।

प्रकाशि पनुनि सुत्य अन्दुकार कासतम,
गाश हावतम पनुनि प्रकाशि सुत्य ।

आप दयावान हैं । आप पर इस तन को अर्पण करूँ । हे भगवान् ! आप ही मत्स्यावतार भी हैं—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । २६ मैं मन से आपकी स्तुति व वंदना कर रही हूँ । त्रिशूल लेकर गंगाधर कहलानेवाले आप हैं । धरा के पाप हरने के लिए आप ही वामनावतार के रूप में आए—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । २७ विष्णु के चतुर्भुज रूप को आपने ही धारण किया है । हम पापियों के पाप कृपया दूर कीजिए । हे दयावान रामावतार ! आप से हमें बड़ी आशाएँ हैं—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । २८ हे कृष्ण व श्याम—रूप ! अब हमें दर्शन दीज़िए । आपकी भक्ति से प्रकाश फैलने लग गया है । हे बुद्धावतार! मेरी विनती सुन लीजिए—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । २९ सीता आपकी याद में आँसू बहाती रही तथा आपके दर्शन की प्रतीक्षा करती रही । रात—रात भर (बेचारी) जागती रही—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ । ३० अब अपने प्रकाश से मेरा अन्धकार दूर कर दीजिए

दरशुन चोन छम बखतावारी,
पादन लगय पारय पारिये ॥ ३१ ॥

लीला

सूता जी हुंज़ मांज छे रामजीयस कुन वनान

परुयो लोलु यँछि रामु रामु।
मो रोश शामु सौन्दरो ॥

बरुयो लोलु मसकी प्यालु,
चतुमो रामुचन्दरो।
परुयो लोलु यँछि रामु रामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ॥ १ ॥

यि छयो बुतुराथ चु छंहस नब,
मव दिस दब डंगुनी मार।
यि छयो तन चु छंहस जामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ॥ २ ॥

चु छुखो हियि अंन्दरुक दानु,
यि छयो पानु यंम्बुर ज़ल।
करि क्या बरुह कंरथम खामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ॥ ३ ॥

और दिव्य-ज्योति दिखलाइए। आपके दर्शनों की मैं कब से प्रतीक्षा कर रही हूँ—आपके पादों पर बलिहारी जाऊँ। ३१

भजन

सीताजी की माँ रामचन्द्रजी से कह रही है

मैं प्रेम-मग्न होकर राम-राम पढ़ रही हूँ, हे श्याम-सुन्दर! आप यों रूठकर न जाइए। मैंने आपके लिए प्रेमामृत के प्याले भरकर रखे हैं, हे रामचन्द्रजी! इसे आप पीजिए। मैं प्रेम-मग्न होकर राम-राम पढ़ रही हूँ, हे श्याम-सुन्दर! आप यों रूठकर न जाइए। १ यह (सीता) भूमि हैं और आप नभ (आकाश) हैं। अब इस पर और अधिक वृष्टि न कीजिए—यह आपकी तन है और आप इसके वस्त्र हैं—हे श्याम-सुन्दर! आप यों रूठकर न जाइए। २ आप नरगिस के पराग है और यह स्वयं नरगिस। आपने इसे अधखिला ही छोड़ दिया, अब (बेचारी) यह करे

च़ु छुखो सिरियि यि छ्यो ज़ून,
दूर्यर चोन छु छौंकस नून।
गमु चानि गोस मन्दिन्यन शामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ॥ ४ ॥

च़ु छुखो माजि हुंद नुन्दुबोन,
यि छ्यो जान मीरा जान।
लानि ओसुस ती मे नेक पूर च़ामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ॥ ५ ॥

दशिरावुनुन गोम बहानु,
बु आंसुस पानु पंरी ज़ात।
कवुज़ान दयस ख़ौंश क्याह आमु,
मो रोश शामु सौन्दरो ॥ ६ ॥

यि छ्यो माजि हुंज़ शीर ख़ारु,
आवारुह कंरथम मालिने।
वुनि छम दोंद चवान दामु दामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ॥ ७ ॥

ओसुस लानि द्रायम क्रानि,
करमु लांन्य ल्यूखनम यी।
दोंपनम तस यी मे लेछामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ॥ ८ ॥

तो क्या करे—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए। ३ आप सूर्य हैं और यह चन्द्रमा। आपकी जुदाई इसके लिए ज़ख्मों के ऊपर नमक के बराबर है। आपके ग़म में इसकी दुपहरी शाम में बदल गई है—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए। ४ आप अपनी माँ के लाडले हैं तो यह भी परी-ज़ात (सुन्दरी लाड़ली) है। इसके भाग्य में यही लिखा था तभी ऐसा सब-कुछ हुआ—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए। ५ दशरावण का बहाना हो गया, अन्यथा मैं स्वयं एक अप्सरा थी। जाने दैव को यह सब ख़ुश क्यों न आया !—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए। ६ यह अपनी माँ की दुलारी है और ऐसी (लाडली) को आपने मायके में (असहायावस्था) में छोड़ दिया। देखिए, यह अभी भी (मेरे स्तनों से) दूध के घूंट चूस रही है—हे श्याम-सुन्दर! आप यों रूठकर न जाइए। ७ मेरे कर्मलेख में (सम्भवतः) यही लिखा था तभी इसे इतना दुःख देखना

गंजेमस कंन्य छ्न्यायम कौलि,
दप्योम ज़ौलु पेयस ना ।
शहरु लंबुथन किनु कुनि गामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ।। ९ ।।

अज़ुलुकि बागि आयी लानि,
च्रे पतुह लागि च्रौंज़ तु दास ।
पास कर पितुरेनि दिन मा पामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ।। १० ।।

हारान अशिने जोयि,
लारान सुत्य सुता ह्यथ ।
ख़ौश यिवनि रामु ख़ौश अन्दामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ।। ११ ।।

डंडक वन मंज़ रावुन आस,
छ्लुरिथ च्रूरि नियन दर बाग़ ।
ह्यथ गोस गंयि बे आरामु,
मो रोश शामु सौन्दरो ।। १२ ।।

रिवान मन तस येलि लूसुस,
प्रकाश गोस अंरिने रंग ।

पड़ा । इसके कर्मलेख के बारे में मैंने कभी ऐसा न सोचा था—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए । ८ मैंने इसके गले में पत्थर बाँधकर इसे नदी में फेंका था और यह सोचा था कि यह चिरनिद्रा में खो जाएगी । मगर इसे आपने जाने किस गाँव अथवा नगर में ढूँढ लिया—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए । ९ (तब) यह आप के भाग्य में आई और आपके पीछे इसने ख़ूब दुःख देखे । अब पितरों के वास्ते इस पर दया कीजिए—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए । १० आँसुओं की धाराएँ बहाते तथा सीता को साथ लेकर मैं (आपके पास) आ रही हूँ । हे प्रसन्नवदन ! आप हम पर ख़ुश हो जाइए—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए । ११ दण्डक-वन में रावण इसे चोरी-छिपे उठाकर ले गया और इसे बाग़ (अशोक-वाटिका में डाल दिया जिससे यह बेचारी) बेआराम (दुःखी) हो गई—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए।१२ जब रोते-रोते उसका मन बैठ गया तो 'प्रकाशराम' कहते हैं कि वह अरिन्य (पीले रंग का एक पुष्प-विशेष) की तरह पीली पड़ गई । मन

मन गोस संग तन तस त्रामु,
मो रोश शामु सौंन्दरो ।। १३ ।।

लीला

मन्दूदरी वनान

नामु लगु शामु रूपु लोल आम चोन ।
बेयि वौलु सोन रामु चन्दुरो ।।
छारान छारान लूसिम मे पाद,
वति वति सन्य वौंगुन्य दिवान च्रेय नाद ।
नन्य गाम सीर यारु चारुह नो मे ज़ोन,
बेयि वौलु सोन रामु चन्दरो ।। १ ।।
अकि छुय अख सुय दौंयिम कौंसु छे जाय,
त्रेयि त्रिगुनु त्रियि हुन्द कर च्रु वौपाय ।
च्रूर्युम चराचर छुख च्रु आसुवोन,
बेयि वौलु सोन रामु चन्दरो ।। २ ।।

उसका संग (पत्थर) बन गया और तन उसकी ताम्बा बन गई—हे श्याम-सुन्दर ! आप यों रूठकर न जाइए । १३

भजन

मन्दोदरी कहती है

हे श्याम-रूप ! आपके नाम पर बलिहारी जाऊँ, आपकी लगन बढ़ती ही जा रही है । हे रामचन्द्रजी ! अब आप पुनः हमारे यहाँ आजाएँ । आपको ढूँढते-ढूँढते मेरे पाद थक गए । रास्ते में हर जगह पर मैंने आपको इधर-उधर ढूँढा और आवाज़ें दी । अब मेरा रहस्य (सीता को नदी में फेंकवाना) खुल गया है । (आपके सिवाय) अब मेरा कोई चारागर नहीं रहा—हे रामचन्द्रजी ! अब आप पुनः हमारे यहाँ आजाएँ । १ एक, आप ब्रह्म-स्वरूप हैं और एक हैं । दूसरा, ऐसी कौन-सी जगह है जहाँ पर आप नहीं हैं । तीसरा, मुझ त्रिगुणी त्रिया (सत्त्व, तम व रज गुणों से युक्त मुझ साधारण नारी) का कोई उपाय कीजिए । चौथा, चर-अचर में आप समान रूप से रहते हैं—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आजाएँ । २ पाँचवा, मेरे प्राण आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं । छठा, हर शै में आपको ही ढूँढ रही हूँ । सातवाँ, अब आपके सरल स्वभाव से ही मेरा कर्मलेख बदल सकता है (मेरी मुक्ति हो सकती है)—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आ

पुन्निम यि प्रान म्यांन्य प्रारान छी,
शंयि शिवु शायि शायि छारान छी।
सथ सत्युम सोंवाव चोन छुम में करमुलोन,
बेंयि वोलु सोन रामु च्रन्दरो ॥ ३ ॥

कष्ट कासि अष्ट बयरव करि रखिपाल,
नव दार वोपरिथ ध्यानु दूफ ज़ाल।
नवि कोनु नवि कोनु योंद सु आसि प्रोन,
बेंयि वोलु सोन रामु च्रन्दरो ॥ ४ ॥

दंह दिशि मंज़बाग सोंन्दुरु वलो,
दंह तु अख ईकादशि लोंदुरुवोलो।
बाह बुरजि मन्ज़बाग बाग़ छाव म्योन,
बेंयि वोलु सोन रामु च्रन्दरो ॥ ५ ॥

त्रयोदशि सिरियि वोंन्य अबिमान म कर,
च्रोंदुश ज़ूनि सुतायि हान म कर।
पुनिम हुन्दि रामुच्रन्दुरु कासतम ग्रोन,
बेंयि वोलु सोन रामु च्रन्दुरो ॥ ६ ॥

रावुन छु येंति लूब बहानु मु हाव,
रामु रामु रामो मनस कथ च्रु थाव।
रावि येंलि हावि क्याह हेंयि मन्दुछोन,
बेंयि वोलु सोन रामुच्रन्दुरो ॥ ७ ॥

जाएँ। ३ नवद्वारों को बंदकर मैं ध्यान का दीप जलाए हुए हूँ ताकि अष्ट भैरव मेरा कष्ट दूर कर मेरी रक्षा करें। ऐसी योग-साधना से पुराना भी नया बन जाता है—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आ जाएँ। ४ हे सुन्दर ! आप दसों दिशाओं के बीच में से होकर आजाएँ। हे (दस और ग्यारह) एकादश रुद्र ! आप आजाएँ। बारहवाँ बुर्जो के बीच में मेरे मन के बाग़ को खिला दीजिए—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आजाएँ। ५ तेरहवाँ, हे सूर्य (श्रीरामचन्द्रजी) अब आप ज़्यादा अभिमान न करें और चौदहवीं का चाँद जैसी सीता को यों न दुखाएँ। हे पूनम के रामचन्द्र ! अब मेरा कलंक दूर कर दीजिए—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आजाएँ। ६ लोभी रावण अब यहाँ नहीं रहा, इस बात को हे राम ! आप मन में रखिए (और चले आइए) आकर मुझ भटकी हुई को सही मार्ग दिखाइए—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आजाएँ। ७ आपके लिए मैं अपने तन को

थावय मुशकु सुत्य तन नाविथ,
बावय सीर सीनु मुच्रराविथ ।
रोवुय च्रै यंच्रकाल अज़ बोज़तु म्योन,
बेंयि वोलु सोन रामुच्रन्दुरो ।। ८ ।।

केकी कों कोम वोरु मांज छ्यो,
योंत योंत गछ्रुख तोंत सं पतुलारियों ।
रोशि वोलु करुयो पोशि वथुरोन,
बेंयि वोलु सोन रामुच्रन्दुरो ।। ९ ।।

हलु मुतु बलुवीरु यूर्य वोलो,
लोकुचारु बाज़्यगारुह डांबलो ।
व्यसु दायि छम करान पितुरेनि तोन,
बेंयि बोलु सोन रामुच्रन्दुरो ।। १० ।।

च्रुय छुख प्रकाश च्रुय छुख रव,
च्रुय छुख जल अंगुन तु च्रुय छुख ग्यव ।
च्रय छुख बगवान कुय दोद तु दोन,
बेंयि वोलु सोन रामुच्रन्दुरो ।। ११ ।।

सुतायि हुन्द नारु मंज़ु नेरुन

मुदा मन्दूदरी सुतायि ह्यथ गंय ।
वदुनि लंज रामु अवतारस परन पेंय ।।

सुगन्ध (मुश्क) से सँवार कर रखूँगी तथा अपने रहस्य आप पर छाती खोलकर (स्पष्ट रूप से) व्यक्त कर दूँगी । काफ़ी समय हो गया है, अब ज़रा आज मेरी सुन लीजिए—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आजाएँ । ८ कैकेयी आपकी सौतेली माँ थी तभी उसने कुकर्म किया (आपको वनवास दिलाया) और आपके पीछे पड़ी रही । हे निष्ठुर ! अब आप आजाएँ, मैं आप पर पुष्पों की वर्षा करूँगी—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आजाएँ । ९ हे बलवीर हनुमान ! तुम भी यहाँ आजाना । ये मेरी सखियाँ और दासियाँ मुझे ताना दे-देकर कष्ट पहुँचा रही हैं—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आजाएँ । १० आप ही प्रकाश हैं, आप ही सूर्य है । जल आप है, अग्नि और घी भी आप ही हैं । आप ही भगवान् हैं और आप ही दूध और मक्खन भी हैं—हे श्याम-सुन्दर ! हमारे यहाँ आजाएँ । ११

वोंदुन वाराह तु वोंनुनस म्योन कर पाय ।
दोंपुस तंम्य छय च्रे वयकोंठस अन्दर जाय ।।
कंरुस तमि लीला सं बूज़ुन ।
दिलासा दिथ तिथय लंकायि सूज़ुन ।।
दोंपुन सुतायि कुन यी रामुच्रन्दुरन ।
च्रे कुन वुछ्य वुछ्य मे कोताह मन छु हंन्दुरन ।।
गोंडन्य तंम्य राखिसन दरदिल कंरुय जाय ।
छ्रेट्योवुय मन तम्युक मा छुय च्रे परवाय ।। ५ ।।

दोंयुम ओसुय गोंमुत तीज़ुक अहंकार ।
मे प्यठ देवानु गोमुत रामु अवतार ।।
त्र्येयुम त्रुयि वरनु आंसुखना ब लंका ।
दपन सांरी कुनी ज़ंन्य आंस सुता ।।
यि च्रूरिम चोन बुथ डीशिथ मे डोंल मन ।
पोंज़ुय बोज़ख पोंज़ुय लूकव बंरिम कन ।।
प्रयमस सूर गव सूरिम तमना ।
ति बूज़िथ लंज्य वदुनि कोताह सों सुता ।।

सीता का आग में से निकलना

मुद्दा यह है कि मन्दोदरी सीता को लेकर (रामचन्द्रजी के पास) गई और रोते हुए रामावतार के सामने प्रणाम किया । वह खूब रोयी और कहने लगी कि अब मेरा कोई उपाय कीजिए । इस पर वे (रामचन्द्रजी) बोले—तेरी जगह वैकुण्ठ में होगी । उस (मन्दोदरी) ने बहुत विनती की जिसे उन्होंने (रामचन्द्रजी ने) सुना और दिलासा देकर उसे लंका भिजावा दिया । तब सीता की ओर सम्बोधन कर रामचन्द्रजी ने कहा—तुझे देख-देखकर मेरा मन अत्यन्त दुःखी हो रहा है । अव्वल तो उस राक्षस (रावण) ने तुझे दिल में जगह दी थी जिससे तेरा मन अपवित्र हो गया है, जिसकी तुझे परवाह नहीं हैं, (शायद तू यह नहीं जानती है ।) ५ दूसरा, तुझे अपने तेज (रूप) का अहंकार हो गया था कि तेरे ऊपर रामावतार दीवाने हो गए हैं । तीसरा, तू त्रिया-रूप में लंका में रही और सभी कहते (जानते) हैं कि सीता वहाँ अकेली थी । चौथा, तुझे देख जाने मेरा मन क्यों डोल (शंकित हो) रहा है । सच तो यह है और तू इसे सच मान कि लोग (तेरे विरुद्ध) मेरे कान भर रहे हैं । हा ! मेरा प्रेम राख हो गया और मेरी तमन्नाएँ लुट गई । यह सुनकर वह सीता खूब रोई और

दोंपुन तस कुन सतुच सांखी अनय वुन्य ।
त्रकूटी दीवताह सांरी अनय वुन्य ॥ १० ॥
वुछुन आकाश कुन वंछ तोरु वांनी ।
छें पापव निशि जुदा ईं लालि कांनी ॥
प्रुछुन सिरियस तु तंम्य वाराह कसम हांव्य ।
च्रु छख न्यरमल अपुज़ दोंरज़न हैंया नांव्य ॥
दोंपुन यंन्दुरस पोंज़ुय नारान नंनिथ वन ।
में मा ज़ांह रामुचन्दुरस रोंस डोंल मन ॥
कसम यंन्दराज़ुह हावान ता बदीं हाल ।
कन्यक सुता में छुम साख्यात महाकाल ॥
वदन सुतायि दोंपनस छुख च्रु अवतार ।
क़सम छुम यी च्रें पतु गछु नेंन्दुरि बेदार ॥ १५ ॥
च्रें रोंसतुय योंद वुछम पानय त्रकारन ।
यिमन रातस दोंहस सांरी छी छारन ॥
कसम छुम यी च्रे रोंसतुय कांह नु ख़ोंश आम ।
सहा आसुम च्रु वोंन्य कासुम परुज़ पाम ॥

कहने लगी कि मैं सत्य की साक्षी प्रस्तुत करने के लिए त्रिलोक के देवताओं को अभी यहाँ बुला लेती हूँ। १० तब उसने आकाश की ओर देखा और वहाँ से यह वाणी गूँजी—यह (सीता) पापों से जुदा है और खान में लाल (माणिक) की तरह निर्मल है। तब वह सूर्य से (अपनी सच्चरित्रता के बारे में) पूछने लगी। उसने भी कसमें खा-खाकर कहा—तू निर्मल है, उस दुर्जन से तुम्हारे सम्बंध की बात झूठी है। तब वह इन्द्र से पूछने लगी—नारायण के निमित्त आप भी सच-सच कहें कि रामचन्द्रजी को छोड़ क्या मेरा मन कभी किसी दूसरे पर आया ? इस पर इन्द्र कसमें खाने लगा और कहने लगा—महाकाल को साक्षी मानकर मैं कहता हूँ कि लंका में सीता कन्या की तरह (पवित्र) रही। इस पर रोते-रोते सीता ने (रामचन्द्रजी से) कहा—आप स्वयं अवतार हैं। आपको छोड़ यदि मैंने कभी त्रिकारणों, जिनके लिए रात-दिन हर कोई भागता-फिरता है, की इच्छा की हो तो मैं क़सम खाती हूँ कि मुझे वह पाप लगे जो पत्नी को पति के बाद नींद से वेदार होने (जागने) में लगता है। १५ क़सम खाती हूँ, आपके बिना मुझे और कोई ख़ुश (पसन्द) न आया। अब आप ही मेरे सहायक हैं, मेरा उद्धार कर इस लाँछन से मुझे उबारिए। इस तरह वह ख़ूब रोयी और (कहते हैं) तब राजा दशरथ पैदा हो गए और उसने अपने पुत्र

वोंदुन यंब्र गोस दशरथ राज़ु पादा ।
दोंपुन गोंवरस पोंज़ुय न्यरमल छे सुता ।।
दोंपुस तंम्य रामुचन्द्रुरन रठ यि कथ याद ।
वनय वोंन्य पोंज़ तवय सारुय ब्रली व्याद ।।
अंनिथ येंलि वोंन्य सतुच साखी दितिथ लाफ ।
च्रु अछ़ नारस अन्दर सोरुय ब्रली शाफ ।। २० ।।

स्यठाह़ रुत वोंन सराफ़स कुन सोंनुर्य वोज़ ।
ननी सोंन नारु नीरिथ यारुह़ ख़ोश रोज़ ।।
च्रु अछ़ नारस अन्दर योंद छी च्रे रुत्य गोंन ।
तती मालूम गछ़ि सरतल छे या सोंन ।।
शमाह़ गरदन गंयस ह़ंज्य लंज्य वदाने ।
ति ज़ानख यस यि गव तस क्याह़ सपाने ।।
मुनादी द्रायि यी नोसूर्य लद तान ।
वलुन या नारुह़ ज़ालुन तस छु ती जान ।।
वदन सुता जमाह़ गंयि पंज़्य तु वान्दर ।
अंगुन शीतन क्रुह़न ज़ोलुख बरावर ।। २५ ।।

मुदा मुशखस सपुन सुतायि द्युन नार ।
वनुनि लंग्य कोंह़ गछ़ि मा अथ अन्दर ख़ार ।।

(रामचन्द्रजी) से कहा कि सीता निर्मल है, इसे सत्य मान। तव रामचन्द्रजी ने (सीता से) कहा—अच्छा, एक वात कहता हूं, इसे याद रखना। असली (सत्य) वात यही है और इसी से अव तेरी सारी व्यधियाँ दूर हो जाएँगी। तूने सत्य की साक्षी में कइयों को प्रस्तुत किया। अव तू (ज़रा) अग्नि के अन्दर प्रवेश कर, इससे तेरे सभी शाप दूर हो जाएँगे। २० सर्राफ़ (सीताजी) से सुनार (रामचन्द्रजी) ने क्या ही ठीक कहा—चिंता न कर (ख़ुश होजा) आग में तपकर सोने की परख हो जाएगी। यदि तू गुणवती है तो आग के अन्दर प्रवेश कर जिससे मालूम हो जाएगा कि तू सोना है या पीतल। यह सुनकर उस सीता की शमा जैसी गर्दन (इस अप्रत्याशित व्यवाहार से) टेढ़ी हो गई और वह रो पड़ी तथा उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई। यह मुनादी कराई गई कि सीता अग्नि में प्रवेश करेगी। उद्धार या आग में जलना—यही दो विकल्प अव उसके पास शेष रहे हैं। रो रही सीता के इर्द-गिर्द वानर और रीछ जमा हो गए। आग जलाई गई जो वरावर अस्सी कोस तक फैल गई। २५

दपन कॆंह नार दज़ि वुन्य पोंपुरिस तन ।
दपन कॆंह आसि प्रज़ुलन वुन्य शमाह ज़न ॥
दपन कॆंह व्रायि सौरगुच हूर नारस ।
दपन कॆंह वाति पानय सौरगु दारस ॥
दपन कॆंह असुरु सुन्द्य पुछ्य गोस युथ हाल ।
दपन कॆंह परियि अजदर मा वल्यस नाल ॥
दपन कॆंह क्या सना क्युथ सांपुन्यस रंग ।
दपन कॆंह दूरि यिथ दुनियाह गछ्यस तंग ॥ ३० ॥
दपन कॆंह रामुचन्द्रन ह्योंत अमिस खून ।
दपन कॆंह नेरिह वुन्य ज़न ओंबरुह तलुह ज़ून ॥
दपन कॆंह तस छु यी यस पाप आसन ।
दपन कॆंह काँह नु करमुच हान कासन ॥
पकन गंयि पानु आमुच्र मूह माया ।
पकन फीरिथ वुछन छय छायि छाया ॥
पकन गंयि पानु ईरन आयि सुता ।
तिथिस नारस अन्दर ज़न वंछ ब दरिया ॥

इस प्रकार सीताजी के लिए आग खूब भड़क उठी जिसे देख कुछ कहने लगे कि कहीं वह (सीता) इसके अन्दर जलकर राख न हो जाए। कुछ कहने लगे कि अभी शलभ (सीता) का तन जल उठेगा। कुछ कहने लगे कि अभी वह शमा की तरह प्रज्वलित हो उठेगी। कुछ कहने लगे—देखो, कैसे स्वर्ण की हूर अग्नि में प्रविष्ट हो रही है। कुछ कहने लगे कि उसे स्वर्ग-द्वार की प्राप्ति हो जाएगी। कुछ कहने लगे उस (दुष्ट) असुर (रावण) के कारण इस (निर्दोष) का ऐसा हाल हो गया। कुछ कहने लगे कि अग्निरूपी अज़्दहा इसे अभी निगल जाएगा। कुछ कहने लगे कि जाने जलने के बाद इसका रंग कैसा हो जाएगा ? कुछ कहने लगे कि अब इसके लिए दुनिया के सारे सुख लुप्त हो जाएँगे। ३० कुछ कहने लगे कि रामचन्द्रजी ने इस (निर्दोष) का खून किया, इसे (मरवाया)। कुछ कहने लगे कि यह अभी प्रत्यक्ष हो जाएगी जैसे बादलों के पीछे से चन्द्रमा उदित होता है। कुछ कहने लगे कि उसका यही हाल होता है जो पाप करता है। कुछ कहने लगे कि कर्म का लेख कोई भी मिटा नहीं सकता है। तब सभी की जननी वह सीता आग की तरफ़ धीरे-धीरे बढ़ने लगी और बार-बार सबको पीछे मुड़-मुड़कर देखने लगी। वह सीता अपने शरीर को लहराती हुई आगे बढ़ती गई और आग के अन्दर दरिया

करान मोरु छलु आयस नारु प्यठु रेंह।
करव कथु रथ वन्दय साथा येत्यथ वेंह ॥ ३५ ॥

रगन हुन्दि लोलु रतु सुतिन छलय खोर।
शेरीरुचि शेरि प्यठ येति त्रावुतम पोर ॥
दंज़िथ गव तस वुछिथ सोरुय च्रन्दन काठ।
सों तीज़ुच रेंह वुछिथ दुह च्रोल दिवान लाठ ॥
सु गारथ नार डीशिथ पथ गव अज़ नूर।
गंयस कुनि च्रुनि केंच्रस बसुम गव सूर ॥
रिवान सूता प्यवान तस प्यठ त्यंगल कूत्य।
रटान गुल ज़न च्रटान कोसम अथव सूत्य ॥
दंज़िथ येलि नार गव ता चारदह रोज़।
च्रोंदुश च्रन्दुरमु सांपुन माहि दिलसोज़ ॥ ४० ॥

तिथय मा कूत्य च्रन्दुरावुन छि च्रापन।
अमी सूतिन गछ्न छुख नाश पापन ॥
अंछन लंज्य जून वुछ वुछ च्रन्दुरमस कुन।
वनुनि लंग्य कमि संगरि प्यठु हावि दरशुन ॥
सपुन च्रन्दुरमु ज़न शामन नमूदार।
वुछिथ तस कुन च्रोलुख सार्यन अन्दुकार ॥

(पानी) की तरह प्रविष्ट हुई। तभी आग की लपटें मोरछल डुलाने लगीं और उससे कहने लगीं— ३५ तुम पर बलिहारी ! क्षण-भर के लिए हमारे पास रुकना। हम अपनी नसों के प्रेम-रक्त से तुम्हारे पैर धोएँगी, हमारे शरीर के शीर्ष पर तुम (निःसंकोच) विराज जाना। उसे देख चन्दन की सारी लकड़ी जल गई और उसके तेज की प्रचण्डता देखकर धुआँ भी दुम दबाकर भाग गया। उस सीता के ऐसे नूर को देख आग भी पीछे हट गई और वह भस्मीभूत हो गई। रोती हुई सीता पर जो अंगारे गिरते उन्हें वह गुलों (कुसुमों) की तरह हाथों पर ग्रहण कर लेती। इसी तरह जब चौदह दिनों तक आग जलती रही तो चौदहवीं का चाँद (सीताजी का सौन्दर्य) दिल को और भी लुभावने वाला बन गया। ४० उस (सीता) ने इस परीक्षा द्वारा जाने कितने चाँद्रायण व्रतों को पीछे छोड़ दिया और इस (परीक्षा) से उसने अपने सभी पापों का नाश कर डाला। उस चन्द्रमा (सीताजी) को देख-देखकर सभी की आँखें दुखने लगीं (अमित दिव्यज्योति के कारण) और सभी कहने लगे कि अब न जाने वह किस

वुछुख तस क्रूद गोमुत ड्यकु निशि दूर ।
दोंपुख लंखिमी छि मा ब्रह्मा ज़ुवुन्य कूर ।।
वंलिथ वसतुर सतुक्य यॅलि द्रायि सूता ।
शुराह सामानु तिम सांरी सरापा ।। ४५ ।।

वोंन्दुक ज़्रोल गुसु ग़म सां‌पुन सोंखस तल ।
गोंलाबस मीज बेंयि बागुच यॅम्बुरज़ल ।।
ज़्रंलिथ गव शीन छ्यफ दिथ रूद बर कोंह ।
ज़मिसतान सूर सोंतुन्य आयि रुत्य दोंह ।।
रंटिथ तस विर्‌यकॅमिस दित्य न्नांव्य पांज़ार ।
अंरिनि पोशस सपुज़ हियि माल वेज़ार ।।
वोंनुख यी टेकुवटुन्यव गिलि टूर्‌यव ।
वुछिव तस सोसुनस द्रामुज़्र फंटिथ ज़्यव ।।
असुनि लंग्य पानुवान्य वटुफट्य तु ज़िन्दोर ।
कोंगस वुछ पोम्पुरय रूज़िथ गंयस खोर ।। ५० ।।

लडर पोशस अनारन कोंर गुलन लूठ ।
वनन कंठस हसा असि कांसि मा ड्यूठ ।।

पर्वत-शिखर से उदित होकर दर्शन देगी । ऐसा लगा जैसे शाम को चन्द्रमा नमूदार हो गया हो जिसे देख सभी का अन्धकार दूर हो गया । जब सभी ने देखा कि उसके माथे से क्रोध दूर हो गया है (वह सती-साध्वी तथा तेजवती बन गई है) तो सभी कहने लगे कि यह ब्रह्मा की पुत्री लक्ष्मी तो नहीं है ? जब सत्य के वस्त्र धारण कर वह सीता बाहर आई तो उसका शरीर सोलह सामानों (श्रृंगारों) से युक्त था । ४५ जाड़े का ग़म-गुस्सा सुख में बदल गया तथा गुलाब (रामचन्द्रजी) को पुनः नरगिस मिल गई ! (जाड़े की) वर्फ़ (यंत्रणा) गल गई और पर्वतों पर जाकर छिप गई । पाला टल गया और बसंत के सुहाने दिन आ गए । 'विर्‌यक्योम' पुष्प की हालत ऐसी हो गई जैसे उसे जूते मारे गए हों । 'अरिनि' और 'हियमाल' पुष्प की आपस में ठन गई । 'टेकबटनी' और 'गिलिटूर्‌य' आपस में कहने लगे कि देखो, 'सोसन' पुष्प की जीभ कैसे फटने को (बाहर) निकल आई है । 'वटु फंट्य' और 'ज़िन्दोर' पुष्प आपस में हँसने लगे । केसर ने जब यह हाल देखा तो उसके पैर पाँपोर में ही रुक गए । ५० 'लडर' पुष्पों का अनार के पुष्पों ने बुरा हाल कर दिया (उन पर छा गए और उन्हें शोभाहीन बना डाला) तथा 'कंठ' पुष्प से कहने लगे कि अब तक हम किसी को भी दिखाई नहीं दे रहे थे (दुःख व अन्धकार में खोए

असन कोसम खसन ज़ुव हंदि पोशन ।
च्रसन ज़ंबक वदन मसुवल छे तोशन ।।
छे पम्पोशस वनान ही आसमानी ।
में सुत्य कें्छा थवुन्य गछि पा॒र्यज़ानी ।।
बबुर लारान तबर ह्यथ गा॒र जिनसन ।
मुशिकु सुतिन छौन्डुन समसार हन हन ।।
दपन अछि पोश शशबरगस ज़ि गुलज़ार ।
तिमव डीशिथ पंशिथ तति लोग बेमार ।। ५५ ।।

शंमिथ वोंन कारिपंत्य शुर्य पान मारव ।
खंटिथ रोज़व दोंपुख अदुह हारि तारव ।।
बहारुक्य गुल ति फोल्य नंन्य द्रायि सा॒री ।
संमिथ सुतायि पादन लंग्यसा पा॒री ।।
तिमव पोशव सुतन येलि सबुज़ गव गुल ।
गुलस प्यठ छालु मारुनि लोंग सु बुलबुल ।। ५८ ।।

हुए थे । मगर अब समय पाकर खिल उठे हैं ! अब हमारे सुख और सौन्दर्य को कोई छीन नहीं सकता)[1] । इधर, 'कोसम' मुस्कराने लगी और उधर 'हंदि' पुष्पों के प्राण निकलने लगे । इधर, 'ज़बक' के पुष्प मुरझाने और रोने लगे और उधर 'मसवल' खुशियाँ मनाने लगी। 'पम्पोश' (कमल) 'आसमानी ही' (चमेली-विशेष, जो मुरझा गई है) से कहने लगा—तुझे मेरे साथ परिचय बनाए रखना चाहिए था (मेरा कहा मानती तो तेरी यह हालत न होती) बबुर ग़ैरों के लिए कुल्हाड़ी लेकर तैयार बैठ गई और मुश्क (सुगंध) से संसार का कण-कण ढूँढ मारा (सुगंधित बना डाला) । 'अछि प़ोश' 'शशबरग' से कहने लगा (इस महकते गुलज़ार को देख कहीं और जाने की इच्छा नहीं हो रही है, अतः) क्यों न हम दोनों बीमारी का स्वाँग रचें । ५५ 'कारि पंत्य' पुष्प कहने लगे कि अब हमें अपना जीवन समाप्त कर देना चाचिए या फिर कहीं छिपकर बैठ जाना चाहिए, हमारे लिए अब यही दो उपाय निस्तार के लिए रह गए हैं । (इस प्रकार) बहार के सारे गुल खिलकर प्रकट हो गए और सीता के पादों में निछावर हो गए । इन पुष्पों से जब गुलज़ार सब्जा (महक) गया तो बुलबुल मस्त होकर उसमें अठखेलियाँ करने लगा । ५८

।। लंकाकाण्ड समाप्त ।।

१ अभिप्राय यह है कि नाना प्रकार के पुष्प भी सत्य की विजय पर हर्ष प्रकट करने लगे तथा असत्य को फटकारने लगे ।

वोतर कांड

वापस अजोद्याथि युन

बिहिथ ग़म ख्यथ स्यठाह् माता कौसल्या ।
वंनिन तस रामुचंन्दुरस कुन यि लीला ।।

लीला

तन गंजिम कन नादन दितम ।
पान वंदय दरशुन दितम ।।
गोख यनु प्यठु बुरज़ु गंण्डिथ,
आख तनु कोनु कौह् बाल छंण्डिथ ।
शाख गंयि शमशादन यितम,
पान वंदय दरशुन दितम ।। १ ।।
तोशि कथ रोशि गोह्म नीरिथ,
होशि डंजिस आहम नु फीरिथ ।
पोशि कौंत लांन्य वादन यितम,
पान वंदय दरशुन दितम ।। २ ।।

उत्तर काण्ड

वापस अयोध्या आजाना

बहुत ग़म खायी–हुई (अत्यन्त दुःखी) माता कौशल्या रामचन्द्रजी के (वियोग में) यह भजन गा रही थी ।

भजन

मेरा तन गल गया, अब मेरे आर्त्तनाद पर कान धरना । यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना । जब से तुम भोजपत्र धारणकर चले गए तब से (एक बार के लिए भी) पर्वत फाँदकर तुम क्यों न आए ? मेरी शमशाद (एक वृक्ष-विशेष) जैसी देह खण्ड-खण्ड हो गई—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना । १ तू मुझसे रूठकर चला गया, मैं भला ख़ुश कैसे रह सकती थी ? तू लौटकर नहीं आयेगा (यह जानकर) मेरे तो होश ही उड़ गए । मेरी सामर्थ्य समाप्त हो चुकी है, अब तो तू

आव मे वोंन्दु स्यठाह फंटिथ,
त्राव मलालु यिम परदह च्रंटिथ।
हाव दरशुन मे गोम सितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ॥ ३ ॥

कृत्य गलान छी चानि वेरे,
कृत्य बलान तमना नेरे।
सृत्य स्यदन तु सादन यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ॥ ४ ॥

च्राव वालिजि अन्दर क्रोनुय,
बाव ग़म गोसु गोय क्याह म्योनुय।
हाव मोख थाव लादन यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ॥ ५ ॥

राज़ु होंज़ाह लोंग येति ज़ालह,
बोज़तम कस बु करथस हवालह।
दितु दरशुन फीरिथ यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ॥ ६ ॥

छुम मे अरमान वालिजि अन्दर,
बरुह करथस बु शामु सोंन्दर।

आजा—यह देह तुझ पर वलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना। २ मेरा हृदय फटने को आया है, अब तू नाराज़गी छोड़ और सभी पर्दे तोड़कर आ जा। मुझे दर्शन दे दे, मुझ पर बहुत सितम हो चुके हैं—यह देह तुझ पर वलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना। ३ कितने ही तेरे (दर्शन के) लिए गल गए और कितने ही तेरे दर्शन से पार लग गए (उनकी तमन्नाएँ पूरी हो गई) अब तू मेरी साध को भी पूर्ण कर दे—यह देह तुझ पर वलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना। ४ मेरे हृदय में (तेरी जुदाई का) ग़म समाया हुआ है। तुझे मुझ से क्या गिला-शिकवा है—यह तू कह दे। अब तू अपना मुख दिखा (दर्शन दे) और मुझे उपकृत कर—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना। ५ मैं हंसी यहाँ जाल में फँस गई हूँ। अब मेरी पुकार सुन, मुझे तू किसके हवाले कर गया? (यहाँ मेरा कौन सहायक है?) अब तू लौटकर मुझे दर्शन दे—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना। ६ मेरे दिल में यही एक अरमान है (कि तू आ जाए), रे श्याम-सुन्दर! तूने मुझे मुरझा दिया। अब तू मुझे यादकर

याद करतम तु मे नाद दितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ।। ७ ।।

चानि पुछ्य मे सूरुम अंछिन गाश,
चानि यिनुच आंसुम नु कँह आश ।
सुत्य सूता ह्यथ यूर्य यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ।। ८ ।।

दसतु करुयो गौलाब पोशन,
गंछिथ च्रु रूदहम छायि अन्द गोशन ।
लोल छुम होल गोमुत यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ।। ९ ।।

चोन दूर्यर ह्यकु नो जंरिथ,
मतु गछतम जुदाय करिथ ।
जान जिगर वन्दुहय यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ।। १० ।।

पाद छेनिम मुलुक छंडान,
यॆलि ओसुहम दौद दामु चवान ।
छुख च्रु गोमुत कोरकुन यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ।। ११ ।।

दौख तु दोद छुम स्यठाह गोमुत,
लोलु छटे छुम डोठ प्योमुत ।

और आवाज़ दे—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना । ७ तेरी ख़ातिर मेरी आँखों की ज्योति रीती हो गई क्योंकि तेरे लौटने की मुझे कोई आशा न थी । अब तू सीता सहित यहाँ आ जा—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना । ८ मैने तेरे लिए गुलाब के पुष्पों के गुलदस्ते बनाए पर तू मुझसे दूर जाकर छिप गया । अब तेरी लगन सताने लग गई है—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना । ९ तेरी दूरी मुझसे सही न जा सकेगी । अब तू मुझसे जुदा होकर न जा । यह जान व जिगर तुझ पर निछावर है, अब तो आ जा—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना । १० मुल्कों (देश-देशान्तरों) में तुझे ढूँढते-ढूँढते मेरे पाद घिस गए । (मुझे उस समय की याद आ रही है) जब तू मेरे स्तनों से दूध पीता था । अब जाने तू किस ओर चला गया है—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना । ११

होल चानि न यिनु छुम यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ॥ १२ ॥

हरदु छस ज़न पोहु पन हरान,
मनु किन्य छस रामु रामु सॊरान ।
सरवुह् कदुह शाख शमशादु यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ॥ १३ ॥

सिरियि प्रकाश रूदहम चु खॅटिथ,
नेर न्यबर लछ परदुह चॅटिथ ।
मोल प्रारान छुय त्रेशि यितम,
पान वंदय दरशुन मे दितम ॥ १४ ॥

सपुन्य यॆलि सरो सबज़ुय सार बुतुराथ ।
यछा सॉपुन्य गरस तस द्राव रुत साथ ॥
वॅथिथ आकाशय गव वर तख़्त रवान ।
पकान यॆन्दुरस थ्यकान तॊत वात्य शादान ॥
सॊमॆतरा आयि दॊपनस गोसु द्रावुय ।
सु चोलुमुत रामु जुव अज़ यूर्य आवुय ॥

दुःख और दर्द से मैं ग्रस्त हो चुकी हूँ और मेरे वात्सल्य प्रेम पर ओले गिर चुके है यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना। १२ पतझर की तरह मेरे शरीर से पत्ते झर रहे हैं (मैं दुर्बल होती जा रही हूँ) परन्तु फिर भी मन से राम-राम का स्मरण कर रही हूँ। रे सरो क़दवाले! (सुन्दर आकृतिवाले) अब तो आ जा—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना। १३ रे सूर्य-प्रकाश! तू जाने कहाँ छिप गया? (सभी) लाख पर्दे काटकर तू सामने आ जा। देख, तेरा पिता पानी के लिए तेरी प्रतीक्षा कर रहा है—यह देह तुझ पर बलिहारी, अब मुझे दर्शन दे देना। १४

जब सकल पृथ्वी (वासंती फ़िजाओं से) स्निग्ध और सब्ज़ाज़ार (हरी भरी) हो उठी तो उचित मुहूर्त्त देखकर उन्हें (श्री रामचन्द्र को) अपने घर जाने की इच्छा हुई। आकाश में तख़्त (विमान) पर उड़कर वे लोग (अयोध्या के लिए) रवाना हो गए और आकाश-मार्ग में इन्द्र से अपने विमान का बखान करते वे ख़ुशी-ख़ुशी (अयोध्या) पहुँच गए। (उन्हें देख) सुमित्रा ने (कौशल्या से) कहा—आज तेरा दुःख दूर हो गया। तेरा विछुड़ा हुआ रामचन्द्र आज लौट आया है। उसके आने से अन्धकार

तसुन्दी यिनु सुत्य गव अनि गोंट दूर ।
तसुन्दी यिनु सुत्य गाश आव पछिम पूर ।।
पकान तोंत वोत येंति ना आंस तस मोज ।
सु वांतिथ वोत लंखिमन सुत्य ह्यथ फ़ोज ।। ५ ।।
सोंमेंतरा आयि अंन्द्य अंन्द्य ग्रायि मारान ।
लंजिख ब्योंन ब्योंन वन्दांने चेंशमु पादन ।।
बिहिथ गम ख्यथ स्यठा माता कोंसल्या ।
असान आयस वनुनि तस लंज्य सोंमेंतरा ।।
गं‍ज़र यस आसि तस ह्युव रोववुमुत लाल ।
लबन येंलि क्याह् गछ्न तथ कुन वुछिथ हाल ।। ८ ।।

लीला

सोंमेंतरा छि कोंसल्यायि कुन वनान

हांरिये बोज़ पोशि नूलुनि वाशे ।
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।।
दम छुय दुनिया खंटिथ वालु वाशे,
ज़ालु लगि राज़ुहोंज़ कथन कन थाव ।
रामु ज़ुव्य शेंछ हय लंज़ अन्द गाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। १ ।।

दूर हो गया है और पूर्व से लेकर पश्चिम तक प्रकाश विकीर्ण हो गया है। वे (रामचन्द्रजी) सर्वप्रथम उस ओर चले जहाँ पर उनकी माता थी। उनके पीछे-पीछे फ़ौज सहित लक्ष्मणजी भी चल दिए। ५ सुमित्रा भी भाव–विह्वल होकर वहाँ पहुँच गई और उनके पादों की वंदना करने लगी। माता कौशल्या अत्यन्त ग़मगीन मुद्रा में बैठी थी। तभी सुमित्रा हँसती हुई उसके पास आई और कहने लगी—सुनो, रामचन्द्रजी जैसा लाल जिस माँ का खो गया हो यदि वह उसे मिल जाए तो उसे देख जाने उस माँ का क्या हाल हो! ९

सुमित्रा कौशल्या से संबोधन कर रही है

री मैना! तू पोशनूल (पक्षी-विशेष) के बोल सुन। देख, आज (हम) हताशों के प्रकाश आ गए हैं। इस दुनिया के दम (जीवन) का शिकारी छिपकर वैठा हुआ है और एक न एक दिन राजहंस उसके जाल

कन थाव कथन वोज़ ज़न गव सु राशे,
अन ब्रोंठ क़दम नेर मन तन नाव ।
वोंनमय युथनु केंह गछ़न खन्दु बाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। २ ।।

ब्रंठिम आश छय नेंन्दुरे नाशे,
सेंन्दुरे थम सोन आंगन च्राव ।
नेंदुरे वुज़ुनस कर तलाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। ३ ।।

ललुवुन लालु फौल म कर शुर्‌य बाशे,
सुलुवुन सुलुविथ हाल तस बाव ।
मौलुवुनि गछ़व अंस्य फौलुवुनि गाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। ४ ।।

पातालु खौत किनु वौथ आकाशे,
प्रकशि तंहंन्दि सूत्य असि गाश आव ।
नाव छुस अज़लु प्यठु अबदुकि गाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। ५ ।।

वौथ तय बोज़ी करतस ज़ारी,
रामु ज़ुव बोज़िना यियिना सोन ।

में फंस ही जायेगा, यह बात ज़रा ध्यान से सुन–देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं । १ मेरी बातों पर कान धर तथा तन को स्वच्छ कर । उन (रामचन्द्रजी) का स्वागत करने के लिए क़दम आगे बढ़ा । मैं यह (सत्य) कह रही हूँ, इसे मज़ाक न समझ--देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं । २ पहले हम निराशा में भटक रही थीं, किन्तु अब सिन्दूर–सा दमकता स्तम्भ (श्रीरामचन्द्रजी) हमारे आँगन में प्रविष्ट हुआ है, अत: नींद से जागने का उपक्रम कर—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं । ३ वे लुभावने लाल हैं, उन्हें ऐसा-वैसा न जान । गोद में उठाकर उनसे अब अपना हाल कह डाल । हम सब का अब छिटकते प्रकाश की तरह मूल्य बढ़ गया—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये है । ४ (कौन जाने) वे पाताल से निकल आये है या आकाश से उतरे हैं ? उनके प्रकाश से हम आलोकित हो उठे है । असीम प्रकाश के उस पुंज के जाने कितने (असंख्य) नाम है--देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं । ५ अब उठ और उनसे अनुनय-विनय कर । हमारे यहाँ

ज़ार् पार् करतस बोज़िना बाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। ६ ।।

कीकी तु कौसल्या आयि ब्रोंठु लारान,
बूज़ुख ज़ि रामुजुव तु लंखिमन आय ।
कन थाव कथन वोज़ तु बोलु बाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। ७ ।।

सोमेंतरायि दोंपनख वंनितव वारय,
पोंज़ छा अपुज़ छा रामुजुव आव ।
अनि गोंट गोंमुत ओस वोंन्य आव गाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। ८ ।।

पानु तंम्य कोंरुन दरुम तय दानुय,
नंगुरुक्य लूख गंयि त्रफ्त सांरी ।
जानुवार बोलुनि लंग्य कर्यख बोलु बाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। ९ ।।

संमिथ सांरी आय तोंत लारान,
दीवता सांर्य तोंता करने लंग्य ।
सारिवुय संमिथ वोंन आव अज़ प्रज़ि गाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ।। १० ।।

आकर वे हमारी बातें जरूर सुनेंगे। ऐसा हो ही नहीं सकता कि ख़ूब अनुनय-विनय करने पर भी वे हमारी न सुनें ! देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं। ६ जब उन्होंने सुना कि श्रीराम और लक्ष्मण आ गये हैं तो कैकेयी और कौशल्या (प्रसन्न होकर) स्वागत के लिए निकल पड़ीं। आगे की बातों पर कान धर और उन्हें (ध्यान से) सुन—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं। ७ सुमित्रा (से न रहा गया, उस) ने कहा—क्या यह सच है या झूठ कि रामचन्द्रजी आए हैं ? हम अँधियारे में डूबी थीं, अब प्रकाश आ गया—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं। ८ (श्रीराम आदि के आगमन पर) खूब धर्म-दान किया गया जिससे नगर के सारे लोग तृप्त हो गये। जानवर तरह-तरह की बोलियाँ बोलने लगे—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं। ९ सभी (लोग) वहाँ पर दौड़ते हुए आ गये तथा सारे देवता उन (श्रीराम) की स्तुति करने लगे। सभी मिलकर कहने लगे कि आज प्रजा के लिए प्रकाश का आगमन हुआ है—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं। १०

कामुदीनि सुह आव गासु ह्यथ पानय,
शाल गंब हांर ब्रांर आसु यकजा ।
सांरी छि करन पनुनि वोलु बाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ॥ ११ ॥

ग्यानु ज़ोन सारिवुय ज़ानन वाल्यव,
आमुत छु बगवान पानु ज़नुमस ।
बाहन सिरियन हुन्द छुय तस प्रकाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ॥ १२ ॥

रामु जुव येलि ब्यूठ तखतस पानय,
दीवताह सांरी संमिथ आय ।
प्रथ जायि सांपुन्य नगुमु तु नाचे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ॥ १३ ॥

ज़ूनु पछि नवुम चित्रुरस क्यूतुय,
बोंदवार रूह्यन वरशि लंगुन ओस ।
अरदु राथ गंमुच आंस बेंयि आव गाशे,
आशे रंसित्यन गाश हय आव ॥ १४ ॥

प्रबाथ फोंल तय बूज़ येलि राज़न,
खोंश गव दशरथ व्यठुने लोंग ।

कामधेनु के लिए (स्वयं) सिंह घास लेकर आया; गीदड़, भेड़, मैना, बिल्ली (सभी) यकजा (इकट्ठे) शातिपूर्वक रहने लग गये तथा सभी अपनी-अपनी बोलियाँ (प्रेम से) बोलने लगे—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं। ११ सभी जाननेवालों को यह ज्ञान हुआ कि (दरअस्ल) भगवान् ने स्वयं (रामचन्द्रजी के रूप में) जन्म लिया है। उनका (तेज) प्रकाश बारह (चमकते) सूर्यों के समान है—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं। १२ जब रामचन्द्रजी सिंहासन पर बिराजे तो सारे देवता इकट्ठे होकर आ गये। हर जगह नाच और नग़मे होने लगे—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं। १३ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी, वृष लग्न, बुधवार का दिन और रोहिणी नक्षत्र--उसी दिन आधी रात बीत जाने पर (हमारे) प्रकाश का उदय हुआ (रामचन्द्र जी का जन्म हुआ)—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं। १४ प्रभात होने पर राजा ने जब यह समाचार सुना तो मारे खुशी के वे फूले न

वंसशठन दोंपुस ज़ाव फोलुवुनि गाशे,
आशे रंसित्यन गाश ह्य आव ।। १५ ।।

माता कौशल्या छि प्रसंद सपदान

वोंथी वनु नाव्य तोस वालिजि शर द्राव ।
सु च्रोलुमुत रामुजुव सुतायि ह्यथ आव ।।
ति याम बूज़ुन तंमिस किथु पाठ्य ओंशरूद ।
वंसिथ पेयि ज़न सु दशरथ राज़ु तोलि मूद ।।
दोंपुन सार्यन च्रंलिथ गव दय मे वंन्यतव ।
लबन किथु पाठ्य तंम्य सुन्द पय मे वंन्यतव ।।
मे वोंनमुत तंम्य छु येलि वुछिहन च्रु दरशुन ।
तमी विज़ि नाद दिज़ि अदु दशरथस कुन ।।
तंमिस वनुहा मे कम कम दोंख बन्यायम ।
सु छांडान कमु कनि खोरन सन्यायम ।। ५ ।।
तिथय तमि दाद्य वंन्य गंछ्यनस बलाय दूर ।
ति बूज़िथ सांपुनुनि लोंग शेंशतुरस सूर ।।
दोंपुन लूकन सु च्रोलुमुत यार अंन्य तोम ।
सु च्रोलुमुत रामुजुव तस ज़ार वंन्य तोम ।। ७ ।।

समाये और वसिष्ठजी से कहने लगे कि हम सब के लिए छिटकता प्रकाश उदित हुआ है—देख, आज हम हताशों के प्रकाश आ गये हैं ।[1] १५

माता कौशल्या की प्रसन्नता

उठो री, उनका स्वागत करो । हृदय में लगा तीर (शर) अब निकल गया है--वे प्रवासी रामजी सीता समेत आ गए हैं । यह सुनते ही (कौशल्या की आँखों से) अश्रु-वर्षा फूट पड़ी और कहने लगी—मैं उन्हें (दशरथ को) कहाँ से बुलाऊँ ! उन्होंने (प्राण त्यागते समय) कहा था कि जब उस (रामजी) के दर्शन हो जाएँ (वे लौटकर आ जाएँ) तो उसी समय मुझे भी आवाज देकर बुला लेना । (वे आ जाते तो) मैं उनसे कहती कि मेरे ऊपर क्या-क्या दुःख आन पड़े और उसे (रामचन्द्रजी को) ढूँढते-ढूंढते पाँव में कितने काँटे चुभे । ५ इस प्रकार उस (कौशल्या) ने अपने अनेक दुखड़े कहे—उसकी वला (विपत्ति) दूर हो ! जिन्हें सुनकर लोहा भी (गलकर) राख बन गया । लोगों से वह कहने लगी कि उस

१ यह भजन अयोध्यागमन से सम्बधित न होकर राम-जन्म से सम्बंधित लगता है।

कौसल्या लीला करान

मूमञ्रि ज़मीनि बेयि ज़ुव ञ्राव ।
बहार आव तय वनु नाव्य तोस ॥

राम राम परान जामु हय वन्योम,
यियिहम नज़ि आम तमना में द्राम ।
ह्यमुना मनस पानुह वगवान ओस ।
बहार आवतय वनुनाव्य तोस ॥ १ ॥

लोसु नावनस बु क्याह गोसु ह्यथ ञ्रोलुम.
तोसु बोम्बूर्य हय में थोवनम दाग़ ।
बोसु दिमस पादन गोसु मा गोस ।
बहार आव तय वनुनाव्य तोस ॥ २ ॥

कवु गोम त्राविथ बुज़ि पान मारय,
नज़ि पज़ि वनुनी वोन्य पतिम ग्राव ।
दज़ु दज़ु छुम वोन्दस तिज़ि वन्यतोस ॥
बहार आव तय वनुनाव्य तोस ॥ ३ ॥

प्रवासी यार (रामजी) को अब जल्दी (मेरे पास) ले आइए तथा उस प्रवासी रामजी से मेरी प्रार्थना कहिए। ७

कौशल्या का भजन

मृत (सूखी) जमीन में पुनः प्राण-संचार हुआ। बहार आ गई, आओ, उसका स्वागत करें। राम-राम रटते (तथा अश्रु बहाते) मेरे वस्त्र गीले हो गए। काश, वे तुरन्त आजाते और मेरी तमन्ना पूरी कर डालते ! मेरा मन भला दुःखी क्यों न होता ? वे स्वयं भगवान् जो थे। बहार आ गई, आओ, उसका स्वागत करें। १ प्रतीक्षा करते-करते मेरी आँखें मुरझा गई। जाने कौन-सा गिला-शिकवा (मन में) पालकर पशम से भी कोमल वह भौंरा मेरे गात को दाग़ लगाकर भाग गया था। अब मैं उसके पादों पर बोसा देकर उसको मनाऊँगी—बहार आ गई, आओ, उसका स्वागत करे। २ जाने वह क्यों मुझे छोड़कर चला गया था। अब भी वह नहीं आता तो (मैं शायद) अपने प्राण दे देती। मुझे अब पिछले गिले-शिकवों को भूल जाना चाहिए। (यह जानते हुए भी) अन्तर मेरा जल रहा है। बस इतनी-सी बात उससे कोई कह दे—बहार आ गई, आओ, उसका स्वागत

ज़नुमुक दूफ असि दरमुक गाश ।
मरमुक नगीन असि रामसुन्द नाव ।।
असिनय करमुक खुर कांसि कोस ।
बहार आव तय वनु नाव्य तोस ।। ४ ।।

दिम सोखु नाद मे दोख छुम गोमुत ।
यिमु शेछि वनिहस बुलबुल तु काव ।।
सोनु जामु गंडिथ रामु जुव पादु गोस ।
बहार आव तय वनु नाव्य तोस ।। ५ ।।

दज़ु दज़ु कासतम कालु सोन्दरे ।
अज़ छम ताज़ु सोन्य पोशन ति क्राव ।।
प्रछुहस सोन्दुरो तनु कति ओस ।
बहार आव तय वनु नाव्य तोस ।। ६ ।।

अनिगटि गाश आव प्रकाश हावतम ।
त्रावतम मलालु तु छुख च्रु दरियाव ।।
रोंपु तनि पूरथम रूस्य कचि पोस ।
बहार आव तय वनु नाव्य तोस ।। ७ ।।

करें । ३ श्रीराम का नाम हमारे लिए जीवन-दीप, धर्म-प्रकाश, व मर्म रूप नगीने के समान है । अब (उसके विना) हमारे कर्म के फेर को भला कौन सुलझा सकता है ! बहार आ गई, आओ, उसका स्वागत करें । ४ मुझ पर अब सुख की वर्षा हो, दुःख तो मैं ख़ूब भुगत चुकी हूँ । (प्रमाण-स्वरूप) मेरे दुःख की कहानी ये बुलबुलें और कौए कह देंगे । स्वर्ण-वस्त्र धारी रामजी अब आने ही वाले हैं— बहार आ गई, आओ, उसका स्वागत करें । ५ अन्तर की अग्नि से मैं काली-सुन्दरी (श्याम-वर्ण की) हो गई हूँ, इसे अब मिटा देना । मेरी यह 'सोन्यपोश' (पुष्प-विशेष) जैसी ताज़ी तन मुरझा गई है । (वह आता तो मैं) उससे पूछती कि रे सुन्दर ! अब तक तू कहाँ रहा ?— बहार आ गई, आओ, उसका स्वागत करें । ६ (तेरे आने से) अन्धकार, प्रकाश में बदल गया । अब मलाल छोड़ दे क्योंकि तू दरिया (उदार) है । मेरी हिरनी जैसी (पोस्त) चमड़ी को (तेरे आने से) पुनः कांति प्राप्त हुई है— बहार आ गई, आओ, उसका स्वागत करें । ७

कौसल्या तु रामुजुव समुखान

कौरुख यैलि नालु मौत दौनुवय वंसिथ पैय ।
औनुख यंच़ ज़ोर लोलन बे ख़बर गंय ।।
गौबुर यस आसि तस ह्युव रोवुमुत लाल ।
लब्यस यैलि क्याह् गछ्यस तसकुन वुछिथ हाल ।।
रौटुन नालुह् सपुन्य यंच़काल बेहोश ।
गुमां यी गोख कौरुन ज़हरे हिलाल नोश ।।
वौदुन त्युथ युथ अंछिन रूदुस नु कैंह् गाश ।
अंछिव ड्यूठुन गौबुर कर आस तस आश ।।
वदुनु सूतिन बदन दौनुवुन्य वुनेयस ।
बन्दन प्यठ बन्द निसतर ज़न सनेयख ।। ५ ।।

रुमाह् रूज़िथ सपुन्य बेदार माता ।
टुकन थौद गंयि वंथिथ आयस सौमेंतरा ।।
सौमेंतरा आयि अंन्द्य अंन्द्य ग्रायि मारन ।
पकन ही ज़न छकन नबु क्यन सितारन ।।
वदुनि लंज्य लोलु सूतिन अदु सौमेंतरा ।
करुनि लंज्य रामु अवतारस यि लीला ।। ८ ।।

कौशल्या और रामजी का मिलन

जब वे (एक दूसरे के) गले मिले तो दोनों जैसे (भावविभोर होकर) गिर पड़े। वात्सल्य ने ऐसा ज़ोर मारा कि दोनों बेख़बर हो गए। जिस (माता) का ऐसा लाल सरीखा पुत्र खो गया हो और फिर उसे वह पा ले, तो उसे देखकर उसका ऐसा हाल क्यों न हो ? उसे (रामचन्द्रजी को) गले से लगाकर वह काफ़ी देर तक बेहोश रही। सभी को गुमाँ हुआ जैसे उसने ज़हर पी लिया हो (मर गई हो)। वह इतनी रोई कि उसकी आँखों की ज्योति रीती हो गई। आँखों से वह अपने पुत्र को देखेगी, इसकी भला उसे आशा कहाँ थी ! रोने से दोनों के बदन गीले हो गए और अंगों में जैसे नश्तर चुभने लगे। ५ कुछ समय के बाद (कौशल्या) बेदार हो गई और उठ खड़ी हुई। तभी सुमित्रा आ गई। वह धीरे-धीरे क़दम डालती हुई प्रेम-विह्वल होकर मालती के फूल जो नभ के सितारों की तरह लगते थे, बिखेरते हुए आगे बढ़ने लगी। प्रेम में मग्न होकर वह (सुमित्रा) रोने लगी और रामावतार की वंदना करने लगी। ८

सोमेंतरा लीला करान

रामु च्रन्दुरु हरि नारानुह ।
लागय दानु दानय ही ॥
मनस मा कैंह च्रें रोंटथम गोसुह ।
लगुयो तोसु पोमबुरे ॥
लंखिमी सुत्य छय नारानुह ।
लागय दानु दानय ही ॥ १ ॥

खोंतुहम पूर्य सिरियि रूपु ।
च्रोंलुम मूरे अलुरुन ॥
च्रुय छुख म्यानि ज़ुवुक जानु ।
लागय दानु दानय ही ॥ २ ॥
च्रुय छुख अनु च्रुय छुख दनु ।
च्रुय छुख मनु मंज़ुक सीर ॥
च्रें क्याह वनय तु बु क्याह ज़ानु ।
लागय दानु दानय ही ॥ ३ ॥

मोंखतुह हार च्रेंय छुय हटि ।
छसय मटि पालांनी ॥
वुछिनय चानि वोंगन्योम शानु ।
लागय दानु दानय ही ॥ ४ ॥

सुमित्रा का भजन

हे रामचन्द्र-रूपी हरि-नारायण ! तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। तुमने मन में कोई गिला-शिकवा तो नहीं पाल रखा है ? आ, तुम्हारे पशम से कोमल शरीर पर वारी जाऊँ। हे नारायण ! —तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। १ लक्ष्मी के साथ (तुम) ख़ूब सुशोभित हो रहे हो। हे सूर्य-रूप ! मेरे जीवन में तुम पूर्व दिशा से उदित होनेवाले सूर्य की तरह आए हो। तुम्हारे आने से मेरी कँपकँपी (मेरा मानसिक संताप) दूर हो गई। मेरे शरीर की तुम ही जान हो— तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। २ तुम ही (मेरे) अन्न और तुम ही (मेरे) धन हो तथा मन के भीतर रहनेवाला मर्म भी तुम ही हो। तुम से भला मैं क्या कहूँ ? मैं जानती ही क्या हूँ— तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। ३ तुम्हारे गले में मुक्ताओं का हार है। मुझे पालने की ज़िम्मेदारी अब तुम्हारे ही ऊपर है। तुम्हारे दर्शनों से मेरा सीना फूल गया— तुम पर

तुय छुख मालि अंगुज यालि ।
तुय छुख नालि नगीनस ॥
तुय छुख यानु भगवान् ।
मालत्य थानु वालय हो ॥ ५ ॥

तुय छुख नीबि तुय छुख अंदु ।
वुछ्हाम मनु बुछितन बो ॥
बैसन् गृ श्री भगवान् ।
मालत्य थानु वालय हो ॥ ६ ॥

तुय छुख छिनि मँबुरस थानु ।
तुय छुख जानु मोरु जान ॥
मे दोंन् दोह् निशि अरमान् ।
मालत्य थानु वालय हो ॥ ७ ॥

वोथुम नाम नागुम डेरि ।
वोन्हुक डेरि दुआना ॥
गोंतुम पाप ग्रोहुम जान् ।
मालत्य थानु वालय हो ॥ ८ ॥

दरशन् चानि ओंगिरु गछु ।
वंदुमी वांहुन नु मालु बो ॥
वैद्री तुम नु तुय तांगनु ।
मालत्य थानु वालय हो ॥ ९ ॥

मालती के फूल चढ़ाऊँ। ४ अभी आ [illegible] तुम तारा-जैसे हो, अँगूठी में नगीने के समान हो हे भगवान्! तुम [illegible] (भगवान्) हो— तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। ५ अन्दर भी तुम हो और बाहर भी तुम ही हो। मैंने मन में तुम्हें हे श्रीभगवान्! देखना चाहता था— तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। ६ मालती का पराग तुम ही हो तथा (हम सबको) जान से भी तुम प्यारे हो। (तुम्हारे आने से) मेरे दिल के अरमान निकल गए— तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। ७ उठो और अब अपने सिर पर ताज धारण करो ताकि (हमारे) दिल की तमन्ना निकल आए। मैंने सारे ढेर-ढेर (अपने ऊपर खूब) पाप चढ़ाए हैं— तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। ८ तुम्हारे दर्शन से मेरा अन्धकार दूर हो गया। आ, तुम्हें हार और मालाएँ पहनाऊँ। (ऐसे मौके पर भला कौन प्रसन्न न होगा!) जो

प्रकाशि चानि च्रोलुम दाग़ ।
शिहिलि नागुरादो वे ।।
गंयम अज़ में बंरुत्य बानु ।
लागय दानु दानय ही ।। १० ।।

श्री रामुखंद राज

तंमिस सुतायि बंयि दोन राजि ज़ादन ।
लंजिख ब्योंन वंदाने चंशमु पादन ।।
कोंठिस प्यठ कलु ह्यथ तिम ललुनाविन ।
दिलासा दिथ समबालिन सुलुनाविन ।।
सपुन्य बेदार येलि वंनिनख स्यठाह ज़ार ।
जमाह गव नगर सारी गंयि ख़बरदार ।।
जमाह सारी ख़लुक येलि आयि यकबार ।
संमिथ तस रामुचंदुरस यी वंनिख ज़ार ।।
शतुरगुन बरथ बंयि लूख आयि सारी ।
लगुनि लंग्य रामु च्रन्दुरस पार्‌यपारी ।। ५ ।।
तुलुख मोरुछलु कंर्‌य कंर्‌य लोगुहस ताज ।
ज़ंमीनदारन कोरुख मोक़ूफ़ ह्योंन बाज ।।

नहीं होगा वह हैरान (दुःखी) बना फिरता रहेगा— तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। ९ तुम्हारे प्रकाश से मेरा (जुदाई का) दाग़ मिट गया और मुझे जैसे बहते झरने के पास की शीतल-छाया मिल गई। आज मेरे सभी वर्त्तन भर गए (मैं संतुष्ट हो गई)— तुम पर मालती के फूल चढ़ाऊँ। १०

श्रीराम का राज

(तब) उस सीता और उन दो राजकुमारों के पादों पर वह (कौशल्या) नेत्र बिछाने (वारने) लगी। घुटनों पर तीनों के सिर लेकर उन्हें डुलाने लगी और (धीरे-धीरे) पुचकार कर उन्हें सुलाने लगी। जब वे बेदार हुए तो उस (कौशल्या) ने अपने दुखड़े सुनाए जिससे सारा नगर ख़बरदार होकर वहाँ जमा हो गया। जब सारे (ख़लक़) लोग एक-साथ जमा हो गए तो उन्होंने ने भी मिलकर रामचन्द्रजी को अपने दुखड़े सुनाए। शत्रुघ्न, भरत और अन्य सारे लोग आ गए और रामचन्द्रजी पर बलिहारी जाने लगे। ५ तब मोरछल डुला-डुलाकर

तंपीशोंर रेंश तु यूगी जूग्य ब्रह्मन ।
स्यठाह गंयि साविदान तस कुन गोंमुत मन ।।
अंनिन गंजीनु मुच्रराविन खज़ानह ।
दितिन दरमस ग़रीवन पान्य पानह ।।
सपुन ख़ोशदिल समय अज़ अदल दरदाद ।
वनुन छुनु कोंह ज़मीनदार गंयि आवाद ।।
सपुन्य मशहूर येंलि यिछ्र हुकुमरानी ।
सु अमुर्यथ चथ लुकव लंब ज़िन्दुगानी ।। १० ।।
कंरुन यंच्रकाल तामथ हुकुमरानी ।
मरुन मोकूफ सांपुन दर जवानी ।।
कंरुन यंच्रकाल तामथ पादुशाही ।
तंमिस सारी करान आसी यि आही ।।
वनन यी आस्य ईशर व्याद कासिन ।
लंसिन असि राजुह राज़स तीज़ आसिन ।। १३ ।।

।। वोतरकांड समाप्त ।।

उन्हें ताज पहनाया गया और इसी के साथ जमींदारों से लगान लेना माफ कर दिया गया। तपीश्वर, ऋषि, जोगी और ब्राह्मण सभी प्रसन्न हो गए। खज़ानों के द्वार खोल दिए गए तथा स्वयं (श्रीरामचन्द्रजी ने) ग़रीवों के लिए दान-कर्म किया। सभी खुशदिल हो गए और समय बड़ा ही सुखद वन गया। और क्या कहें, जमींदार आवाद (खुश-खुशहाल) हो गए। (श्रीरामचन्द्रजी की) हुक्मरानी (राज्य) मशहूर हो गई और जनता ने अमृत-पान कर नई ज़िन्दगी प्राप्त की। १० उन्होंने (रामचन्द्रजी ने) काफी (लम्वे) समय तक हुक्मरानी की तथा (उनके राज्य में) कोई भी व्यक्ति वीच जवानी में कभी न मरा। उन्होंने वहुत दिनों तक वादशाही की। सभी उन्हें यह आशिष् देते रहे कि ईश्वर उन्हें नीरोग रखे तथा हमारे राजा दीर्घ काल तक तेजवान् वने रहें। १३

।। उत्तरकाण्ड समाप्त ।।

लव-कोश काण्ड

ज़ाम हुन्द दाह

मंगान आस्य लूख ज़गतुक्य यी दयस वर ।
लंसिन श्री राम आसिन सायि बर सर ।।
ति मा गंज़रुख छु अंमिसुन्द तीज़ सोरुय ।
अमा बोंज़वान सुय येम्य मोल गोरुय ।।
तिमन दन बाग्य यिम बब मोज गारन ।
कथन यिम माजि मालिस अथु दारन ।।
सुमा सन्तान गव यस रोज़ि न ज़ान ।
मुरुखि बोंज़ आसि मालिस माजि मारान ।।
तमिस गोंबरस बरि नु कांछाह वोंपर लोल ।
वदन यस मोज आसी ज़िन्दु बेंयि मोल ।। ५ ।।
यिथी छी यूगियन सन्तान आसन ।
तिमय यिम माजि मालिस खुर छि कासन ।।
दोंहु अकि रामुचंन्दुरस बब च्यतस प्यव ।
बबन दोंपुनस गोंबरु सुन्द ग़म कंम्य ख्यव ।।

लव-कुश काण्ड

ननद की जलन

जगत् के लोग भगवान् से यही वर मांग रहे थे कि श्रीराम दीर्घायु हों और उनका साया उनके सर पर बना रहे। उन्होंने यह नहीं जाना कि इन (श्रीराम) की ही तो यह सब माया है। दरअसल, बुद्धिमान वही है जिसने अपने पिता को सम्मान दिया। उनका भाग्य धन्य है जो माता-पिता का सम्मान करते हैं तथा उनके हर वचन का अनुपालन करते हैं। वह सन्तान ही क्या जिसे माता-पिता की याद न रहे और जो मूर्ख-बुद्धि से माता-पिता को मारती (पीटती) रहे! उस पुत्र से कोई भी प्रीति न रखेगा जिसके माता-पिता जीते जी रो रहे हों। ५ योगियों की सन्तान (श्रेष्ठ होती है और) अपने माता-पिता की दुविधा दूर करने-वाली होती है। एक दिन श्रीराम को अपने पिता याद आए। उन्हें

अंनिन रेश्य नाद दिथ वोनुनख पनुन हाल ।
दोपुन गछि दोन अंछन आसुन त्रेयुम लाल ।।
वसॆशटन ह्योत करुन ताम जगि अशमीद ।
दितुख सूतायि अमर्यथ चोन परिथ वीद ।।
बहारुक्य दोह ज़मीन ओस ज़ाफ़रानी ।
अबर नेसान तुलुन ताम लालि कानी ।। १० ।।
दिच्छुन येलि तन रंटुन हांगिनि अन्दर जाय ।
दपन वोथ हांगिन्यन हांगिनि सूत्यन न्याय ।।
दयोगत वुछतु पानिस सांपुनन लाल ।
कमुय गव वुनि ति तामथ गवनु यंत्रकाल ।।
शहनशाहस पुरुच्य अदु आव नादस ।
ह्युतुन फ्युर दफतरन कुन लोग फ़सादस ।।
वुछिव बाकुय तु फाज़िल ओस पानह ।
करुन छुस पानु छारान कम वहानह ।।
ह्योतुन बाकुय कडुन येलि जमह खारुन ।
ह्योतुन मुजरा पनुन गरुह रथि खारुन ।। १५ ।।

लगा जैसे पिताजी कह रहे हों कि पुत्र का ग़म (पुत्र के वियोग की पीड़ा) कौन दूर कर सका ! (अभिप्राय वात्सल्य की मार्मिकता को वर्णित करना है) उन्होंने (श्रीरामचन्द्रजी ने) ऋषियों को बुलवा लिया और उनसे अपना हाल कहा कि इन दो नेत्रों के लिए अब तीसरे नेत्र (प्रकाश) की इच्छा हो रही है । तव वसिष्ठ ने अश्वमेध यज्ञ रचना शुरू किया और वेदपाठ के उपरान्त सीता को अमृत पिलाया गया । दिन बहार के थे और जमीन (प्रकृति) ज़ाफ़रानी (केसरिया) रंग की हो गई थी । इधर, अभ्र (बादल) से निकलकर अमृत की एक बूंद अपने तन को सीपी में ढालकर मोती का स्वरूप धारन करने लगी । १० अन्य सीपियाँ उस सीपी को देख ईर्ष्या करने लगीं । दैव गति देखिए, पानी (का वह क़तरा) लाल बन गया । अभी ज़्यादा समय नहीं बीता होगा कि (एक बार) शाहंशाह (रामचन्द्रजी) को एक दूत ने (राज्य में हो रही किसी अनियमितता) की ख़बर दी । तब उन्होंने स्वयं सम्बंधित दफ़्तर की जाँच-पड़ताल की और इस प्रकार फ़साद (कटुता) ने जड़ पकड़ ली । देखिए, वे ख़ुद ज्ञाता और सर्वज्ञ थे । किन्तु नियति के चक्र के बहानों (कारणों) से वे भी बच न सके । (नियति ने) बाक़ी कौर-क़सर भी निकालनी शुरू की और उनके घर में फूट पड़ने लगी । १५

तंमिस सुतायि मा आसुस लोंकुट ज़ाम।
तमी क्याह् कोंर तंमिस बर मंदिन्यन शाम ।।
स्यठाह् ओसुस गोंमुत सुतायि हुन्द वार।
लोंबुन येंलि दस्तगाह् प्यव तस कोंठ्यन पार ।।
रशक ओंनुनस वुछिव तस क्याह् यि वोंनुनस।
प्रंगस खारुन तु तंल्य किन्य चाह् खोंनुनस ।।
च्रु मा छख ज़ाँह् ति कांमा म्यान्य बोज़न।
पनुन्य आसिथ व्यंदान ह्य छख में दुशमन ।।
प्रुछ्य पंज़्य किन्य गछ़्यम लीखिथ में हावुन।
बसूरथ ओस क्युथ ह्युव दशिरावुन ।। २० ।।

सों आसना तस निशन वाराह् गरज़मन्द।
दोंयुम ज़ोनुन नु कोंह् मा अमि कोंरुम फन्द ।।
त्रेयिम त्रुयि वरनु तस वनुनस नु चारह्।
करुन आवारु सुता बयि दुबारह् ।।
तंमिस सुतायि मा बोज़ुनु पोंज़ुय आव।
दोंयुम ज़ोनुन नु ब्यन सुय सांपुनुस वाव ।।

(कहते हैं), उस सीता की एक छोटी ननद थी जिसने उस (बेचारी) की भरी दुपहरी को शाम में बदल डाला। सीता से उसका वैर ख़ूब बढ़ गया था। उसको जब उसने (रानीजी के समान) सुख-भोग करते देखा तो उसके घुटने जैसे टूट गए। रश्क ने ज़ोर मारा और देखिए, उसका क्या हाल कर दिया। उसे तख़्त पर चढ़ाकर नीचे उसके लिए खंदक खोद डाली। (ननद एक दिन बोली—) तुमने आज तक मेरी कोई बात नहीं मानी। अपनी होकर भी मुझे दुश्मन मानती रही। (आज मैं कुछ चाहती हूँ) सच-सच लिखकर मुझे बता देना। वह दशमुखरावण सूरत से भला कैसा था? २० उस (सीता) के सामने वह ख़ूब गरज़मंद बनी। इधर, वह (सीता) यह न जान सकी कि यह मेरे गले में कौन-सा फंदा डाल रही है। उसने सीता की दुबारा ख़ूब मनुहार की और वह (सीता) त्रिया होने के कारण (स्त्री सुलभ स्वभाव से) मजबूर हो गई। अव्वल, उस सीता को सच्चाई (असलियत) दिखाई न पड़ी। दूसरा, उसने (सरल स्वभाव के कारण) अपने में और ननद में कोई भिन्नता नहीं जानी और तीसरा यही उसके लिए संकट का कारण बना। चौथी बात यह कि शायद उसके सुखों में बढ़ोतरी हो गई थी,

यि चूरिम कथ सोखस मा तस च़र्यर गव ।
अहंकारस करान यी छुय सदाश्यव ॥
न तुह पुॅत्र्युम पनुन तस यी मुदा ओस ।
गोॅबुर थाॅविथ गछ़ुन गरुह च़ेर मा गोस ॥ २५ ॥
शेॅयिम शंका करुन लूकन फॅरुम ज़ाम ।
सॅतिम सथ रामुचन्दुरस दोॅब्य दिछ़ुन पाम ॥
अमा अष्टम प्रुछ़ोनस रामु चन्दुरन ।
वनुम वुनिक्यन च़ॅ मा छुय कॅह मंगन मन ॥
दोॅपुस तमि छम गॅमुच़ वोॅन्य यी मनस राय ।
गॅछ़िथ तिम रेॅश वु वुछिहा वेॅयि तिहिज़ जाय ॥
नॅविम निशि वाॅतिथुय टीकायि द्रायस ।
दॅहिम दीवियि सुतायि वरनि आयस ॥
यि काॅहिम कथ कुनी कर क्याह छु लारुन ।
खॅटिथ बेॅह वन्य रॅटिथ बगवान छ़ारुन ॥ ३० ॥

नतुह बोज़ख सोॅखस मा तस च़र्यर गव ।
अहंकारस करान छुय यी सदाश्यव ॥
मुदा तमि लीछ सूरत तस दोॅपुन डेश ।
छु रावुन नरकु वाॅसी वेॅह ख़्यवान डेश ॥

जभी अहंकार का सदाशिव ने यह हाल कर दिया। अन्यथा पाँचवीं बात यह कि उसकी स्वयं की यह इच्छा रही होगी कि पुत्र को जन्म देकर जल्दी से घर (माँ वसुंधरा के पास) चली जाऊँ। २५ छठी बात यह कि वह लोगों को ननद के दुर्व्यवहार से आतंकित कराना चाहती थी। सातवीं बात यह कि उधर, श्रीरामचन्द्रजी को धोबी ने भी उलाहना दिया था। आठवीं बात यह कि शायद रामचन्द्रजी ने पूछा हो कि 'माँग, इस समय क्या माँगती है' और उस (सीता) ने कहा हो कि मेरे मन की यही राय (इच्छा) है कि मैं पुनः ऋषियों के स्थान (वन) को देखना चाहती हूँ। नौवीं बात यह कि (अयोध्या) पहुँचकर उसकी खूब टीका (टिप्पणी) होने लगी थी। दसवीं बात यह कि वह सीता के वर्ण में देवी अवतरित हुई थी। ग्यारहवीं बात यह कि (शायद) उसने सोचा हो कि (अब अत्यधिक) सुखानंद से क्या मिलने वाला है, अतः वन में बैठकर भगवान् को ढूँढ लूँ। ३० अन्यथा जान लीजिए कि उसे अपनी सुख-समृद्धि पर अहंकार हो गया था और अहंकार का सदाशिव यही हाल कर देते हैं।

अंनिन तमि तोंत त्युथुय बायिस सं हावुन ।
वुछिव क्यथु पांठ्य सुता मारुनावुन ।।
दोंपुन तस कुन यि वुछ बायो यि क्याह छुय ।
दोंहय सुता वुछिथ यथ कुन तुलान हुय ।।
में नीमस चूरि पतु आसि पान मारन ।
वदन वाराह तु नेंतरव खून हारन ।।
वोंने बोज़्यम यि कागज़हन नियम ज़ाम ।
छुन्यम मारिथ गंयम डागिनि सुत्यन काम ।। ३६ ।।

सुतायि हुंज़ जलावतनी

ति बूज़िथ रामु जुव क्रूदी स्यठाह गव ।
तमी क्रूदकि बदलु बोंन कोंश तु बेंयि लव ।।
ति बूज़िथ रामु जुव बेताब सांपुन ।
ओंनुन लंखिमन वोंनुन सोंरुय तंमिस कुन ।।
वोंनुन लंखिमन जुवस सुता छुनुदन वन ।
नतुह मारुन तंती येंति लूख नु बोज़न ।।

मुद्दा यह कि उस (सीता) ने उस (रावण) की सूरत बनाई और (ननद को) दिखाकर कहा— देख, कैसे नरकवासी रावण ज़हर खा रहा है। तभी उस (रेखा-चित्र) को वह भाई के पास ले गई और उसे दिखाया। देखिए, कैसे सीता को (उस ननद ने) मरवा डाला (आफ़त में डाल दिया)। वह (भाई से) बोली— देखो भैया, यह क्या है ! सीता रोज इसे देख-देखकर विलाप करती है। जब से इस (चित्र) को मैंने उसके यहां से चुराया है, वह खूब छाती पीटने लगी है। ख़ूब रो रही है तथा नेत्रों से ख़ून (के आँसू) बहा रही है। ३५ यदि वह जान जाय कि उसका यह कागज़ (रेखा-चित्र) ननद (मैं) ने चुरा लिया है तो वह मुझे मार ही डालेगी; ऐसी (डाकिन) है वह। ३६

सीता को जलावतन करना

यह सुनकर रामजी अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उसी क्रोध के बदले (जवाब में) संभवतः कुश और लव को पैदा होना था। यह सुनकर रामजी बेताब (चिन्ताकुल) हो उठे और लक्ष्मण को बुलवाकर उससे सब कुछ बताया और कहा— सीता को वन में छोड़ आ, अन्यथा मैं उसे वहाँ पर मार डालूंगा जहाँ किसी को कानों-कान ख़बर तक न होगी। ऐसा सुनकर

ति बोज़ुनु सुत्य गव तस लंखिमनस ज़ाफ ।
दप्योनस क्याह सना सुतायि खोंत पाफ ।।
अमा ओसुस नु तस निशि न करुन वार ।
गोंडूनस जिगरस यकबारगी नार ।। ५ ।।
दोंपुस तंम्य लंखिमनन रूदुय नु इन्साफ़ ।
संती सुता छें वनतम क्याह खोंतुस पाफ ।।
कर्‌यानस ज़ारु पारु बूज़नस नु दानह ।
करुन छुस पानु कम छांडन बहानह ।।
सपुन लाचार लखिमन हुकुम मोनुन ।
कंडुन सुता तु कडुनस नु चारु ज़ोनुन ।।
कंडिथ सुता वनस मंज़ निथ छुनिन दूर ।
मनुश ज़ातव कंडिथ छुन्य सोंरगु निशि हूर ।।
दपन वाराह सु लंखिमन ज़ुव वदन ओस ।
पकन पथकुन नज़र फीरिथ दिवान ओस ।। १० ।।
वदनु सुत्य गोस गश गोंडुनस दिलस नार ।
वुछन ओस सातु सातह च्यवु यियस आर ।।
वदन सुतायि वोंनुनस वारु वारह ।
चु वनतम कंम्य कंरुस कीवल अवारह ।।

लक्ष्मणजी तनिक उग्र हो उठे और कहा कि सीता को यह किस पाप की सज़ा दी जा रही है ? परन्तु उन (रामजी) के आगे उनकी एक न चल सकी तथा उनका जिगर एकबारगी दहक उठा । ५ लक्ष्मणजी पुनः बोले— आपको ज़रा भी इन्साफ़ न रहा । सीता सती हैं, उस पर भला कौन-सा पाप चढ़ा है । (जो आप उसे यह कठोर दण्ड दे रहे हैं) अपनी ओर से उस (लक्ष्मण) ने ख़ूब विनती की, मगर उन्होंने कुछ भी नहीं माना । दरअसल, उस (भगवान्) को ऐसा करना था, जिसकी यह घटना बहाना-मात्र बन गई । लाचार होकर लक्ष्मण ने हुक्म को मान लिया और सीता को अपने साथ न ले जाने के लिए उसे कोई चारा (उपाय) नज़र आता न दिखा । (घर से) निकालकर सीता को वन में फेंक आने को वह जाने को हुआ । देखिए, कैसे मनुष्यजाति के लोगों ने स्वर्ग की हूर को निकाल बाहर कर दिया । कहते हैं, वह लक्ष्मण ख़ूब रोने लगा तथा (बार-बार) पीछे मुड़कर देखने लगा (ताकि रामचन्द्रजी को दया आ जाए और वे उन्हें रोक लें) । १० बहुत रोने से उसका दिल दहलने लगा और वह ग़श खा गया । (होश में आने पर) वह धीरे-

लतन हुन्द रथ वतन लार्‌योम क्याह् गोम ।
बु छस ज़ानन यि वौंपदीश मा कोरुम ज़ाम ॥
दौंपुस लंखिमन ज़ुवन साथा यैत्यथ बेंह् ।
बं मारह् पान वौन्य गंडुनम दिलस रेंह् ॥
यि कथ बूज़िथ पथर सूता वंसिथ पेंय ।
खज़्रस यम् ज़ालु तस पानस लंजिस रेंय ॥ १५ ॥

अंछिन गोस गाश कम लंज दिनि कन्यन फेंश ।
दौंपुन तस त्रावुतम गौंड्‌ह् चावतम त्रेश ॥
सु गव पानिस औंनुन तंम्य पोन्य दूरे ।
वुछिन सौंरगुच नेन्दुर तस पंरियि हूरे ॥
नेन्दरि हंज़्र ज़न पथर बुथिकिन्य पैंमुज़्र आंस ।
पथुरि प्यठ पोशि थंर ज़न बरुह् गंमुज़्र आंस ॥
वुछिन येंलि शौंगिमुज़्र ब्रह्मा ज़ुवुन्य कूर ।
ग़नीमत ज़ोन तंम्य तस निशि च़्रलुन दूर ॥

धीरे पीछे की ओर पुनः (कातर नज़रों से) देखने लगा कि शायद उनको अब भी दया आ जाए। तब रोते हुए सीता धीरे-से बोली—(रे लक्ष्मण !) तू ही बता कि किस बात की यह सज़ा मुझे दी जा रही है ? (अब तक) रास्ते छानते-छानते क्या मेरे पैर कम घिसे थे ? जानती हूँ यह उपदेश (शायद) ननद द्वारा इन्हें दिया गया है। तब लक्ष्मण बोला— आप थोड़ी देर के लिए यहाँ बैठ जाइए, मैं अपने-आप का अंत कर देता हूँ क्योंकि (आपकी दशा देख-देखकर) मेरा दिल जल रहा है। यह बात सुनकर सीता नीचे पृथ्वी पर गिर पड़ी। उसके शरीर से तीव्र कँपकँपी छूटने लगी तथा देह पर जैसे चींटियाँ रेंगने लगी। १५ आँखों की ज्योति कम हो गई और वह पत्थरों को चाटने लगी। वह (लक्ष्मण से) बोली— मुझे छोड़ जाने से पहले ज़रा पानी तो पिला देना। तब वह पानी लेने के लिए गया और जब बहुत दूर से पानी ले आया तो उसने देखा कि स्वर्ग की वह हूर-परी (सीता) निद्रा में डूबी हुई है। गहरी नींद में वह ऐसे निमग्न थी जैसे मुँह के बल गिर पड़ी हो या फिर जैसे फूल की डाली सूखकर पृथ्वी पर गिर पड़ी हो। जब (लक्ष्मण ने) ब्रह्माजी की पुत्री (सीता) को पृथ्वी पर यों सुसुप्तावस्था में देखा तो उसने इसी में ग़नीमत जानी कि अब वह (सीता को छोड़) उससे दूर निकल जाए। पानी के लोटे को वृक्ष (की डाली) पर लटका दिया और उस (सीता के) मुँह पर पानी की बूँदें धीरे-धीरे

थोवुन पां लोटु आवेज़ां कुलिस कुन ।
ह्योतुन तां तस बुथिस प्यठ पोन्य पशपुन ।। २० ।।
त्युथुय फीरिथ सु लंखिमन आव रिवन ।
युथुय ज़न कांसि छी मारुनि निवन ।।
वदुनु सूत्यन पथर बुथ्य किन्य प्यवान ओस ।
ति मा तसुन्द्यन पद्यन रौखसत ह्यवान ओस ।।
दया करतम छ्या सथ किनु हंरिथ प्रान ।
बन्या तस यस में ह्युव युथ आसि सन्तान ।।
वोंमा दीवी ख्यमा करतम खोंतुम पाफ ।
में छुम वालिजि छोंख आमुत च्रे छुय ज़ाफ ।।
में कर ताक़त च्रे कुन वुछ्यनस दुबारह ।
ह्यमय रौखसत पद्यन तल पान मारह ।। २५ ।।
च्रे येति त्रांविथ अंछिन थोंप दिथ बु कोंत आस ।
शरन छुस मांज गोंबरस प्यठ करन पास ।।
में कर गोंछ रामुच्रंन्दुरुन हुकुम बोज़ुन ।
बु कर तस वातुहा यथ कामि सोज़ुन ।।

टपकने लगी । २० इसके उपरान्त, लक्ष्मणजी रोते हुए लौटने लगे वैसे ही जैसे किसी को मारने के लिए (सूली की ओर) बढ़ाया जाता है। रोते-रोते वह इतना क्षीणकाय हो गया कि (बार-बार) मुँह के बल गिर जाता मानों (सीता के) पादों से रुख़सत (विदाई) माँग रहा हो। (मारे ग्लानि के वह मन-ही-मन कहने लगा—) मुझ पर दया रखना, हम सब को आपकी ही जीवनाशा है। भला उसका क्या हाल हो जिसकी मुझ जैसी (निष्ठुर) सन्तान हो। हे उमा देवि ! मुझे क्षमा करना, मैंने पाप किया है (आपको वन में छोड़ आने की बात मैंने मान ली)। आपको इस अवस्था में देखकर मेरा कलेजा छलनी हो रहा है, अब दुबारा आपको देखने की ताक़त मुझ में कहाँ ? मैं आपके चरणों के सान्निध्य से रुख़सत हो रहा हूँ— ऐसा सोच मृत्यु जैसे मुझे काटने को आती है। २५ आपको (यों अकेला) छोड़ने के लिए जाने मैं क्यों यहाँ आ गया ? अब, हे माता ! मैं आपकी ही शरण में हूँ। मुझपर (पास) दया करना। मुझे रामचन्द्रजी का हुक्म नहीं मानना चाहिए था और न ही इस काम के लिए उन्हें मुझे यहाँ भेजना चाहिए था। मुझे वे वहीं पर शमशेर से मार डालते, यदि मैं आपको साथ ले चलने के उनके हुक्म

नतुह तंत्य कोनु मार्योनस ब शमशेर ।
ब खारी येलि हुकुम कोरनम च्रे सुत्य नेर ।।
नतय माता च्रे ओसुय करमु लाने ।
अरुथ यथ यी छु छारुन क्याह छु माने ।।
पकन गव तोत सु च्रन्दुरमु रंबुवुन रव ।
नमस्काराह करिथ शहरस अन्दर गव ।। ३० ।।

सपुन्य बेदार सुता पां फेर्यव सुत्य ।
गुमव गरमव सुतिन वस्तुर वने मुत्य ।।
वुछुन लंखिमन सु गोमुत तस निशन दूर ।
गलुनि लंज्य यंच्र अलुनि लंज्य वावु सुत्य मूर ।।
दोपुन क्याह गोम कंम्य सरफन वोलुम नाल ।
प्यनम मा काव नतु वोन्य मा ख्यनम शाल ।।
वदुनु सुतिन अंछिन तस गाश कम गोस ।
सु येलि लंखिमन तमिस त्राविथ च्रलान ओस ।।
रिवान डयूठुन यिवान जन पानुसुय कुन ।
रुमाह रूज़िथ नज़ुरिह तलु गाब सांपुन ।। ३५ ।।

वनुनि लंज्य पान्य पानस कुन सोन्दरमाल ।
वदुनि सुतिन छेनिम मा दोन अंछिन लाल ।।

को न मानता, तो ज़्यादा अच्छा था। अन्यथा, लगता है हे माता! यह सब आपके कर्म-लेख में बदा था जिसका अर्थ स्पष्ट होता जा रहा है। इस प्रकार (खिन्न मन से) वह लुभावना चन्द्र (लक्ष्मण) चलता गया और नमस्कार करते हुए शहर (अयोध्या) के अन्दर पहुँच गया। ३० इधर, सीता (लोटे में रखे) पानी की बूँदों से बेदार हो गई। उसके वस्त्र गर्मी के कारण पसीने में भीग गए थे। जब उसने देखा कि लक्ष्मण उससे दूर हो गया है तो वह गलने लगी तथा वैसे ही काँपने लगी, जैसे वायु से पेड़ की टहनी। वह बोली— हाय! यह क्या हुआ? यह किन (मुसीबतों) सर्पों ने मेरे गले को घेर लिया। अब कहीं कौए और गीदड़ मुझे (इस निर्जन में) खा न जाएँ! लक्ष्मण द्वारा इस प्रकार छोड़ देने पर रोते-रोते उसकी आँखों की ज्योति कम हो गई। कभी उसे लगता जैसे दूर से (लक्ष्मणजी) उसकी ओर आ रहे हों किन्तु (दूसरे ही क्षण) नज़रों से वे ग़ायब हो जाते। ३५ (तब) अपने आप से वह सुन्दरी (सीता) कहने लगी कि बहुत ज़्यादा रोने से इन दो पुतलियों का प्रकाश

तवय मा छुम में लंखिमन द्रेन्ठ इवन ।
बिहिथ लंज्य पकुनु क्यन सदुहन थौवुन कन ।।
रुमा रूज़िथ सुमा ज़ोनुन गरह गोम ।
में त्रांविथ च्रूरि करमस हूरि क्याह गोम ।।
वनुनि लंज्य दांद्य सिर वौन्य ख़ाक सांपुन्य ।
लबन शंथरन कन्यन ज़न चाख सांपुन्य ।।
वदुनु सुत्य जानावारन आव संहलाब ।
वनस निशि मन डंलिख च्रंल्य वात्य पंजाब[1] ।। ४० ।।

गुलव येंलि वुछ तसुन्द बुथ ज़न पेंयख हाय ।
खौंतुख ज़र वावु सुत्य मेंच्रि तल रंटुख जाय ।।
तने तनहा सं सुता क्याह कुनी ज़ंन्य ।
कंड्यन काठन सुत्यन यकसान सांपुन्य ।।
अख यिछ़ नोज़ुक वदन बेंयि तिछ़ गरां बार ।
त्रेंयिम त्रुयि वरनु बरथा रुस्त आवार ।।
यि च्रूरिम च्रूरि ज़न मन्दूदंरी ज़ाय ।
ज़नख राज़स बवस लंगिनस स्यठाह आय ।।

मद्धिम पड़ गया है। तभी शायद वे लक्ष्मण मुझे दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। वह बैठकर (ध्यान से) चलने की आहट पर कान धरने लगी (आँखों की ज्योति पर विश्वास न कर आहट का अवलम्ब लेने लगी) किन्तु क्षणभर के बाद (किसी की भी आहट न पाकर) वह समझ गई कि वे (लक्ष्मण) उस हूर को छोड़कर चोरी-छिपे घर चले गए होंगे। तब अपने को ख़ाक में मिला देख वह अपने दुखड़े सुनाने लगी जिन्हें सुन (वन के) पत्थर भी जैसे फट गए (चाक हो गए)। उसके रोने से ऐसी अश्रु-धारा बही जिससे सैलाब आया तथा (बेचारे) पशु-पक्षी वन छोड़कर भागते हुए पंजाब पहुँच गए। ४० गुलों ने जब उसका मुख देखा तो उनपर जैसे कालिख पुत गई। बहती वायु में भी वे सूख गए तथा (धराशायी होकर) मिट्टी के नीचे छिप गए। (उस वन के बीचों-बीच) उस अकेली सीता की हालत (सूखे) काँटों व घास-फूस की तरह हो गई। एक तो नाज़ुक वदन, दूसरा यह अकेलापन। तीसरा त्रिया (पत्नी) होकर भी अपने भर्त्ता के सुख से वंचित। चौथा, मन्दोदरी के गर्भ से चोरी-छिपे जन्म लेना और फिर राजा जनक का पिता बन उसका

१ कवि की कल्पना द्रष्टव्य है।

अंछिव किन्य ओ़श अथव खोरव हो़रुन ख़ून ।
प्यवन वंस्य वंस्य पथर चंशमन लंजिस ज़ून ॥ ४५ ॥
वदुनि लंज्य ज़्यव गंयस कंज दादि लंज्य पेंन्य ।
वनस कुन च्रंज्य गंयस हंज्य अंज़ गरदन ॥
वनन मंज़ यी वोंनुन गंछ्य नय कनन बोज़ ।
छु सथ वोंपदीश कथ तथ खोच्र पथ रोज़ ॥
ख़बर कोंह छमनु कर फुटुरुम तंमिस मन ।
तवय मा तापु सुतिन गंज्य में हन हन ॥
ख़बर कोंह छमनु कमि दोंहु तस कोंरुम वाद ।
कंड्यव सुतिन में नीलेयम वोज़ुल्य पाद ॥
ख़बर कोंह छमनु कर ग्यूलुम अंतीतन ।
तवय दोंपहम च्रु बे परतीत सांपन ॥ ५० ॥
ख़बर कोंह छमनु कर ग्यूलुम कंमिस तां ।
बहारस मे तवय कोंरनम ज़ंमिसतान ॥
ख़बर कोंह छमनु कस सुतिन कोंरुम न्याय ।
तवय सोंरगुचि हियि यिछ्र मा पेंयम हाय ॥
ख़बर कोंह छमनु कम कांछान में आंसी ।
तवय दोंपहम तिमव सांपन वोंदासी ॥

पालन-पोषण करता— (आशय यह है कि सीता को जन्म से ही तरह-तरह के कष्ट देखने पड़े) आँखों से वह आँसू और हाथ-पैरों से ख़ून बहाने लगी। (बेचारी) बार-बार गिर जाती तथा उसकी आँखों में जाले पड़ गए। ४५ रोते-रोते उसकी ज़ुबान गूँगी हो गई तथा पीड़ा से तड़फने लगी। वह भीतर वन की ओर चल दी। (दौर्बल्य के कारण) उसकी हंसी जैसी गर्दन टेढ़ी हो गई। वन में जाकर उसने जो बात कही, रे मनुष्य! उसे तू कान लगाकर सुन। वह सदुपदेश है तथा उसको हृदयंगम कर और असत्य से पीछे हट। (वह बोली—) ख़बर नहीं किस घड़ी मैंने उनका मन तोड़ा जो (आज) काँटों पर चलकर मेरे पाद यों छलनी हो रहे हैं। ख़बर नहीं किस घड़ी मैंने अतीत में (अभिमान-वश) किसी का मजाक उड़ाया जो (आज) मेरी बहार में यों वीराना छा गया। ५० ख़बर नहीं किस घड़ी मैंने किसी पर अन्याय किया जो (आज) स्वर्ग की चमेली पर कालिख पुत गई। ख़बर नहीं किस घड़ी किसने मुझे बददुआ दी जो मैं (आज) यों उदास फिरने लगी हूँ। ख़बर

खबर कॅह छमनु कस बॉविम पनुन्य सीर ।
तवय च्युतहम बॅरिथ बॉलिजि युथ तीर ॥
खबर कॅह छमनु कस सूतिन च्युतुम लाफ ।
तवय ल्युथ गोम नतु युथ क्याह खोंतुम पाफ ॥ ५५ ॥

वदुनि लॅज्य गव सु कौत येम्य नारु ज़ॉजिस ।
सु कौत गव येम्य बु करमुकि शाठु लॉजिस ॥
सु कौत गव येम्य कॅरुस तमि तारु मंज़ु सौन ।
सु कौत गव येम्य कॅरिथ यकसान च्युत दौन ॥
सु कौत गव येम्य कॅरुस वुनिक्यन अवारह ।
सु कौत गव येम्य दिच्चनस बु नारह ॥
सु कौत गव युस मे यौत ताम सूत्य च्युतनम ।
बु ज़ॉज्यनस यॅच्च जिगर क्यथु नारु बौरनम ॥
बु कस ऑसुस कुनुय ओसुख चु म्योनुय ।
गॅयम ज़ौलु पापु सूत्य मौल नो मे ज़ोनुय ॥ ६० ॥

कॅमिस लदु राह पनुन यी लानि ओसुम ।
यि छुम बूगुन ति कर वौन्य कॉसि कोसुम ॥
अमा क्याह करुह गॅयस वौन्य यॅच्च अवारह ।
वदुनु सूतिन बन्दन गॉम पारु पारह ॥

नहीं किसको मैंने अपने रहस्य वता डाले जो (आज) हृदय में यों तीर लग गया। खबर नहीं किसके साथ मैंने धोखा किया जो (आज) मेरी यह दुर्गति हुई अन्यथा मेरा पाप ही क्या था ! ५५ वह रोते हुए कहने लगी— कहाँ गया वह जिसने मुझे आग में धकेल दिया, कहाँ गया वह जिसने मेरे कर्म-लेख को पलटा दिया। कहाँ गया वह जिसने मुझे आग में तपाकर सोना (कुन्दन) वनाया। कहाँ गया वह जो हम दोनों (सीता-राम) को यकसान (एक समान) समझता था। (आज) वह मुझे यों निःसहाय छोड़कर कहाँ चला गया? जो मेरे साथ यहाँ तक आया था, वह कहाँ गया? उसके इस प्रकार चले जाने से मेरे जिगर में आग धधकने लगी है। वह मेरा एकमात्र था, किन्तु अव वह भी चला गया। दरअसल, पाप (दुर्भाग्य) के कारण मेरी आँख लग गई और मैं उसका मूल्य जान न सकी। ६० अव किसको दोष दूँ, मेरे भाग्य में ऐसा ही वदा था। जो मुझे भोगना होगा उससे अव भला कौन मुझे दूर कर सकता है! (वस, एक वात है) यहाँ अकेले में तनिक वेवस पड़ी हूँ।

पकन गॅयि रथ छकन कोताह् सौं सुता ।
वनुनि लंज्य रामु अवतारस यि लीला ।। ६३ ।।

लीला

गोम त्रॉविथ दिल छुम मे दज़न ।
छम नु वज़न सेतारुह नये ।।
यारु म्यान्यो च़ु बोज़ू वारह ।
छी मे गछ़ान वॉलिंजि पारह ।।
येलि सुबहन सौं द्रायि दज़न ।
छम नु वज़न सेतारुह नये ।। १ ।।
यारुबलु प्यठु तन आयि नॉविथ ।
नंगरु निशि हा छुनिथन ख्रे त्रॉविथ ।।
आगरु रोंस कौल अदु कर छे ग्रज़न ।
छम नु वज़न सेतारुह नये ।। २ ।।
लंजि कर यिन सोंबुलु बाग़स ।
खंजि लाजन गुलालु दाग़स ।।
खंजि गछ़ुनि तस क्यथु पज़न ।
छम नु वज़न सेतारुह नये ।। ३ ।।

रो-रोकर सारे अंग टूट गए हैं । इस प्रकार वह सीता रोते हुए तथा रक्त बहाते हुए चलती गई और रामावतार के प्रति यह भजन गाने लगी— । ६३

भजन

वह मुझे जलता छोड़कर चला गया, तभी (आज) इस सितार (हृत्तन्त्री) के सुर बज नहीं रहे हैं । यार मेरे ! (हे राम !) ज़रा ध्यान से सुनना । उस सुबह मुझे अकेला छोड़ जब वह (लक्ष्मण) चला गया तब से मेरा दिल तार-तार हो गया—तभी (आज) इस सितार (हृत्तन्त्री) के तार बज नहीं रहे हैं । १ तेरे लिए नदी (सीता) नहा-धोकर आई थी किन्तु तू ने उसे नगर से दूर मुड़वा दिया । अब भला बिना स्रोत के नदी क्या गरजेगी (झूमेगी) ?—तभी (आज) इस सितार (हृत्तन्त्री) के तार बज नहीं रहे हैं । २ अब मेरे इस सुम्बुली बाग में भला क्या डालियाँ खिलेंगी ! गुल-लाला (तेरी सीता) खण्ड-खण्ड हो गई है तथा उस पर यहाँ-वहाँ दाग़ ही दाग़ लग गए हैं । (तेरी सीता के

शहरु निशि येलि गंयि आवारह ।
आंस हारान ओंश वारु वारह ॥
लशि गंजिनम तस शेंछ लज़न ।
छमनु वज़न सेतारुह नये ॥ ४ ॥

दयि संज़ुय कथ वाति मानुन्य ।
गछ्रि कुमत व्योंन व्योंन ज़ानुन ॥
डूर्य खासन तु वयमखावु गज़न ।
छमनु वज़न सेतारुह नये ॥ ५ ॥

सिरियि प्रकाशि करतम वोंपाये ।
लाय वोंठ तमि तछि तीलु क्राये ॥
पशपु पनुन्य च्रंट्य च्रंट्य छें नेरन ।
छमनु वज़न सेतारुह नये ॥ ६ ॥

च्रु बोज़न कोनु छुख छुयना यिवन आर ।
में क्याह कोंरमय वु कंरथस यंच्र गिरिफ़तार ॥
च्रु आसख मसनन्दस प्यठ तति खोंशी सान ।
बु शूबा येंति कंड्यन प्यठ हालि हारान ॥

लिए) भला यह दुरवस्था उचित थी क्या ?—तभी (आज) इस सितार (हृत्तन्त्री) के तार वज नहीं रहे है । ३ शहर से जव (तेरी सीता) निराश होकर निकली तो उसकी आँखों से असंख्य आँसू वहने लगे। कितनी ही वार उसने संदेश भेजा किन्तु वदले में उसे मिली केवल विरहाग्नि—तभी (आज) इस सितार (हृत्तन्त्री) के तार वज नहीं रहे हैं। ४ (अव मैं निराश होकर इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि) दैव (भगवान) की वात (होनी) को सर्वोपरि मानना चाहिए तथा अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग वातों की कीमत को जानना चाहिए। अव मेरे लिए किमखाव व जरी-गोटे के वस्त्रों का क्या महत्त्व रहा ! तभी (आज) इस सितार (हृत्तन्त्री) के तार वज नहीं रहे हैं। ५ 'प्रकाश' कहते हैं कि हे सूर्य ! अव (सीता का) कोई उपाय कीजिए। वह खौलती कढ़ाई में कूद पड़ी है तथा उसके तलवे अव पूर्णतया खंडित हो चुके हैं—तभी (आज) इस सितार (हृत्तन्त्री) के तार वज नहीं रहे हैं। ६

(हे रामचन्द्रजी !) आप मेरी पुकार सुन क्यों नहीं रहे हैं, (मेरी यह हालत देख) क्या आपको मुझ पर दया नहीं आ रही ? मैंने आपका

खोंतुम क्याह पाफ वोंन्य रछतम परन तल ।
गंयस आवारुह वाराह कुन्य तु कीवल ।।
वनन आसिम ज़नखराज़ुन्य कोंमारी ।
वुछुम वुनिक्यन कंरुम मा कांसि यारी ।।
वुछन छुखना गंमुज़ क्याह छस अवारह ।
वदनु सुतिन बदन गोम पारुह पारह ।। ५ ।।

वुछन छुखना अंछिव रथ छस बु हारन ।
यि वथ रांवुम तु वुनि मा कांह ति हावन ।।
च्रे वोंनथमना च्रु छख नोज़ुक गुल अन्दाम ।
वुछन छुखना मे वुनिक्यन क्याह बंनिथ आस ।।
च्रे वोंनथमना च्रु छख न्यरमल वुनिसताम ।
वुछन छुखना मे सांपुन मंदिन्यन शाम ।।
च्रे वोंनथमना च्रु छख नोज़ुक हियितन ।
वुछन छुखना मे डीशिथ कांड्य छि खोच्रन ।।

क्या बिगाड़ा था जो मुझे यों गिरफ्तार (परवश) कर डाला। आप वहाँ पर खुशी के साथ (प्रसन्नमुद्रा में) मसनद के सहारे लेटे होंगे और यहाँ (आपकी पत्नी सीता का) काँटों पर डोलना क्या आपको शोभा देता है? कौन सा पाप किया था मैंने? (अब आप ही मेरे सहायक हैं) अपने चरणों के वीच में मेरी रक्षा कीजिए। अकेली मारी-मारी फिरकर मैं वहुत असहाय हो गई हूँ। मैं राजा जनक की कुमारी कहलाती थी मगर देखिए, इस समय किसी ने भी आगे बढ़कर मेरी यारी (सहायता) नहीं की। देख नहीं रहे हैं आप, मैं कैसे दुःख में डोल रही हूँ। रोते-रोते मेरा बदन तार-तार हो गया है। ५ आप नहीं देख रहे कि कैसे आखों से रक्त बहा रही हूँ। रास्ता भूल गई हूँ और अब तक कोई उसे दिखा नहीं रहा है। आप ने ही तो कहा था कि मैं एक नाज़ुक व कोमल गुल हूँ। मगर (इस समय) मुझ पर क्या वीत रही है, क्या यह आप नहीं देख रहे? आपने ही तो कहा था कि मैं निर्मल (पवित्र) हूँ। मगर (इस समय) मेरी दोपहर कैसे शाम में वदल गई है, क्या यह आप नहीं देख रहे? आपने ही तो कहा था कि मेरा तन चमेली जैसा नाज़ुक है। मगर (इस समय) मुझे देख काँटे भी डर रहे हैं, क्या यह आप नहीं देख रहे? आपने ही तो कहा था कि मैं सवकी आखों की ज्योति हूँ। मगर (इस समय) मेरी ही आशा (ज्योति) टूटती जा रही है,

च़े वोंनथमना च़ु छख सारचन अंछन गाश ।
वुछन छुखना में मा वोंन्य कांसि हुंज़ आश ।। १० ।।
च़े वोंनथमना च़े कोसल्या रछी जान ।
वुछन छुखना तमि ति मा स्योन रोंछ जान ।।
च़े वोंनथमना च़े वोंन्य केंह छय नु गांगल ।
वुछन छुखना गछ़ान क्याह छुम कंड्यन तल ।।
च़े वोंनथमना च़ु गछ़ बागुच बबुर लाग ।
वुछन छुखना दिलस क्याह छिम गछ़ान त्रांग ।।
कुनी आंसुस कुनुय ओसुख च़ु म्योनुय ।
गंयम ज़ोंलु पापु सुत्य वोंन्य मोंल में ज़ोनुय ।।
कंमिस लंदु राह पनुन यी लानि ओसुम ।
यि छुम बूगुन ति मा वोंन्य कांसि कोसुम ।। १५ ।।
अमा छुम यी तमाह करिना ख्यमा वोंन्य ।
मनस थाव्यम तु मंशराव्यम नु ज़ांह वोंन्य ।।
मशी योंदवय प्रेयम वुछ क्याह गंयम राय ।
में मंशरांविथ तु त्रांविथ छुय नु केंह पाय ।।
बु योंततामथ कडन अज़तन यि जामह ।
परान आसय बु तोंत ताम रामु रामह ।।

क्या यह आप नहीं देख रहे ? १० आपने ही तो कहा था कि कौशल्या मुझे अच्छी तरह पालेगी । मगर (इस समय) वह भी मेरी रक्षा नहीं कर रही, क्या यह आप नहीं देख रहे ? आपने ही तो कहा था कि मुझे किसी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए । मगर (इस समय) काँटों के बीच मेरा क्या हाल हो रहा, क्या यह आप नहीं देख रहे ? आपने ही तो कहा था कि मैं बाग में खिलने वाली जूही की कली हूँ, मगर (इस समय) मेरा दिल कैसे फटा जा रहा है, क्या यह आप नहीं देख रहे ? मैं एक थी और आप एक भी, बस, मेरे ही थे । मगर जाने किस पाप ने मेरा यह हाल कर दिया । अब किसे दोष दूँ, मेरे भाग्य में यही तो लिखा था । जो मुझे भोगना है वह भला कैसे टल सकता है ! १५ बस, अब एक ही तमन्ना है कि आप मुझे क्षमा करना, मन में मुझे विठाकर रखना तथा भूलना नहीं । यदि मेरे प्रेम को आप भूल जाएँगे तो उसका परिणाम भी देख लेना क्योंकि मुझे विसार कर आप उपायहीन हो जाएँगे । मैं जब तक इस जामे में

मशम नु तोंलि गछ़्यम येलि सार्‌यसुय सूर ।
नरुक दूर्‌यर में छुम सोंरगुच दंजुस हूर ।।
प्रलय येलि सांपुन्यम तोंलि तन बु नावय ।
मुच्रारिथ सीनुह यिम सूराख हावय ।। २० ।।
प्रलय तोंलि येलि पनुन्य तन नारु ज़ालह ।
गंयस तोंताम दयस कोंरमख हवालह ।।
चु छुख आकाश मेंच्रि वात्या करुन ज़ोर ।
यि मा गंज़ुरुथ में शानन प्यठ खस्यम बोर ।।
ति पोंज़ यस पाफ खंत्य तस वाति हेंन्य प्रान ।
अमा पज़ि नज़ि त्रुयन प्यठ यिछ़ करुन्य हान ।।
में पापव रोंसतुय कोंरथम सितेज़ह ।
यितम तवु खोंतु करतम रेज़ु रेज़ह ।।
ति मा वोंनुमय में मा मार्‌यम हेंय्‌म रथ ।
च्रे मा कंरथम ख्यमा कोंह छय नु तयनत ।। २५ ।।

रहूँगी (जीवित रहूँगी) तब तक राम-राम रटती रहूँगी। जब तक (मेरी देह) राख नहीं हो जाती तब तक आपका नाम भूल न सकूँगी। (जाने क्यों) नरक भी मेरे लिए दूर होता जा रहा है और मैं जो कभी स्वर्ग की हूर कहलाती थी (आज) जलती जा रही हूँ। जब प्रलय होगा तब अपना तन धो डालूँगी और यह सीना खोलकर अपने सूराख़ (दुखड़े) दिखाऊँगी। २० सम्भवतः प्रलय तब होगी जब इस तन को अग्नि में जला डालूँगी। तब तक आपको भगवान् के हवाले कर मैं (बहुत दूर) चली जा रही हूँ। आप आकाश है और मैं पृथ्वी। आकाश का मिट्टी (पृथ्वी) पर (इस तरह) ज़ोर-जब्र करना शोभा नहीं देता। इससे आपके (कन्धों) पर भार ही बढ़ेगा—ऐसा आपने शायद जाना नहीं। यह सच है कि जिसने पाप किया हो उसके प्राण निकाल लिये जाने चाहिए किन्तु स्त्रियों पर ऐसा आतंक (बलवीरों को) शोभा नहीं देता। (वैसे) मैंने कोई पाप नहीं किया था, फिर भी (ख़ूब) सितम ढाए आपने। इससे तो अच्छा था कि ख़ुद अपने हाथों से मेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालते। मैंने चाहा था कि आप स्वयं मुझे मार कर मेरा रक्त निकाल लेते किन्तु लगता है शायद आप मुझे क्षमा कर गए हैं और अपने मन से आपने मालिन्य को निकाल दिया है। २५ क़हीं ऐसा तो नहीं कि आपने सोचा हो कि

ति मा गँजुरुथ मे मा मन्दुछनु यियम नाव ।
वनन मा लूख यि कंमि सुंज़ि त्रुयि बंनिथ आव ।।
वन्यम कांह् कथ ज़मीनस छुय मकानह् ।
दपस बुथ्य किन्य पैयस वुन्य आसमानह् ।।
वन्यम वन पोज़ च्रु वौन्य क्याह् छी वनन नाव ।
दपस सार्‌यन गछुन रोज़ुनि कुस आव ।।
वन्यम अदुह् क्याज़ि छख ओश यूत हारन ।
दपस छसु ओश हरन किनु मौखतु हरन ।।
वन्यम अदु कति गछी आसुन्य बिहिन्य जाय ।
दपस सार्‌यन गछुन तथ जायि येति आय ।। ३० ।।
नतह् बूज़िन यि दय बेयि कांह् मु बूज़िन ।
यिमन सीरन मे निश तवु परदुह् रूज़िन ।।
स्यठाह् रुत वौन तिमव दानूतरव यी ।
पज़ि नु पौज्ञ सोपनानुय जेफु फुटुरी ।।
वेशामेतरन बबस दौपनम छु अवतार ।
च्रु दिस नेथुर करी रुत्य रुत्य पौतुरु कार ।।

मेरा साथ निभाने में आपकी बदनामी होगी और लोग यह कहेंगे कि यह किस की पत्नी है जो यों (दर-दर) भटक रही है। यदि मुझसे कोई पूछे कि तुम्हारा मकान किस ज़मीन (जगह) पर है तो उससे कहूँगी कि मैं अभी-अभी आसमान से मुँह के बल गिर पड़ी हूँ। यदि कोई पूछे कि सच-सच बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है तो उससे कहूँगी कि सब को (एक दिन) चले जाना है, यहाँ (स्थायी रूप से) कौन (नामधारी) रहा ! यदि कोई पूछे कि तुम (इस प्रकार) आँसू क्यों बहा रही हो तो उससे कहूँगी कि ये आँसू कहाँ, ये तो मोती हैं। यदि कोई पूछे कि तुम अब कहाँ रहोगी तो उससे कहूँगी कि सब को वहीं जाना है जहाँ से वे आए है। ३० अन्यथा, भगवान् ऐसा करें कि मेरे इस रहस्य को (कि पति ने मुझे निर्वासित किया है) कोई जान न पाए और इस पर पर्दा बना रहे। विज्ञों ने बहुत ही ठीक कहा है कि निरंतर सम्पर्क के बाद ही किसी के बारे में कुछ कहा जा सकता है। विश्वामित्र ने मेरे पिता से कहा था कि वे (श्री रामचन्द्र जी) अवतार है, उन्हें आप लड़की दें। वे श्रेष्ठ कार्य करने वाले (वर) पुत्र हैं। मगर उन्हें (मेरे पिता को) क्या ख़बर थी कि वे (श्रीरामचन्द्रजी) सीता को यों छोड़ देंगे और अपयश के कारण वह सात जन्मों तक

ति मा आंसुस ख़बर सुतायि त्राव्यम ।
सौं सुता सथ ज़न्म मा मन्दुछाव्यम ।।
ति मा गंज़ुरुन यि मा दौंदुशुर्‌य मिज़ाजह ।
अमी बोंज़ सुत्य ज़गि हुंद मा सु राजह ।। ३५ ।।

वनन गंयि यी सनन खोरन खमूरे ।
नबुच लंज्य तांव तंत्र ज़न लावि मूरे ।।
प्यवन वंस्य वंस्य गछ़न ज़दुह गुलालन ।
अथव सुत्य थफ करान आंस कृडु ज़ालन ।।
पकान गंयि रथ छकान कोसम अथव सुत्य ।
कन्यन सूराख गंयि तंहंज़व कथव सुत्य ।।
वनस मंज़बाग वुछुन अख रेंश मकानाह ।
कंरिथ बुरज़ुक सु थांविथ तापु दाना ।।
अथव खोरव अंछव लारन पकन गय ।
र्‌योंशा अख परज़ुनोवुन ज़न लौंबुन दय ।। ४० ।।

सु वालमीकी रंखीशर मांल्य सुन्द गोर ।
जहानस फेरवुन वातान च्रवापोर ।।
न्यर आशा यंत्र गंछिथ येंलि तस निशन आय ।
रंछिन कंरनस अंछिन मंज़बाग तंम्य जाय ।।

डोलती फिरेगी। लगता है उन्होंने (मेरे पिता ने) यह निर्णय (जल्दी में) सहज-भाव से लिया और श्रीराम की बुद्धि की श्रेष्ठता पर विश्वास कर लिया। ३५ वह यह सब कहती जा रही थी और उसके पैरों में कंकड़ अड़ते जा रहे थे। ऊपर नभ तवे की तरह तपने लगा जिसकी आँच से वह (बेचारी) झुलसने लगी। वह बार-बार नीचे गिर पड़ती और उसे देख-देख गुल-लाला पीड़ित हो उठते। झाड़-झंखाड़ को पकड़ कर वह पुनः उठ खड़ी होती। कुसुमों जैसे हाथों से रक्त बहाती हुई वह आगे बढ़ती गई तथा उसकी बातें सुन-सुनकर पत्थरों के भी सूराख हो गए। वन में (एक स्थान पर) उसने एक ऋषि का मकान (आश्रम) देखा जो भोजपत्रों से बना हुआ था। वह (सीता) तेज कदमों से आगे बढ़ने लगी। जब उसने वहाँ एक ऋषि को देखा तो उसे जैसे भगवान् मिल गए। ४० वे वाल्मीकि ऋषीश्वर थे—उसके पिता के गुरु। जहाँ-भर में फिरने वाले तथा चारों ओर पहुँचने वाले। निराशा से दुःखी होकर जब वह (सीता)

कंरुन सीवा रेंशिस मनुकिन्य कोरुन बाव ।
सोरन आंस सातु सातह् रामुसुन्द नाव ॥
दोहस रातस तंमिस रामस शरन आंस ।
वुछिव कति ईशरन तस अनि गटु कांस ॥ ४४ ॥

लवुन तु कोशुन ज़नुम

सुबह् फौल गटु सूरिथ गाश बेयि आव ।
प्रज़लुवुन सिरियि ज़न परवतु तलु न्यवर द्राव ॥
बराबर आयि ना सुता यि नव मास ।
महा रूपीठ सन्ताना तंमिस ज़ास ॥
लंगुन दन तीश बेयि त्रय आंस गोर वार ।
स्यठाह् दनु स्वस्त हसित्यन हुन्द खरीदार ॥
लख्यन यी लंगुनु किन्य खेतरी वरन द्राव ।
महावीरन बबन मारुनि मा आव ॥
वरुनु दीवुह् ज़ात तीशुक गोन त्रेयिम त्रेय ।
मरन यिम ईशरस तिम ज़िन्दुह् करुन्य पेय ॥ ५ ॥

उनके पास पहुँची तो उन्होंने उसका रक्षण किया तथा आँखों पर जगह दी। सीता ने महर्षि की मन से खूब सेवा की और समय-समय पर राम का नाम भी स्मरण करती रही। दिन-रात वह राम की शरण में रहती। देखिए, किस प्रकार ईश्वर ने उसका अन्धकार दूर कर दिया। ४४

लव और कुश का जन्म

सुबह हुई और अन्धकार दूर होकर पुनः प्रकाश छितराया और प्रज्वलित होता सूर्य पर्वत के पीछे से निकल आया। इधर, सीता के (गर्भ के) नौ मास बराबर हो आए और एक महारूपवान सन्तान ने जन्म लिया। धन लग्न, पुष्य नक्षत्र, तृतीया एवं गुरुवार—ऐसे लक्षणों से युक्त धन-धान्य, हाथी-घोड़ों का मालिक (खरीदार) वह बालक (ज्योतिष के हिसाब से) क्षत्रिय वर्ग का बैठा तथा महावीर पिताओं (राम, लक्ष्मण, भरत आदि) को मारने वाला बतलाया गया। वर्ण (रंग) से देवताओं जैसा व महागुणी वह बालक इस लिए ज़िंदा (पैदा) हुआ कि ईश्वर (श्रीराम) को मार सके। ५ उसके हाथों

अथन लीखिथ अछर करि परबतन सूर ।
पद्यन यी पादि रुख गोंड़ु ज़ेनि लोहूर ।।
तसुन्द मोख डेशिवुन खोंट मोंख प्रबातन ।
सिरियि सुतायि ज़न खोंत अरदु रातन ।।
सिरियि च्रंन्दुरमु तंमिस केन्दुरस गोंमुत जान ।
सपुनि येंमि हुनिशि लू कुक बब यि सन्तान ।।
प्रबातन येंलि प्रज़लुवुन सिरियि ह्युव ज़ाव ।
च्रंजिस गटु दोंन अंछिन तस गाश ज़न आव ।।
तंमिस मोंख त्युथ छु युथ अड्फोल वोंज़ुल पोश ।
खटन तथ वुठ वंटिथ थोंविथ रंटिथ जोश ।। १० ।।

मनस वुछिनस तंमिस शंका खंटिथ ओस ।
वन्दुच सरदी वुछिथ थोवन वंटिथ ओस ।।
वुछन तस नस अलमासुच कलम त्राश ।
महावीरन वुछिथ लसुनुच छोंनिख आश ।।
बुमन दोंन कश कंडिथ थोंविथ कमानन ।
शिकारस प्यठ तफावत कोंह् नु ज़ानन ।।

में (ऐसे) अक्षर (रेखाएँ) लिखे थे कि वह पर्वतों को राख कर देगा और पादों में (ऐसी) पाद-रेखा अंकित थी कि वह लाहौर[1] तक को जीत के रहेगा। उसका मुख देखते ही प्रभात ने अपना मुख छिप दिया और जैसे सीता के जीवन-आकाश में अर्द्धरात्रि को सूर्य उग आया। उसकी जन्म-कुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा अच्छे केन्द्रों में पड़े हुए थे जिसके प्रभावस्वरूप वह सन्तान (बालक) लोक का पिता बन गया। प्रभात को उगने वाले सूर्य की तरह वह जन्मा और (सीता) की आँखों का अन्धकार दूर होकर उसमें जैसे (नव प्रकाश) आ गया। उस (बालक) का मुख ऐसा था मानों अधखिला लाल-पुष्प! बन्द होठों के बीच में जैसे जोश को छिपाकर रखा गया हो। १० मन में उसके कोई शंका छिपी थी और (शायद) जाड़े की सर्दी देख उसने अपना मुँह बन्द कर रखा था। नाक उसकी ऐसी थी मानो अलमास को कलम से तराशा गया हो। महावीर जब उसे देखते तो उन्हें (अपने) जीने की आशा टूटती दिखाई देती। भौंहें उस कमान जैसी थीं जो शिकार पर संधान करने के लिए ज़रा भी सकुचाती न हों। यदि वह (उस कमान से) एक बरौनी रूपी तीर भी चलाए तो न जाने

1 कवि की कल्पना दृष्टव्य है।

सु योंदवय कश कडी तथ अख अंछिरवाल ।
मरन सुगरीव बेयि बोंनु सासन बव मॉल्य ।।
ज़ु अंछ बादामु खोंतह् आसु ज़ेबा ।
ति डीशिथ रूस्य कचि गंयि ना शकीबा ।। १५ ।।

सु बुथ डीशिथ सपुन्य मसवल गुलालन ।
तवय दिन्न रातक्युत छ्यफ आफ़ताबन ।।
ख़बर येंलि गंयि रेंशिस दोंपनस वदव छय ।
सदाशिव टोठिनय वोंन्य आंसिनय जय ।।
गोंडुन ज़ातुख दोंपुन लंखिमी च्रें कुन फीर ।
सिरियि वनि ओय ज़नमस प्यठ बलावीर ।।
दुती बोंद छुस मकर च्रन्दुरस गंमुत्र जाय ।
स्यठाह् दियि मार शंतरन छुस नु परवाय ।।
त्रुतीय ब्यूठुस शनशचर कौम्भि प्यठ कीत ।
बबस प्यठ बद स्यठाह् मशरबु करि हीथ ।। २० ।।

शोंकुर छुस मीनि प्यठ क्यन्दुरस स्यठाह् जान ।
यिवन खोंश सारिनुय ज़न सिरियि तावान ।।
ब्रहस्पत मीशि पूंच्रिमि जायि कांमिल ।
स्यठाह् खोंश आसि आसान तस पनुन दिल ।।

कितने सुग्रीव और उसके हज़ारों बाप-दादा (उससे भी बड़े वीर) मर जाएँगे। उसकी दो आँखें बादामों से भी बढ़कर सुशोभित (ज़ेबाँ) हो रही थीं जिन्हें देख मृगी भी शर्मिंदा हो गई। १५ वैसा चेहरा देख गुलेलाला भी पीला पड़ गया और यही वजह है कि आफ़ताब भी रात को छिप गया। जब ऋषि (वाल्मीकि) ने यह ख़बर सुनी तो उसने (सीता को) बधाई दी और कहा कि तुम्हारी जय-जयकार हो। सदाशिव तुम पर प्रसन्न हो गए हैं। उपरान्त, उन्होंने (बालक की) जन्मपत्री बनाई और कहा कि अब लक्ष्मी (सुख-समृद्धि) इस ओर फिर गई है। (साक्षात्) सूर्य ने इस बलवीर के रूप में जन्म लिया है। द्वितीय भावका बुध मकर राशि में चन्द्रमा के साथ बैठा है जिससे यह (बालक) शत्रुओं को ख़ूब मार (पीट) देगा और ख़ुद इसे कोई परवाह न होगी। तीसरे भाव का शनिश्चर कुम्भ राशि में केतु के साथ बैठा है जिसका फल इसके पिता के लिए बुरा होगा और भूल ही इसका मुख्य कारण होगी। २० ये दोनों अपग्रह कोई-न-कोई बवंडर ज़रूर खड़ा कर देंगे। मीन राशि

शेंयुम छुस शेंथुर गलुवुन व्रेशि प्यठ बोम ।
गछ़्यस राज़स च़कुर वरतस सुत्यन काम ।।
नंविमि किन्य आसि आयुत करि दरुम दान ।
दह्न वांतिथ बबस प्यठ गलि ज़ुव जान ।।
ति बूज़िथ मन तंमिस सुतायि ख़ोंश गव ।
दोंपुस तंम्य राज़ु पोंतरस नाव कर लव ।। २५ ।।
वनन सुता अनन छ़ांरिथ वोंपल हाख ।
थवन गोंबरस रेंशिस निशि आंस बेबाक ।।
बिहिथ र्‌योंश ईशरस सुतिन गंडिथ मन ।
गछ़न ख़ोंश येंलि थवन बाशन तंमिस कन ।।
गोंज़ुर सुतायि पतु आस्यम यि छ़ारन ।
रेंशिस मा वदनु सुत्य च़ंच़ल गछ़्यम मन ।।
दोंहु अकि गंयि तंमिस ह्यथ लोंलि मंज़बाग ।
करन र्‌योंश ओस ना तस होशि किन्य ज़ाग ।।

का शुक्र केन्द्र में चला गया है और बड़ा ही उत्तम है जिससे यह (बालक) चमकते सूर्य की तरह सब को प्रिय लगेगा। मेष राशि का बृहस्पति पाँचवे भाव में चला गया है जिससे इसका दिल हमेशा ख़ुश रहा करेगा। वृष राशि का भौम छठे भाव में चला गया है जिससे यह शत्रुओं को जलाने वाला सिद्ध होगा तथा चक्रवर्ती राजा से इसका काम पड़ेगा। नवमांश के अनुसार यह दीर्घजीवी होगा तथा ख़ूब धर्म-दान करेगा। यह दस (साल) का होगा तो पिता के लिए जी-जान गलाएगा। यह सुनकर उस सीता का मन ख़ुश हो गया। उस (ऋषि) ने आगे कहा कि इस राजपुत्र का नाम लव रखा जाए। २५ कहते हैं, सीता वन से जंगली शाक (कंद-मूल) ढूँढ-ढूँढ कर लाती और अपने पुत्र व ऋषि के सामने रख देती। इधर, ऋषि ईश्वर के ध्यान में मन लगाकर बैठे रहते तथा इस बालक की (तुतली) भाषा को सुन-सुनकर बहुत ख़ुश हो जाते। एक दिन सीताजी सोचने लगीं कि (मैं वन चली जाती हूँ और) यह मेरे पीछे मुझे ढूँढने के लिए (बहुत) रोता होगा जिससे ऋषि का मन (ध्यान से हटकर) चंचल हो उठता होगा। अत: वह उस (बालक) को गोद में लेकर अपने साथ (वन में) ले गई। ऋषि उस बालक की होश से (ख़ूब) निगरानी रखते थे। (उस दिन) आदत के अनुरूप जब उन्होंने (बालक की कोई) आवाज़ न सुनी तो नज़र उठाकर देखा। वहाँ (बालक को)

ब आदत यॆलि नु कॆंह् बूज़ुन सदा तंम्य ।
नज़र त्रावुन कोरुन अफ़सोस न्युव कंम्य ।। ३० ।।
गुमां तस यी सपुन न्युव जानवारन ।
यियम सुता तु आस्यम पान मारन ।।
वदुन तंम्य सुन्द दोंपुन ह्यकु़हा नु त्रालिथ ।
तुलुन अख दरबि काना ताम सम्वालिथ ।।
मंगिन आही वनुनि लोंग ही सदाशव ।
गंछिन यथ दरवि बालुख युथ तंमिस लव ।।
वंनिन लीला शरन सांपुन दयस कुन ।
दरुबि बालुख प्रज़लवुन पादु सांपुन ।।
थोंवुन तंम्य ज़ोरु पाठिन वारु साविथ ।
दपन ताम आयि सुता पान नाविथ ।। ३५ ।।
सों सुता आयि फीरिथ ह्यथ वोंपलहाख ।
वुछुन यॆलि वालुखा तति लंज्य वननि वाख ।।
अंछिन लंज्य फिशि करुनि हंल्य छिम अंछिर वाल ।
अंकिस अंछ पादु क्यथु पाठ्य गोम दोयुम लाल ।।
रेंशिस आसना मनस पनुनिस पनुन्य शंक ।
नज़र त्रावुन वुछुन तति वाजि प्यठ क्रेंक ।।

न पाकर वे अफ़सोस करने लगे कि उसे कोई उठाकर तो नहीं ले गया! ३० उन्हें यही गुमाँ हुआ कि (शायद कोई जंगली) जानवर उसे उठाकर ले गया होगा। अब सीता आ रही होगी और आते ही शरीर पीटेगी। वे सोचने लगे कि उसका रोना भला मैं कैसे सह सकूँगा और तभी (दर्भ) कुश की एक सींक को (हाथों में) उठाकर उसे संभालते हुए वे (ईश्वर से) यह आशीर्वाद माँगने लगे—हे सदाशिव! दर्भ का वैसा ही बालक बने जैसा लव था। ईश्वर की शरण में जाकर उन्होंने ख़ूब प्रार्थना की और तभी उस दर्भ से एक प्रज्वलित होता हुआ वालक पैदा हो गया। उसे तब (ऋषि ने) अच्छी तरह सुला दिया और कहते हैं, तभी सीता नहा-धोकर तथा हाथों में कंद-मूल लिये (वन से) वापस आ गई। ३५ जब उसने वहाँ पर उस बालक को देखा तो आँखों को मलते हुए कहने लगी कि यह मेरी आँखों का दूसरा लाल (तारा) कहाँ से पैदा हो गया। ऋषि का मन चूँकि पहले से ही शंकित था, अतः उन दोनों पर नज़र डालकर मुस्कराते हुए कहने लगे—

असन दोपनस वुछन गछि दयि सुन्द्य कार ।
यिमन दौन मा तफ़ावत वुछ च्रु ज़ि नहार ।।
सपन ख़ोश मनु किन्य च्रुय कोश करुस नाव ।
दयूगत वुछ तु सीरुच कथ मनस थाव ।। ४० ।।
रंछिन तिम दोनुवय यिथु छी रछन लाल ।
प्रज़लुवुन लव तु कोश येलि गव स्यठाह काल ।।
रेशिस डीशिथ तपस कुन सांपुनुक खोय ।
सिफ़त छुय सोहबतस पोशस पनुन बोय ।।
न ख्यनु सूतिन गुलाबन गंयि लेंदुर्य पोश ।
ति याम वुछ रेश तु लोलन यंत्र दितुस जोश ।।
करुन हारिंज गासुव दरबि हुन्द्य कान ।
दितिन पर्य्य पर्य्य तिमन वुछितव सु गोर जान ।।
द्युतुन तंम्य वाख यस प्यठ यियि यिहुन्द तीर ।
तंमिस म्रत वाति योदवय आसि बोड वीर ।। ४५ ।।
त्युथुय बूज़िथ शिकारन आंस्य नेरन ।
प्यवन युस ब्रोंठु तस बेवायि मारन ।।

इसे भगवान् ! की इच्छा जानो और उसके कार्य देखते जाओ। इन दोनों में तू कोई भेद न जान—ये दो नहीं, एक ही हैं। तू मन में ख़ुश हो जा और इसका नाम कुश रख। इसे दैवगति समझ कर रहस्य की वात को मन में ही छिपाकर रखना। ४० उन दोनों को आँखों के तारे मान उस (सीता) ने उनकी (जी-जान से) रक्षा (परवरिश) की। कुछ काल (समय) बीत जाने के बात दोनों लव और कुश प्रज्वलित होने लगे (तनिक बड़े होकर और तेजस्वी बन गए)। ऋषि को देख तप के प्रति उनकी भी इच्छा जागी। दरअसल, सोहबत (संगत) की यही विशेषता है। पुष्प अपनी सुगन्धि से आकर्षित किए बिना नहीं रहता। (तप में) उपवास रखने के कारण उनका गुलाब जैसा तन पीला पड़ने लगा। यह हाल जब ऋषि ने देखा तो (उनके मन में) प्रेम (कर्त्तव्य) ने जोश मारा। दर्भ के तीर बनाकर तथा गुरु पद सम्भालते हुए उन्होंने उनको (लव कुश को) तीरों का संधान करना सिखाया। उन्होंने उनको यह आशीर्वाद (वरदान) दिया कि जिस किसी को इनका तीर लगेगा, वह भले कितना बड़ा वीर हो, मरेगा वह अवश्य ही। ४५ वे दोनों शिकार खेलने जब

गछ्न लारन तिमन सार्यन शिकारन ।
गुलन तु सोंम्बुलन मंज़वाग़ फेरन ॥
सुहन लारन त्रुहन क्रूहन करन लार ।
शिकारन खेंल्य करन अंडिजन गंडिक वार ॥
तिमन वुछ वुछ करुनि लंज सोंख तु आनन्द ।
वुछिन गाटुल्य तु ज़ोरावार फरज़न्द ॥
तिमन वुछ वुछ सों सुता शाद संपुन्य ।
दुबारह लंक ज़न आबाद संपुन्य ॥ ५० ॥

अशमीद गुर

दपन येलि रामुच्रंन्दुरस निशि जुदा गंय ।
सों सुता ना वोंमेदी ह्यथ रोटुन दय ॥
कंरिन तंम्य रामु च्रन्दुरन चाक जामन ।
च्रंटिन ज़द गुल गिरेबान ता बदामन ॥
वनुनि लोंग क्याह सना सुतायि क्याह गव ।
ज़िन्दय आस्या सना किनु खेंयि शालव ॥
वंनिथ कस ज़ानि येम्य कोंर पानु युथ कार ।
बोंडुस यथ सेंन्दि वोंन्य क्यथु पाठ्य लबस तार ॥

निकलते तो जो भी सामने आते उन्हें बेतहाशा मार (भगा) देते। कभी शिकारों के पीछे भागते (किसी को भी नहीं छोड़ते) तथा गुलों व सुम्बुलों के बीच घूमते रहते। सिंहों को तीस कोस तक भगा देते तथा इस प्रकार शिकार करते-करते उन्होंने हड्डियों के ढेर लगा दिए। वह (सीता) सुख-आनन्द से अभिभूत हो उठती जब अपने फ़रज़न्दों (पुत्रों) को इतना प्रबुद्ध व ज़ोरावर (बलिष्ठ) पाती। उन्हें देख-देख वह सीता शाद हो उठती जैसे वह वन पुनः आबाद हो गया हो। ५०

अश्वमेध घोड़ा

कहते हैं जब वह सीता रामचन्द्रजी से जुदा हो गई तो उसने ना-उम्मेदी में भगवान् को ही अपना सहारा माना। इधर, रामचन्द्रजी ने दामन से गिरेबाँ तक गुलों की तरह अपने वस्त्र चाक कर डाले और कहने लगे कि जाने सीता के साथ क्या हुआ होगा! कौन जाने वह ज़िन्दा भी होगी या (वन के) गिद्ध उसे खा गए होंगे। अब मैं कहूँ भी तो किस से कहूँ क्योंकि मेरे द्वारा ही यह सब कार्य हुआ है। मैं स्वयं

हरुनि लोंग दानु ओंश आरामु निशि रूद ।
पतव अदु चरुख ह्युन क्याह् छुस नफ़ा सूद ।। ५ ।।
ख़बर सांपुन्य वसॆशठस आव लारन ।
छौंकस क्युत तस दवा ह्यथ आव लारन ।।
दोंपुस तॆम्य वदुनु सुत्य वॊन्य क्याह छु चारह ।
छुनिथ त्रांविथ यियी क्यथु वॊन्य दुबारह ।।
समय छुय बाज़्यगर भ्रम दिथ ब बाज़ार ।
बलावीरन दिवन मॆल्य ह्यथ बॆल्य आज़ार ।।
दुकानदारा लुकन बरदाश्त खारन ।
करुज़ गोंबरन तु अदु लॆठ्य ह्यथ छु लारन ।।
तिथय मॆच्रुरन तु मॆच्रुरांविथ दिवन ओज ।
दपन सार्यन योंहय मा बब तु बॆयि मोज ।। १० ।।
पतव शतरंज तति शाह् रॊख छु हावन ।
अकाबीरन वज़ीरन मारुनावन ।।
कॆंरिन सांरी यिथय पांठिन अवारह ।
च्रु यॆलि कोंरनख बॆयन हुन्द क्याह छु चारह ।।

सिन्धु में डूबा हूँ अब भला मेरा निस्तार कैसे हो सकता है? वे (मोती के) दानों की तरह आँसू बहाने लगे तथा आराम (मानसिक शांति से) से जगते रहे। जीवन उन्हें (निःसार) बिना नफ़ा व सूद के दिखने लगा। ५ वसिष्ठ (ऋषि) को जब इस बात की ख़बर हुई तो वे भागते हुए आए और अपने साथ जख्मों के लिए दवाई भी लेते आए। वे बोले—रोने से अब क्या होगा? आपने ही तो उसे त्याग दिया, अब भला वह दुबारा कैसे आएगी? समय बाज़ीगर के समान है जो सरेबाज़ार (सब को) भ्रम में डाल देता है। बड़े-बड़े वलवीर उसके सामने (बिना मूल्य के) बिक जाते हैं तथा कष्ट में पड़ जाते हैं। वह (समय) ऐसा दुकानदार है जो लोगों (ग्राहकों) को उधार तो दे देता है किन्तु बाद में वह कर्ज़ डण्डे मार-मार कर (लड़-झगड़ कर) उनके पुत्रों से चुकवाता है। लाड़-प्यार जताकर तथा दिल खोलकर ख़ूब मीठी-मीठी बातें करता है जिससे लगता है कि वह हमारे माता-पिता के सदृश है। १० किन्तु बाद में शतरंजी चाल चलता है तथा रुख़ से शह देकर बुद्धिमान बज़ीरों तक को मरवा देता है। इस (समय) ने जाने कितनों को इसी प्रकार दुविधा में डाल दिया है। आप जैसे जब दुविधा में पड़ गए तब भला दूसरों का

ख़बर छा कुस शिकस्त बोंयि ओय इदवार ।
अपुज़ वोंनुहय बुथिस पनुनिस छुनुख नार ।।
ख़बर छा मेंथुर कुस कांह शेंथुर मा ओस ।
च्रे क्याह वोंननय तु पानस मा गज़ब गोस ।।
मनस छुय दोंख वनय अथ क्याह दवा छुय ।
करुन अशमीदु जग तथ यी रवा छुय ।। १५ ।।

च्रे च्रलुनय पाफ सारी रोज़ चालाक ।
गछ्खख त्युथ पाफ वरज़िथ माजि युथ ज़ाख ।।
च्रे च्रलुनय पाफ सारी कर टुकन पुन ।
सोंम्बुर सामानु मन थव ईशरस कुन ।।
वोंनुख येंलि तंम्य ओंनुख गुर खेलुनोवुख ।
दिच्रुन लशकर सुतिन तस अथु त्रोवुख ।।
बरथ राज़न नियन लशकर स्यठाह सुत्य ।
लछन हुन्द्य लछ सवारह प्यादु गंयि कुत्य ।।
बरथ राज़स सुतिन गव बोंयि शेंतुर गुन ।
छुंडिथ समसार सोरुय आयि हनहन ।। २० ।।

क्या चारा (उपाय) हो ! क्या ख़बर किस दारिद्र्य (तामस) ने आप को घेर लिया था। कहने वालों ने (सीता के बारे में) आपसे झूठ कहकर अपना ही मुँह जला डाला है। क्या खबर कौन-सा मित्र शत्रु बन गया जो आपसे न जाने क्या-क्या कह गया और यह गजब ढा गया। आपके मन में जो दु:ख है उसके लिए मैं एक दवा (उपाय) बताता हूँ। आपको एक अश्वमेध यज्ञ करना होगा क्योंकि इसके लिए यही दवा (उचित) है। १५ इससे आपके सभी पाप दूर हो जाएँगे, अतः चालाक (उद्यमी) बनिए। पापों से ऐसे मुक्त हो जाएँगे जैसे माँ से दुबारा जन्म ले लिया हो (जन्म लेते समय व्यक्ति निर्मल होता है)। आप जल्दी यह पुण्य-कार्य कीजिए ताकि आपके सारे पाप दूर हो जाएँ। जब ऐसा उस (ऋषि) ने कहा तो तुरन्त एक घोड़े को मँगवाया गया और एक लशकर साथ करके उसको छोड़ दिया गया। भरतराज उस लशकर के साथ थे। (लशकर में) लाखों सवार और जाने कितने प्यादे (पैदल) शामिल थे। भरतराज के साथ शत्रुघ्न भी चले गए तथा संसार का चप्पा-चप्पा उन्होंने छान मारा। २० उनको यह गुमाँ हुआ कि भला किसको उनके साथ जंग करने की

गुमां तस कुस में सुत्य आस्यस जंगुक ताब ।
लसी कुस तस वुछिथ कोह्न सपुनि आब ।। २१ ।।

लव कौशुन जंग बरथ राजस सुत्य

वुछिव येलि तस गुरिस आयस पतिम दोह ।
बयाबानन छंडिथ लार्योव सु बर कोह ।।
तोतुय ना यथ कोहस प्यठ लव तु कौश ओस ।
पकन गव पान्य पानय क्याह गज़ब गोस ।।
बिहिथ तति कौश कुनुय ज़ोन लव गोमुत वन ।
बेयन रेश बालुकन सुत्य छालु मारन ।।
कौशन ड्यूठुन क़शोनाह शोर बूज़ुन ।
प्रछुनि लोग तां होवुन बालुकन कुन ।।
तिमव येलि वुछ सौ लशकर च्रल्य खटिथ रूद्य ।
बठ्यन बेरन कंड्यन तल रूद्य ज़न मूद्य ।। ५ ।।

कौशन गुर ड्यूठ तस गुर्य आस्य यंच्र टाठ्य ।
गुरिस लार्योव पादर सुह्ह सुन्द्य पाठ्य ।।

सामर्थ्य होगी क्योंकि उन्हें देख पर्वत भी आब (पानी-पानी) हो जाते हैं। २१

लव-कुश का जंग भरतराज के साथ

देखिए, जब उस घोड़े के अंतिम दिन (निकट) आ गए तो बियाबानों को छान मारते-मारते वह उस कोह (पहाड़) पर जा पहुँचा जिस पर लव और कुश रहते थे। (वह घोड़ा) ग़ज़ब (भावी आफ़त) की चिंता किए बिना आगे बढ़ता गया। वहाँ पर अकेला कुश अन्य ऋषि-बालकों के साथ खेल रहा था, लव वन में गया हुआ था। कुश ने (दूर से) सेना को आते देखा तथा कुछ शोर भी सुना। बालकों को दिखाकर वह उनसे इसके बारे में पूछने लगा। जब उन्होंने उस लशकर को अपनी ओर ही आते देखा तो वे सभी भागकर (इधर-उधर) छिप गए। कुछ पत्थरों के नीचे, कुछ झाड़ियों के नीचे ऐसे छिप गए जैसे मर गए हों। ५ कुश ने जब घोड़े को देखा तो उसे वह बहुत प्यारा लगा क्योंकि घोड़े उसे बहुत प्यारे लगते थे। वह तुरन्त उसके पीछे बबर-शेर की तरह पड़ गया। उसने उसे (गर्दन से) पकड़कर चक्रवत् घुमाया। सिपाहियों ने जब यह देखा

रोंटुन थफ दिथ ह्योंतुन तति चरखु फेरुन ।
सिपाह्‌व ड्यूठ हेंतिनख प्रान नेरुन ॥
वुछिव आश्चर यि पां फॅर्‌य रोंट यि दॅरियाव ।
त्रबूवनु ज़ल छुंडिथ कमि शाठु लॅज नाव ॥
कोंशस गव खोंश गुराह ड्यूठुन स्यठाह जान ।
सोंनुक साज़ाह कॅरिथ ज़न सिरियि ताबान ॥
रंटुन लाकम गुरिस थफ दिथ कोंरुन बन्द ।
वनुनि लॅग्य तिम कोंशस गछ्ठि आपुरुन कन्द ॥ १० ॥
गुराह त्युथ युथ नु वावस कुन दिवन तन ।
वुछिव क्यथु पाठ्‌य रोंट तॅम्य शीर खारन ॥
यि येलि वुछ सॉयिसव शरमन्दु सॉपुन्य ।
असुनि लॅग्य तस वुछिथ तिम कोह्‌ ज़न हुन्य ॥
वुछिव क्याह वाव ह्युव लारन गुरिस आव ।
स्यठाह शाबाश छुस तस माजि यस ज़ाव ॥
वनुनि लॅग्य दीवता दय व्याद कॉसिन ।
यि ज़ामुत यस तॅमिस दन बाग्य ऑसिन ॥
सिरियि च्रन्दुरमु छा किनु नोंव छु अवतार ।
महावीरस बबस बॅविनस नमसकार ॥ १५ ॥

तो उनके जैसे प्राण निकलने लग गए। आश्चर्य देखिए ! पानी के एक कतरे (कुश) ने कैसे एक दरिया को रोक दिया तथा त्रिभुवन के जल को छान मारने वाली नाव यहाँ (पहुँच कर) कैसे तूफ़ान में फँस गई ! सुन्दर घोड़े को (वश में कर) कुश ख़ुश हो गया। उस (घोड़े) के ऊपर सोने के आभरण सूर्य की भाँति चमक रहे थे। घोड़े की लगाम थाम उसने उसे पकड़कर बन्द कर दिया। उधर, (कुश की वीरता देख सिपाही (आपस में) कहने लगे—इस बालक के मुँह में कन्द (शक्कर) डालना चाहिए। १० घोड़ा ऐसा जो वायु को भी कभी पीठ न दिखाए। पर देखिए, कैसे उस शीर-ख़्वार (दूध पीते बच्चे) ने उस जैसे (घोड़े) को पकड़ कर बाँध लिया ! (सिपाही कहने लगे—) उस माँ को शाबाशी, जिसकी कोख से ऐसा वीर (बालक) जन्मा है। देवता भी कहने लगे कि भगवान् इसकी व्याधियाँ दूर करे तथा उस (माँ) का भाग्य धन्य है जिसके ऐसा (वीर) जन्मा है। क्या यह सूर्य है या चन्द्र या फिर कोई नया अवतार तो नहीं

असान दोंपुहस मसा कर कँह गुरिस सुत्य ।
दोंपुख तंम्य पथ च्रलिव नतु बेंयि मंरिव कुत्य ।।
दोंपुख तंम्य गोंडु में निश युस ज़िन्दु रूज़िव ।
सु अदु म्यान्य बेंयि यिम व्यसतार बूज़िव ।।
यि वोंबरोवुन वंनिथ मुच्चरुन सु तरकश ।
कंरिन कँह खंश्य मंकुर्य केंच्चन कोंरुन खश ।।
स्यठाह यँलि मार्य तंम्य पथ फीर लशकर ।
बरुथ लार्यव बापोंथरस बराबर ।।
तसुन्द दरशुन वुछिथ बेह्यस बरुथ गव ।
वनुनि लोंग रंतुन छा किनुह रम्बुवुन रव ।। २० ।।
कंमिस निशि ज़ाव कस निशि करुह बं मोलूम ।
युथुय ओस रामुजुव यँलि ओस मोसूम ।।
तंमिस डीशिथ मनस बरथस बिना गोस ।
वनुनि लोंग क्या सना गोंबरा युथुय ओस ।।
ति मा आसुस ख़बर कँह छुम यि फ़रज़न्द ।
अमी दावायि बापथ गुर कोंरुन बन्द ।।

है? १५ तब, हँसते हुए (वे सिपाही) उससे कहने लगे—देखो बेटा, इस घोड़े को (छोड़ दो), इसे छेड़ो मत। इस पर वह बोला—पीछे हट जाओ अन्यथा (इसके साथ) न जाने कितने और मर जाएँगे! मेरे वार से यदि कोई ज़िन्दा बच भी गया तो उसे आगे ज़िन्दा बचने की आशा नहीं रखनी चाहिए। मेरा भाई भला उसे कहाँ छोड़ने वाला है! यह कहते ही उसने तरकश ढीलाकर (तीर निकाल कर) कइयों को क्षत-विक्षत कर डाला तथा कइयों को मार-भगाया। जब उसने अनेक (सिपाही) मार डाले तो लशकर पीछे हट गया और भरत अपने भतीजे से जूझने के लिए आगे आया। उस (कुश) का दर्शन करते ही भरत बेहोश हो गया और कहने लगा कि जाने यह कोई रत्न है या चमकता सूर्य। २० यह किस से जन्मा है, कैसे मालूम हो सकता है? राम जी भी (बिल्कुल) ऐसे ही लगते थे जब वे मासूम (बालक) थे। उसे देख भरत के मन में यह बात बैठ गई और कहा कि सचमुच पुत्र हो तो ऐसा हीहो। मगर भला वह क्या जाने कि उसका फ़रज़न्द यही तो है और इसी सम्बन्ध को सिद्ध करने के लिए उसने उनका घोड़ा बन्द करने की हिम्मत की थी। (वात्सल्य के वेग के कारण) उस (भरत) की नसें तन गईं तथा रोएँ-रोएँ पर जैसे चीटियाँ रेंगने लगीं और उसकी

तम्मना गोस नखु वुछिहस गुलाबस ।
रगन दग र्‌यय लंजिस प्रथ मोयि वालस ॥
वरन छुस लोल लोलुक लोंग वरुनि बाग ।
दोंपुन थवुहन रंटिथ वालिजि मंज़ वाग ॥ २५ ॥

ति मा ज़ोनुन अंमिस निशि छमनु कैंह् बाथ ।
कर्‌यम मा मरदि बेज़क़ बन्द शह् मात ॥
ति मा ज़ोनुन यि मा सुतायि ज़ामुत ।
छु मा असि सारिनुय मारुनि आमुत ॥
ति मा ज़ोनुन दूदस्तह् यिम दिलावार ।
सु दस्तह् बाज़्य मा गछि रंगि नादार ॥
वरुथ लोंत लोंत पकान ताम तस निशन गव ।
कोंशन ह्युत तीर रथु निशि डोंल वंसिथ प्यव ॥
खबर छयना च्रे वरथुन्य क्युथ बलावीर ।
सम्बोलुन दम कोंशस लोयुन डयकस तीर ॥ ३० ॥

सपुन वेहोश यैलि वुथ्य किन्य वंसिथ प्यव ।
रथस प्यठ तुल सु वरथन ह्यथ तंमिस गव ॥

यह तमन्ना जागी (इच्छा हुई) कि क़रीव जाकर उस गुलाब (कुश) को देख ले। उस पर वह (भरत) अपने प्रेम-उद्यान (बाग़) का सारा प्रेम बरसाने लगा और कहने लगा कि काश इसे पकड़ कर अपने कलेजे के भीतर छिपाकर रख सकता ! २५ मगर उसने यह नहीं जाना कि इसके आगे उसकी भला क्या चलेगी ! वह इसे (भरत को) बन्द कर (कुछ ही क्षणों में) शह और मात दिखलाएगा। उसने यह भी नहीं जाना कि यह सीता (की कोख) से जन्मा है तथा हम सबको मारने आया है। उसने यह भी नहीं जाना कि केवल दो हाथों से यह दिलावर (वीर) उसके समस्त लशकर के हाथों से वाज़ी छीनकर उन सबको नाकाम बना देगा। भरत धीरे-धीरे चलकर उसके पास गया और (तभी) कुश ने तीर मारा जिससे वह (भरत) रथ से नीचे गिर पड़ा। भरत की बल-वीरता की किसको खबर नहीं ! दम सम्भालकर उसने कुश के माथे पर तीर मारा जिससे वह बेहोश होकर नीचे मुँह के बल गिर पड़ा। ३० तब भरत उसे उठाकर रथ में ले गया। कन्दराओं के पीछे ऋषि-बालक यह सब हाल देख रहे थे। उन्होंने जाकर सीता से सारा वृत्तांत कहा कि तुम्हारा लाल (कुश)

बठ्यन तल आस्यना रेंश शुर्य वुछन हाल ।
गंछ्रिथ सूंतायि वोंनहस खोंट गोंवुय लाल ।।
ति बूज़िथ गव तंमिस सूतायि बे दाद ।
कोंरुन फ़रियाद गोंबरस लंज सों दिनि नाद ।।
वदुनि लंज ताम तोंतुय पांदा सपुन लव ।
कोंशुन बूज़िथ कशोनस प्यठ पकन गव ।।
दपन तोंत ताम कोंशन बेंयि दम सम्बोलुन ।
बरथ राज़न तंमिस इसबन्द ज़ोलुन ।। ३५ ।।

दवा मोंथनस तु शरबत दामु चोवुन ।
कोंठिस प्यठ कलु ह्यथ तंम्य ललुनोवुन ।।
लवन आलव कोंरुस कंम्य रावुर्य वथ ।
वुछू हंतियारि वुन्य क्यथु पांठ्य मारथ ।।
लवन आलव कोंरुस अंत्य रोज़ वीरह ।
बसुम गछ्रि परबतन अमि चानि तीरह ।।
अंमिस सूतिन चे़ कवु पुछ्रि वेर ओसुय ।
अकुय गोंछ्रना गछ्रुन कोनो च़्रंजी दुय ।।
शुर्यन सूत्य पांपियव गछ्रियो करुन न्याय ।
सुहुय क्यथु तीर ह्युन फीरुय नु केंह माय ।। ४० ।।

खोटा (बुरी तरह ज़ख़्मी) हो गया है। यह सुनकर वह सीता अत्यन्त दुःखी हो गई तथा फ़रियाद करने लगी व अपने पुत्र को बुलाने लगी। वह (खूब) रोने लगी और तभी उसके सामने लव पैदा हो गया (आ गया)। कुश के बारे में सुनकर वह तुरन्त उसे छुड़ाने के लिए सेना के पीछे चल दिया। कहते है, इस बीच कुश ने भी दम सम्भाल लिया। (उसे देख) भरतराज ने अतीव प्रसन्नता व्यक्त की। ३५ तथा (उसके घावों पर) दवा मलकर शरबत के घूंट पिलाए। घुटने पर (उसका) सिर लेकर उसे डुलाने लगा। (तभी) लव ने (पीछे से) आवाज़ दी—रे हत्यारे! तू यहाँ कैसे रास्ता भूल गया? अब देख कैसे तुझे अभी मार डालता हूँ। लव ने (कुश को) आवाज दी—ठहर जाना वीर! तेरे तीर से तो पर्वत तक भस्म हो जाएँगे। (फिर भरत को आवाज दी—) इस मासूम से तेरा क्या बैर था? (लड़ना ही था तो) एक-एक करके उसके सामने जाते। बच्चों के साथ, रे पापी! क्या यह न्याय (व्यवहार) उचित है? तूने उसे तीर से पछाड़ा

वौवुथ युथ त्युथ मे निशि लोनख तम्युक फल ।
मे वौनमय बोज़ पोज़ या रोज़ या च़ल ॥
वरथ राज़न नज़र दिच़ ताम सु ड्यूठुन ।
वुछिनि लोंग सातु सातह् तस कौशस कुन ॥
वननि लोंग कस सना वनु कुस थव्यम कन ।
अंकिस सूरंच़ ज़ु सूरंच़ छुस बु डेशन ॥
अंछन लोंग फश करुनि मौन्य मा गंयम रेश ।
अंकिस डेशान ज़ु छुस क्याह् हावुनम दरेश ॥
सु गव अथ फ़िकिरि लव गव लोयनस तीर ।
छुनुन व्नाविथ पथुरि प्यठ त्युथ वलावीर ॥ ४५ ॥
कौशन लंब वथ च़ंलिथ वायिस निशन आव ।
बंरुन शादी स्यठाह् ज़न माजि नोव ज़ाव ॥
लवन तामथ कौशस कुन ह्योंत वनोनुय ।
वौथू वौन्य हो गछव अंस्य गरु पनोनुय ॥
लवन दोंपनस गछव गरु कुन ख़ोशी सान ।
वदान तति मांज मारान आसि मा पान ॥

(रे निर्मम !) क्या तेरा हृदय पसीजा नहीं ? ४० अब उठ और इसका फल मुझसे प्राप्त कर । मैं यह सब सच कह रहा हूँ । अब या तो सामने आ, या भाग जा । भरतराज ने (पीछे) नज़र डाली और उस (लव) को देखा । तभी वह (ध्यान से) कुश को भी पुनः देखने लगा । वह (मन में) कहने लगा— (आश्चर्य की बात है) एक ही सूरत की मैं दो सूरतों को देख रहा हूँ । अब किसी से (यह बात) कहूँ भी तो भला कौन कान धरेगा ! वह (भरत) आँखें मलने लगा और सोचने लगा कहीं मेरी बुद्धि सठिया तो नहीं गई है जो एक के बदले मुझे दो दिख रहे हैं । वह इसी फिक्र में डूब गया कि लव ने उस पर तीर चला दिया और उस जैसे बलवीर को नीचे पृथ्वी पर गिरा दिया । ४५ कुश को रास्ता मिल गया और वह भागकर अपने भाई के पास आ गया तथा इतना शाद हो गया मानो उसे नया जन्म मिल गया हो ! तब लव ने कुश से कहा—चलो अब अपने घर चले चलें । लव ने (आगे) कहा—चलो, ख़ुशी के साथ घर चलें । वहाँ पर माँ रो-रोकर शरीर धुन रही होगी । कुश (की वीरता को देख) घोड़ा ख़ुश हो गया (मारे ख़ुशी के) वह कूदने फाँदने लगा तथा उससे कहने लगा कि मैं भला

कौशस गुर ख़ौश गोमुत डुलुगंन्य हेंतिन दिन्य ।
दोपुन तस कर में ख़ाली गरु बन्यम युन ।।
कौशस गुर ख़ौश गोमुत मेज्र लोंग लदाने ।
पथुरि प्यठ पान त्राविथ लोंग वदाने ।। ५० ।।
ख़बर कर केंह च्रे छय क्याह छुख गुराह जान ।
सोंनुक साज़ाह करिथ ज़न सिरियि ताबान ।।
में रोंटमुत ओस येंम्य न्यूनम सु मारन ।
रटख गरदन च्रटख प्यादन सवारन ।।
बरुथ तंबुलिथ वोंदुनि वोंथ हाल बोवुन ।
वनुनि लोंग हाल बूज़िथ तस कौशस कुन ।।
गछू पानस हतो नेंचव्यो यि मो वन ।
कडायो तीर दिथ वुन्य मूलु गरदन ।।
लवन याम बूज़ ह्युतनस तीर दारिथ ।
छुनुन तमि तीरु सुतिन बरुथ मारिथ ।। ५५ ।।
लवन याम बूज़ त्रोवुन तीर तस कुन ।
मन्दियन सिरियि तंम्य सुन्द अस्त सांपुन ।।
खंच्रुस च्रख जहलु सुत्य लशकरि कोंरुन डास ।
कथा छनु कूत्य मारिन सासु बंद्य सास ।।

घर खाली कैसे जा सकता हूँ। कुश की वीरता देख कर घोड़ा (अगरचे बहुत) खुश हुआ किन्तु वह शरीर पर मिट्टी मलने लगा (मायूस हो गया) तथा पृथ्वी पर देह को पसार कर (लोटकर) रोने लगा। ५० (तब कुश घोड़े से बोला—) तुझे नहीं ख़बर कि तू कितना अच्छा घोड़ा है! सोने का साज़ोसामान धारण कर तू सूर्य की भाँति चमक रहा है। तुझे मेरी पकड़ से जिसने छुड़ाया है, मैं उसे मार ही डालूंगा तथा उसके (लशकर के) प्यादों व सवारों की गर्दनें पकड़ कर काट डालूंगा। तभी भरत हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ और कुश की बातें सुनकर उससे कहने लगा— रे बालक! ऐसी बड़ी-बड़ी बातें न कर अन्यथा तीर द्वारा अभी तेरी गर्दन समूल उखाड़ कर फेंक देता हूँ। लव ने जब यह सुना तो उस पर एक तीर चलाया और उस तीर से वह भरत मारा गया। ५५ लव ने एक और तीर उस पर चलाया जिससे उसकी भरी दुपहरी का सूर्य पूर्णतया अस्त हो गया। मारे क्रोध के सारे लशकर को उस (लव) ने नष्ट करने की ठान ली और

कौशन द्युत तीर तंम्य मोरुन शतुर गौन ।
त्युथुय रथ प्यव मेंछिव मौदान गंयि सौन ॥
तसुन्दी वीमु सूतिन सासु वंद्य मूद्य ।
च्रेलिथ गंयि ज़िन्दु योदवय पांछ् दंह रूद्य ॥
हंज़ीमत ख्यव सिपाहव च्रूरि तिम च्रेल्य ।
च्रेलिथ तिम रामुच्रेन्दुरस वात्य वल्य वल्य ॥ ६० ॥

लंखिमन जी सुंद मारु गछुन

वदन गंयि रामुच्रेन्दुरस निशि वंनिख ज़ार ।
दौयव रेश्य बालुकव क्याह कौर युथुय कार ॥
शतुरगौन बरथ राज़ह मारु सांपुन्य ।
मंरिथ तिम सार लशकर ख़ार सांपुन्य ॥
असन वौन रामुच्रेन्दुरन यिम वनन क्याह ।
दौपुन लंखिमन ज़ुवस कुन गव यिमन क्याह ॥
असुनि लोग रामुजुव यामत यि वूज़ुन ।
करुनि कथु सरु लंखिमन जलुद सूज़ुन ॥
च्रु वौथ थौद गछ् टुकन कर पानु मोलूम ।
वदन तंम्य लंखिमनन वौन तिम ज़ु मोसूम ॥ ५ ॥

हज़ारों (सैनिक) मरते गए। पाँच-दस ज़रूर ज़िन्दा रह गए किन्तु वे (जान बचाकर) भाग खड़े हुए। बचे हुए वे सैनिक हार खाकर चोरी-छिपे भाग गए और भागकर श्रीरामचन्द्र जी के पास पहुँच गए। ६०

लक्ष्मणजी का मारा जाना

वे रोते हुए श्रीरामचन्द्रजी के पास गए और उनसे फरियाद की कि (उन) दोनों ऋषि-बालकों ने हमारे साथ क्या-क्या किया। शत्रुघ्न और भरतराज मारे गए और उनके मर जाने पर सारा लशकर नष्ट हो गया। तब (उनकी बात पर विश्वास न कर) रामचन्द्रजी हँसते हुए बोले--जाने ये कौन-सी बात कर रहे हैं! उन्होंने लक्ष्मणजी से कहा--ज़रा देखना तो कि इनके साथ क्या हुआ है। रामजी उनकी बात सुनकर पुनः हँसने लगे और वास्तविकता को जानने के लिए उन्होंने लक्ष्मण को कहा--तुम जल्दी उठकर भागते हुए वहाँ जाओ और ख़ुद वास्तविकता को मालूम करके आओ। तभी

वदुन ह्योंत लंखिमनन फीरिथ यि वोंनुनस ।
वोंदुन वाराह पथर प्यव ज़ाफ़ ओंनुनस ।।
मे तेंलि वोंनुमुत चे येंलि सुता कंरुथ खार ।
सं तन ज़ोंलिथ शिकमु निशि त्रावि त्युथ नार ।।
वोंथन तिम सारिची रुमराठ गालन ।
करन त्युथ जोश सथ दंरियाव ज़ालन ।।
च़ु बेपरवा दया छुख छुय बराबर ।
यियी नय पछ़ मे सुत्य पख चारु कोंह कर ।।
यि वोंबरोवुन व्रंनिथ लशकरि सुतिन गव ।
वनस मंज़ बाग ड्यूठुन कोंश तु बेंयि लव ।। १० ।।
वुछिन तिम रामुचन्दुरुनि मछ़ि हुन्द्य लाल ।
च़्यतस बेंयि प्योस तस सुतायि हुन्द हाल ।।
वनुनि लोंग क्याह सना यिम कम सना छिम ।
अलुनि लोंग लोंग वनुनि छिम लोलु पंत्य यिम ।।
अलुनि लोंग यंच़ च़लुनि लोंग दूर पानय ।
गलुनि लोंग यंच़ मलुनि लोंग सूर पानय ।।

उन दो मासूमों के सन्दर्भों से परिचित होकर वह लक्ष्मण खूब रोया । ५ और लड़खड़ाकर नीचे गिर गया—मैं ने आपसे तभी कहा था जब सीता को आपने असहाय बनाकर छोड़ दिया था, कि वह अपना तन जलाकर अपने पेट से ऐसी अग्नि (सन्तान) छोड़ देगी जिससे चारों ओर सब-कुछ समूल नष्ट होकर गल जाएगा। वह (सन्तान) ऐसा जोश दिखाएगी कि सातों दरिया तक जल (सूख) जाएँगे । आप हम सब के भगवान् और समदर्शी हैं। फिर भी यदि आपको विश्वास नहीं होता तो मेरे साथ चलकर देखें और कोई उपाय (चारा) निकालें। यह कहकर (वह लक्ष्मण) लशकर साथ लेकर चल पड़ा और वन के बीच में कुश और लव को देखा । १० उन दो लालों को उसने बिल्कुल रामचन्द्रजी की दो प्रतिमूर्तियों के रूप में पाया और इसी के साथ उसे दुबारा सीता का वह हाल याद आया। (भाव-विभोर होकर) वह कहने लगा कि वास्तव में ये वही हैं (रामचन्द्रजी के पुत्र हैं) । वह बहुत विह्वल हो गया और आगे कहने लगा—ये वात्सल्य के (साक्षात्) पुंज हैं। तभी वह डगमगाने लगा तथा (स्वयं ही) दूर चला गया। मारे ग्लानि के वह (मुँह पर) राख मलने लगा और कहने लगा—जाने इनकी उस माता (सीता) का क्या हाल है जिसके गर्भ

वनुनि लोंग क्याह् सना तस माजि क्याह् गव ।
येमिस सांपुन्य वोंदय यिम रम्वुवुन्य रव ॥
वनुनि लोंग क्याह् सना तमि मा वोंनुख म्योन ।
छुनिम येलि गरि कंडिथ दरुह् जूनि लोंग ग्रोन ॥ १५ ॥

तिमन वुछ वुछ अनान छुस लोल यंत्र जोश ।
प्यवन सुता च्यतस रोज़न नु केंह होश ॥
तिमन वुछ वुछ दज़ान यंत्र लोलु सुतिन ।
प्यवन सुता च्यतस गौल होलु सुतिन ॥
ग़मन ओंन ज़ोर तस लोंग दिनि वुठन फेश ।
स्यठाह् दोंद तस जिगर अद् लोंग मंगुनि त्रेश ॥
वनुनि आकाश लोंग तस लंखिमनस यी ।
मं वद वापोंतुर प्रारान त्रेश ह्यथ छी ॥
मशख क्यथु मांज चावुमुत्र छय यिमन त्रेश ।
यिनय मावुज़ु दिनय कोंरमुत यियी पेश ॥ २० ॥

लवन येलि दित्र नज़र ड्यूठुन यिवान फ़ौज ।
असन वांयिस दोंपुन वुछ वा यिमन मोज ॥
लवन येलि दित्र नज़र डीठिन यिवान तिम ।
असन वांयिस दोंपुन वुछ वा छि कम यिम ॥

से ये दो चमकते सूर्य प्रकट हुए हैं। वह (आगे) कहने लगा—कहीं उसने इन्हें मेरे बारे में तो नहीं कुछ कहा होगा ? मैं ही तो उसे घर से निकालकर यहाँ (वन में) लाया था जो उस खिले चन्द्रमा को ग्रहण लग गया। १५ उन दो बालकों को देख उसके हृदय में (वात्सल्य) जोश मारने लग गया और सीता की याद आते ही होश उड़ने लग गये। उन्हें देख-देख वह वात्सल्य के कारण दहकने लगा और सीता की याद आते ही दुःख से गलने लगा। ग़म ने ज़ोर मारा और उसके होंठ सूखने लग गए। जिगर ख़ूब जला जिससे वह पानी माँगने लगा। तब आकाश लक्ष्मण से कहने लगा— तू रो मत, भतीजे तेरे लिए पानी लेकर प्रतीक्षा कर रहे हैं ! तू ने भी तो इनकी माँ को (ख़ूब) पानी पिलाया है—यह बात भला ये कैसे भूल सकेंगे ? ये उसका मुआवजा (ज़रूर) चुकाएँगे और जैसा तूने किया है वैसा वे भी पेश आएँगे। २० लव ने जब नज़र दौड़ाई तो अपनी ओर फ़ौज को आते देखा। तब हँसते हुए उसने भाई से कहा—ज़रा इनकी शक्ल तो देखना ! लव

कौंशो खौंश रोज़ बेंयि कम ताम छि लारन ।
खोंशी कर आंस्य अंस्य यथ जायि प्रारन ।।
कौंशो खौंश रोज़ वाराह लूख छि लारन ।
पनुनि अथु सुत्य पनुन म्रत हो छि छारन ।।
तुलुन ताम तीर दिच्र तंम्य लंखिमनन तन ।
दोंपुन मार्‌यम छल्यम पापव निशि मन ।। २५ ।।
कडुनि लोंग ज़ोरु लायिनि तीर तस लव ।
वनन छी लंखिमनस वीरस ति क्याह गव ।।
सपुन्य कैंह मारु कैंह मा च्रूरि यैलि गय ।
च्रलिथ तस रामु च्रन्दुरस प्यठ परन प्यय ।।
स्यठाह यैलि मार्‌य तंम्य लशकर च्रलुनि लंज ।
तसुन्दी बीमु सुत्य मूर ज़न अलुनि लंज ।।
हंज़ीमत ख्यव सिपाहव गंयि अज़कार ।
वदन गंयि रामु अवतारस वंनिख ज़ार ।। २९ ।।

श्री रामस सुत्य जंग

यि बूज़िथ रामुजुव वुथि किन्य वंसिथ प्यव ।
वनुनि लोंग लंखिमनस वीरस ति क्याह गव ।।

ने जब उस (फ़ौज) को अपनी ही ओर आते देखा तो हँसते हुए भाई से कहा—ज़रा देखना तो ये कौन हैं। लगता है, कुश, कुछ और (मरने को) इधर लपक कर आ रहे हैं। चलो अच्छा हुआ कि हम यहीं पर उनको मिल गए। रे कुश ! अपने हाथों स्वयं अपनी मृत्यु ढूँढने के लिए ये बहुत सारे लोग दौड़ते हुए आ रहे हैं। तब उस (लव) ने तीर फेंका और लक्ष्मण ने (जानबूझ कर) यह सोचकर (उस तीर को) अपनी तन पर ले लिया कि यदि मुझे यह मारता है तो पापों से मेरा मन धुल जाएगा। २५ इस प्रकार लव ज़ोर-ज़ोर से उस पर तीर बरसाने लगा (और लक्ष्मण सब कुछ सहता रहा)। सभी कहने लगे कि लक्ष्मण जैसे वीर को यह क्या हो गया ! कुछ सैनिक मारे गये और कुछ चोरी छिपे भाग खड़े हुए तथा रामचन्द्रजी के पास पहुँच गये। (लगभग) सारा लशकर मारा गया तथा उन (लव-कुश) के भय से शेष बचे खुचे सिपाही टहनी की तरह थरथराने लगे। वे भागकर रामावतार के पास गए और उनसे फ़रियाद की। २९

श्रीराम के साथ जंग

यह सुनकर रामजी मुँह के वल गिर पड़े और कहने लगे कि (हाय!)

ति बोज़ुनु सुत्य क्रूदी सिरियि सॉंपुन ।
ज़लस मंज़ पवुनु सुतिन ह्योतुन कॉंपुन ॥
वदुनि लोंग लॅखिमनस वीरस यि क्याह गव ।
वॅसिथ आकाश मा दरथियि प्यठ प्यव ॥
वौदुनि वोंथ द्रायि तस सुत्य तिम पहलवान ।
अंगुद, सुगरीव, ज़ोमूवन हनूमान ॥
परुनि लोंग त्राहि त्राहे ओश हरन द्राव ।
पकन लशकर सुती दॅरियाव दॅरियाव ॥ ५ ॥

तॅलिकि खोतन सि चन्दां फ़ोज ह्यथ आस ।
कौरुन ना यॅलि गॅछ़िथ लंकायि तॅम्य डास ॥
वुछिव दयि गत यि मॅंज़िल ज़्यूठ क्याह आस ।
कुलाह डीशिथ वॅसिथ प्यव कोहि कैलास ॥
अंगुद वोंथ क्याह वनन यिम लुख फ़सानह ।
कडख वुन्य यिम ज़ु वालक तानु तानह ॥
जहल ओंनुनस स्यठाह लारन योंदस आव ।
कौशन द्युत तीर तस लटि किन्य फॅटिथ द्राव ॥

लक्ष्मण जैसे वीर को यह क्या हो गया ! उनके इस कथन से जैसे सूर्य भी क्रुद्ध (आर्द्र) हो उठा तथा जल में पवन के कारण काँपने (हिलने) लगा। (अभिप्राय यह है कि सूर्य भी लव-कुश के विरुद्ध हो गया तथा श्रीरामचन्द्रजी के प्रति सहानुभूति दिखाने लगा)। वह भी रोता हुए कहने लगा कि लक्ष्मण जैसे वीर को यह क्या हो गया ! अब कहीं यह आकाश पृथ्वी पर तो नहीं जा गिरेगा। तभी (श्रीरामचन्द्रजी) उठ खड़े हुए और उनके संग जाने कितने पहलवान (योद्धा) चल दिए—अंगद, सुग्रीव, जाम्ववान्, हनुमान आदि उनमें प्रमुख थे। वे (श्रीराम) आँसू वहाते हुए त्राहि-त्राहि कहने लगे और उनके साथ दरिया की तरह लशकर (वहने) चलने लगा। ५ लंका को जब उन्होंने नष्टकर डाला था, उस समय से भी वहुत ज़्यादा फ़ौज साथ लेकर वे चल दिए। देखिए, उनकी मंज़िल में कैसा विघ्न आन पड़ा। उन्होंने एक वृक्ष को देखा जो कैलास कोह की तरह उनके बीच में (वाधास्वरूप) गिर पड़ा। तव अंगद (जोश में आकर) उठा और कहने लगा कि भला लोग क्या समझेंगे ! मैं अभी इन दो वालकों की बोटी-बोटी उखाड़कर रख देता हूँ। अतीव आक्रोश के साथ वह युद्ध करने को लपका। तभी कुश ने उस पर ऐसा तीर मारा जो उस (अंगद) की पूँछ की तरफ से जा निकला। जब

वुछिनि सुगरीव लोंग ड्यूठुन अंगुद मूद ।
कुलाह् अख ज़्रूरि ह्यथ ज़ागुनि तस रूद ।। १० ।।

लवन दोंप कुस सना वान्दुर छु ज़ागन ।
ग्युतुस तंम्य तीर सुवुनस तथ सुतिन तन ।।
यि वुछ ज़ोमूवनन आकाश्य दिज्ञ छाल ।
कंरिख तल दोंनुवय वुछतव तिहुंद हाल ।।
गंयस लारन तिमव तंल्य किन्य ग्युतुस तीर ।
तिमन प्यठ प्यनु कनि ह्योर कुन गंयस ज़ीर ।।
तुलुख तीरव सुतिन आकाश्य यंज्ञकाल ।
पथर प्यव तेंलि बदन येंलि गोस गिरबाल ।।
तोंतुय ताम वोत हलुमुत रंग ड्यूठुन ।
ति डीशिथ त्राम ओंसिथ संग सांपुन ।। १५ ।।

कोंरुन तदबीर यथ क्याह् वोंन्य छु चारह् ।
दोंयव रेंश्य बालुकव अंस्य कंर्य अवारह् ।।
सलाह् कोंर तंम्य दिमख परबुत बं दारिथ ।
छुनख तथ परबतस तल यिम ज़ु मारिथ ।।

सुग्रीव ने देखा कि अंगद मर गया तो (हाथों में) एक वृक्ष लेकर (उन बालकों) पर वार करने की ताक में रहा । १० जब लव को ज्ञात हुआ कि कोई वानर उसपर वार करने की ताक में बैठा हुआ है तो उसने एक ऐसा तीर चलाया जिससे उस (सुग्रीव) का तन उसी (तीर) के साथ उलझ गया । जब जाम्बवान् ने यह सब देखा तो उसने आकाश में छलाँग मारी । उसका हाल देखिए, उसने दोनों को लपेटकर दबाने की कोशिश की । इधर, वे दोनों (फ़ुर्ती से) भागकर निकल गये और नीचे से ही एक तीर उन्होंने उस पर दे मारा जिससे वह उनपर गिरने के बजाय ऊपर ही उड़ता गया । तब तीरों से उन्होंने आकाश में काफ़ी देर तक धूम मचा दी और वह (जाम्बवान्) गिर पड़ा, क्योंकि उसका बदन बुरी तरह छलनी हो गया था । तभी हनुमान भी (घटनास्थल पर) पहुँच गया और उसने रंग (स्थिति) को देख लिया । उसका ताम्बे की तरह चमचमाता चेहरा संग (पत्थर) का हो गया (हत्प्रभ हो गया) । १५ वह तदबीर (विचार) करने लगा कि अब कोई चारा (उपाय) नहीं रहा । इन दो ऋषि-बालकों ने तो हमें ख़ूब परेशान कर डाला । तब उसने यह सलाह की कि इनपर अब मैं एक परबत ही गिरा दूँ, ताकि

त्युथुय पथ फ्यूर तुल तंम्य सख़्त वालाह् ।
करोरु बंद्य खार ज़न अख मोयि वालाह् ।।
दपान ब्रोंठुय तिमव ज़ोनुख सु कोत गव ।
तोंतुय लोंत लोंत पतय ओसुस गोमुत लव ।।
तुलुन तंम्य वाल थोंद दोंनुवय करख तल ।
वुछिव तंम्य मासूमन ताम क्याह् कोरुस छ्ल ।। २० ।।

जहलु सूत्य तीर लोयुन तस गुल्यन दोंन ।
संमीरस तल दपान त्रामस सपुन सोंन ।।
ति हसरथ रामुचंन्दुरन ड्यूठ पानुह् ।
सपुन क्रूदी होंरुन ओंश दानु दानुह् ।।
कमान तुज तंम्य दोंपुन वोंन्य कोंश वं मारन ।
असुनि लोंग क्याह् सना यथ ओस कारन ।।
वदुनि लोंग दादि सूत्य तंम्य च्रोंट पनुन पान ।
अमा दादिस दवा छ्रांडुन नु आसान ।।
वुछिन बालक पनुन्य आवारुह् डीठिन ।
अंछिन मंज़ मनि फंल्य ज़न वारुह् डीठिन ।। २५ ।।

ये दोनों इस परवत के नीचे (दबकर) मर जाएँ। तभी वह पीछे मुड़ा और उसने करोड़ों खरवार[1] वाले (वज़नी) एक सख़्त व विशाल परवत को (सिर के) एक बाल की तरह ऊपर उठाया। कहते हैं, उन दोनों (लव-कुश) ने यह पहले ही जान लिया था कि वह (हनुमान) कहाँ गया है। क्योंकि लव चुपके-चुपके उसके पीछे चला गया था। देखिए, जैसे ही उसने दोनों को कुचलने के लिए परवत को ऊपर उठाया वैसे ही उस मासूम (कुश) ने किस छल (चाल) से काम लिया! २० कुपित होकर उसने उस (हनुमान) के दोनों हाथों पर तीर चलाया जिससे, कहते हैं, वह सुमेरु के तले दबकर ताँबे से सोने की तरह चमकने लगा। यह आश्चर्य जब रामचन्द्रजी ने स्वयं देखा तो वे क्रुद्ध होगये तथा अश्रु के दाने बहाने लगे। तब उन्होंने कमान उठाई और कहा कि अब मैं इस कुश को मार ही डालूँगा। पर तभी वे हँसने लगे—जाने इस सबके पीछे कौन-सा कारण है। मारे पुत्र (-पीड़ा) के वे शरीर धुनने लगे। (वास्तव में) इस रोग (पीड़ा) की दवा ढूँढना आसान नहीं। उन्होंने देखा (पाया) कि यों दर-दर भटकने वाले वे (बालक) उनके ही दो पुत्र

१ एक खरवार में लगभग ४० सेर होते हैं।

पनुन्य डीठिन गंमुत्य तति शांत सारी ।
कंड्यव पैठ्य आस्य फेरान ननुवारी ।।
मंरिथ गोमुत तंमिस सोरुय कंबीलह ।
दयस रोस्तुय तिमन मा कांह वंसीलह ।।
गंमुत्य तिम मांल्यसुंज़ि शफ़क़ंत्र निशुह दूर ।
करान छ्यपु छ्यप वनस मंज़बाग ज़न चूर ।।
वनस मंज़बाग मादरज़ाद फेरन ।
ति डीशिथ तस बबस ज़न प्रान नेरन ।।
गछ्न कूदी योंदुचि रज़ुह आस्य वाटन ।
प्रेयमस कुन वुछन वांलिजि प्राटन ।। ३० ।।
द्युतुन तंम्य ज़रुब लोलुक पान्य पानस ।
कोंरुन पानय तु प्यतुरुन प्योस पानस ।।
दोंपुन सन्तान छिम पादन दिमख स्यूठ ।
ति मा ज़ोनुन पनुन मंज़िल मे छुम कूठ ।।
वनुनि लोंग यिम मे वोंन्य सन्तान पालन ।
ति मा ज़ोनुन मे मा दसतार वालन ।।

हैं। उन्हें वे अपनी आँखों की पुतलियों की तरह लगे। २५ इधर, उन्होंने देखा कि उनके (अपने भाई आदि) सारे शांत हो चुके हैं और उधर वे (दो बालक) काँटों पर नंगे पैर डोल रहे हैं। उधर उनका सारा कबीला मर चुका था और भगवान को छोड़ अब कोई वसीला (उपाय) उनके लिए शेष न रह गया था; और उधर वे पितृ-प्रेम से अनभिज्ञ चोरों की तरह वन में छिपे-छिपे (निःसहाय) फिर रहे थे। वन में डोलने वाले उन मादर-ज़ादों (मात्र माँ पर आश्रित रहने वाले उन बालकों) को देख उस पिता (रामचन्द्रजी) के मानो प्राण निकलने लगे। एक ओर तो वे युद्ध के लिए सामान तैयार करने लगे और दूसरी ओर संतान-प्रेम के वशीभूत होकर उनका हृदय जैसे छलनी हो रहा था। ३० दरअसल, उनको वात्सल्य के प्रहार से आहत होना पड़ रहा था, जिसके लिए वे स्वयं उत्तरदायी थे और अब उसका फल भुगत रहे थे। वे कहने (सोचने) लगे कि ये मेरी ही संतान तो हैं, इनके पादों को चूम लूँ। परन्तु उन्होंने यह नहीं जाना कि उनकी स्वयं की मंज़िल कठिन है। वे कहने (सोचने) लगे कि अब मैं अपनी इस संतान को (अच्छी तरह) पालूँगा। परन्तु उन्होंने यह नहीं जाना कि यही (उनकी संतान ही) उनकी पगड़ी (दस्तार) उतारेगी। पुत्र के पैर में यदि कभी काँटा

गबूरस कोंड योंद खोरस अच्रन छुय ।
अंछिव सूत्य बब तंमिस सुय कोंड़ कड़न छुय ॥
गोंबुर योंदवय वदन अंश्य कतरह त्रावन ।
तसुन्द बब छुय कलस अदु कनि छावन ॥ ३५ ॥

दप्योनख तोंह्य मु पंक्यतव ननुवारी ।
ति मा ज़ोनुन यिमय मारन में सारी ॥
पज़िनु प्यादन सवारन सूत्य खेलुन ।
यि गव बुतराच्र प्यठ आकाश मेलुन ॥
पंथुरि प्यठ ननुवारी पंद्य मु थंवितव ।
योंदुक सामानुह छुवु यियितव तु नियितव ॥
रथस म्यानिस खंसिथ लंड़ितव में सूतिन ।
हेछुवुह क्याह दुशमनुत कंर्यतव में सूतिन ॥
लवन दोंपनस च्रु छुख यिमु बाज़ि हावन ।
च्रे ज़ानिथ शुर्य तवय छुख तंबुलावन ॥ ४० ॥

शेंतुरु सुंज़ि नंदियि निशि कर त्रेश गछि चेन्य ।
पज़्या शेंतरस ति लादन शेंतुरु सुंज़ हेन्य ॥
शेंतुर नय छुख च्रे सूत्य क्याह ओस ह्योंन द्युन ।
गोंछा युथ फ़ोज ह्यथ मारुनि असि युन ॥

चुभता है तो पिता उस काँटे को आँखों (की पलकों) से निकाल लेता है। पुत्र यदि कभी रोकर आँसू के क़तरे बहाता है तो उसका पिता (मारे दुःख के) अपने सिर को पत्थरों से धुनता है। ३५ तब उन्होंने (रामचन्द्रजी ने) उन (बालकों) से कहा—तुम दोनों यों नंगे पैर न चलो। किन्तु उन्होंने यह नहीं जाना कि यही उनको मार डालेंगे। (रामचन्द्र जी ने उन्हें समझाया—) तुम्हारा प्यादों व सवारों से खेलना उचित नहीं है (तुम अभी बालक हो और बिना अस्त्र-शस्त्र के लड़ना तुम्हारे लिए वैसे ही असम्भव है) जैसे पृथ्वी से आकाश का मिलना। मेरे पास युद्ध का सामान रखा है, आकर इसे ले जाओ और फिर मेरे रथ पर चढ़कर मेरे साथ लड़ाई करो। तुम लोगों ने क्या सीखा है, ज़रा अपनी दुश्मनी तो दिखाओ। तब लव ने कहा—लगता है, तुम हमें चकमा देना चाहते हो तथा बालक समझकर हमें ललचाना चाहते हो। ४० शत्रु की नदिया से भला कब पानी पीना चाहिए तथा शत्रु को शत्रु का एहसान कब मानना चाहिए। तुम हमारे शत्रु नहीं तो तुम्हारा हमसे क्या लेना-देना और

च्रे क्याह् असि सुत्य ओसुय बांगुरावुन ।
कमन गोंछ राज़ु आयोंद थ्यकुनावुन ॥
में द्रुय तसुंज़ुय छि यस मांलिस निशन ज़ास ।
करय लशकरि तु शहरस सारिसुय डास ॥
में द्रुय तसुंज़ुय छि यस तनि बुरज़ु छुम नाल्य ।
करथ वुन्य शांत येत्य योंछमय पनुन्य मांल्य ॥ ४५ ॥

च्रे निशि यिमु योंत बं दिमु येमि टेंगु तलु लाफ ।
छुनय कोंरमुत में तमि मातायि केंह पाफ ॥
बु छुस प्योमुत च्रु कर इसतादुह थावथ ।
में चानी द्रुय छें कर वोंन्य ज़िन्दु त्रावथ ॥
वनन छुस लाफ दिथ दीवी में छम मोज ।
अकी रेंहि अंगनु सुत्य सोरुय दज़ी फ़ोज ॥
वनय वोंन्य लाफ दिथ योंछमय पनुन्य मांल्य ।
सरफ माज़स अन्दर वोंन्य येरुनय आंल्य ॥
सों पोतरन सुत्य हो राज़ो गंयी कांम ।
पयिनु आंमुत्र छ्यो किनु कोन्दु छय आंम ॥ ५० ॥

फिर हमें मारने के लिए इतनी सारी फ़ौज लेकर आने का क्या मतलब ? हमारे साथ तुम्हें क्या लेना-बाँटना था जो ये राजसी आयुध (अस्त्र-शस्त्र) हमें दिखाने आए । मुझे उस पिता की क़सम है जिसने मुझे पैदा किया कि तेरे इस सारे लशकर व शहर का नाश करके ही रहूँगा । मुझे उसकी कसम है जिसने तन पर भोजपत्र के वस्त्र धारण किए हैं (सीता की ओर संकेत है) कि यदि पिता (भगवान्) ने चाहा तो तुझे अभी यहीं पर शांत किये देता हूँ । ४५ इस पहाड़ी को एक ही छलाँग में पारकर अभी तेरे पास आता हूँ क्योंकि मेरी माता ने कोई पाप नहीं किया है । मैं गिर पड़ा हूँ, भला तुझे कैसे खड़ा रहने दूँ ! (मैं अनाथ हूँ, तुझे भी अनाथ बनाऊँगा ।) मुझे तेरी क़सम है कि अब तुझे ज़िन्दा कभी न छोड़ूँगा । मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि मेरी माता देवी-सदृश है तथा (उसके तेज की) एक लपट से तेरी सारी फ़ौज जल जाएगी । मैं यह भी विश्वास के साथ कहे देता हूँ कि यदि मेरे पिता (भगवान्) ने चाहा तो तुम्हारे इस (शरीर के) मांस में सर्प के बिल बनाऊँगा । हे राजा ! (शायद तुम नहीं जानते) तुम्हारा काम सपूतों से पड़ा है । अब तुम ही बताओ कि तुम्हारी शरीर-रूपी भट्ठी में कितना दम है ? ५०

च्रे गंज़ुरिथ लांकि ह्‌ुंद्य राख्यस छि मारुन्य ।
च्रे मारुनि आयि ज़नमस आस्य ज़ु बारुन्य ।।
वोंनुथ वोंन्य रथु रथु अनुनुच श्रदा छम ।
बं सिरियस मंगु वुन्य योंत वातनाव्यम ।।
लद्यम नय सिरिथि तीरव सुत्य ज़ालन ।
अंनिथ च्रेय निशि वुन्य आकाशि वालन ।।
दोंपुन सिरियस योंदुक सामानु सोज़ुम ।
में छुम येंति योंद करुन च्रु मु दूरि रोज़ुम ।।
योंदुक सामानु सिरियन लोंदसु सोरुय ।
यि अनिगोंट गव तु गोंबरव मोल मोरुय ।। ५५ ।।

प्रज़लुनि लोंग तु तिम बारुन्य असन आस्य ।
कलस प्यठ कनि थंविथ होंल ज़न खसन आस्य ।।
खंच्रुस च्रख जहलु सुतिन लोयिनख कान ।
तिमन कुनि आव नु ज़ख़मी गोस पनु न पान ।।
सिलाह सारी तिमन प्यठ सोरुनाविन ।
सपुन कमज़ोर सारी ज़ोर हांविन ।।
दपान येंलि फल फंलिस निशि ह्योंल न्यबर द्राव ।
सपुन खाली सु फल तथ ब्योल लोंग नाव ।।

तुमने सोचा होगा कि लंका के राक्षसों को मारना है, मगर (तुम नहीं जानते) तुम्हें मारने के लिए हम दो भाइयों ने जन्म लिया है । तुमने जो रथ (व अस्त्र-शस्त्र) देने का प्रस्ताव रखा है उसके लिए (निवेदन है कि) मैं सूर्य से सब माँग लूँगा । यदि वह भेजता नहीं है तो तीरों से उसको जला डालूंगा और आकाश से उतारकर उसे तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर दूंगा । तब उसने सूर्य से कहा—मेरे लिए युद्ध का सामान भेज क्योंकि मुझे यहाँ युद्ध करना है । इसपर सूर्य ने युद्ध का सारा सामान भेजा और पिता व पुत्रों में (घोर) यूद्ध ठन गया जिससे चारों और अन्धेरा छा गया । ५५ उधर, वे (रामचन्द्रजी मारे क्रोध के) प्रज्वलित होने लगे और इधर ये दोनों भाई मुस्कराने लगे । क्रुद्ध होकर रामचन्द्रजी ने उनपर तीर चलाया जो उन्हें न लगा अपितु वे (रामचन्द्रजी) ही स्वयं ज़ख्मी हो गये । उन्होंने सभी अस्त्र-शस्त्रों को उन (लव-कुश) पर समाप्त किया तथा ज़ोर दिखाते-दिखाते कमज़ोर पड़ गये । कहते हैं, जिस प्रकार दाने से बाली बनती है और फिर बाली का ही (सूखकर) समयांतर से नाम बीज पड़ता है, ठीक उसी प्रकार पुत्र पिता से जन्म

छुना बब गोंबरु सुन्दि पुछ्य पान गालन ।
गोंबुर नेरन बबस दसतार वालन ॥ ६० ॥

वुछुख येंलि शीन ह्युव गोमुत वोंजुल गुल ।
सबुज़ फोजा तिमन सुत्य ओस पथ च्रोल ॥
संमिथ आयस तु द्युतहस ज़ोरु त्युथ कान ।
वंसिथ प्यव बर ज़ंमीन नारान नारान ॥
सपुन्य खोंशदिल वंछुक आकाशि वांनी ।
तंमिस सुतायि च्रंज वोंन्दु निशि गरांनी ॥
ति बूज़िथ खोंश स्यठाह सांपुन्य ज़ु बारुन्य ।
हेंतिख आंठन ज़न्यन हुंद्य ताज छारुन्य ॥
अंनिख सोंम्बरिथ तिमन सारिन्य कोंरुख बार ।
असान गंयि माजि निशि आंसुख गंमुत्र खार ॥ ६५ ॥

सुतायि हुंद्य व्यलाफ

वनुनि लंग्य माजि अंस्य हय नंव्य ज़ायी ।
अमा रुत जान चीज़ा ह्यथ च्रें आयी ॥
दोंपुख तमि माजि लंगिनवु रुमुरेंशुन आय ।
अंन्युव हांव्यूम क्याह छुवु छोंपु कंरिव माय ॥

लेता है और पिता पुत्र के लिए ख़ूब कठिनाई देखता है, मगर बदले में पुत्र अपने पिता की ही पगड़ी (दस्तार) उतार देता है ! ६० लाल-गुल (श्रीराम) को बर्फ़ की तरह सफ़ेद हुआ देख उनके साथ आई सब्ज़ (हरे रंग की वर्दी पहने) फ़ौज पीछे हट गई । तब वे दोनों इकट्ठे आए और उनपर ज़ोर से तीर चलाया जिससे वे नारायण-नारायण कहते ज़मीन पर गिर गए । वे (बालक) ख़ुश हो गए और उन्होंने आकाशवाणी सुनी कि अब सीता के दिल का मलाल दूर हो गया । यह सुनकर वे दोनों भाई बहुत ख़ुश हो गए और आठों जनों के ताज ढूँढने लग गए । उन्हें ढूँढकर उनका गट्ठर बनाया और हँसते-गाते व थके-माँदे माता के पास गए । ६५

सीता का विलाप

वे माता से कहने लगे—आज हम नये जन्मे हैं (बाल-बाल बचे हैं) और तुम्हारे लिए एक बहुत ही अच्छी चीज़ लाए हैं । माँ ने उनसे कहा—(तुम चिरजीवी बनो) लोमस ऋषि की आयु तुम्हें लगे । हाँ, ज़रा वह चीज़ तो दिखाना जो तुम (मेरे लिए) लाए हो । तब वे उस

अंनिख तिम बोंखचि तस निशि मुच्रांविख ।
तुलिख तिम ताज ब्योंन ब्योंन माजि हांविख ।।
वुछिथ सुताथि येंलि तिम प्रज़ुनांविन ।
सपुन्य देवानु सत सामानु व्रांविन ।।
तुलिथ ब्योंन लंजिख हावुनि गोंबूरन ।
लंजिख तिम सीर तेंलि बावुनि गोंवूरन ।। ५ ।।

यि मोरुवु सुय बं येंम्य मारुस गुनुस्य ज़न ।
बुछिस येंम्य बालु पानय कालु सरफन ।।
यि मोरुवु सुय में सुत्य युस ओस आमुत ।
यि मोरुवु सुय तंमिस सुत्य युस छु ज़ामुत ।।
यि मोरुवु येंम्य लोंकुट कंरनस अवारह ।
यि मोरुवु येंम्य सं लंका ज़ांज नारह ।।
यि मोरुवु सुय दुबारह लांक येंम्य नांश ।
यि मोरुवु सुय पकन युस ओस आकांश्य ।।
यि मोरुवु येंम्य सु वांली मारुनोवुन ।
कोंरुवु क्याह कार ज़नमस कर गोंछ्वु युन ।। १० ।।

गट्ठर को माँ के सामने लाए और उसे खोलकर ताजों को अलग-अलग उठाकर माँ को दिखाने लगे। जब सीता ने उन्हें (ताजों को) उठाकर पहचाना तो दीवानी होकर सब-कुछ भूल गई। उन ताजों को अलग-अलग उठाकर वह पुत्रों से उनकी बातें व रहस्य बताने लगी—। ५ (अलग-अलग ताजों की ओर इंगित कर) यह तुमने उसी को मारा है जिसने गोनस की तरह मुझे डसा तथा मेरी जवानी को काले साँप की तरह काट लिया (श्रीराम)। यह तुमने उसको मारा है जो मेरे साथ यहाँ आया था (लक्ष्मणजी), यह तुमने उसको मारा है जो उसके साथ ही जन्मा था (शत्रुघ्न), यह तुमने उसको मारा है जिसने छोटी आयु में ही मुझे काँटों में ढकेल दिया था (भरत), यह तुमने उसको मारा है जिसने लंका को आग से जला दिया था (हनुमान), यह तुमने उसको मारा है जिसने दुबारा लंका को नष्ट कर डाला था (अंगद), यह तुमने उसको मारा है जो आकाश में चलता था (जाम्बवान्), यह तुमने उसको मारा है जिसने बाली को मरवाया था (सुग्रीव), (फिर, राम का मुकुट पहचानते ही सीता बोलीं—) यह तुमने क्या कर डाला? भला इसीलिए तुमने जन्म लिया था क्या? १० चलो, मुझे दिखाओ, कहाँ तुम लोगों

पंकिव ह्राव्यूम तोह्य कति क्याह् करुवुह् काम ।
बु ज़ालस पान तस सुतिन दंज़ुस आम ।।
तिथय वंथ्य यिथु यछस छी यार रावन ।
अज़ान्य अवलाद मालिस माजि मारन ।।
पकन गंय तिम ज़ु बारुन्य पान मारन ।
पतव लाकन अज़ानुय मन्दुछावन ।।
वुछुनि लग्य माजि कुन शरमंदुह् सांपुन्य ।
हंरिथ रथ औश स्यठाह् दरमांदुह् सांपुन्य ।।
सु गुर युस शीनु रंगु ड्यूटुथ नफस छुय ।
मं त्रावुस बर अंमिस मन दरक़फ़स छुय ।। १५ ।।
ग़नीमत ज़ान वुन्यक्यन ज़ान हो ज़ान ।
पगाह् आसख नु मालिस निशि पशेमान ।।
गछी खोश येलि वेशन खेलुनावी ।
बबस पनुनिस सुत्यन अदुह् मेलुनावी ।।
पतव लाकन अनी येलि ज़ान्य हुन्द जोश ।
व्यसर शीनस गछी रोज़ी नु कंह् होश ।।

ने यह कर्म किया है। मैं उन्हीं के साथ यह शरीर जिन्दा जला डालूँगी। तदुपरान्त वे (सभी) तुरन्त उठ खड़े हुए और वैसे ही विकल हुए जैसे यक्ष अपने यार से बिछुड़ने पर (विकल) होता है या अनजाने में औलाद अपने माता-पिता को मार देती है। वे दोनों भाई शरीर पीटते हुए चलते गए। दरअसल, अनजानेपन के कारण ही उनकी यह दुर्दशा हुई। वे (दोनों भाई) माँ की ओर देखकर शरमिन्दा हो गए तथा रक्त के अश्रु बहाकर पशोमान हो गए। (सीताजी अपने पुत्रों को आगे समझाने लगीं—)बर्फ़ के रंग का वह घोड़ा जिसे तुम देख रहे हो, नफ़्स (सांसारिक माया) के समान है। उसके ऊपर अपने मन को कदापि न लाना क्योंकि ऐसा करने से वह कफ़स (क़ैद) में फँस जाएगा। १५ इस घड़ी को ग़नीमत समझो क्योंकि कल अपने पिता से तुम (दोनों) पशेमान न रहोगे (आशय यह है कि दु:ख की यह घड़ी ज़रूर दूर हो जाएगी और लव-कुश अपने पिता से मिलेंगे)। यदि विष्णु ख़ुश हुए (यदि भगवान् की कृपा हुई) तो वे तुम्हारा मनोरंजन अवश्य करेंगे तथा अपने पिता से तुम्हें ज़रूर मिला देंगे। आख़िरकार, पुरानी जान-पहचान(वात्सल्य की भावना)बर्फ़ के समान पिघलकर जोश मारेगी और तुम सबको कुछ भी होश न रहेगा। इस प्रकार, कहते हैं, ऐसा कहकर वह सीता बेहोश हो गई और उसकी आँखों से

दपन सुतायि यॆलि वुछिनय यि हसरत ।
सपुन्य बेहोश अंछव ह्योंतनस पकुन रथ ।।
तिमव यॆलि वुछ तुलुख यॆंच नालु फ़र्‌ययाद ।
दपन वुछतव पतव अंस्य ना खलफ़ ज़ाद ।। २० ।।

पकन गंयि तिम ज़ु बारुन्य माजि सुत्य द्राय ।
वनुनि लंग्य ईशरस कुन वॊन्य च़ु कर पाय ।।
नियख तोंत मांज तमि यॆलि वुछ सु हसरथ ।
वुछिथ सुतायि नॆतरव किन्य हॊरुन रथ ।।
करुन लीला शरन सांपुन्य दयस कुन ।
नरायनु वातुनाव असि वॊन्य पयस कुन ।।
नरायनु बे ख़बर छी अंस्य वनान ज़ार ।
नरायनु हाव दरशुन कास अन्दुकार ।।
करुनि लंग्य नालुमंत्य तस लंग्य वनुनि ज़ार ।
मॆ क्याह् कॊरमय च़ॆ करथस वॊन्य स्यठाह् ख़्वार ।। २५ ।।

सं सुता रामु चॆन्दुरस आंस छारन ।
अंछिव किन्य ओंश दॆज़िथ रथ आंस हारन ।। २६ ।।

रक्त बहने लगा । उन दो (बालकों) ने जब यह देखा तो वे भी ज़ोर-ज़ोर से विलाप व फ़रियाद करने लगे । कहते है, भला वे ऐसा क्यों न करते । आख़िर, कुलीन वंश की संतान जो ठहरी । २० वे दोनों भाई माता के साथ चलते गए और ईश्वर से प्रार्थना करने लगे—अब आप कोई उपाय निकालें । जब माता को वे उस स्थान पर ले गये तो वह स्तम्भित रह गई तथा उन सबको धराशायी देखकर नेत्रों से रक्त बहाने लगी । तब भगवान की शरण में जाकर स्तुति करने लगी कि हे नारायण ! हमें भी परमधाम तक पहुँचा दें । हे नारायण ! हम बेख़बर (मासूम) बिनती कर रहे हैं, हे नारायण ! हमें दर्शन दीजिए और अन्धकार मिटा दीजिए । वह (सीता) भगवान् को गले से लगाकर ख़ूब विलाप करने लगी—मैंने भला आपका क्या बिगाड़ा था जो मुझे असहाय कर डाला । २५ विकल होकर वह सीता रामचन्द्रजी को चारों ओर ढूँढने लगी । उसकी आँखों में आँसू सूख गए तथा रक्त बहने लगा । २६

लीला सुता जी छै व्यलाफ करान

अशि कनि जोयि जोयि रथ छस बु हारान ।
सुता रामुच्रन्दुरु प्रारान छय ।।
लशि नार गोंडथम प्यव अशि बारान ।
पशि कोनु हन हन नार नार गय ।।
चारु कर तारु तरि च्रन्दुरन तु तारन ।
सुता रामुच्रन्दुरु प्रारान छय ।। १ ।।
च्रुय छुक आरु रोंस्त वालिजि सारान ।
च्रेय छय प्रान म्यान्य गालुनुच प्रय ।।
च्रुय ज़िन्दु करान च्रुय छुख मारान ।
सुता रामुच्रन्दुरु प्रारान छय ।। २ ।।
वतु चानि वुछान पतु पतु लारान ।
लसुनुक तु मरनुक त्राविथ बय ।।
दज़ुना लोलु नारु रज़ि पान खारान ।
सुता रामुच्रन्दुरु प्रारान छय ।। ३ ।।
तन नारु दज़ान मनु किन्य छि छ़ारान ।
वनु कस सनु गोम प्रुछ़ान चोन पय ।।

सीताजी विलाप करती हैं

अश्रु के स्थान पर मैं रक्त की धाराएँ बहा रही हूँ, हे रामचन्द्रजी ! यह सीता आपकी प्रतीक्षा कर रही है । तन मेरा जल रहा है और आँसुओं के जैसे झरने फूट रहे हैं । मैं भला उद्वेलित क्यों न होऊँ, मेरा अंग-अंग झुलस रहा है । अब आप ही कोई चारा कीजिए ताकि मैं इस भव-सागर को पार कर लूँ—हे रामचन्द्रजी ! यह सीता आपकी प्रतीक्षा कर रही है । १ आप निर्दय बनकर मेरे दिल को ठुकरा रहे हैं । मगर फिर भी मेरे प्राण आपके ही पीछे गलने को आतुर हैं । आपही ज़िन्दा करते हैं और आपही मारते भी हैं—हे रामचन्द्रजी ! यह सीता आपकी प्रतीक्षा कर रही है । २ जीवन और मरण का भय छोड़ आपकी राहें देखते-देखते मैं आपके पीछे-पीछे हो चली थी । (अब जबकि आप मुझे छोड़कर चले गये हैं) मैं भला आपके विछोह में क्यों न अपने आपको जला डालूँ और फंदे पर लटक जाऊँ—हे रामचन्द्रजी ! यह सीता आपकी प्रतीक्षा कर रही है । ३ तन को जलाकर मैं मन से आपको ढूंढ रही हूँ । अब भला किससे क्या कहूँ, आपका पता पूछते-पूछते तो मैं क्लांत

च़ुनि गंयम जिगरस वुनि छस बु थारान ।
सूता रामुच़न्दुरु प्रारान छय ॥ ४ ॥
प्रकाशु ननि श्राकि बुथ छस बु दारान ।
क्रूठ गछ़ि तुलुन बार म्यूठ आसि मय ॥
ज़्यूठ ज़ान समसार मनु सौंर नारान ।
सूता रामुच़न्दुरु प्रारान छय ॥ ५ ॥

लीला सूता जी हुंद वेयि विलाफ करुन

मारथस मदुनो वुनि छुय आदन ।
पादन वन्दुयो ज़ुव तय जान ॥
कन थाव मनु किन्य यिमन समवादन ।
बुलबुल तु बेयि गुल नालान छी ॥
यी येलि वखुन वोंनुमुत वोंसतादन ।
पादन वन्दुयो ज़ुव तय जान ॥ १ ॥
वोंथ प्रुछ़ पनुन्यन दोंन राजि ज़ादन ।
यिम द्रायि चानि खोंतु बंड्य पहलवान ॥
क्या सना वनन लूख यिमन अवलादन ।
पादन वन्दुयो ज़ुव तय जान ॥ २ ॥

हो गई । मेरा जिगर (जलकर) कोयला बन गया है और शरीर से (मृत्यु की) कँपीकँपी अभी भी छूट रही है—हे रामचन्द्रजी ! यह सीता आपकी प्रतीक्षा कर रही है । ४ 'प्रकाश' कहते हैं कि वह सीता नंगी तलवार के सामने अपना मुख किए हुए है (आत्म-हत्या करने को प्रस्तुत है) इस सबका जो भी कठोर परिणाम निकलेगा, उसके लिए आप उत्तरदायी होंगे । (कवि कहता है—) रे जीव ! संसार को विशाल (दुखों से परिपूर्ण) समझ । अतः (इससे पार होने का एक ही उपाय है कि) सब को नारायण का स्मरण करना चाहिए । हे रामचन्द्रजी ! यह सीता आपकी प्रतीक्षा कर रही है ।

सीता जी का और विलाप करना

रे मदन ! तूने मुझे मार डाला । मौक़ा अब भी (हाथ से) गया नहीं है (मुझे अपना बना ले) । तेरे पादों पर यह जी-जान निछावर कर दूं । मेरे इन संवादों (उद्‌गारों) पर मन से कान धरना । देख, ये गुलो-बुलबुल भी तेरे लिए मायूस हो रहे हैं । क्या तेरे उस्ताद (गुरू)

प्रुछोम सारिनुय स्यदन तु सादन ।
क्या सना ग्रल्यम ना वौंन्दुक अरमान ॥
कैंह ति नो चारु लगि लानिन्यन वादन ।
पादन वन्दुयो ज़ुव तय जान ॥ ३ ॥
यैम्बुर ज़ल वन्दुयो दौंन पोशि पादन ।
अथु रौंट करुम छुम स्यठाह अरमान ॥
कथुकर मदुनो वुनि छुय आदन ।
पादन वन्दुयो ज़ुव तय जान ॥ ४ ॥
सरवु कदु लगुयो शाख़ शमशादन ।
रौंपु तनि सनी मा थौंद तुल पाद ॥
वथुरय सबज़ी प्यठ नागु रादन ।
पादन वन्दुयो ज़ुव तय जान ॥ ५ ॥
कन थाव तनु मनु यिमन फ़र्‌ययादन ।
मनशि बावु प्रथ कांसि प्यठ छु गुज़रान ॥
ज़ालु वौल जानुवर समयि सयादन ।
पादन वन्दुयो ज़ुव तय जान ॥ ६ ॥

ने यही वचन तुझसे कहे थे ?—तेरे पादों पर यह जी-जान निछावर कर दूँ। १ उठ और इन अपने राजज़ादों (राजकुमारों) की सुध ले। ये तुझसे भी ज़्यादा पहलवान हैं। (तू न रहा तो) लोग तेरी औलाद को जाने क्या-क्या कहेंगे—तेरे पादों पर यह जी-जान निछावर कर दूँ। २ मैंने सारे सिद्धों व साधुओं से पूछा था कि, क्या मेरे दिल के अरमान निकल सकेंगे ? (सभी ने कहा—) भाग्य के लेख के सामने कोई उपाय (चारा) चल नहीं सकता—तेरे पादों पर यह जी-जान निछावर कर दूँ। ३ तेरे पाद-पुष्पों पर यह नरगिसी बदन निछावर कर दूँ। मेरा हाथ अब थाम ले। दिल में (अधूरे) अरमान बहुत हैं। रे मदन ! कुछ बोल तो, अभी भी मौक़ा (हाथ से) गया नहीं है—तेरे पादों पर यह जी-जान निछावर कर दूँ। ४ तेरी सरो-वृक्ष जैसी सुन्दर देह-मणि पर अपना यह शमशादी बदन निछावर कर दूँ। कहाँ तेरा यह रुपहला तन और कहाँ यह पथरीली ज़मीन। उठ, तुझपर झरने का सब्ज़:ज़ार वारूँ—तेरे पादों पर यह जी-जान निछावर कर दूँ। ५ तन-मन से मेरी इन फ़रियादों पर कान धरना। मनुष्य-भाव (मानवीय-दुर्बलताएँ) हरेक में रहती हैं। तभी जानवर को असमय ही सैयाद ने जाल में फाँस लिया है—तेरे पादों पर यह जी-जान निछावर कर दूँ। ६ 'प्रकाश' कहते हैं—

प्रकाशि चारु नो लानिन्यन फ़सादन ।
यॆम्य ज़ोल अगन्यान तॆम्य गोल पान ।।
कांह ति नो वॆनिथ हॆकि यिमन समवादन ।
पादन वन्दुयो ज़ुव तय जान ।। ७ ।।

वुछुन यॆलि रामुजुव दॊह सॊंपुनुस रात ।
सपुन्य यिछ तिछ मु आसिन ज़ाह मनुश ज़ात ।।
लॊबुन यॆलि दूरिरुक यॆच्र लोल तस ओस ।
दुयी त्राविथ छुनिन यकसान तॆलि गोस ।।
लॊबुन त्युथ युथ लबन छी रोवमुत दय ।
ज़ॆरुन अदु ज़िन्दगी रॊख़सत करन गय ।।
ति ज़ानन सुत्य वुछि क्याह छॊत वॊज़ुल न्यूल ।
सपुन्य यॆलि ज़ान पॊनिस पोन्य ज़न म्यूल ।।
नॆदियि सुत्य मीज यामत छ्यनु गमुत्र जॊय ।
ग्रज़ुनु निशि शांत सॊंपुन्य यॆलि रॆटुन खॊय ।। ५ ।।

यिवन तॊत लव तु कॊश दॊनवय दिवनबाख ।
रिवन वाराह तु सीनस सॊंपुनन चाख ।।

कर्म-लेख के विधान के सामने कोई (भी) चारा चल नहीं सकता। जिसने अज्ञान को जला डाला, उसने अपने आपको पहचान लिया। ये रहस्य के संवाद हैं, इन्हें कोई समझा नहीं सकता—तेरे पादों पर यह जी-जान निछावर कर दूँ। ७

जब उस (सीता) ने रामजी को (धराशायी) देखा तो उसका दिन रात में बदल गया और उसकी हालत ऐसी होगई कि मनुष्यजाति में किसी की भी न हो। जब उसने दूरके (बिछुड़े हुए) को पाया तो अन्तर का प्रेम (एक बारगी) उमड़ आया तथा मन से द्वैत-भाव को त्यागकर वह उनमें लीन (यकसाँ) हो गई। उसको वे ऐसे मिले जैसे भक्तों को खोया भगवान् मिल जाता है तथा उस (सीता) ने अब अपनी ज़िन्दगी को भी रुख़सत करना श्रेयस्कर समझा। एकीकृत (ब्रह्मबोध) हो जाने पर फिर श्वेत, लाल व नीले का भेद नहीं रह पाता और पूर्ण परिचय हो जाने पर जैसे पानी, पानी में मिल जाता है। वियुक्त हुई धारा नदी के साथ पुनः जुड़ गई और गर्जने के बाद आश्रय पाकर जैसे शांत होगई। ५ (घटनास्थल पर) पहुँचकर लव और कुश भी ज़ोर-

वनन वानी ती लोनख यि ववख ब्योल ।
खसन पिंगि पिंगु शालिस छुय खसन शोल ।।
नतय बोज़ख सु सोरुय ओस पानह् ।
थोंवुन येति पापियन क्युत यी निशानह् ।।
दिला कर होश वुछुन गछि दयि कारन ।
गोंबुर मालिस तु गोंबरस मोल मारन ।।
यछ़ख योंदवय गोंछुम आसुन मैं राहत ।
गोंबुर छुख गाल ज़ुव पनुनिस बबस पथ ।। १० ।।
करख युथ अज़ बबस पनुनिस सुतिन कार ।
सरख त्युथ पानु योंद आसख च़ु अवतार ।।
छुनन योंद अंछ वंटिथ अथु सरफु आल्यन ।
लबन तिम लाल यिम बब मोज पालन ।।
दिला वोंथ माजि मालिस प्यठ जिगर गाल ।
स्यदथ आसी सहा रोज़ी महाकाल ।।
च़ु योंदवय वारु छुख अलमास गरदन ।
बदर गाहे पिदर जारोब सांपन ।।

ज़ोर से रो दिए । वे चिल्लाए तथा उन्होंने अपने सीने चाक कर डाले । कहने वाले कह गए हैं (यह विज्ञ-वाणी है) कि जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे । बिनौले से बिनौला और शाली (धान) से शाली ही उपजता है । दरअसल, वे (भगवान्) स्वयं सब-कुछ करते-धरते हैं और पापियों के लिए कोई निशान (बहाना) छोड़ते हैं । दैव के कार्यों (विधान)—पुत्र पिता को मारे और पिता पुत्र को—होश (धैर्य) व सावधानी से समझने की आवश्यकता है । रे पुत्रो ! यदि तुम चाहते हो कि तुम्हें राहत मिले तो सच्चे अर्थों में पुत्र बनकर पिता के लिए अपने आपको जला डालो । १० अभी जैसा तुम अपने पिता के साथ व्यवहार करोगे, वैसा ही जब तुम अवतार (पिता) बनोगे—तुम्हारे साथ होगा । जो माता-पिता को पालते (उनका समुचित आदर-सत्कार करते) हैं, वे यदि आँख मीचकर साँप की बाँबी में भी हाथ डालें तो उन्हें वहाँ लाल (जवाहर) मिलेंगे । निर्भय होकर उठो और माँ बाप पर अपने जिगर को जलाओ । (भगवान् ने चाहा तो) सिद्धि तुम्हें अवश्य मिलेगी और महाकाल तुम्हारी सहायता करेंगे । तुम भले ही अपनी गर्दन को अलमास (मूल्यवान) समझो किन्तु पिता के अभिशाप से वह मार्जनी बन सकती है । (इसलिए अब भी मौक़ा है) रे पुत्रो ! तुम अपने माता-पिता को उचित सम्मान दो, तभी शिव और

च़ु योंदवय पांपियो वब मोज मानख ।
सदा शव बेंयि वोंमा अद् कर च़ु ज़ानख ।। १५ ।।

में वोंनमय खोंश गछ़ी युथ ब्योल त्युथ वव ।
पगाह् लोनख तम्युक फल युथ सपन लव ।।
सदाशव सुय दिवन युस ज़िन्दगांनी ।
वोंमा सोंय योंसु ख्यमा करि क्रूद चांनी ।।
बबन क्याह् कंर कंमी कोंरनख च़ु पांदा ।
च़े मा आंसुय पनुन्य कुनि केंह् वोंमेदा ।।
वोंमा सोंय येंमि च़े कंरनय दर शिकम जाय ।
च़ु वुछ वुनि पांपियो फीरुय नु केंह् माय ।।
गलत बूज़िथ ख़लफ़ ओसुख न्यवर द्राख ।
मोंठुय अद् ख्यन तु चन येंलि न्यथुनोंन ज़ाख ।। २० ।।

वोंमा यामत वुछिनि लंज्य चों अह्वाल ।
ख्यमा कंरनय दोंपुन लूकन यिछुम लाल ।।
तुलिथ थोंद कोंछि क्यथ येंलि ललुनोवुख ।
वुछन गछ़ खासि दोंद क्याह् दामु चोवुख ।।
अंछन हुन्द गाश ह्युव रोंछनख वुछिव माय ।
शिकुमु नीरिथ कंरुन वांलिजि मंज़ जाय ।।

उमा के महात्म्य (अनुग्रह) से परिचित हो जाओगे । १५ मैं (विश्वास के साथ) कहती हूँ कि वे ख़ुश अवश्य हो जायेंगें । अभी तुम जैसा बोओगे, कल को उसका फल अवश्य पाओगे । सदाशिव ज़िन्दगानी देने वाले हैं और उमा तुम्हारे क्रोध को क्षमा करने वाली है । यह क्या कम है कि तुम्हारे पिता ने तुमको पैदा किया अन्यथा संसार में (तुम्हारे) आने की कोई उम्मीद ही नहीं थी । तुम्हारी (माता) वही है जिसने अपने शिकम (पेट) में तुम्हें स्थान दिया । रे पापियो ! क्या अब भी तुम्हारे दिल में प्रेम नहीं उमड़ता ? तुमने यह ग़लत जान लिया कि तुम सपूत हो । जब नंगी देह लेकर तुमने जन्म लिया तो खाना-पीना तुम्हें भूल गया था । २० उमा (माता) ने तुम्हारा यह हाल देखा और लोगों से कहा कि ये मेरी ही आँखों के तारे हैं । गोद में उठाकर तुम्हें डुलाया गया और बड़े चाव से दूध के प्याले तुम्हें पिलाये गये । बड़े प्यार से आँखों की ज्योति की तरह तुम्हारी रक्षा की गई तथा पेट से निकलने के बाद तुम्हें दिल में सँजोकर रखा गया । क्या ख़बर उसे

ख़बर छा क्याह् तँमिस रूज़ुस च्रे निश आश ।
प्रेयम बौंरनय यौंहय छुम सिरियि प्रकाश ॥
दौंहन हुंज़ क्याह् छि कथ दौंयित्रुह च्रे छांविथ ।
यिवन छय वुनि निवन छय वुज़ुनांविथ ॥ २५ ॥

कसम छुम योंद स तौंलि छुनिही च्रे त्रांविथ ।
कसू अद् पांपियो ह्यकुहख च्रु बांविथ ॥
यिहय कथ सत तंमिस कर ओस मोलूम ।
दोंपुन सीवा कर्‌यम वुनि छुम यि मोसूम ॥
ख्यमा कंरनय च्रे मा तस कुन वुछुथ ज़ात ।
च्रे रातस दौंह दौंहस पथ रांवुरुथ राथ ॥
तिहुन्द सन्ता वुछिथ रूदुय नु कैंह होश ।
लौंगुख च्रुह दिनि अथन ज़रद्योख ज़न पोश ॥
वौंमा मातायि रौंछनख गुगु मन्ज़ाले ।
च्रे कौंरनय गूरुगूरह दूरु फले ॥ ३० ॥

ग़नीमत ज़ान च्रु वुन्यक्यन करतु रुत्यकार ।
वौंमादीवी तु शिवु जी छी ख़रीदार ॥

(तुम्हारी माँ को) तुम दोनों से क्या आशा थी जो सूर्य-प्रकाश समझकर तुम पर प्रेम बरसाती रही। दिनों की क्या बात है, पूरे बत्तीस बर्ष तुम दोनों ने बिताए और अब तक भी वह तुम्हें जगाती रही है (तुम भले ही बड़े होगए किन्तु अब भी माँ तुम्हारा ध्यान रखती है) २५ अगर वह तुम्हें तभी त्याग देती, तो रे पापियो! क़सम है तुम्हें (सत्य कहना) तुम अपना हाल भला तब किससे कहते फिरते? उसे (तुम्हारी माँ को) भला सत्य कहाँ मालूम था। वह तो यही कहती रही कि ये मासूम मेरी (आगे जाकर) सेवा करेंगे। उमा तुम्हें क्षमा करे, तुमने उस (माता) की ओर कभी नहीं देखा (उसके हित-अहित का विचार नहीं किया) तथा रात को दिन व दिन को रात समझते रहे (युवा-सुलभ चांचल्य के कारण मस्ती में डोलते रहे) उन (राम, भरत, लक्ष्मण आदि) के (कोमल) स्वभाव को देखकर भी तुम्हें होश न रहा और अब हाथ मलकर मुरझाए पुष्प की तरह पीले पड़ गए हो। उमा माता ने तुम्हें हिण्डोले में पाला था और कान की बाली की तरह हिला-डुलाकर तुम पर प्यार बरसाया था। ३० अब अवसर को ग़नीमत जानकर कोई गभेष्ट (अनुकूल) कार्य करो जिससे

पगाह् यॆलि तिम गछन नीरिथ ब आकाश ।
मॆ वोंनमय पतु रोज़ी नु मेलुनुच आश ॥
गछख संन्यास योंद देवानु लागख ।
बठ्यन बेरन गोंफन तल पानु ज़ागख ॥
नतय रावुन मॆरिथ लबुहन च्रु लंका ।
तसुन्द दरशुन वुछिथ रोज़ी च्रॆ शंका ॥
हतुलमकदूर अज़ योंद छुय च्रॆ ताक़त ।
करुख ख़िदमत ग़नीमत छय ग़नीमत ॥ ३५ ॥

दिला ख़ोंश रोज़ वुनिक्यन थदि तुल सोज़ ।
पनुन दम छुय पोंज़ुय वोंनमय पोंज़ुय बोज़ ॥
वुछुन वोंन्य त्रन योंगन हुन्द राजि कोंत गव ।
वदुनि लंग्य ज़ान्य बापथ कोंश तु बॆयि लव ॥
प्यवन बुथ्य किन्य वॆसिथ दोंनवय दिवन नाद ।
मशन अदु रामुजुव सुता प्यवन याद ॥
गरा फ़र्‌ययाद त्रावन नालु लायन ।
गरा तिम पान पनुनुय रज़ि खारन ॥
गरा दोंनुवय सॆमिथ जामन दिवन चाख ।
गरा डुलुगॆन्य दिवन रोयस लदन ख़ाक ॥ ४० ॥

लक्ष्मण आदि) कल तक आकाश-मार्ग की ओर निकल जाएँगे और फिर उनसे मिलने की कोई आशा न रहेगी। तुम संन्यासी बनकर पागल हो जाओगे (दर-दर की ठोकरें खानी पड़ेंगी तुम्हें) और नदी-किनारों, ग़ार-गुफाओं में मारे-मारे फिरते रहोगे। जिस वीर ने रावण को मारकार लंका का दर्शन सभी के लिए सुलभ कर दिया, ऐसे वीर (रामचन्द्रजी) को देखने की शंका (इच्छा) तुम्हारे मन में बनी रहेगी और कचोटती रहेगी। यदि तुममें ताक़त है तो साहस बटोरकर उनकी ख़िदमत करो और अवसर को ग़नीमत समझो, हाँ ग़नीमत। ३५ इस समय हिम्मत करके ख़ुश हो जाओ और उपाय निकालो। भगवान् तुम्हारे साथ हैं, यह सच है और इसे सच ही मानो। तीन युगों के राजा (श्रीराम) जाने कहाँ चले गए—यह जानकर कुश और लव रोने लग गए। दोनों मुँह के वल लुढ़क गए और ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे। उन्हें कभी रामचन्द्रजी की याद आती और कभी सीता की। कभी फ़रियाद करते और कभी ज़ोर से आवाज़ें देते, कभी रस्सी की तरह वल खाते और कभी दोनों मिलकर अपने जामों (वस्त्रों) को चाक कर डालते। कभी पृथ्वी पर

गरा त्रापान दन्दव सुत्य गुल्य दिवान नाद ।
दपान वुछितव पतव आस्य ना ख़लफ़ ज़ाद ।।
वोंदुख त्युथ युथ वदुनि लोंग पानु आकाश ।
सपुन्य तिथ्य यिथ्य दोनवय गंयि न्यर आश ।।
करन फ़र्ययाद दोनुवय लंग्य रिवाने ।
रेंशिस कुन लंग्य दोनुवय नालु दिवाने ।। ४३ ।।

अमर्यतु रूद

सु वालमीक र्योश गोमुत गरि ओस नीरिथ ।
दपन यंत्रकाल्य तमि दोहु वोत फीरिथ ।।
वुछुन तंम्य रथ पकन दंरियाव दंरियाव ।
वनुनि लोंग छा ख़बर कस क्याह् बंनिथ आव ।।
पकन तोंत वोत येंलि ड्यूठुन यि दयिकार ।
कंरुन आही बंलिन यिम सारी बेमार ।।
यिमन युथ म्यानि बद बखतियि सूतिन गव ।
वोंदुन वाराह् बनुनि लोंग ही सदाशिव ।।
संगुरु प्यठु शीन ज़न तंम्य पान गोलुन ।
कंरुन वुज़ुमलु अमर्यतु रूद वोलुन ।। ५ ।।

लोटकर मुँह पर ख़ाक मलते । ४० कभी दाँतों से अपने हाथों को काटते और चिल्लाते । दरअसल, वे (ख़लक़-ज़ात) सपूत थे. ना इसलिए वे इतना रोए कि स्वयं आकाश भी रो दिया और दोनों की स्थिति ऐसी हो गई जैसे घोर निराशा में खो गए । दोनों फरियाद करते-करते रोने लगे और ऋषि (वालमीकि) को आर्त्त स्वर में पुकारने लगे । ४३

अमृत-वर्षा

वालमीकि ऋषि घर से कहीं दूर निकल गए थे, पर कहते हैं कि उस दिन वे भी जल्दी लौटकर आ गए । उन्होंने जब देखा कि रक्त के दरिया वहे जा रहे हैं तो कहने लगे—क्या ख़बर किस पर क्या आन पड़ी है । जब वे वहाँ (घटनास्थल पर) पहुँचे तो दैव के कार्यों को देखकर (विस्मित हुए तथा) प्रार्थना करने लगे कि ये सभी बीमार ठीक हो जाएँ । इनकी यह दुदर्शा मेरे ही कारण हुई है । इस प्रकार 'हे सदाशिव, हे सदाशिव' कहते-कहते वे बहुत रोए । शैल-शिखरों की बर्फ़ की तरह उन्होंने अपने तन को गलाया और तभी बिजली कड़की और अमृत-वर्षा हुई । ५

तिथ्यन यूगीशौरन लगुना बु पारी ।
होरुन अमर्यथ तु तिम गंयि ज़िन्दु सारी ।।
दपन योदवय तते कांह मूदमुत प्रोन ।
सपुन सुति ज़िन्दु येलि तंम्य अमर्यथा चोन ।।
सपुन्य येलि ज़िन्दु तिम सारी दुबारह ।
तंमिस सुतायि मन गव संगि खारह ।।
गंछिथ तथ रेश्य सुन्दिस हुजिरस अन्दर व्राय ।
कोरुन बर बन्द वुछतव क्याह गंयस राय ।।
दोपुन योत ताम नु मेलन नब तु बुतराथ ।
पनुन बुथ रामुचन्दुरस हावुनह ज़ाथ ।। १० ।।
सं सुता येलि चलिथ गंयि नालु व्रावान ।
नियन रेश्य रामुचन्दुरस निशि जु सन्तान ।।
अथन दोन थफ करिथ येलि हाविनस तिम ।
चरुनन तल पथर अदु पाविनस तिम ।।
पद्यन लंग्य मीठ्य दिनि सारी तिमन दोन ।
खसूसन बरुथ बेयि लंखिमन शतुरगोन ।।
असान खेलान गिन्दान फिरुवुख मुनादी ।
नंगुर कुन गंयि तिमन दोन ह्यथ ब शादी ।।

ऐसे योगीश्वरों पर बलिहारी ! उस अमृतवर्षा से वे सारे ज़िन्दा हो गए । कहते हैं, पहले का मरा भी कोई यदि वहाँ पर उस समय था, वह भी उस अमृत को पीकर जिन्दा हो गया । जब वे सारे दुबारा ज़िन्दा हो गए तो उस सीता का मन संगे-खारा (विक्षुब्ध) हो गया । देखिए, उसे यह क्या सूझा ! वह भागकर ऋषि (वाल्मीकि) की कुटिया के अन्दर प्रविष्ट हुई और (भीतर से) दरवाज़े को बंद कर दिया । उसने कहा कि जब तक पृथ्वी और आकाश मिलते नहीं हैं तब तक रामचन्द्रजी को यह मुख न दिखाऊँगी । १० वह सीता जब (इस प्रकार) रोती हुई वहाँ से भाग खड़ी हुई तो ऋषि उन दो संतानों (लव-कुश) को रामचन्द्रजी के पास ले गए । उन (बालकों) को दो हाथ से थामे उन्हें (रामचन्द्रजी को) दिखाया और उनके चरणों के तले उनका शीर्ष नवाया । उन दो (बालकों) के तलवों को सभी उपस्थित जन चूमने लगे, (खुसूसन) खासकर भरत और लक्ष्मण व शत्रुघ्न । हँसते-खेलते व इठलाते हुए उन्होंने मुनादी करवाई और सभी नगर की ओर उन (दो) बालकों को लेकर प्रसन्नतापूर्वक चल दिए । जब वे उन बालकों

पोतुर बा पोतुर ह्यथ शहरस अन्दर गंय ।
वदुनि लोग राजु तस सुता च्यतस पेय ॥ १५ ॥

रेशिस लोग प्रछुनि वोनुनस हाल सोरुय ।
ख़बर छा तमि छुनुय मा पानु मोरुय ॥
रेशिस लोग प्रछुनि तस क्याह गोसु गव म्योन ।
करुम यी ओस करमुन कार कम्य ज़ोन ॥
पकान तस सुत्य गव व्यगल्योव ज़न कन्द ।
वुछुख सुतायि थोवमुत बर करिथ बन्द ॥
अन्दर सुता न्यबर कनि रामु अवतार ।
बरस प्यठ ब्यूठ वंनिनस वीलु तु ज़ार ॥ १९ ॥

सुतायि तु रामुजुवुन समवाद

दोपुस तम्य रामुचन्दुरन वोथ न्यबर नेर ।
दिलुक्य दोख वोन्य च़ली शहरस अन्दर फेर ॥
वदन सुतायि वोनुनस छुख च़ु अवतार ।
वुछन छुख ना जिगरस छुम ह्यवान नार ॥

(पुत्रों, भतीजों) को लेकर शहर के अन्दर गए तो राजा (श्रीराम) रोने लग गए, क्योंकि उन्हें सीता की याद आ गई। १५ ऋषि (वाल्मीकि) से पूछने पर उन्होंने सारा हाल कह सुनाया और यह भी कहा कि कहीं उसने अब तक अपने आपको मार न डाला हो। तब (रामचन्द्रजी ने) ऋषि से पुनः पूछा कि वह मुझसे किस बात पर रुष्ट हुई। शायद, यह सब मेरे कर्मलेख में बदा था। कर्मलेख की बातें किसने जानी हैं? तब वे (श्रीराम) उस (ऋषि) के साथ हो लिए और मिश्री की तरह विगलने लगे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि सीता ने भीतर से दरवाज़ा बंद कर रखा है। अन्दर सीता और बाहर रामावतार। दरवाज़े पर बैठ कर वे अपने दुखड़े कहने लगे और (सीता से) अनुनय-विनय करने लगे। १९

सीता और रामजी का संवाद

तब रामचन्द्रजी ने (सीता से) कहा—आ, बाहर निकल आ। तेरे दिल के सभी दुःख अब दूर हो गए, आ और शहर की ओर चल। तब रोते हुए सीता ने कहा—आप अवतार हैं, देखिए तो मेरा जिगर कैसे

समय ड्यूठुम स्यठाह वॊन्य सॊंपुनिस सीर ।
छु आखिर गरु गछुन नेरुन गछ्यम चीर ।।
बु नय नेरय चॆ क्याह अदुह म्योन छुय ग़म ।
गछी दॆरियावु मंजु अख पां फ्योराह कम ।।
गॊडन्य यी बनि नु यॊसु यिछ आसि ग़मखार ।
दॊयुम आसख नरायन पानु अवतार ।। ५ ।।

त्रॆयुम त्रनुवय बरादर छी बलावीर ।
ज़मीनस सुत्य सुवन आकाश अज़ तीर ।।
पोंज़य वोज़ख तसल्ली गोम अज़ जान ।
मुदा ओसुम चॆ वातुन्य यिम ज़ु सन्तान ।।
दया कर वॊथ चॆ क्याह छय माय म्यॊनी ।
च़ु गछ फीरिथ शुर्यन कर पार्य ज़ॊनी ।।
दॊनुवय लोलु नारु सुत्य दज़न आस्य ।
सॊरगु मंजु रासु मंडुल्य ज़न वज़न आस्य ।।
करुनि लॊग रामुजुव तस ज़ारु पारह ।
लॊगुस तिमु कथु वनुनि अदु वारु वारह ।। १० ।।

अग्निमय हो रहा है । मैंने बहुत समय देख लिया (बहुत जी ली) और अब तृप्त हो गई हूँ । आखिर सब को घर (परमधाम) जाना है, मुझे भी (वहाँ जाने के लिए) देर हो रही है । मैं (कुटिया से) बाहर नहीं निकलती तो आपको इसका ग़म क्यों हो ? (मेरे न निकलने से) जैसे आपके दरिया में एक बूंद ही तो कम हो जाएगी । अव्वल तो मैं आपसे इस तरह की ग़मख्वारी की अपेक्षा कर ही नहीं सकती हूं, दूसरा (क्योंकि) आप स्वयं नारायण के अवतार जो हैं । ५ तीसरा, आपके तीनों बिरादर (बड़े) बलवीर हैं जो ज़मीन के साथ आकाश को तीरों द्वारा सीकर रख देने की सामर्थ्य रखते हैं । सत्य तो यह है कि आज मुझे पूरी तरह से तसल्ली हो गई । मेरा मुद्दा तो बस इतना था कि ये दो संतान आप तक पहुँच जाती । (अब) दया करके यहाँ से जाइए, भला मुझसे कौन-सी प्रीति है आपको ? आप लौट जाएँ और पुत्रों से परिचय बढ़ाएँ । दोनों (राम-सीता भीतर ही भीतर) प्रेमाग्नि में झुलस रहे थे और जैसे स्वर्गिक संगीत की धाराओं में बहे जा रहे थे । रामजी उससे विनती करने लगे और बहुत-सारी बातें धीरे-धीरे समझाने लगे । १०

लीला रामुजुवन्य वीलुज़ारी

राम् च्रन्दुरन दोंप बर मुच्ररे ।
करि आनन्द पनुनि गरे ॥

कज़ुल्य गंयख अज़ुलु ओसुय ।
कष्ट तुलिथ ईशरन कोसुय ॥
व्याद वेंगुन वनि सोंन्दरे ।
करि आनन्द पनुनि गरे ॥ १ ॥

कंम्य कंरुख ताज़ु हीमाल हाये ।
पानु छारान छुय नाग्यराये ॥
छायि रूज़ुख कोताह ज़रे ।
करि आनन्द पनुनि गरे ॥ २ ॥

बोज़ वोंन्दुक वेंगुन च्रोंलुय ।
रोज़ प्रसन्द शेथुर गोंलुय ॥
नेर वुछ येंमि पजिरु च्ररे ।
करि आनन्द पनुनि गरे ॥ ३ ॥

बार तुलुन वार येंलि नु आवुय ।
गार रोंटथम तु तमना द्रावुय ॥

रामजी की अनुनय-विनय

रामचन्द्रजी (सीता से) कहने लगे—द्वार खोल री ! चल घर अपने आनन्द करने को । तू बहुत क्षीण हो गई है । भाग्य में (शायद) तेरे यही बदा था । अब ईश्वर ने तेरे सभी कष्टों को दूर कर दिया है । री सुन्दरी ! (तेरे मन में) यदि कुछ व्याधियाँ व विघ्न हैं तो उन्हें भी (आज) कह डाल—चल घर अपने आनन्द करने को । १ तुझ जैसी ताज़ी (सुन्दर) हीमाल[1] को यह किसने मुरझा दिया । तुझे तो स्वयं नागराज[2] ढूँढ रहे हैं । तू मुख न मोड़ । भला अब मैं यह सब कैसे सहन कर सकूँगा—चल घर अपने आनन्द करने को । २ सुन, तेरे दिल का विघ्न (दुःख) अब दूर हो गया है । तू प्रसन्न हो जा, तेरा शत्रु जल गया है । उठ और झरोखे की दरज से देख—चल घर अपने आनन्द करने को । ३ (गृहस्थी का) भार उठाना शायद तुझे भाया नहीं, तभी तो तूने ग़ार (संन्यास का मार्ग) पकड़ा और अपना अरमान निकाला ।

१-२ 'हीमाल-नागराज' एक कश्मीरी लोककथा के नायिका-नायक हैं ।

तार लगि बेंह च्रु मंज़िमि लरे।
करि आनन्द पनुनि गरे ॥ ४ ॥
हाव मोंख बाव क्याह छुय गोसह।
त्राव मलालु यिमु अंछ मे लोसह ॥
थाव च्ययतस दय क्याह करे।
करि आनन्द पनुनि गरे ॥ ५ ॥
रंछ करिथ अंछ मन्ज़बाग थावथ।
द्रुय हाविथ द्रुय हावुनावथ ॥
त्रुयि च्रालुन पज़ि तारु तरे।
करि आनन्द पनुनि गरे ॥ ६ ॥
चोन दूर्‌यर स्यठाह वौन्य बोज़।
गोल शेंथुर शेंमिथ खोंश रोज़ ॥
ओल आवारुह छुय लोल बरे।
करि आनन्द पनुनि गरे ॥ ७ ॥
वातिही कर च्रे सामानु त्रावुन।
सूद क्याह नेरि सु मूद रावुन ॥
होल क्याह मोल कंमिस नु मरे।
करि आनन्द पनुनि गरे ॥ ८ ॥

अब तू ऐसे ही बैठ, (भला क्या) इसी से तेरा निस्तार होगा?—चल घर अपने आनन्द करने को। ४ मुख से बोल कि तुझे किस बात का गिला है? मलाल को छोड़। देख, मेरी ये आँखें मुरझा गई हैं। यह याद रख कि दैव (भगवान्) ही सब-कुछ करने वाले हैं—चल घर अपने आनन्द करने को। ५ तुझे तावीज़ बनाकर आँखों में छिपाऊँगा। देवरों से मिलाकर क़समें दिलाऊँगा। त्रिया को तो हर तरह की कठिनाई झेलने के लिए तैयार रहना चाहिए—चल घर अपने आनन्द करने को। ६ तेरी दूरी बहुत सही मैंने। देख, हमारा शत्रु (शमित होकर) जल गया है। तू खुश हो जा। तेरा परिवार आवारा बन गया है, उस पर अब प्रेम बरसा—चल घर अपने आनन्द करने को। ७ तूने क्यों अलंकार-आभूषणों को त्याग दिया। यह भला तेरे लिए कहाँ उचित था! अब इस (रुखाई) से कोई सूद (फ़ायदा) नहीं, क्योंकि वह रावण तो मर चुका है। इसमें अब क्षोभ कैसा, हर किसी के बाप को तो (आगे-पीछे) मरना ही है[1]—चल घर अपने आनन्द करने को। ८ तूने

1 संकेत इस बात की ओर है कि रावण सीता का पिता था।

गार रंटुथ तंम्य सुंज़ि वेरे।
युस मंरिथ गव सु कति फेरे॥
गम ख्यवान छख रथ माज़ हरे।
करि आनन्द पनुनि गरे॥ ९॥

रामुचंन्द्रन यामत यि वोंनुनस।
पेयि वंसिथ जलाव गोंडुनस॥
लंज सं ज़ापुनि पनुनि नरे।
करि आनन्द पनुनि गरे॥ १०॥

शीनुमान्य ज़न मौज़ुनु आये।
तमि यि वोंनुनस पनुनि शाये॥
कंम्य चें वोंनुनय बुकुर्य दरे।
करि आनन्द पनुनि गरे॥ ११॥

पोशि कोंत छुमनु पोशन पाया।
तोशि कोंत कंह डीठुम नु माया॥
रोशि च्युतथम मख पोशि थरे।
करि आनन्द पनुनि गरे॥ १२॥

यी वोंन्दस गव तस हियि माले।
तमि खोंतन दूर्यर ज़ाले॥

उसी की तरह ग़ार को पकड़ लिया। अरी! जो मर गया वह भला कैसे लौटकर आएगा। यों ग़म खाते-खाते तेरा रक्त-मांस सूख जाएगा—चल घर अपने आनन्द करने को। ९ जब रामचन्द्र ने यह कहा तो वह सीता नीचे गिर पड़ी तथा उसके अन्तर से अग्नि की ज्वालाएँ उठीं। (असमंजस में पड़कर) वह अपनी बाहें काटने लगी (हाथ मलने लगी)—चल घर अपने आनन्द करने को। १० बर्फ़ के तूदे की तरह वह (सीता धीरे-धीरे) गलती गई और अपनी सामर्थ्यानुसार उसने (रामचन्द्रजी से) कहा—आपसे किसने कहा कि आप मेरी ग़रज़ करें—चल घर अपने आनन्द करने को। ११ मैं भला आपकी बराबरी कैसे कर सकती हूँ? मुझमें उतनी सामर्थ्य कहाँ? मैं ख़ुश भी कैसे हो जाऊँ? मैंने ख़ुशियाँ (माया) देखी ही कहाँ? आपने ही तो चुपके से फूलों की डाली जैसे मेरे बदन को (निर्दयतापूर्वक) काट डाला—चल घर अपने आनंद करने को। १२ उस चंपई बदन (सीता) के दिल पर विगत वर्षों में जो बीती. उसकी याद आते ही वह [illegible] हने को ही श्रेयस्कर [illegible]

रिन्दु रूज़िथ ज़िन्दय सों मरे।
करि आनन्द पनुनि गरे॥ १३॥

लोलु नारुन जलाव रोंटुन।
नीलुवठ मा पनुन च्रोटुन॥
यी वोंनुन वोंन्य में मारनम दरे।
करि आनन्द पनुनि गरे॥ १४॥

माजि दीवियि कुन गंयि शरन।
आंस रातस लीला करन॥
ज़ून ज़्रन आंस लंजमुत्र दरे।
करि आनन्द पनुनि गरे॥ १५॥

गाश यिथु ह्योंतनु प्रकाश ननुन।
लोलु अलमासु सुत्य वोंन्दु खनुन॥
पोंख्तु संपुन मन मोंख्तु हरे।
करि आनन्द पनुनि गरे॥ १६॥

लीला सुता छे पारवंती जी कुन लीला करान

मारु करनस अंम्य मारुमंती।
पारुवंती कर स्योन चारह॥

तथा प्रेममग्न होकर ज़िन्दा मरने को उचित मानने लगी—चल घर अपने आनंद करने को। १३ प्रेम की आग में वह झुलस उठी और अपने हृदय को झकझोरने लगी। वह कहने लगी कि अब मेरे न मरने का कोई उपाय शेष नहीं रहा—चल घर अपने आनंद करने को। १४ तब वह माता (पार्वती) की शरण में गई और रात भर आकाश में चन्द्रमा की तरह एकटक देख उसकी स्तुति करती रही—चल घर अपने आनन्द करने को। १५ जिस प्रकार प्रभात के आगमन पर प्रकाश फैलने लगता है, उसी प्रकार (सीता का) हृदय भी प्रेम-संसार में निमग्न होकर धीरे-धीरे आलोकित होने लगा। उसका मन (प्रेमाग्नि में तपकर) पुख्ता (कुन्दन) बन गया और आँखों से वह मुक्ताओं के समान आँसू बहाने लगी—चल घर अपने आनन्द करने को। १६

सीता द्वारा पार्वतीजी की स्तुति करना

इस निर्मोही (सितमगर) ने मुझे मार डाला, पार्वती जी! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। माँ के गर्भ से निकलते ही मैं (अभागिन)

माजि ज़ायस तु वरंज्र येलि हूरुम ।
ज्ञानि द्रायस तमना सूरिम ।।
लानि आयस अंमिस सुती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। १ ।।

ज़्यवुवुनुय फंर्‌य मे जोतुश तु पंडिथ ।
कौलि छुनुनावुहस कनि गंडिथ ।।
छम वुछिन्य हान यम गोम पंती ।
पारवंती कर म्योन चारह ।। २ ।।

कौलि छुनिनस बु येलि माजे ।
वति फोरुम ज़नख राजे ।।
नतु मारेनस कोनु तंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। ३ ।।

म्युल करिथ द्युत मे वेशामेतरन ।
कोनु छुम वोन्य करमु लोन प्यतुरन ।।
गाब सांपुन येमि हांबती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। ४ ।।

सुय युस सेन्दि अपोर तरे ।
युस द्यन बरि पनुने गरे ।।

दुर्भाग्य से जूझती रही। उच्चकुल में ब्याही गई किन्तु इस (राम) के भाग्य से मेरी सारी तमन्नाएँ सूखी (अधूरी) रह गई—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। १ जन्मते ही ज्योतिषियों व पंडितों ने मेरे विरुद्ध षड्‌यन्त्र रचा और पत्थर बाँधकर मुझे नदी में फेंकवा दिया गया। मुझे देखना भी अशुभ समझा गया। जाने (उस वक़्त) यम ने भी क्यों मेरा साथ नहीं दिया—पार्वती जी ! मेरा कोई उपाय (चारा) कीजिए। २ जब माता ने मुझे नदी में फेंका तो मार्ग में राजा जनक ने मेरा उद्धार किया। हाय ! उन्होंने मुझे मार ही क्यों न डाला तब—पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। ३ विश्वामित्र ने मेरा (इनसे) मेल करा दिया। अब जाने क्यों वे मेरे कर्मलेख के भागीदार नहीं बन रहे हैं। वे भी (सम्भवत:) मेरे (कर्मलेख की) भयानकता को देख कहीं ग़ायब हो गए हैं—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। ४ जो अपने घर में रहकर दिन बिताए (गृहस्थाश्रम का पालन कर अपने कर्त्तव्यों को निभाए) वह भवसागर के पार तर जाता

नतु म्यान्य पाठ्य युस मरि येती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ ५ ॥

वरदनव वेंशि बुरजु गोंडुम ।
कुठ खसुनु कनि कोह बाल छोंडुम ॥
वन गंयस कन गंयम रोती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ ६ ॥

लशि गंजिनम नारुनि छटह ।
पशि कोताह कंरनम गटह ॥
हशि कंरनस फोंख दिथ पंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ ७ ॥

होश डंलिम ड्यूठुम में वना ।
बोश ओसुम गोमुत हना ॥
ओंश ओसुम में सुत्य सुती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ ८ ॥

यावुनस आम में गोम त्राविथ ।
क्याह वंनिथ ह्यकुनाव मन्दुछाविथ ॥
रावुनस म्यान्य परि पाफ खंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ ९ ॥

है । अन्यथा, मेरी तरह उसे यहीं पर मर जाना पड़ता है—पार्वतीजी! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए । ५ शादी के जोड़े के बदले मैंने भोजपत्र के वने वस्त्र पहने । (पति के) शयन-कक्ष के बदले पहाड़ व पहाड़ियाँ देखनी पड़ीं । (आभूषणों को निकालकर) वन जाने पर मेरे यह कान के छिद्र वापस सिमट गए—पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए । ६ मेरे शरीर से जैसे आग की लपटें छूट रही हैं । अब मैं और कितना पश्चाताप करूँ । मेरा जीवन अन्धकारमय हो गया है । सास ने मेरे जीवन-दीप को फूँक मारकर बुझा दिया—पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए । ७ मैं अपने भाग्य पर खूब इतराती थी, किन्तु बन देखकर मेरे (सारे) होश उड़ गए । (जीवन-भर) आँसू मेरे साथ-साथ रहे—पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए । ८ मेरे यौवन को वे असमय कवलित कर गए । अब और क्या कहूँ । और कुछ कहने का मतलब होगा उनकी पोल खोलना । पापी रावण भी यहाँ से चला गया—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय)

तंम्य नियिनस तोंत तमि हालह ।
माजि पनुनि कंरनस हवालह ॥
क्या वंनिथ ह्यकु तस छम सं संती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ १० ॥

त्यूत वोंदुम संहलाब बन्योव ।
अंशि सुत्य सोर समसार वन्योव ॥
वोंन्य च्रु कति रोज़ख मैंच्रि दंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ ११ ॥

पोंज़ छु ती येंलि पांगाम बूज़ुन ।
अदुह हलुमुत लोंदुर सूज़ुन ॥
व्याद गंज्य दफ च्रंज्य साडुसंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ १२ ॥

पानु तोंत आव मोरुन सु रावुन ।
ओस लूकन द्यमाग़ हावुन ॥
गोसु क्याह आम त्राविथ मैं तंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ १३ ॥

अदुह नियिनस अज़ान माजे ।
वीलु वंन्य वंन्य तमि अशकु गाजे ॥

कीजिए। ९ मुझे वह (रावण) बेहाल करके वहाँ (लंका) में ले गया और मुझे मेरी माता के हवाले कर दिया। उससे भला मैं उस समय क्या कहती !—पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। १० मैं इतना रोयी कि सैलाब आया और आँसुओं में सारा संसार डूब गया। मुझे यह चिंता होने लगी कि मैं अपनी इस पार्थिव देह को अब कहाँ छिपाऊँ—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। ११ यह सत्य है कि पैग़ाम सुनकर उन्होंने हनुमान व रुद्र को भेजा। मेरी व्याधि दूर हो गई और साढ़े-साती (शनि की दशा) से मुक्त हो गई—पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। १२ वे स्वयं वहाँ आए और उस रावण को उन्होंने मार डाला, क्योंकि लोक को उन्हें अपना दिमाग़ (शौर्य) दिखाना था। इसके बाद बहाना बनाकर उन्होंने मुझे वहीं छोड़ दिया। पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए १३ तत्पश्चात् मुझे एक अजान माँ (वाल्मीकि) ने सम्भाला। मेरे दुखड़े सुन-सुनकर उसने ख़ूब

मशकु करिनम शुर्यन सुती।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ १४ ॥
शुर्यन सुत्य करिनम शुर्य बाशे।
ज़ाजिनस लाजिनस वालु वाशे ॥
दिवताह सुत्य गंयि आरुकंती।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ १५ ॥
ऑन्त ज़ोनुम नु यथ बवुसरस।
कीत ज़्रोलुम नु वोन्य क्याह करस ॥
हीत लोदनम ज़्रे पाफ खंती।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ १६ ॥
लंज्य वदुनि कूर कांसि मु ज़ेविन।
ज़ेवि येलि तेलि सु अलमास खेयिन ॥
कूर ज़ायस सूर गोम येती।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ १७ ॥
कोरि गछि आसुन्य डचकु स्यदथ।
नतु ज़्यथ गछि हेन्य तस पनुन्य वथ ॥
वोन्य बु छारथ पनुनि वती।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ १८ ॥

आँसू बहाए और अपने बच्चों की तरह मेरा लालन-पालन किया—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। १४ मेरे साथ वह (छिप-छिपकर) अपनी संतान-का-सा व्यवहार करने लगा जिसे देख मैं विभोर होकर विदग्ध होने लगी तथा देवता तक आर्त्त पुकार करने लगे (विह्वल होकर गदगद् हो गए)—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। १५ इस भवसागर का मुझे कोई अन्त नहीं दिखा। केतु (अपग्रह) का कुप्रभाव मेरे ऊपर से (अब तक) टला नहीं, अब क्या करूँ ? बहाने बना-बनाकर मेरे ऊपर पापों को लादा गया—पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए—१६ (तब वह सीता) खूब रोने लगी और कहने लगी कि काश ! किसी के पुत्री न जन्मे ! यदि जन्मे भी तो जन्मते समय ही उसे ज़हर खिला देना चाहिए। मैं भी किसी के पुत्री हुई थी तभी तो राख में मिल गई—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। १७ या तो पुत्री अपने कर्मलेख में भाग्य-सिद्धि लिखाकर आए, अन्यथा जन्मते ही अपना रास्ता नाप ले। मैं भी अब

दीवुताह द्रायि साखी दिने ।
माल्य बूज़ुस लोंग रिवाने ।।
द्रयि क्याह हावि तंम्य दारि छेंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। १९ ।।

क्याह वंनिथ ह्यकु तस सौंरगुवासस ।
पछ्र अंनिन आमस तु खासस ।।
दीवुताह ह्यथ सूता छे संती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। २० ।।

तोति पनुन पज़ुन पोलुन ।
शीथ क्रूह अदु अंगुन ज़ोलुन ।।
यिथ्य प्रलय कस छि बनेमुती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। २१ ।।

बरु कंरनस बं शामु सौंन्दर ।
सरु कंरनस नारस अन्दर ।।
दरुह लांजिनस छिवेमुती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। २२ ।।

माल्य वन्यानस छुय वुनि आदन ।
काल्य रांवुय तु थोंवथस नु ज़ाह कन ।।

अपना रास्ता ढूंढ रही हूँ—पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए । १८ देवता तक साक्षी देने को आए । यहाँ तक कि उनके पिता ने जब यह सुना (कि मेरी अग्नि-परीक्षा ली जा रही है) तो वे रोने लगे । उस सफ़ेद दाढ़ी वाले (दशरथ) ने भी जाने कितनी क़समें दिलाईं (मेरे पातिव्रत के सम्बन्ध में)—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए । १९ उस स्वर्गवासी दशरथ के लिए कितना कहूँ ! उन्होंने आम व ख़ास (हर किसी) को विश्वास दिलाया कि देवताओं समेत सीता सती है—पार्वतीजी मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए । २० किन्तु वह (निर्दयी) फिर भी सत्य की परख करने के लिए अपने वचन पर डटा रहा । अस्सी कोस तक अग्नि जलाई गई । ऐसा घोर संकट किसी पर भी न आन पड़े—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए—२१ श्यामसुन्दर ने मुझे मुरझा कर आग में मेरी परीक्षा लेनी चाही और उस निष्ठुर ने मेरी यह गत बनायी—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए—२२ पिता ने उसको बहुत समझाया कि अभी

त्रॉल्य तमि नारु त्यंगल तंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। २३ ।।
तति अंछिन दिच्रु मे पोलादु पचे ।
खोंट बु द्रायस नु तमि कंहुवचे ।।
गोंट समय गोम आयस नु पंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। २४ ।।
गरि पनुनि दोंह पांशि बंरिम ।
साफ वनतम कम पाफ कंरिम ।।
कोनु वनस क्याह गोम मे संती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। २५ ।।
गरि छुनिनस न्यबर कंडिथ ।
श्राख दिच्रुनम वांलिजि बंरिथ ।।
वाख ओसुम वोंन्य मरु येंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। २६ ।।
मानि क्याह यानि कस बो ज़ायस ।
ज़ानि कुस लानि कस बो आयस ।।
वन गंयस वोंन्य बु च्रन्दन लंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ।। २७ ।।

भी मौका है। यह तुम से कभी न कभी बिछुड़ जाएगी क्योंकि तुमने इसकी बातों पर कभी कान न धरा। इस (बेचारी) ने तो जलते अँगारे चबा डाले—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। २३ तब आँखों पर मैंने पट्टी बाँधी और उस कसौटी (अग्नि-परीक्षा) पर मैं खरी उतरी। अब लगता है मेरा भविष्य धुँधला हो चला है जो मेरा उद्धार नहीं हो पा रहा है—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। २४ उपरान्त, घर पर मैंने (केवल) पाँच दिन गुज़ारे। (पार्वती जी!) सच कहना, मैंने ऐसे कौन-से पाप किए जो मुझ जैसी सती का यह हाल हो गया—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। २५ घर से उसने मुझे (निर्दयता-पूर्वक) बाहर निकाल दिया और इससे मेरे दिल पर जैसे छुरी चल गई। मुझे (शायद) यही अभि-शाप मिला कि अब यहीं मर जाऊँ—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। २६ कौन भला क्या जाने कि मैं किस के यहाँ जन्मी और कौन भला क्या जाने कि मैं किसके भाग्य में आई थी। अब मेरी यह

ज़ाम कंरुम निच कथि हना ।
गोम वौन्दस अपुज़ बिना ॥
कांम गंयम कमन सुती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ २८ ॥

तीर ह्युतनम वांलिजि बंरिथ ।
गोम अपारि यपोर तंरिथ ॥
अथु सुतिन तु कथव सुती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ २९ ॥

नारु त्यम्बुर फम्बस पैयम ।
वुछतु वुनि कूत जलाव हैयम ॥
रैह फंटिथ नेरि प्यठ परुबंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ ३० ॥

युथ बंनिथ तोति पथ छुनु यिवन ।
मौख वंटिथ फौख पनुनुय दिवन ॥
छौख लोंगुम सौति वौन्य मरु यैति ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ ३१ ॥

मुफ्त मांगुयि मौल छा मंगन ।
द्रोत मूलन पंतरन लंगन ॥
वातुहय कौत यैमि हांबंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह ॥ ३२ ॥

चन्दन-सी देह वनमयी हो गई है--पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। २७ ननद ने (मेरे विरुद्ध) एक छोटी-सी बात उछाली जिससे मेरे दिल को सभी झूठा मान बैठे। परिणाम-स्वरूप मेरा जाने किन-किन संकटों से पाला पड़ा--पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। २८ उस (बेदर्दी) ने बातों से व हाथों से दिल पर ऐसा तीर दे मारा जो मेरे आर-पार निकल गया--पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। २९ रूई के फाहे समान मेरे शरीर पर जैसे अग्नि की चिनगारी गिर पड़ी जिससे अभी भी मैं विदग्ध हो रही हूँ। अब अग्नि-शिखाएँ पर्वतों को चीरती हुई ऊपर निकल जाएँगी--पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। ३० यह सब देखकर भी वे अपनी करनी से (पीछे) बाज़ न आए और चुपके-चुपके मेरे जीवन-दीप को फूँक मार बुझाने के लिए तत्पर रहे। मैं पूर्णतया आहत हो चुकी हूँ

नाल वोलनम तु लोकुट्य गंजिस ।
बाल च्रंजिस तु ज़ालस लंजिस ।।
हाल क्याह् लाल गंयम मे छंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह् ।। ३३ ।।

युस यँछि जोरि जुदायी करी ।
दय तमिस कोनु वथ रावुरी ।।
वसुनस कोनु यमु गुमु तंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह् ।। ३४ ।।

आयि तस कोनु बलाय अंछिन ।
लायि तस कोनु कर्यन अंछिन ।।
द्रायि तस कोनु ज़्यव कारि पंती ।
पारुवंती कर म्योन चारह् ।। ३५ ।।

सिरियि वातिथ छुय ह्नि ह्ने ।
वुछतु प्रकाश तस छुय वने ।।
बोज़ वुनु क्याह् वनि सरसोती ।
पारुवंती कर म्योन चारह् ।। ३६ ।।

और अब यहीं पर धीरे-धीरे शांत हो जाऊँगी—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। ३१ निष्काम प्रेम का कोई मोल नहीं माँगता (किन्तु उन्होंने ऐसा माँगकर) मेरे जीवन-वृक्ष के मूल, पत्तों व डालियों को काट डाला। अब मैं संत्रस्त होकर तुम्हारी शरण में आई हूँ—पार्वतीजी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। ३२ उन्होंने मुझे बुरी तरह से विक्षुब्ध कर डाला और बालापन में ही मैं जलने लग गई। बालापन से निकली तो (गृहस्थी के) जाल में उलझ गई। अब मेरा हाल यह हुआ कि लाली के स्थान पर सफ़ेदी चारों ओर छा गई है—पार्वती जी ! मेरा कोई उपाय (चारा) कीजिए। ३३ जो यार की जुदाई की इच्छा करे उसे भगवान् क्यों न पथभ्रष्ट कर डाले ! क्यों न उसके शरीर से यम (मृत्यु) की कँपकँपी छूटे—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। ३४ उसकी आँखें फूट क्यों न जाएँ, उसकी आँखें पथरा क्यों न जाएँ। उसकी जीभ गर्दन के पीछे से क्यों न निकल जाए—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। ३५ सूर्य कण-कण तक पहुँचने वाले हैं। तभी उनका प्रकाश चारों ओर छिटक जाता है अभी वह सरस्वती (सीता) कुछ और कहने वाली है, उसे ध्यान से सुनिए—पार्वती जी ! मेरा कोई चारा (उपाय) कीजिए। ३६

रामुचन्द्रुन तु सुतायि हुन्द समवाद

लोलु सुतिन ओंश आंस त्रावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रावन ।।
रामुचन्द्रुन दोंपनस खंतिम पाफ ।
तमि दोंपनस रूदुय नु इन्साफ ।।
कस च्रु छुख वोंन्य यिमु ठानि हावन ।
छस नु मूलय बर मुचुरावन ।। १ ।।

तंम्य दोंपुस तोरु ख्यमा च्रु कर ।
तमि दोंपनस मुच्रुरय नु ज़ांह बर ।।
कस च्रु छुख यिम नेंह द्राव हावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ।। २ ।।

पाफ वरजित योंहय में माल्युन ।
तापु निशि येंम्य रोंछ म्योन ताल्युन ।।
कसनु वांरिव्य वथ रावुरावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ।। ३ ।।

तंम्य दोंपुस तोरु कर खानुदांरी ।
तमि दोंपनस त्रांविम में सांरी ।।

रामचन्द्र और सीता का संवाद

प्रेम-विह्वल होकर वह अश्रु बहाने लगी पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई। रामचन्द्र ने कहा—मैं पापी हूँ, मुझे क्षमाकर। वह बोली—आपका यह इन्साफ़ तब कहाँ गया था। अब आपकी यह झाँसा-पट्टी कोई काम नहीं कर सकती—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई। १ वे बोले—मुझे अब क्षमाकर। वह बोली—अब कभी भी यह द्वार न खोलूँगी। आप किसे यह झूठा स्नेह दिखा रहे हैं!—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई। २ पापों से मुक्त होने के लिए अब यह (कुटिया) मेरा मायका है, यही कुटिया—जिसने कड़कती धूप से मेरी सदैव रक्षा की। दरअसल, ससुराल वाले किसका पथ भटका नहीं देते?—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई। ३ वे उधर से (पुन: बोले—) अब तू खानादारी (गृहस्थी) सम्भाल। वह बोली—मैंने सब को त्याग दिया है। इसीलिए यहाँ बैठकर किसी को मुख नहीं दिखा रही हूँ—पर

येंति बिहिथ कांसि बुथ छसनु हावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रावन ॥ ४ ॥

तंम्य दोंपुस वोंथ गरु युन गछी जान ।
तमि दोंपुनस बुनि छस लरुज़ान ॥
ह्यथ सु लंखिमन निथ मा छुन्यम वन ।
छस नु मूलय बर मुच्रावन ॥ ५ ॥

बेह च्रु पानस रेंह छम जिगुरस ।
खार छस कुन्य कीवल तु बेकस ॥
छसनु मोसूम छुख तंबुलावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रावन ॥ ६ ॥

वोंन्दु ज़न गव तस संगि खारा ।
रामु च्रंन्दुरन वोंनुनस वाराह ॥
मन छु च्रांच्रल तन दिमु ग्रावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रावन ॥ ७ ॥

तमि दोंपनस सूरुम जवांनी ।
कर तुलिथ वोंन्य ह्यकु बार चांनी ॥
छुमनु ताकत तन नारु ज़ालन ।
छस नु मूलय बर मुच्रावन ॥ ८ ॥

द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई । ४ वे बोले--उठ, घर चलने में ही अच्छाई है । वह बोली--मुझे अभी भी डर है कि कहीं वह लक्ष्मण मुझे साथ लेकर वन में न छोड़ आए--पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई । ५ आप चले जाइए, मेरा ज़िगर जल रहा है । मैं असहाय, एकाकी व बेकस ही ठीक हूँ । मैं अब मासूम तो नहीं जो आप की बातों से बहक जाऊँ--पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई । ६ यह कहकर उसका दिल तनिक क़ठोर हो गया । इस पर रामचन्द्र ने धीरे-धीरे समझाया—मन चंचल हुआ करता है । मैं (विश्वास दिलाता हूँ कि) तेरे उलाहनों पर अवश्य ध्यान दूँगा—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई । ७ वह बोली—मेरी जवानी सूख गई, अब भला आपका भार कैसे उठा सकूँगी । अब मुझ में ताक़त नहीं रही । बस, इस तन को अग्नि में जला डालना चाहती हूँ—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने

होश न्यूथम च्रे पोशनूलह ।
मुशकु बबुर कंडथस मूलह ॥
कोंग बु ज़ाजथस ज़न आमुतावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ॥ ९ ॥

छम च्रे रंसच्रुय कँह मा वोंमेदा ।
लस च्रे गछुनय कांछाह पादा ॥
खसु बं कोहन अछि पोश छावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ॥ १० ॥

चानि लोलुक सूरुम तमन्ना ।
छसनु यिछु तिछु आंसुस बं सूता ॥
आज़ुमाविथ बेंयि आज़ुमावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ॥ ११ ॥

युस बबस माजि करि त्यूत वोंदास ।
तस पेंया अदु बेंयि कांसिहुंद पास ॥
पामु क्याह छुख वेंह दामु चावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ॥ १२ ॥

काच्रु ज़ूने लोगथम ग्रोनुय ।
पूर कथ रगि दयन ज़्रोनुय ॥

को तैयार न हुई। ८ रे पोशनूल ! (पक्षी-विशेष, अभिप्राय रामचन्द्रजी से है) तू ने मेरे होश उड़ाए। मुझ महकती माधवी को (भरमाकर) समूल उखेड़ डाला और अब कुंकुम जैसी मेरी देह को क्यों अग्नि में झुलसा रहे हो ?—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने को तैयार न हुई। ९ आपसे मुझे अब किसी भी चीज़ की उम्मीद नहीं रही। आप चिरजीवी हों, आपके लिए कितनी ही (सुन्दरियाँ) और पैदा (प्रस्तुत) हो सकती हैं। मैं पहाड़ों पर चढ़कर प्रकृति के पुष्पों में खो जाऊँगी—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई। १० आपके प्रेम को देख मेरी तमन्ना पूरी हो गई ! मैं कोई ऐसी-वैसी नहीं थी; बल्कि, सीता थी। ज़िसे आपने एक बार आज़मा कर भी पुनः बार-बार आज़माना चाहा—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने को तैयार न हुई। ११ जो अपने माता-पिता को उदास करने में नहीं चूका, उसे भला दूसरों पर दया कैसे आए ! आपके उलाहनों को मैं ज़हर के घूंट की तरह पीती रही—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने को तैयार न हुई। १२ मेरे कार्त्तिक-चन्द्र

खेँन्य दिच़ुथस गाँटन तु कावन ।
छस नु मूलय बर मुच़ुरावन ॥ १३ ॥
नाद द्युतमय द्युतथम नु आलव ।
दाद बूज़ुम सुह्व तु शालव ॥
व्याद मनुच छुख याद पावन ।
छस नु मूलय बर मुच़ुरावन ॥ १४ ॥
ह्यथ बु येँलि यी ऑसुस आमुच़ ।
थंथरि गासु ज़न ऑसुस ज़ामुच़ ॥
ख्यथ छुनिस अँम्य आदम खावन ।
छस नु मूलय बर मुच़ुरावन ॥ १५ ॥
लूब तमना सॉरी मे द्रायम ।
बारुह कँडच येँलि खोरन च़ायम ॥
वोँन्दु दोँदमुत क्याह शेँहलावन ।
छस नु मूलय बर मुच़ुरावन ॥ १६ ॥
युस करी लोलु सूत्य दस्तु पोशन ।
खस्तु करुहन तस छुख रोशन ॥

(जैसे रूप) पर आपने ग्रहण लगाया। भगवान् ने जाने आपको ऐसी कौन-सी प्रेरणा दी जो आपने मुझे चीलों और कौवों द्वारा खाने के लिए (एकाकी व असहाय) छोड़ दिया—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने को तैयार न हुई। १३ मैंने आपको बहुत आवाज़ें दीं, मगर आपने जवाब नहीं दिया। उधर मेरी आवाज़ों (पुकारों) की दाद सिंहों व श्रृगालों ने दी। अब आप (क्यों) मन की बीती यादों को (पुनः) हरा कर रहे हैं—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने को तैयार न हुई। १४ मैं अपने भाग्य में (शायद) यही सब साथ लेकर आई थी। तभी मेरी स्थिति कँटीली घास जैसी (सबके लिए दुःखदायी) हो गई। आप जैसे ही किसी आदमखोर ने मुझे खा डाला (मेरी यह दुर्गति बना डाली)—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने को तैयार न हुई। १५ मेरे सारे लोभ (इच्छाएँ) व मेरी तमन्नाएँ तभी पूरी हो गईं थीं जब मेरे पैरों में लम्बे-लम्बे काँटे चुभे। मेरा दिल जल चुका है, अब वह भला ठंडा कैसे हो सकता है?—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई। १६ जिसने आपके लिए प्रेम से पुष्पों के गुलदस्ते बनाए, उसका आपने तिरस्कार किया और उससे रुष्ट हो गए। (आपके इस विचित्र स्वभाव को देखकर ही) सम्बन्ध न बढ़ाने का मुझे प्रण लेना पड़

अस्तु अद् नसति रुख छुख दावन ।
छसनु मूलय बर मुच्रुरावन ।। १७ ।।
ज़ेठ सूरिथ मंजहोर छोवुम ।
पोह पन ज़न सामानु त्रोवुम ।।
वीरि हुन्द्य पाठ्य दूरिथ गयम तन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ।। १८ ।।
यॆम्य रॆश्य यॆत्य रॆछिनस बॆ वारह ।
आसुस यॆच्र गामुत्र बॆ मारह ।।
वन्दुहस मन बु दॊन पादन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ।। १९ ।।
रात्य रातस करुख हुशयारी ।
कोनु लगुहख पादन बु पारी ।।
आस्य वॊन्दुक्य गम गोसु त्रावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ।। २० ।।
राथ सूरिथ सुबहस फोल गाश ।
त्रोव सिरियन यॆलि प्रवु प्रकाश ।।
रॆश्य दॊपुस वॊन्य बु संबुलावन ।
छस नु मूलय बर मुच्रुरावन ।। २१ ।।

रहा है—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई ।१७ ज्येष्ठ की तपती दुपहरी बीत जाने के बाद माघ मास की ठिठुरती ठण्ड झेल ली । पौष मास में (शरीर से) सारे आभूषण (पतझर के) पत्तों की तरह झड़ गए और सफ़ेदे की तरह (ठूँठ बनकर) मेरा तन लम्बा हो गया—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई । १८ मैं हर तरह से निःसहाय हो चुकी थी । तभी इस ऋषि ने यहाँ मेरा ध्यानपूर्वक रक्षण किया । इसके पादों पर यह मन क्यों न वारूँ—परद्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई । १९ रात-रात भर होशियार रहकर (सावधानी से) मेरी रखवाली किया करता । उसके पादों पर बलिहारी जाऊँ ! और इस तरह मेरे दिल का दुःख कुछ-कुछ भूल जाता—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई । २० रात बीत जाने पर सुबह का आलोक फैलता है । जब सूर्य ने अपनी किरणों का प्रकाश डाला तो ऋषि ने (रामचन्द्रजी से) कहा कि अब मैं (सीता को) समझाने का प्रयास करूँगा—पर द्वार को किसी भी मूल्य पर खोलने के लिए तैयार न हुई । २१

र्योश छु सुताथि समजावान

दोंपुस तंम्य रेंश्य मुच्रुरतस बर कौंमारी ।
ख्यमा करतस करान बरथा छु ज़ारी ॥
म दिस यिज़ाह छु बरथा जान चीज़ा ।
करुस सीवा च्रे गांज़ुरावी अंज़ीज़ा ॥
त्रियन सीवा करुन्य गछि बरथह्न कुन ।
दिलो मन पाफ छल कन थव थल बन ॥
त्रियन ह्न्द्य पांठ्य पंज़ुराव दरुम तु दान ।
वन्दुन गछि बरथह्स पनुनिस पनुन पान ॥
मकर गफ़लत मुच्रुर बर छुस स्यठाह लोल ।
गोंब्यर कोताह् च्रु आंखुर पान पनुन तोल ॥ ५ ॥
यि कमि विज़ि छुय च्यतस बर तस करुन बन्द ।
च्रे तस प्यठ क्याह् बजर वाती नु मा अन्द ॥
दोंपुस तमि तोरु रेंश्य बायो यि मो वन ।
अंमिस निशि छुय बराबर दोस्त तु दुशमन ॥
ज़खुम अंमिसुन्द्य बलन बर द्युन दवा छुय ।
अंकिस बामस अंमिस दंह लछ हवा छी ॥

ऋषि द्वारा सीता को समझाना

(तब) उस ऋषि ने कहा—री कुमारी ! यह द्वार खोलना तो ! देख, तेरा भर्त्ता विनती कर रहा है, उसे अब क्षमा कर, तू उसे यों दुखी न कर। भर्त्ता अच्छी चीज़ होती है। उसकी तू सेवा कर, तुझे (अब) वह जान से भी प्यारी (अज़ीज़) मानेगा। त्रियाओं (स्त्रियों) को अपने भर्त्ताओं की सेवा करनी चाहिए। अत: दिल व मन से पाप धोकर मेरी बातों पर कान धर और अच्छी बन जा। (अच्छी) स्त्रियों की तरह धर्म व दान को सार्थक बना। (त्रिया को तो) भर्त्ता पर अपने शरीर तक को निछावर कर देना चाहिए। अब तू ज़्यादा गफ़लत में न पड़ और द्वार खोल दे। उसे, वास्तव में, तेरी लगी बहुत सता रही है। तू और अधिक भारी (कठोर) न बन तथा तनिक अपने आप को भी तोल (अपनी स्थिति का भी ध्यान कर) ५ यह तुझे किसने किस घड़ी सिखाया कि तू उसके लिए द्वार बन्द कर। यों बड़प्पन दिखा कर (ऐंठकर) अपने पति को नीचा दिखाना तुझे शोभा नहीं देता। तब वह उधर से बोली—हे ऋषि जी ! आप ऐसा न कहें। इनके समक्ष

यि छुय हतुगोर पौरुश चानी मे द्रुय छम ।
अमिस कर छय ख़बर कथ जायि त्रुय छम ।।
त्युथुय छुस मन मे खोतन कांह ति मा जान ।
कनन कथ गंछ्यतनस वुन्य आसि मारान ।। १० ।।

त्युथुय छुय वूल याम कुनि केंह छु बोज़न ।
मुलय अदु छुय नु रेंश्य बायो यि रोज़न ।।
त्युथुय नाबद वुछिथ दोंदु शुर्य मिज़जह ।
ति नाबद ख्यथ करन दरथियि राजह ।।
तिथी दोंदुशुर्य सिफ़त नाबद फल्यन सुत्य ।
ति नाबद ख्यथ करिन आवारु कोंह कुत्य ।।
अशुद छुनु कुनि असुन्द अवशद छु छारुन ।
प्रवीज़न मंज़ सोंखस वालिजि दोंख द्युन ।।
स्यठाह ग़म ख्यथ मे येति आराम अथि आम ।
खोंदी खोंद राम छस सुता मे छुम नाम ।। १५ ।।

अमिस निशि सोन्तुकालस येम्य नु केंह वोंव ।
हरुद अच्चुनय गोंडन्य दावी तमिस नोंव ।।

दोस्त व दुश्मन बराबर हैं। इनके द्वारा दिए ज़ख्मों से ठीक होने की दवा द्वार बन्द करना ही है। इनकी एक बात के दस लाख रूप हुआ करते हैं। (हवा देख, नाव छोड़ने वाले हैं ये), आपकी क़सम, सच कह रही हूँ। ये नौ रूपों वाले पुरुष हैं। इन्हें क्या ख़बर कि इनकी पत्नी कहाँ है, किस हाल में है। इनका मन ऐसा है कि अपने से किसी और को अच्छा समझते ही नहीं हैं। कान में इनके कोई बात पड़ जाए तो उसकी परख के लिए तुरन्त उद्विग्न हो उठते हैं। १० ये ऐसे ओछे हैं कि कहीं कोई बात सुन ली, तो हे ऋषिजी ! उसको किसी भी तरह पचा नहीं पाते हैं। मिश्री देखकर शिशु के मिज़ाज (स्वभाव) की तरह मचल (चंचल) उठते हैं। मिश्री देखकर मचल उठने वाले ऐसे महान् कहे जाने वाले व्यक्ति धरती पर राज्य कर रहे हैं ! मिश्री के लिए शिशुओं की तरह मचल उठने वाले ऐसे स्वभावी (व्यक्ति) ने जाने कितनों को दुःख में ढकेल दिया है। यदि किसी को सुख की घड़ियों में अपने दिल को दुखाना हो तो वह कहीं और मत जाए; बस, इनकी औषधि का सेवन करे। बहुत ग़म खाकर अब मुझे यहीं पर आराम मिला है। खुदी में खोकर मैं ख़ुद राम होगई हूँ। १५ सीता तो मेरा

अंमिस निशि येम्य नु केंह रोंन तंमी ख्यव ।
रंनिथ युस छुय मंगन तस छुय च़टन ज़्यव ।।
अंमिस निशि ज़हर ख्योंन छुय लोल थावुन ।
अंमिस निशि छुय अकुय रंछ़ुरुन तु रावुन ।।
यि कुनि च़म अंडिजि रगु रथ माज़ ओसुम ।
ति ज़ोलुम ज़ालुनन ज़ंगारु कोसुम ।।
करुस खंदमत गछ़ी युथ त्युथ स्यठाह शाद ।
बगरदन पाफ खंदमत तस छें बरबाद ।। २० ।।

वनी युस रामुच़ेन्दुरस प्यठ लग्यम पान ।
सु आसी म्यान्य पांठिन हालि हंरान ।।
गछ़न नंज़दीक यस नारस अन्दर तन ।
वुछन गुलज़ार तस निशि दूर रोज़न ।।
यछ़ख योंद हमसंरी तस सूत्य गछ़ख खार ।
च़ु योंद सूता तु बरथा रामु अवतार ।।
सपन सूता खंटिथ बेह वोंन्य रंटिथ ग़म ।
यियी लारंन तोंतुय पानय दमादम ।।

बस नाम मात्र रह गया है। बसंत में जो कुछ भी नहीं बोते, उनको शरत्-काल में खिलाने के लिए तो ये सदैव तत्पर रहते हैं। जो (अकर्मण्य बनकर) कुछ भी नहीं पकाते, उन्हें ये खूब खिलाते-पिलाते हैं। मगर जो इनके लिए पकाते हैं और पकाकर कुछ माँगते हैं, उनकी ये (अन्यायी बनकर) जीभ काट देते हैं। इनके लिए तो जहर खाने का मतलब है प्रेम दिखाना; इसी तरह निभाना और बिगाड़ना भी इनके लिए एक ही बात है। मेरे शरीर में जहाँ भी कहीं चमड़ी, हड्डियाँ, रगें, रक्त और मांस था, वह जल गया और इस जलने से शरीर का सारा ज़ंग भी दूर हो गया। अब आप ही इनकी खिदमत करें ताकि ये शाद (प्रसन्न) हो जाएँ। क्योंकि जिसकी गर्दन पर पाप लगाए गए हों, वह यदि खिदमत करेगी तो वे बर्बाद हो जाएँगे। २० जो यह कहे कि मैं रामचन्द्र पर अपना यह तन निछावर करूँ, वह मेरी तरह दर-दर भटकता फिरेगा। वे ऐसे हैं कि अग्नि में कोई जल रहा हो तो दूर-दूर रहकर उसमें गुलज़ार का आनंद लेते हैं। आप समझौता कराना चाहते हैं, किन्तु उससे आपका ही अहित होना। सोचिए, आप सीता होतीं और आपके भर्त्ता रामावतार, तो आप क्या करते? अब यह सीता (शीघ्र ही) छिप रही है, आप ग़म करना छोड़ दें। देख लेना, वे मुझे पाने के लिए और कैसे

रैंशो योंदवय यछ्‌ख राहत खंटिथ रोज़ ।
गमुच बेंह गोंफ रंटिथ वाती तोंतुय बोज़ ।। २५ ।।

च्रु गछ्र वोंलिज तापुकि तावु गालुन ।
प्रंयिमुकि लूबु लोलुकि नारु ज़ालुन ।।
मे केंह वोंन्य छुमनु रामुनि नावु रोंस्तुय ।
दज़न छुम दुफ न्यरमल वावु रोंस्तुय ।।
फंटिथ फोनूस ठीक्या च्रोंग वावस ।
करन आलच्रु बु वन्दु ज़ुव रामुनावस ।।
न रूज़ुम तन तु न मन वासुना वोंन्य ।
यि केंह सोरुय ति केंह सुय बासिना वोंन्य ।।
रैंशो योंदवय यछ्‌ख आनन्द पोंज़ बोज़ ।
कुनिरुच गोंफ रंटिथ छ्यफ दिथ खंटिथ रोज़ ।। ३० ।।

गुन्यानुक ग्यव मंथिथ नारस अन्दर थव ।
यि लूबुक लीफ दज़ि याने सोंनस ज़व ।।

छटपटाएँगे । हे ऋषिवर ! यदि तनिक राहत चाहते हो तो छिप जाओ, और ग़म की गुफा में (मेरी तरह) वास करो । फिर देखना वे कैसे अधीर होकर कहीं चले आएँगे । २५ (दरअसल, यह सारा दोष इस मन का है) हृदय के ताप से उस (मन) को गलाकर प्रेम व अनुरक्ति की अग्नि में जलाना चाहिए । (मैंने भी ऐसा किया—) तभी तो मुझे अब रामनाम के सिवा और कुछ दिखता ही नहीं है । मेरे भीतर एक निर्मल दीप विना वायु के जल रहा है । रामनाम उस दीप के संरक्षक (फ़ानूस) हैं यदि फ़ानूस फट जाए तो दीया भला वायु के सामने कैसे टिक सकता है ? (मेरे जीवन-दीप के) फ़ानूस (संरक्षक) रामनाम हैं । उनके अभाव में यह जीवन-दीप वायु के झोंकों से बुझ सकता है । अतः मैं रामनाम पर बलिहारी जाऊँ और उसपर यह जी-जान निछावर कर दूँ । न अब मेरा तन रहा न मन और न वासना (ममता) ही । अब जो कुछ भी शेष है वह वही (रामनाम) ही है । हे ऋषि ! यदि आनन्द की इच्छा हो तो (मैं जो कुछ कह रही हूँ, उसे) सत्य जान लीजिए । कैवल्य (योग) की गुफा ढूँढकर उसमें छिपकर वास कीजिए । ३० (मन पर) ज्ञान का घी मलकर उसे अग्नि में जला डालिए । तब उस पर चढ़ी लोभ की परत जल जाएगी, यानी कुंदन बन जाएगा । पश्चात् उसे पीड़ा की देगची में डालकर ख़ूब जोश

लदुन अदु दादिकिस द्यगलिस लग्यस जोश ।
शमुक दिस ठानु सबुरुक दि च्रु सरपोश ॥
तमिच तीज़ी वुछिथ गौफ रठ खंटिथ बेह ।
प्रयंम सोरी तु अदु मोरी नु ज़ाह तेह ॥
अंज़्युक अमृ्यथ तेल्युक वेह ख्योंन दुबारह ।
तेलिक्य पाठिन अंमिस निशि गछु अवारह ॥
सौखस वातिथ मौखस बंविनस नमस्कार ।
दौखस प्यठ वातुनाव्यम चारो लाचार ॥ ३५ ॥

नियम पानस सुतिन केंछा दियम गात ।
कर्यम हीथा फर्यम अदुह छमनु केंह बात ॥
च़ल्यम त्राविथ बु त्रुय कथ जायि छारन ।
तवय बुय चलु आस्यम पतु लारन ॥
सौखस प्यठ दौख वुछिथ शमशेर लागन ।
प्रंयमस रज़वुठन वालिजि प्राटन ॥
अनन गरदुनि रंटिथ रोज़न खंटिथ पान ।
दिलस द्रायम तमाह सूरिम में अरमान ॥

(उबाल) देना । उसपर शम का ढक्कन देना व सब्र का सरपोश लगाना । (मन की) गुफा के अन्दर छिपकर ध्यानरत बैठ जाना । तब तुम्हारी सारी इच्छाएँ सोख जाएँगी और अन्तर का तेज कभी समाप्त न होगा । यदि आज ये (रामचन्द्रजी) अमृत भी पिलाएँ तो वह मेरे लिए जहर के समान होगा । मुझे उन दिनों की याद आरही है जब उन्होंने मुझे कहीं का न रख छोड़ा था । उनके अपार सुखों को नमस्कार हो ! क्या मालूम वे मुझे पुनः उसी तरह लाचार कर दें । ३५ (यदि मैं उनके साथ जाती हूँ तो) मुझे अपने साथ लेकर वे जरूर कोई और चाल चलेंगे । एक बार पुनः कोई बहाना बनाकर मुझे छलेंगे और फिर मैं कहीं की न रहूँगी । वे मुझे त्यागकर कहीं चले गए तो मैं उन्हें कहाँ ढूँढूँगी । इसलिए (अच्छा यह है कि) मैं ही कहीं चली जाऊँ ताकि मुझे ढूँढने के लिए वे मेरे पीछे-पीछे भागते फिरें । मेरे सुखों पर दुःख (हमेशा) शमशेर की तरह प्रहार करता रहा तथा प्रेम भीतर-ही-भीतर हृदय को छलता रहा । अब मैं दोनों को गर्दन से पकड़कर छिप जाना चाहती हूँ क्योंकि मेरे दिल में कोई भी तमन्ना व अरमान अब शेष नहीं है । उनका ग़म खाकर मेरे दिन (हमेशा) रातों में बदले । (इतना

तसुंद गम ख्यथ दोंहस येलि सांपुन्य रात ।
मुलय कर थफ तुल्यम दर वाज़ु प्यठु ज़ात ।। ४० ।।
यि बूज़िथ रामुजुव गव यंच्र अवारह ।
वनुनि लोंग तस रेशिस यथ क्याह छु चारह ।।
यछा आंस ईशरस बोज़ुनु क्याह आम ।
लोंगुस दरदाम नाहक़ गोस बदनाम ।।
दोंपुस तंम्य रेश्य च्रु छुख अवतार पानह ।
करुन ओसुय लुकन हुन्द गव बहानह ।।
संती सुता छे ज़न्मस बूम आमुच्र ।
ज़नख राज़स यि मेंच्रि तलु आंस द्रामुच्र ।।
स्यठाह ज़ारी करन च्रेय कुन गंडिथ मन ।
वन्दन द्यन रात च्रेय ज़ुव जान पादन ।। ४५ ।।
छ्रनिथ त्राविथ च्रे मंशरावुथ अंमिस माय ।
ति मा गंज़ुरुथ वनस मंज़ क्याह अंमिस पाय ।।
च्रु गछ नंगरस अन्दर गम गोसु वोंन्य त्राव ।
तयारी कर जगुक्य सामानु सोंबुराव ।।
च्रे पतु ज़ारी कंरिथ तोंत वातुनावन ।
मदारा वारुह वारह मनु नावन ।।

सुनकर भी अब वे) क्या इस दरवाज़े से हटेंगे नहीं। ४० (कहते हैं) यह सुनकर रामजी विक्षुब्ध हुए और ऋषि से कहने लगे कि (सीता को साथ ले जाने का) और कोई अन्य उपाय (चारा) नज़र नहीं आ रहा है। लगता है, ईश्वर की यही इच्छा थी जो मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया (उचित-अनुचित का विवेक नहीं रहा) तथा मैं निराश्रय होकर नाहक़ ही बदनाम हो गया। (तब) ऋषि ने उनसे कहा—आप स्वयं अवतार हैं। यह सब आपको करना ही था जिसके लिए यह लोक बहाना बन गया। सीता सती है तथा भूमि के रूप में प्रकट हुई है और राजा जनक को मिट्टी के नीचे से मिली है। वह आपकी ही स्तुति करती रही और मन को भी उसने आपके ही प्रति लगा रखा था। वह दिन-रात आपकी ही बंदना करती रही है तथा आपके पादों पर ही जी-ज़ान निछावर करती रही है। ४५ आपने उसे त्यागकर उसकी प्रीति को भुला डाला। मगर यह नहीं सोचा कि इस (बेचारी) का वन में क्या हाल होगा। आप (अब) ग़म गिला छोड़कर नगर की ओर चले जाएँ और यज्ञ की तैयारी करने के लिए सामान (सामग्री) जुटाएँ। आपके

दौहस रातस वनस कमकम वहानह ।
अनन सुतिन यिमस तोत ताम वं पानह ।। ४९ ।।

सुता छे गछान ज़मीनस मंज़ गाव

यि शेछ बूज़िथ पकान सौन रौफ छकान द्राय ।
रेशिस रोखसत ह्योतुरव अजोद्यायि मंज़ च्राय ।।
करन शादी मुनादी द्रायि बा ज़ोर ।
संमिथ रेश्य आयि यंगन्यस प्यठ च्रोवापोर ।।
कंरुख जाया मुक़र्रर बीठ्य ब्राह्मन ।
करुनि लंग्य ज़फ गंडिथ वेशनस सुतिन मन ।।
दपन बौनु पूरि किन्य तति ब्यूठ सन्यास ।
पछिमि किन्य अख वसेश्ठ महार्‌योश तु बेयि व्यास ।।
दखिनु किन्य अगस्त नारद मुनीशर ।
वौतुर्‌य किन्य सारि समसारुक्य रंखीशर ।। ५ ।।
बेयन तरफन बिहिथ आथमु ग्यानी ।
गुन्यान हावन तु थावन पार्‌य ज्ञानी ।।
संमिथ आमुत्य तपीशर स्यद तु बेयि साद ।
कोरुख आनन्द तुलुख यकबार समवाद ।।

पीछे मैं इससे विनती करूँगा तथा समझा-बुझाकर व रिझा-मनाकर आपके पास ले आऊँगा। दिन-रात कई तर्क (बहाने) बनाकर मैं स्वयं उसके साथ चलकर आपके पास उसे लेता आऊँगा। ४९

सीता का ज़मीन में ग़ायब हो जाना

यह सुनकर वे सभी ऋषि के पास से रुख़सत लेकर सोने-चाँदी की बर्षा करते हुए चलते बने और अयोध्या में दाख़िल हुए। ज़ोर-ज़ोर से प्रसन्नता-पूर्वक मुनादी कराई गई और यज्ञ रचने के लिए चारों ओर से ऋषि मिलकर आ गए। एक जगह मुक़र्रर करके ब्राह्मण बैठ गए और विष्णु (भगवान्) के ध्यान में मन लगाकर जप करने लगे। संन्यासी वर्ग (मण्डप) के नीचे पूर्व की ओर बैठ गया। पश्चिम की ओर महर्षि वसिष्ठ और व्यास जी बैठे थे, दक्षिण की ओर अगस्त व नारद मुनीश्वर बैठे थे, तथा उत्तर की ओर संसार के सभी परिकाँक्षी बैठे थे। ५ दूसरी तरफ़ों में आत्मज्ञानी बैठे थे जो ज्ञान के प्रसंगों से सबका परिचय करा रहे थे। सभी तपेश्वर, सिद्ध व साधु इक्ट्ठे हो गए थे। सभी आनंदित

अंगुन ज़ालिथ मगन ज़न ध्यान दारान ।
फिरन संमुरन परन नारान नारान ॥
वनुनि लंग्य रामुचन्दुरस कुन ब यकपा ।
यंगुनि मंडुलिस च्चे सूतिन शूबि सूता ॥
सतुच साखी छे यी त्रय सुत्य आसुन्य ।
सपुनि अशमीद सौफल हेंयि व्याद कासुन्य ॥ १० ॥

दरुम पोलुन पोंज़ुय यामत यि बूज़ुन ।
शेंतुर गौन अनुनि तस सूतायि सूज़ुन ॥
हुकुम बूज़ुन सु तौंत बोत लारान ।
र्‌यो़शाह ड्यूठुन प्रखुट ज़न पानु नारान ॥
परन प्यव तस तु वंनिनस सा़र्‌य कारन ।
संती सूतायि छुय श्री राम छारन ॥
दया कर वौथ मे सूता मनुनावुन ।
च्रु यिस सूतिन तंमिस निशि वातुनावुन ॥
ति बूज़िथ गव सु र्‌यो़श तस करुनि ज़ारी ।
गमुक मल च्रौल च्रु छख न्यरमल कौमा़री ॥ १५ ॥

पंतिम्य ग़म गोसु छुन त्रा़विथ न्यबर नेर ।
गरस कुन पख च्रु वौन्य पनुनिस सौरस फेर ॥

होकर एक साथ लयबद्ध रूप में मन्त्रोच्चारण करने लगे। अग्नि के समक्ष सभी ध्यानमग्न होकर 'नारायण-नारायण' जपने लगे। तब सभी ने एक साथ रामचन्द्र से कहा— यज्ञ-मण्डप पर आपके साथ सीता सुशोभित होनी चाहिए। त्रिया का (इस शुभवसर पर) सत्य की साक्षी के लिए (आपके) साथ रहना आवश्यक है। इसी से यह अश्व-मेध यज्ञ सफल माना जायगा और आपकी (सारी) व्याधियाँ दूर हो जाएँगी। १० इसे अपना धर्म मानकर उन्होंने सत्य की पालना की और शत्रुघ्न को बुलाकर उसे सीता को लिवा लाने के लिए भेजा। हुक्म सुनकर वह भागता हुआ वहाँ (वन) गया और वहाँ पर ऋषि (वाल्मीकि) को देखा जो साक्षात् नारायण के समान लग रहे थे। उन्हें प्रणामकर उसने सारा कारण (मंतव्य) बताया कि सती सीताको श्रीराम बुला रहे हैं। दया कीजिए और उठकर सीता को मनाइए तथा साथ चलकर उसे उन तक पहुँचाइए। यह सुनकर ऋषि उसके पास गया और विनती की—ग़म की मैल धुल गई, तू निर्मल कुमारी है। १५ बीते ग़मों-गिलों

संती सूतायि बूज़िथ त्रांव थदि बाख ।
वदुनि लंज्य यिथु कंन्यन सांपुनि लंग्य चाख ।।
दोंपुन क्यथु पांठ्य गछ़ु तथ अजोद्याये ।
कंडिथ छ़ुनिमुच़ दपन वोंन्य पानु आये ।।
मशन छुम वोंन निशन ह्व गोम बेदाद ।
पशन छस यंच़ हशन क्याह बावु रोंयदाद ।।
अमाह क्याह करुह यि र्‌योंश छुम इस्तादह ।
दियम मा शाफ गछ़ु मा खार ज़्यादह ।। २० ।।
ति वोंबरोवुन वंनिथ ताम तस सूतिन द्राय ।
शंतुर गोंन सूत्य ह्यथ अजोंद्यायि मंज़ च़ाय ।।
जगस वालमीक यामत वोत लारन ।
तंमिस पतु पतु सूता आंस लारन ।।
यिवन येंलि डीठ सूता रामुचंन्दुरन ।
जगस प्यठ वांच़ मनु किन्य आंस हरशन ।।
परन पेंयि रामुच़ंन्दुरस लंज्य वनुनि ज़ार ।
प्रंयम बोंरनस स्यठाह कोंरनस नमस्कार ।।
वनुम क्याह छुम हुकुम वुनिक्यन बं आयस ।
फंरुस पानस कोंरुम क्याह माजि ज़ायस ।। २५ ।।

को त्याग दे और वाहर आ । अपने घर की ओर चल एवं तनिक होश में आ । सती सीता ने जब यह सुना तो वह ऊँचे कंठ से रो दी । वह इतना रोयी कि पत्थरों के सीने भी चाक हो गए । वह बोली--भला मैं कैसे अयोध्या जा सकूँगी । (मैं तो निर्वासित की गई हूँ । अब चली गई तो वे लोग कहेंगे कि मैं स्वयं ही लौटकर आ गई हूँ, साथ ही) मैं यह भला कैसे भूल सकती हूँ कि उन सभी परिजनों के रहते मुझे यह सारा अत्याचार सहना पड़ा । मैं (यह भी) सोच रही हूँ कि वहाँ चली गई तो सासों को क्या मुख दिखाऊँगी । असमंजस में हूँ कि अब क्या करूँ । इधर, ये ऋषि खड़े हैं । कहीं मुझे शाप न दे दें । तब तो मैं ज़्यादा प्रताड़ित हो जाऊँगी । २० ऐसा कहकर उसने चल देना ही उचित समझा और उस शत्रुघ्न के साथ अयोध्या में प्रविष्ट हुई । यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए वाल्मीकि भी पधारे और उनके पीछे-पीछे सीता थीं । जब रामचन्द्र ने देखा कि सीता यज्ञ-मंडप पर पहुँच गई है तो वे मन-ही-मन हर्षित हुए । सीता ने रामचन्द्र को प्रणाम किया और (इशारों-ही-इशारों में) अपने दुखड़े कहे । उन्होंने उस पर बहुत प्रेम बरसाया और

दोंपुस तंम्य तोरु न्यरमल कर पनुन पान ।
रेंशन हुंज़ हाव द्रय सांरुय ज्ञली हान ।।
ति बूज़िथ लंज्य वनुनि नारायनस कुन ।
नरायनु क्याह में प्यठ रोंयदाद सांपुन ।।
गंयस आवारुह् यंच्र ईशरुह न्यबर नेर ।
अदरि समसारुह निशि वोंन्य सांपुनिस सेर ।।
दज़न यंच्र छस रज़न क्याह पान खारह ।
च्रु दिम सांखी पनुन्य तन नारुह ज़ालह ।।
छसय न्यरमल में येंत्य द्रेशटान्त हावुम ।
येंती आमुच्र बु छस तोंत वातुनावुम ।। ३० ।।

सं सूता यी वनन वुठ आंस फेशन ।
पशन तिम रेंश्य ति यामत आंस्य डेशन ।।
नरायन गोस बूज़िथ ओस रुत सात ।
ज़ुदा सांपुन्य तमी विज़ि पानु बुतरात ।।
प्रखुट गंयि बूम तस सूतायि आयस ।
वदुनि लंज्य चारु छुनु कैंह लांन्य न्यायस ।।
स्यठाह च्रोलुथ सफ़र रावुन च्रें गोलुथ ।
संती रूज़ुख तु दरमुक वादु पोलुथ ।।

नमस्कार किया। (तब सीता ने कहा—) मैं आगई हूँ; कहिए, क्या हुक्म है। २५ वे बोले—(पहले) ऋषियों के सामने अपने तन के निर्मल होने की साक्षी दे, इसी से तू (सबके सामने) दोषरहित सिद्ध होगी। यह सुनकर वह (सीता) नारायण के प्रति (सम्बोधन कर) कहने लगी—हे नारायण! यह मेरे ऊपर क्या बीत रही है! हे ईश्वर! मैं (पहले ही) बहुत दुःख देख चुकी हूँ तथा इस असार संसार से अब तंग आ चुकी हूँ। भीतर-ही-भीतर सुलग रही हूँ, जाने अब मेरा क्या हाल हो! मैं निर्मल हूँ या नहीं, आप साक्षी बनिए और मैं अपने आप को जला डालती हूँ। मैं जहाँ से आई हूँ, मुझे वहीं पहुँचा दीजिए। ३० ऐसा कहकर उस सीता के होंठ सूखने लग गए और उन ऋषियों के सामने पश्चाताप करने लगी। (कहते हैं) मुहूर्त्त अच्छा था। नारायण ने उसकी सुन ली और उसी वक्त स्वयं पृथ्वी (बीच में) जुदा हो गई (फट गई) (धरती-माँ सीता से कहने लगी—) कर्मलेख को कोई मिटा नहीं सकता। तूने बहुत दुःख देखे। रावण का अन्त कराया, सती रहकर धर्म के वायदे पाले

पकन वोंथ वोंन्य ट्कन खस प्यठ व्यमानस ।
सतुच लय थाव वोंलु पनुनिस मकानस ।। ३५ ।।

लीला— सुता जी छे लीलाकरान

नरायनु वेशनु रूपु श्री रामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।।

गोविन्दु परमानन्दु शामय ।
न्यराकार छुख न्यर नामय ।।
वामुनु वासु दीवु संहस्रनामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १ ।।

पथ कालि ईशरस राज मंजामय ।
रावुन गालुनुच आसुम प्रय ।।
ज़नख राज़ुनि जन्म दार्यामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। २ ।।

हनि हनि तनि पूरिम बुरज़ु जामय ।
वनु वनु फेरान वंन्य दितिमय ।।
मनि मंज़ु वनि आम अन्तरयामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। ३ ।।

आदि । अब जल्दी कर और मेरे पास आ, ताकि मैं तुझे विमान में बिठाऊँ । तूने सत्य को हमेशा पाला । चल आ, अपने मकान (वास्तविक निवास) की ओर आ । ३५

सीताजी द्वारा स्तुति करना

नारायण व विष्णु के रूप, परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । हे गोविन्द, परमानंद, श्याम ! आप निराकार व निर्नाम हैं । हे वामन, वासुदेव, सहस्रनाम वाले ! परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । १ मैंने ईश्वर से राजकुल में प्रवेश माँगा था क्योंकि मेरे ऊपर रावण को जलाने का उत्तरदायित्व आ गया था । तभी जनक राजा के यहाँ जन्म धारण किया—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो २ इस तन के अंग-अंग को भोजपत्रों से सजाया और बन-बन फिरकर आपको ही ढूंढा । अब मन में मुझे मेरे अन्तर्यामी मिल गए—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । ३ तदुपरांत ईश्वर

तवु पतु ईशरन राज लज़ामय ।
कीकियि वासुना फीरिथ गंय ।।
वनवास करुनुय मनि तस आमय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। ४ ।।

त्रांव्य सामानु अदु प्रांव्य बुरज़ु जामय ।
लंखिमन सुत्य ह्यथ नीरिथ गंय ।।
पतु पतु शहर द्राव बे आरामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। ५ ।।

जंगुलन मंज़ सथ संग बोज़ामय ।
कम कम वीद कम कम न्यरनय ।।
श्रूच्र बूज़्य बूज़्य यंच्र मे कन श्रोच्रामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। ६ ।।

वनु मंज़ु राख्युस द्रेंठ आयामय ।
लारुनस तस पतु व्यनत करमय ।।
लंखिमन जुव पतु तोर सोज़ामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। ७ ।।

रावुन आम बडि विहि क्रूदु कामय ।
लंकायि नियिनस हावुनम नय ।।

ने मुझे राजसी वैभव सम्भलाया, किन्तु कैकेयी की वासना (मति) फिर गई और उसके मन में आपको वनवास देने की बात आई—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । ४ तब (हम) दोनों ने आभरणों को छोड़ भोजपत्र के वस्त्र धारण कर लिये तथा लक्ष्मण को साथ लेकर चल दिए । (हमारे) पीछे-पीछे सारा शहर बेआराम होकर निकल पड़ा था—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । ५ जंगलों में सत्संग का लाभ किया तथा वेद-शास्त्रों को सुना । पवित्र-वाणी सुन-सुनकर मेरे कान बहुत ही पवित्र होगए—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । ६ वन में मुझे एक राक्षस दिखा जिसके पीछे भागने के लिए मैंने आपसे विनती की । बाद में (मैंने) लक्ष्मण को वहाँ (आपके पास) भेजा था—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । ७ रावण ने भेस बदलकर क्रोध-काम के वशीभूत होकर मुझे लंका में लेजाकर छोड़ दिया । जला-जलाकर उसने मेरी दुर्गति कर डाली—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । ८ दर्प में उसने

ज़ाजिनस तु गाजिनस लाजिनस दामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। ८ ।।

दमं दी दी तंम्य ब्रम दिञामय ।
करमस क्याह करु बूज़ुनम नय ।।
दरमस प्यठ मन मे द्रड थाव्यामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। ९ ।।

गदु गदु वानियव यंञ दज़ामय ।
क्याह सना बोज़ुना चोनुय पय ।।
हलुमुत आव ओंननम पयगामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १० ।।

दोंपनुम पानु योंत वाति श्रूरामय ।
दूरी हुन्द्य दोंह पूरी गंय ।।
तंमिसुन्दि वनुनु सुत्य बेयि ज़ुव ञामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। ११ ।।

आख येंलि लंकायि प्यठ बोज़ामय ।
गोलुथ रावुन कोंरथस ख्यय ।।
सुत्य नियिथस तु गम गोसु द्रायामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १२ ।।

गरु वात्य नंगुरुक्य ब्रोंठु द्रायामय ।
नंगुरस सारिसुय शोंहरत गंय ।।

मुझे अनेक तरह से भरमाना चाहा । पर कर्म-लेख का क्या करूँ ! उसने मेरी एक भी न मानी । मैंने धर्म पर अपने मन को खूब दृढ़ रखा—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । ९ यह गद्-गद वाणी (समाचार) सुनने के लिए मैं सदैव तरसती रही कि आप कैसे हैं ? तब हनुमान आपका पैग़ाम लेकर आया—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । १० उसने कहा कि दूरी के दिन दूर हो गए हैं और श्रीराम स्वयं यहाँ पहुँच रहे है । उसके ऐसा कहने से मेरे मृत शरीर में जैसे पुनः जीवन संचार हो गया था—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । ११ जब आप लंका में आए तो मैंने सुना कि आपने रावण को जलाकर उसका क्षय कर डाला । तब आप मुझे अपने साथ ले गए और मैं सभी गिले-शिकवे भूल गई—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । १२ घर पहुँचकर नगरवाले

बरथ राज़ु नीरिथ आव नन्दुगामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १३ ।।

दौंह पांशि गंयि क्याह पाफ खञामय ।
कोंह ज़ानि कंम्य कोंह क्याह वोंनुनय ।।
परु त्रांवुथस बरु कंरथस खामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १४ ।।

सन्ताप त्रांविथ सौंख प्राव्यामय ।
क्याह करुह मरु मरु छुम मरु हय ।।
पनुन्यव तु परुद्यव दिञुहम पामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १५ ।।

लंखिमन जुव बंयि मुञुरुनि आमय ।
वनस नियिनस डेंशाम पय ।।
त्रांविथ गोम गोम मन्दियन शामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १६ ।।

जंगुलस मंज़ फ़ंरियाद दिञामय ।
व्याद क्याह आंसुम पय दर पय ।।

हमारा स्वागत करने को सामने आए और सारे नगर में हमारे आने की खबर फैल गई। भरतजी 'नन्दिग्राम'[1] से तुरन्त चले आए—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो। १३ पाँच दिन बीते और जाने कौन-सा पाप मेरे आगे आ गया। आपसे जाने किसने क्या कहा जो आपने मुझे त्याग दिया व मुझे कच्ची आयु में ही मुरझा दिया—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो। १४ मुझे संताप के पश्चात् (बहुत दिनों के बाद) सुख देखने को मिला था किन्तु अपने व परायों ने तरह-तरह के उलाहने दे-देकर मेरी ऐसी हालत कर दी कि मैं हरदम मृत्यु को प्राप्त होने के लिए तड़फती रही—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो। १५ लक्ष्मणजी तरकीब से मुझे वन में छोड़ने के लिए चले। जब वे मुझे वन में छोड़कर चले गए तो मेरी दुपहरी शाम में बदल गई—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो। १६ जंगल में मैंने (खूब) फ़रियाद की। मेरी व्याधि क्या थी, इसे आप अच्छी तरह जानते थे। किसी ने भी मेरी आवाज़ नहीं सुनी और मेरे

---

१ कश्मीर का एक गांव।

नाद कॉसि बूज़ुम नु पाद विलुरामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १७ ।।

वाक बाक दी दी चाक गयामय ।
ज़ोनुम नु फीरिथ ज़िन्दुगी गंय ।।
गुन्यानु बेंगन्यानु व्यच़ार आमय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १८ ।।

रात दौंह ईशरस यी मंजामय ।
ही दयि आंसिनम चांनी प्रय ।।
चाख गंयम जिगुरस आख नंन्य द्रामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। १९ ।।

वालमीक र्‌यौंश बूज़िथ तोरु द्रामय ।
गरु नियिनस तु गंयम दरमुच प्रय ।।
ज्ञान हांव तंम्य तु अदु मान प्राव्यामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। २० ।।

दौंह अकि ब्रहस्पत वौंदुयस आमय ।
अरदु रातुक ओस समय ।।
गोसु द्राम सोरुय लव तु कौंश ज़ामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। २१ ।।

पैर (चलते-चलते) थक गए—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । १७ रोते-रोते मेरा गला चाक हो गया और मुझे ज़िन्दगी से कोई मोह नहीं रहा । हाँ, ज्ञान-अज्ञान का विचार ज़रूर जाग गया—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । १८ रात-दिन मैं ईश्वर से यही माँगती रही कि आपके प्रति मेरी प्रीति बनी रहे । मेरा जिगर चाक हो गया और उसमें ज़ख़्म नमूदार हो गए—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । १९ वाल्मीकि ऋषि ने मेरी सुनी और वे (अपनी कुटिया से) निकल आए तथा मुझे अपने घर ले गए । मेरी धर्म के प्रति प्रीति बढ़ी और उन्होंने मुझे ब्रह्म-ज्ञान से परिचित कराया जिसमें मेरा अन्तर मुखरित हुआ—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । २० एक दिन ऐसा आया कि मेरे भाग्य का वृहस्पति उदित हुआ । अर्द्ध-रात्रि का समय था और लव-कुश ने जन्म लिया, जिससे मेरे मन के सारे गिले-शिकवे (ग़म) दूर हो गए—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो । २१ जैसे ही ये दो भाई जन्मे तो मैं सब

दोख मशरॉविथ सोख प्राव्यामय ।
येमि विज़ि यिम ज़ु बारुन्य थनु पेय ।।
बयि त्रॉविथ वारु पाठ्य यछामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। २२ ।।

वुनिक्यन पादन तल नम्यामय ।
पानु छुख आसुवुन जेतेन्दरेय ।।
आवारु कॅरुथस शहरु तु गामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। २३ ।।

युथ सांपिथ तोति दिच्चुनम पामय ।
शुर्य लाज़ु राज़ुह कोनु मशान छय ।।
ग्युतथम तीर ब्रूठ्य थॅर किन्य द्रामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। २४ ।।

कवुह ज़ानु ईशरन क्याह लेछामय ।
चोनुय दूर्यर कर बं ज़रय ।।
वुन्य वसु बूमि तल बूम गछि त्रामय ।
परमु दामय बंविनय जय ।। २५ ।।

प्रकाशु हावुतम सालयग़ामय ।
दीवुह दारन वंन्य वंन्य दितिमय ।।

दुःख भूलकर सुख की प्राप्ति में खोगई तथा सभी भय त्यागकर उनकी कुशलता की इच्छा करने लगी—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो। २२ इस समय मैं आपके पादों तले झुकी हुई हूँ। आप स्वयं जितेन्द्रिय हैं। आपने ही मुझे शहर-व-गाँवों में दर-दर भटकाया है—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो। २३ (जितेन्द्रिय) होते हुए भी आपने मुझे तरह-तरह के उलाहने दिये। हे राजा ! यह आपको कहाँ शोभा देता है ! बच्चों जैसी चंचल प्रकृति आप भूलते क्यों नहीं हैं ? आपने ऐसा तीर मुझे मारा है जो मेरी पीठ के पीछे से निकल आया—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो। २४ क्या जानूँ कि ईश्वर ने मेरे कर्मलेख में क्या लिखा था ? (दिल में एक ही ग़म है कि) आपकी यह दूरी भला मैं कैसे सह पाऊँगी ! बस, अब मैं इस भूमि में प्रवेश करती हूँ—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम ! आपकी जय हो। २५ हे शालिग्राम ! मुझे प्रकाश दिखाइए। मैं अनेकों देवी-

मतु रोशतम तोशतम श्रू रामय।
परमु दामय वंविनय जय ॥ २६ ॥

ति वोंबुरोवुन वंनिथ मां दारिकिन्य द्राय।
रेंशन सांखी मंजिन तां बूमि मंज़ ज्राय ॥
विलुनि लंज्य खंज्र प्रंगस वंछ बूमि मंज़बाग।
वंसिथ गंयि रामु ज्रंन्दुरुन ह्यथ दिलस दाग़ ॥
तती प्यठु अज़ दोंहस ताम तिम त्रेंकारन।
दिवन वंन्य संन्य वोंगुन्य प्रथ जायि छारन ॥
वसन पाताल अख छारन बं आकाश।
त्रेयुम समुयस वुछन प्रथ जायि प्रकाश ॥
संमिथ आकाश्य दीव आयि करनि दरशुन।
करुनि सूतायि लंग्य तिम पोशि वरशुन ॥ ५ ॥

रेंशिस प्रुछ अदु तिमव खंज्र कमि गामह।
हरन ओंश येंलि परन गंयि रामु रामह ॥
दोंपुक तंम्य डूरि शंकर पोरि मंज़बाग।
वंसिथ गंयि बूमि तल सांपुन तंती नाग ॥

द्वारों (तीर्थस्थानों) में फिर चुकी हूँ। हे श्रीराम! अब मुझसे न रूठिए, तुष्ट होजाइए—परमधाम के स्वामी हे श्रीराम! आपकी जय हो। २६

यह कहकर वह मण्डप से उतर ऋषियों को साक्षी बनाकर भूमि में प्रविष्ट हुई। कातर मुद्रा में सिंहासन पर बैठकर वह भूमि के गर्भ में दाखिल हुई और रामचन्द्रजी (की जुदाई) का दाग़ लिए नीचे चली गई। तभी से आज दिन तक त्रिकारण उसे हर जगह ढूँढने में लगे हुए है। एक पाताल में ढूँढ रहा है, दूसरा आकाश में और तीसरा भूलोक में हर जगह उसे खोज रहा है। आकाश से सारे देवता उसका दर्शन करने के लिए व पुष्पों की वर्षा करने के लिए आए। ५ ऋषि (वाल्मीकि) से उन्होंने (देवताओं ने) कहा कि किस ठौर पर आँसू बहाकर व राम-राम पढ़ते वह परमधाम को चली गई! तब उस (ऋषि) ने कहा कि शंकरपुर (गाँव) में एक स्थान पर भूमि अन्दर धँस गई और वहीं पर वह सीता भूमिगत होगई। बाद में वहाँ पर एक सरोवर बन गया। कुर्‌यगाम[1] वहाँ से

१ गांव-विशेष। कवि का जन्म-स्थान।

क्रूहा अख ओस तोंत ताम अज़ कुरी गाम ।
वॅसिथ यॅलि गॅयि स तॅलि बोज़ुनु मे आम ।।
वुछुम तति दोरि मंज़ अख नागुरादाह ।
ह्योंतुम सुतायि कुन लायुन मे नादाह ।।
दोंपुम माता संती सुता न्यबर नेर ।
छु प्रारान रामुजुव कोंरथस स्यठाह च्रेर ।। १० ।।

त्युथुय तथ नागुरादस वोथ तलोतुम ।
ति बूज़िथ शोरु सुत्य कांप्योम रुम रुम ।।
छेयय यछ गछ वुछुन हावी सं दरशुन ।
पॅयी अदुह बूमि प्यठ तॅलि सोंनु वरशुन ।।
बनय क्याह अज़ अज़ल यी ता अबद राम ।
सोंरी युस सातु सातह तस छु आराम ।।
वदुनि लोंग क्याह मे कोंर सुतायि युथ हाल ।
हॅरिथ रथ यॅच्र च्रॅलिथ गॅयि ज़ेरि पाताल ।।
रॅशव याम बूज़ कोंरहस ज़ारह पारह ।
बदन छोंलहस तु वोंलहस खासुवारह ।। १५ ।।

रशव तामत कोंरुख तस दम दिलासह ।
संती सुता प्रॅखुटय बूमि कासह ।।

एक कोस की दूरी पर स्थित है । सीता का उस स्थान पर भूमिगत हो जाना मैंने खुद अपनी आँखों से देखा । उस स्थान के निकट मैंने एक झरना बहता हुआ देखा । सीता को जब मैंने बहुत आवाज़ें दीं—"माता सीता बाहर आ । देख, रामजी तेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं, उन्हें देर हो रही है । १०" तभी वह झरना (सरोवर) भयंकर रूप से झकझोर उठा, जिसके शोर को सुनकर मेरा रोम-रोम प्रकंपित हो गया । (तभी आकाशवाणी हुई—) "जिसका मन इच्छापूर्ण (श्रद्धावान्) है उसको वह सीता ज़रूर दर्शन देगी और भूमि पर तब सोने की वर्षा होगी । और कहाँ तक कहें । राम ही आदि और अन्त हैं । जो उसका मन से समय-समय पर स्मरण करेंगे, उन्हें आराम मिलेगा" । तब वे (रामचन्द्रजी) रोने लगे और कहने लगे कि उस सीता का मैंने यह क्या हाल कर दिया जो वह खून के आँसू बहाकर पाताल चली गई । जब ऋषियों ने उनकी यह आर्त्तपुकार सुनी तो विनती कर व समझा-बुझाकर उनका बदन धोया और रेशम के वस्त्र पहनाए । १५ ऋषियों ने उनको खूब दिलासा दिया

वनुनि लंग्य तस गौंडन्य कंरथन त्रे मारह ।
करयथ शुर्‌य लाजुह गरि कंरथन अवारह ॥
संती यिछ आंस न्यरमल पानु होवन ।
सपुन्य शीतल तु पानस मान थोवुन ॥
पतव लाकन परवीज़ुन यस यि ल्यूखुन ।
करुन तस ती छु ज़नुमस अदु ति बूगुन ॥
यैती आमुत्र तोंतुय गंयि छुसनु केंह पाफ ।
यंगुन्य समाफ कर वोंन्य त्राव सन्ताफ ॥ २० ॥

तिमव यामत यि वोंनुहस आव होशस ।
करुनि लोंग नालुमंत्य तथ अंगनु जोशस ॥
छुनिन दरवाज़ु वंथ्य तंम्य प्रथ खज़ानस ।
गंरीबन तु अनाथन द्युतनु दानस ॥
मदारह वारुह वारह मनुनोवुख ।
गुन्यानुक शब्द दिथ तस ख्यूब कोसुख ॥
सु वालमीक र्‌योश गुन्यान तस बोज़ुनावान ।
पतव समसार छुय ब्रम बाज़्य हावान ॥

और समझाया कि सीता सती थीं और भूमि के कष्ट दूर करने के लिए अवतरित हुई थीं। वे (ऋषि) उनको (आगे) कहने लगे—अव्वल तो आपने ही उसे बेसहारा बना दिया। बच्चों की सुध नहीं ली और घर से उसे (सीता को) निकाल दिया। वे ऐसी सती थीं कि प्रत्यक्षतया अपना निर्मल रूप सबको दिखाकर शीतल (शांत) हो गई और अपने मान की रक्षा की। दरअसल, जिसके भाग्य में जो बदा होता है, उसे वही करना होता है और जन्म-भर वही भोगना पड़ता है। वह जहाँ से आई थी, वहीं चली गई है, क्योंकि उसने कोई पाप नहीं किया था। अब आप संताप त्यागकर यज्ञ को पूरा कर लीजिए। २० जब उन्होंने ऐसा कहा तो वे (श्रीराम) कुछ होश में आए और उस (यज्ञ की) अग्नि के जोश को गले लगाने लगे (यज्ञ में पूरी तरह से रम गए) खज़ानों के दरवाज़े खोल दिए गए और ग़रीबों व अनाथों को ख़ूब दान दिया गया। धीरे-धीरे वे ग़म भूलते गए और ज्ञान की बातें सुन-सुनकर उनका विक्षोभ मिटता गया। वाल्मीकि उन्हें तत्त्व-ज्ञान से परिचित कराने लगे कि अन्ततः यह संसार भ्रम व माया है, आदि। यज्ञ-समाप्ति के उपरान्त रामचन्द्र जी ने भरत और लक्ष्मण को बुलवाया और सभी ने मिलकर

यंगुन्य मौकलिथ तिमव याम ख्योख बूज़न ।
बरुथ लंखिमन अंनिन तंम्य रामुच्चंन्दुरन ।। २५ ।।
रैशन जोग्यन द्युतुन सौन मौख्तु ज़ारी ।
मंगुनि आहियि लोग यिछ्र करुन ज़ारी ।।
सपुन्य खौश जूग्य ब्रह्मन खंत्य व्यमानस ।
पकन गंयि वांत्य तिम पनुनिस मकानस ।।
सु गव फारिग़ अंनिन तिम टांठ्य फ़रज़न्द ।
हरुनि लोंग ओंश करुनि लोंग यी तिमन सन्द ।।
लंसिव तोह्य वौन्य मे छिवु ज़ुवजानु खौतु टाठ्य ।
हुकुमरांनी करिव यंन्दराज़ु सुन्द्य पाठ्य ।।
तंमिस सूतायि हुन्द दौख दूर त्राविव ।
ग़मुक मल च्रौल सौखस मंज़ पान नाविव ।। ३० ।।
मुकटु गोंडनख कलस गंछिनवु बलाय दूर ।
कौशस काशी लवस तंम्य द्युतनु लाहूर ।।
करुनि लंग्य पादशाही गोसु त्राविख ।
गंरीबन ब्रह्मनन दरमारथ थांविख ।।
अनाथन यंच्र करन बख़शिश ज़रो माल ।
करन तिम पादशाही आंस्य यंच्रकाल ।।

भोजन किया । २५ ऋषियों व जोगियों को स्वर्ण और मोती दक्षिणा के रूप में मिले और उनसे वे (रामचन्द्रजी) विनतीपूर्वक आशीर्वाद की कांक्षा करने लगे । सभी जोगी, ब्राह्मण आदि ख़ुश हो गए और विमानों में बैठकर अपने मकानों (आश्रमों) की ओर चल दिए । इधर, वे (श्रीराम) जाकर अपने प्यारे फ़रजन्दों को लिवा लाए और आँसू बहाकर उन्हें असीस देने लगे—चिरंजीव रहो, अब तुम दोनों ही मेरे जी-जान हो । उठो, इन्द्रराज की तरह हुक्मरानी करो (राजकाज का काम सम्भालो) और उस सीता के दुःख को दूर करो । ग़म की मैल धुल गई । उठो और सुख में अपने तनों को सराबोर करो । ३० मुकुट उनके सिर पर बाँधकर उन्होंने (श्रीराम ने) कहा—तुम्हारी बलाएँ दूर हों । कुश को काशी और लव को लाहौर-राज्य दिए गए और वे दोनों निश्चिंत होकर बादशाही करने लगे । ग़रीबों व ब्राह्मणों के लिए धर्मार्थ सहायतावृत्तियाँ दी जाने लगीं तथा अनाथों को बहुत सारा ज़रो-माल बख़शीश के रूप में दिया जाने लगा । काफ़ी दिनों तक उन्होंने बादशाही की और सारा आलम सभी ग़म भूलकर आनंद भरने लगा तथा

परान ओस रामु रामह् सोर आलम।
बोरुख आनन्द त्रोवुख सारिकुय ग़म ॥
दपन बोनु रामु चन्द्रन वुछ यि सत फाल।
ओनुन लंखिमन वोनुन सोरुय तमिस हाल ॥ ३५ ॥
करुन छुम आशरत खोशदिल वु रोज़य।
मकानस मंज़ विहिथ अज़ सोज़ बोज़य ॥
च बोज़न गछ हुकुम म्योनुय बराबर।
दोपुस लंखिमन जुवन छुसना वु चाकर ॥
वनुम क्याह छुम हुकुम छुस इस्तादह।
दोपुस तम्य रामुचन्द्रन यी छु वादह ॥
दियिव डंडूरुह शहरस मंज़ रवा रव।
दियिव दान ब्रह्मनन टोठ्यव सदाशिव ॥
सपुन्य आयीनु बन्दी कोचि बाज़ार।
करन शादी खलायिख आस्य बिस्यार ॥ ४० ॥
गरन मंज़ सारिवुय कोर शादियानह।
क़दुरुह मूजुब अनाथन द्युतुक दानह ॥ ४१ ॥

श्री रामुजुवुन सोरगस खसुन

तमी विज़ि नारुदन पयग़ाम बूज़ुन।
त्युथुय ब्रह्मा जुवस निशि नामु सूज़ुन ॥

राम-राम पढ़ने (जपने) लगा। (तभी एक दिन) रामचन्द्रजी ने उचित मुहूर्त्त देखकर लक्ष्मण को बुलवाया और उससे सारा हाल कहा। ३५ मेरी इच्छा अब ख़ुशदिल होकर व संगीतादि सुनकर आनन्द में जीवन के आख़िरी दिन बिताने की है। तुम मेरे इस हुक्म को बराबर ध्यान से सुनो। लक्ष्मणजी बोले—मैं आपका चाकर हूँ। कहिए, क्या हुक्म है? मैं आज्ञा-पालन के लिए तैयार खड़ा हूँ। रामचन्द्रजी बोले—सदाशिव की मुझपर कृपा हो गई है, तुम शहर जाकर तुरन्त यह ढिंढोरा पिटवाओ कि सभी ब्राह्मणों को खूब दान दिया जाएगा। तब आज्ञानुसार कूचों व बाजारों में मुनादी कराई गई और असंख्य लोग (इस समाचार को सुनकर) शादमानी करने लगे। ४० अपने-अपने घरों में सभी ने ख़ुशियाँ मनायीं और अनाथों की क़द्रदानी कर उन्हें खूब दान दिया गया। ४१

श्रीरामजी का स्वर्गारोहण

उधर, नारद ने (लक्ष्मण को दिया) पैग़ाम सुन लिया और उसी

दपन तमि वखतु ब्रह्मा जी शोंगिथ ओस ।
नेंन्दुरि वुज़ुवुन तु पादन तल परन प्योस ।।
दोंपुस ब्रह्मा जुवन कति गोख पयदा ।
गोंमुत छुख आरु क्रोन्तुय वन गछ़ी क्याह ।।
प्रसन्द रूज़िव वंनिव क्याह छुवुह गोंमुत कस ।
दोंपुस तंम्य रामुच़न्दुरुन राज कर बस ।।
तुलिन तंम्य वारुयाह कष्ट चान्य द्रुय छम ।
च़लिथ सुता गंयस मेंच़ि तल रंटिथ ग़म ।। ५ ।।

त्युथुय बूज़िथ सु ब्रह्मा गव स्यठाह शाद ।
तमी विज़ि तंम्य महाकालस द्युतुन नाद ।।
चु गछ़ अजोध्यायि श्रू रामस वनुस ज़ार ।
दपुस ब्रह्मा जुवन लोंदनय नमस्कार ।।
दपुस वोंथ पख चु खस वोंन्य प्यठ व्यमानस ।
ख़ोशी कर वोंन्य चु खस पनुनिस मकानस ।।
त्युथुय बूज़िथ वरुन बदलिथ न्यबर द्राव ।
र्‌योशाह लागिथ अजोध्यायि मंज़ च़ाव ।।

वक़्त ब्रह्मा के पास निवेदन करने के लिए चले गए । कहते हैं, उस वक़्त ब्रह्माजी सोए हुए थे । उन्हें उन्होंने नींद से जगाया और पादों तले प्रणाम किया । ब्रह्माजी ने उनसे कहा—कैसे पैदा (उपस्थित) हुए । बड़े परेशान-से लग रहे हैं आप ! कहिए, आपको क्या चाहिए ? प्रसन्न हो जाइए और मंतव्य कहिए कि किस पर क्या आन वनी हैं ? तब उन्होंने (नारद जी से) कहा—रामचन्द्रजी से अब राज्य करने की (बस) इति करवाइए । आपकी क़सम उन्होंने बहुत कष्ट उठाए हैं । सीता भी उनसे विमुख हो गई और ग़म खाकर मिट्टी के नीचे छिप गई । ५ यह सुनकर ब्रह्मा जी बहुत शाद हो गए और उसी क्षण महाकाल को आवाज़ दी—तुम अयोध्या जाकर श्रीराम से निवेदन करो कि ब्रह्माजी ने नमस्कार कहलवाकर विनती की है कि उठिए और विमान पर बैठकर ऊपर चले चलिए । खुश हो जाइए और अपने मकान (परमधाम) की ओर प्रयाण करें । यह सुनकर वे (महाकाल) वर्ण बदलकर बाहर निकल आए और ऋषि का रूप धारण कर अयोध्या में पहुँच गए । कहते हैं, इधर एक दिन श्रीराम बड़ी दिलशाद (प्रसन्न) मुद्रा में बैठे थे कि उनके सामने वैकुण्ठ चलने का निमन्त्रण प्रत्यक्ष हो गया । १० दरअसल,

दपन श्रू राम दोहु अकि ओस दिलशाद ।
प्रखुट सांपुन तंमिस वयकोंठु प्यठु नाद ॥ १० ॥

उमुर सांपुन्य बराबर कंरिन काह सास ।
दपन यमराज़ुह लागिथ ब्रह्मना आस ॥
वुछिथ ब्रह्मुन वंथिथ गव प्योस पादन ।
वनुनि लोंग तस च्रे क्यथु थोंवथम यि लादन ॥
परसन्द रूज़िव वंनिव कति छवु वसन जाय ।
कुन्युक माछुम हुकुम यिनु मन खेंयव ग्राय ॥
दोंपुस तंम्य मोंख्तुसर वोंथ कर च्रु दरबार ।
वनय कंह कथु अदु सांपुनख ख़बरदार ॥
ति यान्य बूज़ुन कोंरुन मोकूफ ह्योंन ह्युन ।
ब खलवत पांठ्य गव तस सूत्य कुन ज़ोंन ॥ १५ ॥

यि कंह वोंनुनस त्युथुय तंम्य पानु बूज़ुस ।
दोंपुन ब्रह्मा जुवन च्रेंय निशि सूज़ुस ॥
दोंपुम तंम्य म्यानि ज़ोंवि कंर्यज़्यस नमस्कार ।
न्यरंजन बूमि प्यठ आमुत छु अवतार ॥
उमुर सांपुन्य बराबर तुल टुकन पूर ।
में दिम रोंखसत पकुन मंज़िल में छुम दूर ॥

ग्यारह हज़ार वर्षों की उनकी उम्र बराबर होने को आरही थी और कहते हैं, यमराज ब्राह्मण बनकर उनके सामने आए। ब्राह्मण को देखकर वे (श्रीराम) उठ खड़े हुए और उनके पादों में गिरकर कहने लगे— प्रसन्न हों, आप कहाँ रहते हैं और यहाँ आने का कैसे कष्ट किया ? क्या हुक्म है—निःसंकोच कहिए। मन में कोई दुराव न रखिए। तब उस (ब्राह्मण) ने मुख्तसर (संक्षेप) में कहा—आप उठिए और तैयार हो जाइए। मैं आपसे कुछ (रहस्य की बात) कहने वाला हूँ जिससे आप खबरदार हो जाएँगे। यह सुनकर उन्होंने सब काम छोड़ दिए और अकेले में उनके साथ बात करने के लिए चल दिए। १५ जो कुछ भी उस (ब्राह्मण) ने कहा, उसे उन्होंने ध्यानपूर्वक सुना। (ब्राह्मण ने कहा—) मुझे ब्रह्मा जी ने आपके पास भेजा है। उन्होंने कहलवाया है—"मेरी तरफ़ से उन्हें नमस्कार करना, वे निरंजन और भूमि के अवतार हैं। (फिर निवेदन करना कि) उनकी उम्र पूरी हो चुकी है, अतः वे तुरन्त यहाँ चले आएँ।" अब मुझे रुख़सत करें, मेरी मंज़िल दूर है और मुझे

नतय छुय यूर्य रोज़ुन असि मु लद बोर ।
ज़ंयस वातिथ दयस प्यठ मा लदव बोर ।।
कोरुथ वीरुथ ध्युतुथ सोन मोख्तु दानस ।
दया कर वोन्य च्रु खस पनुनिस मकानस ।। २० ।।

ति बूज़िथ आरुवल ज़न तस मोखस गव ।
सपुन बांबुरि सोखस त्राविथ दोखस गव ।।
नरायन पानु आमुत तस ति गव क्रूठ ।
वुछिव समसार सार्यन क्याह लगन म्यूठ ।।
कोरुन रोख़सत तमिस नगुरस ख़बर गय ।
समिथ तिम द्रायि त्राविथ सारिची प्रय ।।
वलिथ तनि पाट्य वस्तुर रामु जुव द्राव ।
बरुथ लंखिमन शेतुर गोन सुत्य सुत्य आव ।।
असन तिम द्रायि सारी गयि नु शूकस ।
पकुनि लग्य तस सुतिन खत्य सोरगु लूकस ।। २५ ।।

वनय क्याह शोर वोथ सारिस जहानस ।
खसिथ येलि रामुजुव गव प्यठ व्यमानस ।।
पोज़ुय बोज़ख ति सोरुय छुय सु पानह ।
करुन छुस यी करन छारन बहानह ।।

बहुत दूर जाना है । हाँ, यदि आप स्वयं ही यहीं रहना चाहते हों तो बाद में हमें दोष न देना । आपने ख़ूब वीरता दिखाई है और स्वर्ण व मोती दान में दिए हैं । अब हम पर दया कीजिए और अपने मकान (परमधाम) की ओर चलिए । २० यह सुनकर उन (रामचन्द्र जी) का मुख पीत-पुष्प जैसा हो गया और अनवस्थित होकर व सुख त्यागकर दुखी हो गए । देखिए, वे स्वयं नारायण थे किन्तु फिर भी कठोर स्थिति में पड़ गए । दरअसल, यह संसार सभी को बड़ा मीठा लगता है । उस (ब्राह्मण) को रुख़सत करने के बाद सारे नगर में ख़बर फैल गई । नगर-वासी सब कुछ भूल गए और इकट्ठे होकर चले आए । उधर, रामजी तन पर हल्के वस्त्र धारण कर चल दिए । उनके साथ-साथ भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न आदि थे । सभी हँस रहे थे, कोई भी शोकमग्न न था । सभी उनके साथ चल दिए और स्वर्गलोक की ओर प्रयाण करने को तैयार हुए । २५ क्या बताऊँ, सारे जहान में शोर मचा, जब रामजी विमान में जाकर बैठने को हुए । सच तो यह है कि वे ही सब कुछ करनेवाले हैं और

यछा योंद छय च़ु गछ़ नेरी तमन्ना ।
शरन गछ़ त्युथ यिथय कंन्य गंयि सं सुता ।।
दोंपुन तस ब्रह्मनस कुस छुख पोंज़ुय वन ।
दोंपुस तंम्य बूज़ितव तोंह्य दारितव कन ।।
ति बूज़िथ रूफ तान्य तंम्य ब्रह्मनन होव ।
तसुन्द बुथ डेशिनु सामानु तंम्य व़ोव ।। ३० ।।

दोंपुन तस कुन च़ु गछ़ शादी करन नेर ।
में सुतिन योंद पकख वाराह गछ़ी च़ेर ।।
ति बूज़िथ ब्रह्मनन तान्य कोंर नमस्कार ।
ह्योंतुन रोंखसत तु लारन गव ब यकबार ।।
वोंनुन ब्रह्मा ज़ुवस सोरुय सु कारन ।
दोंपुस ब्रह्मा ज़ुवन यंन्दुरस गंछिथ वन ।।
दपुस यी वारु पाठ्य व्यमान शीरिव ।
निशह तस रामुच़ंन्दुरस ह्यथ सु दूरिव ।।
त्युथुय यमुराज़ु लारन गव बज़ुवदी ।
दोंपुन यंन्दुरस वोंनुय ब्रह्मा ज़ुवन यी ।। ३५ ।।

च़ु गछ़ अजोद्यायि मंज़ व्यमान सोज़ुन ।
हुकुम तति रामुचंन्दुरुन वाति बोज़ुन ।।

यह सब करने के लिए बहाने ढूँढते रहते हैं। हे जीव! यदि इच्छा है कि तेरी सारी तमन्नाएँ पूरी हो जाएँ, तो तू उनकी शरण में चला जा, जैसे सीता चली गई है। उधर, श्रीराम ने उस ब्राह्मण को वापस बुलाकर पूछा—सत्य कहिए, आप कौन हैं? वह बोला—सुनिए, कान धरकर सुनिए और इसीके साथ उस ब्राह्मण ने अपना वास्तविक रूप दिखाया। उसका मुख देखकर वे (रामचन्द्रजी) प्रसन्न हो गए ३० और उससे कहा कि आप ख़ुश व निश्चित होकर शीघ्र वापस चले जाएँ। (मैं आ रहा हूँ)। यदि आप मेरे साथ चलेंगे तो देर हो जाने की सम्भावना है। यह सुनकर उस ब्राह्मण ने नमस्कार किया और रुख़सत लेकर एकदम वहाँ से चल दिया तथा ब्रह्माजी से सारा वृत्तांत कहा। ब्रह्माजी ने उससे कहा कि जाकर (तुरन्त) इन्द्र को यह समाचार दो ताकि वे विमान को ठीक तरह से सजाएँ और रामचन्द्र जी के पास भागकर चले जाएँ। तभी यमराज फ़ुर्ती से भागे और इन्द्र से ब्रह्माजी का सन्देश कहा। ३५ आप अयोध्या जाकर विमान को सजाएँ तथा जाकर रामचन्द्रजी के हुक्म

त्युथुय यंन्दुरन कंरुन जलदी न्यबर द्राव ।
गंडिथ व्यमान वंथिथ अजोंद्यायि मंज़ अाव ।।
तंमिस डीशिथ सपुन श्रू राम बेताब ।
त्युथुय युथ सांपुनन बर ज़र छु सीमाब ।।
दपूनख राज़ु रामुन हुकुम बूज़िव ।
सौरुगु लूकस अन्दर शुर्य बाच्र सूज़िव ।।
तमी विज़ि तख़्तु प्यठ वोंथ रामु अवतार ।
शेंतुर गोंन बरुथ सांरी द्रायि यकबार ।। ४० ।।
दोंपुन तस लंखिमनस शेंखा टुकन वाय ।
दपन तंम्य शेंख वोयुन लूख तोंत आय ।।
बजल्दी आयि सांरी नालु दीवान ।
वुछिख यंन्दुरस सुतिन आंस्य कृत्य व्यमान ।।
दपूनख राज़ु रामन क्रूद त्राविव ।
कवव बापथ बोंडन ख्यूबन अन्दर छिव ।।
कंरिव ब्योंन ब्योंन स्यठाह शादी जहानस ।
खोंशी सुतिन खंसिव वुनिक्यन व्यमानस ।।
दपन सांरी खलायिक दीव व इन्सान ।
व्यमानन प्यठ बिहिथ रूदी खोंशी सान ।। ४५ ।।
दपन यंन्दुरस त्युथुय वोंन राज़ु रामन ।
कंडिव व्यमान पकुनस कुन दियिव तन ।।

को अंगीकार करें। यह सुनते ही इन्द्र जल्दी से वाहर निकले और विमान सजाकर नीचे अयोध्या में प्रविष्ट हुए। उन्हें देख श्रीराम वेताब (चंचल) हो उठे, वैसे ही जैसे ज़र और सीमाब। (इन्द्र ने सभी से कहा—) राजा राम का हुक्म सुनिए और (उनके साथ) स्वर्गलोक में चलने के लिए सपरिवार तैयार हो जाइए। उसी समय रामावतार तख़्त से उठ खड़े हुए और शत्रुघ्न, भरत आदि सारे उनके साथ एकदम चलने को तैयार हो गए। ४० लक्ष्मण से (रामचन्द्र जी ने) कहा कि जल्दी से शंख बजाओ। शंख बजते ही सारे लोग जल्दी-जल्दी रोते हुए वहाँ पहुँच गए। लोगों ने देखा कि इन्द्र अपने साथ बहुत सारे विमानों को लाए हैं। इधर, राजा राम ने उन सब से कहा—क्रोध त्याग दीजिए। आप क्यों क्षोभग्रस्त हो रहे हैं? ख़ुशी के साथ आप भी इन विमानों में बैठ जाइए। ४५ कहते हैं तब इन्द्र से राजा राम ने कहा—अब जल्दी कीजिए और विमान चलाइए।

असन तिम द्रायि सारी गंयि शूकस ।
खंसिथ येलि रामु जुव गव वेशनुलूकस ।।
शेतुर गौन वरुथ लंखिमन नालु रंट्य तंम्य ।
व्यमानस प्यठ विहिथ ज़ारी करान तिम ।।
पकान गव वाव ह्युव व्यमान आकाश्य ।
सौरुगु लूकस अन्दर लंग्य तिम करुनि आश ।।
त्युथुय बूज़िथ वेबीशन आव लारन ।
पकन प्रथ जायि गव श्री राम छारन ।। ५० ।।

करुन देवानुगी वाराह मोथुन ख़ाक ।
स्यठाह ग़मनाक गव जामन ह्युतुन चाक ।।
वनुनि लोग राज़ु रामस कुन वेबीशन ।
कोखंडेत्र म्यानि सुतिन कवुह खंटुथ तन ।।
यितम दरशुन दितम क्याह गोय मलालह ।
जिगुरस सूर गोम रटुहथ वं नालह ।।
वदन छुस लोलु वालिजि श्राख दित्रथम ।
खंटिथ रूदहम तु वाराह दिल कतुरथम ।।
वनय क्याह अज़ अज़ल बोंड ता अवद राम ।
सौर्यस युस सातु सातह तस छु आराम ।। ५५ ।।

वे सभी हँसते हुए रामचन्द्रजी के साथ विष्णुलोक की ओर चल दिए। शत्रुघ्न, भरत व लक्ष्मण को उन्होंने (श्रीराम ने) गले से लगाकर रखा था और सभी विमान में बैठकर ब्रह्मस्तुति में लीन थे। इधर, विमान वायु के वेग की तरह आकाश में उड़ने लगा और वे सभी स्वर्ग में पहुँचकर ऐश्वर्य भोगने लगे। यह समाचार जब विभीषन ने सुना तो वे दौड़ते हुए और हर जगह श्रीराम को ढूँढने लगे। ५० दीवानों की तरह शरीर पर ख़ाक मली और बहुत ग़मनाक होकर जामों को चाक कर डाला। तब राजा राम की ओर सम्बोधन कर (विभीषण कहने लगा—) क्यों मुझ दुर्भाग्यशाली को यों अकेला छोड़ आपने अपनी तन छिपा दी? अब आकर मुझे दर्शन दीजिए। मेरा जिगर राख हो गया है। काश, आप मिल जाते, तो मैं गले से आपको लगा लेता! मैं रो रहा हूँ और मेरे प्यार-भरे दिल पर जैसे छुरियाँ चल रही हैं। आप इस दिल को कुतरकर जाने कहाँ छिप गए हैं। और क्या कहूँ। आदि से लेकर अंत तक श्रीराम ही सब कुछ हैं। जो आपका समय-समय पर स्मरण करे

तवय बापथ परन छुस रामु रामह ।
दया करतम चु टोठतम श्रु रामह ।।
नरायनु रूफ छुख छुय रामु जुव नाव ।
नरायनु कर कृपा वौन्य दरशनुय हाव ।।
नरायनु रात्य रातस छुस वनान ज़ार ।
नरायनु हाव दरशुन कास अन्दुकार ।।
दयस सुत्य कर चु लय मूह लूब यैती त्राव ।
मरुन सार्यन तु वुछ रोज़ुनि कुस आव ।।
सौ यछ फेरी वौन्दुक नेरी तमन्ना ।
शरन गछ रामुचन्दुरस लाग सुता ।। ६० ।।
चे योंदवय लव तु कौश छी थव तिहुंज़ आश ।
गौरस अदुह वाव सु हावी सिरियि प्रकाश ।। ६१ ।।

।। लव तु कौश चर्यथ ति वोत अन्द ।।

यि छु बनोवमुत प्रकाशराम कुर्यगाम्य
काशिरि ज़बान्य मंज़ ।
(१९०४ विक्रमी सनस मंज़)

उसे सर्वत्र आराम मिल सकता है । ५५ इसीलिए मैं भी राम-राम पढ़ (जप) रहा हूँ । मुझे अपना लीजिए क्योंकि आप नारायण के स्वरूप हैं और रामजी आपका नाम है । हे नारायण ! अब (मुझपर) कृपा कीजिए और दर्शन दीजिए, मैं रात-रात भर आपकी स्तुति करता रहा हूँ । हे नारायण ! दर्शन दीजिए । रे जीव ! तू भी भगवान् से प्रीति रख और मोह व लोभ को त्याग दे । सभी को मरना है, यहाँ भला स्थायी रूप से, रहने के लिए कौन आया है ! यदि तेरी ऐसी ही इच्छा रहेगी तो तेरे दिल की सारी तमन्नाएँ पूरी होंगी । अतः सीता बनकर रामचन्द्रजी की शरण में चला जा । ६० तेरे यदि लव-कुश जैसे पुत्र हैं तो उनका ध्यान रख तथा गुरु पर भावना (आस्था) रख क्योंकि वही सूर्य का-सा प्रकाश तुझे दिखाएँगे । ६१

लव-कुश-चरित भी समाप्त हो गया । इसे कुर्यगाम के प्रकाशराम ने कश्मीरी ज़बान में तैयार किया ।

।। १९०४ विक्रमी सन् में ।।



देवनागरी लिपि के माध्यम से समस्त भाषाई क्षेत्र
समस्त भाषाओं के सत्साहित्य का समानरूपेण रसास्वादन करें:—

विविध भाषाओं के अनमोल बृहद् ग्रन्थ

जिनमें उन भाषाओं के मूल पाठ को,
तद्वत् उच्चारणों सहित,
देवनागरी लिपि में देते हुए, सुन्दर हिन्दी अनुवाद दिया गया है :—

☆ **मलयाळम - महाभारत—** *अेळुत्तच्छन् कृत—रचनाकाल—१५ वीं* शताब्दी; लिप्यन्तरणकार एवं हिन्दी-अनुवादक— श्री के०ए०सुब्रह्मण्य अय्यर भू० पू० उपकुलपति संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, एवं लखनऊ विश्वविदयालय, लखनऊ। मलयाळम का मूल मधुर पाठ देवनागरी लिपि में देते हुए हिन्दी भाषा में अनुवाद दिया गया है। पृष्ठ संख्या लगभग १२२५। मूल्य ४०·००, डाक व्यय पृथक्।

★ **बँगला - कृत्तिवास रामायण—** (आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या और सुन्दरकाण्ड) रचनाकाल—१५ वीं शताब्दी; मूल बँगला पाठ देवनागरी लिपि में तथा अवधी दोहा-चौपाई में ललित पदयानुवाद। अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार— श्री नन्दकुमार अवस्थी सम्पादक, वाणी-सरोवर एवं प्रतिष्ठाता भुवन वाणी ट्रस्ट। देवनागरी अक्षरों में ग्रन्थ का चाहे बँगला पाठ सुबोध-सुललित पयार छन्दों में पढ़िये, चाहे अवधी पदयानुवाद। दोनों का पृथक् अद्भुत आनन्द है। पृष्ठ संख्या लगभग ६२५। मूल्य २५·०० डाक व्यय पृथक्।

★ **बँगला - कृत्तिवास (लंकाकाण्ड)—** रचनाकाल—१५ वीं शती; मूल बँगला पाठ देवनागरी लिपि में तथा हिन्दी गदयानुवाद—क्रमश: श्री नन्दकुमार अवस्थी एवं श्री प्रबोध मजुमदार। पृष्ठ संख्या ४८८ मूल्य १५·००, डाक व्यय पृथक्।

★ **कश्मीरी - रामावतारचरित—** प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत। रचनाकाल १८ वीं शताब्दी। देवनागरी लिपि में कश्मीरी पाठ का लिप्यन्तरण तथा हिन्दी अनुवाद के कर्ता डॉ० शिबन कृष्ण रैणा, हिन्दी विभागाध्यक्ष, राजकीय महाविदयालय, नाथद्वारा। भूमिका-लेखक डॉ० युवराज कर्णसिंह, स्वास्थ्यमंत्री भारत सरकार। पृष्ठ संख्या लगभग ४८१ मूल्य २०·००। डाक व्यय पृथक्।

★ उर्दू - शरीफ़ज़ादः (आर्यपुत्र)— 'उमरावजान अदा' के प्रख्यात लेखक मिर्ज़ा रुस्वा द्वारा रचित अति रोचक उपन्यास। देवनागरी लिपि में लखनऊ की सुमधुर उर्दू भाषा का आनन्द उठाइये। मूल्य ५'०० । डाक व्यय पृथक्।

★ गुरमुखी - श्री जपुजी सुखमनी साहिब— गुरु नानकदेव और गुरु अर्जुनदेव की अमर वाणी देवनागरी लिपि में। साथ में गीता के सफल पद्यानुवादक ख़ानबहादुर ख़्वाजः दिलमुहम्मद का अति प्रसिद्ध प्रवाहमय पद्यानुवाद। अनुवाद को पढ़ते समय पाठक झूम उठता है। मूल्य ५'०० । डाक व्यय पृथक्।

★ अ़रबी - ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिह़ीन)— प्रसिद्ध प्रामाणिक हदीस (पैग़म्बर के कलाम) के उर्दू अनुवाद ज़ादे सफ़र का देवनागरी लिपि में सारा पाठ देते हुए कठिन उर्दू शब्दों का हिन्दी अर्थ फ़ुटनोट में दिया गया है। इस्लामी धर्म के सदाचार की स्पष्ट झाँकी है। पृष्ठ संख्या ३३६ मूल्य १२'०० । डाक व्यय पृथक्।

★ फ़ारसी - सिर्रे अक्बर— (शाहज़ादः दाराशिकोह कृत—५० उपनिषदों की फ़ारसी व्याख्या में से ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय और श्वेताश्वतर— इन ९ उपनिषदों का अनुवाद। ग्रन्थ में उपनिषदों का मूल संस्कृत पाठ, उनका भारतीय अनुवाद, साथ में शाहज़ादः दारा की स्पष्ट व्याख्या, पाद-टिप्पणी सहित। एक अभारतीय मुस्लिम शाहज़ादे की तत्वज्ञान में पैठ देखते ही बनती है। हिन्दी रूपान्तरकार हैं काशी विश्वविद्यालय के डॉ० हर्षनारायण। पृष्ठ ३०० । इस परिश्रमसाध्य ग्रन्थ का मूल्य २०'०० मात्र है। डाक खर्च पृथक्।

★ बाइबिल - सार— इस पुस्तिका में बाइबिल में दिये गये सालोमन के नीति-वाक्यों को देते हुए उनके समानान्तर भारतीय नीति-वचनों को उद्धृत किया गया है। मूल्य १'०० मात्र।

वाणी सरोवर

(अपने ढंग का निराला त्रैमासिक पत्र)

इस पत्र में हिन्दी, उर्दू, अ़रबी, फ़ारसी, संस्कृत, पारसी, बंगला, ओड़िया, मराठी, गुरुमुखी, तमिळ, मलयाळम, असमी, गुजराती, तेलुगु, कन्नड, सिन्धी, कश्मीरी, राजस्थानी नेपाली आदि के अनुपम ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद तथा देवनागरी लिपि में उनका मूल पाठ धारावाहिक प्रकाशित हो रहा है। वार्षिक शुल्क १०'०० मात्र।

नवीन ग्राहक बननेवाले सज्जनों को सन् १९७० से अब तक का १०'०० प्रतिवर्ष के हिसाब से शुल्क भेजना उनके हित में होगा। बीते हुए वर्षों के अंक न मँगाने पर धारावाहिक चलनेवाले पहले से शुरू अनेक ग्रंथ उनके संग्रहालय में अपूर्ण रह जायँगे। वैसे ट्रस्ट को आपत्ति नहीं है; आप जिस वर्ष से चाहें ग्राहक बन सकते हैं।

वाणी-सरोवर अथवा ट्रस्ट में चल रहे सानुवाद देवनागरी-लिप्यन्तरण ग्रन्थ :—

१—(तमिळ) तिरुक्कुरळ्   २—(तमिळ) कम्ब रामायण
३—(तेलुगु) रंगनाथ रामायण   ४—(कन्नड) पम्प रामायण—जैनसाहित्य
५—(असमिया) माधवकंदली रामायण   ६—(कश्मीरी) रामावतार चरित
७—(नेपाली) रामायण भानुभक्त कृत   ८—(गुजराती) गिरधर रामायण
९—(मलयाळम) तुञ्चत्त् एळुत्तच्छन् कृत महाभारत
१०— ,, तथा ,, ,, ,, अध्यात्म रामायण
११—(ओड़िआ) वैदेहीश-विळास—उपेन्द्र भञ्ज   १२—(सिंधी) स्वामी केसलोक
१३—(मराठी) श्रीराम-विजय—श्रीधर स्वामी कृत मूलपाठ अनुवाद सहित
१४—(गुरमुखी) श्रीगुरु ग्रंथ साहब   १५—(उर्दू) गुजश्त: लखनऊ—मौ० शरर
१६—(फ़ारसी) दाराशिकोह कृत ५० उपनिषदों की फ़ारसी-व्याख्या का धारावाहिक हिन्दी अनुवाद
१७—(राजस्थानी) रुक्मिणीमंगल—पदम भगत कृत
१८—(अरबी) रियाज़ुस्सालिहीन (हदीस)—(ज़ादे सफ़र)
१९—रामचरितमानस (तुलसी)—संस्कृत पद्यानुवाद सहित, तथा
२०— ,, ओड़िया लिपि में लिप्यन्तरण एवं ओड़िया गद्य-पद्यानुवाद

प्रा० स्थान—भुवन वाणी ट्रस्ट ४०५/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ—३

अन्यत्र प्रकाशित लिप्यन्तरण-ग्रन्थों का परिचय :—

क़ुर्आन शरीफ़ [हिन्दी]

बीस साल की मुसलसल अिल्मी मिहनत के बाद देवनागरी रस्मुल्ख़त में क़ुर्आन शरीफ़ मय मतन (मूल आयतें) व हिन्दी तर्जुमा व तफ़सीरी नोट्स छप कर अवाम की पेश-नज़र है। इसमे मिलते-जुलते हुरूफ़ मसलन ज़ाल ज़े ज़ाद ज़ो वग़ैर: को अलाहद: मुमताज़ करते हुए रुमूज़ औक़ाफ़ (विरामाविराम चिह्न) व दीगर अलामतें, ग़रज़ कि शास्त्रीय अरबी पद्धति पर इमकानी सूरत में सही तिलावत (पाठ) का पूरा इहतियात मुहय्या किया गया है। हर सफ़े पर क़ुर्आन शरीफ़ के असली खत याने अरबी खत में इन्तहाई सही ब्लाक भी देकर नक़्स की गुञ्जाइश ही खत्म कर दी गई है। अलावा, मौलाना सय्यद अबुल हसन अली अल्हसनी अल्मदनी जनाब अली मियाँ साहब ने इस हिन्दी क़ुर्आन शरीफ़ पर 'पेश लफ़्ज़' लिख कर मिहनत को ज़ीनत बख्शी है। हद्य: महज़ ४०·००। ३·५० डाक खर्च। आर्डर के साथ १०·०० पेशगी ज़रूर भेजिए।

प्राप्तिस्थान—लखनऊ किताबघर ४०५/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ—३

' प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी ।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ।। '



प्रतिष्ठाता— नन्दकुमार अवस्थी

संस्कृत मानस-भारती

रामचरितमानस-मूलपाठ-सहित पंक्ति-अनुपंक्ति संस्कृत पद्यानुवाद

तासु प्रभाउ जान नहिं सोई। तथा हृदयँ मम संसय होई॥
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी। पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी॥
सकुच बिहाइ मागु नृप! मोही। मोरे नहिं अदेय कछु तोही॥

दो०—दानि-सिरोमनि! कृपानिधि, नाथ! कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत, प्रभु सन कवन दुराउ॥ १४९॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुनानिधि बोले॥
आपु-सरिस खोजौं कहँ जाई। नृप! तव तनय होब मैं आई॥
सतरूपहि बिलोकि कर जोरें। देबि! मागु बरु जो रुचि तोरें॥
जो बरु नाथ! चतुर नृप मागा। सोइ कृपाल मोहि अति प्रिय लागा॥
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई। जदपि भगत-हित तुम्हहि सोहाई॥
तुम्ह ब्रह्मादि-जनक जग-स्वामी। ब्रह्म, सकल-उर-अंतरजामी॥
अस समुझत मन संसय होई। कहा जो प्रभु, प्रवान पुनि सोई॥
जे निज भगत, नाथ! तव अहहीं। जो सुख पावहिं, जो गति लहहीं॥

दो०—सोइ सुख, सोइ गति, सोइ भगति, सोइ निज-चरन-सनेहु।
सोइ बिबेक, सोइ रहनि प्रभु, हमहि कृपा करि देहु॥ १५०॥

पादपस्य यतस्तस्य स प्रभावं न बुध्यति। तथा ममापि हृदये संशयः सम्प्रजायते॥
विजानात्येव सर्वं तमन्तर्यामी यतो भवान्। हे स्वामिन्! मम तं काममतो नयतु पूर्णताम्॥
ईशोऽवदद् याच राजन्! सङ्कोचं परिहाय माम्। न तत् किमपि मे पार्श्वे तुभ्यं देयं न यद्भवेत्॥

कृपानिधे! दानशिरोमणे! च सत्येन भावेन वदामि नाथ!।
वाञ्छामि पुत्रं भवता समानं गुह्यं प्रभोः किं नृप इत्यवोचत्॥ १४९॥

तस्यामूल्यं वचः श्रुत्वा विलोक्य प्रेम चेदृशम्। दयानिधिस्तमवदद् भवतादेवमेव तत्॥
किन्तु प्रगत्य कुत्राहं मृगयिष्ये स्वसन्निभम्। स्वयमेव भविष्यामि तस्मात् तव सुतो नृप॥
बद्धाञ्जलिं समालोक्य शतरूपां हरिस्ततः। ऊचे यद् याच त देवि! वरो यस्ते प्ररोचते॥
सोचे यन्नाथ! पटुना राज्ञा यो याचितो वरः। कृपालो! रुचिरोऽतीव प्रतिभातः स एव मे॥
परन्तु धृष्टता नाथ! महतीयं प्रजायते। रोचते सापि भवते भक्तशङ्कर! यद्यपि॥
भवान् ब्रह्मादिजनकः समग्रजगतः प्रभुः। समेषां चेतसामन्तर्यामि ब्रह्म च वर्तते॥
इति ज्ञाने प्रजाते तु संशयो हृदि जायते। तथापि नाथ! भवता प्रोक्तं सर्वं प्रमात्मकम्॥
वर्तन्तेऽत्यन्तमात्मीया भक्ता ये भवतः प्रभो!। त आप्नुवन्ति यत् सौख्यं यां गतिञ्चाप्नुवन्ति ते॥

सौख्यञ्च तद् भक्तिगती त एव स्वपादगं प्रेम तदेव सर्वम्।
प्रभो! विवेकः स स एव वासः सर्वं ददात्वित्थमिदं भवान् मे॥ १५०॥

ओड़िया-संस्करण

रामचरितमानस-मूल ओड़िया लिपि में
गद्य-पद्य अनुवाद ओड़िया भाषा में

ଗୋସ୍ୱାମୀ ତୁଳସୀଦାସକୃତ

ଶ୍ରୀରାମଚରିତ ମାନସ

(ଓଡ଼ିଆ ଲିପିରେ ମୂଳପାଠ ଏବଂ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ପଦ୍ୟଗଦ୍ୟାନୁବାଦ)

ପ୍ରଥମ ସୋପାନ

ବାଲକାଣ୍ଡ

ବର୍ଣ୍ଣାନାମର୍ଥସଙ୍ଘାନାଂ ରସାନାଂ ଛନ୍ଦସାମପି ।
ମଙ୍ଗଳାନାଂ ଚ କର୍ତ୍ତାରୌ ବନ୍ଦେ ବାଣୀବିନାୟକୌ ॥୧॥
ଭବାନୀଶଙ୍କରୌ ବନ୍ଦେ ଶ୍ରଦ୍ଧାବିଶ୍ୱାସରୂପିଣୌ ।
ଯାଭ୍ୟାଂ ବିନା ନ ପଶ୍ୟନ୍ତି ସିଦ୍ଧାଃ ସ୍ୱାନ୍ତଃସ୍ଥମୀଶ୍ୱରମ୍ ॥୨॥
ବନ୍ଦେ ବୋଧମୟଂ ନିତ୍ୟଂ ଗୁରୁଂ ଶଙ୍କରରୂପିଣମ୍ ।
ଯମାଶ୍ରିତୋ ହି ବକ୍ରୋଽପି ଚନ୍ଦ୍ରଃ ସର୍ବତ୍ର ବନ୍ଦ୍ୟତେ ॥୩॥

ବିବିଧ ପ୍ରକାର ବର୍ଣ୍ଣ ଅର୍ଥ ରସ ଛନ୍ଦ ଆବର ।
ମଙ୍ଗଳଙ୍କ କର୍ତ୍ତା ବାଣୀ ବିନାୟକେ ବନ୍ଦେ ସାଦର ॥ ୧ ॥
ବନ୍ଦେ ପୁଣି ଶ୍ରଦ୍ଧା ବିଶ୍ୱାସ ମୂରତି ଉମା ମହେଶେ ।
ଯା ବିହୁନେ ସିଦ୍ଧେ ଦେଖି ନ ପାରନ୍ତି ସ୍ୱ ହୃଦଈଶେ ॥ ୨ ॥
ବନ୍ଦେ ଜ୍ଞାନମୟ ନିତ୍ୟ ଶିବ ପ୍ରାୟ ଶ୍ରୀଗୁରୁ ପଦ ।
ଯାହାଙ୍କୁ ଆଶ୍ରିଣ ବକ୍ର ଚନ୍ଦ୍ର ମଧ ସର୍ବତ୍ର ବନ୍ଦ୍ୟ ॥ ୩ ॥

ବର୍ଣ୍ଣ, ଅର୍ଥ, ରସ, ଛନ୍ଦ ଓ ମଙ୍ଗଳସମୂହର ସୃଷ୍ଟିକାରିଣୀ ବାଣୀ ଓ ସୃଷ୍ଟିକାରୀ ଶ୍ରୀ ଗଣେଶଙ୍କୁ ମୁଁ ବନ୍ଦନା କରୁଅଛି ॥ ୧ ॥ ଯାହାଙ୍କ ବ୍ୟତିରେକେ ସିଦ୍ଧ ପୁରୁଷଗଣ ମଧ ନିଜ ହୃଦୟସ୍ଥିତ ଈଶ୍ୱରଙ୍କୁ ଦେଖି ପାରନ୍ତି ନାହିଁ, ଶ୍ରଦ୍ଧା ଓ ବିଶ୍ୱାସର ମୂର୍ତ୍ତି ସେହି ଦେବୀ ଶ୍ରୀ ପାର୍ବତୀ ଓ ମହାପ୍ରଭୁ ଶ୍ରୀ ଶଙ୍କରଙ୍କୁ ମୁଁ ବନ୍ଦନା କରୁଅଛି ॥ ୨ ॥ ଯାହାଙ୍କ ଆଶ୍ରୟ ବଳରେ ଚନ୍ଦ୍ର ବକ୍ର ହୋଇ ସୁଦ୍ଧା ଜଗତରେ ସର୍ବତ୍ର ବନ୍ଦିତ, ସେହି ଜ୍ଞାନମୟ, ନିତ୍ୟ, ଶଙ୍କରରୂପୀ ଗୁରୁଙ୍କୁ ମୁଁ ବନ୍ଦନା କରୁଅଛି ॥ ୩ ॥